प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९६०
मूल्य
दस रुपये

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
(दि टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस,)
१० दरियागंज, दिल्ली

प्रकाशकीय

ससार की सभी विकसित भाषाओ मे पत्र-साहित्य को बडा महत्त्व दिया जाता है और उसके भडार में वृद्धि करने के लिए बराबर गंभीर प्रयत्न होते रहते हैं। अनेक भाषाओ मे ऐसे पत्र-सग्रह निकले हैं और निकल रहे है, जो पाठकों का मनोरजन तो करते ही हैं, उनको प्रेरणा भी देते हैं।

सच बात यह है कि पत्रों की अपनी विशेषता होती है। वे दिल खोल-कर लिखे जाते है। उनमें लिखनेवाले का हृदय और व्यक्तित्व बडी सचाई के साथ बोलते है। बनावट अथवा सजावट की उनमें गुजाइश नहीं होती। यही कारण है कि पाठको के मन पर उनका सीधा और गहरा असर पड़ता है। पत्र-साहित्य की लोकप्रियता भी इसी वजह से है।

प्रस्तुत पुस्तक पत्र-साहित्य की एक अनमोल देन है। इसमे ३६८ चुने हुए पत्र है, जिनमें भारत के ही नही, अन्य अनेक देशो के बहुत-से व्यक्तित्वों की झाकी मिलती है। ससार की इतनी विभूतियो के पत्र एक जगह कम ही पाये जाते है। उससे भी बडी बात यह है कि सारे पत्र-लेखक किसी एक क्षेत्र के नहीं है,अलग-अलग क्षेत्रो के है। राष्ट्र-निर्माता, राजनेता, लेखक, कलाकार, समाज-सेवक आदि-आदि इस पुस्तक के पृष्ठो में समाये हुए है।

सग्रह के अधिकांश पत्र उन व्यक्तियो के लिखे हुए है, जो हमारी आजादी की लडाई के प्रमुख अग थे अथवा जिनकी उस लडाई में विशेष दिलचस्पी थी। अंतिम छ पत्रो को छोडकर शेष सब चिट्ठिया भारत के स्वतत्र होने के पहले की तीन दशाब्दियो के बीच की लिखी हुई है। जैसा कि नेहरूजी ने अपनी भूमिका में लिखा है, इन पत्रो से वे बहुत-सी यादे ताजी हो जाती है, जो करीब-करीब भूली जा चुकी थी। यादे ही क्यो, उस युग की आत्मा भी सामने आ जाती है, जबकि भारत आजादी के लिए अपनी पूरी ताकत से जूझ रहा था और अपने भविष्य का निर्माण कर रहा था। बडे-बडे नेता, बडे-बडे देशभक्त और बडे-बडे दिमागोवाले लोग राष्ट्रीय आंदोलनो के उद्देश्यो, तरीको और उन्हे अधिक-से-अधिक प्रभावशाली

बनाने के ढगो पर चर्चा करते थे। सबका ध्येय एक था, पर उस ध्येय की प्राप्ति के मार्गों के सबध मे बहुतो में मतभेद था। उस मतभेद को व्यक्त करने की पूरी छूट थी। इस सग्रह के अनेक पत्रो में पाठक देखेंगे कि उस मतभेद को बडी सचाई के साथ प्रकट किया गया है। त्रिपुरी-काग्रेस के पहले और बाद के महात्मा गाधी, नेहरूजी, सुभाषचद्र बोस तथा शरत् बोस के पत्र इस बात की पुष्टि करते हैं।

आजादी से सबधित बीसियो बातें हैं, जिनपर इस पुस्तक के पत्रो से प्रकाश पड़ता है। सन् १९३५ के गवर्नमेंट ऑव इडिया एक्ट को लेकर लॉर्ड लोथियन और नेहरूजी के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ था, वह भी इसमें शामिल किया गया है।

इसी प्रकार के और भी बहुत-से प्रसगो की बडी प्रामाणिक जानकारी इन चिट्ठियो से पाठको को मिल जाती है।

इस सग्रह की ज्यादातर चिट्ठिया नेहरूजी को लिखी गई हैं। कहीं-कहीं सदर्भों को स्पष्ट करने के लिए उन्होने कुछ अपने तथा कुछ दूसरे पत्र भी इसमें जोड दिये हैं।

इसमें कोई शक नही कि इन पत्रो का ऐतिहासिक महत्त्व है, लेकिन उनकी सबसे बडी विशेषता उस आत्मीयता में है, जो उन पत्रो में छलछलाती दिखाई देती है। पिता के वात्सल्य, बापू की भावना, साथियो के उद्गार, विदेशी मित्रो के प्रेम तथा नेहरूजी से मतभेद रखनेवाले व्यक्तियो की भी उनके प्रति हार्दिकता, इन सबने इस सग्रह को एक अमर कृति बना दिया है। महात्मा गाधी, पडित मोतीलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रभृति के पत्र बार-बार पढे जायगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

लाला लाजपतराय, मोहम्मदअली जिन्ना, डा अन्सारी, रोम्या रोला, ऐनी बेसेंट, सी एफ एन्ड्रूज, ब्रेल्सफोर्ड, डा राजेन्द्रप्रसाद, आचार्य कृपालानी, एडवर्ड टामसन, सरदार पटेल, गोविन्दवल्लभ पत, जनरलसिमो तथा मैडम च्यागकाई शेक, मैडम सनयात सेन, जयप्रकाशनारायण, मौलाना अबुल कलाम आजाद, माउत्से तुग, सर स्टैफर्ड क्रिप्स, जार्ज बर्नार्ड शा, सर तेज-बहादुर सप्रू आदि-आदि के पत्रो को भी पाठक इस सग्रह में पढेंगे।

मूल पुस्तक अग्रेजी में 'ए बच ऑव ओल्ड लैटर्स' के नाम से प्रकाशित हुई

है। उसके दूसरे सस्करण मे नेहरूजी ने एक पत्र गाधीजी का और एक अपना और जोड दिया था तथा कुछ टिप्पणिया भी। वे सब इस पुस्तक में शामिल कर दी गई हैं।

गाधीजी के कई पत्र[1] हिन्दी मे लिखे गये थे, उन्हे मूल रूप में दिया गया है। शेष भारतीय लेखको के पत्रो के अनुवाद में इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि उनकी भाषा लेखक की भाषा से मिलती-जुलती रहे। अनुवाद के कठिन कार्य मे हमे जिन बधुओ का सहयोग मिला है, उनके हम आभारी है।

हमे विश्वास है कि हिन्दी-जगत् में इस पुस्तक का सर्वत्र आदर होगा और सभी वर्गों के पाठक इसे चाव से पढेगे।

—मंत्री

१. पत्र-संख्या ३३३, ३३८, ३४०, ३५८ तथा ३६१

भूमिका

इस किताब मे कई तरह की मिली-जुली चिट्ठियां इकट्ठी की गई है। सारे पत्रो को एक जगह जुटाना और फिर प्रकाशन के लिए छाटना, आसान काम न था। यह किस हद तक ठीक बन पडा है, इसका फैसला करना मेरे लिए मुश्किल है। करीब-करीब सभी चिट्ठिया उस जमाने की है, जो अब बहुत दूर चला गया है और जिसे गजरे एक लम्बा अरसा हो गया है। बहुत थोडी को छोडकर ये सभी चिट्ठिया हिन्दुस्तान की आजादी के पहले की लिखी हुई है और इनमे खास तौर पर हमारी मुल्की समस्याओ और उन्होने हमपर किस तरह असर डाला, इसका जिक्र है। इनको पढने पर पुरानी बहस-तलब बाते उभर आती है और करीब-करीब पूरी तरह से भूली हुई यादें दिमाग में आ जाती है। इनमें से ज्यादातर चिट्ठिया आजादी की हमारी लडाई और बीच के वक्फे के दरम्यान सन् १९२०, ३० और शुरू ४० के सालो में लिखी गई थी, जब मै जेल में नही था।

उस समय मेरे पास इतनी फुरसत या मौका न था कि मै अपनी चिट्ठियो और कागजातो को तरतीब से रख पाता और उनका यूही ढेर लगा दिया गया। बीच-बीच में पुलिस हम लोगो पर छापा मारती थी और जो कागज़ात उसके हाथ पड जाते थे, उन्हे अपने कब्जे में कर लेती थी। जेल में लम्बा अरसा बिताने के बाद लौटने पर मै अक्सर देखता कि दीमको और दूसरे कीडो ने मेरे बहुत-से कागजो की दावत उडा ली है। इसके बावजूद बहुत-से कागज़ात बच ही गये। सालो बाद मेरे दोस्तो ने इनको कुछ तरतीब देने मे मदद की और हाल ही में जब मै हिमालय की कुल्लू घाटी में कुछ दिन छुट्टी मनाने गया तो मैने उस ढेर में से एक सग्रह तैयार कर डाला।

शुरू में मेरा मशा यह था कि सिर्फ वे ही चिट्ठिया प्रकाशित हो, जो महात्मा गाधी ने मुझे लिखी थी। आहिस्ता-आहिस्ता दूसरी और चिट्ठिया जुडती गई और कुछ मेरे लिखे पत्र भी देने पडे, क्योंकि बिना उनके बहुत-से

सदर्भों को समझना मुश्किल हो जाता। इस किताब में चिट्ठियो को तारीख-वार रक्खा गया है, हालाकि बीच-बीच मे, घटनाओ की सफाई के ख्याल से, इस सिलसिले को बदल भी दिया गया है। कुछ फुटनोट और टिप्पणिया मैंने दे दी है, लेकिन मुझे डर है कि जो लोग उस जमाने में हिन्दुस्तान में घटी घटनाओ के सिलसिले को नही जानते, वे इन चिट्ठियो के बहुत-से सदर्भों को नही समझ पायेगे।

इनमे से कुछ चिट्ठिया उन दोस्तो और साथियो की है, जो खुशकिस्मती से आज भी हमारे बीच मौजूद है। उन्होने मेहरबानी करके उनके प्रकाशन की इजाजत दे दी है। लेकिन बहुत थोडी-सी चिट्ठियो के लिए छपने से पहले इजाजत लेना मुमकिन न हो सका। मुझे उम्मीद है कि इनके लिखने-वाले उस आजादी के लिए मुझे माफ करेगे, जो मै ले रहा हू।

मैं अपने उन बहुत-से साथियो का आभार मानना चाहूगा, जिन्होने इस किताब के प्रकाशन के दौरान मे कई मौको पर मेरी मदद की। इस मदद के बिना मेरे लिए इस काम को उठाना या इसे पूरा करना मुमकिन न होता।

नई दिल्ली.

जवाहरलाल नेहरू

विषय-सूची

कुछ पुरानी चिट्ठियां

तुरन्त बाद निष्क्रिय प्रतिरोध किया जा सके। हमने—यानी, इस बातचीत के समय जो लोग हाजिर थे, उनमें से बहुतो ने—यह मजूर कर लिया। लेकिन गाधीजी ने हमसे कहा कि हमारे कुछ करने के पहले वह मालवीयजी से मिल ले, और तबतक हम रुके रहे। फिर उन्होंने इलाहाबाद से तार दिया कि मालवीयजी अभी शिमला से लौटे नही हैं। इसलिए हम अपनी योजना के अनुसार काम करने लगे। परन्तु मैं निष्क्रिय प्रतिरोध तो पूरे दिल से चाहता हू। यह जरूरी है कि कुछ व्यावहारिक कदम उठाया जाय। हम निष्क्रिय प्रतिरोध का एक घोषणा-पत्र हस्ताक्षर के लिए लोगो के पास भेज रहे हैं, इसपर सबसे पहले दस्तखत मैंने ही किये है। हा, आप तो जानते है कि बुजुर्ग काग्रेसियो के साथ हमारी कुछ मुश्किलें भी है, परन्तु हमने उन्हे काफी झकझोर दिया है और हम उन्हे खीचकर इतना आगे ले आये है कि जिसकी हमने कभी उम्मीद भी नही की थी।

मद्रास की यात्रा बडी कामयाब रही। जैसाकि आप जानते है, हमने कुछ ही दिन से 'न्यू इडिया' फिर से चालू कर दिया। वह एक बहुत बडी जीत और दुश्मनो को एक करारी चोट थी। श्रीमती बेसेंट ने तो उसको फिर से जारी कर सकने की आशा ही छोड दी थी। मद्रास की सभा भी काफी अच्छी रही।

जे डी आर के बारे में, मुझे खेद के साथ कहना पड रहा है कि यहा के मित्र अथवा उनमे से अधिकाश आपके द्वारा उठाये गए कदम के पक्ष मे नही है, हालाकि स्वय मै तो अब भी समझता हू कि वह अच्छा और सही, दोनो था। जिन्ना, जिन्हे शुरू-शुरू मे रगरूटो की भर्ती के आदोलन का समर्थन करने के लिए बडी मुश्किल से राजी किया जा सका था, अब विरोध के रूप मे इस बात पर अड गये है कि उसे छोडा न जाय, और मै अकेला-सा पड गया दिखाई देता हू।

आज सुना है कि मालवीयजी ने जिन्ना को तार द्वारा सुझाया है कि आगामी ८ तारीख को ऑल इडिया काग्रेस कमेटी और मुस्लिम लीग कौन्सिल की एक सयुक्त कान्फ्रेंस कर ली जाय। मै समझता हू कि अगर इन पुराने-पुराने नेताओ मे कुछ जोश फूका जा सके तो यह एक अच्छी बात होगी। अगर ऐसा हो जाय तो मै आशा करता हू कि इलाहाबाद मे आप

सब आयेंगे। मैं मालवीयजी से मिलने और उनसे दिल खोलकर बात करने के लिए इतना उत्सुक था कि अगर वह यहा न आ रहे होते तो इसी काम के लिए मैं खुद इलाहाबाद आता। जहातक श्री सुरेंद्रनाथ का सम्बन्ध है, अगर वह मेरे हाथ पड जाय तो मुझे विश्वास है कि मैं उन्हे सभाल सकता हू। ग्यारह साल पहले जिस दिन मैं इस देश मे आया, उसी दिन से मैं उन्हे जानता हू और यह भी जानता हू कि किस तरह उन्हे सभाला जा सकता है। लेकिन आजकल वह बुरे असर में है।

अगर कुछ प्रभाव डालना है तो दो बाते जरूरी है

१ कौंसिल के सदस्यो के इस्तीफे (इस विचार के लिए भगवान इलाहाबाद को सलामत रखे!)।

२ यदि सरकार अपनी नीति नही बदलती है और एक निश्चित तारीख के पहले नजरबदो को नही छोड देती है तो निष्क्रिय प्रतिरोध शुरू कर दिया जाय।

जहातक बम्बई का सबध है, इन दोनो कामो के लिए मुझसे जो बन पडेगा, मैं करूगा। लेकिन एक अखिल भारतीय कान्फ्रेंस का करना जरूरी है।

'क्रॉनिकल' आपके पते पर जारी करने के लिए मैंने दफ्तर मे कह दिया है। मैं तो समझ रहा था कि मैं पहले ही कभी का ऐसा कर चुका हू।

सबके लिए आदर-सहित,

सप्रेम आपका,
बी. जी हार्नीमन

[श्री हार्नीमन 'बाबे क्रॉनिकल' के लोकप्रिय और प्रभावशाली सपादक थे। पहले महायुद्ध के आखिरी सालो में और उसके बाद भी भारत के राष्ट्रीय आदोलन में उन्होने महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया था।

जे. डी. आर. एक प्रकार के सुरक्षित सैनिक सगठन का सूचक है जो उस समय शिक्षित भारतीय नवयुवको को प्रशिक्षण देने के लिए कायम किया गया था। हममें से कइयो ने इसमें शामिल होने का निश्चय किया और अपने आवेदन-पत्र भेज दिये। यह प्रथम महायुद्ध के समय की बात है। इसके कुछ समय बाद श्रीमती एनी बेसेण्ट को नजरबद किया गया। इससे हमको

बडा आघात पहुंचा और विरोधस्वरूप हमने अपने आवेदन-पत्र वापस ले लिये।]

३ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[मेरे पिताजी ने पजाब के मार्शल-लॉ से पैदा हुए नतीजो में गहरी और निजी दिलचस्पी ली। उन्हींके कहने से मार्शल-लॉ के फैसलो के खिलाफ इंग्लिस्तान की प्रिवी कौंसिल में कुछ अपीलें दायर हुई। इनमें से एक अपील, जिसने उस समय बहुत ध्यान आकर्षित किया, अमृतसर के बग्गा और रतनचद की थी। यह पत्र और इसके बाद के कई पत्र मेरे पिताजी ने आरा (बिहार) से लिखे थे, जहा वह उस समय जमींदारी के एक बडे मुकदमे की पैरवी कर रहे थे।]

आरा,
२५ फरवरी १९२०

मेरे प्यारे जवाहर,

तुम्हे मेरे पिछले खत से मालूम हुआ होगा, मैं बग्गा की अपील पर प्रिवी कौंसिल के फैसले के लिए बिल्कुल तैयार नही था, ऐसी बात नही है। लेकिन उसके खारिज होने की खबर से मुझे धक्का लगा। अपील करनेवाले दूसरे लोगो ने दगो में जो भी हिस्सा लिया हो, इसमे शक की जरा भी गुजाइश नही कि बग्गा और रतनचद उतने ही बेकसूर हैं, जितनी कि इदू। पजाब का हर आदमी—सरकारी या गैर-सरकारी—यह बात जानता है, फिर भी उन्हे फासी लगेगी। हमारे देश में नित्य होनेवाले अन्यायो मे से यह तो लाखो में से एक मिसाल है। हम तो बस अपना फर्ज अदा कर सकते हैं और जो-जो उपाय हमारे लिए मुमकिन हैं, उन्हे कर सकते है। मैंने इस बारे मे जो कुछ किया है, उसकी खबर मैं तुम्हे तार से दे चुका हू, लेकिन इतना ही काफी नही है। आगे जो कदम उठाने है, उनके बारे मे मेरे सुझाव ये है

१ जगमोहन नाथ उनसब मुकदमो के, जिनमे अपीलें हुई हैं, अपील करनेवालो की एक पूरी फेहरिस्त तैयार करें। यह सूची टेकचन्द के पास भेज दी जाय, ताकि वह पता लगायें कि उनमे से कौन रिहा कर दिये गए हैं और कौन अभी जेल मे हैं। टेकचन्द नेवाइल के पास समुद्री तार से उनसब लोगो

के नाम भेजे जो अब भी जेल मे है और उनसे दरख्वास्त करे कि वह इनकी तरफ से रहम की अर्जी दे दे।

२ हिन्दुस्तानभर मे खास-खास जगहो पर, पजाब के हर शहर मे, और अमृतसर के हर मुहल्ले मे आम सभाए की जाय, जिनमे इन मामलो मे शाही ऐलान को लागू करने की माग की जाय। इसके अलावा अमृतसर के जलसे यह भी तजवीज करे कि बग्गा और रतनचद बेकसूर है।

यह कहना आसान है, पर करना मुश्किल है। लेकिन इसके लिए कोशिश होनी चाहिए। गाधीजी से सलाह-मशविरा करना चाहिए, लेकिन यह बहुत जल्दी होना चाहिए, क्योकि वक्त थोडा है। कानून के आखिरी उपायो के हो चुकने पर फासी फौरन दे दी जाती है, जैसा कि कटारपुर की फासियो से साबित होता है।

३ अगर १ और २ मे नाकामयाबी हुई तब क्या करना होगा ? इस बाबत मेरे कुछ बहुत ही निश्चित विचार है, लेकिन जबतक १ और २ के नतीजो का पता न लगे, मै उन्हे बताना नही चाहता।

मै सोचता हू कि तुम्हारी जिला कार्फ्रेंस मे मुझे मौजूद रहना चाहिए, चाहे हरिजी के बुलावे को छोडना ही क्यो न पडे। असल मे उन्हे मेरी जरूरत नही, और मुझे भी असल मे उनका पैसा नही चाहिए—इस तरह बात बहुत-कुछ साफ है। मेरे पास सोचने और फैसला करने के लिए दो दिन का वक्त है।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

४ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[आरा से २७ फरवरी १९२० को मेरे नाम भेजे गये पिताजी के पत्र से]

जहातक गाधीजी के राजनैतिक विचारो के प्रतिपादन करने की बात है, मै उनके प्रति आदर रखते हुए भी उन विचारो को महज इसलिए मानने को तैयार नही हू कि वे उनके विचार है। मै दास को पहले ही सचेत कर चुका हू कि हमे जोरदार खीचतान के लिए तैयार रहना चाहिए। गाधीजी शास्त्री से बातें करने दिल्ली जा रहे है। उनका मालवीय से लगातार ताल्लुक और

उनसे आम रजामदी हमारे दल के लिए अच्छी निशानी नही है और न खुद गाधीजी के ही लिए वह बहुत शुभ बात है। अपनी लोकप्रियता पर हद से ज्यादा भरोसा करना ठीक नही । श्रीमती बेसेंट इसकी कीमत चुका रही है और दूसरो के साथ भी ऐसा ही हुआ है। मुझे बहुत दु ख होगा, अगर यही बात गाधीजी के साथ हुई। अपनी मौजूदा हालत मे मुझे किसीके भी राजनैतिक विचारो से झगडा करने का अधिकार नही, फिर गाधीजी और मालवीयजी जैसे प्रतिष्ठित लोगो से तो झगडा करने की बात और भी कम है, लेकिन जिस ढग से देश शक्ल अख्तियार कर रहा है, उसकी तरफ से मै आखें नही मूद सकता । अधिकारियो या नरम दलवालो से समझौता करने की कोशिश का नतीजा बरबादी होगा, भले ही वह किसी के जरिये हो। जो हालत है उसके बारे में मेरी अपनी राय तो यह है।

५. मोतीलाल नेहरू की ओर से

आरा,
२९ फरवरी १९२०

मेरे प्यारे जवाहर,

हरकिशनलाल आज सवेरे आये है और ८ बजे रात की पैसिजर से इलाहाबाद जा रहे है। तुम्हारा तार अभी मिला है, जिसमे तुमने लिखा है कि इदिरा ठीक है और तुम कल सवेरे बम्बई जा रहे हो। मैने तुम्हे तार दे दिया है कि हरकिशनलाल कल सवेरे पहुच रहे है और कुछ घटे ठहरेंगे। वह एक्सप्रेस से दिल्ली चले जायगे । उन्हीके हाथ यह चिट्ठी भेज रहा हू ।

नाश्ते के वक्त पजाब के मामलो और आमतौर से राजनैतिक हालत पर हरकिशनलाल, दास और मेरी देर तक बातचीत हुई है। हरकिशनलाल तुम्हे बतायेंगे कि हम किस नतीजे पर पहुचे हैं। उन्हे 'इडिपेंडेंट' का दफ्तर घुमाकर दिखा देना और वहा जो अव्यवस्था फैली हुई है, उसके बारे मे उन्हे खुद राय बना लेने देना। उन्होने लाहौर पहुचते ही हमारे लिए आदमी भेजने का वादा किया है।

मालूम नही, तुम बम्बई कितने दिन ठहरोगे । मै चाहूगा कि जितनी जल्दी हो सके, लौट आओ। बम्बईवाले मुकदमे के मुद्दई को ब्यौरा भेजने के

बारे मे तुमने कुछ किया ? अगर न किया हो तो खुद देखकर यह काम करा देना।

राजनीति मे उनकी अपनी हालत क्या है इसके बारे मे गाधीजी एक महत्त्व का बयान देने जा रहे है। इस बारे में मै तुम्हे पहले ही लिख चुका हू। मैने जो कुछ कहा है, दास उससे सहमत है। और बातो के साथ इस मामले मे भी आज सवेरे हमारी बातें हुई। यह करीब-करीब साफ है कि गाधीजी जो रुख लेने जा रहे है, वह काग्रेस की तजवीजो से पूरी तरह मेल नही खाता। हमारी सिर्फ यह शिकायत है कि उन्होने जहा शास्त्री और मालवीय को अपने विश्वास में लिया, हम लोगो को बिल्कुल अलग छोड दिया। फिर भी हमे देखना है कि आगे नई क्या बात आती है। इसके बाद हमारे तय करने का समय आवेगा कि हम उसपर चले या नही। जब इस मसले पर मैने तुम्हे पिछली बार लिखा था, तब मै इसी नतीजे पर पहुचा था। मैने आज सवेरे दास से यही बात कही। और वह मुझसे सहमत हुए, लेकिन उन्होने खासतौर से कहा कि मै तुम्हे यह बता दू कि शिकायतवाली बात उनकी उठाई हुई नही है, बल्कि उन्होने वह मुझसे ली है। वह समझते है कि उनके पीठ-पीछे गाधीजी से उनकी बुराई की जा रही है, और इसीलिए वह चाहते है कि मै खासतौर पर इसका जिक्र कर दू।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

६. एम. एल. ओक्स के नाम

[६ से १४ तक के पत्र मेरे निर्वासन के बारे में एक आज्ञा से सबंध रखते है, जो मुझपर मसूरी से तामील की गई थी। मुझे मिलनेवाली इस तरह की यह पहली आज्ञा थी।]

सेवाय होटल, मसूरी,
१४ मई १९२०

प्रिय श्री ओक्स,

आज सुबह आपसे जो बातचीत हुई उसपर, और सरकार ने मुझसे जो 'निश्चित वचन' चाहा है कि मै मसूरी-स्थित अफगान प्रतिनिधियो से न मिलू और न उनसे कोई पत्र-व्यवहार करू, इस बावत भी गौर मे विचार

किया है। मुझे अफसोस है कि इस बारे मे मैं अपना खयाल नही बदल सकता।

जैसाकि आप जानते है, मैं मसूरी अपनी माता, पत्नी और बहनो के साथ सिर्फ इसलिए आया हू कि मेरी पत्नी की तन्दुरुस्ती ठीक नही है। मेरा इरादा था कि जबतक मेरे पिताजी को यहा आने की फुरसत नही मिलती, तबतक यहा ठहरता। अफगान प्रतिनिधियो से मुझे कुछ सरोकार नही है और यह एक सयोग है कि हम दोनो एक ही होटल में ठहरे है। सच तो यह है कि उनकी मौजूदगी ने मेरे लिए कुछ असुविधा पैदा की है, क्योकि मैं उन कमरो को लेना चाहता था, जहा वे ठहरे हुए है। इस प्रतिनिधि-मडल में मेरी दिलचस्पी जरूर है, जैसीकि हर समझदार आदमी को होनी चाहिए, लेकिन उनसे खासतौर से मिलने की कोशिश करने का न कोई मेरा इरादा रहा है और न है। हम लोग यहा पिछले सत्रह दिनो से रह रहे है और इस बीच मैंने प्रतिनिधि-मडल के एक आदमी को दूर से भी नही देखा है। आप इस बात को खुद जानते है, जैसाकि आपने आज सवेरे मुझे बताया था। लेकिन हालाकि अफगानियो से मिलने का और उनसे पत्र-व्यवहार करने का मेरा कोई भी खयाल नही है, फिर भी सरकार के इशारे से अपने को किसी तरह बाधने का विचार मुझे सख्त नापसद है, भले ही ऐसा करना मेरे लिए असुविधाजनक क्यो न साबित हो। यह दरअसल अन्त करण की बात है। मुझे भरोसा है कि आप मेरी हालत को समझेंगे। इसलिए यह कहते हुए मुझे दु ख है कि मैं आपकी इस मेहरबानी-भरी सलाह को मानने से लाचार हू और सरकार को कोई वचन नही दे सकता।

अगर सरकार मुझपर कोई आज्ञा लागू करने का फैसला करती है तो इस समय तो मैं उसे मानने के लिए तैयार हू। मेरे लिए यह बडी असुविधा की बात होगी कि मैं अपने घरवालो को यहा अकेला छोडकर यकायक नीचे चला जाऊ। मेरी स्त्री की सेहत ऐसी है कि बडी सावधानी से देख-रेख की जरूरत है और मेरी मा तो एकदम अपाहिज है और दोनो को बिना देख-रेख के छोडना बहुत ही कठिन है। मेरे अचानक यहा से चले जाने से मेरे पिताजी की और मेरी योजनाएं बिलकुल उलट-पुलट हो जायगी और इससे हमें बडी हैरानी और फिक्र होगी, लेकिन सरकार के बडे मामलो में

आदमी की निजी सुविधाओ पर ध्यान नही दिया जा सकता, ऐसा मेरा खयाल है।

श्री एम एल ओक्स,
पुलिस सुपरिटेंडेट,
हर्मिटेज लॉज, मसूरी।

भवदीय,
जवाहरलाल नेहरू

७. जी. एफ. ऐडम्स के नाम

सेवाय होटल, मसूरी,
१५ मई १९२०

प्रिय श्री ऐडम्स,

मैंने फिरसे उस मामले पर पूरी तरह विचार कर लिया है और मुझे अफसोस है कि मै, सरकार जो चाहती है, वह वचन नही दे सकता। ऐसी हालत मे अगर सरकार मुझे हुक्म दे तो मैं मसूरी छोडकर चले जाने के लिए तैयार हू। पहले तो मेरी इच्छा हुई थी कि आपका सुझाव मानकर, सरकार के विना लिखित आज्ञा दिये ही, अपने-आप यहा से चला जाऊ, लेकिन फिर विचार करने पर मैं नही समझता कि ऐसा करना मेरे लिए मुनासिब होगा, इसलिए मैं जाब्ते के नोटिस की राह देखूगा।

श्री जी एफ ऐडम्स, आई सी एस.,
डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट,
मसूरी।

भवदीय,
जवाहरलाल नेहरू

८. आदेश

चूकि स्थानीय सरकार की राय मे यह विश्वास करने के लिए तर्कसगत कारण हैं कि इलाहाबाद के जवाहरलाल नेहरू ऐसा काम कर रहे हैं, या करनेवाले है, जो जनसुरक्षा के खिलाफ है, इसलिए सयुक्तप्रात के लेफ्टिनेंट गवर्नर, भारत रक्षा कानून, १९१५ के नियम ३ द्वारा प्राप्त अधिकार का प्रयोग करते हुए यह आदेश देते है कि इलाहाबाद के कथित जवाहरलाल नेहरू सयुक्तप्रान्त के जिला देहरादून की हद के किसी क्षेत्र मे न प्रवेश करेंगे, न ठहरेंगे, न रहेगे, और कथित जवाहरलाल नेहरू को आगाह किया जाता है कि अगर वह जानबूझकर इस आदेश की अवज्ञा करेंगे तो भारत

किया है। मुझे अफसोस है कि इस बारे मे मै अपना खयाल नही वदल सकता।

जैसाकि आप जानते है, मै मसूरी अपनी माता, पत्नी और वहनो के साथ सिर्फ इसलिए आया हू कि मेरी पत्नी की तन्दुरुस्ती ठीक नही है। मेरा इरादा था कि जबतक मेरे पिताजी को यहा आने की फुरसत नही मिलती, तबतक यहा ठहरता। अफगान प्रतिनिधियो से मुझे कुछ सरोकार नही है और यह एक सयोग है कि हम दोनो एक ही होटल मे ठहरे है। सच तो यह है कि उनकी मौजूदगी ने मेरे लिए कुछ असुविधा पैदा की है, क्योकि मै उन कमरो को लेना चाहता था, जहा वे ठहरे हुए है। इस प्रतिनिधि-मडल मे मेरी दिलचस्पी जरूर है, जैसीकि हर समझदार आदमी को होनी चाहिए, लेकिन उनसे खासतौर से मिलने की कोशिश करने का न कोई मेरा इरादा रहा है और न है। हम लोग यहा पिछले सत्रह दिनो से रह रहे है और इस बीच मैने प्रतिनिधि-मडल के एक आदमी को दूर से भी नही देखा है। आप इस बात को खुद जानते है, जैसाकि आपने आज सवेरे मुझे बताया था। लेकिन हालाकि अफगानियो से मिलने का और उनसे पत्र-व्यवहार करने का मेरा कोई भी खयाल नही है, फिर भी सरकार के इशारे से अपने को किसी तरह बाधने का विचार मुझे सख्त नापसद है, भले ही ऐसा करना मेरे लिए असुविधाजनक क्यो न साबित हो। यह दरअसल अन्त करण की बात है। मुझे भरोसा है कि आप मेरी हालत को समझेगे। इसलिए यह कहते हुए मुझे दु ख है कि मै आपकी इस मेहरबानी-भरी सलाह को मानने से लाचार हू और सरकार को कोई वचन नही दे सकता।

अगर सरकार मुझपर कोई आज्ञा लागू करने का फैसला करती है तो इस समय तो मै उसे मानने के लिए तैयार हू। मेरे लिए यह वडी असुविधा की बात होगी कि मै अपने घरवालो को यहा अकेला छोडकर यकायक नीचे चला जाऊ। मेरी स्त्री की सेहत ऐसी है कि वडी सावधानी से देख-रेख की जरूरत है और मेरी मा तो एकदम अपाहिज है और दोनो को बिना देख-रेख के छोडना बहुत ही कठिन है। मेरे अचानक यहा से चले जाने से मेरे पिताजी की और मेरी योजनाए बिलकुल उलट-पुलट हो जायगी और इनसे हमें वडी हैरानी और फिक्र होगी, लेकिन सरकार के वडे मामलो में

आदमी की निजी सुविधाओ पर ध्यान नही दिया जा सकता, ऐसा मेरा खयाल है।

श्री एम. एल ओक्स, भवदीय,
पुलिस सुपरिंटेडेट, जवाहरलाल नेहरू
हर्मिटेज लॉज, मसूरी।

७. जी. एफ ऐडम्स के नाम

सेवाय होटल, मसूरी,
१५ मई १९२०

प्रिय श्री ऐडम्स,

मैंने फिरसे उस मामले पर पूरी तरह विचार कर लिया है और मुझे अफसोस है कि मैं, सरकार जो चाहती है, वह वचन नही दे सकता। ऐसी हालत मे अगर सरकार मुझे हुक्म दे तो मै मसूरी छोडकर चले जाने के लिए तैयार हू। पहले तो मेरी इच्छा हुई थी कि आपका सुझाव मानकर, सरकार के बिना लिखित आज्ञा दिये ही, अपने-आप यहा से चला जाऊ, लेकिन फिर विचार करने पर मै नही समझता कि ऐसा करना मेरे लिए मुनासिब होगा, इसलिए मैं जाब्ते के नोटिस की राह देखूगा।

श्री जी एफ ऐडम्स, आई सी एस., भवदीय,
डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, जवाहरलाल नेहरू
मसूरी।

८. आदेश

चूकि स्थानीय सरकार की राय मे यह विश्वास करने के लिए तर्कसगत कारण है कि इलाहाबाद के जवाहरलाल नेहरू ऐसा काम कर रहे है, या करनेवाले है, जो जनसुरक्षा के खिलाफ है, इसलिए सयुक्तप्रात के लेफ्टिनेंट गवर्नर, भारत रक्षा कानून, १९१५ के नियम ३ द्वारा प्राप्त अधिकार का प्रयोग करते हुए यह आदेश देते है कि इलाहाबाद के कथित जवाहरलाल नेहरू सयुक्तप्रान्त के जिला देहरादून की हद के किसी क्षेत्र मे न प्रवेश करेंगे, न ठहरेंगे, न रहेगे, और कथित जवाहरलाल नेहरू को आगाह किया जाता है कि अगर वह जानबूझकर इस आदेश की अवज्ञा करेंगे तो भारत

रक्षा कानून, १९१५ के नियम ५ की उपधारा (१) के मातहत, जिसकी एक नकल इस आदेश के साथ नत्थी है, दडित किये जा सकेगे।

नैनीताल
मई, १९२०

एम. कीन,
मुख्य सचिव,
सयुक्त प्रात सरकार

श्री जे एल नेहरू देहरादून जिला आज छोड देगे।

सुपरिंटेंडेंट दून के आदेशानुसार।

एम. एल. ओक्स,
एस पी देहरादून
१६ ५ २०

९ मोतीलाल नेहरू की ओर से हारकोर्ट बटलर के नाम

बनारस,
१९ मई १९२०

प्रिय सर हारकोर्ट,

कल मैं अपने बेटे से मिला और उसने मुझे वे हालात बताये, जिनमें उसे स्थानीय सरकार के हुक्म से देहरादून जिले से निकाल दिया गया है। एम एल ओक्स को उसके लिखे खत की नकल साथ है। इसमे उसने अपनी हालत पूरे तौर पर साफ कर दी है और उससे जो वचन मागा गया था, उसे देने से उसने इन्कार कर दिया है। इससे ज्यादा वह मुझे और कोई जानकारी न दे सका।

जो हुक्म उसे मिला, उसकी वजह से उसे घर की औरतो के लिए ठीक-ठीक इतजाम किये विना ही अचानक मसूरी छोडनी पडी। औरतो में से दो (मेरी स्त्री और वहू) की सेहत अच्छी नही है। हवावदली के लिए इनका फौरन पहाड जाना जरूरी हो जाने से शार्लेविल् और सेवाय होटलो को माकूल कमरो के लिए तार दिये गए थे। इनमे से पहले में जैसी जगह चाहिए थी, नही मिल सकी। दूसरे ने हमारी जरूरत को काफी हद तक पूरी करने लायक जगह देने को कहा और वादा किया कि आगे चलकर जव वे कमरे, जो भारत सरकार ने ले रखे है, खाली होगे तो हमारी जरूरतो को ज्यादा अच्छी तरह पूरी कर सकेंगे। जो कमरे हमें मिले, वे खासे खर्च पर

लेने पडे, क्योकि पिछले तजुरबे ने हमे बता दिया था कि हवाबदली से ज्यादा फायदा तव मिल सकता है जबकि औरते होटल मे रहे और चौके-चूल्हे के झझटो से दूर रहे ।

इस साल की शुरुआत से मै आरा मे डुमराव के मुकदमे मे लगा हुआ हू । जवाहरलाल हाईकोर्ट मे अपने काम के साथ-साथ मेरा भी काम देख रहा था और यह कोई कम कुरबानी नही थी कि दोनो कामो को छोडकर वह घर की औरतो के साथ पहाड पर गया । वह बन्दोवस्त करने मे लगा हुआ था कि कुटुब की शाति अचानक 'सरकारी वजहो' ने भग कर दी । जिस दिन सुपरिटेडेट पुलिस उससे पहली वार मिले, उसी दिन सवेरे उसने अपनी छोटी वहन को स्कूल मे भरती कराया था और जव वह हुक्म पाने के वाद नीचे आ रहा था तो उसे रास्ते में मसूरी जाते हुए वे सवारी के घोडे मिले, जिन्हे इलाहाबाद से उसके इस्तेमाल के लिए भेजा गया था ।

ये हालात है, जिनमे "स्थानीय सरकार की राय मे यह यकीन करने की मुनासिव वजहे है कि इलाहाबाद का जवाहरलाल नेहरू पब्लिक की सुरक्षा के खिलाफ काम कर रहा है या करनेवाला है ।" पुलिस सुपरिंटेडेंट की जो बातचीत जवाहरलाल से हुई, उससे यह जान पडता है कि 'मुनासिब वजहे' खत्म हो जाती अगर जवाहरलाल ने नीचे गिरकर उस वात को न करने का 'पक्का वचन' दे दिया होता, जिसे करने का उसे ज़रा भी खयाल तक न था । मेरे यह कहने की जरूरत नही कि जो कुछ जवाहरलाल ने किया है उसे मै पूरी तरह ठीक मानता हू । दरअसल उसके लिए इसके अलावा कोई और रास्ता ही नही था । उसकी और मेरी सियासत को लोग अच्छी तरह जानते है । हम लोगो ने उसे कभी छिपाया नही है । हम जानते है कि वह ऐसी नही, जो सरकार को पसद हो, और उसकी वजह से जो भी तकलीफें उठानी पडें, उठाने के लिए हम तैयार है। लेकिन जवाहरलाल पर जो इलज़ाम लगाया गया है, वह उन उसूलो के ठीक खिलाफ पडता है, जिन्हे हम मानते है और जिनके लिए हम तकलीफें उठाने के लिए तैयार है । हालाकि नौजवान जवाहरलाल को हिन्दुस्तान भर के लोग जानते है और मै यकीन के साथ कह सकता हू कि खुफिया पुलिस के लोगो को छोडकर एक भी आदमी ऐसा नही मिलेगा, जो यह यकीन करे कि वह उस तरह की कोई छिपी साजिश

कर सकता है, जिसका उसपर शक किया गया है। आप खुद उससे देर तक बात कर चुके है और जैसा कि मै जानता हू, आदमी की आदत की कितनी ज्यादा और मुख्तलिफ जानकारी आपको है, मै सहज ही यह नही मान सकता कि जिस धातु का वह बना है, उसपर आप ज़रा भी शक कर सकते है। इसलिए मेरा तो यही ख्याल है कि दो मे एक बात हुई है यह हुक्म या तो किसी गलती या भूल से जारी किया गया है या ऊपर के दबाव से। अगर इनमे से एक भी बात ठीक नही है तो मुझे इस दु खभरे नतीजे पर पहुचना पडेगा कि आपकी सरकार ने अबतक परेशान न करने की जो पालिसी रखी है, उसमे तबदीली हो रही है।

हम एक-दूसरे से ३० साल से वाकिफ है और मैने यही अच्छा समझा कि अपने भावो को साफ-साफ और बिना छिपाये जाहिर कर दू। मै महज़ इतना ही जानना चाहता हू कि जो हुक्म जारी किया गया है क्या वह स्थानीय सरकार ने पूरी तरह गौर करके जारी किया था, और अगर ऐसा है तो उसकी बुनियाद क्या है ? अगर आप मेहरबानी करके ऐसा करादे कि मुझे यह जानकारी दे दी जाय तो मै आपका अहसानमद होऊगा।

मै दो-एक दिन मे बनारस से चल दूगा और मेरा पता होगा—आरा (बिहार)।

भवदीय,
मोतीलाल नेहरू

माननीय सर हारकोर्ट बटलर,
लेफ्टीनेंट गवर्नर, सयुक्त प्रात,
नैनीताल।

१० सर हारकोर्ट बटलर की ओर से मोतीलाल नेहरू के नाम

लेफ्टिनेट गवर्नर का कैप
सयुक्त प्रान्त, इलाहाबाद,
२६ मई १९२०

प्रिय श्री मोतीलाल नेहरू,

आपका १९ मई का पत्र अभी-अभी यहा इलाहाबाद मे मिला और मै उसका उत्तर तुरन्त ही उसी खुलेपन से दे रहा हू, जिससे कि आपने लिखा है।

मैं नीति में किसी तबदीली से बिल्कुल जानकार नहीं हूं, और मैं यह समझ ही नहीं सकता कि जो आश्वासन आपके बेटे से मांगा गया, उसमें गिरावट की कोई बात थी। जाहिर है कि इस मामले में हममें मतभेद है। परन्तु विश्वास कीजिये, मुझे इस बात का बड़ा खेद है कि आप, आपके पुत्र और विशेषकर आपके परिवार की महिलाओं को एक ऐसी सरकारी कार्रवाही से असुविधा हुई, जिसे आपके पुत्र ने भावना का मुद्दा बनाकर नहीं माना, लेकिन मुझे लगता है कि उसे दूसरी तरह से भी देखा जा सकता था और इससे उनमें विश्वास ही प्रकट होता। मुझे डर है कि यह पत्र आपको कोई वास्तविक संतोष नहीं दे सकेगा, लेकिन मैं उम्मीद करता हूं कि सार्वजनिक मामलों में हमारी जो भी राय हो, आप मेरी इस बात पर विश्वास करेंगे कि व्यक्तिगत जीवन में मुझे भरोसा है कि हमारे तीस साल के दोस्ती के संबंधों में किसी चीज से बाधा नहीं पड़ेगी।

भवदीय,
हारकोर्ट बटलर

माननीय पंडित मोतीलाल नेहरू,
आरा (बिहार)।

११ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[हंटर-कमेटी वह कमेटी थी, जिसे पंजाब में फौजी कानून के समय की घटनाओं की जांच के लिए भारत सरकार ने नियुक्त किया था।]

आरा,
२७ मई १९२०

मेरे प्यारे जवाहर,

मैंने हंटर-कमेटी की रिपोर्ट का और सरकारी प्रस्तावों का एसोशिएटेड प्रेस द्वारा दिया गया सार ध्यान से पढ़ा। दोनों ही हैरत में डालनेवाले दस्तावेज हैं। हमें बेखबर होकर नहीं बैठना चाहिए। तुम्हारी बार-लाइब्रेरी को जो अचानक भलमनसाहत का दौरा आया है, उस सबकी झंझटों में मत पड़ो। अब वे उस आदमी का क्या बिगाड़ेंगे, जो कम-से-कम फिलहाल उसका मेम्बर नहीं रहा है। मुझे लगता है कि उस मेम्बर की जो हाल ही में किस्मत चमकी है, उसने नेकी से बहुत दूसरी किस्म की भावनाएं पैदा की हैं। जो हो, गांधीजी २९ तारीख को सवेरे आ रहे हैं। मालवीयजी बनारस में पहले

से मौजूद है। मैंने बी० चक्रवर्ती और हसन इमाम को तार दिया है कि पजाब मेल से आये, जो आरा से २९ तारीख को सवेरे गुजरेगी, और मै उनके साथ हो लूगा। अगर तुम अपनी दुसीटर गाडी पर तडके ही चल पडो तो वक्त से बनारस पहुचकर स्टेशन पर हमें मिल जाओगे। २९ और ३० को सवेरे ही सबसे जरूरी काम हमें निपटाने है।

मैंने खास-खास अखबारो को एक प्रेस-तार के रूप मे अपना यह आदेश सभी सदस्यो को भेज दिया है कि वे जरूर आयें। दास मेरे साथ चलने की कोशिश मे है, लेकिन हर हालत मे मीटिग में मौजूद रहेगे, हालाकि यह उनके लिए बडा बेढगा वक्त होगा। हम अपनी बहस कल खतम कर रहे है और वह अपनी बहस शुरू करने के पहले कुछ छुट्टी की माग करेंगे। हम लोगो ने राजी होने के लिए साठ-गाठ कर रखी है।

अच्छा होगा कि तुम मेरे साथ चक्रवर्ती के यहा ठहरो, क्योकि हम लोगो को ज्यादातर साथ ही रहना होगा। दास, चक्रवर्ती और हसन इमाम सभी हमारे साथ नही ठहर सकेगे। मैंने श्रीमती ज्ञानेंद्र को लिख दिया है कि तुम और मै उनके साथ ठहरेगे और मैंने यह उम्मीद भी जाहिर की है कि अगर कोई दोस्त दूसरी जगह ठहरने का इतजाम न कर सके, तो वे हमारे ही कमरे मे ठहर जायगे और वह इसका कोई खयाल नही करेंगी। यह महज पेशबदी के लिए है।

अच्छा हो कि तुम अमृतसर-साजिश के मुकदमे की पूरी फाइल अपने साथ लेते आओ, लेकिन मुझे अदेशा है कि १३ अप्रैल को जलियावाला बाग मे जो प्रस्ताव पास हुआ था, वह उसमें नही होगा। सभीकी निगाह उसपर पडे बिना रह नही सकती थी। प्रिवी कौंसिल के लिए जो फाइल तैयार की गई थी और जो लीगल रिमैंबरेंसर से लाहौर में मुझे मिली थी उसे खोज लेना। उसमें सारी फाइलो के कागजात की सूची होनी चाहिए। मै नतानम् को भी तार भेज रहा हू कि कही फाइल उनके पास न हो। अगर हमे प्रस्ताव न मिल सके तो हमे जगतनारायण से कहना होगा कि वह एक सार्वजनिक बयान दे। यह मामला ऐसा तो नही कि जिसे निजी माना जाय। तुम्हारे भेजे विवरण जबने मैंने पढे है मेरा खून खौल रहा है। अब हमे काग्रेस का विशेप अधिवेशन करना चाहिए और इन शैतानो के खिलाफ तूफान खडा

कर देना चाहिए।

पूरी रिपोर्ट और कागजात अपने साथ लाना न भूलना।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

१२ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[आरा से ३ जून १९२० को मुझे भेजे गये पिताजी के पत्र का एक अश]

तुम्हारे निकाले जाने के हुक्म को तोडने के खयाल की मै बहुत जोरो से मुखालफत करता हू। अगर ऐसा करना बिल्कुल जरूरी ही होता तो बेशक मै यह सोचता ही नही कि नतीजा क्या होगा। लेकिन जैसा कि मैने तुमसे कल कहा, अबतक तुम्हारा कदम इतना ठीक रहा कि इसको आगे बढाने के लिए कुछ करना जरूरी नही है। लाजपतराय मुझसे पूरी तरह से सहमत है। ईमानदारी की बात यह है कि पिछले छ महीनो मे हम सबने काफी तकलीफे उठाई है और अब कोई भडकानेवाला काम करके मै और मुसीबते नही बुलाना चाहूगा। इसके नतीजे—आम और निजी दोनो खयालो से—इतने साफ है कि उनपर बहस करना जरूरी नही है। इसका नतीजा कुटुब को एकदम बिखेर देना होगा और सारे आम, निजी और धधे से ताल्लुक रखनेवाले काम मे उलट-पुलट करनी होगी। एक मे से एक बात निकलेगी और कुछ ऐसा होकर ही रहेगा, जिससे लाचार होकर मै तुम्हारे पीछे जेल पहुचू या कुछ ऐसी ही और बात हो। मै बात यहीपर छोड देना चाहूगा। अबतक हमारी ही जीत रही है, आगे क्या होता है, उसकी हमे राह देखनी चाहिए।

१३ मोतीलाल नेहरू की ओर से सर हारकोर्ट बटलर के नाम

कलकत्ता,
८ जून १९२०

प्रिय सर हारकोर्ट,

आपके २६ मई के खत की पहुच देने में जो देर हुई, उसके लिए माफ करे। बनारस और इलाहाबाद की मीटिंगो के लिए जब मै आरा से चल रहा था, तब मुझे वह खत मिला था और आरा लौटने के बाद फौरन ही मुझे

कलकत्ता जाना पडा ।

मेरे और मेरे घरवालो के लिए आपने जो हमदर्दी दिखाई है, और जो यह भरोसा दिलाया है कि सार्वजनिक मामलो में भले ही हम एकराय न हो, उनसे हमारे आपसी ताल्लुकात पर कोई असर न पडेगा, उसके लिए मै आपका अहसानमद हू । ताहम मुझे अफसोस है कि मै यह नही मान सकता कि किसी भी भले आदमी से इस वचन की माग कि वह किसी बाहरी ताकत के नुमाइदो से कोई गुपचुप साजिश न करेगा, इस बात को जाहिर करती है कि उसकी सरकार का उसपर यकीन है ।

आपको लिखने का मेरा मकसद सिर्फ यह था कि यह पता लगाऊ कि मेरे बेटे के खिलाफ जो कार्रवाही की गई, उसकी क्या कोई बुनियाद थी ? थी तो क्या ? और ऐसा करते हुए मैने यह बताने की कोशिश की थी कि इस तरह की कार्रवाही से, मालूम होता है कि, आपकी सरकार की अबतक की पालिसी में कोई तबदीली हो रही है । जो जानकारी मुझे चाहिए थी, वह तो आपके खत से मिली नही, और जहातक आपकी पालिसी का सवाल है, मैं देखता हू कि आपको किसी तबदीली का पता ही नही है । इसलिए हुक्म मुनासिब है या नही, इस बारे में कुछ और कहना जरूरी नही है । यह बता देना मैं ठीक समझता हू कि इसकी वजह से हम कैसी हालत मे पड गये है ।

औरतें मसूरी मे अकेली है, उनके साथ घर का कोई मर्द नही है। उनमे से दो की सेहत बडी नाजुक है और जिस सख्त गर्मी से हम गुजर रहे है, उसमे उनको मैदान मे वापस लाने का सवाल नही उठता । सिविल सर्जन उनकी देखभाल कर रहे है और बरसात शुरू होने तक सब ठीक रहा तो वे लौटकर इलाहाबाद आ जायगी । लेकिन अगर दोनो बीमारो मे से किसी की सेहत की वजह से जवाहरलाल की मसूरी में मौजूदगी जरूरी हुई तो जो हुक्म उसपर तामील हुआ है वह, उसकी फर्ज-अदायगी मे या अपनी मा या स्त्री के पास पहुचने की पूरी कोशिश करने मे रुकावट न होगा। अपनी इज्जत को छोडकर वह ऐसी शर्त, जो उससे चाही गई है, मजूर नही कर सकता, और इस तरह उसके लिए अलावा इसके कोई चारा ही न रहेगा कि स्थानीय सरकार के हुक्म की परवा न करे और इस तरह चले, मानो

वह था ही नही। हुक्मउदूली करके भी वह अपनी मा या स्त्री के इतने नजदीक नही होगा, जितना कि वह उसे भग किये बिना होगा, लेकिन उसे इस बात का सब्र होगा कि उसने अपना फर्ज अदा किया और यही चीज है जिसकी उसे परवा है। अगर ऐसा मौका आया तो वह आपको और देहरादून के सुपरिंटेडेंट को पाबदीवाले इलाके में अपने दाखिल होने के इरादे की वक्त रहते इत्तिला देगा, जिससे सरकारी लोगो को, कार्रवाई करने की जो सलाह मिले, वह कर सके।

यह रास्ता है, जिसे जवाहरलाल ने मुझसे सभी पहलुओ पर अच्छी तरह बात करके अपनाना मजूर किया है और मौजूदा हालात मे मुझे इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता मुमकिन भी नही दिखाई देता। जहातक परेशानी या खर्चे का सवाल है वह झुक गया है; लेकिन मै नही चाहूगा और न मै उससे उम्मीद करूगा कि वह उसूल के सवाल पर झुके। सरकार की कार्रवाई की वजह से मसूरी की रिहाइश खत्म होने से औरतो को, भले ही उनकी सेहत का खतरा न हो, सबसे ज्यादा तकलीफ होगी, और जो इतना खर्च हम कर चुके है, उसका भी कोई फायदा न मिलेगा। यह सब हम बरदाश्त कर सकते है, लेकिन हम ऐसा हुक्म नही मान सकते जिसे, आपके लिए इज्जत रखते हुए भी, हम गलत और बेजा समझते हैं और जिसको न मानने के अलावा हमारे सामने कोई इज्जत का रास्ता नही रह जाता।

इलाहाबाद मे रहते हुए मुझे लिखने का मौका नही मिल सका, लेकिन मुझे यकीन है कि ऊपर जो कुछ मैने कहा है, वह जवाहरलाल के विचारो की उतनी ही नुमाइदगी करता है, जितनी मेरी। लेकिन इसकी तसल्ली करने के लिए मै इस खत को उसके पास भेज रहा हू और उससे कह रहा हू कि अगर वह राजी हो तो इलाहाबाद से उसे रवाना कर दे।

मुझे लगता है कि यहा आरावाले मुकदमे के कुछ गवाहो के साथ, जिनकी गवाहिया कमीशन पर हो रही हैं, करीब-करीब एक हफ्ता लग जायगा।

भवदीय,

माननीय सर हारकोर्ट बटलर, के सी. एस. आई, मोतीलाल नेहरू

लेफ्टीनेट गवर्नर, सयुक्त प्रात।

१४. सर हारकोर्ट बटलर की ओर से मोतीलाल नेहरू के नाम

नैनीताल,
१५ जून १९२०

प्रिय श्री मोतीलाल नेहरू,

आपका ८ तारीख का पत्र मिला । औरतो की सेहत के बारे में आपने जो लिखा है, उसे देखते हुए मैंने दून के सुपरिंटेंडेट को आदेश जारी कर दिये हैं कि वह उनकी देखभाल के लिए जवाहरलाल के मसूरी लौटने पर ऐतराज न करें ।

भवदीय,
हारकोर्ट बटलर

माननीय पडित मोतीलाल नेहरू,
इलाहाबाद ।

१५. मोतीलाल नेहरू की ओर से

जून १९२०

प्रिय सर हारकोर्ट,

आपके १५ जून के पत्र के लिए धन्यवाद, जिसमे आपने खबर दी है कि जवाहरलाल के मसूरी में आने पर पाबदी लगानेवाले हुक्म को आपने वापस ले लिया । जो घटनाए हुई है उन्हे देखते हुए यह ठीक ही वक्त पर हुआ है । १४ तारीख को मेरी पत्नी की हालत बहुत खराब हुई और १८ को सिविल सर्जन ने डा. डाउलर से सलाह करके यह जरूरी समझा कि मै वहा मौजूद रहू । खुशकिस्मती से जब कर्नल बेयर्ड का तार आया तो जवाहरलाल मेरे साथ आरा में था और हम दोनो १९ के सवेरे चलकर कल यहा पहुचे ।

होटल में रहनेवाले एक पारसी सज्जन की मेहरबानी और इनायत से, जिन्होने अपने रहने के हमारे से ज्यादा अच्छे कमरो को हमारी सुविधा के लिए छोड दिया था, और मरीज के लिए दो ट्रेंड नर्सो का इतजाम कर दिया था, उनकी देखभाल हमें ठीक होती मिली, हालाकि वह बहुत कमजोर हो गई थी । आज डाक्टर आपस मे सलाह-मशविरा करेंगे, जिसमे मेजर स्ट्रोथी स्मिथ भी शामिल होगे, जो उसी गाडी से आये है, जिससे कि हम आये थे । आरा में मुझे अपना मुकदमा बडी नाजुक घडी में छोड़कर आना पडा और

मुझे जितनी जल्दी हो सके, लौट जाना है । यहा जवाहरलाल को देखभाल के लिए छोडकर मै कल लौटने की उम्मीद करता हू ।

भवदीय,

मोतीलाल नेहरू

१६ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[मेरे नाम आरा से १६ जून १९२० को लिखे गए पिताजी के पत्र का अंश]

मुझे उम्मीद है कि मालवीयजी से आम हालात पर तुम्हारी बात हुई होगी । मै तुम्हारे इस खयाल से बिल्कुल एकराय हू कि तुम्हारा पजाब जाना एकदम गैरज़रूरी है । वे कुछ मामले चुन लें और कानूनी राय लेने और अर्जीदावा तैयार करने के लिए उन्हे सारी गवाहियो के साथ पेश कर दे । दास, सरकार और मै इसके बाद आपस में विचार करके सलाह देंगे ।

मैं समझता हू कि मालवीयजी और मुझे अब कौंसिल के चुनावो के बारे में फैसला कर लेना चाहिए । मेरी समझ में उन्हे असेंबली में जाना चाहिए और मुझे स्थानीय कौंसिल में । हमे ताल्लुक रखनेवाले चुनाव-हलको को बाकायदा इसकी खबर दे देनी चाहिए । मुझे कौन-सा खास हलका चुनना चाहिए, इसका मुझे ज़रा भी अदाज नही है । अच्छा हो, तुम मालवीयजी से सारे मामले पर बातचीत कर लो । तुम्हारे लिए भी एक हलका तय हो जाना बहुत जरूरी है, क्योकि तुम अपने ही किले मे सिपहसालार के कमजोर होने की चाहे जो बात करो, मुझे यह यकीन नही कि वह ऐसा कमज़ोर है । अगर हम काग्रेस के खास इजलास के हो जाने तक चुप बैठे रहे तो देरी हो जायगी । जहातक मैं देख सकता हू यह मुमकिन नही जान पडता कि काग्रेस, काग्रेस की हैसियत से, अपनेको असहयोग से बाधे । काग्रेस इस काम के लिए एक बहुत बडा सगठन है । ज्यादा-से-ज्यादा जो हो सकता है, वह यह है कि वह इस उसूल की मजूरी दे दे, और मेंबरो को अपनी-अपनी इच्छा के मुताबिक काम करने को छोड दे । लेकिन अगर हम यह तय करे कि कौंसिल में हम अपना योग न देंगे तो हम जब भी चाहे, उसके बाहर आ सकते हैं ।

१७. मोतीलाल नेहरू की ओर से

[**इलाहाबाद से पिताजी द्वारा मुझे लिखे गये ५ जुलाई १९२० के पत्र का अंश**]

मैं कुछ खत वगैरा साथ में भेज रहा हू, जो मेरे यहा दो दिन ठहरने के बीच मिले है। मैंने इन सबको पढ लिया है। फतेहपुर के खत पर गहराई से गौर करने की जरूरत है। कल रात पुरुषोत्तम और कपिलदेव से मेरी देर तक बातचीत हुई, जिसके दौरान में पुरुषोत्तम ने इस बारे मे उन्हे लिखे गये तुम्हारे खत का एक हिस्सा पढकर सुनाया। जहातक तुम्हारे गाधीजी के कहे मुताबिक चलने की बात है, मुझे कुछ कहना नही है। यह एक तरह की भावुकता है, जो मेरी आदत के खिलाफ है। लेकिन जहातक सवाल की अच्छाई-बुराई की बात है, मुझे पूरा भरोसा नही कि गाधीजी भी ठेठ अखीर तक अपने प्रोग्राम पर डटे रहेगे। बात उन्हीपर छोड दी जाय तो वह जरूर ऐसा करेंगे। लेकिन यह एक ऐसा मामला है, जिसमे उन्हे दूसरो पर मुनहसिर करना पडता है, और ये दूसरे लोग देर-सवेर अलग हो जाते है। इसके बारे मे तो कोई शक है ही नही। यह सवाल बडा मुश्किल है और मैं यह मान लेता हू कि अभी मैं किसी पक्के नतीजे पर नही पहुचा हू। असहयोग के उसूल के साथ मेरी पूरी हमदर्दी है, लेकिन असल मे इसकी शक्ल क्या रहेगी, इसका मुझे कोई पता नही। फिलहाल जो हालत है उससे मैं लाजपतराय से, खासकर पजाब के बारे मे, एकराय हू, लेकिन मैं गाधीजी की इस बात से एकराय नही हू कि सारे हिंदुस्तान में कौसिलो का आमतौर से बायकाट हो। मैं तो यह सोचता हू कि अगर हमारी जनता हमें चुनकर कौसिलो मे भेजे और तब हम उसमें बैठने से इन्कार करे या उसकी कार्रवाई में रुकावट डालें तो इससे असहयोग के उसूल को छोडे बिना हमारे मकसद को बहुत ताकत मिलेगी। इस वक्त तो जो मैं कहना चाहता हू, वह यह है कि हममें से किसीको आखिरी फैसला नही करना चाहिए, जबतक आगे के वाक-यात सामने न आ जाय।

१८. मोतीलाल नेहरू की ओर से

चेस्टनट लॉज, अल्मोड़ा,
३ जून १९२१

मेरे प्यारे जवाहर,

नगीने से लिखा हुआ तुम्हारा खत आज सवेरे मिला । आशा है, तुम्हारा दौरा सफल रहा होगा ।

मेरी सेहत धीरे-धीरे सुधर रही है । यहा के मौसम का कोई ठिकाना नही । कोई-कोई दिन और रात बहुत गर्म होते है और कोई-कोई खासे ठडे । यहा रहते मेरा यह पाचवा दिन है और मुझे कोई शिकायत नही । कम-से-कम पाच दिन और रहू, तब कही ठीक-ठीक सुधार दिखाई देगा । यो दमा बहुत सभला हुआ है, लेकिन मै अब भी टहलने नही जा सकता । घर से सडक तक की थोडी-सी चढाई मुझे भारी पडती है ।

अली-भाइयो ने जो कदम बढाया है, उसे मै बिल्कुल पसद नही करता । गाधीजी को इस मामले मे मैने जो खत लिखा है, उसकी नकल साथ भेज रहा हू । राज ने मेरे लिए वह टाइप कर दी है । मै अपने जी की बात आधी भी नही बता पाया हू और मेरी चिट्ठी बेतरतीब है, फिर भी इससे पता चल जायगा कि मेरे मन में क्या विचार चल रहे है ।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

१९. मोतीलाल नेहरू की ओर महात्मा गाधी के नाम

चेस्टनट लॉज, अल्मोड़ा,
३ जून १९२१

प्रिय महात्माजी,

मैंने, अखबारो को दिये अली-भाइयो के बयान के बारे मे ,परसो आपको 'लिखा था । ऐसा मैंने ३१ मई के 'इडिपेंडेंट' में छपे एक सक्षिप्त विवरण की वुनियाद पर किया था । अभी-अभी मैंने पूरा वयान और उससे ताल्लुक रखनेवाले भारत सरकार के ऐलान को देखा और चैम्सफोर्ड क्लव में दी गई वाइसराय की तकरीर को भी पढा है । वडे अफसोस के साथ कहूगा कि इन सबको पढकर मुझे कोई तसल्ली नही हुई है ।

हुआ, जिसमे उसूल की बात हो, सिवा इसके कि हिंसा को कोई बढावा न मिले और यह ऐसी बात थी कि जिसके लिए दोनो में से किसी ओर कोई समझौते की ज़रूरत नही थी। मैं यह नही कहता कि इस हालत में सरकार से बातचीत करने की कोई ज़रूरत नही थी, हालाकि इसकी हिमायत मे भी बहुत-कुछ कहा जा सकता है। जब यह मालूम होगया था कि खेल तो आखिर तक खेला जायगा, तो आप और लार्ड रीडिंग जैसे इज़्ज़तदार प्रतिपक्षी के लिए यह बिलकुल मुनासिब होता कि खेल के कायदे तय करते, जिससे किसी तरफ से बेइमानी न हो। ये कायदे बेशक खेल में सभी हिस्सा लेनेवालो पर लागू होते, न कि कुछ इने-गिने अजीज लोगो पर। सबसे बडी ज़रूरत इस बात की थी कि कौन-कौन-से हथियार काम में लाये जाय, इसपर समझौता होजाय। कुछ स्थानीय सरकारें कहने को तो यह कह देती है कि वे प्रचार का जवाब प्रचार से दे रही हैं, पर दरअसल वे बुरे-से-बुरे ढग से दमन कर रही हैं। इसी तरह के बहुत-से और मुद्दे मेरी राय में बातचीत के मुनासिब मुद्दे बन सकते थे, चाहे खास मुद्दे पर कोई समझौता न हुआ होता।

मैं उम्मीद करता हू कि आप मुझे गलत न समझेंगे। अली-भाइयो की कुरबानी के लिए तारीफ में मैं किसीसे पीछे न रहूगा, और इसे मैं अपनी बडी खुशकिस्मती मानता हू कि मुझे उनकी खास दोस्ती हासिल हुई है। जो बात मेरे मन पर कुछ वक्त से वज़न डाल रही है, वह यह है कि हम लोग, जो अपने बहुत-से कार्यकर्ताओ के जेल जाने और दूसरी तकलीफो के भुगतने के लिए सीधे तौर पर ज़िम्मेदार हैं, खुद उन तकलीफो से बिलकुल बचे हुए हैं। मिसाल के लिए सरकार मुझे तकलीफ और दिमागी परेशानी पहुचाने के लिए इससे ज्यादा सज़ा का कोई तरीका नही निकाल सकती थी कि मेरे लिखे पर्चे बाटने पर वह बेकसूर लडको को जेल मे डाले। मैं समझता हू कि अब वह वक्त आगया है कि जब नेताओ को तकलीफ उठाने के मौको का स्वागत करना चाहिए और बचाव के फुसलावो से बिल्कुल इन्कार कर देना चाहिए। मामले को इस निगाह से देखते हुए मैंने अली-भाइयो के काम पर ऐतराज़ किया है। निजी रूप मे मैं उनसे प्यार करता हू।

अब मैं बिल्कुल थक गया हू। आपसे जल्द मिल पाता तो अच्छा होता। बातें करने के लिए इतना-कुछ है। यहा रहते मुझे चार दिन होगये है और

सेहत मे कुछ सुधार हुआ है, लेकिन दमा बिल्कुल गया नही है और कमज़ोरी तो इतनी कभी नही जान पडी थी। बम्बई १४ तारीख की बैठक के लिए पहुच पाऊगा, इसमे बहुत शुबहा है।

आपका,
मोतीलाल नेहरू

२०. महात्मा गाधी की ओर से

[हिन्दुस्तान के असहयोग-आंदोलन में पहला सामूहिक जेल-यात्रा-काल दिसम्बर १९२१ में शुरू हुआ। दसियो हजार लोग कानून को खास तरीके से भंग करने के कारण कैदखाने भेज दिये गए। जब हमने सुना कि महात्मा गांधी ने इस आंदोलन को वापस लेने का अचानक हुक्म दे दिया है, तब हममें से ज्यादातर जेलखाने में थे। उनमें मेरे पिताजी भी शामिल थे। कारण यह बताया गया कि उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में चौरीचौरा के किसानो की एक उत्तेजित भीड ने एक पुलिस चौकी पर हमला करके उसे जला दिया और जो थोड़े-से पुलिसवाले वहा थे, उन्हे मार डाला। जेल में हम सबको बड़ा दुःख हुआ कि किसी गाव में लोगो के एक समूह के दुराचरण के कारण एक महान् आंदोलन इस तरह अचानक वापस ले लिया गया। महात्मा गांधी उस समय आजाद थे, यानी जेलखाने में नहीं थे। हमने जेलखाने से किसी तरह, जो कदम उन्होने उठाया था उसपर, अपनी गहरी तकलीफ उनतक पहुचा दी। यह पत्र गांधीजी ने उसी अवसर पर लिखा था। यह मेरी बहन सरूप (अब विजयालक्ष्मी पडित) को मुलाकात में हमारे सामने जेल में पढ़कर सुनाने को दिया गया था।]

वारडोली,
१९ फरवरी १९२२

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे मालूम हुआ है कि तुम सबको कार्य-समिति के प्रस्तावो पर भयकर पीडा हुई है। मुझे तुमसे हमदर्दी है और पिताजी की वात सोचकर मेरा दिल टूटता है। उन्हे जो पीडा हुई होगी, उसकी मै अपने मन में कल्पना कर सकता हू। परन्तु मुझे यह भी महसूस होता है कि यह पत्र अनावश्यक है, क्योकि मैं जानता हू कि पहले आघात के वाद स्थिति सही

तौर पर समझ में आगई होगी। बेचारे देवदास की बचपन-भरी नासमझियो का हमारे दिमाग पर बहुत बोझा नही होना चाहिए। बिल्कुल सभव है कि उस गरीब लडके के पैर उखड गये हो और उसका मानसिक सतुलन जाता रहा, परन्तु इससे इन्कार नही किया जा सकता कि असहयोग-आदोलन से सहानुभूति रखनेवाली गुस्से से पागल भीड ने पुलिस के सिपाहियो की वहशियाना ढग से हत्या की। इससे भी इन्कार नही किया जा सकता कि वह भीड राजनैतिक चेतना रखनेवाली भीड थी। ऐसी साफ चेतावनी पर ध्यान न देना वडा अपराध होता।

मै बता दू कि यह चरम सीमा थी। वाइसराय के नाम मेरी चिट्ठी शकाओ से खाली नही थी, जैसाकि उसकी भाषा से ज़ाहिर है। मद्रास की करतूतो से भी मै बहुत अशान्त हुआ था, लेकिन मैने चेतावनी की आवाज़ को दबा दिया। मुझे कलकत्ता, इलाहाबाद और पजाब से हिन्दुओ और मुसलमानो के पत्र मिले थे। यह सब गोरखपुर की घटना से पहले की बात है। उनका कहना था कि सारा दोप सरकारी पक्ष का ही नही है, हमारे लोग आक्रमण-कारी, हेकड और धमकानेवाले वनते जा रहे है, हाथ से निकले जा रहे है और उनका रवैया अहिसक नही है। जहा फीरोज़पुर जिरके की घटना सर-कार के लिए अपयशकारी है वहा हम भी एकदम निर्दोष नही है। हकीम-जी ने वरेली के वावत शिकायत की। मेरे पास झज्जर के वारे में कडी शिका-यतें है। शाहजहापुर में भी टाउन हाल पर ज़वरदस्ती कब्ज़ा करने की कोशिश की गई। कन्नौज से भी खुद काग्रेस के मत्री ने तार दिया कि स्वय-सेवक उद्दड होगये है और हाईस्कूल पर धरना लगाकर सोलह वर्ष से छोटे लडको को स्कूल जाने से रोक रहे है। गोरखपुर में छत्तीस हज़ार स्वयसेवक भरती किये गए, जिनमे से सौ भी काग्रेस की प्रतिज्ञा का पालन नही करते। जमनालालजी मुझे वताते है कि कलकत्ता मे घोर असगठन है। स्वयसेवक विदेशी कपडे पहनते है और अहिसा की प्रतिज्ञा से कतई वधे हुए नही है। ये सव खवरें और दक्षिण से इससे भी ज्यादा खवरे मेरे पास थी, तव चौरीचौरा के समाचारो ने वारूद मे ज़वरदस्त चिनगारी का काम दिया और आग लग गई। मै तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि अगर यह चीज़ मुल्तवी न कर दी जाती तो हम एक अहिसक आन्दोलन के वजाय असल में हिसक सग्राम को चलाते।

यह बेशक सच है कि देश के एक कोने से दूसरे कोने तक अहिसा गुलाब के इत्र की खुशबू की तरह फैल रही है। परन्तु हिंसा की दुर्गंध भी अभी तक जबरदस्त है और इसकी उपेक्षा करना, उसे तुच्छ समझना, बुद्धिमानी नही है। हमारे इस तरह पीछे हटने से काम आगे बढेगा। आन्दोलन अनजाने मे सही रास्ते से हट गया था। अब हमने अपनी पतवार फिर सभाल ली है और सीधे आगे जा सकते है। घटनाओ को सही रूप मे देखने के लिए तुम्हारी स्थिति जितनी प्रतिकूल है मेरी उतनी ही अनुकूल है।

दक्षिण अफ्रीका का मेरा अपना अनुभव बताऊ ? जेलो में हमारे पास तरह-तरह की खबरें पहुचाई जाती थी। अपने पहले अनुभव के दो-तीन दिनो में तो मै इधर-उधर के समाचार सुनकर खुश होता रहा, लेकिन मैंने फौरन समझ लिया कि इस रिश्वतखोरी मे मेरा दिलचस्पी लेना बिल्कुल व्यर्थ है। मै कुछ कर नही सकता था। मेरे किसी सन्देश के भेजने से कोई लाभ नही था और मै व्यर्थ अपनी आत्मा को कष्ट पहुचाता था। मैंने अनुभव किया कि जेल में बैठकर आन्दोलन का पथ-प्रदर्शन करना मेरेलिए असभव है। इसलिए मै तो तबतक प्रतीक्षा ही करता रहा जबतक बाहरवालो से मुलाकात होकर खुलकर बाते नही हुई। फिर भी मेरी बात सच मानो कि मैंने दिमागी दिलचस्पी ही ली, क्योकि मैंने महसूस किया कि किसी बात का निर्णय करना मेरे अधिकार के बाहर है और मुझे मालूम होगया कि मै बिल्कुल सही रास्ते पर हू। मुझे याद है कि किस तरह हर बार मेरे जेल से छूटने के समय तक जो विचार बनते थे, वे रिहाई के बाद और रूबरू जानकारी मिलने पर तुरन्त बदल जाते थे। जो हो, जेल के वायुमडल के कारण हमारे मन में सारी बाते नही रहती। इसलिए मै चाहूगा कि तुम बाहर की दुनिया को अपने खयाल से ही निकाल दो और यही समझ लो कि वह है ही नही। मै जानता हू कि यह काम बहुत ही कठिन है, परन्तु यदि कोई गभीर अध्ययन शुरू कर दो और कोई शरीर-श्रम का काम हाथ मे ले लो तो यह काम हो सकता है। सबसे बडी बात यह है कि तुम कुछ भी करो, मगर चर्खे से न उकताओ। तुम्हारे और मेरे पास बहुत-सी बाते करने और बहुत-सी मान्यताए रखने पर अपने-आपसे अरुचि होने के कारण हो सकते है, मगर इस बात पर अफसोस करने का कभी कारण नही मिलेगा कि हमने चर्खे पर श्रद्धा केन्द्रित क्यो कर ली या

मातृभूमि के नाम पर हमने रोज इतना अच्छा सूत क्यो काता। तुम्हारे पास 'साग सिलेशियल्' है। मैं तुम्हे एडविन आर्नल्ड जैसा बेमिसाल अनुवाद तो नही दे सकता, मगर मूल सस्कृत का उल्था यो है, "शक्ति बेकार नही जाती, नष्ट तो होती ही नही। थोडे-से धर्म से भी मनुष्य कई बार गिरने से बच जाता है।" इस धर्म का आशय कर्मयोग से है और हमारे युग का कर्मयोग चर्खा है। प्यारेलाल के मार्फत तुमने मुझे खून सुखानेवाली खुराक पिलाई है, उसके बाद तुम्हारा उत्साहवर्धक पत्र आना चाहिए।

तुम्हारा,
मो. क. गाधी

प्रिय सरूप,

अगर तुम्हारा खयाल हो कि उपरोक्त पत्र से लखनऊ के बदियो को कुछ ढाढस मिल सकता है तो अगली मुलाकात में जवाहरलाल को पढकर सुना देना। वैसे भी मुझे जरूर बताना कि वहा के क्या हाल-चाल है। आशा है, तुम लोगो में से कोई दिल्ली आ रहा है। तुम्हारे नाम पिताजी के पत्रो में से एक रणजीत ने मेरे पढने के लिए भेजा था।

तुम्हारा,
बापू

बारडोली
२०. २ १९२२

प्यारेलाल बताते है कि तुम्हारे नाम भेजे हुए पत्र देर से मिल सकते है। इसलिए यह पत्र दुर्गा के मार्फत भेजा जा रहा है।

[हममें से अधिकाश गांधीजी को 'बापू' कहकर पुकारते थे, जिसका अर्थ पिता होता है। दरअसल, भारत के बहुसंख्यक लोग उन्हें 'बापू' ही कहते थे।]

२१. सरोजनी नायडू की ओर से

ताजमहल होटल,
बम्बई,
३ जून १९२२

प्रिय जवाहर,

शाबाश! हम हिम्मत से तूफान का सामना करेंगे और इन मलाह पर

चलेंगे कि हमारा काम सग्राम और हमारी शाति विजय है। मेरे विचार से बकरीद के सवाल पर पूरे[१] सम्मेलन का सुझाव बिल्कुल ठीक है और उसके लिए जगह कई कारणो से नागपुर की बजाय इलाहाबाद ही ज्यादा मुनासिब है। मशा यह है कि खिलाफत और काग्रेस की कार्यकारिणी समितियो की सयुक्त बैठक हो सके।

नागपुर-सत्याग्रह का सगठन तो ठीक है, कमी सिर्फ यही है कि स्थानीय लोग उसमें हिस्सा नही ले रहे हैं। इस खयाल से जबलपुर-सत्याग्रह सचमुच ज्यादा खरा है, और छानबीन करने पर मुझे पता लगा कि जबलपुर को उन्ही लोगो ने धोखा दिया, जिन्होंने उसे उकसाया था और उसके लिए पद्रह हजार रुपये का अनुदान देकर जाब्ते से समर्थन किया था। जो हो, मैंने उनसे कहा है कि टाउन-हाल के मामले में सारे सत्याग्रह को २० तारीख तक रोक दें। उनकी इस धारणा को ध्यान में रखते हुए कि वे पुरानी कार्यकारिणी के समर्थन से काम कर रहे हैं सत्याग्रह फौरन बन्द करने का आदेश देना अन्याय होता।

बुजुर्गवार राजगोपालाचार्य का आचरण धक्का पहुचानेवाला है और उसके साथ ही अचक सचाई से दूर है।

स्वराज पार्टी यहा खत्म-सी है और मैंने सुना है कि पटेल स्वराज पार्टी के उम्मीदवारो के खिलाफ कुछ औरो को खडा कर रहे हैं। सी. आर. दास दक्षिण में अपने भाषणो से स्थिति को खासा नाजुक बनाये दे रहे है।

जो हो, जबतक सुमेल का रत्न न मिल जाय, हम लोगो को समुद्र-मथन करते ही रहना चाहिए। पर पहले बकरीद से तो निबट लें। इशाअल्लाह वह जरूर पूरा होगा !

सप्रेम,
बहन सरोजिनी

---

[१] श्रीमती सरोजिनी नायडू के पत्रो की लिखावट को पढना बड़ा कठिन है। जहां हम समझने में असफल रहे, वहां उनकी पुत्रियो—कुमारी पद्मजा नायडू और कुमारी लीलामणि नायडू की सहायता लेनी पड़ी। यहां 'पूरे' (Full) शब्द से बहुत अधिक अर्थ नहीं निकलता, पर हममें से किसीको भी इससे अधिक उपयुक्त शब्द नहीं सूझ सका।

[स्वराज पार्टी को देशबन्धु चित्तरंजन दास और पं मोतीलाल नेहरू ने कौंसिल-प्रवेश के उद्देश्य से कांग्रेस के अन्तर्गत स्थापित किया था। इसके फलस्वरूप कौंसिल-प्रवेश के पक्षपातियो और विरोधियों में झगड़ा उठ खड़ा हुआ। कौंसिल-प्रवेश के पक्षपाती परिवर्तनवादी और उसके विरोधी अपरिवर्तनवादी कहलाये। श्री राजगोपालाचार्य अपरिवर्तनवादियों के नेता थे। इस नये घटनाक्रम के समय मै जेल में था।]

२२ महादेव देसाई की ओर से

[महादेव देसाई गांधीजी के सेक्रेटरी और प्रिय शिष्य थे।]

देहन (सूरत होकर),
५ जुलाई १९२३

प्रिय जवाहरलाल,

मै तो तुमसे मिलने की आशा लगाये हुए था और सोचता था कि तुम्हारे लम्बे और स्नेहपूर्ण पत्र का उत्तर दिल खोलकर बातें करके दूगा। मगर ऐसा न होना था। २ तारीख को हृदय की धडकन बन्द हो जाने से अचानक मेरे पिताजी चल बसे। मै उस समय आश्रम में था। भाग्य में इतना भी सतोष नही बदा था कि उनकी अन्तिम घडियो मे मै उनके पास होता। तुम्हे तो एक विलक्षण सच्चे पिता का पुत्र होने का सौभाग्य प्राप्त है, इसलिए मेरे दु ख की कल्पना कर सकते हो। पिताजी के कारण पिछले छ -सात वर्षों में मेरे जो जी में आई, करता रहा। उन्होने मुझे घर की झझटो से बिल्कुल मुक्त रखा और जो मुझे अच्छा लगा, वही प्रेमपूर्वक करने दिया। मै तो तुच्छ और निकम्मा हू, मगर वह मुझे देख-देखकर जीते थे, जैसे पडितजी तुम्हे देखकर जीते है, इसलिए मुझे भयकर पीडा है कि मैंने उनके लिए कोई भी ऐसी बात नही की, जिसे कल्पना की खीचतान करके भी सेवा कहा जा सके। वह मेरेलिए घोर परिश्रम करते रहे और मै उसके फल तो भोगता रहा, मगर उसका बदला कभी नही दे सका। प्रभु मुझे कैसे क्षमा करेगा? जब मुझे ये विचार सता रहे थे, तब मुझे पडितजी का ध्यान आया और मैंने उन्हे कुछ पक्तिया लिख दी। अगर तुम समझो कि बीमारी में उन्हे इनमे कष्ट नहीं होगा तो जहा भी वह हो, उनके पास भेज देना।

मेरा जी ठिकाने नही है कि राजनीति की बात सोच सकू। मगर मेरा खयाल है कि अगर तुम ऐसा प्रस्ताव पास करा सको, जिससे प्रान्तो को काम करने की स्वतत्रता मिल जाय तो सारा झगडा खत्म हो जाय। पता नही, नागपुर के मामले में तुम क्या करोगे, लेकिन मुझे भरोसा है कि तुम मजबूत रवैया अपनाओगे।

बहुत-बहुत प्यार।

सप्रेम,

महादेव

२३. महादेव देसाई के नाम

अगस्त १९२३

प्रिय महादेव,

यह कुछ अजीब बात है कि जिन पत्रो को लिखने की हमारी सबसे ज्यादा इच्छा रहती है, वे अवसर देर में लिखे जाते है। जाब्ते के नोट और कामकाजी चिट्ठिया तो चली जाती है, पर जिन चिट्ठियो को लिखने का हम सबसे ज्यादा विचार करते है, वे बिना लिखी रह जाती है। ६ या ७ अगस्त से, जबकि तुम्हारा मार्मिक पत्र मुझे नागपुर में मिला, मै हर रोज तुम्हारे और उस पत्र के बारे मे सोचता रहा हू। खबर मुझे नागपुर स्टेशन पर गाडी से उतरते ही मिली। रामदास ने मुझे बताई। मेरा दिल तुम्हारे दु ख से दुखी हुआ, क्योकि मै अच्छी तरह समझता था कि तुम कैसी तकलीफ में होगे। हममें से कुछ, जिन्होने भूलें की है या काफी कसूर किये है, दुनिया-दारी के मामले मे मजबूत होगये है, लेकिन वे ही बाते तुम्हारे जैसे सीधे आदमी को ज्यादा मुश्किल मालूम होगी और मै तुम्हारी कसक और आत्म-निंदा की मनोदशा को अच्छी तरह समझ सकता हू।

मुझे भी पिता के प्रेम की गहराइयो को अनुभव करने का सौभाग्य मिल रहा है और अनेक बार मैने सोचा है कि क्या उस प्रेम और लालन-पालन का, जो जन्मदिन से मुझपर बरसाया गया है, मै किसी भी रूप मे कुछ बदला चुका सका हू ? मुझे इस सवाल का सामना अक्सर करना पडा है और हर बार मुझे अपने किये पर शरम आई है। कभी बडे सवाल बीच में आ पडे है और मै परेशान और कशमकश मे रहा हूं और क्या करना चाहिए यह नही जान सका हू। बापू ने, सत्याग्रह-सभा के पुराने दिनो में, जब मेरे मन का

सघर्ष सहने की सीमा को पार कर गया था, मुझे जो सलाह दी थी, वह मै कभी नही भूलूगा। उनके तसल्ली देनेवाले शब्दो ने मेरी दिक्कते कम की और मुझे कुछ शाति मिली। तुम्हे मार्च १९१९ के वे दिन याद है, जब तुम और मै पहली बार दिल्ली में प्रिंसिपल रुद्र के घर पर मिले थे ? बापू, तुम, मै और वह छोटा डाक्टर साथ-साथ इलाहाबाद गये और फिर एक या दो दिन बाद तुम लखनऊ या शायद बनारस चले गये थे। जो हो, 'वी.' के सुझाव पर मै तुम्हारे साथ प्रतापगढ तक गया और रास्ते में वह और मै बात करते रहे। यह मेरी उनके साथ पहली गभीर और काफी लबी चर्चा थी—चार बरस पहले। ` साल कितने लबे लगते है !

तुम्हारे पिता से मिलने का मुझे सौभाग्य नही हुआ, लेकिन सिविल वार्ड के हमारे बगीचे मे तुमने उनके बारे में मुझे बताया था। मै भली-भाति इसकी कल्पना कर सकता हू कि उन्हे अपने बेटे पर गर्व रहा होगा और इस बात पर पूरा-पूरा सतोष रहा होगा कि उनकी तकलीफो और मेहनत का कितना कीमती नतीजा निकला। तुम अपनेको बेकार दुखी कर रहे हो। अपने पिता से सेवा का जो पाठ तुमने सीखा, उसे तुम बाहर दुनिया में पहुचा रहे हो और निश्चय ही अपनी निजी मिसाल से तुमने बहुतो पर असर डाला है। तुम्हारे पिता इसे बुरा नही मान सकते थे, और न यही पसद करते कि तुम देश की व्यापक सेवा छोडकर गृहस्थी के तग दायरे मे रहो।

मै थका हू और मेरा दिल बेचैन है। नागपुर मेरेलिए एक बहुत ही दुखभरा तजुरबा रहा है। मै यहा कुछ समय के लिए भीड-भाड से दूर रहकर घूमने के इरादे से आया था। लेकिन पिताजी के फिर से बीमार पडने की वजह से ऐसा न कर सका। अपनी आदत के खिलाफ मैने खुद बुखार बुला लिया, लेकिन अब उससे मैने छुटकारा पा लिया है।

जवाहरलाल

२४ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[१९२३ में नाभा राज्य के अधिकारियो ने मुझे अचानक कैद कर लिया था और बाद में मुझपर बहुत-से इलजाम लगाये, जिनमें एक साजिश का भी था। मेरे पिताजी ने जब इसे सुना तो वह बडे परेशान हुए, खासकर इसलिए कि बहुत-सी देशी रियासतें कायदे-कानूनो से बधकर नहीं चलतीं

थीं। वह मुझसे जेल में मिले और मुझे रिहा कराने के लिए चिंतित थे। इससे मुझे तकलीफ हुई, क्योकि मै नहीं चाहता था कि वह सरकार से कोई रियायत चाहे।]

२८ सितम्बर १९२३

मेरे प्यारे जवाहर,

मुझे यह जानकर तकलीफ हुई कि मेरी कल की मुलाकात ने तुम्हे कोई राहत पहुचाने की बनिस्बत तुम्हारी जेल की सुखी जिदगी के ढर्रे को बिगाड दिया। बहुत बेचैनी से सोचने के बाद मै इस नतीजे पर पहुचा हू कि फिर तुमसे मुलाकात करने मे न तुम्हारा फायदा है, न मेरा। तुम्हारी गिरफ्तारी के बाद से जो कुछ मैने किया है, उसके लिए मै साफ दिल से ईश्वर और इन्सान के सामने खडा हो सकता हू, लेकिन चूकि तुम्हारा विचार कुछ और ही है, इसलिए अलग-अलग छोरो के मिलाने की कोशिश बेकार है।

मैने कुछ बाते नोट की है और उन्हे कपिल के साथ भेज रहा हू। उनमें कोई नई बात नही, लेकिन मैने इसे अपना फर्ज समझा कि जो भी थोडा-बहुत कर सकता हू, कर दू, यह जानते हुए भी कि मेरे दिमाग की इस वक्त जो हालत हो रही है, उसमे बहुत काम की चीज नही बन पडेगी। अब कपिल जो भी खबर लायेगे उससे तसल्ली करूगा। फिलहाल मेरी समझ में नही आता कि मै करू तो क्या करू और यहा कुछ दिन इतजार ही करूगा। मेरी बिल्कुल फिक्र न करना। जिस तरह तुम जेल मे खुश हो, उसी तरह मै जेल से बाहर खुश हू।

सप्रेम तुम्हारा,
पिता

फिर से—

ऐसा कभी न समझना कि मैने यह खत गुस्से में या रज मे लिखा है। करीब-करीब सारी रात सोच-विचार के बाद मैने हालात को ठडे दिमाग से और अमली ढग से देखने की कोशिश की है। मै चाहता हू कि तुम यह खयाल न करो कि तुमने मुझे चोट पहुचाई है, क्योकि मैने ईमानदारी से यकीन किया है कि हम दोनो वाकयात की वजह से ऐसी हालत में पड गये है, जिनपर हम दोनो में से किसीका काबू नही है।

२५. मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

भुवाली, यू. पी.
७ नवम्बर १९२३

प्रिय जवाहर,

तुम्हारे १ नवम्बर के खत के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। जालन्धर, अमृतसर और खासतौर पर लाहौर में, जहा के 'नेताओ' में हद दरजे की दिमागी कोताई है, हमें तुम्हारी गैरमौजूदगी बहुत ज्यादा अखरी। जरा गौर तो करो कि 'असहयोगी लोग', जो इस बात पर जोर देते थे कि वकील अपनी वकालत छोड दे, अब इस बात पर झगड रहे है कि पजाब का सहयोग मत्री (जो इत्तफाक से मुसलमान है) हिन्दू और मुसलमानो में किस हिसाब से नौकरियो का बटवारा करता है। सन्तानम् और कुछ थोडे-से दूसरे लोगो को छोडकर मुझे लाहौर के इन नेताओ में गाधीवाद की जरा भी झलक नही मिली, और इसी पजाब की जिल्लत ने सारे हिन्दुस्तान की आखें खोल दी है। वाकई पजाब मेरे लिए एक कभी न सुलझनेवाली पहेली है। ऐसे लोग ही है, जो मौको पर इतनी बहादुरी दिखाते हैं, जिनकी तादाद ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज में सबसे ज्यादा है और जिनका पारा जरा-सी देर में चढ जाता है, अग्रेजो की अपने ऊपर की गई बेहिसाब बेइज्जतियो को इतनी जल्दी भूल जाय, और परदेशी जालिमो के पैरो-तले रहना बर्दाश्त करें, बजाय इसके कि छोटी-छोटी बेकार बातो के लिए आपस मे झगडना बद करें। यह बात मेरी समझ से बिल्कुल बाहर है। हम लोगो ने वेंकटप्पैया को राजी कर लिया है कि सिखो के मसले को सुलझाने के लिए वह अमृतसर काग्रेस वर्किंग कमेटी का इजलास करें। इसमें कोई शक नही कि पजाब और यू. पी. के फिरकेवारान झगडो पर भी हम लोग चर्चा करेंगे। तुम्हारी मौजूदगी जरूरी है और अगर तुम फिर बीमार पडे तो मै तुम्हे माफ नही करूगा। अपनी सेहत ठीक रखो और अमृतसर में ठीक फैसले करने मे हमारी मदद करो। मै वहा १२ तारीख को लखनऊ मेल से पहुच जाऊगा।

इलाहाबाद में रीडिंग के स्वागत के सिलसिले में अगर तुमने लिखकर असलियत से मुझे वाकिफ न कराया होता तो शायद 'लीडर' मे छपे

जोशीले ब्यौरे को पढकर मुझे शक हो जाता कि कही इलाहाबाद के लोग तुम्हारे और पिता के तईं और उन ऊंचे मकसदो के तईं जो तुमने उनके सामने रखे है, वफादार नही रहे। लेकिन हम 'लीडर' को भी तो खूब जानते है। उसके बम्बई के खबर भेजनेवाले ने यह ऐलान करने की हिमाकत की थी कि मेरे बम्बई पहुचने पर मुश्किल से पचास आदमी स्टेशन पर मुझे लेने आये थे, जबकि वाकया यह है कि फोटोग्राफर और सिनेमावाले स्टेशन पर मौजूद थे और इतवार के 'बाम्बे क्रॉनिकल' ने जो तस्वीर छापी है, उसमें तुम शायद दो से तीन हजार तक लोग तो गिन ही सकते हो। मै इतना जानता हू कि मेरे और अम्मा के वास्ते जो गाडी खडी थी उसतक पहुचने के लिए मुझे भीड चीरकर रास्ता बनाना पडा। खैर, हम लोग 'लीडर' और उसके 'मसूबो' से वाकिफ हैं।

इन्दू, श्रीमती जवाहरलाल (कमलाजी), 'स्वरूप आपा' (श्रीमती स्वरूपरानी) और पिता को मेरा प्यार।

तुम्हारा,

मोहम्मदअली

२६. मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

[मौलाना मोहम्मदअली मशहूर अली-भाइयो में से एक थे। अली-भाई हिन्दुस्तान में खिलाफत-आंदोलन के नेता थे। सन् १९२० के राष्ट्रीय आंदोलन और असहयोग में अली-भाइयो ने खास हिस्सा लिया। अली-भाइयो में मौलाना शौकत अली जेठे थे। आगे के पन्नो में उनका भी एक खत है। मौलाना शौकतअली ऊंचे कदवाले मोटे और भारी-भरकम आदमी थे। उनका जिक्र 'बडे भाई' के नाम से किया जाता था।]

फेयरी विला,
भुवाली, यू. पी.
१९२३

प्रिय जवाहर,

अपनी रिहाई के बाद अपने ही सूबे की जो पहली सियासी कान्फ्रेंस हुई, उसमें शामिल न हो सकने की मजबूरी से मुझे कितना अफसोस है, यह मै तुमसे बयान नही कर सकता, लेकिन मै समझता हू, मेरे बेजाप्ता तार से तुम्हे इत्मीनान होगया होगा कि अगर जरा भी मुमकिन होता तो मैं तुम्हारे

साथ ही होता। दिल्ली से लौटने पर मेरी तबीयत खराब रही। कई रोज तक बुखार रहा। नतीजा यह कि पहली अक्तूबर को अल्मोड़ा जाने का जो मेरा प्रोग्राम रखा गया था, वह मुझे छोड़ना पड़ा। अभी बीमारी से उठा ही था कि अल्मोड़े का एक मजबूत जत्था मुझे सिविल नाफरमानी के इस मजबूत किले मे ले आया और मुझे पुराने दोस्त सर विलियम मैरिस (या मैलिस=दुश्मनी) के पीछे-पीछे एक नेमिसिस[1] की तरह वहा जाना पड़ा।

मेरे यहा से दिल्ली जाने के बाद मेरी लड़की का बुखार काफी उतर गया। उन दिनो यहा मौसम खुश्क और खुला था। औसतन तीसरे पहर को बुखार १००° और शाम को १०१° रहता था, लेकिन मेरे लौटने से एक-दो दिन पहले फिर यहा बारिश शुरू होगई। नतीजा यह हुआ कि आगे के दस दिनो तक बुखार धीरे-धीरे बढकर फिर १०३° पर पहुच गया। लेकिन ५ तारीख से अमीना फिर बेहतर है। अब तीसरे पहर उसका बुखार १००° रहता है और शाम को १०१४° हो जाता है। दरअसल मुझे उम्मीद है कि अक्तुबर में उसकी सेहत बहुत सुधर जायगी। मै चाहूंगा कि अक्तूबर के पूरे महीने में उसके पास रहूं, ताकि इस मौसम में उसकी ठीक-ठीक देखभाल हो सके और इस तरह पूरा-पूरा फायदा उठाया जा सके। लेकिन शौकत किसी दिन भी अब जेल से रिहा हो सकते है और उसकी वजह से मुझे लगातार घूमना होगा। मैं अब बम्बई जा रहा हूं। अगर शौकत की रिहाई आखिरी दिन यानी ३१ अक्तूबर से पहले न हो सकी, तो मैं ७ नवम्बर से पहले लौटने की उम्मीद नही कर सकता। कुदरतन अमीना नहीं चाहती कि मै उसे छोड़कर जाऊं। बड़ी मुश्किल से उसने मुझे १७ और १८ तारीख के लिए जालन्धर जाने की इजाजत दी है। इस काम के लिए १५ तारीख को यहां से रवाना होने का मेरा इरादा था, लेकिन चूंकि मौलाना अब्दुल बारी ने, जिन्होंने बड़ी मेहरबानी से मुझे लखनऊ जाने से माफी दी थी और जो खुद वहां आना चाहते थे और दो बार जिनकी रवानगी मजबूरन रुक गई, अब भुवाली से १४ तारीख को लखनऊ जाना तय किया है। वहा से मैं १६ को जालन्धर चला जाऊंगा। १६ को पजाब मेल मे तुम भी मेरे साथ चलना। हमें बहुत-सी बातें करनी हैं और फैसले करने हैं।

---

[1] गुनाहो को सजा देनेवाली एक यूनानी देवी

अपनी न टलनेवाली गैरमौजूदगी का मुझे बडा अफसोस है। मेहरबानी करके इसकी इत्तिला अपनी कान्फ्रेंस को दे देना। सच मानो, अगर मैं वहा आ सकता, तो आनाकानी न करता। उम्मीद है कि तुम्हारी कान्फ्रेंस यू. पी के माथे से इस कालिख को जल्दी-से-जल्दी मिटा देगी कि वह बिखरा हुआ सूबा है।[1] सूबाई काग्रेस की बैठक को काशी की पाक मिट्टी से मजबूत सगठन—नेशनल काग्रेस के सगठन—का पैगाम भेजना चाहिए, ऐसे सगठन का पैगाम, जिसका मकसद हो यूरोप के पैरोतले अनगिनत तकलीफ और बेइज्जती बर्दाश्त करती, गिरी और दबी इन्सानियत को मजबूत करना, और इस कान्फ्रेंस से हम सब लोग सचमुच 'शुद्ध' होकर जाय—सब तरह की तगदिली, दकियानूसी और बेबरदाश्तगी से पाक होकर, ताकि हम अपने वतन को गुलामी की जजीरो से आजाद कर सके—उस गुलामी से जो सिर्फ बदन की ही गुलामी नही है, बल्कि जमीर की भी है। खुदाबदताला तुम्हारी कोशिशो को कामयाब करे और अपनी रहमत से हम सबको फतह के लिए नया हौसला, मजबूती और इरादा बख्शे। अगर काशी में अब भी पुराने जमाने की रूहानियत का कुछ भी हिस्सा बाकी है तो हमें अपने सिपहसालार गाधीजी के काम को मजहबी लगन और फकीराना तरीके से फिर से शुरू कर देना चाहिए। सिर्फ इसी रास्ते पर चलने से हिंदुस्तान को, पूरब को, सच यह कि सारी इन्सानियत को, निजात मिल सकती है।

तुम सबको प्यार।

तुम्हारा,
मोहम्मदअली

२७ लाला लाजपतराय की ओर से

दी तिलक स्कूल ऑव पालिटिक्स,
लाहौर,
१९ नवम्बर १९२३

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। श्री तारकनाथ दास का खत मैंने पढ लिया। वह

---

[1] मौलाना ने यहा यू. पी.—यूनाइटेड प्रॉविन्सेज—के नाम पर व्यग किया है। यूनाइटेड का मतलब संयुक्त—एक—होता है, जबकि वह सूबा अपनी फूट के लिए बदनाम था।

लौटा रहा हू । उनके कुछ सुझाव अच्छे है और काग्रेस के नेताओ को उनपर जरूर विचार करना चाहिए । मै उम्मीद करता हू कि कोकानाडा मे या इससे पहले भी उनपर विचार करने का मौका मिलेगा । 'अकाली रक्षा समिति' के सबध मे तुम्हारे पिताजी ने अकाली नेताओ के साथ जो व्यवस्था की थी, उसके बारे मे मुझे अभीतक कोई सूचना नही मिली और जबतक मुझे उनसे कोई खबर न मिले, तबतक मै कोई कदम नही उठाना चाहता । मै अपने मे काफी ताकत महसूस नही कर रहा हू, और मुमकिन है कि कुछ दिनो के लिए मै यकायक गायब हो जाऊ । मैने तुम्हारा प्रोग्राम नोट कर लिया है और उसमे मुझे कोई ऐतराज नही है । आशा है, तुम अपनी सेहत का ध्यान रखोगे । एक ऐसे आदमी की सलाह, जो खुद अपनी तन्दुरुस्ती का ध्यान नही रखता, तुमको अजीब-सी लगेगी ।

सप्रेम तुम्हारा,
लाजपतराय

[तारकनाथ दास हमारे काग्रेस-कार्य के बारे में अक्सर तरह-तरह के सुझाव देते रहते थे ।

अकाली सिख उस समय गुरुद्वारो के बारे में आन्दोलन कर रहे थे और उनके अनेक नेता गिरफ्तार कर लिये गए थे । काग्रेस उनकी पैरवी करने में मदद दे रही थी ।]

२८ मौलाना शौकतअली की ओर से

सुलतान मैनशन,
डोगरी, बम्बई
२९ नवम्बर १९२३

मेरे प्यारे जवाहर,

लो अपने हाथ से मै ये चद सतरें लिख रहा हू । तुम्हारा बडा भइया चोरो और कसाइयो के हाथो में पड गया था, जिन्होने उसके 'गोश्त की बोटियो' के लिए खास पसदगी दिखाई । मेरा जख्म अभी तक ताजा है और मुझे चैन नही लेने देता । जहातक आराम और चैन का सवाल है फिलहाल तो हमारे लिए वह मुमकिन नही, इसलिए कि अव्वल तो अजीज मुलाकातियो से मिलने से इन्कार नही किया जा सकता, फिर मेरे लिए

धधे के सिलसिले में बहुत-सा काम करने को पड़ा था और इन सबसे ज्यादा मेरी दिमागी मसरूफियत है। ताहम अब मैं बेहतर महसूस कर रहा हू और ४ तारीख को तुम्हारे पास इलाहाबाद पहुचने की उम्मीद रखता हू, इसलिए नही कि वहा मानपत्रो के जरिये इज्जत मिलेगी, जिसकी कि मैं कद्र करता हू और इसलिए भी नही कि वहा के कारकून लोग मिलेंगे और उनसे साफ बातें होगी, बल्कि इसलिए कि एक मर्तबा फिर तुमसे इतमीनान से बाते करने को मिलेगी। मुझे पूरा यकीन है कि मुल्क को एक साफ, आगे ले जाने-वाली और बहादुराना पालिसी की जरूरत है और अल्लाह ने चाहा तो हम स्वराज्य लेकर रहेंगे और फिर अपने 'प्यारे नेता' को रहनुमाई के लिए अपने बीच पायगे। या हजारो की तादाद मे हम उनके पास जेल मे पहुचेंगे और वही जेल के भीतर अपनी कान्फ्रेंसें करेंगे। मेरे अदर सस्ती शहादत की कोई तमन्ना नही है और जेल मे रहने के बजाय मैं आजाद रहना पसन्द करता हू। लेकिन मैं महज काम करने के लिए आजाद रहना चाहता हू, न कि आवारागर्दी या ठाली बैठने के लिए। बाकी बातें मिलने पर होगी। मा, कमलाबहन, स्वरूपबहन, छोटी इन्दू और नेहरू-खान्दान के तमाम लोगो को, जिनमें उमाबहन भी शामिल है, मेरा सलाम।

प्यार के साथ,

तुम्हारा,
शौकतअली

२९ मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

[मौलाना मोहम्मदअली उस समय अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे और मैं कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरियो में से एक था।]

नेशनल मुस्लिम यूनीवर्सिटी,
अलीगढ

निजी

१५ जनवरी १९२४

प्रिय जवाहर,

अभी-अभी तुम्हारा खत मिला। मैं फिर एक मर्तबा तुम्हारी बेजा नरमी के खिलाफ 'सख्ती के साथ अपनी नाराजगी' जाहिर करना चाहूगा। प्यारे जवाहर, सिर्फ इसीलिए मुझे तुम्हारा सेक्रेटरी रहना पसन्द है कि चूकि वर्किंग कमेटी के चद मेंबर सेक्रेटरी की हैसियत से तुमपर एतबार नही

में रहना जरूरी है ? एक अच्छे हिन्दू साथी का दौरे पर मेरे साथ रहना निहायत जरूरी है। अगर तुम नही चल सकते तब कोई और नाम सुझाओ।

जहातक वर्किंग कमेटी की बैठक का सवाल है, जनवरी के अखीर मे कोई भी सुभीते की तारीख तय कर लो, क्योकि उससे पहले बैठक बुलाना मुमकिन नही होगा, सिवा इसके कि महात्माजी की बीमारी की वजह से हमे पहले पूना जाना पडे। क्यो न पूना मे ही बैठक कर ली जाय।

मुझे तुम्हारा तार मिला, जिसमें तुमने लाजपतराय का तार शामिल किया है। पता नही वह हमे क्या समझते है जबकि वह यह कहते है कि हम महात्माजी की रिहाई के लिए सारे मुल्क की तरफ से माग करवाने का इतजाम करें। मै समझता हू कि हमारे दोस्त मे सिविल नाफरमानी की जो भावना रही होगी उसे भी उन्होने कामयाबी के साथ निकाल फेका है। जो सरकार महात्माजी को बीमारी की वजह से छोडती है, वह शायद उन्हें इससे कही ज्यादा खतरनाक बीमारी के बाद जेल मे नही रखेगी। लेकिन गाधीजी की रिहाई की माग हमें मालवीय और गौड जैसे लोगो पर छोडनी होगी और लालाजी को, जो जाहिरा उसी गिरोह के मालूम होते है, खुल्लमखुल्ला उस गिरोह मे शामिल हो जाना चाहिए। क्या यह मजाक नही मालूम पडता कि जो लोग सबसे ज्यादा गाधीजी की भावनाओ के खिलाफ थे वे ही सबसे ज्यादा बुलन्द आवाज में सरकार से उनकी रिहाई की माग कर रहे है ? हमारी भी गाधीजी की रिहाई की माग है, और वह लाजमी तौर पर हमें मुल्क से करनी चाहिए।

इन्दू और तुम्हारी बहन को प्यार और तुम्हारी मा और बीवी को मेरी बदगी।

तुम्हारा,
मोहम्मदअली

[तिलक स्वराज्य फड गांधीजी की प्रेरणा पर, कांग्रेस द्वारा चलाये जानेवाले असहयोग-आन्दोलन के लिए धन की व्यवस्था करने के लिए, चालू किया गया था। यह अखिल भारतीय फंड था और उसमें १ करोड़ रुपया एकत्र करने का लक्ष्य रखा गया था। यह लक्ष्य पूरा कर लिया गया था। इस धन का ज्यादा हिस्सा तो प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों द्वारा या उनकी मारफत और कुछ केन्द्रीय संगठन द्वारा खर्च किया गया था।]

३०. मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

[इस पत्र में उस विवाद का जिक्र है जो कुंभ-मेले के अवसर पर इलाहाबाद में उठ खड़ा हुआ था। सरकार ने उस जगह, जहां यह घटना हुई, रोक लगा दी थी। मेले में आये हुए हिन्दुओं की भारी भीड़ में इससे बड़ी बेचैनी फैल गई थी और दरअसल उनमें से कुछने सरकारी आदेश को भंग कर डाला। मुझे संयोगवश इसमें कूदना पड़ा। मैंने इस घटना का 'मेरी कहानी' में जिक्र किया है।]

जामिया मिल्लिया इसलामिया,
अलीगढ
२१ जनवरी १९२४

प्रिय जवाहर,

यह समझकर कि अगर कोई सीधा तार भेजकर मझे इत्तला न दे मैं मालवीयजी के साथ तुम्हारी गिरफ्तारी के बारे मे रोज सवेरे 'लीडर' के सफो को छान डालता था, लेकिन आज के 'लीडर' को देखकर मेरी दुविधा मिट गई, क्योकि इससे मुझे मालूम होगया कि आखिरकार पडितजी गवर्नर को सही रास्ते पर ले आये। वह न सिर्फ प्रयाग आया, बल्कि, गगा-जमुना और तीसरी नजर न आनेवाली पाक नदी जो सगम पर उन दोनो के नीचे बहकर त्रिवेणी बनाती है, उनको अपने इतजाम मे लेने की तुम्हारी म्युनिसिपैलिटी की तजवीज पर तुमसे अच्छी तरह बातें करने के लिए तुम्हे गवर्नमेट हाउस में ले गया। हालत का मेरा अदाजा ठीक है न ? या इस मुसीबत में पडितजी के 'अजीबोगरीब साथ' का सिर्फ नया तजुरबा हासिल करने के लिए तुम अब भी जेल जाने पर आमादा हो ? अगर कल के 'लीडर' मे मुझे तुम्हारी गिरफ्तारी की खबर न मिली तो मैं तफसील के साथ तुम्हारे तीनो खतो का जवाब देना चाहूगा। फिलहाल तो मैं तुम्हे सिर्फ यह इत्तला देना चाहता हू कि मै २४ तारीख की रात को दिल्ली जा रहा हू। वहा से २५ की रात को एक्सप्रेस से कल्याण जाऊगा और २७ को (वक्त के लिहाज से किसी गाडी मे) अपने बापू को देखने पूना जाऊगा। यह इसलिए कि १६ तारीख को मैंने पुछवाया था कि क्या मैं आ सकता हू तो मझे बताया गया कि ठीक है। लेकिन बापू नही चाहते कि हममे से कोई

अपना काम छोडकर उनसे मिलने जाय। वाद मे अन्सारी और हकीमजी से भी कहा गया कि वे भी मेरे साथ आ सकते हैं, लेकिन किसी तरह का दिखावा नही होना चाहिए। किसी किस्म का कोई शोरगुल न हो, इसलिए विना किसीको कुछ वताये हम लोगो ने जाने का इरादा किया, लेकिन डाक्टर की हैसियत से अन्सारी ने हमें फौरन जाने से रोका है। उन्हे डर है कि अगर वापू से मिलकर हम लोग अपने जज्बात न दवा सके तो उसका वापू पर अच्छा असर नही पडेगा और वह वेहद थक जायगे। इसलिए हम लोगो ने बाद में जाने का फैसला किया है। अव हम २७ तारीख को पूना पहुच रहे है। उस वक्त तक वापू मे भी ताकत आ जायगी और क्योकि २९ और ३० तारीख को मुझे वम्वई मे हाजिर रहना है, इसलिए मैं काम छोडकर भागने की वुराई से भी वच जाऊगा। अव मैं यह जानने के लिए लिख रहा हू कि क्या तुम भी इस 'तीन-मूरती' के साथ कल्याण स्टेशन पर या कही रास्ते मे शामिल होकर २७ तारीख को वापू से भेंट करना चाहोगे? तार से खवर दो कि क्या तुम हमारे साथ शामिल हो सकते हो और कहा? लेकिन और किसीसे इसका जिक्र मत करना। मेरी मुराद दोस्तो से नही है और उनको भी और किसीसे नही कहना चाहिए।

वाकी कल।

तुम्हारा,
मोहम्मदअली

फिर से —

आजकल शास्त्री का भूत मुझपर सवार है। सव नरमदलियो पर लानत, हालाकि वे 'मजदूर दल' को उसकी जीत के लिए बधाई दे रहे है। शास्त्री की गलती से मेरा दो दिन का काम जाया हुआ और अव जव मैंने अपने उन्हे भेजे तार का चार दिन तक इतजार करने के वाद उनके जवाव में अपना वयान छपने को भेज दिया तो उन्होने खत लिखकर माफी मागी। मुझे अपने वयान को छपाने से रोकना पडा।

३१. मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

माथेरान,
१५ जून १९२४

निजी

प्रिय जवाहर,

माफ करना, इधर तुम्हे कोई खत नही लिखा। तुम जानते ही हो कि

अपनी बेटी के इतकाल के बाद मुझे कुछ छुट्टी की कितनी जरूरत थी। तुम शायद महसूस कर सको कि मै कितनी लाचारी से छुट्टी नही ले सका। अप्रैल के शुरू मे शौकत फिर से बीमार पड गये। उसके बाद जुहू मे बातचीत का सिलसिला चला, और आखिर में मुझे उत्तरी हिन्दुस्तान का दौरा करना पडा, जिसमे २० मई को मै माथेरान से रवाना हुआ और तीसरी जून को यहा लौटा। मै छुट्टी कई बार मे थोडी-थोडी करके ले पाया। हालाकि मै नही चाहता था कि इस तरह कट-कटकर मुझे छुट्टी मिले। तुम्हारे ६५०।३०, ७५०।२५, ७५२।७२ और ७८६ नबर के खत यहा तब पहुचे जब मै दिल्ली, लाहौर, अलीगढ, रामपुर (सिर्फ रेलवे स्टेशन ही ब्रिटिश सरहद मे है), नैनीताल और लखनऊ गया हुआ था। तुम्हारा ८२४।५३ नम्बर का खत तब मिला जब मै सफर की थकान मिटा रहा था। अल्लाह का शुक्रिया! इन खतो के मजमूनो में कोई ऐसी बात न थी, जिसपर मै तुम्हे कोई मशविरा दे सकता, इसलिए काग्रेस के काम में दरअसल कोई हर्ज न हुआ होगा। (सदरो के आलस की वजह से काम में कोई हर्ज नही होता, क्योकि वे समझदारी के साथ मेहनती और काम करनेवाला सेक्रेटरी चुन लेते है)। तुम्हारे पिछले खत न० ८६२।४० मे कोण्डा वेंकटापय्याजी के महाराष्ट्र के चुनाव के बारे में हुए फैसले का जिक्र है, हालाकि उसमें ऐसा कोई सुझाव नही है कि मुझे उस सिलसिले मे कुछ करना है। इस फैसले से किसी अच्छाई की उम्मीद नही है, और तकदीर के लेखे की तरह अब आ पहुचा है श्री माण्डलिक का पोस्टकार्ड, जिसने आखिर मेरे अन्दर काम करने की हलचल पैदा कर दी है। ए आई सी सी. की मीटिंगो मे नजीर देना काफी बुरी बात है, लेकिन पहले से ही वैसा करना और भी बुरा है। मैने अलग से तुम्हे उसके बारे मे लिखा है और श्री पराजपे और माण्डलिक को लिखे खतो की कापिया भी साथ मे नत्थी कर दी है। मै उम्मीद करता हू कि तुम इससे रजामद होगे कि दफा १९ की आखिरी कलम का ताल्लुक किसी खास सूबे के नुमाइन्दो से न होकर पूरी ए आई सी. सी से है। मुमकिन है, मेरी नजीर से श्री माडलिक खुश न हो और अगर किसी और वास्ते नही तो 'अमन' के वास्ते ही मै उनके नुमाइन्दो को भी अहमदाबाद आकर हम लोगो के साथ बैठक मे शरीक होने देता, लेकिन

अमन मेरी तकदीर मे कहा वदा है ? इसलिए मैंने तय किया है कि कानून के मुताविक ही अमल हो। अगर कोई सूवा वक्त रहते सही तरीके से अपने नुमाइन्दे न चुन सके और इस वजह से उसकी नुमाइन्दी न हो सके तो उसे दुनियाभर से शिकायत नही होनी चाहिए। अगर हम पुराने नुमाइदो को ही बुलाते रहे तो नये नुमाइदो को चुनने की न कोई प्रेरणा रह जायगी और न प्रोत्साहन। सूबे को जो कुछ भी शिकायत है वह जरूरी तौर पर सूबे की एक्जीक्यूटिव के खिलाफ है। मेरे पास अपनी ही इतनी काफी परेशानिया है कि मुझे दूसरो की परेशानियो के लिए दुखी होने का वक्त नही। फिर भी मुझे अदेशा है कि श्री माडलिक मुझे वख्शेंगे।

लेकिन जो परेशानी टाली नही जा सकती उसके लिए महात्माजी जिम्मेवार है। तुम उस बारे मे विल्कुल खामोश हो। शौकत को छोडकर और कोई था नही, जो मेरी परेशानी बटा सकता। अब बताओ, तुम उसपर क्या सोचते हो ? बापू के साथ जुहू में मेरी जो बातें हुई मैं नही जानता कि उनका हिन्दू-मुस्लिम-तनाव पर कोई असर पडा या नही। शायद मुसलमानो की तरफ की उन्हें कतई कोई बात न मालूम होती, अगर मैं उन्हें न बताता, क्योकि मैं नही समझता कि उनसे ज्यादा मुसलमानो ने खतो-किताबत की होगी। चूकि निजी जानकारी की बिना पर मैं कोई बात नही कर सकता था, इसलिए मेरी बातचीत का मतलब सिर्फ यह सुझाव देना था कि इस मसले में मुसलमानो का भी एक पहलू है। ताहम मैं पक्की तौर पर कह सकता हू कि जहातक उनके 'पूजनीय भाई' पडित मदनमोहन मालवीय के तर्जेअमल का ताल्लुक है, मैं उनपर कोई असर नही डाल सका। वह उन्हें हम सबके मुकाबले अच्छे दिखाई दिये और फिर भी शौकत और मुझपर यही असर रहा कि माननीय पडितजी के बारे मे बापू दूसरी ही राय रखते है। अगर बापू उन बातो पर यकीन करते है, जो वे पडितजी के बारे में कहते है—और इसमें कोई शक नही कि वह यकीन करते है—तव कम-से-कम आनेवाले वक्त के बारे मे तो मुझे नाउम्मीद ही होना पडेगा। इस मामले में मैंने तुम्हारे पिताजी से बहुत साफ-साफ बातें की। वह बहुत-कुछ मुझसे एकराय है कि मालवीयजी गाधीवाद को हराने के लिए कमर कसे हुए है, और चूकि वह हिन्दू और मुसलमान, दोनो के नेता नही बन सकते, इसलिए

सिर्फ हिन्दुओ के ही नेता बनना चाहते है । हिन्दू-मुस्लिम-एके का ऊचा उसूल उनके सामने नही है । मेरे प्यारे जवाहर, अल्लाह जानता है कि मुसलमानो में भी उनके अपने मालवीय है और उनके और मेरे बीच किसी तरह की कोई मुहब्बत नही है । लेकिन खुदा का शुक्र है कि उनका अपनी जमात पर वह असर नही, जो पडितजी का अपनी कौम के बहुत-से लोगो पर है, क्योकि न उनमें इतनी काबलियत है, न खुद-कुरबानी के लिए उनकी शोहरत है और न उन्होने अपनी कौम की कोई खिदमत ही की है। अगर पडितजी वही सबकुछ है, जो बापू उनके बारे में कहते है तो मैं नही जानता कि मैं तुम्हे और तुम्हारे प्यारे वालिद को किस दर्जे में रखू । दरअसल मुझे तो तुम दोनो और मालवीयजी मे जमीन आसमान का फर्क नज़र आता है । लेकिन हिन्दू-मुस्लिम तनाव मेरे लिए इस वक्त फिक्र का मामला नही है । मै महसूस करता हू कि जितनी मैंने पहले उम्मीद की थी, यह तनाव उतनी जल्दी दूर होने का नही है । लेकिन जिसकी मुझे सबसे ज्यादा फिक्र है वह है बापू का स्वराज्य पार्टीवालो पर 'बिजली की तरह टूट पडना' । मैं जानता था, ऐसा होनेवाला है, फिर भी उम्मीद करता था कि शायद न हो । तुम्हारे वालिद यह मजूर तो करते है कि हमारे जैसे लोगो ने स्वराज्य पार्टीवालो के लिए आसानिया पैदा की है, लेकिन बहुत सकुचाते हुए और हिचकिचाते हुए वह हमारी मेहनत की तारीफ करते है । उनकी जैसी हालत के आदमी के लिए यह वाजिब है कि वह भारी मेहनत की कीमत महज़ मेहनत की नज़र से नही, बल्कि उसके नतीजो से आके, लेकिन यह तो तय है कि हम लोग इस 'बिजली' को गिरने से बचाने में बिल्कुल नाकामयाब रहे । इसकी खास वजह यह है कि यह बिजली आसमान से गिरी । जुहू मे बापू से जो बहुत-सी मुलाकातें हम लोगो ने की, उनमें सबसे आखरी मुलाकात मे बापू ने मुझसे और शौकत से कहा कि वह क्या करनेवाले है । मैंने आकर तुम्हे बताया, हालाकि उस वक्त मैं उम्मीद न होते हुए भी उम्मीद कर रहा था कि यह तो अभी बापू को सूझा है और हो सकता है कि वह अब भी अपना दिमाग बदल दें । फिर भी हमने उनके सामने यह सुझाव रक्खा था कि ब्रिटिश केबिनेट की मिसाल सही नहीं है और ए आई सी. सी की हालत केबिनेट की बनिस्बत कामन्स-सभा से ज्यादा मिलती-जुलती है । सच तो

यह है कि इस तरह की सारी मिसालें गलत हैं, क्योंकि ए. आई सी. सी की हालत फेडरल जमात की तरह है। यह ठीक है कि कांग्रेस में और ए आई सी सी मे नो-चेंजरो की तादाद बहुत है। लेकिन सारी सूबा कांग्रेस कमेटियो मे उनकी अक्सरियत नही है और यह बात भी कुछ अजीब-सी है कि सूबो मे जिनकी अक्सरियत हो उनसे उनके लिए इस्तीफा देने को कहा जाय, जिनकी अक्सरियत नही है। क्या मेरा यह खयाल ठीक नही है कि इस मामले मे तुम भी बापू के साथ एकराय नही हो ? अगर तुम बता सको तो मुझे जरूर अपनी बात बताओ। बापू के सुझाव की अच्छाई या बुराई के अलावा उसका 'कानूनी' पहलू भी है। क्या ऐसा कानून है, जिससे स्वराजिस्टो को इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया जा सके ? क्या ए आई सी सी का ऐसा कोई रेजोल्यूशन है कि जिसकी रू से कोई मेंबर चरखा नही कातता हो या रुई नही धुनकता हो तो उसका ऐसा करना इस्तीफा देने के बराबर समझा जा सकता है ? मुझे लगता है कि बापू के सुझाव की अच्छाई-बुराई के बारे में मेरी कोई भी राय हो, लेकिन सदर के नाते मेरा पहला फर्ज उस सुझाव के कानूनी पहलू पर गौर करना है। तुम्हारी क्या राय है ? तुम्हारे विचार से कानूनी हालत क्या है ?

मैं इस मामले में बापू से एकराय हू कि मौजूदा 'दिखावा' खत्म होना चाहिए। तामीरी प्रोग्राम के बारे में हमने लोगो के महज जबानी जमा-खर्च को बहुत काफी वक्त तक बर्दाश्त किया है और मैं समझता हू ऐसे बहुत-से कांग्रेसी है, जिनके दिल मे इसके लिए दरअसल जरा भी इज्जत नही है, लेकिन वे अपनी राय सिर्फ अकेले मे या दोस्तो में ही जाहिर करते है। मैं समझता हू कि जबतक लोग खुद करीब-करीब मजहबी जज्बात से इसको हाथ में नही लेते तबतक हम मुल्क को इसमे लगाने के लिए कैसे राजी कर सकते है ? (तुम्हें मेरे मजहबीपन के लिए जो झुझलाहट है, इसी वजह से मैंने 'करीब-करीब' लफ्ज का इस्तेमाल किया है।) इसपर मेरा खयाल है कि बापू की दलील में कही-न-कही कोई नुक्स है। कम-से-कम मुझे ऐसा लगता है कि कुछ नो-चेंजरो के चेहरो पर, जो स्वराजिस्टो के खून के प्यासे थे, एक नापाक खुशी दिखाई देती है। स्वराजिस्टो के तई बापू की मलामत को कम कराके हमने जो-कुछ अच्छाई की थी, वह उनके हाल के इस बयान

से, जिसमे उन्होने स्वराजिस्टो को निकाल बाहर करने का ऐलान किया है, खत्म होगई। सरकार को एक तरह की मदद देने की तरफ जो स्वराजिस्टो का झुकाव है उसे इस बयान से कितनी मदद मिली, यह में नही कह सकता। मै जितनी उम्मीद कर सकता था उससे कही ज्यादा तुम्हारे वालिद ने अपने-को काबू में रखा है। लेकिन शायद उनका इस तरह काबू में रहना जनता के लिए और खास-तौर से सरकार के लिए है। मुझे तुम्हारी इस पेशीनगोई के सच साबित होने का अदेशा है और वह हमसे और दूर हो जायगे, और वह भी गहरे मुखालिफ जज़बात के साथ। जैसाकि मैने हाल में (अनमने होकर) अपनी मुलाकात मे कहा है, मुझे नो-चेंजरो के द्वारा किये जाने-वाले तामीरी प्रोग्राम की कामयाबी की कही ज्यादा फिक्र है, बजाय इसके कि स्वराज्य पार्टीवाले क्या करने में कामयाब नही होते। मै जानता हू कि इस किस्म के काम के लिए जिस माहौल की जरूरत है उसे सबसे ज्यादा स्वराजिस्ट बिगाडते है, क्योकि पढे-लिखे तबके अक्सर यही देखा करते है कि कौंसिलो में स्वराज्य पार्टी के लोग क्या करते है और उसका असर इग्लैड में और वहा की और यहा की सरकार पर क्या होता है ? पढे-लिखे तबके के यही लोग आखिर जनता की रहनुमाई कर सकते है, लेकिन यह भी कोई अच्छी बात है कि हममें से जो लोग यह जानते है कि स्वराज्य पार्टीवालो के काम की तरफ टकटकी लगाये देखना बुरी बात है, वे भी इस तरह के मामलो में फिक्र करके अपना वक्त बरबाद करें। कम-से-कम हमें तो काम करना चाहिए और उन्हे बुरा-भला नही कहना चाहिए।

इन्ही बातो की इस वक्त मुझे फिक्र है। मुसलमान होने की वजह से और वह भी एक साफ दिलवाला होने से, मेरी हालत बहुत नाज़ुक है। काग्रेस का सदर होने की वजह से मै बड़े-बडे मसलो पर चुप रहकर वोट नही दे सकता, और—जैसाकि मै पसद करता—वोट देता ही नही; हालाकि छोटे-छोटे मसलो पर सदर अक्सर वोट नही देते। मुसलमान होने की वजह से मै यह भी नही कर सकता, जैसा तुमने इलाहाबाद मे किया है, कि इस्तीफा देकर छुट्टी पाऊ, क्योकि अगर मै ऐसा करता हू तो मुझे डर है कि इसका 'हिन्दू-मुस्लिम एकता' पर ज़बर्दस्त असर पड़े बिना नही रहेगा। हालात ऐसे है कि जिन लोगो ने मेरे इस्तीफे की माग की है, उन-

जैसे लोग मेरी वेइज्जती कर रहे हैं और दूसरे बहुत-से लोग मेरी लानत-मलामत कर रहे हैं, मैं एक इन्सान के तौर पर इतना भी नही कर सकता कि अपनी इज्जत के बचाव पर जोर दे सकू । अवतक मैंने अपने जज्बात अपने तक ही महदूद रक्खे थे । इन जज्वात को दूसरो पर जाहिर करने की मरजी न होने की वजह से ही इस खत के लिखने में इतनी देर हुई और अब जब मैंने इन्हे बिना सोचे-विचारे बेतरतीवी से जाहिर कर दिया है तो मेरी 'करीव-करीब ख्वाहिश' यह है—जैसा जिन्ना कहेंगे—इस खत को फाडकर रद्दी की टोकरी में डाल दो । लेकिन अपनी इस ख्वाहिश को मैं रोक रहा हू । इसीलिए यह खत भेजा जा रहा है ।

यह तो वताओ कि तुम अहमदाबाद किस रास्ते से जाओगे ? २४ की रात या २५ को सवेरे तुम मेरे साथ दिल्ली के रास्ते से क्यो नही चलते ?

इन्दू को प्यार और श्रीमती जवाहरलाल और अपनी बहन को सलाम ।

तुम्हारा,
मोहम्मदअली

फिर से—

जैसे मुझे काग्रेस की ही क्या कम फिक्रें थी और खिलाफत की भी (जिसके बारे में मौलाना अबुल कलाम आजाद ने, बिना यह कहे हुए कि उनकी मन्शा मुझसे है, अखबारो में मुझपर हमला किया है), वेचारी बूढी अम्मा फिर बीमार होगई है ।

३२ महात्मा गाधी की ओर से

[मैंने गांधीजी को अपने पत्र में लिखा था कि मुझे अपने पिताजी पर आर्थिक भार बनकर रहना दुखदायी मालूम होता है और इसलिए मैं अपने ही पैरो पर खड़ा होना चाहता हूं । कठिनाई यह थी कि मैं काग्रेस का पूरा समय देनेवाला कार्यकर्त्ता था। मेरे पिताजी ने जब यह सुना तो उन्हें बडी परेशानी हुई । इस पत्र में जिन 'हसरत' का जिक्र है वह 'हसरत मोहानी' थे । वह उर्दू के कवि थे और उन्होने क्रान्तिकारी तथा राष्ट्रीय राजनीति में बडा बहादुराना भाग लिया था ।]

१५ सितम्बर १९२४

प्रिय जवाहरलाल,

दिल को छूनेवाला तुम्हारा निजी पत्र मिला। मैं जानता हू कि इन सब चीजो का तुम बहादुरी से सामना करोगे। अभी तो पिताजी चिढे हुए है और मै बिल्कुल नही चाहता कि तुम या मै उनकी झुझलाहट बढाने का जरा भी मौका दें। सभव हो तो उनसे जी खोलकर बाते कर लो और ऐसा कोई काम न करो, जिससे वह नाराज हो। उन्हे दुखी देखकर मुझे दु ख होता है। उनकी झुझलाहट उनके दु ख की अचूक निशानी है। हसरत आज यहा आये थे। उनसे पता चला कि हर काग्रेसी के कातने-सबधी मेरे प्रस्ताव से भी उन्हें अशाति होती है। मुझे ऐसा महसूस होता है कि काग्रेस से हट जाऊ और चुपचाप तीनो काम करने लगू। उनमे जितने भी सच्चे स्त्री-पुरुष हमें मिल सकते है उन सबके खपने की गुजायश है। लेकिन इससे भी लोगो को अशाति होती है। पूना के स्वराज्यवादियो से मेरी लम्बी बातचीत हुई। वे कातने को भी राजी नही और मेरे कांग्रेस छोड देने से भी सहमत नही। उनकी समझ में यह नही आता कि ज्योही मै अपना स्वरूप छोड दूगा, मेरा कोई उपयोग नही रह जायगा। यह भद्दी स्थिति है, मगर मै निराश नही हू। मेरा ईश्वर पर विश्वास है। मै तो इतना ही जानता हू कि इस घडी मेरा क्या धर्म है, इससे आगे का मुझे मालूम ही नही। फिर मै क्यो चिन्ता करू?

क्या तुम्हारे लिए कुछ रुपये का बन्दोबस्त करू? तुम कुछ कमाई का काम हाथ में क्यो न ले लो? आखिर तो तुम्हे अपने ही पसीने की कमाई पर गुजर करनी होगी, भले ही तुम पिताजी के घर में रहो। कुछ समाचार-पत्रो के सम्वाददाता बनोगे? या अध्यापकी करोगे?

सप्रेम तुम्हारा,
मो. क. गाधी

३३. महात्मा गाधी की ओर से

[मेरे खयाल से यह पत्र गाधीजी के तीन सप्ताह के उपवास की घोषणा करने पर लिखा गया था]

१९ सितम्बर १९२४

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हे स्तब्ध नही होना चाहिए, वल्कि खुशी मनाओ कि ईश्वर मुझे अपना कर्तव्य-पालन करने का वल और आदेश दे रहा है। मै और कुछ कर ही नही सकता था। असहयोग के प्रवर्तक की हैसियत से मेरे कधो पर भारी जिम्मेदारी है। लखनऊ और कानपुर मे क्या छाप पडी, यह मुझे जरूर लिख भेजो। मुझे यह प्याला पूरा पी लेने दो। मुझे पूर्ण आन्तरिक शाति है।

सस्नेह तुम्हारा,
मो क गाधी

३४. महात्मा गाधी की ओर से

१६ नवम्बर १९२४

प्रिय जवाहरलाल,

यह पवित इस मगल-कामना के साथ लिख रहा हू कि मातृभूमि की सेवा और आत्म-दर्शन के हेतु यह शुभ दिन बार-बार आता रहे।

सभव हो तो पिताजी को लेकर जरूर आना।

सस्नेह तुम्हारा,
मो क गाधी

३५. महात्मा गांधी की ओर से

[मेरी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह कोई हफ्तेभर में चल बसा। यह तार उसी अवसर पर दिया गया था।]

तार
साबरमती
२८ नवम्बर १९२४

नेहरू, इलाहाबाद

वालक की मृत्यु से दु ख हुआ। ईश्वरेच्छा बलीयसी।

गाधी

३६. महात्मा गाधी की ओर से

२५ अप्रैल १९२५

प्रिय जवाहरलाल,

मै तीथल में हू। यह जगह कुछ-कुछ जुहू जैसी है। यहा मै वगाल की

अग्नि-परीक्षा के लिए तैयार होने को चार दिन से आराम ले रहा हू । मैं यहा अपना पत्र-व्यवहार निपटाने की कोशिश कर रहा हू । उसमें तुम्हारा वह खत भी है, जिसमें 'ईश्वर और काग्रेस' शीर्षक लेख का जिक्र है। तुम्हारी कठिनाइयो मे मेरी सहानुभूति तुम्हारे साथ है । चूकि सच्चा धर्म जीवन में और ससार मे सबसे बडी चीज है, इसलिए इसीका सबसे अधिक दुरुपयोग किया गया है, और जिन लोगो ने इन शोषको और शोषण को तो देखा और वास्तविकता को नही देख पाये, उन्हे स्वाभाविक रूप में इस वस्तु से ही अरुचि होगई। पर धर्म तो आखिर प्रत्येक व्यक्ति की वस्तु है और वह भी हृदय की वस्तु है, फिर चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारो । जो चीज मनुष्य को घोर ज्वालाओ के बीच अधिक-से-अधिक सान्त्वना देती है वही ईश्वर है। कुछ भी हो, तुम सही रास्ते पर हो। बुद्धि ही एकमात्र कसौटी हो तो भी मुझे परवा नही, हालाकि उससे अक्सर मनुष्य गुमराह हो जाता है और ऐसी गलतिया कर बैठता है जो लगभग अधविश्वास के निकट पहुच जाती है । गोरक्षा मेरे लिए केवल गाय को बचाने से कही बडी चीज है । गाय तो प्राणिमात्र का सिर्फ प्रतीक है। गोरक्षा का अर्थ है दुर्बलो, असहायो गूगो और बहरो की रक्षा। फिर तो मनुष्य सारी सृष्टि का प्रभु और स्वामी न रहकर सेवक बन जाता है । मेरी दृष्टि मे गाय दया का जीता-जागता उपदेश है। फिर भी हम तो गोरक्षा के साथ निरी खिलवाड करते है, परन्तु हमे शीघ्र ही वस्तु-स्थिति के साथ जूझना पडेगा ।

आशा है, मेरे पिछले सब पत्र तुम्हे मिल गये होगे । डा सत्यपाल का मुझे एक दु खभरा पत्र मिला है। काश तुम, कुछ ही दिन के लिए सही, पजाब जा सको । तुम्हारे जाने से उनका उत्साह बढेगा। मैं चाहता हू कि पिताजी दो महीने किसी शान्त और ठडे स्थान पर रहे, और तुम हफ्ते-दस दिन के लिए अलमोडा क्यो नही चले जाते, ताकि काम के साथ-साथ ठडी हवा मे भी सास ले सको ?

सस्नेह तुम्हारा,
बापू

३७. सरोजिनी नायडू की ओर से

दि गोल्डन थ्रेशोल्ड,
हैदराबाद (दक्षिण)
११ मई १९२५

प्यारे जवाहर,

मैं यह पत्र 'दि गोल्डन थ्रेशोल्ड' से अपनी नक्काशीदार काली लकडी की कोच पर बैठी लिख रही हू। घर के चतुष्पाद स्वामी रास तफारी, पावो नूरमी, निकोलो पिसानो और डिकडिक महजोग बडी शान से मेरे चारो ओर लेटे है, बाग मे लाल अगारे-सी दहकती गुलमोहर और सुर्ख गुलाबो के बीच प्यारी-प्यारी चिडिया गीत गा रही है। आज शाम सैर के लिए हम लोग उस्मान सागर जानेवाले है, इसलिए मीना किताबे, जूते और सुगम वर्ग पहेलियो के लिए कोश अपने सामान के साथ बाधने में लगी है। पद्मजा नई फिएट गाडी को लेकर मगन है, जो अभी-अभी बम्बई से आई है। गोविंद देर से मिलनेवाले बैंगन के भुरते और फालसे के शरबत का लच खाते-खाते मन-ही-मन प्रार्थना कर रहा है कि हे महाप्रभु, पहाडियो और सागर के बीच मेरी छुट्टी को नष्ट न होने देना!

सक्षेप मे, म घर पर हू और १९२१ के बाद, पहली छुट्टी मना रही हू—सचमुच की छुट्टी, जिसमे वाहरी चिन्ताओ, जिम्मेदारियो और कर्तव्यो के प्रत्येक नाग को इस स्वर्ग मे घुसने की मनाही है। बेहयाई के साथ, पर हिम्मत करके, मैं कुछ हफ्तो के लिए अपने मोरचे से भाग आई हू, क्योकि मेरी आत्मा को आवश्यकता थी और वह पुकार रही थी सौंदर्य के लिए फूलते वृक्षो के लिए, नीड़ बनाती हुई चिडियो के लिए, गीत लिखनेवाले कवियो के लिए, शिशुओ और श्वानो के लिए तथा पुराने मित्रो के लिए और रचनात्मक कार्यक्रम से तनिक विश्राम लेने के लिए और तथाकथित राजनीति के प्राणघातक कार्यक्रम से बचाव के लिए। मैं उचित समय पर कर्तव्यो और दायित्वो को सम्हालने के लिए लौट आऊगी, किन्तु इस बीच, मेरी इच्छा है कि तुम भी इस आह्लाद में—हैदराबाद में मीरआलम पर नौका बिहार, इधर-उधर मटर-गश्ती और भारत के वास्तविक समस्तवर्गीय समाज से भेंट करने के आह्लाद में—साझीदार बनो। कहने की आवश्यकता

नही कि 'दि गोल्डन थ्रेशोल्ड' मे मेरे माता-पिता की पीढी—लगभग प्रागैतिहासिक पीढी—से लगाकर फर्श पर बैठने और अपनी केक बिल्ली के साथ खाने तथा अपने कपडो पर शरबत फैलानेवाली नन्ही-से-नन्ही पीढी तक, इस समाज की चार पीढिया जमा हुआ करती है। तुम भी क्यो नही हडताल करते और यहा छिपने आ जाते ? मै शुऐब से भी हडताल करने को कहूगी, पर तुम्हारे दूसरे साथी लकीर के बाहर है। भगवान बचायें !

मै कलकत्ता मे कार्यकारिणी में सम्मिलित नही हो रही हू। मै हफ्तो से बीमार हू और मुझे शरीर से भी अधिक मन के लिए वातावरण और काम मे परिवर्तन की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त देशबन्धु[1] द्वारा पैदा हुई 'वर्तमान परिस्थिति' के अतिरिक्त बैठक के किसी भी अन्य कार्यक्रम मे मेरी सूझ की विशेष आवश्यकता नही जान पडती।

आशा है, पापाजी और प्यारी मामा सानद है, कमला फिर से बिल्कुल तन्दुरुस्त है और इदू अभी तक अटलाटा जैसी है—क्षिप्र-चरणा, नयनो मे उषा का आलोक लिये।

पद्मजा सबको, विशेषकर 'सुलोचना बेटी' को प्यार भेजती है। लीलामणि फिर ऑक्सफोर्ड के वातावरण मे डूब गई है और बहुत प्रसन्न है।

फिर मिलेंगे। तुम सबके लिए मै अपना पुन प्राप्त जीवनोल्लास भेजती हू।

तुम्हारी प्यारी बहन,
सरोजिनी

३८ महात्मा गाधी की ओर से

[गाधीजी ने अपने दायें हाथ को आराम देने की खातिर बायें हाथ से लिखने का अभ्यास कर लिया था। जाहिर है कि यह पत्र उन्होंने अपने बायें हाथ से लिखा था। 'यं. इ.' से मतलब गांधीजी द्वारा सम्पादित अग्रेजी साप्ताहिक 'यग इडिया' से है।]

३० सितम्बर १९२५

प्रिय जवाहर,

हम विचित्र समय में रह रहे है। सीतलासहाय अपना बचाव कर सकते

[1] देशबन्धु चित्तरंजनदास

है। आगे की घटनाओ से मुझे परिचित रखना। वह क्या है ? वकील है ? उनका कभी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो से कोई सबध रहा है ?

काग्रेस की बात यह है कि उसे जितना सादा बना दिया जाय उतना अच्छा है, ताकि जो कार्यकर्ता अब रह गये है, वे उसे सभाल सके। मै जानता हू, तुम्हारा बोझा अब बढेगा। परन्तु तुम्हे अपने स्वास्थ्य को किसी भी तरह खतरे मे नही डालना चाहिए। मुझे तुम्हारी तन्दुरुस्ती की चिन्ता है। तुम्हे बार-बार बुखार आना मुझे बिल्कुल पसन्द नही है। काश तुम खुद और कमला थोडी छुट्टी ले लो।

पिताजी का मेरे पास खत आया है। बेशक जहातक उनकी मान्यता है, उतनी दूर जाना मै हरगिज नही चाहता था। मै पिताजी को आर्थिक सहायता देने के लिए किसीसे कहने की बात सोचता तक नही। मगर किसी मित्र या मित्रो से, जो तुम्हारी सार्वजनिक सेवाओ के बदले मे तुम्हारी मदद करना अपना सौभाग्य समझें, कहने में मुझे कोई सकोच नही होगा। मै तो आग्रह करूगा कि अगर तुम्हारी जो स्थिति है और रहेगी उसके कारण तुम्हारी आवश्यकताए असाधारण न हो तो तुम्हे सार्वजनिक कोष से लेना चाहिए। मेरा अपना तो दृढ मत है कि कोई व्यवसाय करके या तुम्हारी सेवा सुरक्षित रखने के लिए किसी मित्र को तुम्हारे लिए रुपया जुटा देने देकर तुम सामान्य कोष की वृद्धि करोगे। तुरन्त कोई जल्दी नही है, मगर इधर-उधर परेशान न होकर किसी अतिम निश्चय पर पहुच जाओ। तुम कोई व्यवसाय करने का फैसला करो तो भी मुझे परवा नही होगी। मुझे तो तुम्हारी मानसिक शान्ति चाहिए। मै जानता हू कि किसी व्यवसाय के प्रबधक की हैसियत से भी तुम देश की सेवा ही करोगे। मुझे विश्वास है, जबतक तुम्हारे किसी भी निश्चय से तुम्हे पूर्ण शान्ति मिलती होगी तबतक पिताजी को कोई परवा नही होगी।

सस्नेह तुम्हारा,

बापू

मै समझता हू मुझे दाया हाथ तो य इ. के लिए ही सुरक्षित रखना चाहिए।

३९. एम ए अन्सारी की ओर से

फतेहपुरी, दिल्ली
११ अक्तूबर १९२५

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे खत के लिए मै तुम्हारा बहुत शुक्रगुजार हू। लम्बे आराम और तबदीली के बाद अब मै फिर अपनेको बहुत बेहतर पा रहा हू। लेकिन तुम्हे यह सुनकर तकलीफ होगी कि एक लम्बे अरसे तक मै दिल के दौरे से बीमार रहा और अब मुझे भारी चेतावनी दे दी गई है कि मै हर तरह के तनाव से बचू और अमन की और बधी हुई जिदगी बिताऊ। इसलिए मजबूर होकर मै अपने कामो पर बन्दिश लगा रहा हू। मै सिर्फ तालीम के कामो तक ही अपने को महदूद रखूगा। तुम जानते हो कि मेरे यूरोप जाने से पहले महात्माजी और हकीमजी ने मुझे नेशनल मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सेक्रेटरी का काम मजूर करने पर जोर दिया था। इस काम मे बडी भारी जिम्मेदारिया सिर पर आती है, जिन्हे मै तभी पूरा कर सकूगा जब मै अपना पूरे-का-पूरा बचा वक्त इसमे लगाऊ। इसलिए मैने यह तय कर लिया है कि आगे सिवा नेशनल मुस्लिम यूनिवर्सिटी के काम के और हर तरह के पब्लिक कामो से मै अपनेको अलग रक्खूगा।

बहरहाल पटना के फैसले के मुताबिक कुदरतन काग्रेस का सब काम स्वराजिस्टो के सुपुर्द किया जायगा। इसलिए मुझे इसमें कोई अडचन न होगी कि चरखा-सघ का मामूली मेबर रहते हुए मै अपनी ताकत मुल्क की तालीम के काम मे लगाऊ।

जहातक बीच-बचाव का सवाल है, मै तुम्हारे बताये तरीके से काम करूगा। मै मि भार्गव को और अजमेर-मेरवाडा सूबा काग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी को लिख रहा हू कि वे अपने मामले के पूरे बयान मुझे भेज दें। उन बयानो को पढकर और उनकी नकले दूसरी पार्टी को भेजकर, जैसाकि तुमने सुझाव दिया है, मै उनसे कुछ सवाल करूगा और बाद मे अपना फैसला देने से पहले उनसे कहूगा कि वे मुझसे मिले।

तुम्हारा,
एम. ए. अन्सारी

[राष्ट्रीय मुस्लिम यूनिवर्सिटी असहयोग-आन्दोलन के अन्तर्गत अलीगढ़ में स्थापित की गई थी। इसमें अलीगढ यूनिवर्सिटी से असहयोग करनेवाले लड़के शामिल हुए थे। मुस्लिम यूनिवर्सिटी का सही नाम जामिया मिलिया इस्लामिया था। यह अलग-अलग रूपो में चलती रही और अब दिल्ली के निकट कायम है।]

४०. महात्मा गाधी की ओर से

तार

अहमदाबाद १ दिसम्बर १९२५

जवाहरलाल नेहरू, आनद भवन, इलाहाबाद

उपवास टूटा। हालत बिल्कुल ठीक है। आशा है, कमला बराबर प्रगति कर रही होगी। सरूप यहा है।

गाधी

४१. महात्मा गाधी की ओर से

[मै अपनी पत्नी को उनके इलाज के लिए १९२६ के शुरू में यूरोप ले गया था।]

२१ जनवरी १९२६

प्रिय जवाहर,

मुझे खुशी है कि तुम कमला को अपने साथ ले जा रहे हो। हा, दोनो नही आ सको तो जाने से पहले कम-से-कम तुम्हे तो यहा आना चाहिए। देशबन्धु-स्मारक के बारे में जमनालालजी के नाम तुम्हारा पत्र काफी होगा। चर्खा-सघ के मत्री तो तुम रहोगे ही, परन्तु यदि कोई सहायक चाहिए तो शकर-लाल के पास होना चाहिए। नकशा तैयार न करने के लिए मै तुम्हे दोष नही दे सकता। तुमने अपना समय व्यर्थ नही गवाया है। तुम्हारे पास यूरोप में काम आने लायक कपडे होने चाहिए।

सस्नेह तुम्हारा,

बापू

४२ महात्मा गाधी की ओर से

आश्रम, साबरमती

५ मार्च १९२६

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पहली तारीख का पत्र मिला। हालाकि तुम तो डा मेहता के

नाम पत्र छोड ही गये हो, फिर भी दुगुनी निश्चिन्तता कर लेने के लिए मैंने भी उन्हे लिखा है। आशा है, जहाज पर कमला का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहा होगा। तुम सबको समुद्र-यात्रा से लाभ हुआ ? अधिक लिखने के लिए समय नही है।

सस्नेह तुम्हारा,
मो. क. गाधी

४३. महात्मा गाधी की ओर से

आश्रम, साबरमती,
२३ अप्रैल १९२६

प्रिय जवाहरलाल,

मै हर सप्ताह तुम्हे लिखने का विचार करता रहा और हर बार असफल रहा। लेकिन यह सप्ताह मै योही नही गुजर जाने दूगा। तुम्हारे बारे में ताजा समाचार मुझे पिताजी से मिले जब वह प्रतिसहयोगवादियो के साथ यहा आये थे। तुमने, जो समझौता हुआ वह देख लिया होगा।

हिन्दू और मुसलमान दिन-ब-दिन एक-दूसरे से दूर होते जा रहे है, परन्तु इस चीज से मुझे अशाति नही होती। किसी भी कारण से सही, मुझे महसूस होता है कि यह अलगाव इसीलिए बढ रहा है कि आगे चलकर वे सब और भी नजदीक आये।

मै आशा करता हू कि कमला को लाभ हो रहा है।

सस्नेह तुम्हारा,
बापू

[प्रति-सहयोगवादियो का एक गुट था, जिसमें प्रमुख कांग्रेसी और दूसरे लोग थे। मुख्य तौर पर यह महाराष्ट्र में था। एम. आर. जयकर और एन. सी केलकर नेताओ में से थे।]

४४ रोम्या रोला की ओर से

विलनेव (वो) विला ओल्गा
११ मई १९२६

प्रिय महाशय जवाहरलाल नेहरू,

मुझे आपका और अपने सत-मित्र गाधी का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई है। आपके नाम से हम परिचित है। कुछ ही दिन पहले हमने आपका नाम 'हिन्दुस्तान टाइम्स' मे प्रकाशित एक भाषण मे पढा था।

मुझे और मेरी बहन को आपसे मिलकर बडी खुशी होगी। क्या आपके और श्रीमती नेहरू के लिए यह सभव होगा कि आप अगले सप्ताह दोपहर-बाद यहा पधारे, हमारे साथ विला ओल्गा में चाय पीयें और कुछ घटे साथ बितायें ? मै अनुरोध करता हू कि आप मुझे बताये कि बुधवार १९ मई तथा शनिवार २२ मई के बीच कौन-सा दिन आपके लिए सबसे सुभीते का होगा ? जो दिन आपने चुना हो, यदि उस दिन मौसम अच्छा न रहे तो आप सवेरे ही हमें केवल तार कर दें कि आपका आना किसी दूसरे दिन होगा।

मै आशा करता हू कि श्रीमती नेहरू शीघ्र ही स्विट्जरलैंड की जल-वायु में अपनेको स्वस्थ अनुभव करने लगेगी। क्या आपकी नन्ही बेटी जो जेनेवा के अतर्राष्ट्रीय स्कूल मे पढती है वही है ? उसकी अध्यापिका कुमारी हारटख हमारी बहुत अच्छी मित्र है। वह बहुत भली तथा कर्तव्य-परायण महिला है। आप निश्चित मानिये कि आपकी पुत्री उनसे अधिक अच्छे, ज्ञानवान और स्नेहशील हाथो मे नही हो सकती।

प्रिय श्री नेहरू, मेरा मैत्रीपूर्ण प्यार स्वीकार कीजिये।

रोम्या रोला

फिर से—

विला ओल्गा होटल बाइरन के करीब (थोडा ऊपर) है। यदि आप नाव द्वारा आवे तो यह विलनेव के घाट से दस मिनट का रास्ता है। यदि रेल द्वारा आवें तो आप तेरिते के स्टेशन पर उतरें और वहा से वैवे विलनेव की बिजली की ट्राम पकडें (विलनेव की ओर जानेवाली), जो स्टेशन के सामने से गुजरती है और आप ट्राम को होटल बाइरन के पडाव पर रुकवायें।

४५ सरोजिनी नायडू की ओर से

बम्बई,

१५ अक्तूबर १९२६

प्यारे जवाहर,

आज सवेरे मुझे पापाजी का तार मिला कि भूल से कल की डाक से वह तुममें से किसीको समय से नही लिख सके और मैं तुम्हे लिखकर यह सूचित कर दू कि उनको आराम है और उनका स्वास्थ्य तेजी से सुधर रहा है।

शेष सब ठीक है। पापाजी शिमला जाने के पहले मसूरी में लबे आराम करने के बाद आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ थे। उसके बाद शारीरिक से भी अधिक मानसिक कारणो से—उलझी हुई राजनैतिक स्थिति, आतरिक झगडे, जिन लोगो पर उन्होने भरोसा किया था और जिनके साथ काम किया था उन्हीके नितात अयोग्य और फूट पैदा करनेवाले चक्र-कुचक्र और फिर दौरे की थकान आदि के कारण—वह पस्त होने लगे। पर मुझे लगता है, पिछले तेज बुखार के बाद अब सचमुच उनकी तबीयत सुधरने लगी है। चुनावो को लेकर वह बेकार ही परेशान है। मेरे विचार से कुल मिलाकर उनके दल के लिए परिस्थिति इतनी निराशाजनक नही है, जैसाकि अदेशा था। अगले कुछ सप्ताह निकल जाय और बिल्कुल बनावटी तौर पर पैदा किये गए और जानबूझकर जिंदा रखे गए साम्प्रदायिक, आन्तरिक, व्यक्तिगत तथा तरह-तरह के तनाव कुछ ढीले पडे तो मुझे खुशी होगी।

तुम्हारे बारे में मुझे तरह-तरह की अच्छी अफवाहे—तुम्हारे फिर से प्राप्त जीवनोल्लास के सबध में प्रफुल्लित करनेवाली—सुनाई पडी है। मुझे बडी प्रसन्नता है कि भारतीय जीवन की नीरस भयकरताओ से तुम्हें लबी छुट्टी मिल सकी। तुम्हारे लिए यूरोप तुम्हारी नवीन अभिव्यक्ति और आत्मा की व्याधियो से वास्तविक स्वास्थ्य लाभ का साधन सिद्ध हुआ होगा। आशा है, कमला का स्वास्थ्य सुधर रहा होगा। मुझे आश्चर्य है कि उसे स्विस जलवायु और स्विस लोग पसद आये होगे? स्विट्जरलैंड मुझे बहुत प्रिय नही है, यद्यपि मै पतझड के पुष्पो से आवृत हरे-भरे पठारो की पूजा करती हू। इन्दू अब तो स्विस लहजे में धडाधड फ्रेंच बोलने लगी होगी? बिट्टी, मुझे आशा है, अपनी छुट्टिया आनद से बिता रही होगी! मैंने सुना कि सरूप और रजीत का समय बहुत अच्छा कटा। काश मै भी समुन्दर पार होती! मेरा समय तो बडी परेशानी मे व्यतीत हुआ है—दौरा करते हुए, और झगडे निबटाते हुए। इस समय मै कुछ-कुछ बीमार हू। पद्मजा आनद से है, पर लीलामणि का एक बडा आपरेशन हुआ था और अब वह स्वास्थ्य लाभ कर रही है। हेंदाजी हाजी बडे उकताकर लौटे है। मौलाना सऊद के विरुद्ध बहुत-कुछ कह-सुन रहे है। शुएब भी बहुत प्रसन्न नही है। वह बम्बई मे कुछ धधा करने की बात गभीरता से सोच रहे है। अन्सारी तो इन सारे

महीनो में राजा-महाराजाओ की धाय का काम करते रहे हैं। उन्हे देखते ही लगता है कि बेहद ऊबे हुए हैं। वह लगभग वदी-से है, और उस बदी जीवन में उनके मात्र सगी-साथी है थर्मामीटर, गरारे की दवाइया और पट्टिया।

उमर की मृत्यु ने बम्बई को मेरे लिए भीषण दु स्वप्न जैसा बना दिया है—बेचारा उमर, शाहाना तबीयतवाला उमर ! पता नही, उसकी दुखी आत्मा को शाति मिली या नही। तुम्हे वह कितना प्यार करता था !

मुझे पता नही कि तुम मेरी इस घसीट को पढ सकोगे ? मेरी कलाई दर्द से जकडी है। इकबाल के शब्दो में सचमुच मैं "सर-आ-पा दर्द हू।"

नमस्कार, प्यारे जवाहर। मुझे इस बात से कितनी खुशी है कि तुम हिन्दुस्तान से बाहर हो और तुम्हारी आत्मा को अपने यौवन और गौरव और चिरतन सौंदर्य के स्वप्न को फिर से सजीव करने का अवसर मिल सका है। मा और बेटी को मेरा प्यार।

तुम्हारी प्यारी बहन,
सरोजिनी

['हेदाजी हाजी' से मतलब शायद प्रमुख मुसलमानो के उस डेपुटेशन से है जो उस समय हेजाज गया था। मेरा खयाल है कि मौलाना शौकतअली और मि. शुएब कुरेशी उसमें शामिल थे।

'उमर' से मतलब उमर सोमानी से है। वह बम्बई के एक बड़े उद्योगपति थे। उन्होने बम्बई में पहले होम रूल आन्दोलन में और बाद में कांग्रेस में महत्वपूर्ण भाग लिया था। उन्होने बहुत सारी दौलत कमाई और उसे सट्टे में खो दिया।]

४६ मोतीलाल नेहरू की ओर से

आनद भवन, इलाहाबाद
२ दिसम्बर १९२६

मेरे प्यारे जवाहर,

कह नही सकता, मैंने कितनी डाकें छोडी, लेकिन तीन से ज्यादा जरूर होनी चाहिए। मैं चुनाव का दौरा पूरा करके कल ही इलाहाबाद वापस आया

हू। इस खत के पाने से कही पहले तुम्हे नतीजो का पता लग चुका होगा। मद्रास और बगाल मे हमारा बहुमत तो नही हो सका है, फिर भी हमारी ताकत रहेगी। बिहार मे वोटो की गिनती पूरी नही हुई है, लेकिन इस सूबे के मद्रास और बगाल से पीछे रहने की उम्मीद नही है। बबई और सी पी में नतीजे अच्छे नही रहे, लेकिन यू पी. में तो नतीजा भयकर रहा। पजाब से कोई खास उम्मीद न थी और मुमकिन है, असेंबली की सभी जगहो में हमारी हार होगी—लाजपतराय के झूठो की बदौलत। असम के छोटे-से सूबे ने खूब किया है और बर्मा ने असेंबली मे अपना दो का कोटा पूरा कर दिया है। मुमकिन है, असेबली मे हमारी ताकत पिछले तीन सालो के मुकाबले कुछ ज्यादा रहे। लेकिन यू. पी कौंसिल में तो करारी हार ही होनेवाली है। पिछली मरतबा ही कुछ खास अच्छी हालत नही थी और इस मरतबा तो और भी बुरी हालत रहेगी। अपने ही सूबे मे कोई भी ठिकाने के काम करनेवाले मेरी मदद के लिए नही थे, और मुझे अपना बहुत-सा वक्त दूसरे सूबो को देना पडा, लेकिन अगर मैं अपना पूरा वक्त यू. पी को ही देता, तो भी ज्यादा अच्छे नतीजे की मुझे उम्मीद नही थी। जिस तरह का प्रचार मालवीय-लाला-दल ने मेरे खिलाफ कर रक्खा था, उसका जवाब देना मेरे बस के बाहर था। खुले तौर पर तो मुझे हिन्दू-विरोधी और मुसलमानो का हिमायती कहकर गिराया जा रहा था, और चुपके-चुपके करीब-करीब हर वोटर से कहा जाता था कि मैं गाय का गोश्त खानेवाला हू और मुसलमानो से मिलकर खुल्ले आम गो-कशी को हमेशा के लिए कानूनी कराने की कोशिश मे हू। शामजी ने इस प्रचार मे यह कहकर खासी मदद दी कि मैंने ही असेम्बली में उनके 'गोरक्षा बिल' पर बहस नही होने दी थी। वह फैजाबाद डिवीजन से असेम्बली के लिए खडे हुए थे और दो दूसरे उम्मीदवारो मे एक स्वराज्य पार्टी का था और दूसरे अमेठी के दद्दनसाहब थे। स्वराजी उम्मीदवार एक मशहूर और असरवाले वकील थे, लेकिन जीत दद्दनसाहब के पैसो की हुई। शामजी को मालवीय पैसा दे रहे थे, लेकिन उनके दल के उम्मीदवार दद्दन की जीत हुई। शामजी की तो जमानत जब्त हुई, लेकिन स्वराजी और दद्दन के बीच बराबर की दौड़ चली। सोचने की बात है कि दद्दन जैसा निकम्मा आदमी एक काबिल और सबके चाहे जानेवाले आदमी को हरा दे!

जैसा तुमने सुना होगा, पिछले दिनो बेचारी बऊआजी चल बसी। इसके बाद शामजी ने यह घिनौना नारा अपनाया—"माई मेरी मर गई, गाई मेरी माई है।"

फिरकेवारान नफरत और वोटरो को गहरी रिश्वत देने का बोलबाला था। मेरी दिलचस्पी पूरी तरह से हट गई है और अब मैं सजीदगी के साथ पब्लिक कामो की जिन्दगी से छुट्टी लेने की सोच रहा हू। यही फिक्र है कि वक्त कैसे काटूगा। मैं गोहाटी-काग्रेस का इतजार कर रहा हू और इस बीच चुप हू। मालवीय-लाला-दल बिडला के पैसो की ताकत पाकर काग्रेस पर कब्जा कर लेने की जी-तोड कोशिश में है, मुमकिन है वे कामयाब हो जायगे, क्योकि हमारी तरफ से कोई जवाबी कोशिश मुमकिन नही। काग्रेस के बाद शायद मैं एक पब्लिक ऐलान करू और उसके साथ असेम्बली की अपनी मेंबरी से इस्तीफा दे दूगा, हालाकि मैं अब भी देश के सबसे बडे दल का नेता माना जाता हू। असेम्बली या कौंसिलो में अपनी जो मौजूदा तादाद है, और जिस तरह के लोग हममें है, उनके रहते हम लोग कुछ नही कर सकते। मुझे डर है कि जल्दी ही हमारे दल के लोग फटकर और जगह जा मिलेंगे, लेकिन उसे छोड भी दिया जाय तो भी कुछ हासिल कर सकना नामुमकिन है। जहातक मुल्क में काम का सवाल है, मुझे ऐसा कुछ नही दिखाई पडता, जिससे मैं कामयाबी की उम्मीद रखकर कर सकू। हिंदू-मुस्लिम-एके के लिए मेरी नेशनल यूनियन जरूर है, लेकिन मौजूदा फिरकेवाराना तनाव की हालत मे मेरी आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज होगी। गाधीजी से मैं सलाह लूगा, लेकिन, जैसा तुम जानते हो, उनके शौको में मैं एक हद से ज्यादा दिलचस्पी नही ले सकता। हमारे एक दूसरे से दूर होनेकी वजह से तुम मुझे मुश्किल से ही सलाह दे सकते हो, लेकिन तुम्हारे खयाल जानकर मुझे खुशी होगी। मैं जानता हू, तुमसे राय मागना ठीक नही है, क्योकि तुम हिन्दुस्तान की मौजूदा सियासत से करीब नौ माह से भी ज्यादा अलग रहे हो, लेकिन तुम्हारे सुझाव कि मैं किस काम में अपने वक्त को लगाऊ काम के होगे।

चनावो ने मुझे बिल्कुल थका दिया है, लेकिन फिर भी मेरे लिए चैन नही। काशीपुर में सूबे की कान्फ्रेंस होने को है। उसके बाद ५ से ९ दिसम्बर

तक अभी सूबा कमेटी की हुडदगे की बैठक है, और आखिर मे काग्रेस है । सभी जलसो मे परेशानी की ही उम्मीद है, लेकिन इन्हे मुझे पार लगाना है, और नही तो महज़ इसलिए कि यह अदाज लगे कि कितनी सडाद आ चुकी है । मै गोहाटी कलकत्ता से सुन्दरबन होते हुए नदी के रास्ते जाने की सोच रहा हू । इतने मुश्किल के दिनो के बाद नदी पर करीब एक हफ्ता बिताने में मुझे कुछ राहत मिलेगी । तन्दुरुस्ती कुछ गिर गई है और एक्जीमा बुरी तरह उभर आया है और कही-कही रिसता है, जिसकी वजह खून की कमी और शायद गदा पानी और धूल है । यो अच्छा हू ।

पिछली डाक से घर मे किसीके पास तुम्हारा खत नही आया । नैन कहती है, शायद तुम जर्मनी गये हो । तुम्हारे पिछले खतो से मालूम हुआ था कि तुम मन्टना चले गये हो और इससे कमला की तबीयत में कुछ सुधार हुआ है । असली चीज तो टैम्परेचर है, और यह कि वह कम-से-कम एक महीने तक ठीक रहे । और बातो में सुधार को मै बहुत अहमियत नही देता । मुझे उम्मीद है कि मन्टना में कुछ हफ्ते और रहने से मन-चाहा नतीजा निकलेगा ।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

४७. मोतीलाल नेहरू की ओर से

पी. एस. खरोटी, सुन्दरबन
१५ दिसम्बर १९२६

मेरे प्यारे जवाहर,

यह खत सुन्दरबन के बीचोबीच से लिख रहा हू । मेरे साथ चलनेवाले सभी लोग रह गये और उपाध्याय और हरी को छोडकर मै करीब-करीब अकेला हू । स्वामी सत्यदेव अपने दो चेलो के साथ दूसरे दर्जे मे है । वह कलकत्ता में ही मेरे साथ चिपके थे, लेकिन समझदार इतने है कि जबतक बातचीत के लिए खास तौर पर बुलाया न जाय, अपनेको दूर ही रखते है । दूसरे मुसाफिरो के न होने की वजह से पहले दर्जे के डेक का इस्तेमाल उन्हे कर लेने दिया जाता है ।

जिस किसीने भी इसे सुन्दरबन का नाम दिया हो, बिल्कुल ठीक ही

दिया है । हिन्दुस्तान में नदी का सफर इससे सुहावना नही हो सकता और बडी खुशी है कि मैंने ऐसा सोचा । घने जगल को छोटे-बडे सभी नाप के टुकडो में काटनेवाले पानी के रास्ते में से हम धीरे-धीरे (घटे में कोई ८ मील या इससे कम) अगनबोट मे गुजर रहे हैं। मीलो तक कोई आबादी नही, लेकिन शेर से लेकर हिरन तक सभी जगली जानवर भरे पडे है । एक ही मलाल है कि मै साथ में राइफल नही लाया । सेरग (जो ७० रुपये महीने पर बोट की कमान पर है) कहता है कि मेरे पास बदूक होती तो तयशुदा रास्ते से थोडा इधर-उधर ले जाकर भी जी भरकर शिकार करा सकता था । रास्ते से बिना बहके हुए भी इक्का-दुक्का शिकार हो सकता है । नदी का रास्ता इतना पतला है कि बस अगनबोट के गुजरने की ही गुजाइश है और फिर कही अचानक इतना खुल जाता है कि मीलो तक हर तरफ पानी की शानदार चादर बिछी हुई दिखाई पडती है । पानी के इस लबे-चौडे फैलाव का पूरा या कुछ हिस्सा पार करके बोट फिर अचानक अनगिनत पतली धाराओ मे से एक मे दाखिल होती है और आगे चलकर फिर एक धरती से घिरे समुद्र में आ पहुचती है । किनारो पर तरह-तरह के छोटे-बडे जगली पेडो की कतारें है और इनके बीच में बडे-बडे और छोटे-छोटे दोनो तरह के ताड के पेड काफी छितरे हुए है । सारा नजारा बडा मनमोहक है और उसे मै घटो देखता रहता हू, और जो दूरबीन तुमने भेजी है उसकी मदद से, बोट की पुलिया पर से, जगल को काटनेवाली छोटी धाराओ के घुमाव-फिराव के पीछे, जहातक पहुच पाती है, नजर दौडाता रहता हू ।

वक्त की पाबदी इन नदी के बोटो की खासियत नही और हम लोग २२ से २४ तक किसी दिन गोहाटी पहुच सकते है । उम्मीद यही कर रहा हू कि और भी देर न लग जाय क्योकि २४ को सब्जेक्ट कमेटी की बैठक शुरू होगी । लेकिन आज रात खुलना पहुच जाने पर इस सफर का सबसे दिलचस्प हिस्सा खत्म हो जायगा, क्योकि उसके बाद हम सुन्दरवन पार कर चुके होगे और जिसे तहजीब कहा जाता है वहा पहुच चुके होगे । दो या तीन दिन बाद हम गोवा लैंडो पहुचेगे और इस बीच ऐसे नगरो को पार करेंगे, जिनकी गाइड में बडी तारीफ की गई है । गोवा लैंडो से कुछ मील ऊपर गगामाता को हम विदाई देंगे और पिता ब्रह्मपुत्र के इलाको में से घुसेंगे,

और इसकी, जैसाकि गोहाटी से आगे थोडे-से सफर का हमारा पहला तजुर्बा है, अपनी अलग ही खूबसूरती हम देखेंगे।

अभी ही मै लौटती हुई ताकत को महसूस करने लगा हू, और अगर कोई खास बात न हुई तो मै उम्मीद कर रहा हू कि सफर के पूरा होते-होते बिल्कुल ठीक हो जाऊगा।

यह खत खुलना से भेजा जायगा। आज कलकत्ता से डाक जायगी। बगाल की जो नई रेले हैं उनमें से किसी लाइन का एक छोर खुलना मे है और अदेशा है कि कही यह खत एक हफ्ते तक रुका न रहे। फिर भी अच्छा यही है कि इसे डाक में डाल दिया जाय, क्योकि कोई नही कह सकता कि अगली डाक निकलने के दिन तक क्या होगा।

तुम्हारा २३ नवम्बर का खत इलाहाबाद में मेरे वहा से रवाना होने के कुछ समय बाद पहुचा था। रजीत ने उसे मेरे पास भेज दिया और कलकत्ता रवाना होने से ठीक पहले वह मुझे मिला। जब तुमने खत लिखा तब तुम मन्टना पहुच गये थे। लेकिन तुमने यह नही लिखा कि जर्मनी वगैरा से वापसी पर तुमने कमला को कैसा पाया। उम्मीद है, अगली डाक से खुश-खबरी मिलेगी।

प्यारी नन्ही इदू को मेरी ओर से वर्षगाठ के मौके का तोहफा न मिल सका, क्योकि मै चुनावो मे घिरा रहा और दूसरो मे इतनी सूझ नही थी। मुझे बडा अफसोस है।

जब मैंने लिखा कि नैन की तदुरुस्ती उतनी ठीक नही लग रही थी जितनी कि यूरोप की लबी सफर के बाद उसे लगनी चाहिए थी, तब मुझे यह नही मालूम था कि उसके घर के नम्बर में बढती होनेवाली है। वह बिल्कुल ठीक है।

अपने २३ नवम्बर के खत मे तुमने लिखा है कि तुम्हारे पास इतने पैसे है कि १५ अक्तूबर तक काम चला सकोगे। अभी मैंने जमनालाल का पत्र, जो मेरे पास है, देखा। इसमें लिखा है कि ११ नवम्बर को तुम्हारे पास ३०० पौंड भेजे गये है। यह तुम्हे मिल गये होगे और इसके बारे में मै फिक्र नही कर रहा हू।

अपने आगे के प्रोगाम के बारे में अभी तक मै कुछ तय नही कर पाया हू।

लेकिन अपना पिछला खत भेजने के बाद उसपर सोचने का मौका ही नही मिला। गोहाटी के बाद मैं किसी मजबूत फैसले पर पहुचने की उम्मीद करता हू। इस बीच जो भी विचार इस नदी के सफर के बीच, जिसका एक हफ्ता बाकी है, उठेंगे, मैं तुम्हे लिखूगा।

सबको प्यार।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

४८ मोतीलाल नेहरू की ओर से

असम मेल,
३० दिसम्बर १९२६

मेरे प्यारे जवाहर,

गोहाटी से लौटते हुए ये चद सतरें तुम्हे उस ट्रेन में लिख रहा हू, जिसमें सबके-सब सदर, पिछले सदर और बहुत-से मेंबर चल रहे है। गाडी बहुत हिल रही है और ठसाठस भरी हुई है। हिन्दुस्तान की यह सबसे आराम की गाडी समझी जाती है, क्योकि यह गलियारेवाली गाडी है, लेकिन गलियारे में जगह-जगह अखबारी खबर भेजनेवाले जमे हुए है, और हम लोग अपनी-अपनी जगहो मे भी महफूज नही है। लबे खत के लिए तुम्हे दूसरी डाक का इतजार करना होगा। इस बीच इतना बता देना काफी है कि गोहाटी-काग्रेस उम्मीद से ज्यादा कामयाब रही। हम सभी लोग प्रतिक्रियावादिता के खिलाफ मजबूत रहे, और जो हम लोगो ने चाहा, वह बडी कसरत राय से मजूर हुआ।

श्रद्धानन्द की हत्या ने फिरकेवाराना कडवाहट को बढा दिया है और कई जगहो से बदले की खुली धमकिया आ रही है। एक ही दिशा, जहा से असली खतरा है, बगाल के क्रातिकारी है। बदकिस्मती से उनमें बहुत काफी हद तक फिरकापरस्ती का दाग़ लग गया है।

तुम्हारे पिछले दो खतो से यह जानकर खुशी हुई कि कमला की तबीयत बराबर सुधर रही है।

दलित राष्ट्रो की लीग में शामिल होने के लिए काग्रेस की तरफ से तुम अकेले नुमाइदे चुने गये हो। और कोई भी ऐसा नही था, जो इतने कम वक्त में खबर पाकर वहा शामिल हो सकता। तुम्हारा खर्चा काग्रेस देगी।

रगास्वामी ने तुम्हे समुद्री तार भेज रक्खा है और ज्ञाब्ने का खत भी तुम्हारे और लीग के मत्री के नाम इसी डाक से भेज रहे हैं ।

बाकी दूसरे खत मे । तुम्हारा स्नेही,

पिता

[स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के बहुत बडे नेता थे और उन्होंने असहयोग आन्दोलन और संबधित आन्दोलनो में प्रमुख भाग लिया था। उनका बड़ा सम्मान था । एक मुस्लिम धर्मान्ध ने उनकी दिल्ली में हत्या कर डाली। लोगों में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई ।

फरवरी १९२७ में दलित राष्ट्र संघ की एक कांग्रेस ब्रुसेल्स, बेल्जियम में हुई थी। उस समय मैं अपनी पत्नी की बीमारी के कारण यूरोप में था। काग्रेस के प्रतिनिधि के नाते मैं इस काग्रेस में शामिल हुआ। इसके बारे में मैंने अपनी 'मेरी कहानी' में लिखा है ।]

४९ महात्मा गाधी की ओर से

नंदी पर्वत (मैसूर राज्य)
२५ मई १९२७

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र तब मिला जब मैं रोग-शय्या पर था और बहुत पत्र-व्यवहार नही कर सकता था। अभी मैं अच्छा हो रहा हू और हल्का-हल्का काम ही कर पाता हू । मगर मेरी प्रगति बराबर जारी है ।

अब तुम्हे वहा लम्बा समय होगया, मगर मैं जानता हू कि तुमने उसे बेकार नही खोया है । फिर भी मुझे आशा है कि जब तुम लौटोगे तबतक कमला पूरी तरह स्वस्थ हो जायगी । अगर उसके स्वास्थ्य के लिए ज्यादा दिन रहना जरूरी हुआ तो मैं मान लेता हू कि तुम वहा रह जाओगे ।

दलित राष्ट्र सम्मेलन की कार्रवाइयो के बारे मे मैंने तुम्हारा सार्वजनिक विवरण और तुम्हारा निजी गुप्त विवरण भी खूब ध्यान लगाकर पढा । खुद मुझे तो इस सघ से बहुत आशा नही है, क्योकि और कुछ कारण न भी हो तो यह तो है ही कि उसकी स्वतत्र प्रवृत्ति का दारोमदार उन्ही सत्ताओ के सद्भाव पर है, जो दलित राष्ट्रो के शोषण में हिस्सेदार है और मेरा खयाल है कि यूरोपियन राष्ट्रो के जो सदस्य इस सघ मे शरीक हुए वे अन्त तक

गरमी कायम नही रख सकेगे। कारण, जिसे वे अपने स्वार्थ की हानि समझेंगे उसमे वे अपनेको अनुकूल नही बना सकेगे। इधर यह खतरा है कि हमारे लोग अपनी भीतरी शक्ति का विकास करके मुक्ति प्राप्त करने के बजाय उसके लिए फिर बाहरी शक्तियो की ओर देखने और बाहरी मदद ढूढने लगेंगे। मगर यह तो कोरी दिमागी राय है। मै यूरोप की घटनाओ का ध्यान-पूर्वक अवलोकन बिल्कुल नही कर रहा हू। तुम मौके पर हो और तुम्हे वहा के वायुमडल मे वास्तविक सुधार दिखाई दे सकता है, जो मुझे बिल्कुल दिखाई नही देता।

तुम्हारे आगामी काग्रेस के अध्यक्ष चुने जाने की कुछ चर्चा है। मेरा इस बारे में पिताजी से पत्र-व्यवहार हो रहा है। हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पर महा-समिति के सर्वसम्मत प्रस्ताव के बावजूद यहा भविष्य बिल्कुल उज्ज्वल नही है। पता नही कि सिर फोडने का सिलसिला किसी भी तरह रोका जायगा या नही। आम लोगो पर हमारा काबू नही रहा और मुझे ऐसा दिखाई देता है कि अगर तुम अध्यक्ष बन गये तो आम लोगो की दृष्टि से तुम कम-से-कम सालभर के लिए तो खो जाओगे। फिर भी इसका यह अर्थ नही कि काग्रेस के काम की उपेक्षा करनी है। किसी-न-किसीको तो उसे करना ही है। मगर बहुत लोग है जो इस काम को करने के लिए रज़ा-मद और उत्सुक है, उनकी नीयत मिलीजुली या स्वार्थपूर्ण भी हो सकती है, परन्तु वे काग्रेस की गाडी किसी-न-किसी तरह चलाते रहेगे। सस्था सदा उनकी मर्ज़ी पर उनके हाथ में रहेगी, जिनमे सामूहिक कार्य करने के गुण होगे और जिनका आम लोगो पर काबू हो जायगा। तब प्रश्न यह है कि तुम्हारी सेवाओ का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जा सकता है ? तुम्हारा अपना जो विचार हो, वह तुम्हे करना चाहिए। मुझे मालूम है कि तुम में अनासक्त विचार करने की क्षमता है और तुम दादाभाई या मैंविस्वनी की तरह बिल्कुल नि स्वार्थ होकर कहोगे कि 'यह ताज मेरे सिर पर रख दो।' और मुझे कोई सन्देह नही कि वह रख दिया जायगा। स्वय मुझे मार्ग इतना स्पष्ट दिखाई नही देता कि मै वह ताज जबर्दस्ती तुम्हारे सिर पर रख दू और उसे पहनने को तुम्हे समझाऊ। पिताजी ने अगर पहले ही न लिख दिया हो तो इसी डाक से तुम्हे लिखेंगे। इस पत्र की एक नकल उनके पास

भिजवा रहा हू ।

अच्छा हो, तुम भी अपनी इच्छा समुद्री तार द्वारा भेज दो । जुलाई के अत तक मेरे बगलौर में रहने की सभावना है । इसलिए तुम अपना तार सीधा बगलौर भेज सकते हो या बिल्कुल पक्की बात करनी हो तो आश्रम के पते पर भेज दो । मैं जहा भी होऊगा वही वह तार दोहरा दिया जायगा ।

तुम सबको प्यार ।

तुम्हारा,
मो. क. गांधी

५०. महात्मा गाधी की ओर से

[मैं दिसम्बर १९२७ में यूरोप से लौटा और सीधा राष्ट्रीय महासभा के मद्रास अधिवेशन में चला गया । मेरे कहने पर कुछ प्रस्ताव पास किये गए थे । यह पत्र गांधीजो ने इसलिए लिखा था कि इस अधिवेशन में मेरी कुछ प्रवृत्तियां उन्हे पसन्द नहीं आईं ।]

सत्याग्रह-आश्रम, साबरमती,
असशोधित ४ जनवरी १९२८

प्रिय जवाहरलाल,

मेरा खयाल है, तुम्हे मुझसे इतना अधिक प्रेम है कि मै जो कुछ लिखने जा रहा हू उसका तुम बुरा नही मानोगे । जो हो, मुझे तो तुमसे इतना ज्यादा प्रेम है कि जब मुझे लिखने की जरूरत महसूस हो तब मैं अपनी कलम को रोक नही सकता ।

तुम बहुत ही तेज जा रहे हो । तुम्हे सोचने और परिस्थिति के अनुकूल बनने को समय लेना चाहिए था । तुमने जो प्रस्ताव तैयार किये और पास कराये उनमें से अधिकाश के लिए एक साल की देर की जा सकती थी । 'गणतत्री सेना' (Republican army) मे तुम्हारा कूद पडना जल्द-बाजी का कदम था । परन्तु मुझे तुम्हारे इन कामो की इतनी परवा नहीं, जितनी तुम्हारे शरारतियो और हुल्लडबाजो को प्रोत्साहन देने की है । पता नही, तुम अब भी विशुद्ध अहिंसा मे विश्वास रखते हो या नही । परन्तु तुमने अपने विचार बदल दिये हो तो भी तुम यह नही सोच सकते कि अनधि-

कृत और अनियन्त्रित हिंसा से देश का उद्धार होनेवाला है। अगर अपने यूरोपीय अनुभवो के प्रकाश मे देश के ध्यानपूर्वक अवलोकन से तुम्हे विश्वास होगया हो कि प्रचलित तौर-तरीके गलत है तो बेशक अपने ही विचारो पर अमल करो, मगर मेहरबानी करके कोई अनुशासन-बद्ध दल बना लो। कानपुर का अनुभव तुम्हे मालूम है। प्रत्येक सग्राम मे ऐसे मनुष्यो की टोलिया चाहिए जो अनुशासन माने। तुम अपने अस्त्रो के बारे मे लापरवाह होकर इस तत्व की उपेक्षा कर रहे हो।

अब तुम राष्ट्रीय महासभा के कार्यवाहक मत्री हो। ऐसी सूरत में मै तुम्हे सलाह दे सकता हू कि तुम्हारा कर्तव्य है कि केन्द्रीय प्रस्ताव अर्थात एकता पर और साइमन-कमीशन के बहिष्कार के महत्वपूर्ण परन्तु गौण प्रस्ताव पर अपनी सारी शक्ति लगा दो। एकता के प्रस्ताव को सगठन करने और समझाने-बुझाने के तुम्हारे तमाम बडे गुणो के उपयोग की जरूरत है। मेरे पास अपनी बातो का विस्तार करने के लिए समय नही है, परन्तु बुद्धिमान् के लिए इशारा काफी होना चाहिए।

आशा है, कमला का स्वास्थ्य यूरोप की तरह ही अच्छा होगा।

सप्रेम तुम्हारा,

बापू

५१. महात्मा गाधी की ओर से

आश्रम, साबरमती,

१७ जनवरी १९२८

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे बोलकर लिखवाकर समय बचाना और अपने दुखते हुए कधे को आराम देना होगा। रविवार को मैंने तुम्हे फेनर ब्रॉकवे के बारे में लिखा था। आशा है, तुम्हे वह पत्र ठीक समय पर मिल गया होगा।

तुम्हे मालूम है कि जिन लेखो की तुमने आलोचना की है उन्हे, सिवा कथित 'अखिल भारतीय प्रदर्शिनी' वाले लेख के, मैंने इसीलिए लिखा था कि तुम उल्लिखित कार्य-विवरण में मुख्य हिस्सेदार थे। मुझे एक प्रकार की सुरक्षा महसूस होती थी कि तुम्हारे-मेरे बीच के सम्बन्धो को देखते हुए मेरे लेखो को उसी भावना से समझा जायगा, जिससे वे लिखे जाते थे। फिर

भी मै देखता हू कि यह तो सब तरफ भूल-ही-भूल हुई। मुझे इसकी परवा नही। कारण, यह स्पष्ट है कि ये लेख ही तुम्हे उस आत्म-दमन से मुक्त कर सकते थे, जिसके नीचे तुम इतने वर्षों से दबे जा रहे थे। यद्यपि मुझे तुम्हारे-मेरे बीच का दृष्टि-भेद कुछ-कुछ दिखाई देने लगा था, फिर भी मुझे तनिक भी कल्पना नही थी कि ये मतभेद इतने भयकर हो जायगे। जहा तुम देश की खातिर और इस विश्वास में कि मेरे साथ और मेरे नीचे अपनी इच्छा के विरुद्ध भी काम करके तुम राष्ट्र की सेवा करोगे और आच आये बिना निकल आओगे, तुम अपने-आपको बहादुरी के साथ दबा रहे थे, वहा तुम इस अस्वाभाविक आत्मदमन के भार के नीचे दबकर कुढते रहे। और जबतक तुम उस स्थिति मे रहे, तुम उन्ही चीजो की उपेक्षा करते रहे, जो अब तुम्हे मेरी गभीर त्रुटिया दिखाई देती है। मै 'यग इडिया' के पृष्ठो से तुम्हे दिखा सकता हू कि इतने ही ज़ोरदार लेख मैंने महासमिति की कार्रवाइयो के बाबत तब लिखे थे जब मै काग्रेस का सक्रिय पथ-प्रदर्शन कर रहा था। जब कभी महासमिति की बैठको मे गैर-जिम्मेदारी और जल्दबाजी की बाते या कार्रवाई होती थी तब भी मै इसी तरह बोला हू। मगर जबतक तुम मूर्च्छित अवस्था मे थे तबतक ये चीजे आज की तरह नही खटकी और इसलिए तुम्हारे पत्र की असगतिया बताना मुझे बेकार मालूम होता है। इस समय मुझे तो भावी कार्रवाई की ही चिन्ता है।

अगर मुझसे कोई स्वतत्रता चाहिए तो मै उस नम्रतापूर्ण अचूक वफादारी से तुम्हे पूरी स्वतत्रता देता हू, जो तुमसे मुझे इन तमाम वर्षों मे मिली है और जिसकी मै तुम्हारी हालत का ज्ञान प्राप्त हो जाने के कारण अब और भी कद्र करता हू। मुझे बिल्कुल साफ दिखाई देता है कि तुम्हे मेरे और मेरे विचारो के विरुद्ध खुली लडाई करनी चाहिए। कारण, यदि मै गलती पर हू तो मै स्पष्ट ही देश की वह हानि कर रहा हू, जिसकी क्षति-पूर्ति नही हो सकती और उसे जान लेने के बाद तुम्हारा धर्म है कि मेरे खिलाफ बगावत मे उठ खडे हो, अथवा यदि तुम्हे अपने निर्णयो के ठीक होने मे कोई शका है तो मै खुशी से तुम्हारे साथ निजी रूप मे उनकी चर्चा करने को तैयार हू। तुम्हारे और मेरे बीच मतभेद इतने विशाल और मौलिक है कि हमारे लिए कोई मिलन की जगह दिखाई नही देती। मै तुमसे अपना यह

कृत और अनियत्रित हिंसा से देश का उद्धार होनेवाला है। अगर अपने यूरोपीय अनुभवो के प्रकाश मे देश के ध्यानपूर्वक अवलोकन से तुम्हे विश्वास होगया हो कि प्रचलित तौर-तरीके गलत है तो बेशक अपने ही विचारो पर अमल करो, मगर मेहरबानी करके कोई अनुशासन-बद्ध दल बना लो। कानपुर का अनुभव तुम्हे मालूम है। प्रत्येक सग्राम मे ऐसे मनुष्यो की टोलिया चाहिए जो अनुशासन माने। तुम अपने अस्त्रो के बारे में लापरवाह होकर इस तत्व की उपेक्षा कर रहे हो।

अब तुम राष्ट्रीय महासभा के कार्यवाहक मत्री हो। ऐसी सूरत में मै तुम्हे सलाह दे सकता हू कि तुम्हारा कर्तव्य है कि केन्द्रीय प्रस्ताव अर्थात एकता पर और साइमन-कमीशन के बहिष्कार के महत्वपूर्ण परन्तु गौण प्रस्ताव पर अपनी सारी शक्ति लगा दो। एकता के प्रस्ताव को सगठन करने और समझाने-बुझाने के तुम्हारे तमाम बडे गुणो के उपयोग की जरूरत है। मेरे पास अपनी बातो का विस्तार करने के लिए समय नही है, परन्तु बुद्धिमान् के लिए इशारा काफी होना चाहिए।

आशा है, कमला का स्वास्थ्य यूरोप की तरह ही अच्छा होगा।

सप्रेम तुम्हारा,

बापू

५१. महात्मा गाधी की ओर से

आश्रम, साबरमती,

१७ जनवरी १९२८

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे बोलकर लिखवाकर समय बचाना और अपने दुखते हुए कधे को आराम देना होगा। रविवार को मैंने तुम्हे फेनर ब्रॉकवे के बारे में लिखा था। आशा है, तुम्हे वह पत्र ठीक समय पर मिल गया होगा।

तुम्हे मालूम है कि जिन लेखो की तुमने आलोचना की है उन्हे, सिवा कथित 'अखिल भारतीय प्रदर्शिनी' वाले लेख के, मैंने इसीलिए लिखा था कि तुम उल्लिखित कार्य-विवरण में मुख्य हिस्सेदार थे। मुझे एक प्रकार की सुरक्षा महसूस होती थी कि तुम्हारे-मेरे बीच के सम्बन्धो को देखते हुए मेरे लेखो को उसी भावना से समझा जायगा, जिससे वे लिखे जाते थे। फिर

भी मैं देखता हू कि यह तो सब तरफ भूल-ही-भूल हुई। मुझे इसकी परवा नही। कारण, यह स्पष्ट है कि ये लेख ही तुम्हे उस आत्म-दमन से मुक्त कर सकते थे, जिसके नीचे तुम इतने वर्षों से दबे जा रहे थे। यद्यपि मुझे तुम्हारे-मेरे बीच का दृष्टि-भेद कुछ-कुछ दिखाई देने लगा था, फिर भी मुझे तनिक भी कल्पना नही थी कि ये मतभेद इतने भयकर हो जायगे। जहा तुम देश की खातिर और इस विश्वास मे कि मेरे साथ और मेरे नीचे अपनी इच्छा के विरुद्ध भी काम करके तुम राष्ट्र की सेवा करोगे और आच आये बिना निकल आओगे, तुम अपने-आपको बहादुरी के साथ दबा रहे थे, वहा तुम इस अस्वाभाविक आत्मदमन के भार के नीचे दबकर कुढते रहे। और जबतक तुम उस स्थिति मे रहे, तुम उन्ही चीजो की उपेक्षा करते रहे, जो अब तुम्हे मेरी गभीर त्रुटिया दिखाई देती है। मै 'यग इडिया' के पृष्ठो से तुम्हे दिखा सकता हू कि इतने ही ज़ोरदार लेख मैंने महासमिति की कार्रवाइयो के बाबत तब लिखे थे जब मै काग्रेस का सक्रिय पथ-प्रदर्शन कर रहा था। जब कभी महासमिति की बैठको में गैर-जिम्मेदारी और जल्दबाजी की बातें या कार्रवाई होती थी तब भी मै इसी तरह बोला हू। मगर जबतक तुम मूर्च्छित अवस्था में थे तबतक ये चीजे आज की तरह नही खटकी और इसलिए तुम्हारे पत्र की असगतिया बताना मुझे बेकार मालूम होता है। इस समय मुझे तो भावी कार्रवाई की ही चिन्ता है।

अगर मुझसे कोई स्वतत्रता चाहिए तो मै उस नम्रतापूर्ण अचूक वफादारी से तुम्हे पूरी स्वतत्रता देता हू, जो तुमसे मुझे इन तमाम वर्षों में मिली है और जिसकी मै तुम्हारी हालत का ज्ञान प्राप्त हो जाने के कारण अब और भी कद्र करता हू। मुझे बिल्कुल साफ दिखाई देता है कि तुम्हे मेरे और मेरे विचारो के विरुद्ध खुली लडाई करनी चाहिए। कारण, यदि मैं गलती पर हू तो मै स्पष्ट ही देश की वह हानि कर रहा हू, जिसकी क्षति-पूर्ति नही हो सकती और उसे जान लेने के बाद तुम्हारा धर्म है कि मेरे खिलाफ बगावत मे उठ खडे हो, अथवा यदि तुम्हे अपने निर्णयो के ठीक होने मे कोई शका है तो मै खुशी से तुम्हारे साथ निजी रूप मे उनकी चर्चा करने को तैयार हू। तुम्हारे और मेरे बीच मतभेद इतने विशाल और मौलिक हैं कि हमारे लिए कोई मिलन की जगह दिखाई नही देती। मैं तुमसे अपना यह

दु ख नही छिपा सकता कि मै तुम्हारे जैसा वहादुर, वफादार, योग्य और ईमानदार साथी खोऊ, परन्तु कार्य की सिद्धि के लिए साथीपन को कुर्बान करना पडता है। इनसब विचारो से कार्य को श्रेष्ठ मानना चाहिए। लेकिन साथीपन के इस बिछोह से—अगर बिछोह होना ही है—हमारी व्यक्तिगत घनिष्ठता मे कोई अन्तर नही पडेगा। हम लम्बे अर्से से एक ही परिवार के सदस्य बन चुके है और राजनैतिक मतभेदो के होते हुए भी हम वैसे ही बने रहेगे। मुझे कई लोगो के साथ ऐसे सम्बन्ध रखने का सौभाग्य प्राप्त है। उदाहरण के लिए शास्त्री को ही ले लो। उनके मेरे राजनैतिक दृष्टिकोण में जमीन आसमान का फर्क है, मगर उनके मेरे बीच जो स्नेह-सम्बन्ध राजनैतिक मतभेदो का भान होने से पहले ही पैदा हो चुका था, वह बना हुआ है और कई अग्नि-परीक्षाए पार करके भी जीवित रह गया है।

तुम्हारी पताका फहरे, इसका एक शानदार तरीका सुझाऊ। मुझे प्रकाशन के लिए एक पत्र लिखो, जिसमें तुम्हारे मतभेद प्रकट किये गए हो। मै उसे 'यग इडिया' मे छाप दूगा और उसका सक्षिप्त उत्तर लिख दूगा। तुम्हारा पहला पत्र मैने पढने और जवाब देने के बाद फाड दिया था। दूसरा रख लिया है और अगर तुम और कोई खत लिखने की तकलीफ नही उठाना चाहते तो जो चिट्ठी मेरे सामने है उसीको छापने के लिए तैयार हू। मुझे पता नही, इसमें कोई बुरा लगनेवाला अश है। लेकिन कोई हुआ तो, विश्वास रखो, मै ऐसे हर अश को निकाल दूगा। मै उस पत्र को एक स्पष्ट और प्रामाणिक दस्तावेज मानता हू।

सप्रेम तुम्हारा,
बापू

५२ मोतीलाल नेहरू की ओर से महात्मा गाधी के नाम

११ जुलाई १९२८

प्रिय महात्माजी,

आखिरकार अब मै यह कह सकता हू कि कमेटी की रिपोर्ट के बारे में एक किस्म से एकराय हो पाई है। न तो यह पक्की है, और न खरी ही, लेकिन कुछ होगया है, जिसकी हिमायत हम सर्व-दल-सम्मेलन और आमतौर पर मुल्क में कर सकते है। आखिरी दौर में जो कार्रवाइया हो रही है, उनकी

नकल भेज रहा हू, जिससे आपको मालूम हो सकेगा कि किस तरह हम लोगो ने बहस के मुद्दो को निबटाया है। सभी मेम्बर अपने-अपने घर चले गये हैं और जवाहर और मुझे रिपोर्ट तैयार करने का काम सौप गये है और अब हम उसपर जुटे है।

आपने अखबारो में देखा होगा कि कनाडियन डेलीगेशन की मेबरी से मैंने अपना इस्तीफा भेज दिया है, क्योकि मैंने महसूस किया कि सर्वदल-सम्मेलन के जरिये हमारी रिपोर्ट के मजूर किये जाने की जो भी गुजाइश है वह मेरे देश से बाहर रहने से कम हो जायगी।

अब ताजपोशी का सवाल आता है। मेरे मन में यह बात साफ है कि आज के नायक वल्लभभाई है और उनकी खिदमतो को मजूरी देने के लिए कम-से-कम जो हम कर सकते है वह यह है कि ताज उन्हीको दे। वह राजी न हो तो, मेरी समझ मे, हालात को देखते हुए, दूसरा सबसे अच्छा चुनाव जवाहर का होगा। यह सही है कि उसने हमारे बहुत-से नाजुक मिजाज लोगों को अपनी साफगोई से डरा दिया है। लेकिन अब वक्त आगया है, जबकि ज्यादा फुरती रखनेवाले और मजबूत कार्यकर्ताओ को मुल्क के सियासी कामो को अपने तरीके से चलाने का मौका मिलना चाहिए। मैं मानता हू कि इस दर्जे में और उस दर्जे मे, जिसमे कि आप और मैं हू, फर्क की बातें हैं लेकिन कोई वजह नही कि अपने खयालो को हम उनपर लादते रहे, हमारी पीढी तो अब तेजी से खत्म हो रही है। जल्दी या देर से लडाई को जवाहर जैसे लोग ही चालू रख सकेगे। जितनी जल्दी शुरू करे उतना ही अच्छा है।

जहातक मेरी बात है, मै महसूस करता हू कि अपने मे जो भरोसा मुझे रहा है, उसे मैं बहुत-कुछ खो चुका हू और मेरी ताकत करीब-करीब खत्म हो-गई है। अहमियत ताज की उतनी नही होती, जितनी कि ताज के पीछे की ताकत की होती है, और वह ताकत जिसपर मै भरोसा कर सकता हू, मुझे नही दिखाई देती। बेशक आपकी बात दूसरी है। आपके ज़ोर देने पर मैंने अपने खयाल आपके सामने रख दिये है। फैसला करना आपके हाथ मे है।

आपका,

मोतीलाल नेहरू

[इस पत्र में जिस कमेटी का जिक्र है, उसे सर्वदल सम्मेलन ने भारत के लिए संविधान का ढाचा तैयार करने को नियुक्त किया था, विशेषकर साप्रदायिक समस्याओं आदि के संबंध में। उसकी रिपोर्ट को 'नेहरू-रिपोर्ट' कहा गया, कारण, प. मोतीलाल नेहरू उस कमेटी के अध्यक्ष थे।]

५३ जे. एम. सेन गुप्ता की ओर से मोतीलाल नेहरू के नाम

[श्री जतीन्द्र मोहन सेन गुप्ता बगाल में काग्रेस के एक प्रमुख नेता थे और काग्रेस का आगामी अधिवेशन कलकत्ता में ही होनेवाला था।]

१०/४, एलगिन रोड, कलकत्ता,

१७ जुलाई १९२८

प्रिय पडितजी,

कल महात्माजी का मुझे तार मिला है, जिसमे लिखा है कि काग्रेस के अगले अधिवेशन के सभापति-पद को आप स्वीकार करना नही चाहते। इस खबर से मेरे दिल को बडी चोट पहुची। मैंने तुरत अपने तमाम मित्रो को इकट्ठा किया और उनसे सलाह-मशविरा किया। हम सबने एकराय होकर महात्माजी को तार द्वारा आग्रहभरा जवाब भेजा है कि वह आप पर जोर डाले और आपकी स्वीकृति प्राप्त करे।

हमारे लिए यह समय सकोच और झिझक का नही है। हम आपको ही सभापति बनायेंगे। देश मे और बाहर जो राजनैतिक सकट है उसमें आपको आकर हमारा नेतृत्व करना ही होगा। अधिकाश प्रान्तो ने हमारे पास सूचना भेजी है कि वे आपको ही चाहते है। चार या पाच ने तो केवल एक ही नाम भेजा है, यानी आपका, यद्यपि इस पहली छटनी मे और नाम भी वे जोड सकते थे।

बगाल तो एकराय से आपको ही चाहता है, क्योंकि हमारा काम आपके बिना नही चल सकता। मैं एक पिता की भावनाओ को अच्छी तरह समझ सकता हू, जबकि उसका लडका भी सामने मैदान मे हो, लेकिन हममे से अधिकाश तो आपके लडको जैसे ही है। इसलिए इतने आग्रह के लिए आप हमें क्षमा करें। आपकी अनिच्छा का कारण जो भी कुछ हो, हमें निराश न कीजिये। इससे अधिक जोर से अपनी बात और किस तरह आपके सामने पेश कर सकता हू।

आज ही मैंने महात्माजी को एक लबा पत्र लिखा है। उसकी नकल आपको भेज रहा हू। कृपाकर लिखे कि सब ठीक है।

आपका,
जे एम सेन गुप्ता

५४. सुभाषचद्र बोस की ओर से मोतीलाल नेहरू के नाम

१ वुडबर्न पार्क, कलकत्ता
१८ जुलाई १९२८

प्रिय पडितजी,

मैंने कल सुबह काग्रेस की अध्यक्षता के बारे मे आपको एक तार भेजा था। कल रात मुझे उसका उत्तर मिला। मै नही कह सकता कि अगर किसी कारण से आप काग्रेस के अध्यक्ष-पद को नामजूर करते है तो सारे बगाल को कितनी अधिक निराशा होगी। स्वराज्य पार्टी के काम और उसकी नीति के साथ आपका जो गहरा सबध रहा है, और बातो के अलावा इसकी वजह से भी आपका नाम इस प्रात में सब लोग स्वीकार करते है। मै दूसरे प्रातो का जिक्र नही करूगा, किन्तु मुझे लगभग पूरा भरोसा है कि जब आखिरी नामजदगी होगी, तो सारा देश सर्वसम्मति से आपका समर्थन करेगा।

आज देश की जैसी हालत है, और सन् १९२९ का साल हमारे देश के इतिहास मे इतना अधिक महत्वपूर्ण होनेवाला है, कि हमारी निगाह आपके अलावा और किसी व्यक्ति पर नही ठहरती, जो अवसर के योग्य साबित होसके। हमने कुछ दूसरे नामो के सुझाव भी सुने है, और हालात दूसरे होते तो उनपर विचार किया जा सकता था, किन्तु जब विभिन्न पार्टियो को नजदीक लाने और एक सर्वसम्मत सविधान बनाने की गभीर कोशिशे हो रही है, तो दूसरे नामो के सुझावो को मजूर नही किया जा सकता। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि अगर किसी वजह से आप अध्यक्ष-पद स्वीकार नही करते है तो उसका इस प्रात पर इतना बुरा असर पडेगा कि काग्रेस-अधिवेशन की सफलता ही खतरे मे पड जायगी। इस समय, जबकि हम गभीर सकट मे से गुजर रहे है, क्या हम यह आशा नही कर सकते कि आप देश की पुकार का मुनासिब उत्तर देगे?

आपका,
सुभाषचन्द्र बोस

फिर से—

जिला बोर्डों के मतदाताओ की तादाद के बारे में आपका तार मिला। मैं उनकी सख्या मालूम करने की कोशिश कर रहा हू, किन्तु मैं सफल हो सकूगा, इस बारे मे मुझे सदेह ही है। विभिन्न जिलो में मतदाता-सूचिया प्राप्त करने के बाद आकडो को इकट्ठा करने में काफी समय लग जायगा।

सुभाष

५५. मोतीलाल नेहरू की ओर से एम. जे. सेन गुप्ता और सुभाषचद्र बोस के नाम

आनंद भवन, इलाहाबाद
१९ जुलाई १९२८

अभी आपका खत मिला और मैंने तार के जरिये वादा किया है कि फौरन जवाब दूगा। मुझे डर है, आप लोगो ने मामले को एकदम गलत समझा है। जैसा मैंने अपने तार मे लिखा है, बाप और बेटे की भावना का कोई सवाल ही नही है, और न बेटे को बाप के लिए हट जाने के लिए राजी करने की जरूरत ही है। बाप और बेटे, दोनो के सामने जो सवाल वज़न रखता है वह यह है कि देश की सेवा किस तरह सबसे अच्छी तरह हो सकती है। जवाहर की ज़रा भी यह इच्छा नही थी कि महात्माजी जिसे ताज कहते है, उसे पहने। उसे काग्रेस के सदर की कुर्सी पर बिठाने का मेरा विचार पुराना है और इसका कोई भी ताल्लुक इस बात से नही कि वह मेरा लडका है। मैंने यह विचार पिछले साल डा. अन्सारी के चुनाव से पहले महात्माजी को बता दिया था। डा अन्सारी खुद जवाहर के मद्रास-काग्रेस के सदर होने के हक में थे, लेकिन जवाहर ने ज़ोर से इस इज्जत को मजूर करने से इन्कार कर दिया।

फिर, आनेवाली कलकत्ता-काग्रेस की सदारत के बारे में मुझे महात्माजी का एक खत पिछले महीने मे मेरी कमेटी की बैठको के दरमियान खाली वक्त मे मिला, जिसमें मुझे यह खबर दी गई थी कि सेन गुप्ता का एक खत उन्हें मिला है, जिसमे सदारत के लिए मेरा नाम सुझाया गया है। महात्माजी ने लिखा था कि अगर वह कमेटी, जिसका मैं सदर हू, कोई ठोस चीज़ पेश

कर सके तो अच्छा यह होगा कि मै ही ताज पहनू। मैंने उन्हे जवाब दिया कि कमेटी का एकराय होकर किसी फैसले पर पहुचना मुमकिन नही। और जबतक फैसला न हो पावे तबतक मुझे लगता है कि मुल्क में मेरेलिए कोई काम ही नही है। मामला यही रुका रहा, और ८ जुलाई को जाकर कमेटी एक तरह के आम समझौते पर पहुची। तब मैंने महात्माजी को फिर लिखा। उसकी कोई नकल मेरे पास होती तो मै उसे आपके पास भेज देता। लेकिन अब याददाश्त से उसकी बात दुहराने की कोशिश करूगा। जो कुछ मैंने लिखा था वह यह था कि वल्लभभाई पटेल आज के नायक है और सबसे पहले उन्हीको चुनना चाहिए। वह राजी न हो तो दूसरा सबसे अच्छा चुनाव जवाहरलाल होगा। जो वजह मैंने बताई थी, वह यह थी कि मेरे ढग के लोगो का वक्त अब नही रहा है और अब वक्त आगया है कि देश के कामो की रहनुमाई ज्यादा नौजवान लोगो के हाथो मे दी जाय। हम लोग हमेशा नही बने रहेंगे और देर-अबेर नौजवानो को ही काम सम्हालना होगा। बेहतर होगा कि वे यह काम हमारे जीते-जी शुरू कर दें, बजाय इसके कि वे हमारे जाने तक रुके रहे। जहातक मेरी बात है, मैंने कहा था कि मै तो अब बीत चुका हू और मै अपनेको जिम्मेदारी के लायक नही समझता। जवाहर के नाम की सिफारिश करने की मेरी वजह यह थी कि नौजवानो में वह एक ऐसा आदमी है, जोकि ज्यादातर लोगो का विश्वास पा सकता है। तबसे यह बात सच भी साबित हो रही है और वह इस बात से साफ है कि उसका और मेरा नाम इस बारे मे करीब-करीब साथ लिया जा रहा है। महात्माजी ने मुझे तार दिया कि वह मुझसे एकराय है और जवाहर के नाम की 'यग इडिया' मे सिफारिश कर रहे है। मुझे पूरा यकीन था कि जवाहर फौरन अलग हो जायगा और इसीलिए मैंने उसे मसूरी मे यह कडा आदेश भेजने की सावधानी बरती कि बिना मुझसे पूछे वह कुछ भी छपाने का पागलपन न करे। यही पूरी कहानी है। मैंने आपके खतो की नकलें अपने इस जवाब की नकल के साथ महात्माजी के पास भेज दी है और मामला उनके ऊपर छोड दिया है।

मेरे और जवाहर के मुकाबले का सवाल बिल्कुल नही है। सारा सवाल यह है कि हालात की माग क्या है। जबकि मै जानता हू कि जो कुछ

आप कहते है उसमें बहुत वजन है, मेरी अपनी राय यह है कि आज का मौका देश मे एक आगे बढनेवाले मजबूत दल की माग करता है, जो कि पूरे तौर पर हर जोखिम को उठाकर आगे बढने के लिए तैयार हो और इसी दल के हाथ आदोलन की बागडोर हो। मुकम्मल आजादी से चुपचाप उतरकर औपनिवेशिक दर्जे को मजूर करना काग्रेस की हँसी कराना होगा। मै दुनिया को जो दिखाना चाहता हू, और जिसे मै हकीकत मानता हू, वह यह है कि देश अब आगे किसी तरह की बेतुकी बातें बर्दाश्त करने के लिए तैयार नही है, और अगर सब दलो की कम-से-कम माग फौरन नही मानी जाती, तो जो लोग यह माग कर रहे है वे सभी मजबूत दल के साथ हो जायगे। मुझे यकीन है कि देश के रुख को देखते हुए अगली काग्रेस में तथाकथित सर्वसम्मत विधान को पास कराना आसान न होगा और अगर यह पास हुआ, जोकि मुमकिन है, तो यह ज्यादातर इस वजह से होगा कि कौन उसकी ताईद कर रहे है, न कि नौजवान-दल की समझी-बूझी राय की वजह से।

जो हो, बाप-बेटे दोनो ही मुल्क की खिदमत के लिए तैयार है, और उनके लिए इस बात से कोई फर्क नही पडता कि सदर की कुर्सी पर कौन बैठता है। सारा सवाल यह है कि मुल्क के लिए सबसे अच्छी बात क्या है।

मुझे यकीन है कि इस सारी खतो-किताबत के सामने होने से महात्माजी ठीक फैसला कर सकेंगे और मै उनके फैसले को मानने के लिए पूरी तरह राजी हू।

मोतीलाल नेहरू

५६. मोतीलाल नेहरू की ओर से महात्मा गांधी के नाम

आनद भवन, इलाहाबाद
१९ जुलाई १९२८

प्रिय महात्माजी,

साथ की खतो-किताबत अपने-आपमें साफ है। जवाहर कमला और इदू का इतजाम करने मसूरी गया है, लेकिन सेन गुप्ता के नाम मेरे खत की नकल से आपको यह सब पता लगेगा कि उसे कुछ न बोलने का कडा हुक्म है। सेन गुप्ता का आपसे किया गया इसरार कि आप जवाहर से कहे

कि वह अलग होजाय, मुझे पसद है। मेरा खयाल है कि ऐसा करने से रोकने के लिए उसे काफी समझाना होगा।

मैं कमिटी की रिपोर्ट तैयार करने मे जुटा हुआ हू। मेरेलिए जवाहर लम्बे-चौडे नोट छोड गया है और जब मैं रिपोर्ट लिखता हू तो कदम-कदम पर ऐसे मुद्दे उठते है, जो न उसके दिमाग मे आये थे, न मेरे। यह कमिटी के फैसलो की लापरवाही से लिखी जुबान की वजह से है। वे फैसले लबी बैठको के अखीर में लिखे गये थे, जबकि हर आदमी इतना थका हुआ था कि जुबान की परवा नही कर सकता था। मुझे बार-बार मेंबरो से पूछना पडता है (जो सभी अपने-अपने घर जा चुके हैं), जिससे उनका मतलब ठीक मालूम कर सकू, या ज्यादा सही यह कहना होगा कि जिससे उनसे अपना मतलब मनवा सकू, जैसाकि वे अबतक बिना किसी हिचकिचाहट के करते आये हैं। मै अपनी आखिरी पूछताछ के जवाबो की इतजारी मे हू और जैसे ही वे मिल जायगे, रिपोर्ट का मसविदा मेम्बरो के पास भज दिया जायगा।

बारडोली में या उसके आस-पास जो घटनाए हो रही है, उन्हें मै फिक्र के साथ देख रहा हू। लेकिन फिलहाल समझ नही पा रहा हू कि मै उनके लिए किस तरह अपकोने फायदेमन्द बना सकता हू।

साथ की खतो-किताबत पर और उन दूसरी खबरो पर, जो आपको मिली हो, गौर करके 'ताज' के बारे मे अपना फैसला तार से भेजने की मेहरबानी कीजिये।

आपका,
मोतीलाल नेहरू

५७. मोतीलाल नेहरू की ओर से एनी बेसेंट के नाम

इलाहाबाद,
३० सितम्बर १९२८

प्रिय डा. बेसेन्ट,

असेम्बली का थोडे दिनो का और पुरजोश इजलास खत्म होगया है और सर्वदल-सम्मेलन ने हम लोगो को जो काम सौंपा है, उसपर पूरी-पूरी तवज्जो देने के लिए मै इलाहाबाद आगया हू।

शिमला में मिले आपके तार बहुत हौसला बढानेवाले थे। आपने इससे पहले ही शानदार काम कर लिया है और मुझे कोई भी शुबहा नही कि उसे आप आगे भी उतनी ही कामयाबी से करती रहेगी, जितनी कि आपने अबतक हासिल की है। सूबाई सर्वदल-सम्मेलन का खयाल बहुत अच्छा है और दूसरे सूबे भी इसकी नकल करें, इसके लिए मै कदम उठा रहा हू। चूकि सर तेजबहादुर सप्रू कान्फ्रेस मे शामिल होगे, मैने मद्रास आने का फैसला आगे के लिए रख छोडा है। मैने अभी अपना प्रोग्राम तय नही किया है, क्योकि मुझे बहुत-कुछ शुरुआत के काम निबटाने है, जिनमें एक बडा काम सूबो में काम चालू करने के लिए काफी पैसा इकट्ठा करना है।

जैसा आपको याद होगा, हम लोगो ने अपने उसी वक्त के खर्चों के लिए, जिसका अदाजा २५,०००) था, लखनऊ में जरूरती चदे की एक फहरिस्त शुरू की थी। इस रकम का बहुत कम हिस्सा चदे मे मिला है और शिमला में कमिटी की पिछली बैठक में फिर से अदाजा लगाने पर यह पता लगा कि अगले तीन महीनो में सभी सूबो में जोरदार प्रोपेगण्डा करने के लिए एक लाख से कम रुपयो की जरूरत न पडेगी। इस रकम का एक बडा हिस्सा बम्बई और कलकत्ता से मिलने की उम्मीद की जाती है और जल्दी ही मुझे इन दोनो जगहो पर जाना है। इसके बाद, उम्मीद है, मै मद्रास जाऊगा, जहा इन दोनो में से किसी भी जगह से आसानी से पहुचा जा सकता है।

पजाब और बगाल के सूबो में और जगहो से ज्यादा कोशिश की जरूरत है, क्योकि यही हिन्दू-मुस्लिम सवाल सबसे तेज है। मुझे यह कहते हुए खुशी होती है कि मद्रास के नमूने पर पजाब में बनी सूबा कमेटी ने बडी खूबी से हालत को सम्हाल रखा है और शफी के खयालो के कुछ जिद्दी लोगो को छोडकर ज्यादातर मुसलमानो ने पहले से ही अपनेको लखनऊ की तजवीजो के हक में होने का ऐलान कर दिया है। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने, जोकि शिमला की बैठक में मौजूद थे, बगाल में और भी अच्छे नतीजो के बारे मे भरोसा दिलाया है और मुझे इसमे शुबहा नही कि काफी पैसा मिला तो उन्हे कामयाबी हासिल होगी।

दूसरे सूबो के मुसलमान, जहा कि उनकी तादाद बुरी तरह थोडी है, पजाब और बगाल के अकसरियत रखनेवाले मुसलमानो के खयाली हको के लिए अबतक लडते रहे है। इसका सबसे जोरदार जवाव यही होगा कि पजाब और बगाल के मुसलमानो ने लखनऊ की तजवीजो को मजूर कर लिया है और उन्हे दूसरे सूबो की हिमायत की जरूरत नही। मुझे उम्मीद है कि यह जवाब उन्हे अगले पखवारे के भीतर मिल जायगा। इसके बाद बाकी हिन्दुस्तान मे हिन्दू-मुस्लिम-सवाल को हल करने के लिए जो करना है, वह, मै उम्मीद करता हू, कम तादादवालो को जहा-तहा कुछ टुकडे फेंककर हो सकेगा। मद्रास के मुसलमानो ने बहुत अच्छा सुझाव दिया है और मै समझता हू कि हमारी कमिटी को पजाब और बगाल को छोडकर और सूबो के बारे मे उसपर चलना चाहिए। सुझाव यह है कि कम तादाद वालो की नुमाइदगी के बारे मे कडे कायदे बनाने के बजाय, जैसाकि हमने अपनी रिपोर्ट मे किया है, हर सूबे को यह छूट होनी चाहिए कि कम तादादवालो और ज्यादा तादादवालो के बीच ऐसा समझौता करले जो उन खास सूबो की हालात के मुताबिक सबसे ज्यादा ठीक हो। मद्रास के मुसलमानो ने मान लिया है कि ज्यादा तादादवाले हिंदुओ से जो वह पा सकेंगे उसे मजूर कर लेगे। मै मानता हू कि और सूबे हिन्दू-मुस्लिम सवाल को इतनी आसानी से नही निबटा पायगे। फिर भी मेरी समझ मे मद्रास के सुझाव के मुताबिक चलने मे सर्वसम्मत हल की ज्यादा उम्मीद है, बजाय इसके कि सभी सूबो पर एक-सा कानून लागू किया जाय। हमारे काम के हिन्दू-मुस्लिम सवाल पर, जिसके बारे मे मेरे दोस्त सर तेजबहादुर सप्रू ने मुझसे अपनी भारी परेशानी जाहिर की है, मुझे इतना ही कहना है।

दूसरी जमात, जिससे हमारा ताल्लुक आयेगा, वह है मुकम्मल आजादी चाहनेवालो की जमात, जिसकी तादाद जवाहर की मेहरबानी से तेजी से बढती जा रही है। मुझे इस जमात से कोई डर नही, जबतक कि उसका नेता एक ऐसा ईमानदार मुल्क-परस्त है, जो हमेशा तस्वीर के दूसरे पहलू को देखने के लिए तैयार रहता है, जैसाकि इस वाकये से साफ है कि मुकम्मल आजादी के लिए अपने जबर्दस्त प्रोपैगेंडा के बावजूद

जवाहर सर्वदलीय फैसलो को पूरी तरह कामयाब बनाने के लिए कोई कसर नही उठा रख रहा है। बनावटी आज़ादीवालो से, जिनके नेता आपके शहर के महान श्रीनिवास आयगर है, डरने की वजह और भी कम है। सच्ची आज़ादी चाहनेवालो से हमारा समझौता हो जाय तो नक्कालो से निबट लेना आसान होगा और वह इस तरह कि उन्हें अपने-आपसे कुढने के लिए अलग छोड दिया जाय। जो सच्ची आज़ादी चाहनेवाले है, उनसे तसल्लीबख्श समझौता कर सकने की मै जल्दी उम्मीद कर रहा हू और आपको यह खुशखबरी दो-एक दिन में दे सकने की उम्मीद करता हू।

फिर जो लोग बच रहते है वे प्रतिक्रियावादी है। उनके लिए हम कोई गुजाइश नही छोडेंगे। सरकार के लिए इनसे पेश आना बहुत कठिन होगा और साइमन्स को भी इनकी बे-सिर-पैर की मागो को मजूर करना और अमल मे लाना नामुमकिन जान पडेगा। फिर भी खतरा यह है कि नौकरशाही इस जमात के जरिये हमारे मामले को बिगाडने की कोशिश करेगी, इसलिए नही कि वे ठीक रास्ते पर है और हम ग़लत रास्ते पर, बल्कि ऐसी जमात होनेभर से यह साबित करने की कोशिश की जायगी कि मुल्क में हमारा साथ देनेवाले लोग काफी तादाद में नही हैं। इसका जवाब महज इस तरह दिया जा सकता है कि हर जिले मे हम बहुत-सी सभाए करे और यह दिखायें कि ये प्रतिक्रियावादी मुल्क में मुट्ठी-भर है और उन्हें लोगो के किसी भी बडे तबके की नुमाइदगी करने का हक नही है। इसी काम के लिए हमे आदमियो, पैसो और हथियारो की ज़रूरत है। आपने अपनी हथियारो की फैक्टरी पहले से ही इस शक्ल मे शुरू कर दी है कि आपके सूबे की ज़बानो में पैम्फलेट और दस्ती इश्तहार निकलते रहे। पजाब मे लाला लाजपतराय दूसरी और बगाल में मौलाना अबुल कलाम आजाद तीसरी फैक्टरी खोल रहे है। इसमे शक नही कि जैसे-जैसे पैसा इकट्ठा होता जायगा, और भी फैक्टरिया खुलती जायगी।

यहातक मैने आम हालत का, जैसाकि मैने उसे देखा है और जिस तरह से मै उसे निबटाने का खयाल कर रहा हू, आपको एक अदाज कराने की कोशिश की है। मद्रास के बारे में मुझे कुछ सुझाव देने है। मुझे ऐसा लगता है कि सूबे मे पाच लोगो की पाच जमातो का इतज़ाम करना है। एक काफी

बडा तवका उन लोगो का है, जिनपर अख्यारो का सीधा असर है। दूसरा उतना ही बडा तबका काग्रेस के असर में है। तीसरा बडा तबका गैर-ब्राह्मणो का है। चौथा दलित जातियो का और पाचवा मुसलमानो का। इन सभीतक पहुच सकने के लिए यह जरूरी होगा कि हर तबके में से एक या दो मुखिया लोगो को कमिटी में ले लिया जाय और उन्हे अपने-अपने तबके के लोगो में काम करने की जिम्मेदारी सौंपी जाय। मै समझता हू कि गैर-ब्राह्मण और दलित-वर्ग के लोग आसानी से मिल जायगे, जो आपके या काग्रेस के पीछे चलनेवालो के साथ काम करने के लिए तैयार हो, लेकिन यह अक्लमदी होगी कि कुछ असरवाले मुसलमानो को अपने मजहब के लोगो के बीच काम करने के लिए रखा जाय। काग्रेसी और मुसलमान काम करनेवालो के लिए कोई अलग-अलग सगठन होना चाहिए। शिमला मे श्री ए रगास्वामी आयगर और सैयद मुरतजा साहब बहादुर से लबी बातचीत के बाद मै इस नतीजे पर पहुचा हू कि आपकी आम कमिटी में रहने के अलावा उन्हें अलग से रुपये मिलने चाहिए, जो काग्रेसी और मुसलमान कार्यकर्ताओ पर खर्च किये जा सके। फिलहाल श्री रगास्वामी आयगर को १००० और सैयद मुरतजा साहब को ५०० रुपये देना काफी होगा। दोनो ही बडे इज्जतदार आदमी है और इस बात का भरोसा किया जा सकता है कि रुपये वे ठीक तरह से खर्च करेंगे। इस सिलसिले में मुझे श्री याकूब हसन का खयाल आया था, लेकिन मालूम हुआ कि वह बडे सुस्त आदमी है। फिर भी सैयद मुरतजा साहब ने यह बात मान ली है कि उन्हें वह इस बात पर राजी करेंगे कि मुसलिम सब-कमेटी के सदर या मेबर के तौर पर उनके नाम का ऐलान कर दिया जाय। मेरा खयाल है कि इतना काफी होगा।

मेहरबानी करके लिखियेगा कि यह सुझाव आपको पसद है या नही और क्या आपको ऊपर लिखी रकमें दे सकने का सुभीता होगा? लखनऊ मे आपने ५००० की रकम, जिसे दो किस्तो में देने का वादा किया था, मुझे डर है कि, आपने जो काम हाथ मे ले रक्खा है, उसको देखते काफी नही होगी। इसलिए और चदा करने की जरूरत होगी, जो या तो पब्लिक से मागा जा सकता है, या कुछ चुने हुए लोगो से, जैसा भी आप

मुनासिब समझे। मद्रास को अपना काम आप चला लेना चाहिए, लेकिन फिर भी अगर आप समझती है कि बाहर से रुपया लाने की ज़रूरत है, तो मै बम्बई से लाने की कोशिश करूगा। इस बीच मेहरबानी करके १००० रुपये श्री रामास्वामी आयगर को और ५०० रुपये सैयद मुरतज़ा साहब को दे दे। शुरू मे तो यह ख़याल था कि चदे मरकजी फड मे दिये जाय और यह फड सूबो को उनकी ज़रूरतो के मुताबिक वक्त-वक्त पर पैसा देता रहे। यही आम कायदा है, जिसपर मै चल रहा हू, लेकिन मदरास के मामले में इसकी पाबदी गैर-ज़रूरी होगी, क्योकि इससे काफी देरी हो जाने का अदेशा है। इतना काफी होगा कि आपका दफ्तर जवाहरलाल को वक्त-वक्त पर इस बात की खबर देता रहे कि कुल कितना रुपया मिला है और कितना ख़र्च हुआ है, जिससे वह पूरा हिसाब तैयार कर सके।

आपको याद होगा कि लखनऊ की कार्फ्रेंस ने कई सवाल हमारी कमिटी के सामने रक्खे है और हमसे यह भी कहा गया है कि हम एक ऐसे बिल का मसविदा तैयार करावे, जिसमें हमारी सभी सिफारिशे आगई हो और जो सर्वदल-सम्मेलन के सामने रक्खा जा सके। कमिटी की पिछली बैठक में, जो शिमला मे हुई थी, सर तेजबहादुर सप्रू, पडित हृदयनाथ कुजरू, सी विजय राघवाचार्य (इस नाम के लिये जाने पर सप्रू के चेहरे पर छाई परेशानी का मैं अदाज कर सकता हू, लेकिन यह ज़रूरी था), सर अली इमाम और मुझे लेकर एक सब-कमेटी बनी थी, जिसे यह काम सौंपा गया था कि लखनऊ-कार्फ्रेंस के जरिये भेजे गए सवालो पर कमिटी की रिपोर्ट का मसविदा तैयार करे और बुनियादी रिपोर्ट लखनऊ की तजवीज़ो और उस रिपोर्ट की सिफारिशो को शामिल करते हुए, जिसे हमें कांफ्रेस में पेश करना है, एक बिल का मसविदा भी तैयार करे। इससे आगे की बैठक के लिए, जो दिल्ली या इलाहाबाद में नवबर के पहले हफ्ते मे होगी, आसानी होगी। ख़याल यह है कि पार्लमेंटरी मसविदा तैयार करनेवाले के लिए शुरू-शुरू का काम निवटा दिया जाय, जिससे उसे कम-से-कम परेशानी हो और हमें कम-से-कम फीस देनी पडे। क्या मेहरबानी करके आप मुझे यह लिखेंगी कि आपके कामनवेल्थ ऑव् इडिया बिल का मसविदा किसने तैयार किया था और उसने क्या फीस ली थी ?

ऑल इडिया कन्वेशन की तारीख फिलहाल कलकत्ता मे १७ दिसम्बर को रक्खी गई है। यह बडी अहम बैठक होगी और मै उम्मीद करता हू कि आप इसमे शरीक होगी।

शिमला की बैठक की कार्रवाई की एक नकल आपके पास दो-एक दिन मे भेजी जायगी।

हम लोगो ने जो काम उठा रक्खा है, उसके बारे में आप अपने सुझाव देंगी तो मै एहसानमन्द होऊगा।

मेहरबानी करके यह खत सर तेजबहादुर सप्रू को दिखा दीजियेगा। मेरा खयाल है जब यह खत पहुचेगा वह मद्रास में होगे। मै उन्हे एक छोटा-सा खत भेज रहा हू और लिख रहा हू कि ब्यौरे की बाते इस खत से मालूम करे।

डा. ऐनी बेसेंट, आपका,
अड्यार, मद्रास। **मोतीलाल नेहरू**

५८. मोतीलाल नेहरू की ओर से मोहम्मदअली जिन्ना के नाम

२२ नवबर १९२८

प्रिय जिन्ना,

आनेवाले कन्वेशनो की तारीखो के सवाल पर सोचने और अपनी कमिटी और काग्रेस की इस्तकबालिया कमेटी के मेबरो से सलाह-मशविरा करने में मुझे इतना वक्त लग गया है। दोनो ही इस तजवीज के कडे मुखालिफ है कि कन्वेशन काग्रेस के बाद की जाय और इसके बारे मे जो सजीदा वजहें उन्होने दी है, उनसे मै एकराय हू। इसलिए मुझे एक तरकीब सूझी है, जिससे काग्रेस और मुस्लिम लीग दोनो के एतराज मिट जायगे। कन्वेशन लीग से चार दिन पहले शुरू होगी और २७-२८ तक, जबकि लीग का इजलास होगा, जारी रहेगी। अगर जरूरी हुआ तो २८ को सवेरे भी हो सकेगी। इस तरह लीग अपने नुमाइदो को पूरे हक देकर कन्वेशन के आखिरी इजलास में भेज सकेगी और इस्तकबालिया कमेटी की यह माग भी कि कन्वेशन २९, ३०, ३१ को काग्रेस की बैठको से पहले हो जाय, पूरी हो सकेगी। बहुत-सी ऐसी बाते है, जिनमें बहस की कोई गुजाइश नही और वे २२, २३, २४ को कन्वेशन मे तय की जा सकेगी, लेकिन मुस्लिम लीग को यह हक़

होगा कि आखिरी इजलास मे कोई भी सवाल फिर से उठा सके। इस बीच, सालाना जलसे मे कौंसिल को कन्वेंशन के लिए नुमाइदे भेजने का जो हक दिया था, उसपर, मुझे उम्मीद है कि अमल होगा और शुरू से ही नुमाइदे उसमे शरीक होगे। यह जरूरी नही कि कन्वेशन के पहले इजलास में (२२ से २४ तक) अगर वे किसी चीज से अपनेको न बाधना चाहे तो बेशक न बाधे। मै उम्मीद करता हू कि इस इतज़ाम से आपको और इससे ताल्लुक रखनेवाले सभी लोगो को तसल्ली होगी।

इसीके मुताबिक मै अखबारो को जरूरी खबरें भेज रहा हू।

आपका,
मोतीलाल नेहरू

५९. महात्मा गांधी की ओर से

[मेरा खयाल है कि यह पत्र लखनऊ की उस घटना के बाद लिखा गया था, जिसमें हम बहुत लोगो ने साइमन-कमीशन के वहां पहुंचने पर शात रूप में विरोधी प्रदर्शन किया था। हमपर पुलिस के डडो और लाठियो की सख्त मार पड़ी थी।]

वर्धा
३ दिसबर १९२८

प्रिय जवाहर,

तुम्हे मेरा प्यार। सब काम बहादुरी से किया गया। तुम्हे इससे भी अधिक वीरता के काम करने हैं। भगवान तुम्हे दीर्घायु करे और भारत को गुलामी के जुए से छुडाने में तुम्हे अपना विशेष अस्त्र बनाये।

तुम्हारा,
बापू

६० नरेन्द्रदव की ओर से

[इस पत्र में जिस लीग का जिक्र है वह 'इडिपेंडेंस फॉर इडिया लीग' है। वह राष्ट्रीय काग्रेस पर यह जोर डालने के लिए स्थापित की गई थी कि वह अपना उद्देश्य 'स्वतन्त्रता' बना ले। नरेन्द्रदेव काग्रेस के एक प्रमुख नेता थे। आगे चलकर भारत में जब समाजवादी दल की स्थापना हुई तो

उसके संस्थापकों में एक वह थे।]

बनारस,
९ फरवरी १९२९

प्रिय जवाहरलालजी,

आपकी भेजी पाडुलिपि मिली। मैं उसे पढ रहा हू और उसके विषय मे शीघ्र ही अपनी राय आपको भेजूगा। आपके प्रश्नो के उत्तर भी देने का प्रयत्न करूगा।

लीग के विषय में मै मुक्त भाव से आपके आगे स्वीकार करता हू कि मेरी वर्तमान भावना यह है कि उसके सामने उज्ज्वल भविष्य दिखाई नही देता। हमारे बीच ऐसे ईमानदार लोगो के सगठन की कमी है, जो निष्ठावान् हो और जिनकी आर्थिक कार्यक्रम में जीवित श्रद्धा हो। हम सब सामान्यतया विश्वास कर सकते है कि नये आधार पर हमारे समाज की पुनर्रचना होनी आवश्यक है। लेकिन जबतक हमे उन सामाजिक और आर्थिक सिद्धान्तो की स्पष्ट कल्पना नही होगी, जिनके आधार पर समाज की नव-रचना हो सकेगी और जबतक हमे यह निश्चित पता नही होगा कि देश की वर्तमान परिस्थिति मे हमें कितनी सफलता मिल सकती है, हम किसी परिणाम की प्राप्ति की आशा नही कर सकते। हममें से बहुत-से लोगो के विचार अस्पष्ट और अनिश्चित है और वे यही नही जानते कि आगे किस प्रकार बढे। इसका परिणाम यह हो रहा है कि हम अपने निश्चयो मे दृढ नही हो पाते और इस कारण हमारे कार्य मे सचाई का अभाव है। मेरा विचार है कि अपने चारो ओर हमे जो कार्य-विमुखता दिखाई देती है, वह बौद्धिक निष्ठा के अभाव के कारण है। इसलिए मेरे विचार से मुख्य काम हमारे सामने यह है कि हम अपने आदमियो को बौद्धिक खुराक देकर उनके विचारो को मजबूत बनाये। इसके लिए यदि आवश्यक कोष मिल सके तो लीग को एक साप्ताहिक पत्र प्रारभ करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसकी अपनी एक पुस्तको की दुकान भी हो, जहा ऐसा साहित्य मिल सके। लीग को जगह-जगह स्वाध्याय-मडल भी खोलने चाहिए और भारतीय भाषाओ मे सस्ता साहित्य निकालना चाहिए। मेरे विचार से यही काम सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, जिनपर इस वर्ष हमारा ध्यान

केन्द्रित होना चाहिए, क्योकि मेरी विनम्र सम्मति मे इसके बिना मजबूत बुनियाद नही रखी जा सकती। इस समय लीग मे मुश्किल से मुट्ठीभर ऐसे लोग होगे, जिनके इस विषय में कोई निश्चित और सुलझे हुए विचार हो और जो सतोषजनक योग्यता रखते हो। मेरा आपसे अनुरोध है कि इस बात पर आप लीग का ध्यान केन्द्रित करे।

अभी तक हम कोई भी काम ऐसा नही कर सके है, जिससे हमारा अस्तित्व सिद्ध हो। लीग की प्रमुख विशेषता यह है कि उसके उद्देश्यो में नये आधार पर समाज का निर्माण करना है। लीग केवल राजनैतिक स्वतत्रता से सन्तुष्ट नही है। स्वभावत लोग यह जानना चाहते है कि नया आधार क्या होगा और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लीग किन साधनो का उपयोग करेगी? कलकत्ता में चारो ओर से मुझपर अनेक प्रश्नो की बौछार हुई। लोगो की सामान्य धारणा यह जान पडती है कि लीग ने जो आशाए दिलाई थी, उन्हे वह पूरा नही कर रही है। कुछ लोगो का खयाल है कि लीग की स्थापना का एकमात्र उद्देश्य काग्रेस में स्वतत्रता के प्रश्न पर तगडा मोर्चा लेना था और चूकि वह हेतु सिद्ध हो चुका है, इसलिए वे कहते है कि अब एक दिन भी लीग के जीवित रहने का प्रयोजन नही है। दूसरे वे लोग है, जो स्वतत्रता के ध्येय को तो स्वीकार करते है, परन्तु उन्हे आदर्शों और उद्देश्यो से विशेष सरोकार नही है और वे तात्कालिक कार्य के लिए कोई सजीव कार्यक्रम चाहते है। काग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम उन्हे नीरस और बधे-बधाये लगते है और चूकि हम देश के सामने और कोई अच्छा कार्यक्रम नही रख पाये है, इसलिए स्वाभाविक रूप से लीग में शामिल होने का उत्साह उन्हे अनुभव नही होता। हमारे अपने प्रतिनिधि भी उदासीन है। बार-बार स्मरण-पत्र भेजने पर भी उनमें से बहुतो की ओर से उत्तर नही आया। कुछ मित्र तो पत्र की पहुच तक नही भेजते।

आप तो जानते हैं कि जब मैंने मत्री का पद स्वीकार किया, उस समय यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था कि विद्यापीठ के मेरे वर्तमान दायित्वो से मुझे इतना समय नही मिलेगा कि मै देश के भ्रमण के लिए जा सकू। मै तो यहा से केवल पत्र-व्यवहार ही कर सकूगा। परन्तु यदि पत्रो का कोई उत्तर ही नही देता है तो मै क्या करू?

ऐसी अवस्था मे यदि हम स्थिति को नही सुधारते तो हम काम के आगे बढने की आशा नही कर सकते ।

यदि सभव हो तो लीग को कोई आर्थिक कार्यक्रम लेना चाहिए । मै नही सोचता कि प्रान्तीय लीगो को अपने-अपने कार्यक्रम पृथक् रूप से बनाने चाहिए । इसका विघातक परिणाम होगा । यदि ऐसी स्वतत्रता दी गई तो—जैसाकि आप कहते है—सभव है, उनके कार्यक्रम आपस मे टकरावेगे । इससे वडी गडवडी पैदा हो जायगी । लीग का केवल एक ही कार्यक्रम हो और उसे एक स्वर से ही बोलना चाहिए ।

मेरा विचार है कि आपका यह सुझाव स्वीकार होना चाहिए कि प्रत्येक प्रात अपनी सिफारिशें केन्द्रीय समिति के पास भेजे । उस हालत मे आपने कार्यक्रम का जो मसविदा तैयार किया है, उसको हमारी समिति चर्चा का आधार वना सकती है ।

यदि केन्द्रीय कौसिल को कोई आर्थिक कार्यक्रम बनाने के लिए राज़ी किया जा सके और वह देश को कोई योजना दे सके तो बडा अच्छा हो । जो हो, मैने ऊपर जिस कार्य की रूप-रेखा बताई है, उसे प्रान्तीय लीगें अपने हाथ में ले सकती है । इसके लिए केन्द्र की इजाज़त की भी ज़रूरत नही होनी चाहिए ।

प्रान्तीय कमेटी की अगली बैठक लखनऊ में इसी महीने की २४ तारीख़ को हो रही है । आपके पास औपचारिक सूचना शीघ्र ही पहुचेगी ।

सप्रेम आपका,
नरेन्द्र देव

६१ महात्मा गाधी की ओर से

रेल से,
२९ जुलाई १९२९

प्रिय जवाहरलाल,

इन्दू के नाम तुम्हारे पत्र वहुत अच्छे है और प्रकाशित होने चाहिए । काश तुम उन्हें हिन्दी मे लिख सकते ! जैसे भी है, उन्हे साथ-साथ हिन्दी मे भी छपवाना चाहिए ।

तुम्हारा विपय-निरूपण विल्कुल पुराने ढग का है । मानव का आदि

अब एक विवादपूर्ण विषय है। धर्म का आदि और भी विवादास्पद मामला है। परन्तु इन मतभेदो से तुम्हारे पत्रो का मूल्य घट नही जाता। उनका महत्व तुम्हारे निर्णयो की सचाई मे नही, परन्तु निरूपण के ढग में और इस तथ्य में है कि तुमने इन्दू के हृदय तक पहुचने और उसकी ज्ञान की आखें खोलने की कोशिश अपनी बाह्य प्रवृत्तियो के बीच में की है।

जो घडी मैं ले आया हू उसके बारे में कमला से झगडना नही चाहता था। इस भेंट की तह मे जो प्रेम है, उसका मैं सामना नही कर सका। मगर घडी फिर भी इन्दू के लिए धरोहर के रूप में रक्खी जायगी। इतने सारे छोटे-छोटे शैतानो से घिरा रहकर मैं सजावट की इस चीज को सुरक्षित नही रख सकता। इसलिए मुझे यह जानकर खुशी होगी कि इन्दू को उसकी प्यारी घडी वापस मिल जाने पर कमला राजी हो जायगी।

काग्रेस के 'ताज' पर मेरा लेख पहले ही लिखा जा चुका है। वह य. इ के अगले अक मे निकलेगा।

सप्रेम तुम्हारा,
बापू

६२. सरोजिनी नायडू की ओर से

[यह पत्र मेरे कांग्रेस के अध्यक्ष चुने जाने पर लिखा गया था।]

लखनऊ
२९ सितबर १९२९

मेरे प्यारे जवाहर,

मैं कल्पना नही कर सकती कि समूचे भारत में कल तुम्हारे पिता से अधिक गर्व का अनुभव करनेवाला और कोई हृदय होगा अथवा तुम्हारी अपेक्षा अधिक भार अनुभव करनेवाला कोई दूसरा हृदय। मेरी स्थिति विचित्र थी, मैं समान मात्रा मे उनके गर्व और तुम्हारी वेदना दोनो का अनुभव करती रही। मैं रात को बहुत देर तक जागकर अपने उन शब्दो की सार्थकता के बारे मे सोचती रही, जो मैं अक्सर तुम्हारे बारे मे कहा करती थी कि तुम्हारे भाग्य मे एक शानदार शहादत बदी है। चुनाव के बाद जब तुम्हारा भव्य अभिनदन किया जा रहा था तो तुम्हारे चेहरे को देखते-देखते मुझे लगा, मानो मैं एक साथ ही राजतिलक और सूली का दृश्य देख

रही हू। वास्तव मे कुछ परिस्थितियो और कुछ अवस्थाओ मे ये दोनो एक-दूसरे से अभिन्न है और लगभग पर्यायवाची है। ये दोनो आज तुम्हारे लिए विशेष रूप से एक ही है, क्योकि अपनी आत्मिक क्रिया और प्रतिक्रिया मे तुम बहुत ही सवेदनशील और परिष्कृत हो और आक्राता एव भारी-भरकम स्वर के पीछे अपनी गरीबी को छिपाने के लिए राह खोजती दुर्बलता के जो अनिवार्य परिणाम है—दुर्बलता, असत्य, प्रपच, विश्वासघात—उनकी कुरूपता का मुकाबला करने में तुम उन पुरुषो और स्त्रियो की अपेक्षा सैकडो गुनी तीव्रता से क्लेश अनुभव करोगे, जो कि उतने कोमल-ततुओ, स्पष्ट दृष्टि एव ग्राह्य-शक्ति से सपन्न नही है। फिर भी तुम्हारी निर्मल सचाई और स्वाधीनता के लिए तुम्हारे प्रेम में मेरा अटल विश्वास है और यद्यपि तुमने मुझसे कहा था कि ऐसे भारयुक्त पद की परेशानी में अपने विचारो और आदर्शों को कार्यान्वित करने योग्य न तो तुम्हे अपने भीतर शक्ति जान पडती है और न पर्याप्त समर्थन ही, फिर भी मुझे लगता है, यह स्थिति तुम्हारे लिए चुनौती भी है और एक सम्मान भी। और यह ऐसी चुनौती है, जो तुम्हारे समस्त उच्च और श्रेष्ठ गुणो को कार्य-शक्ति, साहस, दूर-दृष्टि और विवेक का रूप दे देगी। मुझे अपने इस विश्वास के लिए कोई भय नही।

तुम्हारे इस बडे भारी और प्राय डरावने कर्तव्य मे मुझसे तुम्हारी जो भी सहायता या जो भी सेवा हो सके, उसके लिए, तुम जानते हो, तुम्हारे कहने भर की देर है। कोई ठोस मदद मैं चाहे न कर सकू, पर कम-से-कम पूरी-पूरी सहानुभूति और स्नेह तो मैं तुम्हे दे ही सकती हू। और यद्यपि, जैसा खलील जिब्रान का कहना है, "एक आदमी के स्वप्नो के पख दूसरे के काम नही आते", तो भी मेरा विश्वास है कि अपनी आत्मा की अजेय निष्ठा दूसरे के भीतर ऐसी ज्योति जाग्रत कर देती है, जिससे ससार जगमगा उठता है।

तुम्हारी प्यारी बहन,
सरोजिनी नायडू

६३ महात्मा गाधी के नाम

[यह पत्र दिल्ली में होनेवाले एक सम्मेलन के बाद, जिसे 'नेताओ का

सम्मेलन' का नाम दिया गया, लिखा गया था। इस सम्मेलन ने उपस्थित लोगो के हस्ताक्षर से एक वक्तव्य भी प्रकाशित किया था। इसपर आखिर-कार मैंने भी दस्तखत किये थे, अगर्चे बडी हिचकिचाहट के साथ। सुभाष बोस ने इसपर हस्ताक्षर नहीं किये। लेकिन हस्ताक्षर कर देने के बाद मुझे दुःख हुआ और मैंने यह पत्र लिखा। उस समय मै काग्रेस का प्रधान मत्री था और उसके आगामी अधिवेशन का सभापति चुना जा सकता था।]

ऑल इडिया काग्रेस कमेटी,
५२, हीवट रोड, इलाहाबाद
४ नवबर १९२९

प्रिय बापू,

मैंने दो रोज अच्छी तरह से विचार किया है। मेरा खयाल है, अब मै स्थिति पर दो दिन पहले की बनिस्बत कुछ ज्यादा ठडे दिमाग से विचार कर सकता हू, लेकिन मेरा दिमागी बुखार अभी दूर नही हुआ है। अनु-शासन की बिना पर आपने मुझसे जो अपील की है, उसे मै दर-गुजर नही कर सकता था। मै खुद अनुशासन का कायल हू। फिर भी मेरा खयाल है कि अनु-शासन की ज्यादती भी हो सकती है। परसो शाम को मेरे अदर कुछ ऐसी बातें उठी, जिनको मै एकसूत्र मे नही बाध सकता। प्रधान मत्री होने के नाते काग्रेस के तई मेरी वफादारी होनी चाहिए और उसके अनुशासन में मुझे रहना चाहिए। मेरी और हैसियते और वफादारिया भी हैं। मै इडियन ट्रेड यूनियन काग्रेस का सदर हू और 'इडिपेंडेस फॉर इडिया लीग' का सेक्रेटरी हू और युवक-आदोलन से मेरा गहरा ताल्लुक है। इन दूसरी जमातो के तई, जिनसे मेरा ताल्लुक है, अपनी वफादारी के लिए मै क्या करू? मै इस बात को पहले से ज्यादा अब महसूस करता हू कि कई घोडो पर एक साथ सवारी करना काफी मुश्किल है। जब जिम्मेदारियो और वफादारियो की आपस में टकराहट हो तो इसके अलावा कोई क्या कर सकता है कि अपनी सहज प्रवृत्ति और बुद्धि पर भरोसा करे?

इसलिए सभी बाहरी लगावो और वफादारियो से अलग रहकर मैंने हालत पर गौर किया है और मेरा यह यकीन ज्यादा मजबूत होता गया है कि परसो मैंने जो किया, वह गलत किया। मै बयान की अच्छाइयो या

उसकी पालिसी के बारे में कुछ न कहूगा। मुझे डर है कि उस मसले पर हमारा बुनियादी मतभेद है और यह मुमकिन नही कि मै आपकी राय बदल दू। मै सिर्फ इतना ही कहूगा कि मेरा यकीन है कि वह बयान नुकसानदेह है और मजदूर सरकार के ऐलान का बिल्कुल नाकाफी जवाब है। मेरे खयाल से कुछ प्रतिष्ठित लोगो को खुश करने और अपने साथ बनाये रखने की कोशिश मे हमने अपने दल के बहुत-से उन दूसरे लोगो को परेशान किया है और करीब-करीब उन्हे दल से बाहर किया है, जिनको साथ रखना कही अच्छा था। मेरा खयाल है कि हम लोग एक खतरनाक जाल मे उलझ गये है, जिससे निकल सकना आसान नही, और मै समझता हू कि हमने दुनिया को यह दिखला दिया है कि अगर्चे हम लोग बातें तो ऊची करते है, लेकिन सौदेबाज़ी छोटी-मोटी चीज़ो के लिए कर रहे है।

मै नही जानता कि ब्रिटिश सरकार अब क्या करेगी। मुमकिन है, वह आपकी शर्तों को नही मानेगी। मुझे उम्मीद यही है कि वह नही मानेगी। लेकिन मुझे इसमें ज़रा भी शक नही कि ज्यादातर हस्ताक्षर करने-वाले—निश्चय ही आपको छोडकर—उन शर्तों मे ब्रिटिश सरकार जो भी रद्दो-बदल सुझावेगी, उसे मजूर कर लेगे। हर हालत मे मुझे यह जान पडता है कि काग्रेस के भीतर मेरी हालत रोज़-बरोज़ ज्यादा मुश्किल होती जायगी। मैने काग्रेस की सदारत बडे शक-शुबहा के साथ मजूर की थी, लेकिन इस उम्मीद से कि अगले साल हम एक निश्चित मसले को लेकर लड लेगे। उस मसले पर पहले से ही बादल छा गये है और इस पद को मजूर करने की जो एकमात्र वजह थी, वह अब नही रह गई है। इन 'नेताओ के सम्मेलनो' से मुझे क्या सरोकार? मै अपनेको अनधिकार चेष्टा करनेवाला समझने लगा हू और इससे मुझे परेशानी है। मै अपनी बात खुलकर इसलिए नही कह पाता कि सम्मेलन के बिगडने का मुझे डर है। मै अपनेको दबाता हू और यह दबाना कभी-कभी मेरे लिए भारी पडता है और मै भभक उठता हू और ऐसी चीज़ें भी कह जाता हू, जिनको कहने का मेरा कोई मतलब नही होता है।

मै महसूस करता हू कि मुझे ए आई सी सी के मत्री के पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। मैने पिताजी के पास एक ज़ाब्ते का ख़त भेज दिया

है, जिसकी नकल साथ मे भेज रहा हू ।

सभापति का सवाल इससे कही ज्यादा मुश्किल है । मै नही समझता कि इस ऐन मौके पर मै क्या कर सकता हू । मुझे इस बात का यकीन हो गया है कि मेरा चुनाव गलत था । इस अवसर पर और इस साल के लिए सिर्फ आपको ही चुना जाना चाहिए था । अगर काग्रेस की पालिसी वही है, जिसे मालवीयजी की पालिसी कह सके तो मै सभापति नही रह सकता। अब भी अगर आप राजी हो तो बिना ए आई सी सी की बैठक बुलाये एक रास्ता निकल सकता है । ए. आई. सी सी के मेंबरो के नाम एक गश्ती चिट्ठी भेजी जा सकती है कि आप सदर बनने के लिए रजामद है । मै उनसे माफी माग लूगा । यह सिर्फ जाब्ते की कार्रवाई होगी, क्योकि सभी या करीब-करीब सभी मेंबर आपके फैसले को खुशी से मान लेंगे ।

एक दूसरा रास्ता यह है कि मै यह ऐलान कर दू कि मौजूदा हालतो मे और इस खयाल से कि इस वक्त दूसरा सदर चुनने में दिक्कत होगी, अभी सदारत न छोड ू , लेकिन काग्रेस के फौरन बाद छोड दू । मैं चेयरमैन के तौर पर काम करूगा और मेरी कोई भी परवा किये बिना काग्रेस जसा चाहे फैसला कर सकती है ।

अगर मै अपने जिस्म की और दिमागी तदुरुस्ती बनाये रखना चाहता हू तो इन दो मे से एक रास्ता मेरी समझ में जरूरी है ।

जैसाकि मैने दिल्ली से आपको लिखा था, मैं कोई पब्लिक बयान नही निकाल रहा हू । दूसरे लोग क्या कहते है या क्या नही, इसकी मुझे ज्यादा फिक्र नही है । लेकिन खुद मुझे शाति होनी चाहिए ।

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

फिर से—

इस खत की एक नकल मै [illegible] पास भे[illegible] [illegible]स खत को लिखकर मै कुछ हल्कापन म[illegible] । मुझ[illegible] [illegible]से आपको कुछ परेशानी होगी । ऐसा [illegible] हता । [illegible]र रहा है कि इसे आपके पास न भेजू, [illegible] आ[illegible] । दस दिन और [illegible]ने पर जरूरी तो [illegible]

निगाह ज्यादा साफ हो जायगी। लेकिन यह अच्छा है कि आप जान लें कि मेरा दिमाग किस तरह काम कर रहा है।

६४. महात्मा गांधी की ओर से

अलीगढ़,
४ नवम्बर १९२९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। मैं तुम्हे कैसे सान्त्वना दू ? दूसरो से तुम्हारी हालत सुनकर मैंने अपने मन मे कहा, "क्या मैंने तुमपर बेजा दबाव डालने का अपराध किया है ?" मैंने सदा यह माना है कि तुमपर बेजा दबाव पड नही सकता। मैंने सदा तुम्हारे प्रतिरोध का सम्मान किया है। वह हमेशा सम्मानपूर्ण रहा है। इसी विश्वास पर मैंने अपना दावा आगे बढाया। इस घटना से सबक लेना चाहिए। मेरा सुझाव जब भी तुम्हारे दिल या दिमाग को न जचे तभी अड जाओ। ऐसे अडने से मेरा प्रेम तुम्हारे प्रति घटेगा नही।

मगर तुम उदास क्यो होते हो ? आशा है, तुम्हे लोकमत का डर नही है। तुमने कोई बेजा बात नही की है, तो उदासी क्यो ? स्वाधीनता का आदर्श अधिक स्वतन्त्रता से टकराता नही। इस समय कार्यकारी अधिकारी की और अगले साल के लिए अध्यक्ष की हैसियत से, तुम अपने अधिकाश साथियो की सामूहिक कार्रवाई से अपने-आपको अलग नही रख सकते थे। मेरी राय में तुम्हारा हस्ताक्षर करना तर्क-सगत, बुद्धिमत्ता-पूर्ण और अन्यथा भी ठीक था। इसलिए मैं आशा करता हू कि तुम्हारी उदासी दूर हो जायगी और तुम्हा ी अचूक प्रसन्नता वापस आ जायगी।

बयान तुम जरूर दे सकते हो, मगर इस बारे में जल्दी करने की जरा भी ज़रूरत नही है।

अभी-अभी जो दो समुद्री तार मिले है उनकी नकलें साथ में है। इन्हे पिताजी को भी दिखा देना।

अगर मुझसे चर्चा करने की जी मे हो तो जहा चाहो मुझे पकड लेने में सकोच न करना।

आशा है, जब मैं इलाहाबाद पहुंचूगा तब कमला को स्वस्थ और प्रसन्न पाऊंगा ।

हो सके तो तार देना कि उदासी मिट गई है ।

सप्रेम तुम्हारा,
बापू

६५ एम ए अन्सारी की ओर से

लखनऊ,
७ नवम्बर १९२९

प्रिय जवाहर,

दिल्ली से रवाना होने के पहले जब तुम मेरे यहा आये थे उस वक्त मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहता था । तुम्हे याद होगा कि मैंने खोजते हुए तुम्हे सेन गुप्ता के कमरे मे पाया और मैंने तुम्हे एक बयान के बारे में बताया था, जिसका मसविदा पास के कमरे में तैयार किया जा रहा था । लेकिन चूकि मैंने तुम्हे बातचीत में मशगूल पाया, इसलिए तुम्हे छेडना मुनासिब नही समझा ।

शुएब, खालिक, महमूद, तसद्दुक और दूसरे सब दोस्त, जो कान्फ्रेंस में मौजूद थे और जो अपनी आखो के सामने धीरे-धीरे आनेवाले मसलो को देख रहे थे, सबके दिलो मे तुम्हारे ऊचे दर्जे के और हिम्मत-भरे बर्ताव के लिए हद दरजे की कद्र थी। उसी वक्त हमें यह भी मालूम हुआ (हमने बहुत से लोगो को आपस में मशविरा करते देखा) कि लोग अपना निजी मतलब सीधा करने के लिए, तुम्हारे उठाये गए कदम का तभी-के-तभी फायदा उठा लेनेवाले हैं, लेकिन मैं जानता हू कि इन छोटी-छोटी बातो का तुमपर या तुम्हारे कामो में से किसीपर कोई असर नही पडेगा। ताहम मैं सुभाष के अलावा और कई लोगो के इस्तीफो का इतजार कर रहा हू। बहरहाल सवाल का यह महज़ ज़ाती पहलू है ।

मैंने पडितजी और महात्माजी के नाम तुम्हारे खत देखे । मैं तुमसे यह ज़रूर कहना चाहूगा कि उन्हे पढकर मेरे मन में बडी बेचैनी है। मेरा खयाल है कि वर्किंग कमेटी और सैक्रेटरीशिप से तुम्हारा इस्तीफा कुछ वक्त से पहले और जल्दबाज़ी मे दिया गया है। मैं यह भी सोचता हू कि कांग्रेस

की सदारत के बारे मे तुम्हारे सुझावो के पीछे भी वे ही जज्बात है। काग्रेस में जो खयाल फैला हुआ है उससे तुम एकराय नही हो। इसी वजह से तुम सोचते हो कि काग्रेस की सदारत से तुम्हे इस्तीफा देना पडेगा। लेकिन मेरा अपना यकीन है कि यह बात बहुत मुमकिन है कि तुम्हे इस्तीफा न देना पड़े और काग्रेस तुम्हारे खयालो को अपनाले।

अपने दिल्ली के बयान और कामन्स-सभा की बहस के बाद हम पक्के तौर पर यह जान सकने की हालत में होगे कि आया हमा ी बात मजूर ई या नामजूर। मजूर होने से उसके नामजूर होने के मौके ज्यादा है। उस सूरत में हमारी हालत ज्यादा मजबूत होगी और लाहौर में जो भी कदम उठाया जायगा उसके पीछे पूरी काग्रेस की ठोस ताकत होगी। इसलिए मै समझता हू कि सबसे अच्छी पालिसी यही है कि 'इतजार करो और देखो', जसी कि पडितजी की भी सलाह है। वर्किंग कमिटी की बैठक के पहले तुम्हे किसी तरह का कदम नही उठाना चाहिए।

पडितजी के साथ इलाहाबाद जाने का बहुत बडा लालच है, लेकिन अपने मरीज़ो की इच्छाओ के डर से मै चुपचाप चोर की तरह दिल्ली से रवाना हुआ था। मुझे वापस जाना चाहिए और इलाहाबाद में वर्किंग कमेटी की ब क में शरीक ोने के लिए फिर दिल्ली से चलने के पहले मुझे कम-से-कम वहा एक हफ्ते काम करना चाहिए।

माजी को आदाब और कमला, सरूप, बेटी और इन्दू को प्यार।

तुम्हारा,
एम. ए. असारी

६६ महात्मा गाधी की ओर से

वृन्दावन
८ नवम्बर १९२९

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हे मेरा तार मिल गया होगा। तुम्हे अभी इस्तीफा नही देना चाहिए। अपनी बात पर बहस करने का मेरे पास समय नही है। मै इतना ही जानता हू कि इसमे राष्ट्रीय कार्य पर असर पडेगा। कोई जल्दी नही और किसी उसूल को खतरा नही। ताज की बात यह है कि उसे और

कोई नही पहन सकता। वह कभी फूलो का ताज नही होनेवाला है। अब तो काटे-ही-काटे है। मै उसे पहनने को अपने-आपको राजी कर सकता तो मैं लखनऊ में ही पहन लेता। मुझे मजबूर होकर पहनना पडेगा, इसके लिए इस प्रकार की स्थिति मेरे ध्यान में नही थी। उन स्थितियो में से एक तुम्हारी गिरफ्तारी होने और दमन बढ जाने की थी। लेकिन ये सब बाते जब हम मिलें तब शान्त और अनासक्त चर्चा के लिए रख छोडें।

तबतक ईश्वर तुम्हे शान्ति दे। बापू

६७ सरोजिनी नायडू की ओर से

ताजमहल होटल, बबई
२० नवम्बर १९२९

प्रिय जवाहरलाल,

इसे कहते है मुसीबत मे दोस्ती निभाना। मै, और पद्मजा यात्रा की तैयारी मे है और हम दोनो के ही जरूरत से ज्यादा लोकप्रिय होने के कारण हर क्षण तरह-तरह के स्त्री-पुरुष हमारे ऊपर हल्ला बोलते रहते हैं। पद्मजा अपनी पहली यात्रा और घरेलू दासता से पहली बार छुटकारे की कल्पना से बेहद उत्तेजित है। आशा करती हू कि इस यात्रा से उसकी तदुरुस्ती और उमगो को नया मोड मिलेगा। मुझे तो एकदम अचानक ही, लगभग दो बार पलक झपकते-झपकते यह तय करना पडा कि मै अफ्रीका जाऊ या नही। पर वे लोग मुसीबत में है और उनकी मदद की पुकार निहायत जरूरी थी—और पद्मजा की अफ्रीका जाने की लालसा भी एक अर्ध-चेतन प्रभाव था, जिसने मेरा निश्चय पक्का किया।

विदा, प्रिय जवाहरलाल! मैं २१ दिसम्बर को तुम्हारी काग्रेस के समय तक लौट आऊगी। मेहरबानी करके इसका खयाल रखना कि अध्यक्ष पापा ६ दिसम्बर तक केंटी अध्यक्ष के नाम एक तार काग्रेस के उद्घाटन में पढने के लिए एक सदेश के साथ नैरोबी भेजना न भूलें।

फिर मिलेंगे। पद्मजा का और मेरा आनद भवन में सभीके लिए प्यार।

तुम्हारी बहन,
सरोजिनी

६८. ऐनी बेसेन्ट की ओर से

दी थियोसाफीकल सोसायटी
अडयार, मद्रास
२९ नवम्बर १९२९

प्रिय पडितजी,

आपने बडा अच्छा किया कि मेरे भाषण के समय जो पर्चे बाटे गये, उसपर खेद प्रकट किया। विश्वास रक्खे, पर्चे बाटने से मुझे कोई दु ख नही हुआ। नौजवानो को सार्वजनिक कामो में सक्रिय दिलचस्पी लेते हुए देखकर मुझे हमेशा बडी खुशी होती है, भले ही वे मुझसे सहमत हो या न हो। फिर अब मैं इतनी वृद्ध राजनीतिज्ञ होगई हू कि लोग क्या कहते है, इसकी तरफ मैं ध्यान भी नही देती।

स्नेहपूर्वक आपकी,
ऐनी बेसेंट

६९ वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय की ओर से

[वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय सरोजिनी नायडू के भाई थे। वह प्रथम महायुद्ध से भी पहले ऑक्सफोर्ड चले गये थे। तबसे वह कभी भी स्वदेश नहीं लौटे। यूरोप में उनका कई वामपक्षी आदोलनो से सबध रहा।]

साम्राज्यवाद-विरोधी और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-पोषक सघ
इंटरनेशनल सेक्रेटेरिएट,
२४ फ्रेडरिक स्ट्रास, र्वालन, एस. डब्ल्यू. ४८
४ दिसम्बर १९२९

प्रिय जवाहर,

७ नवम्बर (रूसी-क्राति का जयन्ती-दिवस) का लिखा आपका खानगी पत्र मिला। पढकर बडा दुख हुआ। अपने प्रश्नो के बारे में हमेशा क्रातिकारी दृष्टिकोण से (मुझे आशा है कि लगातार) सोचने की मेरी आदत है और इसी दृष्टिकोण से अपनी मित्रता के दौरान में अपने विचार बहुत ही स्पष्टता के साथ कहने का मैंने हमेशा अपना दायित्व माना है। इस पत्र से पहले मैं आपको एक समुद्री तार भेज चुका हू। उसमें इस समाचार पर अचरज प्रकट करके मैंने अपनी यही राय कुछ मीठे शब्दो में आपपर जाहिर

की है। मैंने यह इसलिए किया कि 'टाइम्स' की रिपोर्ट पर मैं विश्वास नही कर सका। परन्तु मुझे बहुत खेद के साथ कहना पडता है कि आपका पत्र और हिंदुतस्तान के समाचारपत्र इस रिपोर्ट को सत्य साबित करते है कि आपने दिल्ली में लुटिया डुबो दी। देशद्रोहियो के सामने, जो कि अपने-अपने वर्ग के हितो के लिए काम कर रहे है, झुकने के लिए आप कोई भी कारण उपस्थित करे, मेरी समझ मे नही आता कि आपने तत्काल त्यागपत्र क्यो नही दिया। इससे देश मे आपकी स्थिति बडी मजबूत हो जाती। तमाम युवक, किसान और मज़दूर भी आपके साथ हो जाते और इससे काग्रेस के समझौता-पसद लोगो को आप बडी आसानी से हरा सकते थे। 'पीपुल' में ब्रिटिश राजनीति की सफलता के बारे में जो दृष्टिकोण व्यक्त किया गया है, उससे मै पूरी तरह सहमत हू। जनता के महत्वपूर्ण हितो की अपेक्षा काग्रेस की एकता को अधिक महत्व देने की कल्पना करना बुनियादी राजनैतिक भूल है। इस समय आप देश के युवको के असदिग्ध नेता है और मज़दूर-वर्ग भी आप ही पर विश्वास करता है। ऐसी स्थिति में पहुचने पर आप इस क्षणिक अकथनीय दुर्बलता और मानसिक उलझन में पडे दिखाई देते है और आपने अपने अनुयायियो को अधर में छोड दिया है।

यह एक विचित्र पहेली ह कि ट्रेड यूनियन काग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से आपने जो किया, वह बिल्कुल सतोषजनक था। साथ ही दिल्ली के घोषणा-पत्र पर आप कैसे दस्तखत कर सके, यह समझना और भी मुश्किल हो जाता है। यह तथ्य कि हिंदुस्तान के ज्यादातर मज़दूर साम्राज्यवाद को उखाड फेंकने और पूर्ण स्वाधीनता के पक्ष में है, इस बात का प्रमाण है कि दिल्ली में आपने जो कदम उठाया वह गलत था। एक तरफ तो आप काग्रेस की कार्यकारिणी के बहुमत के साथ औपनिवेशिक स्वराज्य की माग का समर्थन करते है और दूसरी तरफ बहुसख्यक मजदूरो की पूर्ण स्वाधीनतावाली माग का अनुमोदन करते है। यह एक बेमेल बात है। इसे दूर करने के लिए कोई कदम उठाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय दुनिया में आपकी स्थिति बडी विषम हो जायगी, जबतक कि आप, बडे नेताओ ने प्राय जो किया, वह न करें, यानी सार्वजनिक रूप से अपनी भूल मान लें और सही रास्ते पर चलें। यदि आप आज ऐसा करते हैं, अर्थात् अपने हस्ताक्षर वापस ले लेते है और काग्रेस

के अध्यक्ष की अपनी स्थिति को उस झूठी एकता के ध्वस्त करने के लिए एक अवसर बना लेते है, जोकि बडी खतरनाक साबित हो रही है, काग्रेस के सारे तत्र को नरमदल और औपनिवेशिक स्वराज्यवाद के विरुद्ध दृढता के साथ सघर्ष करने के लिए अपने नियत्रण में कर लेते है, तो अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को आप बहुत-कुछ फिर से प्राप्त कर लेते है। कृपया मेरी इन आलोचनाओ से यह न समझें कि मै आपका मित्र नही रहा, बल्कि यह मानें कि मेरी ये आलोचनाए भारतीय किसानो और मजदूरो के प्रति मेरी गहरी निष्ठा से उत्पन्न हुई है। केवल इसी प्रकाश मे हम अपने कामो की सही जाच कर सकते है, और इस कसौटी के अनुसार मुझे यह कहने के लिए लाचार होना पडता है कि दिल्ली के घोषणा-पत्र पर आपके हस्ताक्षर स्वाधीनता-सग्राम मे भारतीय जनता के प्रति विश्वासघात के समान है।

हालाकि यह पत्र मै लीग के कागज पर लिख रहा हू, परन्तु यह पूर्णतया निजी है।

मुझे आशा है कि आप अब अखिल भारतीय साम्राज्यवाद-विरोधी सघ को उन आधारो पर स्थापित करने की आवश्यकता को महसूस करते है, जो आधार मैंने दो वर्ष पूर्व आपको सुझाये थे। राष्ट्रीय महासभा भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व नही करती। लेकिन उन सगठनो मे से वह एक है, जो कि कम-ज्यादा साम्राज्यवाद-विरोधी पार्ट अदा करते है। एक ऐसे सगठन का होना आवश्यक है जो कि इनसब सगठनो को एक सूत मे पिरो सके, उनके प्रयत्नो को जोड सके और एक साम्राज्यवाद-विरोधी न्यूनतम कार्यक्रम के अनुसार इनकी नीतियो का निर्धारण कर सके तथा अतिम सघर्ष के लिए सारे देश को सगठित कर सके। भारत में ऐसे किसी साम्राज्यवाद-विरोधी संघ की आवश्यकता की ओर ध्यान दिलाते हुए हमने हिन्दुस्तान के अपने सारे सगठनो को निमत्रण-पत्र पहले से ही भेज दिये है। हम आशा करते है कि हमारे द्वारा भेजे गए पत्र की एक प्रति आपको मिली होगी। लेकिन इस पत्र के साथ मै एक और प्रति भेज रहा हू। मुझे नही मालूम कि दिसम्बर के अत मे एक साम्राज्यवाद-विरोधी सम्मेलन लाहौर में बुलाने के विषय मे, जैसी कि हमारी योजना थी, कोई कदम उठाया गया है या नहीं ? इस विषय में एक-दो सप्ताह में आपको और अधिक सूचनाए भेजी जायगी।

मैं हृदय से आशा करता हू कि इस वर्ष के अत में भारत से जो समाचार मिलेगा, वह उतना ही उत्साहवर्धक होगा, जितना कि ट्रेड यूनियन काग्रेस के विषय में 'टाइम्स' में प्रकाशित हुआ था।

कमला और कृष्णा के लिए मेरी शुभकामनाए।

आपका,

वी. चट्टोपाध्याय

७०. मोतीलाल नेहरू की ओर से एम. ए. अन्सारी के नाम

१७ फरवरी १९३०

प्रिय अन्सारी,

मैं अहमदाबाद से आज सवेरे चला हू और यह खत रेल में बोलकर लिखवा रहा हू। चूकि मैं दिल्ली जा रहा हू, जहा देर-सबेर आपसे मुलाकात होने की उम्मीद है, इसलिए जो कुछ मुझे कहना है उसे आमतौर पर जवानी बातचीत के लिए उठा रखना चाहिए था। पता नही क्यो, हमारे काग्रेसियो के छोटे-से दल में चीजें इस तरह नही हो रही है, जैसीकि आमतौर पर होनी चाहिए और मैंने यह जरूरी समझा कि मुझे जो चद बातें कहनी है, उन्हे कागज पर लिखवा दू, जिससे उस बारे में कोई गलती न हो।

शुरू में ही आपको यकीन दिलाना चाहूगा कि मकसद के तईं आपकी वफादारी में और मेरे तईं आपकी निजी इज्जत और मोहब्बत में मुझे पूरा भरोसा है। यह पहला मौका नही है जबकि अवाम के सवालो पर मेरी आपसे मुख्तलिफ राय रही हो और बदकिस्मती से इस मौके पर, मैं महसूस करता हू, जैसाकि पहले करता रहा हू कि यह मुखालफत दोनो तरफ से फर्ज के गहरे जजबात में से उठकर आ रही है।

गाधीजी के नाम भेजे गए आपके खत को मैंने बहुत गौर से पढा है, और फिर से पढा है। हालाकि हिंदू-मुसलिम एके को जो अहमियत आप दे रहे है, उसे मैं पूरी तरह मजूर करता हू, तो भी अफसोस के साथ कहना पडता है कि मैं आपके साथ इन दो बातो में से किसीमें भी एकराय नही हो सकता कि किन वजहो से हमें अबतक हिंदू-मुस्लिम एके को हासिल करने में कामयाबी नही मिली है और आगे किस तरफ कोशिश होनी चाहिए। आप और मैं दोनो ही इस एके को ठोस बुनियाद देने की कोशिश करते आ

रहे है, लेकिन मानना पडेगा कि इसमे हम लोग बुरी तरह नाकामयाब रहे है। पिछले तजुर्बे और बहुत-कुछ गौर करने के बाद मै इस नतीजे पर पहुचा हू कि जिस तरह हम लोग काम करते रहे है, वह बुनियादी तौर पर गलत था। यह सचाई साथ-साथ काम करते हुए हमारे दिमाग मे वक्त-वक्त पर आती रही है और हमने कदम पलटने की कोशिश की है, जैसाकि हम लोगो ने लाहौर में मोहल्लो के चौधरियो की सभा करके किया था। लेकिन हमने पाया कि हम एक बुरे चक्कर मे पड गये है, जिससे उस हालत मे बच पाना नामुमकिन है। इन सारे सालो में हम गलत इजलासो में अपनी फरियाद पहुचाते रहे है। हम कयामत तक ऐसा करते रहें तो भी हमें कोई मदद नही मिलने की। अगर किसी आदमी का, चाहे वह कितना ही बडा आदमी क्यो न हो, एक जगह पर फीके स्वागत और उसी आदमी के दूसरी जगह पर पुरज़ोर स्वागत पर किसी अहम राष्ट्रीय मसले के हल का दारोमदार हो, तो अच्छा हो, हम उसे दूर से ही सलाम कर दें।

सर तेजबहादुर सप्रू अब वही भूल कर रहे है और असल में हमने इस बात को जहा छोडा था उन्होने वहीसे उसे उठाया है। मुझे ज़रा भी शुबहा नही कि जल्द ही उनकी गलतफहमी दूर हो जायगी। लेकिन उनके रास्ते मे मै अडचन नही बनना चाहता और हमने यह तय किया है कि बिना किसी नुक्ताचीनी के उन्हे बढने दें, जबतक कि वह थककर मैदान न छोडदें और मुझे यकीन है कि इसके लिए कुछ दिनो नही तो कुछ हफ्तो से ज्यादा इतजार नही करना पडेगा।

इस खत मे सिर्फ अपने इरादे बता देने से ज्यादा कुछ कहना मेरे लिए मुश्किल है। अब मेरा पक्का यकीन है कि हिन्दू-मुस्लिम एकता नसीहत देकर नही हो सकती। हमें उसे ऐसे ढग से लाना है कि हिन्दू और मुसलमान इस बात को जानें भी नही कि वे एकता के लिए कोशिश कर रहे है। यह सिर्फ इक्तसादी बुनियाद पर हो सकता है और हकतलफी करनेवाले के खिलाफ आज़ादी की लडाई लडते हुए। अगर एक फिरका जीने के हक के लिए, जो दोनो के लिए एक-सा हो, लड रहा हो, तो यह सोचना नामुमकिन है कि जल्दी या देर में दूसरा फिरका भी कामयाबी या नाकामयाबी के नतीजो को महसूस नही करेगा। और यह सोचना उतना ही नामुमकिन है कि उन

नतीजो को महसूस करने पर वह जी-जान से उस जद्दोजहद में नही कूद पडेगा। उस बडे दिमागवाले ने, बहुत ज्यादा खिल्ली उडाये जाने और गलतबयानी के बीच भी, नमक के कानूनो को तोडने में एक ऐसी बुनियाद को ढूढ निकाला है। यह चीज़ उनके अपने ही पसद के अल्फाज़ो मे 'यकीन न करने लायक सीधी' है। ताज्जुब तो सिर्फ यह है कि इससे पहले किसी दूसरे को यह बात कभी सूझी तक नही। इस मौके पर यह कहना मुमकिन नही कि ऐसी सीधी बात भी लोगो के खयाल को उकसावेगी या नही, लेकिन अगर ऐसा होता है तो हिन्दुओ और मुसलमानो दोनो के लिए यह ज़रूर ही एक बडी कामयाबी होगी। अगर उससे ऐसा नही होता तो हमारे लिए कोई उम्मीद नही और हिन्दू-मुस्लिम-एके की और कानूनी और फिरकेवाराना हको की बात करना ही फिजूल है।

आप कहते है कि मुल्क सिविल नाफरमानी के लिए तैयार नही है। अगर ऐसा है तो कब और कैसे उसे आप इसके लिए तैयार करेंगे ? क्या आपको यकीन है कि दोनो फिरको के नेता कहलानेवालो के मौजूदा गुस्से को देखते हुए किसी फारमूले तक पहुचना मुमकिन है ? अगर मुमकिन भी हो, जिसका मुझे पक्के तौर पर शुबहा है, तो महज यह कागज़ी फारमूला सरकार के खिलाफ जद्दोजहद में हमें कहातक आगे ले जायगा ? इसके लिए तो एक हिन्दुस्तानी नरमदलवाले के हौसले की जरूरत है, जो एक तयशुदा 'नही' को साफ 'हा' करके पढ सकता है, यह यकीन करके कि जैसे ही यह फारमूला तय हुआ कि सरकार घुटने टेक देगी। मेरी अब पक्की राय बन गई है कि आपसी रियायतो की बुनियाद पर बने कितने भी फार-मूले, जबकि रियायतें करनेवालो को रियायतें करने का कोई हक भी न हो, हमे हिंदू-मुस्लिम-एके के उससे ज्यादा पास नही ले जा सकते, जितने कि मौजूदा हालत में है।

आपने पिछले कुछ सालो के वाकयात पर नज़र दौडाई है। मि. जिन्ना के साथ मैने कुछ बेरुखी का सलूक किया, इस बारे में मुझे कुछ नही कहना है। मि जिन्ना ने उस मौके पर जो कुछ कहा उससे मेरा हौसला ठडा पड गया और मै उन्हें खुश करने के लिए बनावटी गर्मी अपने में पैदा नही कर सकता था।

आपने अपनी निजी हालत की सफाई भी दी है और उन वजहो की भी, जिनसे आपने काम करने का यह ढग अपनाया। आपके नज़रिये को देखते हुए कोई भी समझदार आदमी आपके काम के लिए आपको गलत नही ठहरा सकता।

आखीर में आपने १९२० के हालात का आज के हालात से खुलासेवार मुकावला किया है। किसी मुल्क की तवारीख में दस सालो के फासले से होनेवाली दो घटनाए हू-ब-हू एक-सी नही हो सकती है। आपने जो कुछ मुद्दे बताये है, उनसे मुझे हैरत होती है, जैसे यह कि लोगो का मज़दूर दल की सरकार की नेकनीयती में और वाइसराय की ईमानदारी में यकीन और यह कि कलकत्ता की तजवीज़ के लिए जितना हो सकता उतना सरकार का हाथ वढाना। लेकिन इस बारे मे सिर्फ इतना कहना ही ज़रूरी है कि मै आपके खुलासे से एकराय नही हू। इसके वरखिलाफ मै समझता हू कि हमारे सामने सवाल यह है कि 'या तो अभी या कभी नही।'

मै उम्मीद करता हू कि आप यह तो मानेगे कि आनेवाली जद्दोजहद में गाधीजी के साथ अपनी किस्मत जोड देने का मेरे और अपनो के लिए क्या मतलव है। अगर मेरा यह गहरा यकीन न होता कि ज्यादा-से-ज्यादा कोशिश और कुरबानी का वक्त आगया है तो मै इस उम्र में, अपनी जिस्मानी कमज़ोरियो और कुनवे के तई ज़िम्मेदारियो के साथ वह जोखिम न उठाता, जो उठा रहा हू। मैं मुल्क की आवाज सुनता हू और उसपर चल रहा हू।

आपका,
मोतीलाल नेहरू

७१. महात्मा गांधी की ओर से

[राष्ट्रीय काग्रेस का लाहौर-अधिवेशन दिसवर १९२९ के अतिम दिनो और १९३० के शुरू में हुआ था। उसमें स्वाधीनता का निश्चय किया गया था। २६ जनवरी १९३० को भारतभर में दूर-दूर तक 'स्वाधीनता दिवस' मनाया गया था। इसके थोड़े अर्से के वाद, जो नमक-सत्याग्रह के नाम से मशहूर हुआ, गाधीजी ने उसका निश्चय किया। वह सावरमती-आश्रम से साथियो की एक टोली लेकर समुद्र-तट पर डांडी की ओर चल

पड़े। अगले तीन पत्र उन्होने समुद्र की ओर इसी कूच के दिनो में लिखे थे। यह और उनके साथी अप्रैल के शुरू में डाडी में गिरफ्तार किये गए थे।]

११ मार्च १९३०

प्रिय जवाहरलाल,

अब रात के १० बजने को हैं। यहा जोर की अफवाह फैली हुई है कि मैं रात में ही पकड लिया जाऊगा। मैंने तुम्हे खास तौर पर तार सलिए नही दिया कि सम्वाददाता लोग अपनी खबरें मजूरी के लिए पेश करते हैं और सभी पूरी गति से काम कर रहे है। तार देने लायक कोई खास बात थी भी नही।

घटनाए असाधारण रूप में ठीक हो रही है। स्वयसेवको के नाम धडाधड आ रहे है। टोली कूच करती ही रहेगी, भले ही मै पकड लिया जाऊ। मै गिरफ्तार न हुआ तो मेरी तरफ से तारो की आशा रख सकते हो, नही तो मै हिदायत छोडे जा रहा हूं।

मेरे पास कोई खास बात कहने को मालूम नही होती। मै काफी लिख गया हू। आज शाम को रेती[1] पर प्रार्थना के लिए जमा हुई विशाल भीड को मैंने अतिम सदेश दे दिया था।

भगवान तुम्हारी रक्षा करे और भार वहन करने की तुम्हे शक्ति दे!

तुम सबको प्यार,

बापू

७२. महात्मा गाधी की ओर से

१३ मार्च १९३०

प्रिय जवाहरलाल,

आशा है, तुम्हे मेरा पत्र मिल गया होगा, जो आखिरी हो सकता था। मेरी होनेवाली गिरफ्तारी की जो खबर मुझे दी गई थी, वह बिल्कुल विश्वस्त बताई गई थी। परन्तु हम दूसरी मजिल पर सुरक्षित पहुच गये हैं। तीसरी आज रात को शुरू करेगे। मै तुम्हे कार्यक्रम भेज रहा हू। सभी साथियो का आग्रह है कि मुझे कार्य-समिति के लिए अहमदाबाद नही जाना

[1] साबरमती नदी की

चाहिए। इस सुझाव में काफी बल है। इसलिए कार्य-समिति उस जगह आ जाय, जहा उस दिन हम हो या तुम अकेले आ सकते हो। यह भावना कि हम लडाई को पूर्ण किये बिना स्वेच्छा से वापस नही लौटेंगे, अच्छी तरह पोषित की जा रही है। मेरे वापस जाने से इसमे कुछ वट्टा लग जायगा। जमनालालजी ने मुझे बताया कि उन्होने इस बारे मे तुम्हे लिखा था। आशा है, कमला का स्वास्थ्य अच्छा है। मैने कल कह दिया था कि तुम्हे पूरे तार भेजे जाय।

सप्रेम तुम्हारा,
बापू

७३. मोतीलाल नेहरू की ओर से एम. ए अन्सारी के नाम

शाहीबाग, अहमदाबाद
२० मार्च १९३०

प्रिय अन्सारी,

यहा रेलगाडी से उतरते ही मुझे आपका खत दिया गया। जवाहर के नाम महात्माजी का एक खत मिला, जिसे उन्होने खास आदमी के हाथ भेजा था और जिससे पता लगा कि अगर वह फौरन मोटर से न चल पड़ा, जो उसके लिए खडी हुई थी, तो उसके लिए कल की ए. आई. सी. सी. की बैठक के पहले महात्माजी से मिलना नामुमकिन होगा। आगरा से अहमदाबाद तक तीसरे दर्जे की ठसाठसभरी गाडी मे सफर करते हुए बेचारा रात में एक झपकी भी नही ले पाया था। लेकिन जैसा महात्माजी ने चाहा था, वह फौरन चल पडा। २ बजे रात तक मोटर पर चलकर एक बाढ से चढ़ी नदी को पार करना था, जिसका कि किसी दूसरे वक्त पर पार करना मुमकिन न होता। अगर सब ठीक चले तो उसे महात्माजी के पास उनके प्रार्थना के वक्त तक, जो आप जानते है, ४ वजे होती है, पहुच जाना था। आज शाम ६ वजे तक उसे यहा वापस आ जाना है।

मेरेलिए ज़ाहिरा तौर पर यह कवायद नामुमकिन थी, इसलिए मुझे यही रुक जाना पडा। अब मेरा प्रोग्राम यह है कि कल ए. आई. सी सी. की बैठक, जरूरत हुई तो रात देर तक खत्म करके दूसरे दिन सवेरे की गाड़ी से भडोच जाऊ। वहा एक मोटर महात्माजी के दिन के पडाव तक ले जाने

के लिए मेरे इतजार मे होगी। मै उम्मीद करता हू कि ५ बजे शाम, दूसरे पडाव के लिए उनकी रवानगी से पहले, मै २ घटे उनके साथ रह लूगा। उसके बाद मेरे सामने तीन रास्ते होगे। एक रास्ता होगा किसी मुनासिब गाडी से सूरत, भडोच या बडौदा पहुचू। रेलवे स्टेशन और महात्माजी के पडाव के बीच सडक से कितना फासला है और सडक कैसी है, इसका यहा लोगो को पता नही, लेकिन दो ही गाडिया ठीक पड सकती है, यानी फ्रटियर मेल और बबई-दिल्ली एक्सप्रेस। फ्रटियर मेल पकड़ने के लिए भडोच का सवाल नही उठता, क्योकि यह गाडी वहा ठहरती नही। एक्सप्रेस ही एक मुनासिब गाडी हो सकती है, जिससे—उसे मै जहा भी पकड सकू—रतलाम पहुच सकता हू और वहा से जावरा पहुच सकता हू। तो फिलहाल यह प्रोग्राम समझिये कि मै २३ को सवेरे ६ बजे रतलाम पहुचूगा, दिनभर आपके साथ जावरा में बिताऊगा और आधी रात फ्रटियर मेल से इलाहाबाद के लिए चल दूगा। मै कह नही सकता कि यह इतजाम चल पायेगा, लेकिन आप चूकि दो दिन पहले खबर चाहते है तो आपको इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि जावरा से भेजी गई मोटर रतलाम से मेरे बिना ही वापस लौटे। तार भेजने से कोई खास फायदा नही जान पडता, फिर भी मै तार भेज दूगा, जिससे आपको वक्त पर मिल ही जाय।

साहबजादा के न्यौते के लिए अहसानमद हू। जो कुछ मैने ऊपर लिखा है, उससे यह जान सकेंगे कि उसे मजूर करने के लिए मै कितना ख्वाहिशमद हू। लेकिन कब क्या हो, कह नही सकता और हो सकता है कि उनसे फिर मुलाकात का मौका ही न मिल पावे। उससे मुझे बडी मायूसी होगी।

डा० एम. ए असारी

आपका,
मोतीलाल नेहरू

७४. एम ए अन्सारी की ओर से

जावरा स्टेट
३० मार्च १९३०

प्रिय जवाहर,

साथ का खत मैने महात्माजी को भेज दिया है। मै समझता हू कि

तुम और महात्माजी ही ऐसे दो आदमी हो, जिनका पडितजी पर असर है। मुझे डर है कि पडितजी को मे ी सलाह शायद सही नही लगेगी, हालाकि उनकी जिस्मानी हालत को देखते हुए ही मैंने यह सलाह दी है। उन्हे यह खयाल हो सकता है कि बदकिस्मती से आज मै तहरीक में उनके साथ नही हू। फिर भी मै यह जरूरी समझता हू कि तुम्हे उनकी मौजूदा हालत से वाकिफ करा दू ताकि तुम, जहातक मुमकिन हो, उन्हें जरूरी आराम के लिए, जिसकी उन्हें बहुत ज्यादा जरूरत है, राजी कर सको।

तुम्हारा,
एम. ए. अन्सारी

७५. एम. ए. अन्सारी की ओर से महात्मा गाधी के नाम

जावरा स्टेट
३० मार्च १९३०

प्रिय महात्माजी,

जिस दिन पडितजी मेरे पास यहा आये, उसके दूसरे दिन २५ तारीख को मै आपको खत लिखने का इरादा कर रहा था, लेकिन यकायक भोपाल से बुलावा आगया और मुझे बेगम-मा के इलाज के लिए जाना पडा, जो कुछ अरसे से बीमार थी। इस वार मुझे पडितजी की तदुरुस्ती बहुत ही गैर-तसल्लीबख्श हालत मे दिखाई दी। इधर हाल में लगातार फिकरें और थकान का बोझ उन्हे उठाना पडा है। फिर वह आपके पास गये और रास्ते में धूल फाकनी पडी, जिससे फिर उन्हें दमे का दौरा हो आया। उनका दिल तो पहले से ही अपनी जगह से फैला हुआ है। इस दमे के दौरे से उनके दिल पर और ज्यादा दबाव पडा। वह मुश्किल से चल पाते है। वह मामूली-सी हरकत भी करते है तो उनकी सास उखडने लगती है। आप जानते है, उनका ब्लड-प्रैशर भी कभी-कभी बहुत बढ जाता है। उनकी दिमागी और जिस्मानी कमजोरी बहुत बढ गई है और तदुरुस्ती बहुत गिर गई है। उनकी उम्र ऐसी है कि फिर से ताकत बटोरने का दम अब उनमें नही रहा, लेकिन काम करने से उन्होने अपनेको रोका नही है और आगे भी काम करने पर कमर कसे हुए है। मेरा फर्ज है कि उनकी तदुरुस्ती के बारे में असली हालत से आपको आगाह कर दू और आपसे कहू कि आप अपने असर को इस्तेमाल

करके उन्हें आराम करने के लिए कहे और यह भी कहे कि उन्हें हर तरह की जिस्मानी थकान से बचना चाहिए। मैं गौर से आपकी हलचलो के बारे में पढता हू और अल्लाह से आपके लिए दुआ मागता हू।

आपका,
एम. ए. अन्सारी

७६. महात्मा गाधी की ओर से

३१ मार्च, १९३०

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैने तार नही दिया, क्योकि मै नही समझता कि डाडी में कोई पठान है, और होगे तो हम उनसे निपट लेंगे। सरहद से अच्छे और सच्चे मित्रो के आने से भी पेच पैदा होगे। मुझे डाडी पहुचने दिया गया तो वहा पेचीदगिया बचाकर अकेला यही प्रश्न उपस्थित करना चाहता हू। सचमुच गुजरात में घटनाए बहुत अच्छा रूप धारण कर रही है।

मुझे आश्चर्य है कि रायबरेली मे इन लोगो ने अभी से इतनी गिरफ़्तारिया कर ली है। मेरे खयाल से फिलहाल नमक-कर पर ही अपना ध्यान सीमित करके तुम ठीक कर रहे हो। अगले पखवाड़े में हमे पता चल जायगा कि हम और क्या कर सकते है या करना चाहिए।

मेरी तरफ से और कोई समाचार न मिले तो एक साथ सब जगह आन्दोलन शुरू कर देने के लिए ६ अप्रैल का दिन समझ लो।

अब रात के दस बजनेवाले हैं। इसलिए राम-राम।

बापू

७७. महादेव देसाई की ओर से

[यह पत्र नमक-सत्याग्रह के छिड़ने के थोड़े दिन बाद ही लिखा गया था।]

आश्रम, साबरमती
७ अप्रैल १९३०

प्रियवर जवाहरलाल,

किताब के दूसरे भाग के लिए बहुत आभारी हू। परन्तु पता नही, इसे पढने का समय कब मिलेगा। शायद जेल में मिले, यदि जल्दी वहां पहुचने का सौभाग्य प्राप्त होजाय। वास्तव में मै बिलकुल आशावान हू।

हमने अहमदाबाद मे गैरकानूनी नमक की बिक्री के साथ ६ अप्रैल से काम शुरू किया और १३ तारीख तक करते रहेगे। हमारे चार उत्तम कार्यकर्ता तो चले गये। वीरमगाम मे हमने चुगी के घेरे पर धावा किया और मणिलाल कोठारी तथा अहमदाबाद के हमारे (कुछ) कार्यकर्ता चले गये है। धोलेरा से, जो इस जिले का दूसरा सिरा है, अमृतलाल सेठ गये है। खेडा में दरबार गोपालदास को दफा ११७ में दो वर्ष तीन महीने की जगली सजा दी गई है। शायद यह भारतभर मे लागू की जाय। उनके साथ पाच और गये है। भड़ोच में डॉ चन्दूलाल का मुकदमा कल होगा। सूरत मे रामदास को और बहुतो के साथ तिलक लगा है।

तुम प्रमाणपत्र दोगे कि हमने अच्छी कारगुजारी दिखाई है। ईश्वर ने चाहा तो हम ऐसा ही करते रहेगे। जब एक महीने पहले वल्लभभाई पकड गये तब मुझे अपने पर बहुत भरोसा नही था, लेकिन जिस प्रकार जनता सहयोग दे रही है उससे मै आत्म-विश्वास से भर गया हू। मै रोज ऐसी सभाओ मे भाषण दे रहा हू, जिनमें जीवन मे पहले कभी नही बोला था। उन सबमें आदर्श व्यवस्था और शान्ति होती है। दस-पद्रह हजार आदमी हर रोज ६-३० बजे इकट्ठे होते है और अधेरा होने से पहले बिखर जाते है और यह सब एक ऐसे आदमी को सुनने के लिए, जो किसी तरह भी वक्ता नही कहला सकता। स्वयसेवक बडी सख्या मे आ रहे है। दो दिन पहले वे पाच सौ थे, आज एक हजार से ऊपर है। स्त्रिया भरती तो हो रही थी, परन्तु कल कम-से-कम ५० नई भरती हुई और सब-की-सब जोश से भरी हुई थी। यही हाल रहा, जैसाकि जरूर रहेगा, तो मेरे दिन भी गिनती के ही रह गये है। परन्तु कार्य सभालने के लिए काफी लोग है। अभी तो मेरा समय आश्रम और प्रान्तीय समिति. 'यग इडिया' और 'नवजीवन' में बटा हुआ है—आश्रम का तो नाममात्र का मुखिया हू, मगर कोई काम नही करता और प्रान्तीय समिति का मत्री, अध्यक्ष, युद्ध-मत्री और सबकुछ एक साथ हू और दोनो पत्रो का मुझे सम्पादन भी जैसा बन पडता है करना होता है, मगर जबतक बापू बाहर है तबतक यह बायें हाथ का खेल है। मुझे जिलो का दौरा भी करना पडता है। यह सब जो काम मै कर लेता हू उसका दिखावा करने को यह सब नही लिख रहा हू,

मगर यह वताने को लिख रहा हू कि मामूली आदमी पर भी जव आ पडती है तव वह कितना काम कर गुजरता है। भगवान किसीपर सहन करने लायक बोझे से ज्यादा कभी नही डालता।

अलग डाक से तुम्हे उस नमक की एक चुटकी भेज रहा हू जो वापू ने ६ अप्रैल को डाडी में तैयार किया था। इसे या तो यादगार के तौर पर रख लेना या नीलाम कर देना। लेकिन उसकी कीमत पर पहली बोली एक हजार रुपये से कम नही लगनी चाहिए। मेरे पास तो छोटी-सी पुडिया है। वह ५०१ रुपये मे खरीदी गई थी। यह पत्र मै कृष्णा के पते से भेज रहा हू, क्योकि कही पुलिस तुम्हारे पत्र खोल न लेती हो और यह अमूल्य नमक जव्त न कर ले।

सप्रेम तुम्हारा,
महादेव

७८. मोतीलाल नेहरू की ओर से शिवप्रसाद गुप्त के नाम

[मेरे पिताजी ने यह पत्र यू. पी. के एक प्रमुख काग्रेसी शिवप्रसाद गुप्त को तब लिखा था जबकि उन्होने मेरे पिताजी के एक मुकदमे में वकालत करने जाने पर एेतराज किया था।]

इलाहाबाद,
१ जून १९३०

प्रिय शिवप्रसादजी,

आपका ज्येष्ठ ५, १९८६ का खत मिला। यह सुनकर मुझे अफसोस हुआ है कि मेरे काग्रेस के सदर के तौर पर काम करते हुए कचहरी मे जिसे आप 'परदेसी इजलास' कहते है, पैरवी करने के लिए हाजिर होने पर आपको परेशानी हुई। मै आपको यकीन दिलाता हू कि इससे मुझे जरा भी परेशानी नही हुई है, वल्कि अगर मै हाजिर न हुआ होता, जैसाकि मै कर रहा हू, तो मै खुद अपनी निगाह मे गिर गया होता।

जहातक "इस नाजुक हालत में काग्रेस की इज्जत या शान" का सवाल है, वह खत्म हो जाती, अगर काग्रेस का सदर रहते हुए मुकदमे की खास हालत में मैने इसके अलावा कोई दूसरी वात की होती।

मुकदमे में इज्जत के साथ वचने के सभी मुमकिन और कानूनी

तरीको को कर लेने के बाद मैंने अपने जमीर की इजलास मे अपनेको पेश किया और इज्जत के साथ बरी होने के बावजूद मैंने अदालत मे हर रोज की हाजिरी के लिए अपने ऊपर १०००)रु० का जुर्माना किया है। जो दस दिन मैंने आगरे में गुजारे, उनमे ज्यादातर काग्रेस का काम ही रहा, और उससे काग्रेस के तेजी से कम होते हुए खजाने मे १०,०००) रु० की बढोतरी हुई। ऐसा होना ही चाहिए था और इसमे फिक्र करने की कोई वजह नही।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त आपका,
बनारस। मोतीलाल नेहरू

७९ मोतीलाल नेहरू की ओर से कृष्णा नेहरू के नाम

[सेंट्रल जेल, नैनी, से ३० जुलाई १९३० को अपनी पुत्री कृष्णा के नाम भेजे गए एक पत्र का अंश।]

सबसे कह देना कि मै अब बिल्कुल ठीक हू। ८ या ९ दिन मेरी तबीयत ठीक नही थी। बीच-बीच में बुखार आ जाता था और कोई चीज खाने की रुचि नही होती थी। लेकिन अब यह सब दूर होगया है और धीरे-धीरे ताकत आ रही है। कुछ दुबला जरूर होगया हू, लेकिन वह कोई ऐसी बात नही है। तुम सब लोगो से अगले शनीचर को मिलने की उम्मीद करता हू और मेरी तदुरुस्ती तुम्हे वैसी ही मिलेगी जैसी कि तुमने पिछली बार देखी थी।

आनन्दभवन से या ९ न० कानपुर रोड से (मै कह नही सकता इनमे से कहा से आता है) आनेवाला खाना अच्छा है और वह यहापर बने खाने के मुकाबले कही ज्यादा मुआफिक बैठता है। खाना यहा कुछ ही दिन और भेजने की जरूरत होगी। उसके बाद मै अपनी पुरानी आदत डालूगा, यानी कुकर मे अपनी मर्जी की चीजे भरकर पका लिया करूगा। हमेशा की तरह मै नये खाने ईजाद करूगा, जिनमे से कुछ तो मेरी मर्जी के मुताबिक उतरेंगे।

मै समझता हू, मुझे कुछ इस तरह की दिलचस्पी की जरूरत है। होता यह है कि मेरे लिए सभी चीजे आ जाती है और मुझे खाने, सोने और पढने के सिवा कुछ और करना ही नही पडता। मेरी देखभाल करने मे हगे

जवाहर से सबक सीख लेता तो अच्छा था। सवेरे की चाय से लेकर रात के सोने तक मुझे जरूरत की सब चीजे अपनी-अपनी जगह पर मिल जाती है। जरा-जरा-सी बात पर पूरी तवज्जो दी जाती है और मुझे कोई चीज मागनी नही पडती, जैसाकि आनन्दभवन मे अक्सर करना पडता था और जिसके लिए काफी चीखना-चिल्लाना पडता था। महमूद कभी-कभी मदद कर देते है, लेकिन खास बोझ तो जवाहर पर ही पडता है। मै अपनी काहिली और जवाहर का इतना वक्त के लेने के लिए, जिसका दूसरी तरह और अच्छा इस्तेमाल हो सकता था, अपनी मलामत करता हू। लेकिन वह मेरी सब जरूरतो को पहले सोच लेता है और मेरे लिए कुछ करने को रह ही नही जाता। काश बहुत-से ऐसे पिता होते, जिन्हे अपने बेटो पर ऐसा ही फख्र होता!

'पायोनियर' में जितनी खबरें निकलती है, उतने से मै तुम्हारी हलचलो को जान लेता हू। इस अखबार में बहुत थोडी खबरें होती है। लेकिन जो कुछ इसमे छप जाता है उससे हम बाकी का कयास कर सकते है। तुम सब लोगो ने बहुत शानदार काम किया है और मै उम्मीद करता हू कि इसी लगन और जोश से काम जारी रखोगे। जवाहर और मै दोनो ही तुम सबपर, जिसमे छोटे बच्चे भी शामिल है, फख्र करते है।

८० मोतीलाल नेहरू की ओर से

[१९३० की पिछली छमाही में मेरे पिताजी अपनी कड़ी बीमारी की वजह से जेल से रिहा कर दिये गए। इस बीमारी से वह फिर अच्छे नहीं हुए और दो-तीन महीने बाद ही चल बसे। एक तजवीज थी कि वह समुद्र-यात्रा पर जायं, लेकिन उनकी हालत इतनी तेजी से गिरी कि यह यात्रा न हो पाई। अपनी बीमारी के बावजूद उनकी दिलचस्पी राष्ट्रीय आन्दोलन में बराबर बनी रही। मैं इस बीच जेल में था।]

आनंदभवन,
इलाहाबाद
११ नवबर १९३०

मेरे प्यारे जवाहर,

तुम्हे बिल्कुल ताजा खबर देने के लिए यह खत लिख रहा हू। बेटी

और शम्मी आज तीसरे पहर मलाका जेल में अचानक गिरफ्तार कर ली गईं, जहा वे कमला, नैन[1], इदू और तुम्हारी मा के साथ दो-तीन दिन पहले गिरफ्तार हुए सुन्दरलाल, मजरअली और दूसरे लोगो के मुकदमे को देखने गई थी। नैन फौरन मुझे खबर देने के लिए लौट आई। मै उस वक्त बिस्तर पर था और बैठा खास रहा था। मेरे जाने में कुछ नही रखा था, लेकिन मै जाना भी चाहता तो जिस्म से बेकार था। मैने नैन को मुकदमे की कार्रवाई देखने के लिए वापस भेज दिया। लेकिन उसके पहुचने से पहले मुकदमा खत्म हो चुका था। बेटी, शम्मी और सभी और पहले से गिरफ्तार लोगो को दफा १८८ (सरकारी अधिकारी द्वारा कानून की रू से जारी हुक्म की उदूली) के मातहत ५० रु० जुरमान की या जुरमाना न देने की हालत में एक महीने की सादा कैद की सजा सुना दी गई। अब वे सभी मलाका-जेल मे एक-दूसरे के साथ का मजा ले रहे है। कपडे, खाना वगैरा उनके लिए भेजा जा रहा है। जहातक मुझे पता चला है, बेटी और शम्मी ने सिर्फ यह किया था कि जब सब सड़क पर बैठकर गाना गा रहे थे तो गाने के बोल पहले वे बोलती थी।

कमला और नैन अभी बरी है—कबतक के लिए, यह कहना नामुमकिन है। अच्छा होता वे जल्दी करते, जिसमें मै जान सकता कि घर वगैरा के लिए मुझे क्या इतजाम करना होगा। कल सवेरे फिर सुदरलाल के मुकदमे की दफा १२४-ए के मातहत सुनवाई होगी। बहुत मुमकिन है, कल और भी ज्यादा गिरफ्तारिया हो। इस तरह इलाहाबाद में आर्मिस्टिस दिन मनाया गया।

वल्लभभाई और महादेव यहा दो दिन रहे, ज्यादातर बिस्तर पर। उनके यहा आने के बाद ही उन्हे मलेरिया ने दबोच लिया। आज ही वे बबई लौट गये है।

मेरी हालत दिन-ब-दिन गिरती जा रही है। अब थूक मे कभी-कभी ही खून आने की बात नही रह गई। पिछले तीन दिनो से मुह से बराबर खून के थक्के थूक रहा हू। इलाहाबाद में जो भी इलाज हो सकता था किया गया, लेकिन कोई कारगर नही हुआ। आखिरकार कल सवेरे मैने बेटी और

[1] विजयालक्ष्मी पडित

मदन अटल को साथ लेकर कलकत्ता जाने का फैसला किया है और मेजर ओबेराय को फोन किया है कि वह तुम्हे मुझसे १९ ता के बदले, जिस दिन मुलाकात होनी है, १५ को ही मिल लेने दे। मैंने इस बारे मे ज़ाब्ते का खत भी भेज दिया है। उन्होने इसके लिए राज़ी होने की मेहरबानी कर दी है और हम लोग, यानी जितने भी उस वक्त जेल जाने से रह गये है, तुमसे १५ को १० बजे मिलेगे। मै १६ या १७ को कलकत्ता चला जाऊगा। डा जीवराज मेहता को कलकत्ता मे किसी मेडिकल असोसिएशन की बैठक मे शरीक होना है और वह मुझसे वही मिलेगे। मेरी समझ मे बेटी की जगह और किसीको ले जाना ज़रूरी नही है। मदन ने अभी तक जवाब नही दिया है, लेकिन वह राज़ी हो जाय तो और किसीको साथ ले जाने की ज़रूरत न होगी। इस बीच कमला गिरफ्तार होगई तो मै इदू को साथ ले जाना चाहूगा, क्योकि कमला और बेटी दोनो के न रहने पर वह अकेली रह जायगी। मेहरबानी करके मुझे लिखना कि यह इतजाम तुम्हे ठीक लगता है, क्योकि समुदरी सफर के लिए इदू की तैयारी करनी होगी।

मैंने २ ता को सिंगापुर के सफर के बारे मे ज़रूरी जानकारी के लिए थामस कुक को कलकत्ता लिखा था। कल तक कोई जवाब नही आया और फौरन जवाब देने के लिए उन्हे मैंने तार दिया। आज जवाब आया कि उन्हे मेरा कोई खत नही मिला। खत उपाध्याय ने रेलगाडी मे छोडा था। कानून और इतज़ाम की हिफाज़त करनेवालो ने शायद समझा होगा कि मै देश छोडकर भाग रहा हू या कोई सगीन जुर्म करने जा रहा हू और खत को उसकी मजिल पर नही पहुचने दिया। कल फिर कोशिश करूगा और खुफियावालो के लिए भी उसमे एक नोट जोड दूगा।

१२ नवबर १९३०

पिछली रात इस खबर से खत लिखने मे बडी बाधा पडी कि कुछ लोग चुपचाप बेटी और शम्मी के जुर्माने अदा करने की जालसाज़ी कर रहे है। बाद में बताया गया कि बेटी का जुर्माना अदा कर दिया गया है और वह रिहा होनेवाली है। यह बहुत परेशान करनेवाली खबर थी और मैंने एक बयान फौरन प्रेस मे भेजा। वह आज सुबह निकला है और मै उसकी एक

कतरन भेज रहा हू । लेकिन इस बीच शरारत तो हो चुकी थी, और वह महामूर्ख जिसका नाम गोपी कुजरू है, बेटी और शम्मी को लेकर, आधी रात के करीब, जब मै सोने जा चुका था, कार पर आया। मुझे यह बात आज सवेरे ही मालूम हुई। गोपी ने लडकियो को बताया कि वह उस आदमी का वकील है, जिसने कि जुर्माना अदा किया है और वह उसका नाम नही खोल सकता। उन लोगो ने मेरा बयान आज सवेरे पढा होगा और अपने बारे मे, शायद मेरे बारे मे भी, अपनी राय बदल दी होगी। जब इस तरह की और गिरफ्तारिया होगी, उस वक्त मै उम्मीद करता हू कि यह बयान फायदेमद होगा और लोग फिर ऐसी दरियादिली दिखाने से पहले दो बार सोच लेगे।

अब बेटी वापस आगई है, तो पहले का तय इतजाम चलेगा और वह मेरे साथ कलकत्ता और सिगापुर जायगी। इदू अब अपनी पढाई में लग रही है और मै उसमे कोई अडचन नही डालना चाहूगा, जबतक वह खुद मेरे साथ चलने को ख्वाहिशमद न हो।

हिन्दू पचाग के मुताबिक कल तुम्हारी सालगिरह है और ग्रेगरी के पचाग से परसो। मुझे यह सुझाव दिया गया कि मै तुमसे कल या परसो मिलू। मैंने इस राय को यो पसद नही किया कि कलकत्ता जाने के करीब ही मै तुमसे मिलना चाहता हू। मैंने १६ को मिलना पसद किया होता, लेकिन वह सारे हिदुस्तान के लिए 'जवाहर-दिन' है और लडकिया काम में लगी रहेगी। मैंने १७ को पजाब-मेल से जाना तय किया है।

तुमने कलकत्ता से जो किताबे चाही थी, उनके लिए आर्डर बहुत पहले से गया हुआ है, लेकिन वे अभी नही आई। बीच मे चिट्ठी शायद कही रोक ली गई। मेरे जाने से पहले किताबे न आई तो मै उन्हे भिजवा दूगा। बाकी मिलने पर। रजीत को प्यार।

सप्रेम तुम्हारा,
पिता

अखबारी बयान

कुमारी कृष्णा नेहरू—अनजाने आदमी ने जुरमाना दिया।

पंडित मोतीलाल नेहरू का बयान

पंडित मोतीलाल नेहरू अपने बयान में कहते है :

"मैंने अभी सुना है कि किसी अनजाने आदमी ने ५० रुपये का जुर्माना भर दिया, जोकि मेरी लडकी कृष्णा पर आज तीसरे पहर अचानक गिरफ्तारी के बाद मुकदमे में हुआ था। अगर मुझे मिली खबर ठीक है तो इस अनजाने आदमी ने मेरी, मेरी लडकी और मुल्क की इतनी ज़बरदस्त कुसेवा की है, जितनी कि सोची भी नही जा सकती। उसका नाम बहुत वक्त तक छिपा नही रह सकता। अगर मेरे मुल्क के लोगो को मेरा और जो कुछ खिदमत मैं कर सका हू, उसका कुछ भी लिहाज है तो मैं उम्मीद करता हू कि वह इस आदमी को मेरा और मुल्क का सबसे बडा दुश्मन समझेंगे और उसके साथ वैसा ही सलूक करेंगे।"

८१. मोतीलाल नेहरू की ओर से सुभाषचन्द्र बोस के नाम

इलाहाबाद,
१४ नवम्बर १९३०

प्रिय सुभाष,

डाक और तार दोनो ही का बिल्कुल भरोसा न होने की वजह से एक खास आदमी के हाथ यह खत तुम्हें यह खबर करने के लिए लिख रहा हू कि मैंने सोमवार १७ तारीख को पंजाब मेल से कलकत्ता आने का पक्के तौर पर इरादा कर लिया है। मेरे साथ मेरी छोटी लडकी कृष्णा होगी, जो मेरी देखभाल करेगी, और एक डाक्टर दोस्त रहेंगे, जो, अगर सर नीलरतन सरकार ने सिंगापुर तक का समुद्री-सफर करने की सलाह दी, जिसका सुझाव मुझे दिया गया है तो, उनकी हिदायत पूरी करते रहेंगे।

मुझे मुह से काफी खून आ रहा है और पब्लिक स्वागत का बोझ उठाना मुमकिन नही हो सकता। मेहरबानी करके ध्यान रखना कि ऐसा कोई स्वागत न हो और सिर्फ इने-गिने—छ से ज्यादा नही—निजी दोस्त ही स्टेशन पर मुझसे मिलें।

इसी वजह से मैं कार्यकर्त्ताओ से लबी चर्चा या मशविरा न कर सकूगा, लेकिन जरूरी होने पर उनमें से एक-दो खास लोगो से बातचीत करने में मुझे खुशी होगी।

मुझे शायद कलकत्ता एक हफ्ते ठहरना पडे, जिसमे मैं सर नीलरतन सरकार के या जिन किन्ही दूसरे डाक्टरो को वह बुलाना चाहे उनकी तरफ से तय किये इलाज की मियाद पूरी कर सकू। कुदरतन मैं इस पूरे वक्त किसी शान्त जगह पर रहना चाहूगा। क्या मेहरबानी करके मेरी टोली के ठहरने का तुम मुनासिब इतजाम कर दोगे ? मैंने खुद कोई इतजाम नही किया है।

श्री सुभाषचद्र बोस, तुम्हारा,
१ वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। मोतीलाल नहरू

८२ मोतीलाल नेहरू की ओर से

इलाहाबाद
२० जनवरी १९३१

मेरे प्यारे जवाहर,

कमला का यह खत, जो साथ मे भेज रहा हू, कल शाम आया था और आज सवेरे इसे तुम्हारे पास चला जाना चाहिए था। लेकिन हमारा खत तैयार नही था। उसके अपने खत से पता चलता है, और दूसरे जरियो से भी मुझे मालूम हुआ है कि उसकी बहुत अच्छी तरह देखभाल हो रही है। राज काफी तकलीफ उठा रहा है। लखनऊ में हमारी पहली मुलाकात २५ को होगी। पता नही क्यो, इतनी देर में हो रही है। मुझे डर है कि उससे मिलने की खुशी से मुझे अपनेको महरूम रखना पडेगा, क्योकि मैं उम्मीद नही करता कि २४ तक मैं सफर करने लायक हो सकूगा। तुम्हारी मा, बेटी और इदू जायगी।

कल तक कमोवेश मैं ठीक चल रहा था, जबकि कपकपी हुई और सारी रात एक झपकी भी नही आई। टेंपरेचर भी नार्मल से कुछ ऊपर ही रहा और खून भी बे-हिसाब गिरा। इसका नतीजा यह हुआ कि आज बहुत थकान लग रही है। लेकिन मैं उम्मीद करता हू कि रात बेहतर बीतेगी। यह एक तसल्ली की बात है कि मेरा वजन ठीक चल रहा है और आज ११९ पौंड है।

कविराज बाबू दो दिन के लिए बनारस चले गये है। कल शाम को वह लौटेंगे जबकि आगे के इलाज का सिलसिला पक्का होगा। मै ठीक नही कह सकता कि किसका इलाज होगा। बहुत-कुछ कविराज बाबू की जाच पर मुनहसिर होगा।

उन्होने सलाह दी है कि दिन का ज्यादा हिस्सा नदी पर बिताऊ, लेकिन रात मे घर पर सोया करू। मालवीयजी बनारस से मेरे लिए एक बजरा भेजने की कोशिश में है।

इदू बहुत खुश है। उसने लकडी के पुराने घर को, जिसमें हिरन रक्खा जाता था, समर हाउस के ढग पर बना लिया है और बेटी और वह दोपहर मे थोडा वक्त साथ-साथ वही बिताती है।

तुम्हारे बाग से विलायती मटर के बढिया फूल मिले है। मै उन्हे जतन से रख रहा हू। अभी तक मुरझाने के कोई आसार उनमें नही दिखाई देते।

तुम दोनो को प्यार।

तुम्हारा,
पिता

८३ रॉबर्ट ओ मेनेल की ओर से

वोडन लॉ, केनले, सरे
९ फरवरी १९३१

प्रिय मित्र,

इस सारे सप्ताह आपका इतना ध्यान आता रहा है कि अब पत्र लिखे बिना रहा नही जाता। आप मुझे जानते नही, लेकिन अदालत के सामने आपने जो बयान दिया था, वह मैंने पढा है। उससे अनायास ही मै आपकी तरफ खिच गया हू और मेरे मन में आपके लिए गहरे आदर और स्नेह की भावना उत्पन्न होगई है।

आपकी गहरी क्षति के प्रति मै अपनी हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करना चाहता हू। मुझे इस बात की बडी आशा थी कि आपके पिता यहा के लोगो के मन में सच्चा परिवर्तन और भारत को सचमुच स्वतत्र देखने के लिए जीवित रहेगे। इसमें कोई सदेह नही कि यहा की जनता के मत मे बडा परिवर्तन हुआ है, लेकिन लोग अब भी ताकत को अपने हाथो मे जाने देने के लिए तैयार नही है।

अगले कुछ दिनो, हफ्तो या महीनो मे क्या होनेवाला है यह जान सकना तो किसीके लिए सम्भव नही है, लेकिन मै विश्वास दिला सकता हू कि यहा ऐसे लोगो की सख्या, जो भारत के निवासियो के प्रति विश्वास की नई भावना और स्नेह बढाने के लिए अपना सारा प्रभाव और नैतिक वल लगा रहे है, आपके अनुमान से कही अधिक है।

कान्फ्रेस मे जो सिद्धात स्वीकार किये गए है उनसे निस्सदेह इस वात का सकेत मिलता है कि हम लोग सचमुच आगे बढे है। अगर सत्ता हिन्दुस्तानियो के हाथो में दे दी गई तो यह एक उल्लेखनीय वात होगी और तब आपके लिए यह ध्यान रखना आसान हो जायगा कि जो नई सरकार वने वह पहले की ही तरह पूजीवादी नौकरशाही न होकर जनता की इच्छा पर आधारित सरकार हो।

आपके मौन साहस और स्वयसेवको के निष्ठापूर्ण आत्म-बलिदान को देखकर मै अभिमान और हर्ष से कितना रोमाचित हो उठता हू, यह मै आपको कैसे बताऊ? युद्ध-जैसे घृणित कार्य के साथ सरोकार रखने से इन्कार कर देने के कारण लडाई के दिनो मे मै स्वय पाच वार कोर्ट मार्शल किया गया था और सत्ताईस महीने कैद मे रहा था। इसलिए मै सोचता हू कि मै आपकी भावनाओ को समझ सकता हू। मै आपको वहुत-कुछ लिखना चाहता हू, लेकिन जानता हू कि उन्हे पढने के लिए आपके पास समय नही होगा। मुझे पूरी आशा है कि आपकी सरकार विदेशी कपडे के आयात और नशीली चीजो तथा दवाइयो की बिक्री पर नियत्रण रखने के मामले को काफी महत्व देगी, क्योकि इसमे उस जनता का हित है, जिसका जीवन ये चीजें वरबाद कर देती है।

मुझे उम्मीद है कि दूसरे लोग भी आपके पास 'टाइम्स' की कतरनें भेजेंगे। लेकिन इस खयाल से कि कभी वे न भेजे, मै ये कतरने इस पत्र के साथ भेज रहा हू।

अपने शोक मे मेरी प्रेमपूर्ण हार्दिक सहानुभूति तथा अपने शानदार निश्चय के लिए मेरी गहरी कृतज्ञता और सराहना स्वीकार कीजिये।

आपका,

पडित जवाहरलाल नेहरू रॉवर्ट ओ मेनेल

८४. रोजर बाल्डविन की ओर से

[जिस समय यह पत्र लिखा गया, रोजर बाल्डविन अमरीकी नागरिक स्वतन्त्रता संघ के संचालक थे और तबसे चले आ रहे हैं। मैं उनसे सबसे पहले फरवरी, १९२७ में ब्रुसेल्स की साम्राज्यवाद-विरोधी कांग्रेस में मिला था।]

१३ फरवरी १९३१

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

उस दिन आपको पत्र भेजने के बाद मैंने आपके पिताजी की मृत्यु का दुखद समाचार पढा, जो हमारे यहा अखबारो में व्यापक रूप से प्रकाशित हुआ था। आपसे और आपके परिवार से मेरी हार्दिक सहानुभूति है। मैं आपके पिताजी के व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनो ही प्रकार के महान गुणो का असीम प्रशसक हू। उनसे मिलकर मुझे बडी प्रेरणा मिली थी और उसके बाद से मुझे यह पढकर बडी खुशी होती रही है कि अपने ध्येय के प्रति उनमें कितनी दृढता और अटूट निष्ठा थी। आप बहुत-सी बातो में भाग्यशाली है और ऐसे पिता का पुत्र होना भी आपके लिए कम सौभाग्य की बात नही है।

आपका,

रोजर बाल्डविन

८५ रोजर बाल्डविन की ओर से

१००, फिफ्थ एवेन्यू,
न्यूयार्क सिटी
२९ अप्रैल १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

आपको पत्र लिखने में मुझे बहुत दिनो तक झिझक होती रही, क्योकि यहा के अखबारो मे प्रकाशित विस्तृत और निष्पक्ष विवरणो के बावजूद भारत की स्थिति मेरी ठीक-ठीक समझ में नही आई है। मैं आपके और अपने मित्रो से बातचीत करता रहा हू और अमरीकी सम्पादको की टिप्पणिया भी पढता रहा हू। इन बातो से मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि आपका स्वतत्रता का सारा-का-सारा आन्दोलन तेजी के साथ एक भयानक पतन

की ओर बढ रहा है, जैसाकि आपने स्वय यहा प्रकाशित एक भेंट मे कहा है। गाधीजी का एक पूरे देश की जनता का व्यक्तिगत रूप से प्रतिनिधित्व करना, साथ-ही-साथ उन्हे अपनी समझ से काम करने का व्यापक अधिकार मिलना और समझौते के लिए उनका हर समय तैयार रहना—इन सब बातो को देखकर इतनी दूर से ऐसा लगता है जैसे पेरिस मे कोई दूसरा विलसन हो। गाधी चाहे कितने भी दृढ क्यो न हो, खतरा बहुत है और जिस बात के लिए आप सब लोगो ने इतना सघर्ष किया है उसके लिए सकट उपस्थित होने की सभावना है। इसके अलावा अग्रेजो में वह क्षमता है जिसके बूते पर वे दुष्टतापूर्ण उद्देश्यो को भी नैतिक भाषा के आवरण मे छिपा देते है और अच्छे-से-अच्छे विचारोवाले तथा अधिक-से-अधिक साहसी लोगो को भी फुसला लेते है, दबा लेते है और मूर्ख बना देते है। बल के सिवा किसी और चीज़ के डर से अग्रेज अपना साम्राज्य छोड देगे, इसकी कल्पना मै नही करता। मै समझता हू कि आपकी अहिंसक क्राति की शक्ति के डर से भी वे ऐसा नही करेगे। केवल एक ही चीज़ है, जो आपको आपकी वाछित वस्तु दिला सकती है और वह है सम्पूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति से कम किसी भी वस्तु को स्वीकार करने से इकार कर देना और उसे प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयत्न करते रहना।

यह सब मै इसलिए कह रहा हू कि वामपक्षियो मे व्यापक रूप से यही भावना फैली हुई है। वे साम्यवादियो की इस आलोचना को स्वीकार नही करते कि पूरा-का-पूरा आन्दोलन इस तथ्य से प्रेरित है कि भारतीय पूजीवादी अपनी सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए अपनेको अग्रेजो के हाथो बेच देना चाहते है। फिर भी आप मुझसे इस बात में सहमत होगे कि अगर किसानो और मजदूरो का शोषण ज्यो-का-त्यो चलता रहे तो फिर स्वतन्त्रता के कोई माने नही। स्वामियो को बदल देने से अधिक-से-अधिक यह हो सकता है कि सामाजिक क्रान्ति आसान बन जाय। बस। और हो सकता है कि राजनैतिक क्रान्ति के साथ-साथ कृषि और उद्योग की उन्नति का भी एक दूर तक असर करनेवाला कार्यक्रम चल सके। मै जानता हू कि इस बारे में आपका क्या मत है।

मै जिस मत को व्यक्त करता हू उसे अब अमरीका में बहुत कम नम-

र्थन मिलता है। सभी अखबार, यहातक कि स्वतत्रता का समर्थन करनेवाले उदार पत्र भी, अब सामूहिक रूप से मिस्टर गाधी के पक्ष में होगये है। न तो उन्होने उस सधि की कोई आलोचना की है, जो अविश्वसनीय है, न भारतवर्ष के भाग्य की डोर को अकेले एक व्यक्ति के हाथो में सौप देने की खतरनाक योजना को ही उन्होने बुरा बताया है। लेकिन अगर ठीक से प्रयत्न किया जाय तो हम इससे विपरीत मत के लिए भी कुछ समर्थन प्राप्त कर सकते है। हम रैंज़मी को मिस्टर गाधी से मिलने के लिए लदन भेजना चाहते है और मजदूर-दल के अपने दोस्तो के पास दर्जनो चिट्ठिया और तार भेजकर यह दबाव डालना चाहते है कि वे भारतवर्ष की पूरी मागे स्वीकार कर लें। अगर गाधी दृढ रहे और घर लौटकर आपने उनपर दवाव डाला तो शायद हम लोग यहा से भी उनपर कुछ जोरदार प्रभाव डाल सकें। हमे तार से सूचित कीजिये कि हम आपसे इस सहायता की आशा करें या न करें और हमारा यह सब करना आपकी और वामपक्ष के दूसरे लोगो की इच्छा के अनुकूल होगा या नही।

हिंदुस्तान की राष्ट्रीय महासभा का समर्थन करने के कारण मै अभी-अभी साम्राज्यवाद-विरोधी लीग से निकाल बाहर किया गया हू। खैर, उसका तो कोई महत्व नही है, लेकिन यह बहुत जरूरी है कि काग्रेस समझौता न करके अपनी साम्राज्य-विरोधी नीति बनाये रखे, जिससे कि पूर्व के सारे साम्राज्यवादी देशो में इसी प्रकार की क्रान्ति को प्रोत्साहन मिले।

शुभकामनाओ सहित,

आपका,
रोजर बाल्डविन

८६ ई स्टॉग्डन की ओर से

दी विकारेज, हरो,
३१ मई १९३१

प्रिय नेहरू,

क्या आप वही प्रिय नेहरू है, जो मन् १९०६ मे हैरो मे हेडमास्टर के घर रहते थे? अगर वही हैं तो मै आपके पिता की मृत्यु पर आपको सहानुभूति का पत्र लिखना चाहूगा। पिता की मृत्यु एक भयानक हानि होती है।

मेरे पिता भी हैरो मे मास्टर थे और बहुत ही होशियार थे। उनकी मृत्यु ८० साल की उम्र मे हुई थी, और मैं कभी भी उस शोक को भुला नही पाया हू। मुझे तो सिर्फ एक बात का सतोष है कि मैं उन्हे इतनी अच्छी तरह से समझता और प्यार करता था कि मुझे लगता है कि एक प्रकार से वह अब भी मेरे साथ हैं।

अगर आप कभी इग्लैंड आयें तो मुझसे मिलने और पुराने दोस्तो से बातचीत करने के लिए यहा आना न भूले। हैरो मे मैं हमेशा कितना खुश रहता था। मैंने अब स्कूल छोड दिया है और मै केवल एक पादरी की हैसियत से शहर के लोगो को नेक बनाये रखने की चेष्टा कर रहा हू।

शुभकामनाओ के साथ, आपका,

ई. स्टॉग्डन

८७. महात्मा गाधी की ओर से

बोरसद

२८ जून १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र और पोस्टकार्ड मिले। खुशी है कि रायबरेली में धारा १४४ का नोटिस वापस ले लिया गया। बेशक इसका कारण मुख्य सचिव के नाम तुम्हारा स्पष्ट पत्र था। जबतक तुम कार्य-समिति के लिए बम्बई पहुचोगे तबतक समिति को निश्चित मार्ग-दर्शन के लिए तैयार रहना चाहिए।

मुझे बिल्कुल यकीन होगया है कि हमारा मामला सम्पूर्ण बनाने के लिए जरूरी है कि तुम गवर्नर को मिलने के लिए कहो। यह मुलाकात मागते हुए तुम उनसे कहो कि तुम इस कोशिश में कोई कसर बाकी नहीं रखना चाहते कि प्रान्त के सर्वोच्च अधिकारी के सामने स्पष्ट स्थिति रख दी जाय। शायद गवर्नर से तुम कुछ भी लेकर नही आओगे, लेकिन उनसे मिलने और समझौते का पालन कराने का प्रयत्न करके तुम अवश्य ही हमारी स्थिति को पहले से मजबूत बनाओगे। उनसे मिलने का प्रस्ताव करके और वे प्रस्ताव मजूर कर ले तो उनसे मिलकर हम कुछ खोयेगे नही।

उन्नाव जिले की घटनाओ के बारे मे मैंने 'यग इडिया' मे जो लिखा है

वह तुमने देखा होगा। तुमने और दूसरे लोगो ने जो सामग्री भेजी है उसके आधार पर मै फिर लिखनेवाला हू ।

यह दुर्भाग्य की बात हुई कि कार्य-समिति को स्थगित करना पडा। वहा के मौजूदा हालात में वल्लभभाई का इलाहाबाद जाने के लिए घोर विरोध था। मेरा भी यही खयाल है कि कानपुर और उत्तर प्रदेश की अन्य उत्तेजना को देखते हुए फिलहाल इलाहाबाद को छोड देना ही बेहतर था।

बापू

पडित जवाहरलाल नेहरू,
आनदभवन,
इलाहाबाद

[इस पत्र में जिस 'समझौते' का जिक्र है, वह उत्तर प्रदेश किसान स्थिति से संबंध रखता है। मेरा खयाल है, गांधीजी ने खास तौर पर उस समझौते का जिक्र किया है जो उनके गोलमेज-सम्मेलन में भाग लेने के लिए इग्लैंड जाने से पहले लार्ड विलिंगडन के साथ हुआ था।]

८८. महात्मा गांधी की ओर से

बोरसद
१ जुलाई १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा २७ जून का पत्र बारडोली होकर भेजा हुआ मिला। शायद तुम्हे मालूम नही था कि बम्बई से मैं बोरसद लौट आया था, क्योकि वल्लभ-भाई के और मेरेलिए हमारा काम बाट लेना जरूरी होगया है । सतत मौजूद और जागरूक रहकर खतरा टाला जा रहा है। मगर बोरसद में किसी भी दिन विस्फोट हो सकता है। मुझे दक्षिण अफ्रीका में समझौतो का पालन कराने का कठिन अनुभव हो चुका है। वहा तो यह भी हुआ कि अपनी तरफ से सौ फीसदी अमल कराने में बेचारा सिर फोड दिया गया और फिर सरकार से काम-चलाऊ अमल कराने में मुझे अपनेको गिरफ्तार करा लेना पडा। लेकिन मेरा खयाल था कि समझौतो का पालन कराने के बारे में सबकुछ भूल गया हू। किन्तु अब मैं पुरानी स्मृतिया फिर से ताजा कर रहा हू और बहुत-से वे ही अनुभव फिर हो रहे हैं। परन्तु मुझे बडा सन्तोष यह

है कि युद्ध हो या समझौता, हम वफादार सेवक बने रहें तो राष्ट्र अवश्य आगे बढ़ेगा।

मुख्य सचिव के नाम तुम्हारे सारे पत्र मुझे अच्छे लगे। मुझे जरूर आशा है कि गवर्नर तुमसे मिलना मजूर करेंगे।

तुम्हारे विरुद्ध यहा एक शिकायत है। टाइप किया हुआ कागज़ रख लेना और उसके बारे मे लिखो तो उसे लौटा देना या अपने साथ लेते आना और जब हम मिले तब इसके बारे मे सब बातें मुझे बता देना।

बापू

८९ सरोजिनी नायडू की ओर से

दि गोल्डन थ्रेशोल्ड,
हैदराबाद (दक्षिण)
७ सितम्बर १९३१

मेरे प्यारे जवाहर,

मेरी अतिम सूची साथ है। मै स्वीकार करती हू कि श्री मेनन की सूची को, जोकि बहुत ही अपर्याप्त है, देखकर मुझे अचरज हुआ। पर मैंने सोचा कि शायद लोग या तो पीछे हट गये, या उन्होने चदा नही दिया होगा, इसीलिए उन्हे मत देने का अधिकार नही रहा। यह सूची अच्छी है। इसमे चार नाम और जोड सकती तो अच्छा होता, पर वह सभव नही।

तुम्हारी भाषावाली पुस्तिका तो चमत्कारी है। बेहद असतुष्ट लोगो मे भी उसने सतोष की जो चमक पैदा की वह देखने की चीज थी। बूढे मौलवी अब्दुल हक, जिनकी राय की उर्दू के साहित्यिक क्षेत्रो मे बडी कीमत है और जिन्हे मैंने एक प्रति भेजी थी, उसके बाद राजेनबाबू से मिले थे और उनके पास से सतोष से दमकता हुआ चेहरा लेकर लौटे थे। यह उस दूसरे समझौते की दिशा में अच्छा और बहुत ही जरूरी कदम है, जिसका वक्त आगया है और जो जल्दी ही पूरा होगा। मुझे एक दर्जन प्रतिया और भेज दो (वी पी द्वारा, अगर तुम्हारा दफ्तर आग्रह करे और पैसा कमाने पर ही तुला हो)। मै कुछ प्रतिया पजाब तथा अन्य स्थानो में उन लोगों के पास भेजना चाहती हू जिनसे इस विषय में मेरी बातचीत हुई है।

मै बहुत तकलीफ में हू, इसलिए अपने सोफे पर लौट जाना चाहती हूं।

मेरा पैर किसी रहस्यपूर्ण दर्द से करीब-करीब बेकार-सा होगया है, जिसका कोई इलाज नही दिखाई पडता ।

बेबे भी बहुत ठीक नही है, पर यह मौसम के कारण थोडे दिनो के लिए ही है। सीलन और बेहद परिश्रम का उसपर असर पडा है। इन्दू को मैं लिख रही हू ।

सप्रेम,

फिर से— सरोजिनी

मेरे पास सी एल यू के लिए थोड़ा-सा रुपया और है।

[सी. एल. यू. से सकेत सिविल लिबर्टीज यूनियन—नागरिक स्वाधीनता संघ—की ओर है, जो मेरे सुझाव पर शुरू की गई थी और जिसकी सरोजिनी नायडू अध्यक्षा थीं।]

९०. रोजर बाल्डविन की ओर से

२४ सितम्बर १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

आपने मेरे पास जेनेवा में तार भेजने की जो कृपा की थी उसके लिए, पता नही, मैंने आपको धन्यवाद भेजा या नही। आपके सुझाव पर मैंने पेरिस जाकर ट्रेन पकडी और वहा से मैं बोलोन पहुचा, क्योकि मै अब भी अग्रेजो की 'ब्लेक लिस्ट' पर हू और गाधी से मिलने के लिए इग्लैंड नही जा सकता था। सौभाग्य से प्लेटफार्म पर मिसेज नायडू ने मुझे पहचान लिया और वह मुझे अपने डिब्बे में ले गईं, नही तो मैं ऐसी गाडी मे कैसे ठहर सकता था, जो कि खास तौर से जहाजी यात्रियो के लिए सुरक्षित की गई थी।

मैंने सब लोगो से कहा कि अमरीका में आदोलन लगातार चलता रहना चाहिए; खास तौर से अब जबकि ब्रिटेन पर वाल-स्ट्रीट के बैंकरो का प्रभुत्व होगया है और मैंकडोनल्ड 'टोरी' बन गये हैं। मैंने यह बात तय करा ली है कि अगर कान्फ्रेंस असफल रही तो मिसेज नायडू भेजी जायगी और मुझे उम्मीद है कि वह जरूर असफल रहेंगी बशर्ते कि गाधी ने मेरे अनुमान से अधिक समझौते की भावना न दिखलाई। मैं स्पष्ट कह देना चाहता हू कि मुझे वहा का वातावरण बिल्कुल पसन्द नही आया। न तो लोगो के विचार स्पष्ट हैं, न उनमें एकता है और न उनमें सकल्प की पर्याप्त दृढता है।

सब-के-सब गाधी मे इतने केन्द्रित है कि यह बात खतरे से खाली नही मानी जा सकती। मैं गाधी के सारे निर्देशो के बारे में जानता हू और उनकी सहन-शक्ति तथा सूझ-बूझ की प्रशसा भी करता हू।

लेकिन !

मुझे समझौते की कोई चिन्ता नही है, लेकिन मैं तो अमरीका में वही काम करूगा जो मुझे स्पष्ट रूप से समझ मे आ रहा है और इस विश्वास पर करूगा कि वहा के लोगो को स्वतत्रता केवल सार रूप मे स्वीकार्य होगी। इसका मतलब यह है कि सेना, अर्थव्यवस्था और विदेशी सम्बन्ध को वे अपने अधिकार मे रखना चाहेगे। गाधी ने मुझे यह बात स्पष्ट रूप से बता दी थी कि वह इसीको आधार मानकर काम करेगे और उन्होने हमें इसी आधार पर आगे बढने के लिए अपनी सहमति भी दी थी। चार्ली एड्रूज ने भी सहमति दी थी और मुझे बडा आश्चर्य है कि ब्रिटेन की स्थिति में अन्तर होने से अमरीका के महाजनो पर जो असर पडेगा उसे और साथ-ही-साथ भारत की राजनैतिक क्रान्ति मे जो आर्थिक समस्याए निहित हैं, उन्हे भी जितनी अच्छी तरह से वह समझते है उतना पार्टी का कोई भी दूसरा आदमी नही समझता।

मुझे आशा है कि हमारे वर्तमान आदोलन के बुर्जुआ रूप के बारे मे कम्युनिस्टो का जो खयाल है वह बिल्कुल गलत है। फिर भी मैं जानता हू कि इसका असली रूप तबतक स्पष्ट नही होगा, जबतक समय यह सिद्ध न कर दे कि जमीदार और उद्योगपति इसपर कितना नियत्रण रखते है। निश्चय ही हम लोग यहा अमरीका मे भारत मे सामाजिक क्रान्ति की चर्चा के बारे में खुल्लमखुल्ला बातें नही कर सकते। हम तो '१७७६ की स्पिरिट' अर्थात् राजनैतिक स्वतत्रता की भावना से आगे नही बढे है। लेकिन मैं आपको अपने मन की बात बता दू, सामाजिक क्रान्ति मे ही सब बातो का मर्म है। धान भी ऐसा ही सोचते है।

तार भेजने के लिए आपको एक बार फिर धन्यवाद भेजता हू और साथ ही यह विश्वास दिलाता हू कि एक दिन के सम्मेलन में जो कुछ भी किया जा सकता है वह किया गया और जो कुछ भी अमरीका मे किया जा सकेगा वह किया जायगा।

आपको और आपके परिवार को हार्दिक अभिनन्दन।

रोजर बाल्डविन

९१ मेरी खानसाहब की ओर से

[मेरी खानसाहब खान अब्दुल गफ़्फार खां के भाई और पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त की जनता के मशहूर नेता डाक्टर खानसाहब की धर्मपत्नी थीं। श्रीमती खानसाहब एक अंग्रेज महिला थीं।]

३, मिच्नी रोड, पेशावर
१ अक्तूबर १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

मैं सचमुच अपना फर्ज समझती हू कि आपको लिखू। खान तो खत लिखने से बेहद घबराते है। उनका बहुत-से नेक लोगो से सिर्फ खत न लिखने की वजह से ताल्लुक छूट गया। वह कभी बैठकर खत शुरू कर ही नही सकते। सच तो यह है कि वह कभी घर पर ही नही रहते। वह बडे तडके घर से निकल जाते है और बहुत रात गये लौटते है, थककर चूर और किसी भी काम के लिए बेकार, यहातक कि गपशप भी नही कर सकते। जहातक आपको खत लिखने का ताल्लुक है, वह हर वक्त कहते है कि लिखेंगे, मगर बस कहकर रह जाते है। उनके नाम आपके लिखे बहुत-से खत उनके बैग में पडे है। एक १९२१ का खत है, जो आपने चलती रेलगाडी मे बैठकर लिखा है। जब आपका फोटो मिला तो उन्होने एकदम मुझसे कहना शुरू किया कि वह जवाब मे आपको क्या-क्या लिखेंगे। इसपर मैंने कहा—आओ और इसी वक्त शुरू कर दो। और वह कहने लगे—नही, अभी नही, मुझे बहुत जरूरी काम करने है, और मैं मन को जमा नही सकता। मैं जल्दी ही लौटूंगा और आज ही याद करके चिट्ठी लिखूगा। लेकिन वह अपने इरादे पर अमल न कर सके। जॉन ने भी एक साल पहले लिखा था कि क्या ये सचमुच मेरे वालिद है? ये तो मुझे कभी खत ही नही लिखते! मैं बहुत जोर डालूगी कि वह आज सुबह आये हुए आपके खतो का जवाब दे। उन्हे मैंने खोलकर उनके पास भेज दिया है। मैं उम्मीद करती हू कि किसी दिन हम लोग आपके यहा आयेगे या फिर आप हमारे यहा आयेंगे।

आपकी बीवी को मेरा प्यार।

आपकी,
मेरी खानसाहब

९२. महादेव देसाई की ओर से

[**यह पत्र तब लिखा गया था जब गांधीजी गोलमेज-परिषद् में लंदन गये थे।**]

८८ नाइट्स ब्रिज,
लंदन, एस. डब्ल्यू. १,
२३ अक्तूबर १९३१

प्रिय जवाहरभाई,

हवाई डाक का दिन तो आ पहुचा, मगर मै सदा की भांति ही परेशानी की हालत में हू। मताधिकार-समिति में जब बापू ने जोरदार भाषण दिया तो छोटा-सा तूफान आगया। उन्होने कहा, "बार-बार सम्राट् के अधीन और ऐसी ही दूसरी बाते सुन-सुनकर मै तग आगया हू। काग्रेस ने इस तरह सोचना बहुत पहले ही छोड दिया है और इस मनोवृत्ति को जितनी जल्दी तिलाजलि दे दी जाय उतना ही अच्छा है।" लार्ड सैकी ने बापू को इस स्पष्टवादिता और निर्भयता के लिए बधाई दी और मेरे खयाल से सच्चे दिल से दी। लेकिन मेरा अनुमान है कि २७ तारीख के बाद तक कोई आशा नही रखा जा सकती। मुसलमानो के साथ बातचीत बन्द है और जबतक वे नही चाहेगे, बापू चलकर उनसे बात नही करेंगे। दत्त (डा. एस के. दत्त) ने हमें एक किस्सा सुनाया, जिससे तुम्हारा भी जरूर मनोरजन होगा। वह उस दिन एक अग्रेज मित्र, कैम्बेल रोड्स के यहा जिन्ना के साथ खाना खा रहे थे। जिन्ना ने शैम्पेन की तीसरी बोतल चढा ली थी, तब अल्पसख्यको के प्रश्न पर चर्चा हो रही थी। श्री रोड्स ने कहा, "आप लोग कोई परस्पर स्वीकृत हल देकर सरकार को झुकने के लिए विवश क्यो नही कर देते?" जिन्ना ने शैम्पेन के सौम्य (!) प्रभाव में उत्तर दिया, "आप यही तो भूलकर रहे है। जबतक हमे यह पता न चले कि हमे क्या मिलनेवाला है तब-तक कोई भी आपसी समझौता असभव है।" यह तो वही चीज हुई जो बापू कहते रहे है और जिससे मुसलमान इन्कार करते रहे है (हा, यह उदाहरण ऐसा है, जिससे शराबबन्दी के विरोधियो को प्रबल युक्ति मिल जायगी।)

लॉर्ड इरविन बापू से मिले थे (या बापू उनसे मिले थे)। उनका आग्रह

था कि जबतक वह अनुमति न दे, बापू को जाने का विचार नही करना चाहिए। उनका कहना है कि स्थिति निराशाजनक नही है और कम-से-कम चुनावो के खत्म होते ही निराशाजनक नही रहेगी। हर हालत मे वह तो पूरी कोशिश करके दूसरो के गले यह बात उतारेंगे ही कि कांग्रेस की अधिकाश मांगें स्वीकार करने लायक है। अगर अनुदार दल चुनाव जीत गया (और यह बिल्कुल सभव है) तो इरविन मन्त्रिमडल के सदस्य हो सकते है। परन्तु बापू इन सयोगो को आधार न बनाकर हर जगह और हर मौके पर अपने मन की बात कह डालते है। चैथम भवन की सभा बहुत सफल रही। यह अनुदार दल का अड्डा है, हालाकि सभापति लोथियन थे। और यद्यपि यूसुफ अली और कर्नल गिडनी ने बहुत-सी ऊलजलूल बाते कही, परन्तु बापू पूरी रगत मे थे और उन्होंने बहुतो के मन जीत लिये। इतिहासकार जी पी गूच को तुम जानते हो। उन्होने कहा कि चैथम भवन मे उन्होने इतनी बडी सभा नही देखी थी और उसका बहुत लोगो पर जबर्दस्त असर हुआ। मैंने यह सब सामग्री सदानद के मार्फत तार से भिजवा दी। तुमने देखी होगी। चैथम भवन का उल्लेख मै नही कर सका, क्योकि उनकी कार्रवाई बन्द कमरे में हुई मानी जाती है।

वे पादरियो और लाटपादरियो को काफी समय दे रहे है। पता नही, तुम इसपर क्या खयाल करोगे। मगर मुझे विश्वास है कि इससे उन्हे सच्ची और अच्छी शिक्षा मिलेगी और वे भी उसे भूलेंगे नही। ससद को (या मन्त्रि-मडल को, मै भूल रहा हू किसको ?) एक प्रार्थना-पत्र देने का विचार गभी-रतापूर्वक किया जा रहा है, जिसमें भारत के साथ दोनो पक्षो के लिए सम्मानपूर्ण समझौता करने की माग की जाय। और लोगो के साथ उसपर दोनो लाट पादरियो के भी हस्ताक्षर होगे।

बापू ने तुम्हारा तार होर के पास भेज दिया था। उन्होने अभी तक उत्तर नही दिया है। मेकडोनाल्ड के नाम के पत्र और उनके जवाब की नकलें तुम्हारे पास भेजना मै भूल गया था। उसमे बहुत-कुछ तो नही था, परन्तु नकलें कराकर इस पत्र के साथ भेजने की कोशिश करूगा। बापू ने शुएब को भोपाल के लिए लिखा गया एक पत्र उस दिन दिया था। उसमें यह बताया था कि सघीय अर्थ-व्यवस्था के बारे मे रियासतो को क्या सामान्य सिद्धान्त

मान लेने चाहिए। इसपर दो दिन तक चर्चा हुई, परन्तु कुछ भी परिणाम न निकला । एक 'खानगी' नाट्यशाला में मैंने एक खेल देखा। तुम्हे आघात तो नही लगेगा ? खैर, मुझे तो पता नही था कि खानगी नाट्यशाला क्या बला होती है। यह एक अप्रमाणित खेल था। मुझे ज़रा भी परवा तो नही करनी चाहिए थी, परन्तु सारे दृश्य (लगभग १०) निर्विवाद रूप से शयनकक्ष के दृश्य थे और इतने भद्दे थे कि देखकर जी उकता रहा था। फिर भी मै मानता हू कि कला विलक्षण थी। लेकिन जो वस्तु मुझे पसन्द आई वह थी 'बैरेट्स ऑव विमपौल स्ट्रीट'। यह 'क्रानिकल' वालो का खेल था जिसके बारे में मैंने उन्हे लिखा था। इसकी कल्पना और कला दोनो सुन्दर थी। खेल, सामान और हर चीज सूक्ष्म रूप में भी विशुद्ध थी। हा, मै विशुद्ध शब्द का प्रयोग जान-बूझकर कर रहा हू। मै सोच सकता हू कि एक 'खानगी नाट्यशाला' विशुद्ध हो सकती है। इसलिए मै 'बैरेट्स में एक वार फिर गया ! साथ की कतरन से तुम्हे वडा आनन्द आयेगा। एक गरीव देश के प्रतिनिधि के सचिव यह सव धधे कर रहे है !

आज रात को हम ईटन जा रहे हैं और वहा से ऑक्सफोर्ड जायगे। इस यात्रा की बाट मैं वहुत दिन से देख रहा था।

स्नेहाधीन,
महादेव

हा, सप्रू-मडली की भी थोडी-सी बात सुन लो। वह बापू से भरूचा की तरह यह जानना चाहते है कि सेना के सम्पूर्ण नियत्रण से उनका क्या अभिप्राय है ! "महात्माजी, गृह-युद्ध छिड़ जाय तो आप तो कह देंगे, 'अरे कोई परवा की वात नही, यदि थोडा-सा खून वह जाय।' परन्तु मै तो गृह-युद्ध को वरदाश्त नही कर सकता। मै तो जरूर फौज को वुलाऊगा और वह भी ब्रिटिश फौज को ?"

क्या तुम इस पत्र की नकल अन्सारी को भेज दोगे ? मेरे पास उनका वढिया खत आया है। कृपा करके उन्हे वता दो कि उनका पत्र मुझे मिल गया था और यह पत्र मै उन्हें भी वताना चाहता हू।

महादेव

९३. महात्मा गांधी की ओर से

[मैं इलाहाबाद से बम्बई गांधीजी से उनके गोलमेज-सम्मेलन से लौटने पर मिलने के लिए जा रहा था कि गिरफ्तार कर लिया गया। शेरवानी भी मेरे साथ थे। उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। उसी समय के आस-पास कुछ प्रान्तों में अनेक आर्डिनेंस जारी हुए। खान अब्दुल गफ्फार खां और दूसरों को सीमा प्रान्त में गिरफ्तार कर लिया गया। इस सबका मकसद यह था कि गांधीजी के लौटने के पहले ही हमारे आन्दोलन को कुचल दिया जाय।]

२८ दिसम्बर १९३१

प्रिय जवाहर,

इन्दू ने तुम्हारा पत्र मुझे दिया। कुछ भी हो, तुम्हारी गिरफ्तारी से मुझे आश्चर्य नही हुआ। मै अभी तक कमला के पास नही जा सका हू। आज रात को जा सकता हू, कल तो जरूर ही। तुम्हे यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इन्दू के नाम तुम्हारी दूसरी पत्र-माला मैंने पढ ली है। मुझे कुछ सुझाव देने थे, परन्तु यह तो शायद तभी होगा जब हम अपने-अपने स्वरूप में होगे।

इस बीच तुम्हे और शेरवानी को प्यार।

बापू

९४. महात्मा गाधी की ओर से

२९ जनवरी १९३२

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र पाकर हर्ष हुआ। हम बेचारे बाहरवालो से ईर्ष्या करने का तुम्हारे लिए कोई कारण नही। परन्तु हमें तुमसे इस बात की ईर्ष्या अवश्य है कि तुम्हे तो सारा गौरव प्राप्त हो रहा है और हम बाहरवालो के भाग्य में बेगार लिखी है। परन्तु हम बदला लेने का षडयन्त्र रच रहे है। आशा है, तुम्हे कुछ अखबार दिये जाते होगे। मैं जो कुछ कर रहा हू, उसमें तुम सदा मेरे मन में बसे रहते हो।

उस दिन कमला से मिला था। उसे बहुत अधिक विश्राम की आवश्यकता है। मैं उससे एक बार फिर मिलने की कोशिश करूगा और आग्रह करूगा

कि जबतक वह पूरी तरह अच्छी न होजाय अपना कमरा न छोडे। आशा है कि डाक्टर महमूद के बारे में की गई कार्रवाई से तुम सहमत होगे। मुझे विश्वास है कि आनन्दभवन पर लगाया गया कर चुकाने का वचन पूरा किया जायगा।

तुम दोनो को प्यार।

बापू

ईश्वर ने और सरकार ने चाहा तो कल आश्रम जाऊगा और दो-तीन दिन में लौट आऊगा।

९५ देहरादून जिला-जेल के सुपरिंटेडेट के नाम

[यह पत्र-व्यवहार जेल की एक घटना को लेकर हुआ था। जेल में हमारी यह नीति रही थी कि अगर जेल के कायदो को अपमानजनक या दूसरी तरह से अनुचित न समझा जाय तो उनका पालन किया जाय। फिर भी समय-समय पर कुछ घटनाएं घटती रहीं। एक मर्तबा जबकि मै नैनी सेंट्रल जेल में था, हम लोगो में से कुछने विरोध-स्वरूप पूरे तीन दिन (बहत्तर घंटो) का उपवास किया। आमतौर पर जेल में मुलाकात करने की हमें इजाजत थी। किसी समय ये मुलाकातें तीन महीने में एक मर्तबा होतीं, बाद में हर महीने, और जिस वक्त यह पत्र-व्यवहार हुआ मुझे हर पखवारे मुलाकात की इजाजत थी। चूंकि मै देहरादून जेल में था, मेरी मां और पत्नी को मिलने के लिए इलाहाबाद से दूर का सफर करके आना पड़ा। उनके देहरादून आने पर उनसे कहा गया कि वे मुझसे मुलाकात नहीं कर सकतीं। इस घटना के फलस्वरूप मैंने कई महीने तक मुलाकात करना छोड दिया। उस वक्त मै कमोबेश तनहाई में था और मेरा कोई साथी नहीं था।]

सुपरिंटेंडेट
जिला जेल, देहरादून,

जिला जेल, देहरादून,
२२ जून १९३२

प्रिय महोदय,

आपने आज खबर दी है कि आपके पास ऊपर के अधिकारियो की यह इत्तिला आई है कि मै एक महीने तक अपनी पत्नी और मा से मुलाकात नही कर सकता। मै समझता हू कि जेल के कायदे-कानून के मुताबिक मुलाकातें

उन नियमो के खिलाफ कोई कसूर करने पर सजा के तौर पर बद की जाती है। बडी मेहरबानी होगी, अगर आप स्थानीय सरकार या इस्पेक्टर जनरल या जिस किसीने आपको इत्तिला भेजी है, उससे यह मालूम कर लें कि मैंने कौन-सा कसूर किया है, जिसके लिए मुझे यह सजा दी गई है। स्थानीय सरकार ने विना मुझे खबर किये ऐसी सूचनाए निकालकर काफी अभद्रता का काम किया है। जेल के कानून-कायदो को, अगर वे भद्र और मुनासिब है तो, मानने की हमारी आदत रही है। फिर भी, अगर सरकार इस ढग से बर्ताव करती है जिसमें शिष्टता और भद्रता की कमी है तो हमारे लिए अपने मौजूदा रुख को जारी रखना मुश्किल होगा।

यह साफ नही है कि एक महीने के लिए सारी मुलाकातें वन्द कर दी गई है या यह पावदी मेरी पत्नी और मा की मुलाकातो पर ही है। जो हो, यह मेरे लिए बेसूद है। अगर दूसरो से मिलने की छूट हो भी तो भी वैसी किसी मुलाकात का मै फायदा नही उठाऊगा।

जैसाकि आप जानते है, मेरी मा और पत्नी मुझसे मिलने के लिए देहरादून से खास तौर पर आई है और अगली मुलाकात के दिन का यहा इतजार कर रही है। आपकी मिली इस नई इत्तिला से उनका प्रोग्राम बिलकुल बिगड जायगा और उनका यहा रहना किसी काम का नही होगा। लेकिन मेरा अदाज है कि जो सरकारे नीति के ऊचे मामलो में दखल रखती है, वे शिष्टता और भद्रता के मामूली नियमो की कोई परवा नही करती।

भवदीय,
जवाहरलाल नेहरू

प्रेषक : लेफ्टीनेंट कर्नल जी. हालरॉयड, आई एम एस
ऑफीशियेटिग इस्पेक्टर जनरल ऑफ प्रिजन्स, यू पी

प्राप्तकर्ता : सुपरिटेंडेंट
जिला जेल, देहरादून,

लखनऊ,
८ जुलाई १९३२

विपय 'ए' वर्ग के वदी प० ज्वोहरलाल नेहरू का प्रार्थना-पत्र
उनका प्रत्यकन स० ८१८/४६ दिनाक २३-६-३२

प्रार्थी को सूचना दी जा सकती है कि २७ मई १९३२ को उनकी

मा, पत्नी और पुत्री ने श्री आर एस पडित से इलाहाबाद जिला जेल में भेट की ।

उनकी पत्नी ने एक पत्र श्री आर एस. पडित को दिया । जेलर विना सुपरिटेंडेट की आज्ञा से ऐसा नही करने दे सकता था। इसपर उनकी मा ने जेलर के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया और अभद्रता दिखाई ।

इन कारणो से सरकार ने आज्ञा निकाली है कि श्रीमती ज्वाहरलाल नेहरू और श्रीमती मोतीलाल नेहरू को प्रार्थी से एक मास तक भेंट करने की इजाजत नही होगी ।

(हस्ताक्षर)···
लेफ्टीनेंट कर्नल, आई. एम एस.
ऑफीशियेटिंग इंस्पेक्टर जनरल ऑव प्रिजन्स, यू. पी.

९६. सुपरिंटेडेट, ज़िला जेल, देहरादून के नाम

सुपरिंटेंडेंट, देहरादून जेल
ज़िला जेल, देहरादून ११ जुलाई १९३२

प्रिय महोदय,

आपने आज मेरे २२ जून के खत का जवाव, जो कि आफीशियेटिंग इस्पेक्टर-जनरल ऑव प्रिजन्स के नाम भेजा गया था, मुझे दिखाने की मेहरवानी की । उसमें मुझे खबर दी गई है कि इलाहाबाद जिला जेल मे श्री आर. एस पडित से २७ मई को मुलाकात के दौरान में मेरी पत्नी ने श्री पडित को एक खत दिया और चकि जेलर ने इसकी इजाजत नही दी, मेरी मा ने "जेलर के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया और अभद्रता दिखाई।"

चूकि जो कुछ हुआ उसका यह गलत वयान है और मुद्दो को तोड़-मरोडकर वताया गया है, और इसके अलावा, चूकि सरकार की ओर से उठाये गए कदम से वडे-वडे मुद्दे पैदा होते है, मैं इस वारे मे आपको फिर लिख रहा हू और आप इस खत को सरकार के पास भेज देगे तो वड़ी मेहरवानी होगी ।

२७ मई को मुलाकात के दौरान मे श्री पडित को उनकी तीन लड़कियो

पास आई थी। उसने कहा कि तुम्हारी सलाह सीलोन में आराम लेने की है। मै इसे अनावश्यक समझता हू। वह थोडा काम करने लायक जरूर है और कुछ अस्पृश्यता का काम करने को बिल्कुल रजामद है। मेरे ख़याल से जबतक वह काम करना चाहती है करने देना चाहिए।

उसने मुझे बताया कि तुमने कुछ दात और निकलवा दिये हैं। उधर वह अपने बाल सफेद करने पर तुली है। मुझे तो आखो देखनेवालो ने बताया है कि वैसे तुम्हारा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक रहता है। मालूम होता है कि तुम अब भी मिलने आनेवालो से मुलाकाते नही कर रहे हो। मै चाहता हू कि यदि सम्भव हो तो तुम मुलाकातें करो। इससे उन्हे सतोष मिलेगा।

छगनलाल जोशी के आ मिलने से हमारी चार की सुखद टोली बन गई है। मुझे पता नही कि तुम हरिजन-कार्य में दिलचस्पी ले रहे हो या नही। शास्त्रियो के साथ अच्छा समय बीत रहा है। शास्त्रो का अक्षर-ज्ञान मेरा पहले से अच्छा होगया है, परन्तु सच्चे धर्म का ज्ञान वे मुझे थोडा ही दे सकते है।

हम सबकी तरफ से प्यार।

बापू

९८ महात्मा गांधी की ओर से

यरवदा सेंट्रल जेल
पूना,
१५ फरवरी १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे सुन्दर पत्र के उत्तर में अच्छा पत्र लिखने की आशा से मै तुम्हे लिखना टालता गया। पर अब अधिक देर नही कर सकता। ोज काम बढ रहा है। इसलिए मुझे अभी जैसा भी लिखा जा सके लिखना होगा। पता नही तुम्हे 'हरिजन' जैसा निर्दोप पत्र भी दिया जाता है या नही। मै तो इस आशा से भेज रहा हू कि तुम्हे मिलता होगा। यदि मिलता हो तो मुझे अपनी राय लिखो। सनातनियो के विरुद्ध लडाई दिन-दिन दिलचस्प होती जा रही है, साथ ही अधिकाधिक कठिन भी। एक अच्छी बात यह है कि वे दीर्घकालीन मानसिक आलस्य से जाग उठे है। मुझपर जिन गालियो की बौछार ये कर रहे है वे अजीब ताजगी लानेवाली है। दुनियाभर की

बुराइया और भ्रष्टाचार मुझमें मौजूद है। मगर तूफान ठडा हो जायगा, क्योकि मै अहिंसा की—अप्रतिशोध की रामबाण दवा का प्रयोग कर रहा हू। मै गालियो की जितनी उपेक्षा करता हू उतनी ही वे भयकर होती जा रही है। परन्तु यह तो दीपक के आस-पास पतग का मृत्यु-नृत्य है। बेचारे राजगोपालाचार्य और देवदास की भी अच्छी खबर ली जा रही है। लक्ष्मी की सगाई को बीच मे घसीटकर उस बारे मे गन्दे आरोप गढे जा रहे है। अस्पृश्यता का समर्थन इस तरह होता है! घरू मुलाकात के तौर पर इन्दू और अस्पृश्यता के बारे में सरूप और कृष्णा मुझसे उस दिन मिली थी। इन्दू का स्वास्थ्य बहुत अच्छा था और वह बिल्कुल प्रसन्न दिखाई देती थी। सरूप अस्पृश्यता-निवारण के लिए काठियावाड और गुजरात में थोडे दिन का दौरा कर रही है और कृष्णा इलाहाबाद जानेवाली थी। देवदास दिल्ली मे है और राजाजी की, जो कि अस्पृश्यता-निवारण के लिए कानून बनवाने मे असेबली के मेंबरो से सम्पर्क कर रहे है, मदद कर रहा है। हमारा समय पूरी तरह अस्पृश्यता के काम में लग रहा है। सरदार वल्लभभाई बाहर जानेवाले पत्रो की बढती हुई सख्या के लिए सारे लिफाफे बनाकर देते है। वे समाचार-पत्रो को परिश्रम से पढते है और अस्पृश्यता के विषय मे और न जाने कहा-कहा की छोटी-छोटी बातो की जानकारी खोद-खोदकर निकाल लाते है। विनोद के भी वह अटूट भडार है। मुआयने का दिन उनके लिए वैसा ही होता है जैसा और कोई दिन। वह कभी कोई माग नही करते। मेरा कोई भी दिन ऐसा नही जाता जब मै कोई-न-कोई माग न रखू। पता नही, हम दोनो में से कौन अधिक सुखी है। मुह फुलाये बिना मै अपनी हार को सहन कर लू तो मै भी उनकी तरह सुखी क्यो नही हो सकता!

तुम्हारे एकान्त और तुम्हारे अध्ययन से हम सबको ईर्ष्या होती है। यह सच है कि हमारे भार हमारे अपने ही या यो कहो कि मेरे ही ओढे हुए है। मैने वल्लभभाई की सस्कृत के अच्छे पडित बनने की सारी आशा चूर-चूर कर दी है। वह हरिजन-कार्य की उत्तेजना के बीच मे अपने अध्ययन पर ध्यान नही जमा सकते। बंगाल के फुटबाल के खिलाडी जैसे अपने खेल का मजा लूटते है वैसे ही वल्लभभाई चटपटी आलोचना का आनन्द लेते है। महादेव तो, जैसा शौकत ने वर्णन किया था, टोली के हमाल बने हुए है। कोई

माताजी और कमला के साथ बहुत अच्छा समय बीता। सरूप और रनजीत से अधिक नही मिल सका।

माताजी को कृष्णा की चिन्ता है। उसके भविष्य के बारे मे उन्होने मुझसे लम्बी बातचीत की। इस मामले मे तुम्हारे पास मेरे लिए कोई सुझाव हो तो बताओ। अलबत्ता मेरी गति-विधिया अनिश्चित है। परन्तु इसकी परवा नही।

देवदास और लक्ष्मी को मैंने पूना मे छोडा था। अब वे यहा आनेवाले है। बहुत करके देवदास अभी दिल्ली में बस जायगा। महादेव, बा और प्रभावती मेरे साथ है। खयाल है कि वे सब शीघ्र ही बिखर जा गे।

उपवास से पहले की शक्ति फिर से प्राप्त करने में मन्द गति रही है। परन्तु मेरी दशा धीरे-धीरे सुधर रही है। सप्रेम,

बापू

१०१. महात्मा गाधी की ओर से

[यह पत्र मेरी छोटी बहन कृष्णा के राजा हठीसिंग के साथ विवाह के अवसर पर मेरे पास भेजा गया था।]

१८ अक्तूबर १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

साथ में दो मालाए है। ये वर-वधू के लिए आज मेरे खासतौर पर काते हुए सूत से बनाई गई है। इनके साथ मेरे शुभ आशीर्वाद जुडे हुए है। मेरी तरफ से उनके गले में डाल देना। आशा है, ये तुम्हारे पास समय पर पहुचे जायगी।

मुझे इस बात का जरूर दुख है कि श्रीमती हठीसिंग ने इस सस्कार के विरुद्ध राय दी है, परन्तु मेरा खयाल है कि इन मामलो मे मै पिछडा हुआ हू। दीपक के बारे में मैंने तुम्हारा कहना समझ लिया। मै सरला-देवी को जितना कोमल ढग से लिख सकता हू, लिखूगा।

तुम सबको प्यार।

बापू

जब सब काम निपट जाय तब मै चाहता हू कि तुम मुझे तार से बताओ कि माताजी ने यह सब श्रम सहन कर लिया है।

१०२ महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
१० अगस्त १९३४

प्रिय जवाहरलाल,

खानसाहब को बम्बई की बैठको में आने के लिए साधारण सूचना मिल गई है। उनकी इच्छा आने की नही है और मैं उन्हे दबाना नही चाहता। बम्बई में उन्हे सभाओ और समारोहो में शरीक होने को कहा जायगा और बोलने का अनुरोध किया जायगा। मैं नही चाहता कि अभी वह ऐसा करे। मैं यह चाहता हू कि वह यह साल मेरे साथ बिताये। दूसरे, बीमारी के हमलो को रोकने की भी उनमें बहुत शक्ति नही है। इसलिए उन्हे सम्मिलित होने से माफ कर दोगे ?

सस्नेह,
बापू

[खानसाहब से यहा मतलब खान अब्दुल गफ्फार खां से है।]

१०३. महात्मा गाधी के नाम

[अपनी पत्नी की कड़ी बीमारी के कारण मैं अचानक जेल से रिहा कर दिया गया था। यह रिहाई थोड़े समय की थी और दरअसल दस दिन के भीतर ही मैं फिर जेल में पहुंचा दिया गया। अपनी रिहाई के ठीक बाद मैंने यह खत गाधीजी को लिखा था।]

आनंदभवन, इलाहाबाद
१३ अगस्त १९३४

प्रिय बापू,

छ महीने बिल्कुल अकेले रहने और कुछ भी न करने के बाद पिछले २७ घटो की चिता, उत्तेजना और भाग-दौड में मैं खो-सा गया हू। मैं बहुत थकान महसूस कर रहा हू। आधी रात-गये मैं यह पत्र आपको लिख रहा हू। सारे दिन लोगो की भीड आती रही है। मौका मिला तो आपको फिर लिखूगा, लेकिन कई महीने तक ऐसा कर भी सकूगा, इसमें मुझे शक है। इसलिए मैं थोडे मे बताना चाहूगा कि पिछले कोई पाच महीनो में कांग्रेस के जो बडे फैसले हुए है, उनके प्रति मेरी क्या प्रतिक्रिया रही है। मेरी जान-

कारी के जरिये स्वभावत बहुत सीमित रहे है, लेकिन मै समझता हू कि वे इतने काफी है कि मै घटनाओ की आम धारा का बहुत-कुछ सही अदाज कर सकता हू ।

जब मैंने सुना कि आपने सत्याग्रह-आदोलन बन्द कर दिया है, तो मुझे दु ख हुआ । पहले छोटा-सा ऐलान मुझे मिला । उसके बहुत बाद मैंने आपका बयान पढा और उससे मुझे इतना जबरदस्त धक्का लगा, जितना शायद पहले कभी नही लगा होगा । सत्याग्रह-आदोलन को बद कर देने से मैं अपने मन को तैयार कर सकता था, लेकिन ऐसा करने के जो कारण आपने बताये और आगे के काम के लिए जो सुझाव आपने दिये, उसने मुझे हैरत में डाल दिया । मैंने अचानक और जोरो से महसूस किया, मानो मेरे भीतर की कोई चीज टूट गई, ऐसा कोई बधन टूट गया, जिसकी मेरे लिए बडी कीमत थी । मैंने अपनेको इस लबी-चौडी दुनिया में भयानक रूप से अकेला महसूस किया । मैंने लगभग बचपन से ही अपनेको हमेशा कुछ अकेला ही अनुभव किया है । लेकिन कुछ लगाव मुझे ताकत देते रहे है, कुछ मजबूत सहारे मुझे थामे रहे है । वह अकेलापन कभी गया तो नही, लेकिन कम होगया था । पर अब मैंने अपनेको बिल्कुल अकेला समझा, ऐसा जैसे किसी रेगिस्तानी टापू पर पटक दिया गया हू ।

लोगो मे हालात के मुताबिक अपनेको ढालने की जबरदस्त ताकत होती है और मैंने भी कुछ हद तक नये हालात के मुताबिक अपनेको बना लिया । इस बारे में मेरी भावनाओ की तेजी जो बहुत-कुछ जिस्मानी दर्द बन गई थी, ठडी पड गई । उसकी धार मोथरी होगई । लेकिन धक्के-पर-धक्के लगने और एक के बाद एक घटनाओ के होने से वह तेज होगई और मेरे मन और भावनाओ को उसने चैन और आराम न लेने दिया । फिर मुझे आध्यात्मिक अकेलापन महसूस हुआ, मानो मैं न सिर्फ अपने सामने से गुजरती भीड से, बल्कि जिन्हे मैं अपना प्यारा और नजदीकी साथी मानता था, उनसे भी बिल्कुल अजनबी हू, और उनके साथ मेरा कोई मेल नही है । इस बार का मेरा जेल में रहना मेरे ततुओ के लिए जितना ज्यादा तकलीफ देनेवाला रहा, उतना पहले किसी बार का जेल जाना नहीं हुआ था । मै करीब-करीब यह चाहने लगा कि सभी अखबार मुझसे दूर रक्खे जाय, जिससे कि मैं इन

बार-बार लगनेवाले धक्को से बच सकू ।

शरीर से मै ठीक ही रहा । जेल मे मै हमेशा ऐसा ही रहता हू । मेरे शरीर ने मेरा अच्छा साथ दिया है और वह बहुत दुर्व्यवहार और वोझ सह सकता है और यह सोचने की ढिठाई करके कि शायद मै उस भूमि के लिए, जिससे कि मेरा भाग्य बधा हुआ है, अब भी कुछ खास काम कर सकू, मैं अपने जिस्म की हमेशा अच्छी तरह देखभाल करता रहा हू ।

लेकिन मैने अक्सर यह सोचा है कि गोल सूराख मे मै चौकोर खूटी के जैसा तो कही नही हू, या घमड के बुदबुदे के मानिंद तो मै नही हू, जो मेरा तिरस्कार करते समुद्र मे जहा-तहा उठ रहे थे । लेकिन घमड और गर्व की जीत हुई और उस बौद्धिक यत्र ने, जो मेरे भीतर चलता रहता है, हार मानने से इन्कार कर दिया । अगर वे आदर्श, जिन्होने मुझे काम करने को उकसाया और तूफानी मौसम में भी उमग मे रक्खा, ठीक थे—और उनके ठीक होने का यकीन मुझमे हमेशा बढता रहा है—तो उनकी जरूर जीत होगी, चाहे हमारी पीढी उस जीत को देखने के लिए जिंदा न रहे ।

लेकिन इस साल के इन लबे और थकानेवाले महीनो मे उन आदर्शो का क्या हुआ, जबकि मै एक मौन और दूर के दर्शक की तरह अपनी लाचारी पर बेचैन था ? रुकावटो का आना और थोडे समय की हार सभी बडे सघर्षो मे काफी आम बातें है । उनसे दु ख तो होता है, लेकिन आदमी जल्दी ही सभल जाता है । अगर उन आदर्शो की रोशनी को मद्धिम पडने से बचाया जाय और उसूलो का लगर मजबूत रहे तो सभाल जल्दी हो जाती है । लेकिन जो मैने देखा वह रुकावट और हार नही थी, वल्कि आध्यात्मिक हार थी, जो कि सबसे अधिक भयकर है । ऐसा न समझिये कि मेरा इशारा कौंसिल मे प्रवेश के सवाल की ओर है । उसे मै बहुत महत्व नही देता । किन्ही हालात मे इन व्यवस्थापिका सभाओ में खुद जाने की कल्पना कर सकता हू । लेकिन मैं चाहे व्यवस्थापिका सभा में प्रवेश करके काम करूं चाहे बाहर से, मैं सिर्फ एक क्रातिकारी के तौर पर काम कर सकता हू, जिसका मतलब ऐसे इन्सान से है, जो कि बुनियादी और क्रातिकारी परिवर्तन चाहता है, वह चाहे राजनैतिक हो या सामाजिक, क्योकि मुझे विश्वास होगया है कि किन्ही और तरह की तब्दीलियो से हिन्दुस्तान और दुनिया को न शाति मिल सकती

है, न सतोष ।

ऐसा मैंने सोचा । जाहिर है कि जो नेता बाहर काम कर रहे थे वे कुछ और ही ढग से सोचते थे । उन्होने ऐसे जमाने की भाषा बोलना शुरू किया, जो बीत चुका था और जो असहयोग और सत्याग्रह के हमपर चढे नशे से पहले का था । कभी-कभी वे उन्ही शब्दो और मुहावरो का इस्तेमाल करते थे, लेकिन वे बेजान और बेमानी होते थे । काग्रेस के मुखिया अचानक वे ही लोग बन बैठे, जिन्होने हमारे आगे रोढे अटकाये थे, हमे रोका था, सघर्ष से दूर रक्खा था, बल्कि हमारी बडी जरूरत के वक्त विरोधी दल के साथ सहयोग किया था । अब हमारे स्वतत्रता के मदिर के वे बडे पुजारी बन बैठे, और बहुत-से बहादुर सिपाही, जिन्होने युद्ध की गर्मी और धूल मे बोझ को कधा लगाया था, मदिर के अहाते मे घुस भी नही पाते । वे और उन-जैसे लोग अछूत और पास न आने लायक होगये थे और अगर वे अपनी आवाज बुलद करते और उन नये पुजारियो की टीका-टिप्पणी करते तो चीखकर उन्हे बैठा दिया जाता और कहा जाता कि वे लक्ष्य के प्रति विद्रोही है, क्योकि वे मदिर के पवित्र अहाते की एकरसता को भग करते है ।

और इस तरह भारतीय स्वतत्रता का झडा बडे आडवर और घटाटोप के साथ उन्हे सौप दिया गया, जिन्होने दरअसल दुश्मन के कहने पर, उसे तब नीचे झुकाया था, जबकि हमारी राष्ट्रीय लडाई बडे जोरो पर थी, उन लोगो को, जिन्होने घर की छतो पर चढकर यह ऐलान किया था कि वे राजनीति से नाता तोड बैठे है—क्योकि राजनीति उस समय खतरे से खाली नही थी—लेकिन जो कूदकर आगे की पक्ति मे आ गये थे, क्योकि अब राजनीति मे खतरा नही था ।

और उनके सामने आदर्श क्या थे, जबकि वे काग्रेस और राष्ट्र की ओर से बोल रहे थे ? आदर्श के नाम पर उनके यहा एक बडी ही बेहिसाब हालत थी, जिसमे असली मुद्दो से कतराना होता, काग्रेस के राजनैतिक मकसदो तक को, जहातक उनकी हिम्मत पडती, नरम करना होता, हरेक निहित स्वार्थ के प्रति कोमल चिता प्रकट करना होता, स्वतत्रता के माने हुए बहुत-से दुश्मनो के आगे झुकना होता, लेकिन काग्रेसी फौज के जान कुरबान करनेवाले

अगुआ सिपाहियो के सामने दिलेरी और मर्दानगी दिखाना होता। क्या काग्रेस तेजी से गिरकर कलकत्ता कार्पोरेशन के पिछले कई सालो के शर्मनाक नजारे का एक बडा रूप नही बनती जा रही है ? बगाल-काग्रेस का शक्तिशाली भाग क्या आज 'श्री नलिनी रजन सरकार सवर्धन समाज' नही कहा जा सकता ? और यह वही सज्जन है, जो सरकारी कर्मचारियो, गृह-सदस्यों और इसी तरह के लोगो को दावतें देकर प्रसन्न हुआ करते थे, जबकि हममें से बहुत-से जेलो में थे और सविनय अवज्ञा-आदोलन घूमधाम से चलता हुआ समझा जाता था। क्या दूसरे भाग को कुछ वैसे ही ऊचे मकसद के सवर्धन के लिए एक वैसा ही समाज नही माना जा सकता ? लेकिन दोप बगाल तक सीमित नही है। करीब-करीब सभी जगह ऐसी ही दृष्टि है। काग्रेस ऊपर से नीचे तक दलबदी में पड गई है और मौका-परस्ती का वोल-बाला है।

इस परिस्थिति की सीधी जिम्मेदारी वर्किंग कमिटी पर नही है। फिर भी वर्किंग कमिटी को यह जिम्मेदारी उठानी चाहिए। नेताओ और उनकी नीति के आधार पर ही अनुयायी अपना कार्यक्रम वनाते है। अनुयायियो पर दोष डालना न मुनासिब है, न ठीक है। हरेक भाषा में कोई-न-कोई कहावत है, जिसमें काम करनेवाले अपने औजारो को दोष देते है। वर्किंग कमिटी ने जान-बूझकर हमारे आदर्शों और ध्येयो की परिभाषा को गोलमोल रखने को वढावा दिया है और इसका नतीजा यही नही होगा कि गडबड फैले, वल्कि यह भी कि प्रतिक्रिया के अवसरो पर गिरावट होगी, और ढोल पीटनेवाले और प्रतिक्रियावादी आगे आवेगे।

मेरा इशारा खास तौर पर राजनैतिक लक्ष्यो की ओर है, जो कि काग्रेस का खास क्षेत्र है। मै समझता हू कि वहुत पहले ही काग्रेस को सामाजिक और आर्थिक मुद्दो पर साफ-साफ गौर करना चाहिए था, लेकिन मै यह भी मानता हू कि इन मुद्दो की शिक्षा के लिए समय की जरूरत है और हो सकता है कि कुल मिलाकर काग्रेस फिलहाल उतनी आगे न जा सके, जितनी मैं चाहूगा कि वह जाय। लेकिन ऐसा जान पडता है कि वर्किंग कमिटी किसी विषय को जानती हो, चाहे न जानती हो, वह हमेशा उन लोगो पर इल्जाम लगाने और निकाल वाहर करने के लिए तैयार रहती है, जिन्होने इन विषयो का खास अध्ययन किया है और जो अपने कुछ विचार रखते है। उन विचारो

को समझने की कोई कोशिश नही की जाती, जिनके बारे मे यह कुख्यात है कि ये आज की दुनिया के कुछ सबसे योग्य और सबसे ज्यादा त्यागी लोगो के विचार है। ये विचार सही हो या गलत, लेकिन इसके पहले कि वर्किंग कमिटी उनकी निंदा करे, उसे कम-से-कम उन्हे समझ तो लेना चाहिए। एक सधे-सधाये तर्क का उत्तर भावुकताभरी अपीलो से नही दिया जा सकता, न इस तरह के हल्के इजहार से कि हिन्दुस्तान में हालात कुछ दूसरी किस्म के है और जो आर्थिक नियम दूसरी जगह लागू होते है, वे हमने यहा चालू नही किये है। वर्किंग कमिटी की इस बारे की तजवीज मे समाजवाद की मोटी बातो की इतनी अचरजभरी गैर-जानकारी दिखाई दी कि उसे पढकर दु ख हुआ और यह जानकर भी कि उसे हिंदुस्तान से बाहर भी लोग पढेगे। ऐसा जान पडता है कि कमिटी की सबसे बडी इच्छा यह रही है कि निहित स्वार्थो को, जैसे भी हो, आश्वासन दिलाये, ऐसा करने में भले ही उसका बयान बकवास ही क्यो न जान पडे।

समाजवाद विषय के व्यवहार का एक अजीब ढग यह है कि इस शब्द को, जिसका कि अग्रेजी भाषा में एक निश्चित अर्थ है, एक बिल्कुल ही दूसरा अर्थ दिया जाय। यदि लोग शब्दो को अपने-अपने अलग अर्थ देने लगे तो विचारो के आदान-प्रदान मे मदद नही मिलती। कोई अपनेको इजन-चालक कहे और फिर यह जोड दे कि उसका इजन लकडी का है और उसे बैल खीचते है तो वह इजन-चालक शब्द का दुरुपयोग करता है।

यह खत उम्मीद से ज्यादा लबा होगया है और अब रात भी काफी होगई है। शायद मैने जो कुछ लिखा है, एक उलझे हुए ढग से और बेतरतीबी से लिखा-है, क्योकि मेरा दिमाग थका हुआ है। फिर भी उससे मेरे मन की एक तस्वीर मिलेगी। पिछले कुछ महीने मेरे लिए बडी तकलीफ के रहे है और मै समझता हू कि बहुत-से और लोगो के लिए भी वे वैसे ही रहे होगे। कभी-कभी मैने महसूस किया है कि आज की दुनिया मे, और शायद पुराने जमाने की दुनिया में भी, यह अक्सर पसद किया गया है कि कुछ लोगो के दिलो को तोडना, औरो की जेबो को छूने की बनिस्बत अच्छा है। दिलो, दिमागो, जिस्मो, इन्सानी इन्साफ और इज्जत के मुकाबले मे दरअसल जेबो की ज्यादा कीमत और कद्र रही है।

एक और विषय है, जिसका मै जिक्र करना चाहूगा। वह है स्वराज-भवन-ट्रस्ट। मालूम हुआ है कि वर्किंग कमिटी ने हाल में स्वराज भवन की देख-भाल के सवाल पर विचार किया था और इस नतीजे पर पहुची थी कि यह उसकी जिम्मेदारी नही हैं। उसने पहले, करीब तीन साल हुए, इसके लिए एक ग्राट देना मजूर किया था, पर वह अभी तक मिली नही है, हालाकि उस-की बिना पर खर्चे तो होगये। अब फिर से नई ग्राट मजूर हुई है। यह शायद कुछ महीनो के लिए काफी होगी। भविष्य के लिए, वर्किंग कमिटी जाहिरा तौर पर चिंतित रही हैं कि मकान और साथ की जमीन पर होनेवाले खर्चे का बोझ उसे न उठाना पडे। यह बोझ १०० रुपये महीने का है, जिसमे टैक्स वगैरा शामिल है। मैं समझता हू कि ट्रस्टियो को भी इस बोझ से कुछ डर हो रहा था और उन्होने सुझाव दिया कि मकान के कुछ हिस्से को मामूली तौर पर किराये पर उठा दिया जाय, जिसमें कि उसकी देख-रेख और सार-सभाल का खर्च निकाला जा सके। एक दूसरा सुझाव यह था कि इस काम के लिए जमीन का कुछ हिस्सा बेच दिया जाय। इन सुझावो की बात सुनकर मुझे हैरत हुई, क्योकि इनमें से कुछ मुझे ट्रस्ट की शर्तों के खिलाफ लगे और उसकी भावना के तो सभी खिलाफ थे। ट्रस्ट के एक मेंबर की हैसियत से मेरा इस विषय मे एक ही मत है, बल्कि मै कहना चाहूगा कि ट्रस्ट-जायदाद के इस दुरुपयोग के खिलाफ मुझे सख्त ऐतराज है। मेरे पिता की इच्छाओ के इस तरह निरादर की कल्पना ही मुझे बर्दाश्त नही है। ट्रस्ट न केवल उनकी इच्छाओ की नुमाइदगी करता है, बल्कि एक तरह से उनके यादगार की भी, और उनकी इच्छाए और उनकी यादगार मुझे सौ रुपये महीने से ज्यादा प्यारी है। इसलिए मैं वर्किंग कमिटी और ट्रस्टियो को यह यकीन दिलाना चाहूगा कि इस जायदाद की देख-रेख के लिए जितने धन की जरूरत है उनकी चिंता उन्हे करने की जरूरत नही। वर्किंग कमिटी ने जो रकम कुछ महीनो के लिए मजूर की है उसके खत्म होते ही मैं उनकी देख-रेख की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लूगा और वर्किंग कमिटी को आगे ग्राट देने की जरूरत न होगी। मैं ट्रस्टियो से यह अनुरोध करूगा कि इस बारे मे वे मेरी भावनाओ का आदर करेंगे और जायदाद के न टुकडे करेंगे और न उसे किराये पर उठावेंगे। मैं स्वराज-भवन जायदाद की देख-रेख तबतक करूगा जबतक

कि वह किसी सत्कार्य के उपयोग मे नही आती।

मेरे पास आकडे नही है, लेकिन मेरा यकीन है कि इस समय तक भी स्वराज-भवन, किसी मायने में, वर्किंग कमिटी पर पैसे के खयाल से बोझ नही रहा है। जो ग्राट उसके लिए दी गई है, वह ए आई सी सी के आफिस के लिए काम मे आनेवाली जगह के वाजिब किराये से किसी कदर भी ज्यादा न होगी। यह किराया छोटे और सस्ते मकान में दफ्तर के चले जाने से कम हो सकता था। साथ ही यह भी है कि पहले मद्रास में एक मकान के सिर्फ ऊपरी तल्ले के लिए ए आई सी सी ने १५०) रुपये महीना किराया दिया है।

शायद इस खत के कुछ अशो से आपको तकलीफ पहुचे, लेकिन आप यह भी न पसद करते कि मै अपने दिल की बात आपसे छिपाऊ।

सप्रेम आपका,
जवाहर

[स्वराज्य भवन ट्रस्ट का निर्माण मैंने अपने पिताजी की इच्छानुसार किया था, जिनका कुछ वर्ष पहले देहान्त होगया था। ट्रस्ट हमारे इलाहाबाद के कौटुम्बिक घर के लिए था।]

१०४. महात्मा गाधी की ओर से

१७ अगस्त १९३४

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा भावपूर्ण और मर्मस्पर्शी पत्र मिला। उसका उत्तर मेरी सामर्थ्य से कही अधिक लम्बा होना चाहिए।

मुझे सरकार से अधिक शराफत की आशा थी। किन्तु तुम्हारे मौजूद रहने ने कमला के लिए और साथ ही मामा के लिए जो काम किया वह किसी दवा या डाक्टर से नही हो सकता था। मुझे आशा है कि तुम जितने थोडे-से दिनो की अपेक्षा कर रहे हो, उनसे अधिक ठहरने दिये जाओगे।

तुम्हारे गहरे दु ख को मै समझता हू। अपनी भावनाओ को पूरी तरह और आजादी के साथ प्रकट करके तुमने बिल्कुल ठीक किया है, परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामान्य दृष्टिकोण मे लिखित बात को अधिक गहराई से अध्ययन करने पर तुम्हे पता चल जायगा कि तुमने जो इतना माग

दु ख और निराशा का अनुभव किया है उसके लिए काफी कारण नही है। मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि तुमने मुझमे अपना साथी खोया नही है। मैं वही हू जैसा तुम मुझे १९१७ मे और उसके बाद से जानते हो। मुझमे वही लगन है जोकि सामान्य लक्ष्य के लिए तुमने मुझमे पाई थी । मुझे देश के लिए पूरे अर्थ मे सम्पूर्ण स्वाधीनता चाहिए और प्रत्येक प्रस्ताव, जिससे तुम्हे पीडा हुई है, उसी लक्ष्य को ध्यान मे रखकर तैयार किया गया है। इन प्रस्तावो के लिए और उनकी सारी कल्पना के लिए पूरी जिम्मेदारी मेरी है।

लेकिन मेरा विचार है कि मुझे समय की आवश्यकता को पहचान लेने की अटकल आती है। ये प्रस्ताव उसीका परिणाम है। अलबत्ता तरीके या साधन पर हमारे जोर देने मे अन्तर है। मेरेलिए साधन उतने ही महत्वपूर्ण है, जितना लक्ष्य, बल्कि एक तरह से साधन अधिक महत्वपूर्ण है, क्योकि उनपर तो हम कुछ नियन्त्रण रख सकते है। अगर साधनो पर हमारा काबू न रहे तो लक्ष्य पर वह कहा से रह जायगा !

'विचारहीन बातो' के बारे मे प्रस्ताव को निर्विकार होकर जरूर पढो। समाजवाद के विषय में उसमें एक भी शब्द नही है। समाजवादियो का अधिक-से-अधिक लिहाज रखा गया है, क्योकि उनमे से कुछके साथ मेरा घनिष्ठ परिचय है। क्या मुझे उनका त्याग मालूम नही है ?

मगर मैंने देखा है कि वे सब-के-सब जल्दी में है। क्यो न हो ? बात इतनी ही है कि यदि मै उनकी तरह तेज नही चल सकता तो मुझे उनसे कहना पडता है कि ठहरो और मुझे अपने साथ ले चलो। अक्षरश मेरा यही रवैया है। मैंने शब्दकोश मे समाजवाद का अर्थ देखा है। परिभाषा पढने से पहले जहां मैं था उससे आगे नही पहुच सका। तुम बताओ, पूरा अर्थ जानने के लिए मुझे क्या पढना चाहिए ? मैंने मसानी की दी हुई पुस्तको में से एक पुस्तक पढी है और अब मैं अपना सारा फालतू समय नरेन्द्रदेव की सिफारिश की हुई पुस्तक पढने मे लगा रहा हू।

तुम कार्य-समिति के सदस्यो के साथ कठोरता कर रहे हो। वे जैसे भी है, हमारे साथी है। आखिर तो हमारी एक स्वतन्त्र संस्था है। यदि वे विश्वास-पात्र नही है तो उन्हे हटा देना चाहिए। परन्तु जो कष्ट कुछ दूसरे लोग सह चुके है, उन्हे वे न सह सके तो इसके लिए उन्हे दोष देना अनुचित है।

विस्फोट के बाद हम रचना चाहते है। कदाचित् हमारा मिलना न हो, इसलिए अव मुझे ठीक-ठीक वता दो कि तुम मुझसे क्या कराना चाहते हो। और तुम्हारे ख्याल से तुम्हारे विचारो का सबसे अच्छा प्रतिनिधि कौन होगा।

दु ख की बात यह है कि मै तो उपस्थित नही था। वल्लभभाई थे। तुम्हारे रवैये से क्रोध प्रकट होता है। तुम्हें ट्रस्टियो पर विश्वास रखना चाहिए कि वे अपना फर्ज अदा करेंगे। मै नही समझता कि कोई बेजा बात हुई। मै इतना व्यस्त था कि उसपर एकाग्रता से ध्यान नही दे सका। अब मै कागज़ात और हर चीज का अध्ययन करूगा।

बेशक तुम्हारी भावनाओ का आदर दूसरे ट्रस्टी पूरी तरह करेंगे। यह आश्वासन देने के बाद मै तुमसे कहूगा कि इस मामले को इस प्रकार व्यक्तिगत न समझो जैसा तुमने समझा है। यह तुम्हारे उदार स्वभाव के अधिक योग्य होगा कि पिताजी की स्मृति के लिए जितना लिहाज तुमको है उतना ही अपने साथी ट्रस्टियो को होने का श्रेय दे सको। पिताजी की स्मृति का सरक्षक राष्ट्र को बना दो और तुम राष्ट्र के एक अग बन जाओ।

आशा है, इन्दू अच्छी तरह होगी और उसे अपना नया जीवन पसन्द होगा। कृष्णा का क्या हाल है ?

सस्नेह,

बापू

१०५ महात्मा गान्धी की ओर से

वर्धा

२२ नवम्बर १९३४

प्रिय जवाहरलाल,

कुछ दिन हुए मैंने तुम्हे पत्र भेजा था, जिसमे केवल तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार पूछे थे। माताजी कल यहा आई थी। कहती थी कि तुम्हे कमला के लिफाफे मे भेजे हुए पत्रो के सिवा और पत्र नही मिलते। मै जानना चाहता हू कि तुम्हारे पत्र-व्यवहार के लिए क्या नियम है ? लिखो, तुम्हारे क्या हाल-चाल है और तुम अपना समय किस तरह विता रहे हो।

सस्नेह,

बापू

१०६. रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

[मेरी पत्नी का स्वास्थ्य तेजी से बिगड़ने के कारण उन्हे इलाज के लिए यूरोप भेजने का निश्चय किया गया। मैं उस समय अल्मोड़ा जेल में था और वहीं रहा, यद्यपि उनको विदाई देने के लिए एक दिन को भुवाली सैनेटोरियम जाने की अनुमति मुझे मिल गई थी। मेरी बेटी इदिरा, जो उन दिनो शाति-निकेतन में थी, अपनी मां के साथ यूरोप गई थी।]

'उत्तरायण'
शांतिनिकेतन, बगाल
२० अप्रैल १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

हमने भरे हुए हृदय से इदिरा को विदा किया। इस स्थान के लिए कितनी उपयोगिता थी उसकी! मैंने बडे ही ध्यान से उसे देखा है और तुमने जिस ढग से उसका लालन-पालन किया है, उसकी मैं सराहना करता हू। उसके समस्त शिक्षक एक स्वर में उसकी प्रशसा करते हैं और मैं जानता हूं कि छात्रो में वह बहुत ही लोकप्रिय है। मुझे आशा है, परिस्थिति सुधरेगी और वह शीघ्र ही यहा लौटकर अपनी पढा-लिखाई मे लग सकेगी।

तुम्हारी पत्नी की बीमारी की कल्पना करके मुझे कितनी वेदना होती है, मैं तुम्हे बता नही सकता। लेकिन मुझे विश्वास है कि समुद्र का प्रवास और यूरोप की चिकित्सा से उन्हे बहुत लाभ पहुचेगा और वह शीघ्र अपने पूर्व स्वास्थ्य को प्राप्त कर लेगी।

शुभाशीर्वाद सहित,

तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१०७ महात्मा गान्धी की ओर से

[यह पत्र और बाद के कुछ पत्र मेरे पास जर्मनी में भेजे गए थे। मेरी पत्नी का स्वास्थ्य बिगड जाने के कारण मुझे अल्मोडा जिला जेल से अचानक रिहा कर दिया गया था। वह उस समय जर्मनी में ब्लैक फोरेस्ट के सैनेटोरियम में थीं। रिहाई के तुरन्त बाद मैं उनके पास चला गया था।]

वर्धा
३ अक्तूबर १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे पत्र घडी की-सी नियमितता से आते है और एक देन जैसे लगते है। मै देखता हू कि कमला बडी बहादुरी से प्रयत्न कर रही है। इसका फल मिलेगा। प्राकृतिक चिकित्सा के लिए मेरा पक्षपात तुम्हे मालूम है। स्वय जर्मनी मे अनेक प्राकृतिक चिकित्सालय है। सम्भव है, कमला का मामला उस मजिल से गुजर गया हो। परन्तु कौन जाने कब क्या होता है। मुझे ऐसे मामले मालूम है जो चीर-फाड के काबिल बताये जाते थे, लेकिन प्राकृतिक चिकित्सा से अच्छे होगये। जैसा भी है, मै अपना अनुभव तुम्हे लिख रहा हू। अगले वर्ष के लिए ताज पहनने के बारे मे तुम्हारा पत्र हर्षदायक था। तुम्हारी स्वीकृति पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे विश्वास है कि इससे बहुत-सी कठिनाईया हल हो जायगी और देश के लिए यही सबसे ज्यादा सही चीज हो सकती थी।

लाहौर में तुम्हारी अध्यक्षता लखनऊ की अध्यक्षता से बिल्कुल भिन्न वस्तु थी। मेरी राय में लाहौर में हर बात मे रास्ता साफ था। लखनऊ में किसी भी बात में ऐसा नही होगा। परन्तु मेरे खयाल से उस परिस्थिति का सामना जितनी अच्छी तरह तुम कर सकोगे और कोई नही कर सकेगा। भगवान तुम्हे यह भार उठाने की पूरी शक्ति दे।

मै तुम्हारे अध्यायो को अधिक-से-अधिक तेजी के साथ पढ रहा हू। वे मेरे लिए बडे दिलचस्प है। इससे अधिक अभी नही कहूगा।

इस पत्र के साथ तुम सबके लिए हम सबका प्रेम।

बापू

१०८ सुभापचद्र बोस की ओर से

रेस्ट लागेरंड, हफ्गास्टाइन्
४ अक्तूबर १९३५

प्रिय जवाहर,

तुम्हारे २ और ३ तारीख के पत्र मिले।

फ्रीबर्ग सर्जन की रिपोर्ट पढकर मुझे बडी खुशी हुई। मै यही आशा करता

हू कि उनका चिकित्सा-विज्ञान रोगी की इतनी मदद कर सकेगा कि
अपनी फेफडो की शिकायत पर काबू प्राप्त कर सके। मै नही जानता कि तु
श्रीमती नेहरू को किसी दूसरी जगह हटाने की सभावना के बारे मे उन
राय पूछी है अथवा नही। अगर मै तुम्हारी परेशानी मे कुछ भी काम
सकू तो मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे बुला भेजने में सकोच न करोगे।

तुमने मेरी पुस्तक मे जो गलती बताई है, उसके लिए मै आभार प्रक
करता हू। जैसाकि तुम कहते हो, उसमे तथ्य की और भी गलतिया हो सकत
है, किन्तु मेरी उम्मीद यही है कि ये गलतिया ज्यादा गभीर नही है। बद
किस्मती से मुझे ज्यादातर अपनी याददाश्त से काम चलाना पडा और खासकर
तारीखो के बारे मे मुझे ज्यादा दिक्कत रही। उस समय का न तो कोई
साहित्य मुझे मिल पाया और न कोई ऐसा व्यक्ति मेरी पहुच के भीतर था
जिसकी मदद मै ले सकता। पडित मोतीलालजी की मृत्यु की ठीक तारीख
याद करने के लिए मैने अपने दिमाग पर काफी समय तक जोर डाला, किन्तु
मै नाकामयाब ही रहा। पुस्तक मे तुम छापे की अशुद्धिया (मुद्रक के भूतकी)
देखोगे जो कि प्रूफ ठीक तरह से न देखे जाने के कारण हुई है। सिर्फ एक ही
बार मै प्रूफ पढ पाया और वह भी वडी जल्दी मे, कारण मुझे जल्दी ही भारत
के लिए रवाना होना था। इसके अलावा, पुस्तक काम के भारी दवाव के
बीच लिखी गई और उस समय मेरी तवीयत भी कुछ ज्यादा अच्छी न थी।
तुम्हारे द्वारा बताई हुई गलतियो को मै सावधानी के साथ नोट कर लूगा,
ताकि अगले सस्करण मे उनको दुरुस्त किया जा सके।

मै इसके साथ उस पत्र की नकल भेज रहा हू जो मैने 'मैचेस्टर गार्जियन'
को भेजा था। यह पहली अक्तूवर को प्रकाशित हुआ है।

तुम्हे अवतक यह खवर मिल चुकी होगी कि अवीसीनिया मे लडाई
शुरू हो गई है। सवाल सिर्फ यही है कि क्या यह लड़ाई इटली और इग्लैण्ड
की लडाई का रूप ले लेगी ?

तुम्हारा,
सुभाष

आपसे इसके लिए खास तौर से लिखकर प्रार्थना न करें, वरना इससे बड़ी आसानी से जबर्दस्त गलतफहमी फैल सकती है, जो कि अत्यन्त हानिकारक होगी।

हार्दिक भावनाओ सहित,

आपका,
हेरल्ड जे. लास्की

११२. सी. एफ एन्ड्रूज की ओर से

पेमब्रोक कॉलेज,
केम्ब्रिज
६ नवबर १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

मैंने आपकी दोनो किताबो के कुछ शीर्षक चुनकर यहा-वहा से पढना आरम्भ किया, लेकिन अब ऐसा लगता है कि आपने जो कुछ भी लिखा है उसके प्रति न्याय करने के लिए मुझे आपकी पुस्तकें ठीक तरह से पूरी-पूरी पढ लेनी चाहिए और उसके बाद कुछ अच्छे अश चुनकर 'ऐलेन एण्ड अनविन' के सामने सुझाव की तरह रखने चाहिए। मैं सचमुच समझता हू कि ऐसा ही होना चाहिए। एडिनबरा जाते और आते समय मुझे इसके लिए आसानी से समय मिल जायगा। कहने का मतलब यह कि मुझे रेल में कुल मिलाकर करीब-करीब दो पूरे दिन मिल जायगे।

दोपहर बाद से ही मैं इन दो जिल्दो को देख रहा हू और समझता हू कि इनमें से कुछ खास हिस्सो को पसन्द करके चुन लेना बहुत ही मुश्किल काम होगा और इनके लिए कोई उपयुक्त नाम ढूढना तो और भी अधिक कठिन होगा। 'ऐलेन एण्ड अनविन' को आपने आत्मकथा की जो सामग्री दी है उसमें पता नही आजकल के भारतीय इतिहास के बारे में आपके विचार कहातक आ पाये हैं। देर-सवेर 'ऐलेन एण्ड अनविन' वाले जरूर मुझसे सलाह लेंगे और तब मुझे आपकी उस पाडुलिपि को पढने का अवसर मिलेगा। मैं जानता हू कि आप भी यही चाहेंगे कि मैं उसे पढू। चुनने का यह काम अन्त में आपको ही दिया जायगा और यह सबसे ज्यादा जरूरी है कि आप स्वय अनुभव करें कि जो कुछ भी अतिम रूप से चुना जाय उसमें आप

अपनेको ठीक-ठीक अभिव्यक्त कर पाये हो। वह आपका अपना चुनाव होगा, मै तो सिर्फ सुझाव दे सकता हू।

भारतवर्ष के लिए यह पुस्तक बहुत ही मूल्यवान होगी। जैसाकि मुझे खयाल है, मैंने आपसे पूना मे मिलने पर कहा था कि प्रमुख व्यक्तियो मे से अकेले आप ही इस बात को सहज भाव से जानते दिखाई देते है कि पश्चिम-वाले किस बात को समझ सकते है और किस बात का वे आसानी से अनुसरण कर सकते है। बापू के लेखो को बार-बार सक्षिप्त करने और समझाने की जरूरत पडी और शुरू-शुरू में रोम्या रोला जैसा प्रथम कोटि का प्रतिभाशाली व्यक्ति ही उनके विचारो को ठीक तरह से स्पष्ट कर सका। इसके बाद मेरे लिए आगे बढना आसान था। लेकिन बापू को समझना हमेशा मुश्किल है। गुरुदेव भी जब पद्य से हटकर गद्य लिखने लगते है तब उन्हें समझना कठिन हो जाता है। इस समय डा सीतारामैया काग्रेस की रजत-जयन्ती के लिए 'काग्रेस का इतिहास'[1] लिख रहे है, लेकिन अग्रेजी पाठको के लिए उसे समझना बिल्कुल असम्भव है। डा. सीतारामैया यह मानकर चले है कि पढनेवालो को भारतीय शब्दो के मूल अर्थ का पूरा-पूरा ज्ञान है और उन्होंने बहुत ही विस्तार के साथ लिखा है। इसके विपरीत जैसे ही मैंने 'जेल की खिडकी से' पढा, मुझे यह स्पष्ट होगया कि इसे यूरोप में लोग बहुत आसानी से समझ जायगे। मैंने एक नजर में ही देख लिया है कि इन दो पुस्तको में बहुत काफी सामग्री है, बशर्ते कि उसे सिलसिलेवार ढग से चुनकर रखा जाय।

मुझे भय है कि बेडनवाइलर लौटने पर आपको कडी मेहनत करनी पडेगी। लेकिन ऐसा फौरन ही न कीजियेगा, क्योंकि इन दिनो इग्लैंड में आपकी काफी शक्ति लग चुकी होगी और इस तरह के चयन-कार्य के लिए यह जरूरी है कि आप अच्छी-से-अच्छी मानसिक स्थिति मे हो।

मैं लिखता ही चला गया हू, लेकिन इससे आपको यह मालूम हो जायगा कि इस मामले मे मुझे कितनी गहरी दिलचस्पी है और मैं इसे कितना जरूरी समझता हू। एडिनबरा लौटते ही मै आपको बेडनवाइलर के पते पर

---

[1] यह पुस्तक हिन्दी में 'सस्ता साहित्य मंडल' द्वारा प्रकाशित हुई है।

इंग्लैंड के इस अति सुन्दर ऐलिज़बेथन भवन, ब्लिक्लिंग हॉल, नारफ़ॉक आना पसन्द करेंगे ? वहांपर मैं खाली रहूंगा सिर्फ़ देहाती जिलों में हर शाम एक चुनाव-सभा के लिए ही जाऊंगा। इस सुन्दर वातावरण में आप शांति से आराम कर सकेंगे। तेजबहादुर सप्रू यहांपर हमेशा मेरे पास आकर ठहरते हैं। नारविच से यह जगह पन्द्रह मील दूर है। मैं आपको लेने के लिए एक कार नारविच भेज दूंगा। दुर्भाग्य से कल मेरा दफ्तर बन्द रहेगा, लेकिन व्हाइट हॉल २२५५१ पर भेजा सन्देश रविवार को सुबह मुझे मिल जायगा या आपको मेरा सेक्रेटरी १७ वाटरलू प्लेस पर सोमवार को सुबह दस बजे के बाद बराबर मिलेगा।

आपका,
लोथियन

पण्डित जवाहरलाल नेहरू
माउंट रायल
मार्बल आर्च, डब्ल्यू-२

१६५. एफ़. लेस्नी की ओर से

[प्रोफेसर लेस्नी चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग् में पौर्वात्य संस्था के अध्यक्ष थे। वह एक बहुत बड़े भाषा-पंडित और भारतीय विद्याओं के ज्ञाता थे।]

इन्डो-चेकोस्लोवाक सोसाइटी ऑव
दी ओरियन्टल इंस्टीट्यूट,
प्राग् ३, व्लास्का १६,
चेकोस्लोवाकिया, प्राग्
१९ नवम्बर १९३५

प्रिय महोदय,

आपने अपनी पुस्तक 'विश्व-इतिहास की झलक' की जो प्रति मेरे पास कृपापूर्वक भेजी है, उसके लिए मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। इससे पहले ही मुझे श्री नाम्बियार की प्रति को पढ़ने का अवसर मिला था, जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूं। इस प्रकार अब इस पुस्तक का अध्ययन मैंने पूरा कर लिया है। विश्व-इतिहास की मुख्य धाराओं की

आपकी व्यापक ग्रहणशीलता और उनके प्रति आपके स्वय के दृष्टिकोण से मै विशेष रूप से प्रभावित हुआ हू । इसके अतिरिक्त आपके पत्रो मे एक बहुत ही गहरा व्यक्तिगत पुट है । मुझे आपको दो और पुस्तको के लिए भी धन्यवाद देना है, विशेष रूप से 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' के लिए । यह पुस्तक सचमुच ही निराली है ।

आपने इडियन नेशनल काग्रेस के सेक्रेटरी श्री कृपालानी से मेरे पास कुछ और भी पुस्तकें भेजने का अनुरोध किया है और इस बारे मे मुझे उन महानुभाव से एक बड़ा ही सौजन्यभरा पत्र मिला है ।

मुझे पक्का विश्वास है कि आपकी बहुमूल्य सहायता से हमारी सोसाइटी अपना उद्देश्य प्राप्त करने मे—अर्थात् आपके महान देश के साथ सबध बनाने में—सफल होगी ।

वास्तव में मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई है कि श्रीमती नेहरू का स्वास्थ्य अब काफी सुधर गया है और वह अब हर तरह के खतरे से बाहर है । कृपया उन्हें मेरा हार्दिक अभिवादन दीजिये ।

आपकी लडकी इन्दिरा को मै अलग डाक से अपने प्राग् के सबध मे एक पुस्तक भेज रहा हू । शायद ये चित्र आपको निकट भविष्य में यहा पधारने की प्रेरणा दे सकें । हम आपको और आपके परिवार को अपने सुन्दर देश मे देखकर बहुत ही प्रसन्न होगे ।

पुन धन्यवाद और सादर अभिवादन । सदव आपका सप्रेम,

श्री जवाहरलाल नेहरू एफ. लेस्नी

११६. एडवर्ड टामसन की ओर से

[एडवर्ड टामसन ने एक प्रोफेसर की हैसियत से भारत में, मुख्यतः बंगाल में, लम्बे समय तक काम किया था। उन्होंने प्रथम महायुद्ध में सेवा की । उन्होने भारतीय इतिहास पर अनेक पुस्तकें लिखी है और कुछ कविताए और उपन्यास भी लिखे है । वह बगला के अच्छे विद्वान थे । वह ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में प्राध्यापक बन गये थे ।]

लन्दन
२६ नवम्बर १९३५

प्रिय नेहरू (हमें शिष्टाचार की जरूरत नही),

एक महीने में मैं हिंदुस्तान जा रहा हू, पर अप्रैल के आखिर तक लौट आऊगा ।

आपकी पत्नी बीमार है और आप अपनी किताब के लिए इधर-उधर घूम-फिर नही सकते । इसलिए आप समझें कि मै किसी प्रकाशक की मदद करू तो खुशी से अपनी पाडुलिपि आगामी अप्रैल में मुझे भेज दीजिये । मै मदद कर सकता हू और करूगा । यह अलग बात है कि हममें मतैक्य नही है, पर आपने यह अधिकार पा लिया है कि आपकी बात पूरी-पूरी और सच्चाई के साथ सुनी जाय । जब समालोचना का समय आयेगा मै तब भी सहायक हो सकूगा ।

मुझे आप थके हुए लगे । मै खुद भी थका हुआ हू, फिर मेरा स्वास्थ्य भी गिरा हुआ है, इसलिए मै आपसे सहानुभूति रख सकता हू । मै ब्रिटेन और हिंदुस्तान के बीच दोस्ती चाहता हू । इससे भी ज्यादा मै यहा और हिंदुस्तान मे एक उचित सामाजिक व्यवस्था का हामी हू । मैं आशा करता हू कि आप अपनी आत्मकथा और दूसरी पुस्तक में सामाजिक और आर्थिक प्रश्नो पर जरूर लिखेंगे । आप चाहे तो मेरा उपयोग भी कर सकते है । जो कुछ भी मै कर सकता हू, आपके लिए तैयार हू । आशा है कि श्रीमती नेहरू जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ करेंगी ।

मै एस सी बी के लिए जो कुछ कर सकता था, बार-बार करता रहा हू, लेकिन उच्च क्षेत्रो में लोग मुझे अधिक नही जानते ।

आपका,
एडवर्ड टामसन

[एस सी. बी. से मतलब सुभाषचन्द्र बोस से है। जिस पाण्डुलिपि का जिक्र है, वह शायद मेरी आत्मकथा की पाण्डुलिपि थी ।]

११७ रिचर्ड बी ग्रेग की ओर से

[रिचर्ड बी. ग्रेग एक अमरीकी हैं । उन्होने अमरीका में औद्योगिक

व्यवसायों में भाग लिया था और बाद में वह गांधीजी की ओर बहुत अधिक आकर्षित हुए। वह भारत आये और कुछ समय गांधीजी के साथ रहे। उन्होंने खादी का अर्थशास्त्र आदि विषयों पर पुस्तकें लिखी हैं।]

ईलियट स्ट्रीट, साउथ नैटिक,
मसाचुसेट्स, यू. एस. ए.
३ दिसम्बर १९३५

प्रिय नेहरू,

१४ नवम्बर के पत्र और २० नवम्बर के पोस्टकार्ड के लिए धन्यवाद। मुझे खुशी है कि दोनो पुस्तकें आपको ठीक से मिल गईं।

मै आपकी इस बात से सहमत हू कि अगर अहिंसात्मक प्रतिरोध के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति या सुधार का कोई कार्यक्रम न होगा तो अकेला अहिंसात्मक प्रतिरोध उन परिवर्तनो को ला सकने के लिए काफी नही होगा, जिनकी एक स्वस्थ समाज की रचना के लिए आवश्यकता होती है। गाधीजी के कार्यक्रम में जो एक बात मुझे पसन्द है वह यह है कि उसके साथ-साथ उसका आर्थिक अग भी है, जिसकी सहायता से हर आदमी प्रति-दिन थोडा-थोडा काम कर सकता है। माना कि खद्दर और ग्राम-उद्योगो के कार्यक्रम अधूरे है, किन्तु उनमें अच्छी बात यह है कि वे अहिंसा के सिद्धान्त से मेल खाते हैं और उनसे किसानो की आर्थिक स्थिति पर निश्चित रूप से प्रभाव पडता है। अहिसक प्रतिरोध के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनो के इस मसले पर मैं काफी सोच-विचार करता रहा हू और मेरा यह विश्वास है कि कार्यक्रम के इस दूसरे रचनात्मक आर्थिक अग को और भी पूरी तरह से विकसित करना चाहिए।

अपने सामने एक स्पष्टत सामाजिक लक्ष्य रखने के बारे में और उस लक्ष्य की प्राप्ति के साधनो के सम्बन्ध में आपके और गाधीजी के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है उसे मैंने बडी दिलचस्पी से पढा है। एक प्रतीक के रूप मे और लोगो की शक्तियो को केन्द्रित करने तथा उन्हे प्रेरणा देने के साधन के रूप में भावी समाज की कोई रूपरेखा बना लेना मै उपयोगी समझता हू। लेकिन दो बातो की मुझे चिन्ता है। एक तो यह कि मानवीय मामले इतने जटिल होते हैं कि आगे के लिए ठीक-ठीक भविष्यवाणी कर सकना असम्भव

हो जाता है। यह निश्चित है कि भावी समाज के लिए हम चाहे कितनी भी पूर्ण योजना क्यो न बनावें वह कभी उस रूप में पूरी नही हो सकती, जिस रूप में हम उसे बनाते है। यह बात आज के सभी देशो के लिए सही है और उनमें रूस भी शामिल है। मै समझता हू कि यही बात हमेशा सही रहेगी। अगर हम मूल रूपरेखा पर बहुत कडाई के साथ चिपके रहने की कोशिश करेंगे तो हम प्रभावहीन बन जायगे। हमें लचीला होना चाहिए और परिस्थितिया जैसे-जैसे बढती और बदलती जाय उसीके अनुसार हमें उनका सामना करना चाहिए।

मेरी दूसरी शका यह है कि यदि हमने भावी आदर्श राज्य के ब्योरो को निश्चित करने में बहुत अधिक समय और मेहनत लगाई तो उसका हम पर वही प्रभाव पडेगा, जो ईसाइयो पर प्रभु के साम्राज्य की स्थापना के सिद्धान्त का पडा है। आज की वास्तविकता और आदर्श में जो अन्तर है वह आदर्श की प्राप्ति को इतने दूर भविष्य तक के लिए टाल देता है कि लोग उसे एक कोरे आदर्श के रूप में देखने लगते है और कोई ऐसी वस्तु नही मानते जिसे प्राप्त करने के लिए उन्हे बहुत बडे त्याग करने की आवश्यकता है। निष्क्रियता और ढोग के लिए यह एक बहाना बन जाता है। इसीलिए गाधी का साधन पर जोर देना मुझे बुद्धिमत्तापूर्ण लगता है। यदि साधन को इतना विकसित किया जाय कि उसमें अहिंसक प्रतिरोध के पूरक के रूप में प्रतिदिन की आर्थिक और सामाजिक चेष्टाए भी शामिल हो जाय और यदि कार्यक्रम का प्रत्येक अग दूसरे अगो को क्रियान्वित करने की तैयारी तथा अनुशासन का काम दे तो क्या यह सम्भव नही कि हम ऐसे प्रतीक बना लें जो मानव की शक्ति को जागृत करने, केन्द्रित करने, कायम रखने और एक-दूसरे तक पहुचाने में सफल हो सकें और जो भावी आदर्श समाजवादी राष्ट्र की रूपरेखा की ही भाति प्रभावशील होते हुए भी उसके उन दो खतरो से खाली हो, जिनकी मैंने ऊपर चर्चा की है ?

आपके पत्र से मै यह समझा कि जनसमुदाय के बारे में नेबूर का जो निराशावादी दृष्टिकोण है उससे आप सहमत है। अगर बात ऐसी है तो मै ठीक-ठीक समझ नही पा रहा हू कि आप और वह समाजवादी कैसे हो सकते है। समाजवाद में जनसाधारण से निश्चय ही एक ऊचे और दृढ नैतिक व्यवहार

की अपेक्षा रखी जाती है। यह बात और है कि आप उसे अल्पसख्यको के हिंसात्मक कार्यों से स्थापित करना और कायम रखना चाहे। अगर समाजवाद इस तरह स्थापित किया और कायम रखा जाय तो उन अल्पसख्यको को आर्थिक उत्पादन के साधनो पर नियत्रण रखना होगा। उस दशा में मै उन्हे शासकवर्ग मानूगा। उनके हिंसात्मक कार्यों से विरोध भडकेगा और उस हालत में फिर वही स्थिति आ जायगी जो सामान्यत शासकवर्ग की हुआ करती है। इस स्थिति को हटाने के लिए (कम-से-कम कम्यूनिस्ट सिद्धान्त के अनुसार) और फिर से स्वतत्रता प्राप्त करने के लिए जनता को हिंसात्मक विप्लव करना होगा।

मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई है कि आपकी पत्नी की हालत सुधर रही है। आशा है, यह सुधार लगातार चलता रहेगा। अलग डाक से मै आपके पास अपने एक पैमफ्लेट की प्रति भेज रहा हू, जिसे पता नही आपने देखा है या नही। इसका शीर्षक प्रकाशक ने लगाया था। मुझे दु ख है कि उस शीर्षक से गाधीजी के कार्यक्रम और समाजवाद में पारस्परिक विरोध का भान होता है। मैने दोनो की आलोचना नही, तुलना करनी चाही है।

शुभ कामनाओ सहित,

आपका,
रिचर्ड बी ग्रेग

फिर से—

मेरे मन में एक और शका है। वह यह कि जनता को भावी समाज की विस्तृत रूपरेखा का ज्ञान कराने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना या जोर देना उचित है या नही—वह रूपरेखा चाहे समाजवादी हो या किसी और ढग की। किसी विशेष प्रकार का राजनैतिक या आर्थिक सगठन स्वय में साध्य नही होता, बल्कि साध्य का एक साधन-मात्र होता है। यह साध्य होता है जनता के लिए एक सम्पूर्ण और सतोषजनक जीवन की व्यवस्था। अगर किसी विशेष ढग के राजनैतिक और आर्थिक सगठन पर अधिक बल दिया जाता रहे और उस ढग के विस्तार के बारे में वर्षों तक प्रचार और शिक्षा देने का काम चलता रहे तो क्या वह स्वय में साध्य नही मान लिया जायगा? वह एक ऐसा सिद्धान्त होगा जो अपने में इतनी शक्ति और इतने अधिकार

समेट लेगा और जो लोगो की दृष्टि में इतना महत्व प्राप्त कर लेगा कि लोग मानव-जीवन को अधिक समृद्धिशाली जीवन का साधन न मानकर उस साध्य का साधन मानने को तैयार हो जायगे । उस भावी समाज की रूपरेखा भी अमरीका के सविधान की तरह लिखित रूप ग्रहण कर लेगी और कठोर बन जायगी, जिसमे भावी परिस्थितियो के अनुसार परिवर्तन करने की क्षमता नही होगी । मै समझता हू कि इस दृष्टि से ब्रिटेन का अनलिखा सविधान अमरीका के लिखित सविधान से अधिक उपयोगी है । एक विशेष लिखित रूप ग्रहण करके पत्थर की तरह अपरिवर्तनीय बनने की बजाय वह लचीला और परिवर्तनशील है । यह तो सच है कि परिवर्तन अक्सर किसी-न-किसी बहाने से किया जाता है, फिर भी परिवर्तन किया जरूर जाता है। मै समझता हू कि समाजवादी आदर्श के सम्बन्ध में यदि लोग एक बार सामान्य रूप से एकमत हो जाय तो अधिक बुद्धिमानी इस बात में होगी कि जनता को मुख्य रूप से उन तरीको को समझाने की चेष्टा की जाय, जिनसे वे शक्ति प्राप्त कर सके । जब वे एक बार शक्ति प्राप्त कर लेंगे तब जो भी राजनैतिक या आर्थिक सविधान सबसे अधिक वाछनीय प्रतीत होगे उन्हे ही वे ग्रहण कर लेंगे । यह सब मेरे मस्तिष्क में अभी प्रस्ताव रूप में ही है । यदि आपके पास समय हो और आप इनपर टीका करना पसन्द करें तो मै आपकी इस सहायता के लिए कृतज्ञ रहूगा ।

आर. बी. ग्रेग

११८ लार्ड लोथियन की ओर से

ब्लिकलिंग हॉल,
ए्ल्स्हम, नारफॉक
६ दिसबर १९३५

प्रिय श्री जवाहरलाल नेहरू,

मुझे पूर्ण आशा है कि आपके भारत लौटने से पहले हम लोगो के लिए बातचीत करना सभव होगा । दुर्भाग्य से मुझे जल्दी-से-जल्दी जनवरी मे अमरीका जाना है । इसलिए मै सोचता हू कि क्या साल के शुरू मे आपके इग्लैंड में रहने का कोई अवसर हो सकता है ? अगर ऐसा हो तो मै सुझाव

दूगा कि आप कुमारी अगाथा हैरीसन के साथ कुछ समय के लिए यहा आइयें। इग्लैड भर मे इस जगह पर बहुत सुन्दर मकान और बाग है और हम लन्दन के व्यस्त जीवन से दूर भी रहेंगे। कल मै लॉर्ड हैलीफैक्स से मिला था। उन्होने मुझसे कहा था कि अगर आप आ रहे हो तो उन्हे भी यार्कशायर से व्लिकलिंग आकर रात बिताने में प्रसन्नता होगी।

मुझे पूर्ण आशा है कि हम लोग मिल सकेगे। मुझे इसमे कोई शक नही कि भारत में घटी हाल की घटनाओ और आम राजनैतिक सवालो पर हमारे विचारो मे बहुत-कुछ मतभेद होगा, लेकिन अच्छा या बुरा, भारत और इग्लैड के भाग्य अब भी काफी जुडे हुए है और मेरा खयाल है कि इग्लैड के हम कुछ लोगो के लिए, जो भारत के मामलो में दिलचस्पी रखते है, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि भारत के कुछ युवक नेताओ से, जो उस देश के भावी मानस और नीति का निर्धारण करें, हम व्यक्तिगत रूप से परिचित हो और मै समझता हू कि आपके लिए भी हम कुछ लोगो को जानना कम महत्वपूर्ण नही होगा। मुझे इसमे कोई शक नही कि आज मानव-मानव के बीच एक बडी महत्वपूर्ण दैवी शक्ति कार्य कर रही है। पुरानी अन्तर्राष्ट्रीय परम्परा और पुरानी आर्थिक प्रणाली टूटती जा रही है। जैसाकि हमेशा होता आया है, क्रान्तिकारी युगो में बहुत कम लोग नई विश्व-व्यवस्था को एक अश से अधिक देख पाते है अथवा वहातक पहुचने का ठीक मार्ग ही जानते है। इससे समझौते पर पहुचना बडा मुश्किल हो जाता है, प्रगति बडी मद पड जाती है और दुखदायी सघर्ष बने रहते है। मैत्रीपूर्ण और व्यक्तिगत सम्पर्कों से भले ही तात्कालिक समझौता न हो सके, किन्तु इनसे आगे चलकर मतैक्य हो जाने की सम्भावना पैदा हो जाती है।

इसलिए मै बहुत आशा करता हू कि उस समय आपका इग्लैड आना सम्भव हो सकेगा। मेरी इच्छा है कि जहातक सभव हो मैं अपने प्रस्थान को ४ जनवरी से आगे न टालू, क्योकि फिर १० दिन तक कोई अच्छा जहाज नही है। मै तो यह चाहता हू कि आप पहली जनवरी को यहा पहुच जाय और लार्ड हैलीफैक्स को गुरवार दूसरी तारीख की रात्रि को ठहरने के लिए बुला लिया जाय। तभी हम लोग शुक्रवार के तीसरे पहर लन्दन लौट सकेंगे और मै अगले दिन अपना जहाज पकड़ सकूगा। मुझे इसमें और भी गुशी

होगी, यदि आप और कुमारी हैरीसन तथा अन्य लोग सप्ताह के अन्त तक ठहर सकें। मुझे उम्मीद है कि आप अपनी पुत्री को भी साथ ला सकेंगे। लेकिन मैं सोचता हू कि वह बाहर होगी। कृपया अपने निर्णयो से मुझे जल्दी-से-जल्दी सूचित कीजिये, ताकि मैं अपनी योजना बना सकू।

आपका,
लोथियन

श्री जवाहरलाल नेहरू,
पाशियो एहरहार्ड
बेडनवाइलर, जर्मनी

फिर से—

कृपया उत्तर १७ वाटरलू प्लेस, लन्दन, एस. डब्ल्यू १ पर दीजिये।

११९. लार्ड लोथियन के नाम

पाशियो ऐहरहार्ड,
बेडनवाइलर
९ दिसबर १९३५

प्रिय लार्ड लोथियन,

आपका ६ तारीख का खत मुझे आज ही मिला है। समझ में नही आता कि हवाई-डाक के खत भी क्यो इतनी देर में पहुचते हैं। जो हो, मैं जवाब भेज रहा हू।

आपसे मिलने की मुझे बहुत उत्सुकता है, और आपके जो कई लेख मुझे देखने को मिले हैं, उनमें मेरी बड़ी दिलचस्पी रही है। अक्सर किसी सवाल पर आपके नज़रिये या जिस नतीजे पर आप पहुचे हैं, उससे मैं एक-राय नही हो सका हू, लेकिन उन्होने मुझे हमेशा विचार करने के लिए उकसाया है और कभी-कभी मैं कुछ अशो में सहमत भी रहा हू। ऐसे लोगो से, जो विचार के नये रास्ते खोलते हैं और आदमी को दुनिया के छोटे-से कोने से, जिसमें औसत आदमी का दिमाग बधा रहता है, कुछ ज्यादा देखने में मदद करते हैं, मिलकर हमेशा खुशी होती है। जैसाकि आप कहते हैं, थोडे ही लोग इस छोटे-से कोने से बाहर देख पाते हैं, और आज की तकलीफ देनेवाली कशमकश ने तो इस तग नजरिये को और भी बुरा बना दिया है। यह कभी भी बदकिस्मती की बात होती, लेकिन क्राति के इस ज़माने में तो

यह और भी बदकिस्मती की बात बन गई है। मेरी समझ में भले इरादे के लोगो के आपसी और दोस्ती के ताल्लुको से ही ये कशमकश दूर नही हो सकती। ज़ाहिर है, ये कशमकश गहरी है और मुझे लगता है, अच्छे-से-अच्छे लोग भी, जबकि प्राकृतिक शक्तिया एक-दूसरे के खिलाफ काम कर रही हो, बडा ही महत्वहीन पार्ट अदा कर बैठते है। जहातक बन पडे, हम इन सघर्षों की बुनियादी वजहो को समझने की कोशिश कर सकते है, और फिर उनको दूर करने की। लेकिन उन्हे अपने पूर्वाग्रहो और दलीय हितो से अलग हटकर देखना बहुत कठिन है। हम चाहे जितनी मीठी मुसकानें भरें, वे भीतर पैठे हुए पूर्वाग्रहो और उनसे पैदा हुए दुनिया के जुदे-जुदे नज़रियो को मिटा नही सकते। फिर भी दोस्ती के सपर्क बढाने की कोशिश होनी चाहिए, क्योकि इनके बिना, ससार जितना नीरस है, उससे भी ज़्यादा नीरस हो जायगा। निश्चय ही उनसे कुछ हद तक एक ऐसे वातावरण को बनाने में मदद मिलती है, जिससे आगे समझौता मुमकिन हो। ये सम्पर्क लोगो और दलो के बीच की कडवाहट कम करते है। ये आदमी के क्षितिज को बडा बनाते है, और मिलने लायक आदमियो से मुलाकात करना ज़िदगी की खास खुशियो में से एक है।

वास्तव में इस सबकी कीमत है और इसलिए मै ऐसे ताल्लुकात बढाने के हक में हू। निजी तौर से, जहातक मेरा ताल्लुक है, मेरे विश्वास मजबूत होते हुए भी मै एक विद्यार्थी की नज़र से ज़िदगी और उसके मसलो को देखने से महरूम नही हू। दकियानूसी उसूलो से मुझे झुझलाहट होती है, भले ही ये धार्मिक हो, या राजनैतिक या आर्थिक, और मेरा मन हमेशा ऐसे रास्तो की खोज करता रहता है, जिनपर मै चल सकू। मै उन रास्तो को बद करने की कोशिश नही करता। इससे मैं निजी ताल्लुकात का और भी स्वागत करता हू। किताबो से मदद मिलती है, और बहुत सालो से मुझे उनसे बराबर ढाढस मिला, लेकिन पुस्तको, विचारो और कामो के पीछे जो लोग है, उनसे निजी सबध आना बडी अहमियत रखता है। किताबो में वह बात नही है।

मै आपसे मिलना पसन्द करता। आपके दोस्ताना और नुखद खत ने मेरी मिलने की इच्छा को और भी बढा दिया है। मै इंग्लिस्तान के सुन्दर

बुरे तजुर्बे के बाद मैंने यह फैसला कर लिया था कि मैं सूबा कांग्रेस कमेटी की एक्जीक्यूटिव से अपनेको अलहदा रखूगा, लेकिन सन १९३१ में मेरे लगातार इन्कार करने के बावजूद आपने मुझे उसमें घसीट लिया। मैंने आपको मुखालफत के मुमकिन जरियो की तरफ से आगाह कर दिया था, और जिसका मुझे डर था वही हो रहा हैं। आज मैं अपनेको बेहद हैरानी की हालत में पाता हू। अगर मैं इस्तीफा देकर अलग हटने की कोशिश करू तो मुझपर दूसरी मुसीबत पैदा करने का इलज़ाम लगाया जायगा। लेकिन अगर मैं काम करता रहता हू तो मुझे जलील करने के लिए हर मौके को इस्तेमाल किया जाता है, चाहे इससे हमारे सगठन का डिसिप्लिन ही क्यो न टूटता हो।

मैं आपको तफसीलें देकर परेशान नही करना चाहता। अगर किसी दिन आप यह सुनें कि मैंने कोई बेवकूफी का कदम उठा लिया है तो आप उसके लिए मेरी उस नाउम्मीदी की हालत को कसूरवार ठहरायेंगे, जिधर मुझे ढकेला जा रहा है।

आपका,
रफी

१२१ राजेन्द्रप्रसाद की ओर से

कैंप, वर्धा
१९ दिसम्बर १९३५

प्रिय जवाहरलालजी,

कुछ दिन पहले, जबकि मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर था, आपका पत्र मिल गया था। १३ तारीख को मैं यहा पहुचा और बापू तथा महादेव-भाई के नाम भेजे आपके कुछ पत्र पढे। आसार ऐसे नजर आ रहे है कि अगली काग्रेस के अध्यक्ष आप ही चुने जायगे। मुझे मालूम है कि आपके और वल्लभ-भाई, जमनालालजी तथा मुझ-जैसे आदमियो के दृष्टिकोण में कुछ अतर है। अन्तर बुनियादी ढग का है। मैं यह समझता हू कि यह अतर वर्षों से रहा है और फिर भी हम लोग साथ-साथ काम कर सके हैं। अब जबकि बापू एक प्रकार से अलग होगये है और पूछने पर ही अपनी सलाह देते है, यह सभव है कि ये अतर कुछ और भी उभर आवें। परन्तु मेरा विश्वास है कि जबतक

हमारे कार्यक्रम और काम के तरीको में क्रातिकारी परिवर्तन नही होता, तबतक यह सभव बना रहेगा कि हम सब मिलकर साथ-साथ काम करते रहे। निस्सदेह वर्तमान स्थिति से आप असतुष्ट है। हममें से भी तो कोई उनसे सतुष्ट नही है। परन्तु ये कठिनाइया मौजूदा परिस्थितियो से ही पैदा हुई है और हमें दिखाई देता है कि गति को बढाना अथवा आमूल परिवर्तन करना सभव नही है। सघर्षो मे हमें ऐसी परिस्थितियो का सामना करना ही पडता है और हमें चाहे कितना ही रोष और झुझलाहट हो, हमे कडवी घूट पीनी पडती है और अनुकूल समय के आने तक काम करते ही रहना पडता है। ऐसे सकटो में से एक में से हम गुजर रहे है। हतोत्साहित होने का कोई कारण मुझे दिखाई नही देता। स्वाधीनता की भावना कुचली नही है और न हारने तथा लाचारी से झुक जाने की भावना जैसी कोई चीज है। मै नही विश्वास करता कि हममे से कोई भी असहयोग से पूर्व की मनोदशा मे पहुच गया है। मै नही मानता कि हम १९२३-२८ के जमाने में पहुच गये है। हम १९२८-२९ की मन स्थिति में है और मुझे सदेह नही कि बहुत जल्दी अच्छे दिन आनेवाले हैं। अपनी शक्ति और समझ के अनुसार हम बहुत अच्छी तरह आगे बढ रहे है, और इससे अधिक और कोई कुछ कर नही सकता। जो हो, आपको अपनी इच्छानुसार काम करने की स्वतत्रता है, अपनी पसद की कार्यसमिति भी नियुक्त करने की। आप विश्वास रक्खें कि हममे से कोई भी आपके काम में अडचने नही डालेगा और यदि कही हम मदद नही कर पाये तो बाधा तो कदापि नही बनेंगे।

मेरे लिए यह सभव नही है कि मै आपको एक पत्र में वह कार्यक्रम पूरी तरह से समझाकर बता दू, जिसे कार्यान्वित करने का हम यत्न कर रहे है। वह निरुद्देश्य नही है और न वह समय काटने के लिए है, परन्तु यदि आपको वह नही जचता है और यदि कोई उससे अधिक अच्छा कार्यक्रम पेश किया जा सकता है तो कोई भी आखें मूदकर इस पुराने कार्यक्रम से चिपके रहनेवाला नही है। वस्तुस्थिति जैसी है, उससे अधिक हमने उसे जटिल नही बनाया है और आप निश्चय ही ऐसी स्लेट पर लिख सकते हैं, जिसे हमने खराब नही किया है।

कुछ लोगो ने अपना यह गलत और अनुचित खयाल बना रखा है कि

कार्यसमिति नये सविधान के अतर्गत पद-ग्रहण के अतिरिक्त और कुछ सोच ही नही रही है। सच तो यह है कि हमने इस मामले को कोई महत्व ही नही दिया है। इसके विपरीत दूसरे लोग है, जो हमारे पीछे पडकर कोई निर्णय कराने के लिए प्रयत्नशील है। पहला प्रयास गत अप्रैल में जबलपुर में किया गया था और हमें लगा कि इस प्रश्न पर कोई निर्णय करने के लिए अभी बहुत जल्दी है। हम उसी निर्णय पर दृढ रहे। मद्रास में उसीका समर्थन किया गया। लखनऊ में इस सवाल को लेना ही होगा। किसी भी तरह वह कठिनाइयो से खाली नही है।

जैसाकि मुझे लगता है, इस प्रश्न पर पद-ग्रहण करने या न करने की दृष्टि से सोचना ठीक नही है। जहातक मेरा अनुमान है, कोई भी व्यक्ति पदो के लिए पद स्वीकार करना नही चाहता। जिस तरह सरकार चाहती है उस तरह तो कोई भी सविधान पर अमल करना नही चाहता। हमारे सामने प्रश्न बिल्कुल भिन्न है। इस सविधान का हम क्या करें? क्या हम इसकी एकदम उपेक्षा करके अपनी राह पर चलते रहे? क्या ऐसा करना सभव है? क्या इस सविधान को हम अपने हाथ में ले लें और इसका अपनी इच्छानुसार उस हद तक उपभोग करें, जितना कि किया जा सकता है? क्या हमें उसमे प्रविष्ट होकर लडना चाहिए या बाहर से? और किस तरह? वास्तव में सवाल एक ऐसे निश्चयात्मक कार्यक्रम को तैयार करने का है जो कि इस सविधान को लागू करने से उत्पन्न हुई परिस्थिति का वर्तमान वातावरण के प्रकाश मे मुकाबला कर सके। सवाल परिवर्तनवादी या अपरिवर्तनवादी, सहयोगी या विरोधी के पूर्व-कल्पित विचारो के आधार पर कोई जवाब देने का नही है। कुछ कीचड भी उछाला गया है। यह तो अनिवार्य है। हमें तो देश की भलाई की दृष्टि से और हमारे निर्णय का असर हमारे महान् उद्देश्यो पर क्या होगा, इस दृष्टि से विचार करना चाहिए।

देशी राज्यो के बारे में तो हमें ऐसा लगता है कि मद्रास में जो कुछ कहा गया था उससे अधिक हम कुछ नही कर सकते। बहुत विचार करने के बाद यह निर्णय जान-बूझकर किया गया था और अगर हमारे और दूसरो के बीच खाई है तो उसे स्वीकार करना ही होगा। विदेशी प्रचार के प्रश्न पर भी बहुत-कुछ ऐसी ही स्थिति है। साधनो की कठिनाई के अतिरिक्त हम नही

जानते कि आया वहा कुछ सक्रिय रूप से किया जा सकता है। आप जैसे मित्रो द्वारा स्थापित सपर्कों के जरिये हम विदेशी मामलो की जानकारी रखें और उन मित्रो की मदद से स्थिति की प्रामाणिक जानकारी यहा लोगो को दें, जैसाकि हम कर रहे हैं। इससे अधिक कुछ करना सभव नही। यहा की परिस्थिति की वास्तविकताओ को हम भली-भाति जानते हैं और यह आशा नही कर सकते कि उनकी विदेशी राष्ट्रो पर कोई छाप पड़ेगी। यदि हम शक्तिशाली और सगठित होते तो अपनी समस्याओ से परेशान उन देशो को बाध्य कर सकते थे कि वे हमारी उपेक्षा न करें।

घरेलू ढग का एक और सवाल सविधान को दुहराने का है। उसपर आपकी लिखी टिप्पणी मैं पढ गया हू। आपके कुछ सुझाव मुझे अच्छे लगे। इन सबपर विचार करने के लिए हमने एक उपसमिति बना दी है। काग्रेस से पूर्व हम अपनी रिपोर्ट दे देंगे। यदि आप और कोई सुझाव देना चाहे तो कृपया हमें दे दें।

एक नाजुक सवाल पैदा होगया है। आप देखेंगे कि सविधान के अन्तर्गत किसी भी चुनी हुई समिति अथवा किसी पद के लिए वही व्यक्ति चुना जा सकेगा जो छ महीने तक काग्रेस का सदस्य रहा हो, आदतन् खादी पहनता हो और कुछ निर्दिष्ट शरीर-श्रम करता हो। सविधान के वर्तमान रूप में इसका कोई अपवाद नही रखा गया और उन व्यक्तियों को भी छूट नही दी गई, जो भूतकाल में उसके अध्यक्ष रह चुके है, या जेल में रहे हैं या अन्य किसी प्रकार इन शर्तों को पूरी नही कर सके हैं। सविधान की इन शर्तों के अनुसार आप और सुभाषबाबू भी प्रतिनिधि या पदाधिकारी नही चुने जा सकते। स्वय डाक्टर अन्सारी भी सदस्यता-फार्म पर भूल से निश्चित अवधि के अन्दर दस्तखत नही कर सके और यह प्रश्न निर्णय के लिए मेरे सामने आया है और मैंने अभी तक उसपर कोई निर्णय नही दिया है। इस विषय में कार्य-समिति के सदस्यो के पास उनकी मजूरी के लिए मैं एक नया नियम प्रसारित कर रहा हू। उसे इस चिट्ठी के साथ आपके पास भी भेज रहा हू।

यह बडे दु ख की बात है कि काग्रेस में इकट्ठे होने से पहले हम लोग मिल नही सकते और विचार-विनिमय नही कर सकते। यह भी दुर्भाग्य

की बात है कि मौजूदा हालात की स्वय जानकारी प्राप्त करने के लिए आपके पास इतना कम समय होगा। फरवरी के तीसरे हफ्ते से पहले आपके लौटने की कोई सभावना नही और काग्रेस मार्च में होगी। अभी मैंने उसकी तारीख तय नही की है, मार्च के पहले हफ्ते से आगे बढाने में कठिनाइया है। आशा है, यह आपको अनुकूल होगी। प्रतिनिधियो के चुनाव के लिए अतिम दिन हमने जनवरी की ७ तारीख रक्खी है और अध्यक्ष के चुनाव की तारीख २५ जनवरी है। यह सभी प्रान्तो में एक साथ होगा।

अध्यक्ष के चुनाव के परिणामो की घोषणा करने के लिए जनवरी के अन्त में कार्य-समिति की एक बैठक करनी होगी। मै तो चाहूगा कि इसमें कार्यक्रम के मसविदे पर भी विचार कर ले, जिसे कार्यकारिणी आगामी काग्रेस के लिए तैयार करेगी। लेकिन, लगता है, आपकी अनुपस्थिति में ऐसा करना सभव नही होगा। इसलिए जब आप बतावेंगे उस समय इस काम के लिए एक बैठक फिर बुला लूंगा। जितनी भी जल्दी यह हो, अच्छा है। इस बीच, यदि सभव हो तो, आप अपने सुझाव मेरे पास भेज दें, ताकि उनपर विचार करने के लिए हमे कुछ समय मिल जाय।

बापू को अभी तक हाई ब्लडप्रैशर है। तीन दिन पहले डा गिल्डर और जीवराज मेहता ने उनकी जाच की थी। उन्होने दो महीने तक पूरे आराम की सलाह दी है। मै आशा करता हू कि कमलाजी के स्वास्थ्य में धीरे-धीरे प्रगति हो रही होगी और आपकी अनुपस्थिति का उनपर बहुत अधिक श्रम नही पडेगा।

सप्रेम आपका,
राजेन्द्रप्रसाद

१२२ लॉर्ड लोथियन की ओर से

सैमूरहाऊस,
१७-वाटरलू प्लेस
लन्दन, एस. डब्ल्यू-१
३१ दिसवर १९३५

निजी

प्रिय श्री नेहरू,

आपके पत्र के लिए वहुत-वहुत धन्यवाद। मुझे दु ख है कि फिलहाल

मुलाकात सभव दिखाई नही देती। लेकिन मै आशा करता हू कि आगे चलकर अवसर आयगा। इस बीच हिंदुस्तान और ब्रिटेन के बारे मे अपने दिमाग में उठ रहे कुछ विचार लिखने का साहस कर रहा हू, बशर्ते कि आप उन्हे पढ़ना पसन्द करे।

हम इस समय मानव-इतिहास के एक महान् रचनात्मक युग मे है। एक ओर हम बराबरी के स्वशासित राज्यो में कानून के शासन की स्थापना द्वारा धीरे-धीरे उन आदर्शों के आधार पर, जिनका प्रतिनिधित्व लीग ऑव नेशन्स करती है, युद्ध का अन्त करने के लिए आगे बढ रहे है, युद्ध का ही नही बल्कि उससे भी ज्यादा बुरी चीजो—घृणा, भय, आशका, अज्ञान, गरीबी और बेरोजगारी—का भी खात्मा करने पर तुले हुए है, जो प्रभुता-सपन्न राज्यो की वर्तमान स्वेच्छाचारिता से उत्पन्न या पोषित हुई है, दूसरी तरफ उन आदर्शो की प्राप्ति की ओर बढ रहे है, जिनका प्रतिनिधित्व समाजवाद शब्द करता है—समाजवाद यानी एक ऐसी प्रणाली, जिसके द्वारा जमीन और उसके फलो की प्राप्ति का लाभ समाज के सब सदस्यो के लिए, समाज के लिए की गई उनकी सेवा के अनुपात में होगा, न कि आकस्मिक सपत्ति-स्वामित्व के अनुसार। दोनो ही स्थितियो में लक्ष्य की प्राप्ति, मुमकिन है, एक ओर लीग ऑव नेशन्स के घोषणा-पत्र से बहुत भिन्न उपायो से होगी या दूसरी ओर उत्पादन और वितरण के विश्वव्यापी राष्ट्रीयकरण तथा राज्य द्वारा उनके प्रबन्ध के जरिये होगी। इन लक्ष्यो की प्राप्ति मे दशाब्दिया, शायद शताब्दिया, लग जाय, क्योकि सफलता तभी होगी जब विचार और चरित्र में घुसी गहरी प्रवृत्तियो में भारी परिवर्तन आ जायगा तथा जिम्मेदारियो को उठाने की नई क्षमता पैदा हो जायगी। तब जाकर नये कानून और नया तत्र अस्तित्व में लाया जा सकता है। पर अन्त में ये आदर्श प्राप्त जरूर होगे, क्योकि यह विचार-दृष्टि बहुत काफी लोगो के मस्तिष्क मे आ चुकी है, हालाकि बहुत कम, शायद ही किसीने अभी तक साधनो को समझा हो।

वर्तमान में भारत और ब्रिटेन को अलग-अलग पार्ट अदा करने है। ब्रिटेन पुराने साम्राज्यवाद को छोड रहा है तथा व्यापक राष्ट्रीय आत्म-निर्णय में निहित अराजकता की नये युद्धो मे परिणति या साम्राज्यवाद के

नये रूप मे प्रकटीकरण की रोकथाम के लिए सक्रिय रूप से प्रयत्नशील है। वैयक्तिक स्वतन्त्रता और प्रोत्साहन की उदार परम्परा के साथ समाजवाद का ताल-मेल बैठाने की व्यावहारिक समस्या के समाधान की ओर भी यह शीघ्र कदम उठायेगा। हिंदुस्तान पर अपने स्वय के शासन का भार सम्हालने और बिना अपनी एकता को भग किये फौरन जरूरी सामाजिक और आर्थिक सुधारो के लिए कानून बनाने की भारी जिम्मेदारी है, और वह भी यूरोप के हालात को नजर में रखते हुए, जहा धार्मिक और राष्ट्रवादी लडाइयो से भारी अराजकता छा गई, जो मौजूदा सभ्यता की गिरावट का खास कारण रही है।

आप मुझसे पूछेंगे कि जो सविधान पास हुआ है, उसके अन्तर्गत अपने उद्देश्यो की पूर्ति करना हिंदुस्तान के लिए कैसे सम्भव है ? बेशक, यह त्रुटि-पूर्ण है—विशेषकर आपके दृष्टिकोण से—फिर भी मै आपसे इस बात पर विचार करने का निवेदन करूगा कि सविधान तथा इसमें समाहित विकासो के अतिरिक्त उनकी पूर्ति क्या भारत के लिए किसी और प्रकार से सभव है ?

दुर्भाग्य से राजनीति में हममें से कोई भी बिल्कुल नये सिरे से कुछ कर नही सकता। हमें हमेशा इतिहास से निकले तथ्यो को लेकर ही आगे बढना पडता है। किसी भी समय आदर्शवाद और वास्तविकता मे सामजस्य स्थापित करना किस हद तक सभव है, इसीका निश्चय करना राजनीतिज्ञ का काम है। हिन्दुस्तान की जनता की दिल दहलानेवाली गरीबी और उस गरीबी के परिणामो तथा उसे शीघ्र दूर करने की कठिनाई के बावजूद ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान के सामने एकमात्र सबसे बडा खतरा यदि कोई है तो वह है उसकी शासनिक अथवा वैधानिक एकता के टूट जाने का। इससे भी बडा एकमात्र खतरा होगा ब्रिटेन या किसी दूसरी विदेशी ताकत को मजूर कर लेना। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की शक्ति तथा ग्रेट ब्रिटेन द्वारा कट्टरपथियो की परवा न करते हुए पिछले अगस्त में पारित सविधान विधेयक के अन्तर्गत सत्ता की अतिम कुजी सौंपने के निर्णय के कारण, मेरा विश्वास है, कि यह दूसरा जोखम खत्म होगया है, बशर्ते कि स्वशासित समाज के तौर पर अपनी आतरिक एकता बनाये रखने में वह असफल न हो जाय।

सविधान की ऐसी व्याख्या करने के अपने तर्क मैंने भारतीय 'ट्वटिएथ सेंचुरी' में लिखे अपने लेख मे प्रस्तुत किये है, (उसकी एक प्रति साथ मे भेजने का साहस कर रहा हू) यहा उनको दोहराऊगा नही। लेकिन पहला खतरा वना रह जाता है। यदि बाकी दुनिया का अनुभव झूठा नही हो जाता तो हिंदुस्तान में राजनैतिक वर्गों के हाथ मे शासन की वागडोर जाने और शिक्षा तथा प्रेस का प्रभाव बढने के साथ-साथ धर्म, जाति और भाषा को अधिकाधिक राजनैतिक महत्व और शक्ति प्राप्त होगी और उसका परिणाम अधिकाधिक हानिकर होता जायगा। आज हिंदुस्तान में जनता पर धर्म का सबसे अधिक शक्तिशाली प्रभाव है, जैसीकि यूरोप में भी पुनर्जागरण और सुधार के कारण मध्ययुगीन कैथोलिक चर्च और होली रोमन एम्पायर के कमजोर होने पर स्थिति थी और वह तवतक वनी रही जवतक कि विज्ञान, शिक्षा और फ्रास की जनक्राति-सवधी विचारो ने नई राजनैतिक तथा आर्थिक निष्ठाओ का निर्माण कर धर्म की सर्वोच्च राजनैतिक शक्ति को गिरा नही दिया।

सौ वर्ष तक अधिकाशत केथौलिकवाद और प्रोटेस्टेटवाद के आपसी सघर्षो के आधार पर होनेवाले युद्धो में यूरोप खून से लथपथ रहा है (जर्मनी की आवादी ३,००,००,००० से घटकर ५०,००,००० रह गई थी)। फिर राजतन्त्रो की, जिनका स्थान सम्राट और पोप ने ले लिया था, लडाइयो मे और इसके वाद जाति और भाषा के नाम पर राष्ट्रवाद की लडाइयो मे वह उसी प्रकार खून से सरावोर रहा। इन सवने मिलकर अव इसकी पुरानी एकता को विल्कुल नष्ट कर दिया है और इन सवने ैरिफ, शस्त्रीकरण और युद्ध की अराजकता को जन्म दिया है, जो यूरोप के नैतिक ह्रास और पतन का मूल कारण है। इन शक्तियो की सक्रियता का अन्तिम चरण आयरलैंड मे दिखाई दिया है, जहा औपनिवेशिक होमरूल देने को ब्रिटेन के वाध्य होने पर भी जातिवाद का सवल पाकर धर्म ने स्काट प्रोटेस्टेंट अलस्टर को सेल्टिक रोमन केथोलिक आयरलैण्ड से राजनैतिक सम्बन्ध-विच्छेद करने को विवश कर दिया।

आप कह सकते है कि मै आर्थिक पहलू—मार्क्सवादी सिद्धान्त—की उपेक्षा कर रहा हू। मैं ऐसा नही मानता। मार्क्स ने इतिहास की भौतिकवादी

अथवा आर्थिक व्याख्या के पक्ष पर जरूरत से ज्यादा वल दिया है। वर्तमान धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक चिन्तन पर अर्थशास्त्र का बडा प्रभाव है और कुछ हद तक उसे नियन्त्रित भी करता है, लेकिन अनिवार्यत उसका स्थान दूसरा है। पूजीवाद परिग्रह की प्रेरणा देता है, लेकिन साथ-ही-साथ वह जीवन-स्तर को भी बहुत ऊचा उठाता है। वह अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता की बुराइयो को बढाता है, लेकिन वह उसे जन्म नही देता है। जो हो, मेरे खयाल से इसमे कोई शक नही कि व्यावहारिक राजनीति में राजनैतिक पहलू का पहला स्थान है। हा, रूस की स्थिति इसका बिल्कुल अपवाद है, जहा बाहरी युद्ध मे पराजय तथा असाधारण रूप से सचालित क्रातिकारी आन्दोलन द्वारा खोखली जारशाही का पतन हुआ, जिसके फलस्वरूप जीवन के प्राय सभी पहलुओ पर दलीय अधिनायकवाद की स्थापना हुई और वह भी ऐसे तरीको से, जिनका पता मानवता को तवतक नही था और ऐसे देश मे, जहा वस्तुत कोई मध्यम वर्ग नही था। ऐसी स्थिति को छोडकर लोग पहले धर्म, जाति अथवा भाषा पर आधारित राजनैतिक लक्ष्यो की ओर झुकते है, तब कही उनका ध्यान जागरूक आर्थिक उद्देश्यो की ओर जा पाता है। रूसी क्राति के बाद मे यूरोप का यही इतिहास रहा और मैं समझता हू इस बात को अब वामपक्षी भी स्वीकार करते है कि गणतन्त्री और वैधानिक मार्ग का स्थान जब क्रातिकारी पद्धति लेती है, तब आर्थिक लक्ष्यो का इन अन्य लक्ष्यो के स्थान पर आना शुरू हो जाता है, पर विजय फासिज्म की होती है, कम्युनिज्म की नही।

यदि हिंदुस्तान ने वैधानिक मार्ग को अस्वीकार कर लिया, तो मुझे लगता है, हिंदुस्तान के लिए यह प्राय जरूरी हो जायगा कि वह यूरोप का अनुकरण करे और वहा धार्मिक लडाइया शुरू हो जाय, क्योकि राजनैतिक उद्देश्यो के लिए उकसाये जाने पर, मेरे खयाल में, वहा की आम जनता अब भी मजहबी भावनाओ के प्रति झुकेगी। इन लडाइयो के बाद भारत अखण्ड नही रह पायगा, वल्कि यूरोप की तरह कई अधिनायकवादी राज्यो मे वट जायगा। जाति और भाषा की खाइया वनी रहेंगी और वे एक-दूसरे के खिलाफ सैनिक और आर्थिक दोनो प्रकार से मोर्चा वनाये रहेंगे। उनका आन्तरिक विकास बिल्कुल वेजान हो जायगा, अथवा उनपर फिर किसी विदेशी

साम्राज्यवादी ताकत का प्रभुत्व स्थापित हो जायगा, जैसाकि चीन में हो रहा है। कभी-कभी यह कहा जाता है—एक बार महात्माजी ने मुझसे कहा था—कि सकट का मार्ग आगे बढाने का सबसे अच्छा रास्ता हो सकता है। कभी-कभी यह सच भी हो सकता है। लेकिन, मेरा विश्वास है कि ऐसा बहुत ही कम होता है। यदि होता भी है, तो ऐसी अवस्था मे जबकि कोई दूसरी आशा नही रह जाती। यह बिल्कुल ठीक है कि यदि भारतीय सरकार खत्म हो जाय और अनिवार्यत प्रतिद्वन्द्वी सेनाए सामने आने लगे और वहा वही होने लगे, जो चीन में हो रहा है—हालाकि, धर्म, जाति और भाषा में अधिक अन्तर के कारण भारत की स्थिति और भी बुरी रहेगी—तो कुछ सामाजिक और आर्थिक बुराइया खत्म होजाय। लेकिन लडाइयो का यह समय उन बुनियादी परम्पराओ, सभ्य तरीको और आदतो को नष्ट कर देता है—जैसाकि महायुद्ध ने किया—जिनके बिना किसी सभ्य जीवन का, चाहे वह समाजवादी हो, चाहे व्यक्तिवादी, निर्माण नही हो सकता और जो उसी स्थिति मे पनप सकता है, जब सामाजिक अथवा राजनैतिक प्रगति का सघर्ष वैधानिक ढाचे के माध्यम से चले, लडाइयो के माध्यम से नही।

मेरे विचार से जनतत्री दुनिया ने जिस महानतम राजनैतिक व्यक्ति को ऊपर उठाया वह है अब्राहम लिकन। आम जनता के प्रति उसके मन मे बडी हमदर्दी थी। पर उसने देखा कि अमरीका मे सबसे बडी समस्या दासता की नही, बल्कि सघ की रक्षा की है। अगर सघ खत्म हुआ तो न केवल गुलामी बनी रहेगी, बल्कि यूरोप की तरह अमरीका स्वय राष्ट्रीय राज्यो में बट जायगा जो यूरोप के भिन्न-भिन्न जातीय और भाषाई तत्व ग्रहण करेंगे और टैरिफ और शस्त्रीकरण द्वारा अलग होकर उनमे निराशा व गरीबी छा जायगी और बार-बार लडाइया होगी, जिनमे मुनरो-सिद्धान्त तथा १७८७ से जनतत्र मे चलनेवाला वह महान् परीक्षण समाप्त हो जायगा। इसीलिए उसने गुलामी की समस्या पर सघर्ष करने से इन्कार कर दिया और सघर्ष का सारा बल सघ की रक्षा पर केन्द्रित कर दिया, यह देखकर कि यदि सघ सुरक्षित रहा तो न केवल इन घातक बुराइयो से ही बचा जा सकेगा, बल्कि खुद गुलामी भी अनिवार्यत समाप्त हो जायगी।

मैं अनुभव करता हू कि हिंदुस्तान के लिए सबसे बडा प्रश्न और आज

दुनिया के सामने प्रस्तुत सबसे बडे प्रश्नो मे एक प्रश्न यही है कि हिंदुस्तान अपनी मुक्ति के लिए बुनियादी तौर पर जनतत्री और वैधानिक सघ के रूप में काम करेगा अथवा वह सकट का रास्ता अपनायेगा। यदि उसने पहले रास्ते पर चलने का फैसला किया तो उसकी सस्थाओ मे निहित भावना ही धीरे-धीरे भारतीय रियासतो को वैधानिक राजतन्त्रो में बदल देगी, हिंदुस्तानी देश-भक्ति और जन-भावना के बल पर साम्प्रदायिकता, जातिवाद और भाषाई तत्वो को दबा देगी और उसे अपने शासन का पूरा भार सम्हालने के योग्य बना देगी और इस प्रकार उपयुक्त वैयक्तिक स्वतन्त्रता के साथ समाजवाद के मेल को सभव बना देगी। लेकिन यदि भारत ने अपनी वैधानिक एकता को खो दिया तो वह सबकुछ खो देगा। वह गड्ढे मे गिर जायगा, राष्ट्र के रूप में अपना अस्तित्व तथा अपने भाग्य का नियत्रण स्वय करने की अपनी क्षमता खो देगा। शासन के बिना न तो स्वशासन ही रह सकता है और न समाजवाद ही।

लेकिन आप फिर पूछेंगे कि साम्प्रदायिकता पर आधारित ऐसे सविधान द्वारा, जिसमें बचाव के बहुत सारे साधन ब्रिटेन के हाथ में रहेंगे और जहा प्रत्येक निहित स्वार्थ और सम्पत्ति-अधिकार को अधिक सुरक्षित कर दिया गया है, हिंदुस्तान के लिए वास्तविक आन्तरिक एकता स्थापित करना, अपने शासन का भार सम्हालना और अपनी शान्ति और सच्ची उन्नति के लिए आवश्यक सामाजिक और आर्थिक सुधार करना कैसे सभव हो सकता है ? इसपर मेरे दो जवाब है। पहला, जबतक काग्रेस इस स्थिति में नही हो जाती कि सम्पूर्ण प्रशासनिक शक्ति प्राप्त कर मनचाहे ढग पर सविधान तैयार करवा सके और उसकी स्थिति ऐसी नही हो जाती कि वह उसका उपयोग कर अपने प्रति सभी विरोधो को दबा सके और बलात् समानता लागू कर सके, तबतक मै नही समझता कि बुनियादी तौर पर कोई भिन्न सविधान सभव है। काग्रेस की मुख्य शक्ति का स्रोत क्या है, इसका निर्णय मेरी अपेक्षा आप ज्यादा अच्छी तरह कर सकते है। काग्रेस को वह शक्ति इस बात से प्राप्त होती है कि विदेशी शासन से आजादी पाने के लिए वह एक केन्द्रीय सगठन है और राष्ट्रवाद के विदेश-विरोधी रूप का इस्तेमाल कर रही है, अथवा यदि ब्रिटिश राज्य एकाएक खत्म हो जाय, तो क्या

काग्रेस को मुसलमानो, नरेशो, सम्पत्तिधारी वर्ग और जन-साधारण का इतना समर्थन प्राप्त हो सकेगा कि वह वैधानिक ढग से सारे हिंदुस्तान का शासन चला सके ? मेरा स्वय का निश्चित रूप से यह विचार है कि सबकी सहमति से काग्रेस किसी भी समय सम्पूर्ण हिंदुस्तान के लिए उदार सविधान कायम नही कर सकती। यदि बना सकती तो कम-से-कम वुनियादी तौर पर (अगर विस्तार से नही) उसे नरेशो और सम्पत्तिधारी वर्ग को वही रियायते देनी पडती, जिनका समावेश मौजूदा सविधान मे किया गया है और यदि वह शक्ति द्वारा शासन का अधिकार सम्हालने की कोशिश करती तो उसे गृह-युद्ध का सामना करना पडता और वाध्य होकर पुलिस-सैनिक अधिनायकवाद को कायम करने की कोशिश करनी पडती और वे तमाम हिंसात्मक दमन के तरीके अपनाने पडते (जिसे आप स्वय भुगत चुके हैं), जो सव प्रकार की निरकुशता मे शामिल है, अथवा उसे भारत की एकता बनाये रखने का प्रयास ही छोड देना पडता। इसलिए मैं नही समझता कि जहातक व्यावहारिक राजनीति का सवाल है, मौजूदा सविधान का अपनी मुख्य रूप-रेखाओ मे कोई दूसरा विकल्प भी होता।

मेरा दूसरा जवाब यह है कि इस सविधान में वेहद विकास का अवसर मौजूद है और उनसब त्रुटियो के वावजूद, जो उनमें दिखाई पडेगी यही वह सवसे अच्छा प्राप्य मार्ग है, जिसपर चलकर भारत शासन और सामाजिक तथा आर्थिक सुधार के लिए अपना अनुभव और ताकत वढा सकता है। सारे हिंदुस्तान का शासन और प्रतिरक्षा का भार सम्हालने के लिए आवश्यक सशक्त और विवेकशील राजनैतिक दलो और वैधानिक वृत्तियो का हिंदुस्तान मे जितनी जल्दी विकास होगा, 'स्टेट्यूट ऑव वेस्टमिंस्टर' के अनुसार, उतनी ही जल्दी भारत स्वाधीनता प्राप्त करेगा, ऐसा सोचने के पीछे जो तर्क है, उन्हे मैं यहा नही दोहराऊगा। 'ट्वटियथ सेंचुरी' वाले मेरे लेख में इनकी विशद चर्चा की जा चुकी है। मैं यहा इतना ही और कहूगा कि ब्रिटेन ने जो वचाव अपने हाथ मे रखे है, भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में शासन को विश्रृंखलित होने से वचाने में जहा वहुत ही महत्वपूर्ण सावित होगे, वहा वे विश्वविद्यालयो और लोकप्रिय समाचारपत्रो से भरे देश में वहुत-से निर्वाचित विधान-मंडलो के प्रति उत्तर-

दायी मन्त्रिमडलो को सत्ता-हस्तान्तरण की माग करनेवाले राजनैतिक मत और सगठन का सम्भवत प्रतिरोध भी नही कर सकेंगे, बशर्ते कि उन मन्त्रिमडलो और विधान-मडलो में शासन के प्राथमिक कार्यों का सचालन करने की उचित योग्यता हो। वे (बचाव) इसमें थोडी देर कर सकते हैं, पर इसे रोक नही सकते। उत्तरदायी सरकार का पूरा इतिहास इसे हर जगह साबित करता है।

इसके अतिरिक्त सविधान म उन राजनैतिक दलो के विकास का पूरा अवसर विद्यमान है, जिनका सबध राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक सुधार से है और यही वे क्रियात्मक तत्व हैं, जो वैधानिक यन्त्र को जिन्दगी और ताकत देते है। यह सविधान ऐसी पार्टियो को एक उपयुक्त लोकप्रिय आधार देता है, जिसपर वे अपना कार्य आरम्भ कर सकती है, क्योकि इसके अन्तर्गत ४० फीसदी से भी ज्यादा वयस्क पुरुषो को मतदान का अधिकार मिलेगा।

फिर, खुद सविधान में वैधानिक साधनो द्वारा बेहद विकास की सभावनाए भरी हैं। उत्तरदायी शासन-प्रणाली के अन्तर्गत सबसे अधिक बुनियादी परिवर्तन, कम-से-कम जहातक शक्ति और उत्तरदायित्व को नये हाथो में सौंपने का सबध है, सविधान की धाराओ में नही, बल्कि परम्पराओ और व्यवहार मे हेर-फेर द्वारा ही होता है। उदाहरण के लिए इस देश मे ससद् के प्रभुत्व और समुद्रपार देशो में डोमिनियन स्टेटस की स्थापना उस व्यवहार द्वारा हुई है, जिसमें 'परामर्श' ने धीरे-धीरे आदेश का रूप ले लिया है। यही नही, जिस प्रणाली के अन्तर्गत सविधान में परिवर्तन यहा ससद् द्वारा ही किया जा सकता है, राष्ट्रीय आत्मगौरव के लिए आपत्तिजनक होते हुए भी उससे कुछ व्यावहारिक लाभ है। सभी सविधानो के साथ जो एक कठिनाई रही है वह है उस उपाय की व्यवस्था करने की, जिसके अनुसार उनमें मामूली दलगत राजनीति के कारण नही, बल्कि वास्तविक राष्ट्रीय माग होने पर ही, हेर-फेर किया जा सके। जो सविधान दलगत कार्रवाई द्वारा आसानी से बदला जा सकता है, उसका अन्त विश्रृंखलता अथवा अधिनायकवाद में हो सकता है, और जो सविधान बहुत ज्यादा कडे होते है, उनसे वास्तविक सामाजिक और आर्थिक प्रगति में रुकावट

पडती है। जिस प्रणाली ने डोमिनियन स्टेटस को विकास का अवसर दिया है, उसने इस मसले को व्यवहारत अच्छी तरह हल किया है, क्योंकि इसके माने यह है कि हेर-फेर तो आसानी से हो सकते है, पर सिर्फ उसी हालत मे जवकि उनपर लगभग राष्ट्रीय सहमति जैसी चीज प्राप्त हो, केवल दलीय जीत के कारण नही।

इसीलिए मैं इस तथ्य को वहुत अधिक महत्व देता हू कि जैसाकि अमरीका में १७८७ मे हुआ, भारत एक ऐसे लिखित सविधान की वुनियाद पर स्वशासित जीवन के मार्ग पर अग्रसर किया जा रहा है, जो उसकी विकासशील जरूरतो की पूर्ति के लिए आसानी से (लेकिन वहुत आसानी से नही) मोडा जा सकता है। सविधानो का मजाक वनाना अव फैशन वन गया है। यह इस कारण कि एक विश्व-सविधान के अभाव में—जो आज की सवसे वडी आवश्यकता है—अन्तर्राज्य अराजकता ने वेरोजगारी, लडाई और अधिनायकवाद को जन्म दिया है, जिस वजह से एक देश के वाद दूसरे देश मे वैधानिक शासन का गठन असम्भव होगया है। यह विल्कुल जरूरी है कि भारत अपनी एकता को खोकर अराजकता और लडाई के इस भवर में न फसने पाये।

अत मैं समझता हू, आज भारत मे अत्यधिक महत्वपूर्ण आवश्यक्ता इस वात की नही है कि सविधान का रूप क्या हो, वल्कि इसकी है कि वह अपने में एक उपयुक्त, रचनात्मक, सृजनात्मक दलीय जीवन का विकास करे—कम-से-कम दो दल ऐसे हो, जिन्हे भारत के सभी हिस्सो और वर्गों का पर्याप्त समर्थन प्राप्त हो, ताकि वे भारतीय शासन का भार सम्हालने मे समर्थ हो सके। प्रत्येक दल के अन्दर आदर्शवाद और प्रतिक्रिया, भ्रष्टाचार और सचाई, जन-भावना और अन्य छोटी-मोटी वातो के वीच के सघर्ष और दलो के वीच की लडाई (वैधानिक होने के कारण इनकी भयानकता कम नहीं होती) और उनपर मतदाताओ के निर्णय द्वारा ही किसी राष्ट्र का राजनैतिक विकास और सामाजिक तथा आर्थिक सुधार की तैयारी होती है। शासन-भार सम्हालने तथा अपने आदर्शों और आदर्शों का पालन करने से प्राप्त अनुशासन रखनेवाले दलो द्वारा सामूहिक चिन्तन के इस सम्मिश्रण से ही साम्प्रदायिकता और पृथक् निर्वाचन-क्षेत्रो का अन्त, राज्यो

इसके अलावा मै आपका ध्यान उस भर्त्सना-योग्य आदोलन की ओर आकर्षित करना चाहती हू जो कि गाधीजी पर सोमेंद्रनाथ टैगोर की पुस्तक को लेकर यूरोप के कुछ समाजवादी और साम्यवादी क्षेत्रो में चल रहा है। पिछले सप्ताह जनेवा के एक समाजवादी पत्र 'द्रुआ दे पेप्ल' ने इस पुस्तक पर एक पूरा लेख ही प्रकाशित किया है और गाधीजी के विरुद्ध लगाये गए इन आरोपो का कि वे पूजीपतियो के हाथ बिक गये है और जनता के प्रति विश्वासघाती है, आदि-आदि, समर्थन किया है। इस प्रकार के आक्रमण को हजारो ईमानदार पश्चिमी देशवासी, जो कि अपने समाचार-पत्रो की घोषणाओ पर आख मूदकर विश्वास करते है, पढते है और मान लेते है।

गाधीजी के सारे विचारो को स्वीकार न करने, उन्हें अपर्याप्त अथवा खतरनाक मानकर उनका विरोध करने का हर किसी सच्चे व्यक्ति को अधिकार है, लेकिन गलत तथ्य, तोड-मोडकर दिये गए उद्धरण और मनमानी दुराग्रहपूर्ण बातें कहना मन में विद्रोह पैदा करते है, और चूकि यह बात एक भारतीय द्वारा आई है, इसलिए उसका दोष भारत पर आता है।

हिंदुस्तान के सच्चे दोस्तो के नाम में, ऐतिहासिक सत्य के नाम में—मै यह नही कहूगी कि गाधीजी के प्रति मित्रता के नाम में, क्योकि वह पहले व्यक्ति होगे, जो कि घोषणा करेंगे कि मित्रता के लिए सत्य की बलि कभी नही देनी चाहिए—मै आपसे अनुरोध करती हू कि आप कृपया उन मुख्य आरोपो का खडन, भले ही चद पक्तियो मे, अवश्य करें, जिनका उल्लेख पुस्तक में किया गया है और जो गाधीजी के चरित्र की दुष्टतापूर्ण नासमझी पर आधारित है।

प्रिय श्री नेहरू, आप मुझे क्षमा करें, मै जानती हू कि अपने देश के लिए आपके सामने बहुत-से कठिन काम करने को है, लेकिन क्या उनमें से एक काम यह नही है कि दुराग्रहियो से उस व्यक्ति की नेकनामी को बिगडने से बचाया जाय, जिसने कि हिंदुस्तान में अपनी आतरिक शक्ति के प्रति चेतना उत्पन्न की है और अपने विश्वास की बुनियाद पर अपना समूचा जीवन देश की सेवा में समर्पित कर दिया है, और जिसने एक देवदूत के हृदय से दलित वर्ग के पक्ष का समर्थन किया है?

स्वाभाविक रूप से मैं आपकी सेवा में प्रस्तुत हू कि यदि आप मुझे कोई लेख भेजे तो मैं उसका फ्रेंच मे अनुवाद कर दूगी और अपने भाई की मदद से फ्रेंच पत्र-पत्रिकाओ अथवा समाचार-पत्रो मे प्रकाशित करवाने का प्रयत्न करूगी।

मुझे आशा है कि श्रीमती नेहरू के स्वास्थ्य में बरावर सुधार हो रहा है और शायद हम लोग इसी वसत में स्विट्जरलैंड में मिलेंगे। कृपया उनतक हमारी मगलकामनाए पहुचा दें और अपनी बेटी को हमारा स्मरण करा दें।

सप्रेम आपकी,
मदलेन रोलां

१२४. लॉर्ड लोथियन के नाम

वेडनवाइलर
१७ जनवरी १९३६

प्रिय लॉर्ड लोथियन,

मैंने आपका लम्बा पत्र कई वार और 'ट्वटिएथ सेचुरी' मे आपका लेख भी पढ लिया। मैं आपको फिर धन्यवाद देता हू कि आपने उन विपयो पर, जिनमें हम सवकी इतनी गहरी दिलचस्पी है और जो हमपर इतना ज्यादा असर डालते हैं पूरी तरह मुझे लिखने का कष्ट किया। मुझे आपको जवाव देने में कुछ मुश्किल हो रही है, क्योकि आपने इतना विस्तृत क्षेत्र समेट लिया है कि उसका पूरा उत्तर दिया जाय तो उसमें दुनिया की अधिकाश वडी समस्याए आ जानी चाहिए। यह मेरे वस का काम नही है। मगर मै कुछ पहलुओ पर विचार करने की कोशिश करूगा। लेकिन वहुत दलीलवाजी से काम नही लूगा और इससे शायद आपको कुछ अदाज हो जायगा कि मेरा मन किस तरह काम कर रहा है।

मैं आपसे पूरी तरह सहमत हू कि हम मानव-इतिहास के एक अत्यन्त सृजनात्मक और वदलते युग के वीच में है। ऐसा मालूम होता है कि हम एक युग को खतम करके दूसरे में प्रवेश करनेवाले है। मैं इस वात में भी सहमत हू कि जो आदर्श वहुत ही वुद्धिशाली और भावनाशील मनुष्यो को प्रेरित कर रहे हैं वे ये है द्वेष, भय और सघर्ष से भरे हुए प्रभुता-सपन्न राज्यो की वर्तमान अराजकता को समाप्त करना, और समाजवादी आदर्श,

जिसका लक्ष्य "ऐसी प्रणाली है जिसके द्वारा जमीन और उसके फलो की प्राप्ति का लाभ समाज के सब सदस्यो के लिए, समाज के लिए की गई उनकी सेवा के अनुपात में होगा, न कि आकस्मिक सपत्ति-स्वामित्व के अनुसार ।" आप कहते है कि राष्ट्रसघ पहले आदर्श का प्रतिनिधि है। मेरे खयाल से यह जहातक एक व्यापक भावना को व्यक्त करता है सही है। किन्तु वास्तविक व्यवहार में वह उस ढग से काम नही करता और उसमें कुछ ऐसी बडी शक्तियो की नीति प्रकट होती है, जिनका अपनी विशेष स्थिति या निरकुश प्रभुता को छोडने का कोई इरादा नही है और जो सघ का उपयोग ससार को अपने ही लिए सुरक्षित बनाने की खातिर करने का प्रयत्न करते है।

एक और सवाल उठता है। यदि सघ की पीठ पर जो लोग है वे ईमानदारी से प्रभुता-सपन्न राज्यो की अराजकता को खत्म करना चाहे या लोकमत के कारण उस दिशा में धकेल दिये जाय तो भी क्या वे समाज-व्यवस्था को बुनियादी तौर पर बदले बिना या दूसरे शब्दो में समाजवाद को स्वीकार किये बिना अपने उद्देश्य में सफल हो सकते है ? बेशक उन्हें अपना साम्राज्यवाद तो छोडना होगा। सघ आज मौजूदा पूजीवादी प्रणाली से आगे नही देखता। सच तो यह है कि वह साम्राज्यवाद की समाप्ति की भी कल्पना नही करता। असल में उसका आधार वर्तमान स्थिति पर है और उसका मुख्य कार्य उस स्थिति को बनाये रखना है। इसलिए व्यवहार में वह वास्तव में उसी आदर्श की पूर्ति मे एक रुकावट है, जिसका अनेक लोग इसको प्रतिनिधि समझते है। यदि यह सच है, जैसा मै समझता हू कि है, कि साम्राज्यवाद और प्रभुता-सपन्न राज्यो की अराजकता पूजीवाद के मौजूदा दौर की अनिवार्य घटनाए है तो इससे यह नतीजा निकलता है कि आप दूसरे से भी मुक्त हुए बिना पहले से मुक्त नही हो सकते। इस तरह व्यवहार में सघ का उसके माने हुए आदर्शों के साथ कोई वास्ता नही है और वह उन आदर्शों की पूर्ति के मार्ग में कठिनाइया भी उपस्थित करता है, लेकिन उसके आदर्श भी ऐसे है कि वे अन्धी गली में ले जाते है। यह अचरज की बात नही है कि वह बहुत बार व्यर्थ की परस्पर-विरोधी बातो मे फस जाता है। वर्तमान स्थिति कायम रखने के आधार पर तो वह आगे बढ ही नही सकता,

क्योकि साम्राज्यवादी और सामाजिक दोनो पहलुओ में उपद्रव की जड यह वर्तमान स्थिति ही है। यह ठीक और मुनासिब है कि लीग ऐबिसीनिया में इटली के आक्रमण की निंदा करे और उसे दबा देने की कोशिश करे। परन्तु वही प्रणाली, जिसकी वह रक्षा करता है और जिसे स्थायी बनाना चाहता है हमे उस हमले की ओर अनिवार्य रूप से ले जाती है। मुसोलिनी के इस व्यग्य का किसी साम्राज्यवादी के पास कोई उचित उत्तर नही है कि वह वही कर रहा है जो दूसरी साम्राज्यवादी शक्तिया पहले कर चुकी है और अब कर रही है, अगर्चे उसके जैसे खास तौर पर जगली ढग से नही कर रही है। यह कुछ तर्क-हीन-सा मालूम होता है कि पूर्वी अफ्रीका में इटली की बमबारी की तो निन्दा की जाय और भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा में अग्रेजो की बमबारी के बारे मे शानदार खामोशी रखी जाय।

आप खुद इस राय के है कि उद्देश्य की सिद्धि सघ की नियमावली के तरीको से नही होगी। इसलिए सघ से बहुत आशा नही रखी जा सकती, सिवा इसके कि वह विश्व-व्यवस्था और शान्ति के पक्ष में एक अनिश्चित और व्यापक भावना को व्यक्त करता है। कभी-कभी वह उस भावना को गतिमान करने और सघर्ष को स्थगित करने मे सहायता देता है।

आपने जिन दो आदर्शो का जिक्र किया है वे एक-दूसरे से मिलते-जुलते है और मेरा यह खयाल नही है कि उन्हे अलग किया जा सकता है। सच तो यह है कि समाजवाद के दूसरे आदर्शो में पहला शामिल है और यह कहा जा सकता है कि असली विश्व-व्यवस्था और शान्ति तभी आयगी जब विश्व-व्यापी पैमाने पर समाजवाद स्थापित हो जायगा। जैसा आप कहते है, यह पूरी तरह सच है कि वास्तविक समाजवाद में राय बनाने की गहरी आदतो की और चरित्र की गहरी काया-पलट होती है और इसमें समय लगना अनिवार्य है। माफिक हालात में और सवचित लोगो की बडी सख्या के सद्भाव से ये तब्दीलिया एक पीढी के भीतर की जा सकती है। परन्तु जैसे हालात है उनमें उस सद्भाव के बजाय हमारे सामने भयकर विरोध और दुर्भाव है और इसलिए सभव है कि वह काल बहुत लम्बा होजाय। हमारे सामने विचार करने के लिए खास सवाल यह है कि वह वातावरण और परिस्थिति कैसे पैदा की जाय जिनमे ये गहरे परिवर्तन सभव हो सकते है। सही दिशा में

असली कदम यही होगा। वर्तमान परिस्थिति मे वायुमडल हमारे खिलाफ है और सघर्ष पैदा करनेवाले हमारे आपसी द्वेष, स्वार्थ और परिग्रह को कम करने के बजाय, दरअसल इनसब बुरी बातो को यह वायुमडल प्रोत्साहन देता है। यह सच है कि इस गभीर प्रतिकूलता के होते हुए भी कुछ प्रगति की जाती है और कम-से-कम हममें से कुछ अपनी पुरानी आदतो और रायो को चुनौती देने लगते है। परन्तु यह प्रक्रिया बहुत धीमी है और विपरीत वृत्तियो के बढने से वह लगभग मटियामेट हो जाती है।

पूजीवाद ने परिग्रह को और इन गहरी प्रेरणाओ को, जिनसे हम छुटकारा पाना चाहते हैं, उत्तेजन दिया। शुरू-शुरू मे उसने बहुत भलाई भी की और उत्पादन बढाकर रहन-सहन की सतह बहुत ऊची कर दी। और तरीको से भी उसने उपयोगी काम किया और उससे पहले की स्थिति मे अवश्य सुधार हुआ। परन्तु मालूम होता है अब उसकी उपयोगिता नही रही और आज वह समाजवादी दिशा में सब तरह की प्रगति को न सिर्फ रोकता है, बल्कि हममें अनेक बुरी आदतो और वृत्तियो को बढावा देता है। मेरी समझ में नही आता कि जिस समाज का आधार परिग्रह हो और जिसमें प्रमुख प्रेरणा लाभ के हेतु की हो उसमे हम समाजवादी ढग पर कैसे आगे बढ सकते है? इस प्रकार इस परिग्रही समाज की बुनियाद को बदलना और लाभ के हेतु को जहातक हो सके मिटाना जरूरी हो जाता है, ताकि नई और ज्यादा अच्छी आदतो और सोचने के तरीको का विकास किया जा सके। इसमें पूजीवादी प्रणाली का सम्पूर्ण परिवर्तन हो जाता है।

जैसा आप कहते है, यह सच है कि पूजीवादी व्यवस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता पैदा नही की, वह तो महज उसकी वारिस है। भूतकाल मे उसने राज्य के भीतर सचमुच गृहयुद्ध को मिटाया या कम किया है। परन्तु उसने वर्ग-सघर्ष को तेज किया है और वह इस हद तक बढ गया है कि भविष्य मे गृहयुद्ध का खतरा पैदा होगया है। अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उसने अधिक बडे पैमाने पर अराजकता को स्थायी बना दिया है और छोटी-छोटी स्थानीय लडाइयो के बजाय उसने विशाल और भयकर राष्ट्रीय सघर्ष पैदा कर दिये है। इस तरह हालाकि वह इस अराजकता को पैदा नही करता, फिर भी वह अनिवार्य रूप से उसको बढाता है और जबतक वह अपना खात्मा नही

कर लेता तबतक उस अराजकता को खत्म नही कर सकता। उसने आधुनिक साम्राज्यवादो को पैदा किया है, जो न सिर्फ धरती के बडे भागो और लाखो लोगो को कुचलते और उनका शोषण करते है, बल्कि एक-दूसरे के साथ लगातार सघर्प मे भी आते रहते है।

हो सकता है कि मार्क्स इतिहास के भौतिक अथवा आर्थिक अर्थ को समझाने मे अतिशयोक्ति करता है। शायद उसने ऐसा इसी कारण किया कि उस पक्ष की बहुत-कुछ उपेक्षा की गई थी या कम-से-कम उस वक्त तक वह पक्ष बहुत कम बताया गया था। परन्तु मार्क्स ने घटनाओ के निर्माण पर दूसरे तत्वो के असर से कभी इन्कार नही किया। सबसे ज्यादा जोर एक अर्थात् आर्थिक तत्व पर दिया। यह जोर ज़रा जरूरत से ज्यादा दिया गया तो इससे बहुत फर्क नही पडता। मेरे खयाल से यह तथ्य तो बाकी रहता ही है कि इतिहास का उनका अर्थ ही ऐसा अर्थ है जिससे कुछ हद तक इतिहास समझ में आता है और उसे अर्थ प्राप्त होता है। उससे हमें वर्तमान को समझने मे सहायता मिलती है और यह बिल्कुल मार्के की बात है कि उसकी कितनी भविष्यवाणिया सच निकली है।

समाजवाद कैसे आयगा? आप कहते है कि वह उत्पादन और वितरण के साधनो के विश्वव्यापी राष्ट्रीयकरण से नही आयगा। क्या उससे लाभ और परिग्रह का हेतु समाप्त नही हो जायगा? और उसके बजाय सामुदायिक और सहकारी हेतु स्थापित नही हो जायगा? और क्या उससे वर्तमान से भिन्न आधार पर एक नई सभ्यता का निर्माण नही हो जायगा? मुमकिन है बहुत-कुछ निजी पहलू की ताकत बाकी रहेगी। कुछ मामलो मे, जैसे सास्कृतिक आदि में, रहनी भी चाहिए। परन्तु तमाम महत्वपूर्ण बातो में भौतिक अर्थ मे उत्पादन और वितरण के साधनो का राष्ट्रीयकरण अनिवार्य दिखाई देता है। इसमें समझौते हो सकते है, परन्तु साथ-साथ दो विपरीत और सघर्षमयी प्रक्रियाए नही चल सकती। चुनाव तो करना ही होगा और जिसका लक्ष्य समाजवाद है उसके लिए एक ही चुनाव हो सकता है।

मेरे खयाल से सिद्धान्त रूप में लोकतत्री उपायो से समाजवाद कायम करना मुमकिन है, बशर्ते कि पूरी लोकतन्त्री प्रक्रिया उपलब्ध हो। फिर भी व्यवहार मे बहुत बडी कठिनाइया होने की सभावना है, क्योंकि समाजवाद के

विरोधी जब अपनी सत्ता को खतरे मे देखेंगे तब वे लोकतत्री उपाय को अस्वीकार कर देंगे। लोकतत्र की अस्वीकृति समाजवादी पक्ष की तरफ से न आती है, न आनी चाहिए, परन्तु दूसरी ओर से होनी चाहिए। वह तो जरूर फासिस्टवाद है। उससे कैसे बचा जाय ? लोकतत्री प्रणाली को अनेक विजयें प्राप्त हुई है, परन्तु मै नही जानता कि उसे अभी तक राज्य या समाजवाद की बुनियादी रचना के बारे में सघर्ष मिटाने मे कामयाबी मिली है। जब यह सवाल उठता है तब जो मडली या वर्ग राज्यसत्ता का नियत्रण करता है वह स्वेच्छा से उसे छोड नही देता, इसीलिए कि बहुमत उसकी माग करता है। हमने युद्ध के बाद के यूरोप में और स्वय लोकतत्र के ह्रास में इसके काफी उदाहरण देखे है। जाहिर है कि कोई समाजवादी कायापलट बहुत बडे बहुमत के सद्भाव या कम-से-कम निष्क्रिय स्वीकृति के बिना नही किया जा सकता।

ब्रिटेन और भारत की बात पर आये तो मुझे आपके पत्र में बहुत-सी बातें ऐसी मालूम होती है जिनके लिए मेरे खयाल से बहुत कम औचित्य है। चूकि मैं आपके पूर्व पक्ष की बहुत-सी बातो से सहमत नही हू, इसलिए मै आपके कुछ नतीजो से भी असहमत हू। आप कहते है कि "ब्रिटेन पुराने साम्राज्यवाद को छोड रहा है" और ऐसा रास्ता ढूढने की कोशिश में लगा हुआ जिससे "व्यापक राष्ट्रीय आत्म-निर्णय में निहित अराजकता को नये युद्धो में परिणति या साम्राज्यवाद के नये रूप में प्रकटीकरण" से रोका जा सके। मेरी समझ में यह बात बिल्कुल नही आती कि ब्रिटेन यह काम कर रहा है। मुझे पुराने साम्राज्यवाद को छोडने की बात कही दिखाई नही देती, बल्कि उससे चिपटे रहने और उसे मजबूत करने के बार-बार और जोरदार प्रयत्न दिखाई देते है, हालाकि कुछ बातो मे जनता के सामने नया तमाशा रखा जाता है। अवश्य ही ब्रिटेन नई लडाइया नही चाहता। वह एक सतुष्ट सत्ता है और उसका पेट जरूरत से ज्यादा भरा हुआ है। उसके पास जो कुछ है उसे वह खतरे में क्यो डाले ? वह जैसी स्थिति है उसे कायम रखना चाहता है और उसमें उसका खूब फायदा है। उसे नये साम्राज्यवाद नापसद है, क्योकि उनका उसके पुराने साम्राज्यवाद से सघर्ष होता है। उसे खुद साम्राज्यवाद मे कोई अरुचि नही है।

आपने भारत में सवैधानिक रास्ते का भी जिक्र किया है। यह सवैधानिक रास्ता दरअसल क्या है ? जहा कोई लोकतत्री सविधान हो वहा मै सवैधानिक प्रवृत्तियो को समझ सकता हू, लेकिन जहा कोई ऐसी चीज नही है वहां सवैधानिक उपायो का कोई अर्थ नही है । तब सवैधानिक शब्द का अर्थ महज कानूनी होता है और कानूनी का मतलब सिर्फ इतना होता है कि एक ऐसी स्वेच्छाचारी कार्यकारिणी व्यवस्था की इच्छाओ के अनुसार काम किया जाय जो कानून बना सकती है और लोकमत की परवा किये वगैर हुक्मनामे और फरमान जारी कर सकती है। जर्मनी या इटली में आज क्या सवैधानिक प्रणाली है ? भारत में १९वी सदी में अथवा २०वी सदी के प्रारम्भ मे या अब भी यह प्रणाली कहा है ? तब भी (या अब भी) ऐसे सवैधानिक उपकरणो के द्वारा, जिनपर भारत के लोगो का काफी असर पड सकता हो, भारत मे परिवर्तन लाने की कोई सभावना नही थी। लोग या तो भीख माग सकते थे या विद्रोह कर सकते थे। सिर्फ इसी बात से कि भारत के अधिकाश लोगो के लिए अपनी मर्जी को कारगर बनाना असभव है, जाहिर होता है कि उनके लिए कोई सवैधानिक मार्ग खुला हुआ नही है। वे या तो किसी ऐसी चीज को, जिसे सख्त नापसद करते है, मान सकते है या कथित सवैधानिक उपायो के सिवा कोई और उपाय अपना सकते है। विशेष परिस्थिति में ऐसे उपाय बुद्धिमत्तापूर्ण अथवा बुद्धिमत्तारहित हो सकते है, परन्तु उनके सवैधानिक या असवैधानिक होने का सवाल नही उठता।

मै मानता हू कि हममे से ज्यादातर लोग अपने विशेष राष्ट्रीय पक्षपात से मुक्त नही हो सकते और हमे अक्सर अपनी ही आखो का शहतीर दिखाई नही देता। मै अच्छी तरह समझता हू कि मै भी इसका शिकार जरूर हू, खास तौर से जब मै ब्रिटेन और भारत के सबध का विचार करता हू। आप उसके लिए गुजाइश रखिये। फिर भी मै इतना अवश्य कहूगा कि मुझे सबसे ज्यादा अचरज इस बात पर होता है कि अग्रेज लोग किस तरह अपने भौतिक स्वार्थो को अपने नैतिक जोश के साथ मिला देते है, कैसे वे यह अटल धारणा रखकर चलते है कि वे सदा ससार का भला करते रहे है और वे निहायत ऊचे मकसद से काम करते है और उपद्रव, सघर्ष और कठिनाई दूसरो के दुराग्रह और दुष्टता से होती है। आप जानते है कि इस धारणा को सब लोग

स्वीकार नही करते और यूरोप, अमरीका और एशिया में उसका मजाक उडाया जाता है। भारत मे खास तौर पर, हमें क्षमा किया जाय, यदि हम ब्रिटिश राज के पिछले और मौजूदा अनुभव के बाद उसे बिल्कुल अस्वीकार करते है। भारत मे जो कुछ हुआ है और हो रहा है उसे देखते हुए वहा लोकतत्र और सविधान की बाते करना मुझे इन शब्दो के अर्थ का बिल्कुल तोड-मरोड करना मालूम होता है। इतिहास में शासक-सत्ताओ और शासक-वर्गों ने खुशी से राज्य त्याग नही किया है और यदि इतिहास की शिक्षा काफी नही थी तो हम भारतवालो को तो इस ठोस हकीकत का काफी तजुर्बा भी हो चुका है।

मेरे खयाल से यह सही है कि ब्रिटिश शासक-वर्ग परिस्थिति के अनुकूल बन जाने की एक हद तक वृत्ति रखता है, परन्तु जब उसकी सत्ता के आधार को ही चुनौती दी जाती है तब ऊपरी मेलमिलाप की गुजाइश नही होती। किसीके लिए यह कल्पना करना कि ब्रिटिश सरकार या ससद भारतीय स्वतत्रता के कृपालु सरक्षक है और उसके विकास का नियत्रण परोपकार भाव से कर रहे है, मुझे एक निहायत गैरमामूली खामखयाली मालूम होती है। मै मानता हू कि बहुत-से अग्रेज ऐसे है जिनका भारत और उसके लोगो के प्रति सद्भाव है और वे चाहते है कि भारत स्वतत्र होजाय। परन्तु नीति-निर्माण मे उनका महत्व नही है और वे भी या उनमें से अधिकाश इस तरह सोचते है कि भारत की आजादी का ब्रिटिश इच्छाओ और हितो के साथ जोड-तोड बैठ जाय। हमसे कहा जाता है कि जैसे-जैसे हम योग्यता का परिचय देंगे, अधिक स्वतत्रता और ज्यादा जिम्मेदारी हमारे पास आ जायगी और उसकी कसौटी यह है कि हमारा अग्रेजो की योजनाओ के साथ कहातक मेल खाता है। इग्लैड के हमारे उपदेशको और हितैषियो को कभी-कभी यह कहने की जी में आती है कि जरा ईसप की कहानियो को फिर से जान लीजिये और खास तौर पर भेडिये और मेमने का किस्सा दुबारा पढ लीजिये।

यह बिल्कुल सच है कि अधिकाश और बातो की तरह राजनीति में हम कोरी स्लेट पर लिखना शुरू नही कर सकते। यह भी सच है कि जीवन अक्सर इतना पेचीदा होता है कि उसमें मानव-तर्क नही चलता। हमें जैसी स्थिति होती है उसे स्वीकार करना पडता है, चाहे वह हमें पसन्द हो या न हो और

उसके साथ अपने आदर्शवाद का मेल बिठाना पड़ता है, परन्तु हमे चलना चाहिए सही दिशा मे। आपके कथनानुसार इसका अर्थ यह है कि सबसे पहले भारत की एकता की रक्षा की जाय और फिर सम्प्रदायवाद को मिटाया जाय, स्थापित स्वार्थो का नियन्त्रण और फिर धीरे-धीरे निवारण किया जाय और लोगो के रहन-सहन की सतह ऊंची की जाय। सच्ची भारतीय सेना का विकास किया जाय और लोकतन्त्री राज्य मे आवश्यक रचनात्मक व्यावहारिक कार्य की भारत के नौजवानो को तालीम दी जाय। इन-सब बातो से परे समाजवादी आदर्श है और सामान्य पृष्ठभूमि ऐसी होनी चाहिए कि इस आदर्श पर सचमुच अमल करने के लिए जिन गहरी वृत्तियो और आदतो की जरूरत है, उनका विकास किया जा सके।

मेरा खयाल है कि हममे से अधिकाश इस बयान से तो सहमत होगे, हालाकि हम उसे दूसरी भाषा में रख सकते है और कुछ उसमे जोड सकते है या कुछ मुद्दो पर अधिक जोर दे सकते है। मै आपसे इस बात मे भी सहमत हू कि राजनैतिक दौर सबसे पहले आता है। सच तो यह है कि उस दौर के बिना और कोई दौर होता ही नही। उसके साथ सामाजिक परिवर्तन हो सकते है या उसके बाद जल्दी ही हो सकते है। मै खुद तो राजनैतिक लोकतन्त्र को स्वीकार करने के लिए सिर्फ इस आशा से पूरी तरह तैयार हू कि उससे सामाजिक लोकतन्त्र आ जायगा। राजनैतिक लोकतन्त्र लक्ष्य पर पहुचने का रास्ता मात्र है, अतिम उद्देश्य नही है। उसके लिए सच्ची माग आर्थिक परिवर्तनो की इच्छा से होती है। यह इच्छा कभी-कभी अज्ञात होती है। यदि ये परिवर्तन जल्दी ही नही होते तो राजनैतिक रचना स्थिर नही हो सकती है। मेरा यह विचार होता है कि भारत की आज जैसी परिस्थिति है, उसमें आर्थिक परिवर्तन की बडी जरूरत है और अत्यावश्यक राजनैतिक परि-वर्तन के साथ-साथ अथवा बाद में अनिवार्य रूप से ठोस आर्थिक परिवर्तन होगे। जो हो, राजनैतिक परिवर्तन ऐसा होना चाहिए, जिससे इन सामाजिक परिवर्तनो के लिए सुभीता होजाय। यदि वह इनके लिए रुकावट बन जाता है तो वह कोई मुनासिब अथवा करने लायक तब्दीली नही होगी।

मै ऐसे किसी जिम्मेदार हिन्दुस्तानी को नही जानता जो हिन्दुस्तान की एकता के सिवा और किसी निगाह से सोचता हो। हमारे राजनैतिक

विश्वास का यह जरूरी अग है और हम जो कुछ करते है उसका यही लक्ष्य है। मै सहमत हू कि वह एकता सघीय एकता हो सकती है, परन्तु अवश्य ही उसका अर्थ नये कानून के सघ जैसी कोई चीज नही है । वह एकता किसी सामान्य जुए के मातहत गुलामी की एकता भी नही है। यह मुमकिन है कि अव्यवस्था-काल के कारण फूट पैदा होजाय और भारत में अलग-अलग राज्य बन जाय, परन्तु यह खतरा मुझे बहुत अवास्तविक दिखाई देता है । देशभर में एकता की वृत्ति अत्यधिक प्रबल है ।

आपके मतानुसार फूट फैलानेवाले तत्व धर्म, नस्ल और भाषा है । नस्ल का महत्व मेरी समझ में नही आता। भारत मे नस्ल धर्म के साथ गुथ गई और उसने कुछ-कुछ जाति का रूप धारण कर लिया । हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग नस्लें नही है, असल में वे नस्लो का एक ही मेल है। इस तरह हालाकि विविध रूप मे नस्लें है तो भी एक-दूसरे में मिली हुई है और सब मिलकर नस्ल और सस्कृति की दृष्टि से एक निश्चित इकाई बन जाती है। भारत की कथित सैकडो भाषाए हमारे आलोचको के लिए एक प्रिय विषय है। परन्तु आम तौर पर उन लोगो का किसी एक भी भाषा से परिचय नही होता । हकीकत यह है कि भारत भाषा की दृष्टि से अनोखे ढग से और अच्छी तरह से गुथा हुआ है और लोक-शिक्षा के अभाव के कारण ही बहुत-सी बोलिया पैदा हो गई है । भारत की दस बडी जबानें है, जो थोडे-से छोटे-छोटे प्रदेशो को छोडकर सारे देश में फैली हुई है। इनके दो वर्ग है—आर्य और द्रविड और दोनो के बीच में सस्कृत की सामान्य पृष्ठभूमि है । मेरा खयाल है कि आप जानते है कि आर्य भाषाओ में हिन्दुस्तानी और उसकी विविध बोलिया बारह करोड लोगो की भाषा है और वह फैल रही है । दूसरी आर्य भाषाओ बगाला, गुजराती और मराठी का उसके साथ बहुत गहरा सबध है । मुझे विश्वास है कि भारत एकता के रास्ते में हमें और कठिनाइयो का सामना भले ही करना पडे, परन्तु भाषा का सवाल हमारे लिए बडी कठिनाई नही होगी ।

आप भारत मे धर्म की स्थिति की तुलना जागृति और सुधार के समय की यूरोप की स्थिति से करते है । यह सच है कि भारत के लोगो का जीवन के सबध मे एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण है, जिसकी तुलना मध्यकालीन

यूरोप के दृष्टिकोण से की जा सकती है। फिर भी आपकी तुलना सतह से नीचे नही जाती। भारत के लम्बे इतिहास के सारे क्रम मे कभी ऐसे धार्मिक झगडे नही हुए, जिनके कारण यूरोप मे खून की नदिया वह गई। भारतीय धर्म, सस्कृति और तत्वज्ञान की सारी पृष्ठभूमि सहिष्णुता और दूसरे धर्म के प्रोत्साहन तक की पृष्ठभूमि थी। जब इस्लाम आया तो कुछ सघर्ष पैदा हुआ, परन्तु वह भी धार्मिक से राजनैतिक कही अधिक था, हालाकि जोर हमेशा धार्मिक पहलू पर दिया जाता है। वह सघर्ष विजेताओ और विजितो मे था। हाल की घटनाओ के बावजूद मै आसानी से कल्पना नही कर सकता कि किसी बडे पैमाने पर भारत मे धार्मिक सघर्ष होगा। आजकल का सम्प्रदायवाद असल मे राजनैतिक, आर्थिक और मध्यम वर्ग का है। मेरा खयाल है (परन्तु मै निजी जानकारी के बिना ऐसा कह रहा हू) कि अल्स्टर मे आज धार्मिक कटुता जितनी गहरी पैठी हुई है उतनी भारत में कही नही है। यह एक ऐसी हकीकत है, जिसे हमे कभी नही भूलना चाहिए कि भारत में साम्प्रदायिकता बाद में पैदा हुई घटना है, जो हमारे देखते-देखते बढी है। इससे उसका महत्व कम नही हो जाता और हम उसकी उपेक्षा भी नही कर सकते, क्योकि इस समय वह हमारे रास्ते में एक जबरदस्त रुकावट है और हमारी भावी प्रगति में बाधा डाल सकती है। फिर भी मेरे खयाल से उसको बढा-चढाकर कहा जाता है और उसपर जरूरत से ज्यादा जोर दिया जाता है। बुनियादी तौर पर उसका असर आम लोगो पर नही होता, हालाकि कभी-कभी उनके विकार भडक उठते है। सामाजिक प्रश्नो के सामने आने पर वह अवश्य ही पीछे चला जायगा। उग्र साम्प्रदायिक लोगो की साम्प्रदायिक मागो की जाच कीजिये तो आपको पता चलेगा कि उनमें से किसी एक का भी ज़रा-सा भी सबध जनसाधारण से नही है। सब गुटो के साम्प्रदायिक नेताओ को सामाजिक और आर्थिक प्रश्नो का भयकर भय है और यह मजेदार बात है कि सामाजिक प्रगति के विरोध मे वे सब एक हो जाते है।

हिंदुस्तान में ब्रिटिश राज ने देश की राजनैतिक एकता पैदा करने में अनिवार्य रूप से सहायता दी है। सामान्य पराधीनता के होने से ही उससे पीछा छुडाने की सामान्य इच्छा होना अनिवार्य था। यह याद रखना चाहिए—

हालाकि इस तथ्य को काफी अच्छी तरह अनुभव नही किया जाता—कि सारे इतिहास में भारत में सास्कृतिक और भौगोलिक एकता की बिल्कुल असाधारण समझ रही है और परिवहन और सचार के आधुनिक हालात में राजनैतिक एकता की इच्छा जरूर बढेगी। किन्तु सारे ब्रिटिश-काल में शासन-सत्ता की तरफ से, कुछ जान-बूझकर और कुछ अनजाने, इस एकता को मिटाने का प्रयत्न रहा है। अवश्य ही यह आशा तो रखी ही जाती थी, क्योकि तमाम साम्राज्यो और शासक-मडलियो की सदा यही नीति रही है। उन्नी-सवी शताब्दी के दौरान में भारत में ऊचे अफसरो ने खुलकर जिस तरह अपनी राय जाहिर की है उसे पढकर दिलचस्पी होती है। उस समय समस्या बहुत तेज़ नही हुई थी, लेकिन राष्ट्रीय आदोलन के बढने के साथ-साथ और पिछले तीस वर्ष मे वह तीव्र होगई। ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया यह हुई कि इस फूट को पैदा करने और सभव हो तो चिरस्थायी बनाने के लिए नये-नये तरीके निकाले जाय। जाहिर है कि कोई यह नही कह सकता कि हिंदुस्तान मे फूट की जन्मजात वृत्ति नही थी और राजनैतिक सत्ता निकट आते हुए देखकर यह वृत्ति बढने की सभावना थी। इस वृत्ति को हल्का करने की नीति भी अपनाई जा सकती थी और तेज करने की भी। सरकार ने दूसरी नीति अपनाई और देश में फूट फैलानेवाली हरेक प्रवृत्ति को हर तरह से प्रोत्साहन दिया गया। लोगो के ऐतिहासिक विकास को रोकना न उनके लिए सभव था, न और किसीके लिए। परन्तु वे रास्ते में रुकावटें खडी कर सकते है, और उन्होने की हैं। इनमें से सबसे ताजा और महत्वपूर्ण वे बाधाए है जो नये कानून मे रखी गई है। आप इस कानून की तारीफ इसलिए करते है कि वह भारत की एकता का प्रतीक है। हकीकत इससे बिल्कुल उल्टी हैं। वह अधिक फूट का (यदि इसका मुकाबला न किया गया तो) पहला कदम है। वह भारत को धार्मिक और बहुत-से और दायरो में बाट देता है, उसके बडे-बडे हिस्सो को सामन्ती अड्डे बनाकर रखता है, जिन्हे कोई छू नही सकता, मगर जो दूसरे हिस्सो पर असर डाल सकते है और यह कानून सामाजिक और आर्थिक मुद्दो पर अच्छे राजनैतिक दलो का विकास रोक देता है। आप तो इसे "आज के भारत में सबसे महत्वपूर्ण जरूरत" मानते है।

सामाजिक मुद्दो पर ब्रिटिश सरकार की नीति भी उतनी ही मार्के की है।

किसी भी किस्म के समाजवाद या स्थापित स्वार्थों के नियत्रण अथवा निवारण को तो फूटी आख से भी नही देखा जाता, उलटे जान-बूझकर बहुत-से स्थापित स्वार्थों की रक्षा की गई है। नये-नये स्थापित स्वार्थ पैदा किये गए है और भारत मे राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक प्रतिक्रियावादियो का हमेशा पक्ष लिया गया है। और यह नया कानून इस नीति का ही परिणाम है और पहले कभी स्थापित स्वार्थों, दकियानूसी और प्रतिक्रियावादियो की इतनी शक्ति नही हुई थी, जितनी नये सघीय भारत में होगी। यह कानून के बल से उस सामाजिक प्रगति का दरवाजा बन्द कर देता है जो आपके खयाल से हमारा लक्ष्य होना चाहिए। वह इन विदेशी और भारतीय स्थापित स्वार्थों की रक्षा करता है और उनकी जडे मजबूत करता है। छोटे-छोटे सामाजिक सुधार के उपाय भी उपलब्ध नही है, क्योकि राज्य के आर्थिक साधनो का बहुत बडा हिस्सा स्थापित स्वार्थों की रक्षा के लिए रहन और सुरक्षित रख दिया गया है।

आजकल हर देश को प्रतिक्रिया और बुराई की शक्तियो के खिलाफ डटकर लडना पडता है। भारत इस नियम का अपवाद नही है। स्थिति का दु खद पहलू यह है कि ब्रिटिश जनता अनजाने अपनी ससद और अपने कर्मचारियो के जरिये आज भारत में बुराई की ताकतो के पक्ष मे पूरी तरह खडी है। जो चीज वह अपने देश मे क्षणभर भी बर्दाश्त नही करेगी, उसे भारत में प्रोत्साहन दिया जाता है। आपने अब्राहम लिंकन के बडे नाम का जिक्र किया है और मुझे याद दिलाया है कि वह सघ को कितना महत्व देते थे। शायद आपका यह खयाल है कि काग्रेस के आन्दोलन को दबाने की कोशिश मे ब्रिटिश सरकार का यही पवित्र हेतु है कि फूट फैलानेवाली शक्तियो के मुकाबले में भारत की एकता को कायम रखा जाय। मै बिल्कुल नही समझ सकता कि उस आदोलन से भारत की एकता को कैसे खतरा है। सच पूछा जाय तो मेरा यह विचार है कि उस आदोलन या उसके जैसे ही किसी आदोलन से देश में अनन्य एकता पैदा हो सकती है और ब्रिटिश सरकार की प्रवृतिया हमे उल्टी दिशा मे धकेलती है। परन्तु इसके अलावा क्या आप यह नही समझते कि लिंकन की तुलना किसी पराधीन देश मे स्वतत्रता-आन्दोलन को कुचलने के किसी साम्राज्यवादी सत्ता के प्रयत्न के साथ करना बहुत खीचतान

हालाकि इस तथ्य को काफी अच्छी तरह अनुभव नही किया जाता—कि सारे इतिहास मे भारत में सास्कृतिक और भौगोलिक एकता की बिल्कुल असाधारण समझ रही है और परिवहन और सचार के आधुनिक हालात मे राजनैतिक एकता की इच्छा जरूर बढेगी। किन्तु सारे ब्रिटिश-काल में शासन-सत्ता की तरफ से, कुछ जान-बूझकर और कुछ अनजाने, इस एकता को मिटाने का प्रयत्न रहा है। अवश्य ही यह आशा तो रखी ही जाती थी, क्योकि तमाम साम्राज्यो और शासक-मडलियो की सदा यही नीति रही है। उन्नीसवी शताब्दी के दौरान मे भारत में ऊचे अफसरो ने खुलकर जिस तरह अपनी राय जाहिर की है उसे पढकर दिलचस्पी होती है। उस समय समस्या बहुत तेज नही हुई थी, लेकिन राष्ट्रीय आदोलन के बढने के साथ-साथ और पिछले तीस वर्ष में वह तीव्र होगई। ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया यह हुई कि इस फूट को पैदा करने और सभव हो तो चिरस्थायी बनाने के लिए नये-नये तरीके निकाले जाय। जाहिर है कि कोई यह नही कह सकता कि हिंदुस्तान मे फूट की जन्मजात वृत्ति नही थी और राजनैतिक सत्ता निकट आते हुए देखकर यह वृत्ति बढने की सभावना थी। इस वृत्ति को हल्का करने की नीति भी अपनाई जा सकती थी और तेज करने की भी। सरकार ने दूसरी नीति अपनाई और देश में फूट फैलानेवाली हरेक प्रवृत्ति को हर तरह से प्रोत्साहन दिया गया। लोगो के ऐतिहासिक विकास को रोकना न उनके लिए संभव था, न और किसीके लिए। परन्तु वे रास्ते में रुकावटें खडी कर सकते हैं, और उन्होने की हैं। इनमें से सबसे ताजा और महत्वपूर्ण वे बाधाए हैं जो नये कानून में रखी गई है। आप इस कानून की तारीफ इसलिए करते हैं कि वह भारत की एकता का प्रतीक है। हकीकत इससे बिल्कुल उल्टी है। वह अधिक फूट का (यदि इसका मुकाबला न किया गया तो) पहला कदम है। वह भारत को धार्मिक और बहुत-से और दायरो में बांट देता है, उसके बडे-बडे हिस्सो को सामन्ती अड्डे बनाकर रखता है, जिन्हे कोई छू नही सकता, मगर जो दूसरे हिस्सो पर असर डाल सकते है और यह कानून सामाजिक और आर्थिक मुद्दो पर अच्छे राजनैतिक दलो का विकास रोक देता है। आप तो इसे "आज के भारत में सबसे महत्वपूर्ण जरूरत" मानते हैं।

सामाजिक मुद्दो पर ब्रिटिश सरकार की नीति भी उतनी ही मार्के की है।

किसी भी किस्म के समाजवाद या स्थापित स्वार्थो के नियत्रण अथवा निवारण को तो फूटी आख से भी नही देखा जाता, उलटे जान-बूझकर बहुत-से स्थापित स्वार्थों की रक्षा की गई है। नये-नये स्थापित स्वार्थ पैदा किये गए है और भारत में राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक प्रतिक्रियावादियो का हमेशा पक्ष लिया गया है। और यह नया कानून इस नीति का ही परिणाम है और पहले कभी स्थापित स्वार्थो, दकियानूसी और प्रतिक्रियावादियो की इतनी शक्ति नही हुई थी, जितनी नये सघीय भारत मे होगी। यह कानून के बल से उस सामाजिक प्रगति का दरवाजा बन्द कर देता है जो आपके खयाल से हमारा लक्ष्य होना चाहिए। वह इन विदेशी और भारतीय स्थापित स्वार्थों की रक्षा करता है और उनकी जडे मजबूत करता है। छोटे-छोटे सामाजिक सुधार के उपाय भी उपलब्ध नही है, क्योकि राज्य के आर्थिक साधनो का बहुत बडा हिस्सा स्थापित स्वार्थों की रक्षा के लिए रहन और सुरक्षित रख दिया गया है।

आजकल हर देश को प्रतिक्रिया और बुराई की शक्तियो के खिलाफ डटकर लडना पडता है। भारत इस नियम का अपवाद नही है। स्थिति का दुखद पहलू यह है कि ब्रिटिश जनता अनजाने अपनी ससद और अपने कर्मचारियो के जरिये आज भारत मे बुराई की ताकतो के पक्ष मे पूरी तरह खडी है। जो चीज वह अपने देश मे क्षणभर भी बर्दाश्त नही करेगी, उसे भारत में प्रोत्साहन दिया जाता है। आपने अब्राहम लिकन के बडे नाम का जिक्र किया है और मुझे याद दिलाया है कि वह सघ को कितना महत्व देते थे। शायद आपका यह खयाल है कि काग्रेस के आन्दोलन को दबाने की कोशिश में ब्रिटिश सरकार का यही पवित्र हेतु है कि फूट फैलानेवाली शक्तियो के मुकाबले में भारत की एकता को कायम रखा जाय। मै बिल्कुल नही समझ सकता कि उस आदोलन से भारत की एकता को कैसे खतरा है। सच पूछा जाय तो मेरा यह विचार है कि उस आदोलन या उसके जैसे ही किसी आदोलन से देश में अनन्य एकता पैदा हो सकती है और ब्रिटिश सरकार की प्रवृतिया हमें उल्टी दिशा में धकेलती है। परन्तु इसके अलावा क्या आप यह नही समझते कि लिकन की तुलना किसी पराधीन देश में स्वतत्रता-आन्दोलन को कुचलने के किसी साम्राज्यवादी सत्ता के प्रयत्न के साथ करना बहुत खीचतान

करना नही है ?

आप लोगो मे से बुरी और खुदगर्जी की आदतें और वृत्तिया मिटाना चाहते हैं। क्या आपका यह विचार है कि भारत मे अग्रेज लोग इस दिशा मे सहायक हो रहे हैं ? प्रतिगामी तत्वो का समर्थन करने के अलावा ब्रिटिश-शासन की पृष्ठभूमि विचार करने योग्य है। अवश्य ही उसका आधार व्यापक हिंसा के उग्र स्वरूप पर है और उसका एकमात्र बल भय है। वह उन साधारण स्वतत्रताओ का दमन करता है जो किसी प्रजा के विकास के लिए आवश्यक मानी जाती है, वह साहसी, बहादुर और तेज तबीयत लोगो को कुचलता है और डरपोक,अवसरवादी और समय-साधक,दब्बू और गुडे तत्वो को प्रोत्साहन देता है। वह अपने चारो ओर जासूसो, गुप्तचरो और भडकाकर अपराध करानेवाले लोगो की एक विशाल सेना रखता है । क्या ऐसे ही वायुमडल में वाछनीय गुण विकास करते है ? या लोकतत्री सस्थाए फूलती-फलती है ?

आप मुझसे पूछते है कि क्या कभी काग्रेस सारे भारत के लिए रजामन्दी से कोई उदार सविधान स्थापित कर सकती है, अगर वह बुनियादी बातो में सम्प्रदायवाद, सामन्तवाद और पूजीवाद को इसी प्रकार की रियायतें न दे ? इसमें यह बात मान ली गई है कि मौजूदा कानून रजामन्दी से कोई उदार सविधान स्थापित कर रहा है। यदि यह सविधान उदार है तो मेरे लिए यह कल्पना करना कठिन है कि अनुदार सविधान कैसा हो सकता है। रही बात रजामन्दी की, सो मुझे शका है कि जितना विरोध और जितनी नाराज़ी नये कानून से हिन्दुस्तान मे हुई है उतनी ब्रिटिश सरकार के और किसी काम से हुई हो। प्रसगवश, जरूरी रजामन्दी हासिल करने के जो उपाय किये गए, उनमें देशभर म अत्यन्त भयकर दमन भी हुआ और अब भी इस कानून को अमल में लाने की भूमिका के तौर पर सब प्रकार की स्वतत्रता को दबा देने के लिए अखिल भारतीय और प्रातीय कानून पास किये गए है। ऐसी परिस्थिति में रजामन्दी की बात करना निहायत गैरमामूली बात मालूम होती है। इसके बारे में इग्लैंड मे आश्चर्यजनक गलतफहमी है। यदि समस्या का सामना करना है तो प्रमुख तथ्यो की उपेक्षा नही की जा सकती।

यह सही है कि सरकार राजाओ और विभिन्न अल्पसख्यक गुटो के

साथ कुछ इतजाम कर लेने मे कामयाव हुई है, लेकिन ये गुट भी वहुत असतुष्ट है। उनके प्रतिनिधित्व पर असर डालनेवाली छोटी-मोटी व्यवस्थाओ की वात दूसरी है । मुख्य अल्पसख्यक जाति मुसलमानो को लीजिये । कोई नही कह सकता कि गोलमेज-परिषद् के अमीर, सामन्ती और दूसरे कठपुतली मुस्लिम सदस्य मुस्लिम जनता के नुमायन्दे थे । आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि अव भी काग्रेस को काफी मुस्लिम समर्थन प्राप्त है।

क्या काग्रेस इससे वेहतर कर सकती थी ? मुझे कोई सदेह नही कि जिस राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रतीक और मुख्य अलमवरदार काग्रेस है वह निश्चित रूप से वेहतर व्यवस्था कर सकती थी । काग्रेस वेशक मध्यम वर्ग की सस्था है (काश वह अधिक समाजवादी होती) और इसलिए सम्पत्ति का प्रश्न इस स्थिति मे किसी तीव्र रूप में खडा न होता । साम्प्रदायिक सवाल का सामना करना पडता है और मेरा खयाल है कि कम-से-कम फिलहाल वहुत-कुछ रजामन्दी के साथ हल कर लिया जाता। शायद शुरू मे सम्प्रदायवाद की कुछ मात्रा रह जाती, परन्तु वह नये कानून मे जितनी मात्रा मे है उससे कही कम होती । इससे अधिक महत्वपूर्ण वात यह होती कि जमीन की समस्या निपटा ली जाती और ऐसे हालात पैदा कर लिये जाते, जिनसे निकट भविष्य मे साम्प्रदायिकता खत्म हो जाती और सामाजिक ढग पर प्रगति होती । वास्तविक कठिनाइया दो है—ब्रिटिश सरकार और सिटी ऑव लदन के स्थापित स्वार्थ और राजा लोग। पहली कठिनाई मामले का मर्म है,और सव वाते वास्तव में गौण है। हालात को देखते हुए राजा लोग काफी हद तक नई परिस्थिति के अनुकूल वन जाते और काग्रेस जैसी आज वनी हुई है, उन्हे काफी छूट देती । लोकमत का दवाव,जिसमे उनकी अपनी प्रजा का दवाव शामिल है, उनके लिए इतना ज्यादा होता कि वे प्रतिकार नही कर सकते थे । शायद शुरू में देशी राज्यो के साथ कोई अस्थायी प्रवध कर लिया जाता, जिससे इस लोकमत का हालात के वनाने में हाथ मान लिया जाता । अगर यह मान लिया जाय कि राजाओ की खालिस निरकुशता का समर्थन करने के लिए ब्रिटिश सरकार मौजूद नही है तो कोई शक नही कि रियासतें धीरे-धीरे रास्ते पर आ जायंगी। गृहयुद्ध का कोई प्रश्न पैदा होना जरूरी नही है ।

मैं जो कुछ चाहता हू उससे ये सब बातें बहुत दूर होती, परन्तु सही दिशा में यह कम-से-कम एक निश्चित राजनैतिक और लोकतत्री कदम होता। जाहिर है कि कोई सविधान या राजनैतिक इमारत बनाने मे सब सबधित लोगो को रजामन्द कर लेना असभव होता है। अधिक-से-अधिक लोगो की सहमति प्राप्त करने की कोशिश की जाती है और दूसरे लोग जो सहमत नही होते वे या तो लोकतत्री प्रणाली के अनुसार रास्ते पर आ जाते है या उन्हे दबाकर ठीक किया जाता है। ब्रिटिश सरकार ने, निरकुश और एकाधिकारवादी परम्परा के अनुसार और अपने ही हितो को कायम रखने पर तुली होने के कारण, राजाओ और कुछ अन्य प्रतिगामी तत्वो की रजामन्दी हासिल करने की कोशिश की और लोगो के विशाल बहुमत को दबाया। काग्रेस निश्चित रूप से दूसरी ही तरह काम करती।

बेशक ये सारी बातें बिना तथ्य की और हवाई है, क्योकि इनमें मुख्य तत्व ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश आर्थिक हितो की उपेक्षा की गई है।

एक और विचार है, जो ध्यान देने योग्य है। महात्मा गाधी के नेतृत्व में काग्रेस ने अहिंसा पर और विरोधी को दबाने के बजाय उसका हृदय-परिवर्तन करने पर बड़ा जोर दिया है। इस सिद्धान्त के आध्यात्मिक पहलू और अतिम रूप में इसके कारगर होने-न-होने की बात को छोड भी दें तो इसमें कोई शक नही हो सकता कि उसने गृहयुद्ध के खिलाफ और हिंदुस्तान के विभिन्न समूहो के हृदय जीत लेने के पक्ष मे एक जबरदस्त भावना पैदा कर दी है। भारत की एकता कायम रखने और विरोध को हल्का कर देने में यह चीज हमारे लिए बडी कीमती है।

लोग असहयोग और सविनय-अवज्ञा-आदोलनो की इस दृष्टि से चर्चा करते है कि यह वैधानिक कार्रवाई है या नही। मैंने इस पहलू का जिक्र पहले किया है। आपको बताऊ कि मुझपर इनका हमेशा क्या असर हुआ है। अवश्य ही इन आदोलनो ने ब्रिटिश सरकार पर जबरदस्त दबाव डाला और सरकारी तत्र को हिला दिया। परन्तु उनका मेरे खयाल से असली महत्व इस बात में था कि हमारे अपने लोगो पर और विशेषत ग्रामीण जनसाधारण पर क्या असर पडा। दरिद्रता और लम्बे अर्से तक निरकुश शासन मे रहने के कारण डर और दबाव का जो अनिवार्य वातावरण पैदा हुआ उससे वे

बिल्कुल साहसहीन और पतित होगये । उनमें नागरिकता के लिए आवश्यक कोई भी गुण नही रहा । उनको छोटे-से-छोटे कर्मचारी, कर वसूल करनेवाला, पुलिस का सिपाही, जमीदार का गुमाश्ता थप्पड लगाता था और रोब गाठता था । उनमे हिम्मत की एकदम कमी थी और अत्याचार का प्रतिकार करने या मिलकर कार्रवाई करने की कोई क्षमता नही रह गई थी । वे दब्बू होगये थे और एक-दूसरे की चुगली खाते थे और जब जीना दूभर हो जाता था तो मरकर बचने की कोशिश करते थे । यह सब बडी दु खद स्थिति थी । फिर भी उन्हे इसके लिए दोष नही दिया जा सकता था । वे सर्वशक्तिमान परिस्थिति के शिकार थे । असहयोग उन्हे इस दलदल से बाहर निकाल लाया और उससे उन्हे स्वाभिमान और स्वावलम्बन प्राप्त हुआ । उनमे मिलकर काम करने की आदत पैदा हुई । वे साहस दिखाने लगे और आसानी से अन्यायपूर्ण अत्याचार के आगे दबना उन्होने बन्द कर दिया । उनका दृष्टिकोण व्यापक हुआ और वे सारे हिंदुस्तान की दृष्टि से कुछ-कुछ सोचने लगे । वे बाजारो और मिलने की जगहो पर (गवारू ढग से ही सही) राजनैतिक और आर्थिक प्रश्नो की चर्चा करने लगे । इसी प्रकार मध्यमवर्ग पर भी प्रभाव पडा, परन्तु आम लोगो मे जो परिवर्तन हुआ वह बहुत ही अर्थपूर्ण था । यह एक उल्लेखनीय कायापलट थी और इसका श्रेय गाधीजी के नेतृत्व में काग्रेस को मिलना चाहिए । सविधान और सरकार की रचना से यह कही अधिक महत्वपूर्ण वस्तु थी । यही बुनियाद थी, जिसपर कोई स्थिर रचना या सविधान का निर्माण किया जा सकता था ।

अवश्य ही इन सब चीजो से भारतीय जीवन मे कायापलट हुई । आम तौर पर दूसरे मुल्को मे ऐसी तब्दीलियो में बडे पैमाने पर द्वेष और हिंसा हुई है । परन्तु भारत में महात्मा गाधी की कृपा से ये चीजें मुकाबले में बहुत थोडी हुई है । हममें युद्ध के अनेक गुण उसकी भयकर बुराइयो के बगैर पैदा होगये और भारत की वास्तविक अनन्य एकता पहले से कही ज्यादा निकट आगई । धार्मिक और साम्प्रदायिक मतभेद भी कम होगये । आप जानते है कि ग्रामीण भारत अर्थात ८५ फीसदी हिन्दुस्तान से सबधित सबसे महत्वपूर्ण सवाल जमीन का सवाल है । किसी और देश में ऐसा कोई उल्कापात होता और साथ ही भयकर आर्थिक मन्दी होती तो वहा किसान विद्रोही हो जाते । यह

असाधारण बात है कि हिन्दुस्तान उनसे बच गया। इसका कारण सरकारी दमन नही था, बल्कि गाधीजी की शिक्षा और काग्रेस का सदेश था।

इस प्रकार काग्रेस ने देश की तमाम सजीव शक्तियो को मुक्त किया और बुरी और फूट पैदा करनेवाली वृत्तियो को दबाया। यह काम उसने शान्तिपूर्ण, अनुशासनबद्ध और यथासभव सभ्य ढग से किया, हालाकि ऐसे सामूहिक प्रदर्शन मे जोखम तो अनिवार्य रूप से थी। सरकार पर क्या प्रतिक्रिया हुई? और आप इसे अच्छी तरह से जानते है, उन सजीव और प्राणवान शक्तियो को कुचलने की कोशिश की गई और बुराई और फूट फैलानेवाली वृत्तियो को प्रोत्साहन दिया गया और यह सब अत्यन्त असभ्य तरीके पर किया गया। पिछले छ वर्षों मे ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुस्तान में खालिस फासिस्ट ढग से काम किया है। फर्क इतना-सा ही रहा कि फासिस्ट देशो की तरह उसने इस तथ्य पर खुला गर्व नही किया। यह पत्र भयकर रूप से लम्बा होगया है और अब मै नये सविधान कानून का ब्यौरेवार विचार नही करना चाहता। इसकी जरूरत भी नही है,क्योकि उस कानून का विश्लेपण और आलोचना हिन्दुस्तान में बहुत लोगो ने की है। उनके तरह-तरह के मत है, लेकिन एक बात में सब सहमत है कि यह कानून उन्हे बिल्कुल पसद नही है। अभी हाल ही में हिन्दुस्तानी नरम दल के नेताओ में से एक बहुत ही मशहूर नेता ने खानगी में नये सविधान को "हमारी तमाम राष्ट्रीय आकाक्षाओ के अत्यन्त जहरीले विरोध का सार" बताया है। क्या यह मार्के की बात नही है कि हमारे नरम राजनीतिज्ञ भी इस तरह सोचें और फिर भी भारतीय आकाक्षाओ के प्रति आपकी इतनी उदार सहानुभूति होते हुए आप उस कानून को पसद करें और कहे कि "उससे हिन्दुस्तान में सत्ता का किला हिन्दुस्तानियो के हाथ मे चला जाता है।" क्या हमारे विचार करने के तरीको मे इतनी गहरी खाई है? ऐसा क्यो है? यह राजनीति या अर्थशास्त्र की अपेक्षा मनोविज्ञान की समस्या अधिक बन जाती है।

आखिर तो मनोवैज्ञानिक पहलू बहुत महत्वपूर्ण है। क्या इग्लैण्ड में इस बात को अनुभव किया जाता है कि भारत के लिए पिछले कुछ बरस कैसे रहे है? किस प्रकार मानव-गौरव और शिष्टता को कुचलने के प्रयत्न ने और शरीर से भी अधिक आत्मा पर जो आघात हुए है उन्होने हिंदुस्तानी जनता पर

एक स्थायी असर छोडा है। मैंने पहले कभी इतनी अच्छी तरह अनुभव नही किया कि कैसे सत्ता के अत्याचारी प्रयोग से, जो उसका प्रयोग करते है और जो उस प्रयोग से कष्ट उठाते है, उन दोनो का पतन होता है। हम, जो कुछ शिष्ट और सम्मानपूर्ण है उस सबको भूले विना, इसको कैसे भूल सकते है ? हम उसे कैसे भूल सकते है जब वह रोजमर्रा होता है ? क्या स्वतत्रता और सत्ता का किला हस्तान्तरित करने की यही भूमिका है ?

अत्याचार की प्रतिक्रिया लोगो पर अलग-अलग होती है। कुछ हिम्मत छोडकर बैठ जाते है, कुछ और मजवूत होते है। और-और जगह की तरह भारत में भी दोनो तरहके लोग है। हममें-से वहुत-से अपने साथियो को, जो कैद-खाने मे या दूसरी तरह के कष्ट भोगते है, नही छोड सकते, चाहे नतीजा हमारे अपने लिए कुछ भी हो। हममें से बहुत-से लोग गाधीजी का अपमान सहन नही कर सकते, चाहे हम उनसे सहमत हो या न हो, क्योंकि गाधी हिंदुस्तान के सम्मान का प्रतिनिधि है। कोई समझदार आदमी सघर्ष, कष्ट और विनाश का मार्ग पसन्द नही करता। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन ने इस मार्ग से बचने की भरसक कोशिश की। अलबत्ता वह अपने अस्तित्व के आधार को तो छोड नही सकता था। परन्तु ब्रिटिश सरकार जरूर उसी रास्ते पर चली है और उसने शान्तिपूर्ण हल को ज्यादा-से-ज्यादा कठिन बना दिया है। अगर वह कल्पना करती है कि वह इसी दिशा में चलती रहकर कामयाब हो जायगी तो मालूम होता है कि उसने इतिहास के सवक को और भारत के लोगो की मौजूदा आदत को बहुत गलत समझा है। यदि विनाश से बचना है तो ब्रिटिश सरकार को अपने कदम पीछे हटाने पडेगे।

इतने लम्बे खत के लिए माफ कीजिये।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

दि मार्किस ऑव लोथियन,
सेमूर हाउस,
१७ वाटरलू प्लेस
लदन, एस डब्ल्यू-१

१२५. बरट्रैन्ड रसेल की ओर से

टेलीग्राफ हाउस
हार्टिंग, पीटर्सफील्ड
३० जनवरी १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे बडा दुख है कि जब आप इग्लैड आयेंगे तब मै आपसे नही मिल पाऊगा। मेरी पत्नी बीमार है और डाक्टर ने उन्हें किसी गरम जगह ले जाने का आदेश दिया है। लेकिन उन्हें यात्रा के योग्य स्वस्थ बनाने में बडी कठिनाई का सामना करना पडा है। इसकी वजह से मै अबतक यही बधा रहा और अब मै विदेश जा रहा हू। जैसाकि आप जानते है, मुझे आपके कार्य से और विशेष रूप से हिंदुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन को समाजवाद से सम्बद्ध करने के प्रयत्न से पूरी सहानुभूति है। मुझे आशा है कि आपकी यात्रा उपयोगी सिद्ध होगी, यद्यपि सरकारी दृष्टिकोण से यह समय बहुत अनुकूल नही है।

मगलकामनाओ सहित,

आपका,
बरट्रैन्ड रसेल

१२६ एम ए अन्सारी की ओर से

दारुस्सलाम, दरियागज,
दिल्ली
११ फरवरी १९३६

प्रिय जवाहर,

तुम्हारे बहुत उम्दा और दिलचस्प खत के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। तुम ठीक कहते हो कि खत एक बहुत ज्यादा निजी और दिली दोस्ती की चीज है। तस्वीरी पोस्टकार्ड से उसका कोई मुकाबला नही किया जा सकता। मेरा सुझाव सिर्फ यही था कि जब तुम्हारे लिए अपनी खतो-किताबत को निपटाना नामुमकिन होगया तो तुम्हारा बोझ हल्का हो। लेकिन फिर तुम तुम कहा रह जाओगे, अगर तुम अपने फर्जो को बहादुरी के साथ पूरा न करो, आया वे फर्ज अवाम के हो या निजी। मैने खुद सादा डाक से

विलायत मे अपने दोस्तो से खतो-किताबत बद कर दी है। दो-तीन हफ्ते की घिसी-पिटी खबरे लिखकर जाने देना मुझे वक्त की बरबादी लगती है, जबकि तुम सिर्फ एक हफ्ते पुरानी खबरें दे सकते हो। जवाब मे भी ऐसा ही होगा। मुझे उम्मीद है, लोजान पहुचकर कमला की तदुरुस्ती बेहतर हो रही है। पता नही, कमला लोजान मे किस सैनेटोरियम मे ठहरी होगी ? मुझे लोजान बहुत पसन्द है। क्या ही खबसूरत शहर है और कैसा बीचो-बीच बसा हुआ है। वहा से आप चुटकी बजाते लेसिन या मन्टना पहुच सकते है। मै कमला की सेहत की बेहतरी की खबर सुनने के लिए बहुत बेताब हू। तुम अबतक लोजान लौट आये होगे, जिससे वह बेहद खुश हो गई होगी।

लेकिन मुझे हैरानी हो रही है कि अब जब तुम काग्रेस के सदर चुन लिये गये हो, तुम क्या करोगे ? कमला अभी इतनी कमजोर है कि उसे हिंदुस्तान वापस लाने का सवाल ही नही उठता। तुम वहा आधे मार्च से ज्यादा ठहर नही सकते। ऐसी सूरत में जब तुम कमला को वहा छोडकर हिंदुस्तान लौटोगे तो उसकी सेहत पर बहुत खराब असर पडेगा। मै नही समझता कि तदुरुस्ती की मौजूदा हालत में तुम कैसे उसे ज्यादा देर तक छोडकर रह सकते हो ? तुमसे साफ-साफ कह दू कि जो लोग इस साल तुम्हे काग्रेस का सदर चुनने के लिए जिम्मेवार है वे तुम्हारी घरेलू दिक्कतो के नुक्ते निगाह से और अवाम के नजरिये से तुम्हारे तईं बहुत ही नासमझ और बेरहम है। मै नही समझता कि मौजूदा हालत में तुम्हारी असर रखनेवाली शख्सियत भी तुम्हारी सालभर की सदारत के दौरान में कोई खास बात करके दिखा सकेगी ! अगर साल के आखिर में कुछ हासिल न हुआ तो महज यह बात कि हमारे सबसे अच्छे आदमियो में से एक कुछ करने में नाकामयाब रहा, एक बहुत बडी मायूसी पैदा कर देगी। मै महसूस करता हू कि मौजूदा कैफियत में असेम्बलियो का प्रोग्राम (जो हालाकि आजादी या आजादी का जुज भी पास लाने में कोई खास कारआमद साबित न होगा) कम-से-कम जद्दो-जहद से थके हुए लोगो को कुछ आराम का मौका दे देता और आगे आनेवाले वक्त में आगे बढने के लिए बहुत-कुछ शुरुआत का काम कर सकता है। हालाकि बिगडी हुई सेहत ने मुझे भाग-दौड की सियासत से छुट्टी लेने पर मजबूर कर दिया है, फिर भी तुम्हारे लौटने पर मै तुमसे साफ-साफ

और तफसील से चर्चा करना चाहूगा।

मुझे यह कहते हुए बडी खुशी है कि महात्माजी अब बेहतर है। लेकिन मुझे यह बताया गया कि इस बार उनकी तदुरुस्ती बहुत खराब होगई थी। मुझे यह बताते भी खुशी होती है कि मेरी तदुरुस्ती बेहतर है, लेकिन मै बाल-बाल ही बचा हू, मुझे और ज्यादा होशियार रहना होगा। जोहरा अपने इम्तहान के नतीजे का इतजार कर रही है। मुझे उम्मीद है, इस बार वह कामयाब हो जायगी। मै ठीक से नही कह सकता कि इसके बाद वह क्या करेगी। कभी-कभी वह कहती है कि हिंदुस्तान में ही किसी कालिज में भर्ती होकर बी ए की तैयारी करेगी, लेकिन कभी-कभी कैम्ब्रिज जाना चाहती है। मै मामला पूरी तौर पर उसीके ऊपर छोड दूगा। वह तुम्हे, कमला और इन्दू को अपना प्यार और बदगी भेजती है।

तुम सबको प्यार।

तुम्हारा,
एम. ए अन्सारी

फिर से—

मैने सादा डाक से तुम्हे अपनी किताब 'रीजनरेशन इन मैन' भेजी है। मुझे उम्मीद है, तुम्हे पसन्द आयेगी।

१२७ मदलेन रोला की ओर से

विलनेव (वो)
१७ फरवरी १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

मेरे भाई की वर्षगाठ पर आपकी भेजी गई शुभकामनाओ के लिए मेरे भाई आपको हार्दिक धन्यवाद देते है और वह इस बात पर खेद भी प्रकट करते है कि आपके प्रस्थान से पहले आपसे मिलना हमारे लिए सभव नही है। लेकिन हम अच्छी तरह से जानने है कि इससे पहले जो कुछ दिन रह गये है उन्हें आप हमारे परिवार को नही दे सकते है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि श्रीमती नेहरू पहले से अच्छी हैं।

मैं आशा करती हू, अगले महीने उनसे मिलने के लिए डाक्टर मुझे अनुमति दे देंगे। इसके अतिरिक्त मैं क्लिनिक को फोन करके पहले मालूम कर लूगी कि उन्हें मिलने में कब सुभीता रहेगा।

मैं 'सैंटिनेल' का वह अक भेज रही हू, जिसमे गाधी पर आपका लेख प्रकाशित हुआ है। 'वाद्रेदी' के पास आपका लेख पहले से ही था, इसलिए उसमें वह नही छप सका, लेकिन मैंने उसे 'यूरोप' को भेज दिया है। पत्र की व्यवस्था मे परिवर्तन हो जाने के कारण मुझे अबतक उसके बारे मे कोई सूचना नहीं मिली, लेकिन श्री राजाराव से, जो वहा से आ रहे है, मैंने अनुरोध किया है कि वह इस मामले को अपने हाथ में लें।

मैंने कुमारी इदिरा से कहा था कि वह काग्रेस के अध्यक्ष-पद के लिए आपके नये चुनाव पर आपको हमारी बधाई दें। हिंदुस्तान की दृष्टि से हमें इस बात पर बडी प्रसन्नता है। आपके लिए हमारी शुभ कामनाए।

सप्रेम,

मदलेन रोलां

वहा के हमारे सब मित्रो को हमारी ओर से अभिवादन देने की कृपा कीजिये।

१२८ एलेन विल्किन्सन की ओर से

हाउस ऑव कामन्स,

लंदन

१७ फरवरी १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

(मैं समझता हू कि इस बार मैंने सही-सही लिखा है!)

कृपाकर टाइप किया हुआ पत्र भेजने के लिए क्षमा कीजियेगा। लेकिन आपका पत्र आने के बाद से मुझे दम मारने की भी फुर्सत नही मिली। इसी बीच मुझे हवाई जहाज से बर्लिन की एक तूफानी यात्रा भी करनी पडी।

अलग डाक से मैं 'टाइम एण्ड टाइड' की एक प्रति भेज रहा हू, जिसमें, मैं समझता हू, आप अपनी यात्रा के बारे में प्रोफेसर लास्की के विचार पढना पसन्द करेंगे, जिसमें कि हम सबकी प्रतिध्वनि है।

लेडी रोन्डा ने मुझसे पूछा है कि शाति की रक्षा की सम्भव युक्तियो के बारे में जेरल्ड हर्ड 'टाइम एण्ड टाइड' में जो लेखमाला लिख रहे है उसमें उनके बाद क्या आप भी कुछ लिख सकेंगे ? ब्रिटिश उपनिवेशो और विरोधी देशो के साथ कुछ-न-कुछ समझौता करने के बारे मे आपने लायड जार्ज को जो कहते सुना है, वही विचार पार्लमेंट के काफी सदस्यो का है। आपने अपने भाषण में कहा था—"औपनिवेशिक देशो का क्या होगा ? जो कुछ होनेवाला है, क्या उसके बारे में उन्हें कुछ कहने का अधिकार नही होगा ? क्या उन्हें यह बताने का अधिकार नही है कि वे अपना स्वामी बदलना चाहते है या कोई स्वामी चाहते भी है या नही ?" आपकी इस बात का लोगो पर जो असर पडा वह मैंने लेडी रोन्डा को बता दिया है। वह जानना चाहती है कि इस देश में उपनिवेशो के साथ सहयोग करने के बारे में जो सद्भावनापूर्ण चेष्टाए की जा रही है उनके सबध में क्या आप उपनिवेशो की ओर से अपने विचार प्रकट करना चाहेंगे चाहे आप कितने ही जोरदार शब्दो में अपने विचार प्रकट करना क्यो न पसद करें ? मैं समझता हू कि अगर आपके पास समय हो तो ऐसा करना उचित होगा। बेशक इसके लिए पारिश्रमिक दिया जायगा, यद्यपि मुझे भय है कि वह ज्यादा नही होगा। लेडी रोन्डा का खयाल है कि लगभग एक हजार शब्द काफी होगे। अगर आप समझते है कि आप भारत जाने से पहले ऐसा नही कर सकेंगे और रास्ते में जहाज पर से कुछ लिखकर भेजना पसन्द करेंगे तो आप कृपाकर लेडी रोन्डा को ऐसा लिख भेजिये। उनके दफ्तर का पता है—३२ ब्लूम्सबरी स्ट्रीट, डब्ल्यू सी -१।

मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता है कि आपने कमला को पहले से कुछ अच्छा पाया और इस बात की सम्भावना है कि वह खतरे को पार कर गई है।

आप हमारे साथ रहे, यह हमारे लिए एक बडे सौभाग्य की बात है। आपकी इस यात्रा से मूर्ति-पूजको के बीच बडी सद्भावना फैली है।

आप दोनो को आदरसहित,

आपका,

एलेन

श्री जवाहरलाल नेहरू

१२९ रोम्या रोला की ओर से

विला ओल्गा,
विलनेव (वो)
मगलवार, २५ फरवरी १९३६

प्रिय मित्र,

अपने बुरे स्वास्थ्य के कारण मै आपके जाने से पहले आपके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए नही आ सका। जबतक आप और मै एक ही जगह पर थे, उसी बीच ही मै चाहता था कि कम-से-कम आपको, आपकी पत्नी तथा आपके प्यारे देश को स्नेहभरी शुभकामनाए भेज दू।

भावना के स्तर पर मै अनुभव करता हू कि यह विछोह आपके लिए कैसा होगा! मेरी कामना है कि आगे आनेवाले वसत तक श्रीमती जवाहर-लाल नेहरू के स्वास्थ्य मे सुधार होजाय और आप शात मन से अपने उस कार्य पर लौटें, जो वहा आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

मुझे आशा है कि आपके मार्ग-दर्शन में हिंदुस्तान हमारे पश्चिम की तरह इस बात को जान जायगा कि उसकी राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति में जो रोडे अटका रहे है, उन सबके विरुद्ध किस प्रकार 'जनवादी मोर्चा' प्रस्तुत करे।

मुझसे कहा गया है कि मै आपसे और गाधीजी से भी अनुरोध करू कि आप दोनो उस विश्व-शाति-सम्मेलन में शामिल हो, जिसे हम गर्मियो के अत में, सभवत सितबर में, जिनेवा में करने जा रहे है। वह एक विशाल और शक्तिशाली काग्रेस होगी—एक प्रकार से विश्व-व्यापी शाति की शक्तियो को सक्रिय करने के लिए। फ्रास, इग्लैंड, अमरीका, चैकोस्लोवेकिया, स्पेन, बेलजियम, हालैंड तथा दूसरे बहुत-से देशो के अनेक राष्ट्रीय एव अतर्राष्ट्रीय सस्थाओ और सम्माननीय व्यक्तियो ने उसमे आना स्वीकार कर लिया है (इग्लैंड के लार्ड राबर्ट सैसिल, मेजर एटली, नारमन एजिल, फिलिप नायल बेकर, एलेग्जेंडर, प्रो लास्की। फ्रास के एरिओ, पियेर को, ज़ुओ, कार्द्रे, राकामो, प्रो लाजवें, इत्यादि। चैकोस्लोवेकिया के बेनेश्, होज़ा। स्पेन के अयान्या, आलवारेथ देल वायो आदि। बेलजियम के लुई दे ब्रुकेर, आरी लाफोंतेन इत्यादि)। इसका मतलब यह हुआ कि राष्ट्रीय

तथा अतर्राष्ट्रीय पैमाने पर एक ऐसा संगठन बनेगा, जो विश्वव्यापी ज्वाला के सकटपूर्ण खतरे का प्रतिरोध करेगा। हमारे भारतीय मित्रो को जब आप हमारा अभिवादन दे तो कृपया इस सबंध में भी उनसे चर्चा करलें। उनका और आपका भी उत्तर या तो मुझे भेज दिया जाय या 'युद्ध और फासिज्म-विरोधी सघर्ष की विश्व-समिति' के कार्यालय को, जिसका कि उन्होने मुझे अवैतनिक अध्यक्ष बनाया है। (२३७ लाफाइयेत पेरिस-१०)।

मुझे आशा है, हम लोगो का आपसे और हमारे भारतीय मित्रो से नियमित पत्र-व्यवहार करते रहना सभव होगा। इसका मतलब यह हुआ कि हिंदुस्तान में जो भी सामाजिक और राजनैतिक कार्य हो, उनके बारे में पश्चिमी राय बराबर ध्यान में रहे, क्योकि इधर बहुत-से ऐसे लोग है, जो कि उस विषय में मौन रहते है या झूठी खबरें फैलाते है।

मै सम्पूर्ण हृदय से आपसे हाथ मिलाता हू। मेरे प्यारे मित्र, स्वस्थ रहना, प्रसन्न रहना और अपने उस ध्येय को प्राप्त करना, जो कि सच्चे भारत का ध्येय है।

सादर,

आपका,

रोम्या रोला

गाधी और उनके मित्रो को—मीरा, प्यारेलाल और महादेव देसाई, जो कि विलनेव मे हमारे अतिथि रहे थे—मेरा अभिवादन निवेदन कर दीजिये।

'वाद्रेदी' में आपका जो लेख मैंदम आद्रे विवलि की भूमिका के साथ प्रकाशित हुआ है, उसे मैंने बडी रुचि से पढा है। आपका दूसरा लेख, जो आपने मेरी बहन को भेजा है, 'यूरोप' के मार्च अक में छपेगा।

१३० सुभाषचद्र बोस की ओर से

कुरहाउस् हख्लान्ड
बाडगास्टाइन (आस्ट्रिया)
४ मार्च १९३६

प्रिय जवाहर,

लम्बी और थका देनेवाली यात्रा के बाद मै कल सुबह यहा पहुचा।

यह स्थान सुन्दर और शात है। मैं चाहता हू कि काम के भवर-जाल मे कूद पडने के पहले तुम यूरोप मे थोडा आराम कर लो।

तुमसे विदा होने के बाद मैं सोच रहा हू कि क्या सचमुच मुझे उस तरह का बयान जारी करना चाहिए जैसा कि मैंने तुमसे जिक्र किया था। मेरा खयाल है कि मुझे बयान देना चाहिए, कारण मेरे पुन जेल जाने की सभावना है और कुछ लोग जरूर ऐसे होगे जो मेरे सुझाव पाना चाहेगे। मैं यथासभव सक्षिप्त बयान दूगा और उसमे साफ तौर से जता दूगा कि मैंने निश्चित रूप से तुम्हे पूरा समर्थन देने का फैसला किया है।

आज के प्रमुख नेताओ में से तुम्ही एक ऐसे व्यक्ति हो, जिससे हम काग्रेस को प्रगतिशील दिशा में ले जाने की आशा कर सकते है। इसके अलावा, तुम्हारी स्थिति असाधारण है, और मेरे खयाल से महात्माजी भी और किसीकी अपेक्षा तुम्हारा ज्यादा लिहाज करेंगे। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि तुम फैसले करने में अपनी सार्वजनिक स्थिति की मजबूती का पूरा फायदा उठाओगे। कृपया अपनी स्थिति को वास्तविकता से अधिक कमजोर मत समझो। गाधीजी हरगिज ऐसा रुख नही अपनायेंगे, जो तुम्हे दूर ले जानेवाला हो सकता है।

जैसा कि मैंने अपनी पिछली बातचीत में सुझाया था तुमको तत्काल दो काम करने होगे (१) हर तरह से पदग्रहण को रोको, (२) काग्रेस कार्य-समिति को विस्तृत और व्यापक करो। यदि यह कर लोगे तो तुम काग्रेस को पतन से बचा लोगे और उसे लीक से बाहर ला सकोगे। बडी समस्याओ का हल थोडी प्रतीक्षा कर सकता है, किन्तु काग्रेस को पतन की राह पर जाने से तो तुरन्त ही बचाना होगा।

मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई कि तुम काग्रेस का विदेश-विभाग स्थापित करना चाहते हो। यह बात मेरे विचारो से पूरी तरह मेल खाती है।

मैं इस पत्र को लम्बा नही करना चाहता, क्योकि तुम्हे भी रवाना होने की जल्दी होगी और रवाना होने के पहले बहुत-से काम निपटाने होगे। मैं तुम्हारी सकुशल स्वदेश-यात्रा की कामना करता हू, और जो कठिन कार्य तुम्हारा इन्तजार कर रहा है, उसमे तुम्हारी प्रचुर सफलता चाहता हू।

अगर मुझे लखनऊ आने दिया गया तो मेरी सेवाए तुम्हारे अधीन होगी।

तुम्हारा,
सुभाष

१३१. एच. एन ब्रेल्सफोर्ड की ओर से

३७ बेलसाइज्ज पार्क गार्डन्स,
लदन एन. डब्ल्यू. ३
८ मार्च १९३६

कृपाकर इसका उत्तर न दें।

प्रिय नेहरू,

आपको जो धक्का लगा है, उसकी, मै समझता हू, आपको महीनो से शका रही होगी, फिर भी आप सदा यही आशा करते रहे होगे कि प्रकृति कोई जादू कर देगी। लेकिन दु ख का यह पहाड आखिर आपपर अटूट ही पडा । मुझे भय है कि इतने दिनो की लम्बी चिन्ता के बाद आपमें इतनी शक्ति नही रह गई होगी कि आप इस दु ख का सामना कर सकें। आपके मित्र चाहे कितनी भी सहानुभूति दिखायें, उससे आपका दु ख कम नही हो सकता। हा, मुझ जैसे लोग, जो उनसे मिल चुके है—मै तो उनसे क्षणभर के लिए ही मिल पाया था—वे आपकी विपदा का अनुभव अवश्य कर सकते है, क्योकि वे जानते है कि आपकी पत्नी कितनी अच्छी और असामान्य महिला थी। लेकिन अगर मेरे शब्दो से आपको कुछ ढाढस मिले तो मै कहना चाहूगा कि हमें आपके दु ख मे आपके साथ बडी गहरी और हार्दिक सहानुभूति है।

दु ख की इस घडी में आप अपना कम मूल्याकन न करें। हिंदुस्तान को आपकी बहुत आवश्यकता है, खास तौर से और व्यक्तिगत रूप में आपकी। मै समझता हू कि कमोबेश मै आपके यहा के दूसरे नेताओ को भी जानता हू। किसीमें भी आप जैसा साहस और मानसिक बल नही है। सबसे बड़ी बात यह है कि वर्गहीन समाज की जो कल्पना आपके मस्तिष्क में है वह किसीके मस्तिष्क में नही है। आप यह विश्वास मानिये कि इतिहास ने आपको ही नेतृत्व करने के लिए चुना है और इस विश्वास से अपने में शक्ति भरिये।

आपने 'विश्व इतिहास की झलक' की एक प्रति भेजने की जो कृपा की है उसके लिए क्या मैं आपको धन्यवाद दे दू ? इसे मैं बडी दिलचस्पी के साथ पढूगा। आपने मुझे याद किया, इससे मैं बडा अभिभूत हुआ हू।

स्नेहसहित,

आपका,
एच. एन. ब्रेल्सफोर्ड

१३२. महात्मा गाधी की ओर से

दिल्ली
९ मार्च १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

तो तुम कमला को सदा के लिए यूरोप में छोडकर लौट आये! फिर भी उसकी आत्मा कभी भारत से बाहर नही थी और हममे से अनेको की भाति सदा तुम्हारा रत्न-भडार बनकर रहेगी। मै उस अतिम वार्तालाप को कभी नही भूलूगा, जिसने हमारी चार आखो को गीला किया था।

यहा भारी जिम्मेदारी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। वह तुमपर डाली गई है, क्योकि तुम उसे उठाने की क्षमता रखते हो। तुम्हारे पास आने का मेरा साहस नही होता। मेरे शरीर मे मूल लचक वापस आगई होती तो साहस करता। मुझमें कोई भीतरी खराबी नही है। शरीर का वजन तो बढा ही है। परन्तु तीन ही महीने पहले जो जीवन-शक्ति इसमे थी वह जाती रही। आश्चर्य की बात यह है कि मुझे कभी बीमारी महसूस नही हुई। फिर भी शरीर कमजोर होगया था और यत्र ऊचा रक्तचाप बताता था। मुझे सावधान रहना पडेगा।

मैं आराम लेने के लिए कुछ दिन दिल्ली में हू। अगर तुम्हारी मूल योजना कार्यान्वित हो जाती तो मैं अपनी मुलाकात के लिए वर्धा में रह जाता। तुम्हारे लिए वहा अधिक शाति होती। लेकिन तुम्हारे लिए एक-सी ही बात हो तो हम दिल्ली में मिल सकते हैं। वहा मैं कम-से-कम इस महीने की २३ तारीख तक रहूगा। लेकिन अगर तुम्हे वर्धा ज्यादा पसन्द हो तो मैं वहा इससे पहले लौट सकता हू। अगर तुम दिल्ली आओ तो किंग्स्वे मे नये बनाये गए हरिजन-निवास में मेरे साथ ठहर सकते हो। यह काफी अच्छी

जगह है। जब बता सको मुझे बता देना कि हमारे मिलने की कौन-सी तारीख रहे। राजेन्द्रबाबू और जमनालालजी तुम्हारे साथ हैं या होंगे। वल्लभभाई भी होते, परन्तु हम सबने सोचा कि वह दूर रहे तो बेहतर होगा। दूसरे दोनों वहां राजनैतिक चर्चा के लिए नहीं, पर मातमपुरसी के लिए गये हैं। राजनैतिक चर्चा तब होगी जब हम सब मिलेंगे और तुम घरू कामकाज निपटा लोगे।

आशा है, इन्दू ने कमला के निधन का और तुम्हारे तुरत के वियोग का दु ख भली प्रकार सहन कर लिया होगा। उसका पता क्या है?

तुम सब प्रकार सकुशल होगे।

सप्रेम,
बापू

१३३. सुभाषचन्द्र बोस की ओर से

कुरहाउस् हख्लान्ड,
बाडगाश्टाइन (आस्ट्रिया)
१३ मार्च १९३६

प्रिय जवाहर,

मुझे अभी-अभी विएना-स्थित ब्रिटिश कौंसिल का जरूरी पत्र मिला है, जो इस प्रकार है

"मुझे विदेश-मंत्री ने आपको यह चेतावनी देने के लिए हिदायत दी है भारत सरकार को समाचारपत्रों से यह पता चला है कि आप इसी महीने भारत लौटना चाह रहे हैं और भारत सरकार यह स्पष्ट करना चाहती है कि अगर आपने ऐसा किया तो आप स्वतंत्र रहने की आशा नहीं कर सकते।

(ह) जे. डब्ल्यू. टेलर
ब्रिटिश कॉंसल"

मैं अपनी यात्रा का प्रबंध करने जा ही रहा था कि यह पत्र मिला। सच बात यह है, मैंने अपने प्रवास का प्रबंध करने में इसलिए देरी की कि मैं यह अंदाज कर रहा था कि समुद्री यात्रा से ज्यादा फायदा होगा या हवाई

यात्रा से। हवाई यात्रा की दशा में मैं अपने इलाज का क्रम यहा पूरा कर सकता था, जिसमे कुल पच्चीस दिन लगेगे।

यहा कोई ऐसा व्यक्ति नही है और न यूरोप मे ही कोई दिखाई देता है, जिससे ऐसे मामले मे सलाह ली जा सके। फिलहाल मेरा झुकाव तो यही है—तुम अपनी खुद की प्रतिक्रिया से भी उसकी भली-भाति कल्पना कर सकते हो—कि इस चेतावनी की उपेक्षा करू और स्वदेश के लिए रवाना हो जाऊ। केवल एक ही बात का विचार करना है कि कौन-सा मार्ग सार्वजनिक हित की दृष्टि से ठीक होगा। व्यक्तिगत लाभ-हानि का मेरे लिए कोई महत्व नही है और व्यक्तिश मैं वही रास्ता अपनाने को तैयार हू, जिससे सार्वजनिक हित होता हो। मैं सार्वजनिक मामलो से इतने अधिक समय से अलग हू कि मेरे लिए यह पता लगाना मुश्किल है कि कौन-सा कदम सार्वजनिक हित के खयाल से सबसे अच्छा रहेगा। शायद तुम इस बारे में मुझे सलाह दे सको। मै यह जानता हू कि तुम्हारे लिए भी ऐसी हालत में किसी दूसरे को सलाह देना मुश्किल होगा। किन्तु तुम आसानी से व्यक्तिगत मुद्दे को भुला दे सकते हो—मैं जानता हू कि जब सार्वजनिक सवाल सामने हो तो तुम ऐसा कर सकते हो—और एक सार्वजनिक कार्यकर्ता को एकमात्र सार्वजनिक हित के खयाल से सलाह दे सकते हो। अपने देश के सार्वजनिक जीवन में जो प्रमुख स्थान तुम्हे प्राप्त है, उसकी दृष्टि से भी तुम ऐसी अजीब और अरुचिकर परिस्थितियो में सलाह देने की जिम्मेदारी से बच नही सकते।

मैं इस मामले में तुम्हे केवल इसीलिए कष्ट देना चाहता हू कि मैं और ऐसे किसी व्यक्ति की कल्पना नही कर सकता, जिसपर मै अधिक भरोसा कर सकू। समय इतना थोडा है कि मै कई लोगो की सलाह ले भी नही सकता। अपने रिश्तेदारो से सलाह लेना भी बेकार होगा, क्योंकि हो सकता है कि वे इस मामले पर विशुद्ध सार्वजनिक दृष्टि से विचार न कर सकें। अत मेरे लिए यही रास्ता खुला है कि मै तुम्हारी सलाह पर भरोसा करू। तुमको यह पत्र २० ता तक मिल जायगा। अगर तुम कृपाकर के, पत्र मिलने के फौरन बाद तार से जवाब दो तो वह मुझे समय पर मिल जायगा। मैं के एल एम वायुयान पकड सकता हू, जो रोम से २ अप्रैल को रवाना होता है। इस तरह अगर मै २१ या २२ को भी भारत के लिए रवाना होने का

आखिरी फैसला करू तो मुझे उस हवाई जहाज में जगह मिल सकती है, जो रोम से २ अप्रैल को रवाना होता है। यह भी मुमकिन हो सकता है कि मुझे २९ मार्च को रवाना होनेवाले हवाई जहाज में जगह मिल जाय।

जब मैंने इस तरह स्वदेश लौटने का इरादा किया था कि मैं लखनऊ कांग्रेस मे शरीक हो सकू तो अवश्य ही यह सभावना थी कि हिंदुस्तान में उतरते ही मुझे पकडकर जेल में बद कर दिया जायगा। लेकिन साथ ही यह सभावना भी थी कि मुझे कम-से-कम कुछ समय आजाद रहने दिया जायगा। यह सभावना अब बिल्कुल खत्म हो जाती है और अब स्वदेश लौटने का मतलब होता है जेल में दाखिल होना। बेशक जेल में जाने की भी जन-हित की दृष्टि से अपनी उपयोगिता है, और इस प्रकार के सरकारी आदेश की अवहेलना करने और जान-बूझकर जेल का आवाहन करने के हक में बहुत-कुछ कहा जा सकता है।

कृपया यथासभव शीघ्र मुझे उत्तर भेजें। इस पते पर तार भेज सकते है

बोस, कुरहाउस्, हख्लान्ड, बाडगाश्टाइन, आस्ट्रिया।

आशा है, तुम्हारी यात्रा आरामदेह रही होगी और तुम्हारा स्वास्थ्य संतोषजनक होगा।

तुम्हारा,
सुभाष

कल ही मैंने एक अखबारी सदेश में यह सकेत दिया है कि यहा अपना इलाज पूरा करने के बाद वायुयान द्वारा मेरे जाने की सभावना है।

सु च. बोस

१३४ एलेन विल्किन्सन की ओर से

हाउस ऑव कामन्स
लन्दन
२२ मार्च १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

क्षमा कीजिये, यह पत्र टाइप कराके भेज रहा हू। इसका अर्थ यह नही है कि मै जल्दी में हू या ऐसा मैंने औपचारिकता के कारण किया है, बल्कि बात केवल इतनी है कि आदत पड जाने के कारण यह मशीन ही मेरे लिखने

का स्वाभाविक ढग वन गई है (गाधीजी की प्रतिच्छाया !) । लेन ने मेरे पास आपकी किताब के पेजप्रूफ भेजे है। इसे पढकर मै सचमुच रोमाचित हो उठा हू । यह वात मै विनम्रतावश नही कह रहा हू । कुछ जरूरी काम के लिए मै कामन्स-सभा से जल्दी ही घर लौट आया था । किताव मेरी प्रतीक्षा कर रही थी और मैने वैठकर उसे उसी रात पढ डाला । फिर मैने खुद चाय बनाई और सबेरे साढे पाच बजे के आसपास उसे आपकी याद में पीया।

यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है और हिंदुस्तान की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए अनिवार्य है । आपके प्रकाशको को चिन्ता है कि यह कही जब्त तो नही कर ली जायगी । जसाकि आप जानते है, यह बात केवल बडे अधिकारी बता सकते है । मै समझता हू कि बहुत-कुछ प्रकाशन के समय की स्थिति पर निर्भर होगा । शायद लोग यह सोचे कि आपने गाधीजी की जो आलोचना की है, उससे काग्रेस में फूट पडने में सहायता मिलेगी । हमारे देशवासियो के सरकारी दिमाग के वारे में कुछ निश्चय के साथ नही कहा जा सकता । जब आपके देश की बात उठती है तब यहा के समझदार-से-समझदार लोगो को भी कुछ हो-सा जाता है ।

फिर भी अधिकारियो ने इसका हिंदुस्तान के लिए निषेध किया तो उनके ऐसा करने से इग्लैड और अमरीका में पुस्तक के लिए बडा शानदार प्रचार हो जायगा । कामन्स-सभा में हम खूब हो-हल्ला मचायेंगे और उस ओर जनता का ध्यान आकर्षित करेंगे । सच तो यह है कि इग्लैड में ऐसी पुस्तक की अधिक आवश्यकता है । अच्छे-से-अच्छे वामपक्षियो को भी भारत के सवध में घोर अज्ञान है । मै समझता हू कि पुस्तक के अन्तिम परिच्छेदो से और आपने काग्रेस तथा गाधीजी का जो विश्लेषण किया है उससे तथा आपने जो समाजवादी निष्कर्ष निकाला है उससे भी इग्लैड के समाजवादियो में इसके प्रति वडी रुचि जागृत हो जायगी । ताल्लुकेदारो के वारे में गाधीजी के विचार सव लोग जान गये है । यह सव 'मेनचैस्टर गार्जियन' और 'दि टाइम्स' की वदौलत हुआ है । काफी लोगो की यह आम भावना है कि आप गाधीजी के आध्यात्मिक पुत्र और उत्तराधिकारी है ।

हो सकता है कि ये सारी वातें आपको रुचिकर न लगें, क्योकि आपने

यह पुस्तक विशेष रूप से हिंदुस्तान के लिए लिखी है। अगर अधिकारियो ने पुस्तक को सचमुच जब्त किया तो यह एक बहुत ही लज्जाजनक बात होगी, क्योकि जिन बातो को लेकर आप क्रोध से आगबगूला हो सकते थे उनके सबध मे आपने बडी शान से अवैयक्तिक ढग से विचार किया है। मै इस बात की चेष्टा करूगा कि प्रकाशन से पहले एक-दो प्रभावशाली व्यक्ति इस पुस्तक को पढ लें। इससे निश्चय ही सहायता मिलेगी।

जब मुझे आपकी पत्नी का दु खद समाचार मिला तो मैंने आपको पत्र नही लिखा। मैंने सोचा कि जो कुछ भी शब्दो में कहा जा सकता है वह सब मेरा तार कह देगा। कमला की सारी स्मृतिया मेरे मन में सजीव थी और जब मैंने उनके बारे मे आपको पुस्तक में पढा तब मुझे स्मरण हो आया कि जब हम हिंदुस्तान मे थे तब उन्होने अपने दु ख और कष्ट के समय भी हमारे साथ कितनी कृपा दिखलाई थी। मै समझता हू कि यह आशा करना व्यर्थ होगा कि जिन लोगो ने आपको उनसे उनके अतिम वर्ष में अलग रखा, उन्हें अपने ऊपर पर्याप्त ग्लानि होगी।

कामन्स-सभा में आजकल हमारी सारी बहसें युद्ध-सबधी तैयारियो के बारे में ही होती है, यहातक कि फौरन युद्ध छेडने के लिए बडे-बडे उद्योगो को भी पुन सगठित करने की बात सोची जाती है। आपके जाने के बाद से स्थिति और भी बिगड गई है। राइनलैंड पर हिटलर के आक्रमण से स्वभावत फासिस्ट-विरोधी लोग भडक उठे है। वे सोचते है कि इस समय फ्रास की सहायता करके वे हिटलर को नष्ट करने में सहायता दे सकते है। सन् १९१४ ई की 'प्रजातत्र की खातिर सरकार की रक्षा कीजिये' वाली पुकार को आज फिर से सुनना बडा भयानक मालूम देता है। इसका मतलब यह है कि मजदूर-आन्दोलन एक बार फिर से राजशाही की ओर झुक जायगा। मैंने लैन्सबरी के जोरदार युद्ध-विरोधी आन्दोलन में साथ देने का निश्चय कर लिया है।

यह समाजवाद तो नही है, लेकिन इससे हम कम-से-कम मजदूरो को भावी साम्राज्यवादी झगडो मे एक-दूसरे का गला न काटने की चेतावनी तो दे ही सकते है।

लखनऊ में आपको जिस बडे ही कठिन समय का सामना करना है

उसके लिए मै अपनी शुभकामनाए भेज रहा हू, चाहे उनका कुछ भी रूप हो। मैं समझता हू कि इस साल काग्रेस का अध्यक्ष होना शायद ससार का सबसे मुश्किल काम है। आप जो कुछ भी करेगे उसीकी बडी आलोचना होगी। लेकिन आपकी पुस्तक से लोगो को यह विश्वास हो जायगा कि आप जो कुछ भी करने का निश्चय करेंगे उसका रास्ता सीधा और ईमानदारी का होगा और वह जनता के असीम प्रेम पर आधारित होगा। लेकिन हममें से जो लोग राजनीति को एक गभीर विपय मानते है, उन्हें एक नीरस क्षेत्र में काम करना है।

मुझे शायद यह कहने की आवश्यकता नही कि अगर आपके साथ कोई भी ऐसी बात हो जिसमे मै या जिन लोगो को मै प्रभावित कर सकता हू वे किसी प्रकार की सहायता दे सकते है तो आपको लिखने-भर की जरूरत होगी। हम लखनऊ और उसके बाद के समाचारो की बडी व्यग्रता से प्रतीक्षा करेंगे। आपके यहा आने से भारतीय मामलो में मजदूर-दल की रुचि काफी बढ गई है। इडिया आफिस यह जानना चाहता है कि प्रश्नोत्तर के समय, जब कि सबकुछ शान्त था, हम एकाएक फिर क्यो भडक उठे?

लेन

१३५ रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाम

१ अप्रैल, १९३६

प्रिय गुरुदेव,

आपने कमला के बारे में जो कुछ कहा, उसका अग्रेजी अनुवाद आज मैंने 'विश्व-भारती न्यूज' में पढा। आपके बहुत ही उदार शब्दो से मुझपर गहरा असर हुआ और सभव हो तो मै आपको बताना चाहता हू कि आपके आशीर्वाद से और इस विचार से कि आप हम गुमराहो को ठीक रास्ते पर रखने के लिए मौजूद है, मुझे कितना बल मिला है। आपसे दिल्ली स्टेशन पर मिलकर मुझे खुशी हुई थी, परन्तु रेलगाडी मिलने के लिए अनुकूल जगह नही होती और मुझे सतोष नही हुआ। आशा है, जल्दी ही कोई और अच्छा मौका मिलेगा। मुझे बडी खुशी है कि आपको विश्व-भारती के लिए दिल्ली में अच्छी रकम मिल गई।

मुझे उम्मीद है कि इस मौजूदा प्रवास के बाद आप विश्राम करेंगे।

मुझे मालूम नही कि आपका ठीक-ठीक कार्यक्रम क्या है, इसलिए मै यह पत्र शातिनिकेतन भेज रहा हू ।

प्रेम और आदरसहित,

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

विश्वभारती न्यूज, अप्रैल १९३६

कमला नेहरू की स्मृति मे

[८ मार्च को यहा श्रीमती कमला नेहरू की स्मृति में शोक-दिवस मनाया गया था । उस समय गुरुदेव ने आश्रमवासियो को बगला में एक प्रवचन दिया था । उसीका यह सक्षिप्त अनुवाद है—सम्पादक]

आज हम एक ऐसे व्यक्ति को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए यहा इकट्ठे हुए है, जिनके साथ सयोग से उस एक सेवा के द्वारा हमारा घनिष्ठ सबध होगया था, जो कि उन्होने हमारे आश्रम से चाही थी और जिसकी हमने उत्सुकता से पूर्ति की थी। ऐसे समय जब उनके पति कारागार में थे और उनका अपना स्वास्थ्य एक घातक रोग के कारण खतरे में पड गया था, हमने उनकी पुत्री इन्दिरा को अपनी देखभाल में लेकर थोडे समय के लिए उनकी चिन्ता दूर की थी । उनके साथ की उस मुलाकात में मुझपर उनके चारो ओर के शान्ति और वीरोचित साहस के वातावरण का गहरा असर हुआ था । अक्सर रस्म के तौर पर जो शोक-सभाए की जाती है उन्हे कृत्रिम पूर्णता प्रदान करने के लिए अतिशयोक्ति से काम लिया जाता है । कमला के मामले में इसकी जरूरत नही है, क्योकि वह सचमुच महान थी और उनकी महानता ने अपना परिचय लोगो के हृदयो में अपने-आप दे दिया है और उनकी महानता तुरन्त स्वीकार कर ली गई है । उन्होने अपने उदात्त जीवन के सारे उतार-चढावो में जो मौन गौरव रखा था, उसकी ध्वनि आज इतनी वुलन्द होगई है कि उसकी सचाई हम सवपर छा गई है ।

उनके पति जवाहरलाल को युवक भारत के सिंहासन पर आसीन होने का असदिग्ध अधिकार है । उनका चरित्र शानदार है । वह अपने धैर्यशाली सकल्प और निर्भय साहस मे तो अटल है ही, परन्तु अपने साथियो से जिस वात में वह वहुत ऊचे है वह है उनकी अविचल नैतिक प्रामाणिकता

और बौद्धिक ईमानदारी। उन्होने राजनैतिक उपद्रवो के बीच में शुद्धता का झडा असाधारण ढग से ऊचा रखा है, यद्यपि ऐसे उपद्रवो मे सब प्रकार के धोखे और आत्म-वचनाओ का बाजार गर्म होता है। जब सचाई खतरनाक थी तो उससे वह कभी नही सकुचाये और न सुविधा होने पर झूठ के साथ मेल किया। उनकी तेजस्वी बुद्धि नीतियो के असम्मानित पथ से सदा स्पष्ट तिरस्कार के साथ विमुख रही है, यद्यपि वहा सफलता उतनी ही आसान है, जितनी कमीनी है। सत्य का यह ऊचा आदर्श जवाहरलाल के स्वातत्र्य-युद्ध में उनका सबसे बडा योगदान है।

और इनसब कामो में उनकी पत्नी उनकी उपयुक्त सहयोगिनी थी। उनमें भी अपने पति की तरह वीरोचित शान्ति थी, जो विपरीत भाग्य के निर्दय प्रहार चुपचाप सहन कर सकती थी और उनके आदर्श को धोखा देकर आसानी से बच निकलने के प्रलोभन के आगे कभी आत्म-समर्पण नही करती थी। तपस्या के इस दुर्लभ गुण के कारण उन्हे अपने पति के बराबर स्थायी स्थान मिल गया है। यह वही स्थान है, जो उनके जीवन-काल में उनका था। अतीत काल की प्रसिद्ध वीरागना इतिहास के प्रकाशमान क्षितिज में अपने पूर्ण गौरव में दिखाई दे सकती है। समय ने कमला को अभी इतना दूर नही किया है। वह अभी तक निकट वर्तमान की सीमाओ के भीतर हैं, जहा महत्वपूर्ण चीजें महत्वहीन वस्तुओ के साथ गुथ जाती है। इस त्रुटि के बावजूद वह हमारे सामने ऐसे गौरव के साथ आती है, जिसमें वीरोचित गुण है। यह गुण उनके पति में भी है।

आज का दिन हमारा होली के त्योहार का, वसन्त के उत्सव का, दिन है। गिरे और सूखे हुए पत्तो के बीच में प्रकृति मृत्यु पर विजय पानेवाले एक नये जीवन के प्रवेश की तैयारी कर रही है। उसके लिए नई कोपलें आनद की भेंट लेकर आ रही है। ऐसे अवसर पर राष्ट्र में नवजीवन की जागृति के साथ वसन्त ऋतु के आगमन का सबध होना उचित ही होगा। और जवाहरलाल वह ऋतुराज है, जो यौवन और विजयपूर्ण आनद की ऋतु के, युद्ध की अजेय भावना और स्वातत्र्य पक्ष के प्रति अटल निष्ठा के प्रतिनिधि है। कमला नेहरू ने भारत के नवीन राष्ट्रीय जीवन की शान में स्वय अपनी मृदुता का भी ऐसा योगदान किया है, जो त्याग-बल में शानदार

है और उनकी महान स्त्रियोचित आत्मा से अन्ततोगत्वा हमारी सफलताओ में चार चाद लग सकते है ।

हम आज अनुभव करते हैं कि वर्तमान की तेजी से आनेवाली घटनाओ पर वह अपनी ऐसी छाप छोड गई है, जो सर्वकाल के लिए है । तब हम कैसे वियोग की अशुभ भावना रख सकते है, जब उनकी अमर आत्मा सदा हमारे साथ है ।

१३६ रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

'उत्तरायण'
शातिनिकेतन, बंगाल
५ अप्रैल १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला और मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आश्रम के छात्रो से मैने कमला के बारे में जो कुछ शब्द कहे थे, उनसे तुम्हे आशा और बल मिला । विश्वास करो कि मै बहुत सच्चे दिल से तुम्हारे इस शोक को अनुभव करता हू ।

गाडी में तुम्हारे साथ जो कुछ मिनटो का समय मुझे मिला था, उससे मै भी सतुष्ट नही हुआ । यात्रा की थकान से मेरा शरीर और मन दोनो चूर थे और मेरे लिए बोलना भी दूभर हो रहा था । तुम यहा आकर कुछ दिन मेरे साथ रहो और मै विश्वास दिलाता हू कि शातिनिकेतन इलाहावाद से अधिक गरम नही होगा ।

'सस्नेह तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१३७ रफी अहमद किदवई की ओर से

यू पी सूवा काग्रेस कमेटी,
अमीनावाद पार्क, लखनऊ
२० अप्रैल १९३६

प्रिय जवाहरलालजी,

पिछले कुछ दिन मैने वडी दिमागी तकलीफ में काटे । जाहिरा तौर पर आप ही सिर्फ हमारी एक उम्मीद थे, लेकिन क्या आप ख्वावी सावित

होने जा रहे है ? आप गाधीवाद के असर का और उसकी मिली-जुली मुखालफत का कहातक मुकाबला कर सकेगे, इसमें कुछ लोगो के अपने-अपने शक है।

आपको वर्किंग कमिटी को फिर से बनाने का मौका दिया गया था। आपने टण्डन, नरीमन, पट्टाभि, सार्दूलसिह को छोड दिया है। आपने गोविंददास और शरद् बोस के मुकाबले में भूलाभाई और राजगोपालाचारी को शामिल किया है। इन लोगो से आपको ताकत मिलती। इन्होने छल करके आपको बीच के तबके के लोगो से अलहदा कर दिया है। हम ए आई सी सी और डेलीगेट दोनो में कमजोर पड गये है। जो वर्किंग कमिटी आपने बनाई है, वह पिछली के मुकाबले ज्यादा दकियानूसी साबित होगी।

हो सकता है कि मेरा नजरिया बहुत तग हो। उसूली बहसो के मुकाबले अकसरियत पर मेरा ज्यादा भरोसा रहता है। हालात का मुझपर जो असर हुआ, उसे बताने के लिए मै बेचैन था। आगे इसकी मै कभी चर्चा नही करूगा।

रफी

१३८. महात्मा गाधी की ओर से

२१ अप्रैल १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

टिप्पणिया अच्छी लिखी गई है। तुम्हारे उत्तर काफी पूरे है और सीधे तो है ही।

आगामी बैठक के बारे में चिंतित क्यो होते हो ? अगर चर्चा हुई तो वह एक दूसरे को अपने विचारो के ठीक होने का विश्वास कराने को ही तो होगी। जब तुम समझो कि किसी प्रस्ताव पर पूरी तरह बहस हो चुकी तब चर्चा बन्द कर देना। आखिर तो तुम्हे एकता के साथ काम चाहिए और मुझे ऐसा होने की बडी आशा है।

मै २३ तारीख की शाम को नागपुर पहुच रहा हू।

मै चाहता हू कि रनजीत अपनी देखभाल खुद कर लेंगे। मुझे खुशी है कि वह खाली चले गये। आशा है, सरूप तुम्हारे साथ रहेगी।

सरदार अभी तक बीमार है और अभी तो सिर्फ छाछ पर है। ८ मई के बाद मैं उन्हे नदी पर्वत पर ले जा रहा हू। काश तुम भी आ सकते।

सस्नेह,
बापू

१३९ महात्मा गाधी की ओर से अगाथा हैरिसन के नाम

[कुमारी अगाथा हैरिसन क्वेकर सम्प्रदाय की थीं और गाधीजी तथा भारत से उन्हें बडा प्रेम था।]

वर्धा
३० अप्रैल १९३६

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा १७ तारीख का पत्र मिला। जवाहरलाल से यही आशा रखी जा सकती थी। उनका अभिभाषण उनके ईमान का इकबाल है। उनके 'मत्रिमडल' की रचना से तुम देखती हो कि उन्होने अधिकाश वे लोग चुने है, जो परम्परागत विचार अर्थात् १९२० से आरभ हुए विचारो का प्रतिनिधित्व करते है। अलबत्ता बहुमत मेरे विचारो का है। सभव हो तो मैं नये सविधान को आज नष्ट कर दू। उसमें है ही क्या जिसे मैं पसन्द करू? मगर जवाहरलाल का रास्ता मेरा रास्ता नही। भूमि आदि के बारे में मैं उनका आदर्श स्वीकार करता हू। मगर अपने तरीको को पेश करने में उग्र होते हुए भी जवाहरलाल क्रिया में गभीर है। जहातक मैं उन्हे जानता हू, वह सघर्ष को जल्दी नही ले आयेंगे। उनपर आ ही पडे तो वह उससे बचने की कोशिश भी नही करेंगे। परन्तु शायद इस मामले में सारी काग्रेस एक विचार की नही है। कुछ-न-कुछ मतभेद जरूर है। मेरे उपाय में सघर्ष को टालने की योजना रहती है। उनके उपाय में यह योजना नही है। मेरा अपना खयाल यह है कि जवाहरलाल अपने साथियो के बहुमत के निर्णय मान लेंगे। उनके जैसे स्वभाववाले आदमी के लिए यह अत्यन्त कठिन है। अभी से उन्हे ऐसा लग रहा है। वह जो कुछ करेंगे, शराफत के साथ करेंगे। यद्यपि जीवन के दृष्टिकोण के बारे में हमारे बीच की खाई बेशक चौडी हुई है, फिर भी दिलो में हम जितने नजदीक एक दूसरे के शायद आज है, उतने

पहले कभी नही थे। यह पत्र सार्वजनिक उपयोग के लिए नही है। लेकिन तुम्हे आजादी है कि तुम इसे अपने मित्रो को दिखा सकती हो।

मै नही समझता कि अपने प्रश्न के उत्तर में तुम इससे ज्यादा कुछ चाहती होगी।

सस्नेह,
बापू

कुमारी अगाथा हैरिसन

१४०. महात्मा गाधी की ओर से

नदी पर्वत
१२ मई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

अगाथा के नाम मेरा उत्तर मैंने तुम्हारे पास इस कारण भेजा कि मै जान लू कि मैंने तुम्हारा रवैया ठीक-ठीक बयान किया है या नही।

मगर मुझे खुशी है कि तुम मुझीसे निपट रहे हो। मै किसी ऐसी प्रणाली का समर्थन करने का, जिसमें सतत और विनाशकारी वर्ग-युद्ध निहित है या ऐसी प्रणालियो को पसन्द करने का, जिसका वास्तविक आधार हिसा पर है या कुछ लोगो की छोटे-मोटे कसूरो के लिए आलोचना और निन्दा करने का और जो दूसरे लोग कही अधिक महत्वपूर्ण दुर्बलताओ के अपराधी है, उनकी तारीफ करने का दोषी नही हू।

सभव है, अनजाने में मुझसे तुम्हारे बताये हुए अपराध होते हो। ऐसा है तो तुमको मुझे ठोस उदाहरण देने चाहिए। मै पहले ही स्वीकार कर चुका हू कि तुम्हारा काम करने का तरीका जैसा मुझे दिखाई देता है उससे मेरा ढग भिन्न है। मगर वर्तमान प्रणाली-सम्बन्धी दृष्टिकोण में कुछ भी अन्तर नही है।

डा अन्सारी की मृत्यु एक सख्त चोट है। मेरे लिए उनकी दोस्ती राजनैतिक मित्रता से कही अधिक थी।

आशा है, तुम थोडी-सी ठडी हवा खाने के लिए खाली जा रहे हो या मेरे पास आ रहे हो।

सरूप से कह देना कि उसके दो खत मिले है। सर तेजबहादुर को मै लिखूगा।

सस्नेह,
बापू

१४१. महात्मा गाधी की ओर से

नदी पर्वत
२१ मई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

'हिन्दू' की दो कतरनें भेज रहा हू। मैने यह नही माना है कि सम्वाददाता ने तुम्हारे विचार ठीक-ठीक व्यक्त किये है। लेकिन दोनो विषयो पर तुम सही विवरण भेज सको तो मै देखना चाहूगा। स्त्रियो को न रखने का काम पूरी तरह तुम्हारा अपना ही था। सचमुच किसी और ने सोचा तक नही था कि मन्त्रिमडल मे किसी स्त्री को न रखना सभव भी है। खादी के बारे में मैंने तुम्हारा कथन यही समझा है कि देश की वर्तमान अर्थ-व्यवस्था में वह अपरिहार्य है और जब राष्ट्र अपने स्वरूप में आयेगा तब मिल के कपडे का स्थान हाथ के बने कपडे को देना पड सकता है।

सस्नेह,
बापू

१४२. महात्मा गाधी की ओर से

बगलौर
२९ मई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा २५ तारीख का पत्र मिला। भगवान तुम्हे आवश्यक शक्ति दें। खाली में एक सप्ताह रहना भी नियामत होगा।

मेरा इरादा खादी पर तुम्हारे बयान का सार्वजनिक उपयोग करने का है। मुझसे बहुत लोग पूछताछ कर रहे है। हमारे जो लोग खादी मे विश्वास रखते है, उनमें तोड-मरोडकर भेजे गये सार से घबराहट फैल गई है। तुम्हारे बयान से स्थिति में कुछ सुधार होगा।

कार्य-समिति में किसी स्त्री के न लेने के बारे मे तुम्हारे स्पष्टीकरण से मेरा समाधान नही होता। यदि समिति में किसी स्त्री को रखने की तुमने ज़रा भी इच्छा प्रकट की होती तो बडो में से किसीको छोड देने के बारे में कुछ भी कठिनाई न होती। दबाव कहे तो केवल भूलाभाई के लिए था। और जब उनका नाम पहली बार लिया गया तब तुम्हे कोई आपत्ति नही

थी। और किसी सदस्य के लिए कोई दबाव नही था। और फिर किसी समाजवादी का नाम छोडकर किसी स्त्री को ले लेने का चुनाव तो तुम्हारे हाथ में अबाधित ही था। परन्तु जहातक मुझे याद है, तुम्हे स्वय सरोजिनीदेवी के स्थान पर किसीको चुनने मे कठिनाई थी और सरोजिनी देवी को तुम रखना नही चाहते थे। तुमने तो यहातक कहा था कि कार्य-समिति में सदा किसी-न-किसी स्त्री को और मुसलमानो को एक निश्चित सख्या में रखने की परम्परा में तुम्हारा विश्वास नही है। इसलिए जहातक किसी स्त्री को न लाने का सम्बन्ध है, मेरे खयाल से, यह तुम्हारा अबाधित निर्णय था। इस परम्परा को तोडने की इच्छा या हिम्मत और कोई सदस्य न करता। मै तुम्हे यह भी वता द् कि कुछ काग्रेसी हल्को में सारा दोष मुझपर थोपा जा रहा है, क्योकि यह कहा जाता है कि मैंने श्रीमती नायडू को नही रखने दिया और यह आग्रह किया कि कोई स्त्री न रखी जाय। यह बात, जैसा मैंने तुमसे कहा, ऐसी है जिसका मैं साहस भी नही कर सकता। किसी भी स्त्री की बात तो क्या, मै श्रीमती नायडू को भी अलग नही कर सकता।

दूसरे सदस्यो के विषय में भी मेरा यह खयाल रहा है कि तुमने उन्हे इसलिए चुना कि कार्य की दृष्टि से ऐसा करना ठीक था। 'बेहया' या 'हयादार' का कोई सवाल नही था, जब सभी अपने-अपने अन्त करण के अनुसार सेवा की उच्च भावनाओ से प्रेरित होकर काम कर रहे थे। मैं बता दू कि तुम्हारे बयान से, जिसका समर्थन तुम्हारे पत्र से भी होता है, राजेन्द्र-बाबू, राजाजी और वल्लभभाई को भी बडा दु ख हुआ। उनका खयाल है और मै उनसे सहमत हू कि उन्होने तुम्हारे साथी के रूप में सम्मान और पूर्ण निष्ठापूर्वक तुम्हारे साथ चलने की कोशिश की। तुम्हारे बयान से ऐसा प्रकट होता है कि तुम पीडित पक्ष हो। मै चाहता हू कि तुम इस दृष्टिकोण को समझलो और किसी भी तरह सम्भव हो तो इस खबर का सुधार करलो।

तीसरी बात के बारे मे मै उत्सुक हू कि सफाई हो जाय। मै अनुमान नही लगा सकता कि तुम क्या कहते हो, परन्तु उसे हमारे मिलने तक रहने दिया जाय। तुम जिस दबाव को सहन कर रहे हो, मै उसे बढाना नही चाहता।

डा अन्सारी-स्मारक के विषय में मैंने आसफअली को अपनी स्पष्ट राय दे दी है कि पिताजी की तरह डाक्टर के स्मारक को भी राजनैतिक दृष्टि से अच्छे दिनो की प्रतीक्षा करनी चाहिए। तुम्हारा और कुछ खयाल है ?

कमला-स्मारक धीरे-धीरे प्रगति कर रहा है। राजकुमारी का पत्र साथ मे है। इसमे इन्दू का उल्लेख है।

सस्नेह,

१० तारीख तक बगलौर शहर में। बापू

१४३ रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शांतिनिकेतन
३१ मई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

मैंने तुम्हारी महान पुस्तक अभी-अभी समाप्त की है। मैं तुम्हारी सफलता से अत्यन्त प्रभावित हू और उसपर गर्व अनुभव करता हू। उसके समस्त विवरणो के पीछे मानवता की एक गहरी धारा प्रवाहित है, जो तथ्यो की गुत्थियो को पार करके हमें उस व्यक्ति तक पहुचा देती है, जो अपने कार्यों की अपेक्षा अधिक महान और अपने आसपास के वातावरण की अपेक्षा अधिक सच्चा है।

सप्रेम तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

[इस पत्र में जिस पुस्तक का जिक्र है, वह मेरी आत्मकथा है।]

१४४ चार्ल्स ट्रेवेलियन की ओर से

वैलिंगटन, कैम्बो
मोरपैथ
१२ जून १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

मैंने आपकी पुस्तक पढी है। इसमें जिस व्यक्ति पर प्रकाश पडता है, उससे मैं मिलना चाहूगा। मैंने और आपने दोनो ने ही हैरो में पढाई शुरू की

थी, जहा हमे दलितो का समर्थन करने की शिक्षा नही दी गई थी। लेकिन आपकी जनता की निर्धनता और उसपर होनेवाले दमन ने आपको इसकी शिक्षा दी और युद्ध तथा गदी बस्तियो ने मुझे। हम दोनो के विचार बहुत-कुछ एक जैसे है। मै चाहता हू कि आप जब कभी इग्लैण्ड आये, मुझे सूचित करें। मै समझता हू कि मै भारतवर्ष नही आ सकूगा, क्योकि मै जर्मनी, इटली और हिदुस्तान जैसे काले (तानाशाही तथा साम्राज्यवादी) स्थानो पर जाना पसन्द नही करूगा, जबकि ससार में लाल तथा लालिमापूर्ण (साम्यवादी तथा समाजवादी) देश मौजूद है। लेकिन अगर मै आया तो आपसे जरूर मिलूगा, चाहे आप जेल मे हो या मुक्त हो।

आपका,
चार्ल्स ट्रेवेलियन

१४५. महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव
१९ जून १९३६

[**यदि लिखावट इतनी धुंधली हो कि पढ़ी न जा सके तो इस पत्र को फेंक देना।**]

प्रिय जवाहरलाल,

मै तुम्हारी जानकारी के लिए साथ का पत्र भेजनेवाला था कि कल तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे खुशी है कि रनजीत पहले से अच्छे है। उन्हे खुद अपनी देखभाल करनी चाहिए।

मै नही चाहता कि तुम अपनी कार्यसमिति में किसी स्त्री को न रखने के बारे में कोई खास बयान जारी करो। मेरे खयाल से स्त्री को न रखने की बात का वही महत्त्व नही है, जो दूसरो को रखने या न रखने का है। हममें से किसीको भी कार्यसमिति में से स्त्री-मात्र को अलग रखने की न हिम्मत थी और न इच्छा। यदि तुम्हारे रवैये का यह ठीक-ठीक अर्थ है तो अवसर उपस्थित होने पर इसका स्पष्टीकरण हो जाना चाहिए।

दूसरो के बारे में, मुझे अफसोस है कि तुम अभी तक जो कुछ हुआ, उसपर खिन्न हो। ध्येय के हित में भूलाभाईवाली गोली तुमने निगल ली और

पहली ही चर्चा में तुम्हारे जिक्र करने से पहले मैंने निश्चित रूप से कह दिया था कि कार्यसमिति में समाजवादी होने ही चाहिए। मैंने नामो का भी जिक्र किया था। लेकिन मै जिस बात पर जोर देना चाहता हू वह यह नही है कि किसने किसका नाम लिया, बल्कि मेरा जोर इस बात पर है कि सब समान ध्येय की सेवा से प्रेरित होकर ही काम कर रहे है।

जहातक मुझे याद है, तुम्हारा भेजा हुआ बयान वह नही है, जो मैंने देखा था। तुम्हारी भेजी हुई चीज तो शायद मै पहली ही बार देख रहा हू। डा हार्डीकर से पूछ लो कि उन्होने कोई और बयान जारी किया था क्या ? तुमने जो मेरे पास भेजा है वह भी उससे भिन्न है, जो डाक्टर मुझे बताया करते थे। उनके विचार मेरी राय में दोषपूर्ण तो है, लेकिन उनके प्रकट करने पर मुझे कोई एतराज नही है। मेरी शिकायत यह है कि उन्होने मुझसे एक बात कही और प्रकाशित दूसरी बात कराई। तुम यह पत्र डा हार्डीकर को बता सकते हो।

आशा है, तुम अच्छे होगे। तुम्हारे पजाब के तूफानी दौरे का हाल मै चिंतित होकर पढता रहा।

सस्नेह,
बापू

१४६ मोहम्मद इकबाल की ओर से

लाहौर
२१ जून १९३६

प्रिय पडित जवाहरलाल,

कल मुझे आपका खत मिला। बहुत-बहुत शुक्रिया। जिस वक्त मैंने मज़मूनो का जवाब दिया, मेरा यह खयाल था कि आपको अहमदियो के सियासी रुख के मुताल्लिक कोई वाकफियत नही है। दरअसल मेरे जवाब का ख़ास मकसद यह था कि मै यह बताऊ, और खास तौर पर आपको, कि मुसलमानो की वफादारी कैसे पैदा हुई थी और कैसे अहमदियो के उसूलों में उसे एक इलहामी बुनियाद मिली। मेरा जवाब शाया हो जाने के बाद यह जानकर मुझे बडी हैरानी हुई कि तालीमयाफ्ता मुसलमानो को भी उन तारीखी वजहो का कोई इल्म नही है, जिन्होने अहमदी तालीम को शक्ल अदा

की। फिर पजाब और दूसरी जगहो के आपकी तारीफ करनेवाले मुसलमान आपके लेखो से परेशान हुए, क्योकि उन्हे खयाल हुआ कि आपको अहमदिया तहरीक के साथ हमदर्दी ह। इसकी खास वजह यह थी कि अहमदिया लोग आपके लेखो से बेहद खुश थे। आपके बारे मे इस गलतफहमी के लिए अहमदी अखबार खास तौर पर जिम्मेवार है। बहरहाल मुझे यह जानकर खुशी हुई कि मेरा खयाल गलत था। मुझे मज़हबी इल्म मे बहुत कम दिलचस्पी है, लेकिन अहमदियो का जवाब देने के लिए मुझे थोडा-बहुत टटोलना पडा। मै आपको इतमीनान दिलाता हू कि मेरा मजमून इस्लाम और हिदुस्तान की बेहतरी के खयाल से ही लिखा गया था। मेरे दिमाग मे कोई शक-शुबाह नही कि अहमदिया इस्लाम और हिन्दुस्तान दोनो के गद्दार है।

लाहौर मे आपसे मिलने का मौका खो दिया, इसका मुझे बेहद अफसोस है। उन दिनो मै बहुत बीमार था और अपने कमरे से बाहर नही जा सकता था। पिछले दो बरस से लगातार बीमारी की वजह से करीब-करीब गोशा-नशीनी की जिन्दगी बिता रहा हू। जब आप अगली मरतबा पजाब आयें तो मुझे जरूर इत्तिला कर दें। 'यूनियन फार सिविल लिबरटी' के बारे मे जो आपकी तजवीज है, उसके मुताल्लिक क्या आपको मेरा खत मिला ? आपने चूकि अपने खत में उसका जिक्र नही किया, इसलिए मुझे डर है कि वह अबतक पहुचा ही नही।

आपका,
मोहम्मद इक़बाल

[अहमदिया एक मुस्लिम सम्प्रदाय है जिसे कादियानी भी कहते है।]

१४७ राजेन्द्रप्रसाद तथा दूसरे लोगो की ओर से

वर्धा
२९ जून, १९३६

प्रिय जवाहरलालजी,

लखनऊ-काग्रेस के बाद जब आपने मतभेदो तथा दृष्टिकोण के भेदो के बावजूद हमें कार्य-समिति का सदस्य चुना तो हमें आशा थी कि कार्य का एक सामान्य रास्ता निकालना तथा मतभेदो को अलग हटाकर सयुक्त रूप से काम करना और समझौते के बिंदु पर एकाग्र होना सभव हो जायगा।

हम अपने-आपको इसके अनुसार बनाने का भरसक प्रयत्न करते रहे। परन्तु दुर्भाग्य से हम पाते है कि ऐसे समझौते पर आ सकना सभव नही हुआ है, जो दो विरोधी तत्त्वो को इस योग्य बना सकता, जिससे वे शातिपूर्वक काम कर सकते या एक स्वर से बोल सकते। हम अनुभव करते है कि विशेषतया इस स्थिति मे अध्यक्ष तथा कार्य-समिति के समाजवादी सदस्यो द्वारा समाजवाद का प्रचार करना तथा उसपर जोर देना, जबकि काग्रेस ने इसे अगीकार नही किया है, देश के हित और राष्ट्रीय सघर्षों की सफलता के लिए हानिकर है। इन्ही चीजो को हम सब देश का सबसे पहला और महत्वपूर्ण काम मानते है। लगता है, आप महसूस करते है और आपने जाहिर भी किया है कि कार्य-समिति जिस प्रकार की बनी है वह आपकी पसन्द की नही है, लेकिन वह आपपर लाद दी गई है और आपने उसे अपने निर्णय के विरुद्ध स्वीकार कर लिया। लखनऊ की घटनाओ के बारे में हमारी राय आपकी राय से विपरीत है। हमें बिल्कुल पता नही कि हममें से किसीने (आपपर) ज़रा-सा भी दबाव डाला हो। जो हो, आपकी घोषणाओ ने जो स्थिति पैदा कर दी है, वह अत्यन्त असतोपजनक है और हम सोचते है कि हमें आपको पूरी तरह छूट दे देनी चाहिए, जिससे कार्य-समिति के ऐसे साथियो के रहने से रुकावट न हो, जिन्हे आप भार-रूप मानते है। दूसरी तरफ हम यह महसूस करते है कि काग्रेस को आज भी उन्ही आदर्शों, कार्य करने के उसी ढग और उसी नीति पर चलना चाहिए, जिसपर वह सन् १९२० से चलती आई है, और जिसको हम अपने देश के लिए, खास तौर पर मौजूदा परिस्थितियो में, सबसे ज्यादा ठीक समझते है और जिन्होने अभी तक बडी-बडी सफलताए दिखाई है। हमारी राय है कि आपके और समाजवादी साथियो के भाषणो से और दूसरे आम समाजवादियो के कार्यो से, जिनका हौसला इन भाषणो से बढ गया है, सारे देश में काग्रेस-सगठन कमजोर हो गया है। बदले में उससे कोई फायदा तो हुआ नही है। इस समय देश के सामने जो राजनैतिक काम है, खास तौर पर चुनावो का कार्यक्रम, उसपर आपके इस प्रचार का अत्यन्त हानिकारक प्रभाव पडा है और हम महसूस करते है कि इस प्रकार जो स्थिति उत्पन्न होगई है, उसमें हम चुनावो को व्यवस्थित करने तथा लडने की जिम्मेदारी अपने ऊपर नही उठा सकते।

इसलिए अत्यन्त अनिच्छापूर्वक हमने कार्य-समिति से त्यागपत्र देने का निर्णय किया है। हम सोचते हैं कि बहुत विचार-विमर्श के बाद हमने जो कदम उठाने का निश्चय किया है, उससे आपके प्रति और हमारे प्रति भी न्याय होगा और देश का भी भला होगा।

आपके

राजेन्द्रप्रसाद जयरामदास दौलतराम वल्लभभाई पटेल
सी. राजगोपालाचारी जमनालाल बजाज जे. बी. कृपालानी
एस डी. देव

१४८ सुभाषचन्द्र बोस की ओर से

मारफत—सुपरिटेंडेंट पुलिस,
दार्जिलिंग
३० जून १९३६

प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा २२ ता का पत्र पाकर खुशी हुई। वह मुझे २७ ता को मिला। समाचारपत्रों से मुझे मालूम हुआ कि तुम बहुत ज्यादा परिश्रम कर रहे हो और मुझे तुम्हारे स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता हो रही थी। मुझे खुशी है कि तुम, थोडे समय के लिए ही सही, मसूरी विश्राम करने के लिए जा सके। मैं यह समझ सकता हू कि अति परिश्रम को टालना तुम्हारे लिए कितना कठिन है, फिर भी मैं आशा करता हू कि तुम बहुत ज्यादा परिश्रम नही करोगे। अगर तुम्हारी तबीयत बिगडी तो उससे किसीको मदद नही मिलेगी।

तुमने अपने बहनोई रनजीत के बारे मे जो कुछ कहा है, वह बहुत ही दुख की चीज है। किन्तु यह जानकर थोडी राहत मिली कि डाक्टर किसी गभीर परिणाम की आशका नही करते। हम आशा करें कि स्थान-परिवर्तन और विश्राम से उनकी तबीयत सुधर जायगी।

मैं करीब-करीब ठीक हू। कुछ पेट की शिकायत है और थोडा फ्लू का असर होगया था (यह केवल गले की खराबी भी हो सकती है)—किंतु ये सब शिकायतें यथासमय दूर हो जायगी।

अगर तुम्हारे पुस्तकालय में नीचे लिखी पुस्तको मे से कोई हो और

तुम उनको सुविधापूर्वक सुलभ कर सको तो कृपा करके एक या दो एक-साथ भिजवा देना।

१ हिस्टोरिकल ज्योग्राफी ऑव यूरोप—गोर्डन ईस्ट-लिखित
२ क्लैश ऑव कलचर्स एण्ड कॉन्टेक्ट ऑव रेसेस —पिट रिवर्स-लिखित
३ शार्ट हिस्टरी ऑव ऑवर टाइम्स—जे ए स्पेंडर-लिखित
४ वर्ल्ड पॉलिटिक्स १९१८-३५—आर पी दत्त-लिखित
५ माइस एड दी फ्यूचर—जे बी एस ह्लडेन-लिखित
६ अफ्रीका व्यू—हक्सले-लिखित
७ चगेजखा—राल्फ फोक्स-लिखित
८ दि ड्यूटी ऑव एम्पायर—बारनेस-लिखित

उपरोक्त पुस्तको के स्थान मे तुम हाल में प्रकाशित कोई दूसरी दिलचस्प पुस्तकें चुन सकते हो। चिट्ठी-पत्री या पुस्तकें सुपरिंटेंडेंट पुलिस दार्जिलिंग की मारफत भेजी जानी चाहिए।

आशा है, तुम स्वस्थ होगे। सप्रेम तुम्हारा,
सुभाष

प जवाहरलाल नेहरू
इलाहाबाद।
सेसर करके पास की गई
(ह) सुपरिंटेंडेंट पुलिस, दार्जिलिंग

१४९ राजेन्द्रप्रसाद की ओर से

वर्धा
१ जुलाई १९३६

प्रिय जवाहरलालजी,

कल जबसे हम विदा हुए, महात्माजी के साथ बडी देर तक हमारी बातचीत होती रही और हमने आपस में भी लबा मशविरा किया। हम समझते है कि हमने जो रास्ता अपनाया है, उससे आपको चोट महसूस हुई है और खास तौर पर हमारे पत्र ने आपको बहुत पीडा पहुचाई है। आपको परेशान करने तथा आपको कष्ट पहुचाने का हमारा मशा कभी भी नहीं

था और यदि आप ज़रा भी कही जता देते या इशारा कर देते कि आपको उससे दु ख पहुचा है तो हम बगैर किसी हिचकिचाहट के उस पत्र में सशोधन कर देते या उसे पूरी तरह से बदल देते। लेकिन सारी परिस्थिति पर पुनर्विचार करने पर हमने उस पत्र को और त्यागपत्रो को वापस लेने का निश्चय किया है, परन्तु चूकि हम अपने त्याग-पत्रो को वापस ले रहे है, इसलिए अब हम अपने भावो को इस निजी पत्र में कुछ अधिक विस्तार के साथ आपके सामने स्पष्ट करने की इजाज़त चाहते है, जैसा उस पत्र में नही किया जा सकता था, जो कि प्रकाशित होनेवाला था। ऐसा करने में भी हमारी इच्छा आपको चोट पहुचाने की नही है।

अखबारो में आपके भाषणो के जो विवरण छपे है, उन्हें देखकर हमें ऐसा लगता है कि आप काग्रेस के आम कार्यक्रम पर इतना नही बोल रहे है, जितना उस विषय पर, जिसे काग्रेस ने स्वीकार नही किया है और ऐसा करने में आप कार्य-समिति के हमारे साथियो के, और काग्रेस के भी, अल्पमत के प्रवक्ता की हैसियत से ज्यादा काम कर रहे है, बनिस्बत बहुमत के प्रवक्ता के रूप में, जैसाकि हम काग्रेस-अध्यक्ष की हैसियत से आपसे करने की अपेक्षा रखते थे। जैसा कि आपने बताया, यह हो सकता है कि आपके भाषणो के उन अशो को ही अधिक प्रकाशित किया गया हो, जो समाजवाद का प्रतिपादन करते है और शेष को अखबारो में महत्व न दिया गया हो। शायद समाचार की दृष्टि से उसका मूल्य ज्यादा न माना गया हो। किन्तु यह याद रखना चाहिए कि आपके शब्द स्वय अपने कानो से सुननेवाले जितने लोग होते है, उनसे कही ज्यादा वे लोग होते है, जो अखबारो में छपी रिपोर्टों को ही पढते है। आपके भाषणो का इस विशाल जन-समूह पर जो असर होता है, उसे आप दरगुजर नही कर सकते।

हमारे खिलाफ एक नियमित और लगातार आदोलन हो रहा है कि हम वे लोग है, जिनका ज़माना लद गया है, जो ऐसे विचारो का प्रतिनिधित्व करते है, जो घिस गये है और जिनका अब कोई मूल्य नही रहा है, जो देश की प्रगति में सिर्फ बाधक है और जिन्हें उन पदो पर से हटाकर अलग फेंक दिया जाना चाहिए, जिनपर वे अपात्र होते हुए भी बैठे है। गाधीजी के साथ रहकर हमने जिन आदर्शो, काम करने के जिन तरीको और पद्ध-

तियो को सीखा है, वे ही हमें किसी भी सगठन में सत्ता और पदो की लालसा करने से रोकते हैं। हमने अनुभव किया है कि हमारे साथ बहुत भारी अन्याय हुआ है और हो रहा है तथा अपने एक साथी और अध्यक्ष के नाते हमें आपसे वह सरक्षण नही मिल रहा है, जिसके हम हकदार हैं। जब हमें निकालने की सप्रयास तैयारिया हो रही है और इसकी घोषणाए आपकी उपस्थिति में की जाती है, और जैसाकि ट्रेड यूनियन काग्रेस में कहा गया था, ऐसे गुटो के साथ आपकी सहानुभूति है, तो हमें लगता है कि जो कुछ कहा जाता है, वह केवल उन्हीकी भावनाओ का प्रतिनिधित्व नही करता, जो ऐसी भाषा बोलते हैं, बल्कि कुछ हद तक आपकी राय का भी। इससे हमें दु ख होता है, क्योकि पदो से चिपटे रहने की हमारी तनिक भी इच्छा नही है। इस तरह पग-पग पर हम इस नतीजे पर पहुच रहे है कि बतौर साथियो के हमें उस हद तक आपका विश्वास प्राप्त नही है, जिस हद तक होना चाहिए और आपकी हमारे या हमारे विचारो के लिए कोई इज्जत नही है। हमें स्वभावत ऐसा लगता है कि आप हमें केवल एक बोझ मानते है और हमारे इस तरह पदो पर रहने से कोई भी उपयोगी उद्देश्य सिद्ध नही होता है।

बम्बई में महिला-सभा में आपका भाषण हममें से बहुतो को चुभ-सा गया और हमने सोचा कि आपकी भावना यह है कि हम जबर्दस्ती आपपर थोपे गये थे और अनिच्छापूर्वक आपको कार्य-समिति स्वीकार कर लेनी पडी थी। यदि लखनऊ में हमें मालूम हो जाता कि आपकी भावना यह है तो घटनाए निश्चय ही कोई दूसरा रूप ग्रहण करती।

हमारा यह भी खयाल है कि देश में आप जिस तरह से स्थिति सभाल रहे है, उससे रचनात्मक कार्यक्रम को हानि पहुच रही ह, जिसे हम काग्रेस के कार्यक्रम का अत्यत अनिवार्य और महत्वपूर्ण अग मानते हैं।

इन व्यक्तिगत प्रश्नो को छोड दें तो भी हमने अनुभव किया है कि पिछले सोलह-सत्रह वर्षों से जिन आदर्शों और नीति का हम अनुसरण करते रहे है और जो हमारे विचार से देश के लिए एकमात्र सही आदर्श है, उन्हीको यत्नपूर्वक हानि पहुचाई जा रही है और इस खेल में जो लोग लगे है आपकी दृष्टि और सहानुभूति भी उनके साथ है। हमें महसूस हुआ

है कि आपके साथ हमारे रहने से लोगो पर यह गलत असर पडता है कि अनजान मे और इच्छा न होते हुए भी इस प्रक्रिया मे एक तरीके से हम मददगार हो रहे है। यह प्रवृत्ति है, जो देश मे कांग्रेस के सगठन और उसकी प्रतिष्ठा को धीरे-धीरे नुकसान पहुचा रही है, क्योंकि देश तो सपूर्णतया आज भी उन्ही आदर्शों और नीति को मानता है। इसका नतीजा कांग्रेस को कमजोर करने मे और कार्यकर्ताओ मे फूट फैलने मे होता है। इससे स्वभावत आगामी चुनावो में कांग्रेस की सफलता की सभावनाएं भी कम होती है। इस मुद्दे पर आपके विचार दूसरे है। आखिर चुनावो के परिणामो के बारे में हम केवल अन्दाज ही तो कर सकते है और हमारे अन्दाज अलग-अलग हो सकते है। हमने मान लिया है कि इस दलील मे बल है कि हमने जो कडा कदम उठाने का विचार किया है वह हमे तबतक नही उठाना चाहिए, जबतक कि हमें निश्चय नही हो जाय कि हमारे त्याग-पत्र से कुल मिलाकर चुनावो में सफलता की सभावनाए बनती नहीं है तो कम-से-कम बिगडेंगी तो नही। हममें से कुछको ऐसा लगता है कि हमारे इस कार्य से, सभव है, ऐसे परिणाम उत्पन्न हो कि कांग्रेस की चुनाव-विषयक-स्थिति और भी बिगड जाय। हम ऐसी सभावना पैदा नही होने देना चाहते। इसके साथ ही अपने प्रान्तो का हमें जो व्यक्तिगत अनुभव है, उसके आधार पर, हमें भय है कि वहा कांग्रेस की स्थिति और अनुशासन कम-जोर हो रहा है और इसे आपके ध्यान में ला देना हम अपना कर्तव्य समझते है, जिससे आप उचित उपाय कर सकें।

जैसाकि आपसे हमने बार-बार कहा है कि हमारे दिलो पर यह असर किसी एक भाषण या कार्य से नही पडा है, बल्कि कुल मिलाकर सारे क्रिया-कलापो से पडा है और हमने अपना कर्तव्य समझा कि यह सब स्पष्ट रूप से आपके सामने रख दें, जिससे आपको पूरा-पूरा पता रहे कि हमारे दिलों में क्या चल रहा है और यदि आप आवश्यक समझें कि इस सबध में कुछ करने की जरूरत है तो वह आप कर भी सकें। आपकी भावनाओं को चोट पहुंचाने के लिए हमें अफसोस है और मुझे आशा है कि इस पत्र से मामला अधिक बिगडेगा नही, कुछ सुधरेगा ही, क्योंकि यही हम चाहते है। यह पत्र मैं आपको हम सबकी सलाह से और सबकी तरफ से लिख रहा हू। जहांतक

हमारा सबध है, इस घटना के लिए, जिसमे हमने देश का हित समझा है, केवल हम ही जिम्मेदार हैं और आप त्यागपत्रवाले पत्र को ऐसे ही समझें, जैसे वह हमारे द्वारा कभी दिया ही नही गया था। अत उसे कृपा करके लौटा दे।

कहने की आवश्यकता नही कि यह पत्र केवल आपके लिए निजी है और इसे दफ्तर के कागजात में शामिल नही किया जाना चाहिए।

सप्रेम आपका,
राजेन्द्रप्रसाद

१५० महात्मा गाधी के नाम

इलाहाबाद
५ जुलाई १९३६

प्रिय बापू,

मै यहा कल रात पहुचा। जबसे मैंने वर्धा छोडा तबसे मेरे जिस्म मे कमजोरी और दिमाग में परेशानी मालूम होती है। कुछ इसकी वजह बेशक जिस्मानी है। ठड लग जाने से मेरे गले की खराबी बढ गई है। कुछ और वजह भी है जो सीधे मन और आत्मा से ताल्लुक रखती है। यूरोप से लौटने के बाद मैंने देखा है कि कार्यसमिति की बैठको मे मैं बहुत थक जाता हू। उनका मुझपर निष्प्राण करनेवाला असर होता है और हर नये अनुभव के बाद मुझे लगभग ऐसा महसूस होता है कि मै बूढा होगया हू। मुझे ताज्जुब नही होगा, यदि समिति के मेरे साथियो को भी ऐसा ही महसूस होता हो। यह अच्छा तजुर्बा नही है और इससे कारगर काम के रास्ते में रुकावट होती है।

जब मै यूरोप से लौटा तब मुझे कहा गया कि देश गिर गया है और इसलिए हमे धीरे चलना पडता है। लेकिन चार महीने के मेरे थोडे-से तजुर्बे ने इस खयाल की पुष्टि नही की है। सच तो यह है कि मैं जहा कही गया हू वहा मैंने उभरती हुई प्राणशक्ति पाई है और जनता की मदद की भावना पर मुझे अचरज हुआ। इसका क्या कारण है, यह तो मैं निश्चित रूप से नही कह सकता। मैं सिर्फ कई तरह के अदाजे ही लगा सकता हू। जनता के उत्साह ने कुदरती तौर पर मेरा दिल बढा

दिया है और मुझमें नई शक्ति भर दी है। परन्तु मालूम होता है कि यह शक्ति कार्यसमिति की हर बैठक में बाहर निकल पडती है और मैं बहुत कुछ ऐसा महसूस करता हुआ लौटता हू जैसे किसी बैटरी की बिजली खत्म होगई हो। इस मौके पर यह प्रतिक्रिया सबसे अधिक हुई है, क्योकि मेरी जिस्मानी हालत गिरी हुई है।

लेकिन मैं आपको अपनी जिस्मानी या दिमागी हालत के बारे में लिखना नही चाहता था। इससे अधिक महत्त्वपूर्ण मामले ऐसे है, जिनकी मुझे चिन्ता है और अभी तक मुझे कोई साफ रास्ता नजर नही आया। मैं जल्दबाजी में या मामले पर पूरा विचार किये बगैर काम नही करना चाहता। परन्तु मेरे अपने मन में निश्चय होने से पहले मैं आपको बता देना चाहता हू कि मैं किधर देख रहा हू।

आपने मामले को ठीकठाक करने के लिए और सकट को टालने में मदद देने के लिए जो कष्ट उठाया उस सबके लिए मैं आपका अहसानमन्द हू। मुझे तब भी पक्का विश्वास था और अब भी पक्का विश्वास है कि जिस तरह की अलहदगी की बात सुझाई गई, उसका हमारे सारे काम पर, जिनमें चुनाव शामिल है, गभीर असर होता। बहरहाल इस समय हम कहा है और भविष्य में हमारे लिए क्या बदा है ? मैंने अपने नाम राजेन्द्रबाबू का पत्र (दूसरा) और मुझपर लगाये गए जबरदस्त आरोपो को फिर से पढा। यह अभियोगपत्र जबरदस्त तो है, परन्तु निश्चित नही है। केवल स्त्रियो की सभा मे मेरे भाषण की बात निश्चित है। लेकिन वास्तव में उसका किसी व्यापक प्रश्न से सबध नही है। खास चीज यह है कि मेरी प्रवृत्तिया काग्रेस के मकसद को नुकसान पहुचानेवाली है, उनसे काग्रेस का नुकसान हो रहा है और चुनावो में सफलता की सभावना घट रही है। यदि मेरा यही हाल रहा तो हालत और बिगड सकती है और मेरे साथी इस जबर्दस्त मामले मे कोई जोखम नही उठाना चाहते।

अब जाहिर है कि यदि इस आरोप में कोई सचाई है तो उसका मुकाबला होना चाहिए। मामला इतना गभीर है कि उसपर लीपापोती नही की जा सकती। इसमें कुछ काले और सफेद रग नही है और

न कोई भले और बुरे का सतुलन करनेवाली बातें है। यह तो सब काला-ही-काला है और इससे निर्णय करना सचमुच आसान होगया है। कारण, तथ्य को कितनी ही कोमलता के साथ बयान किया जाय, वह यह है कि मैं एक असह्य कटक हू और मुझमें जो गुण है—यानी थोडी-सी योग्यता, शक्ति, लगन, कुछ व्यक्तित्व जिसका कुछ असर होता है—वे ही खतरनाक बन जाते है, क्योकि वे गलत आदमी के साथ लगे हुए है। इस सबसे जो नतीजा निकलता है, वह साफ है।

लखनऊ से पहले और किसी हद तक लखनऊ में भी खुद मुझपर यह असर पडा कि इस साल हम सबके लिए साथ-साथ चलने में कठिनाई नही होनी चाहिए। अब यह साफ है कि मेरा खयाल गलत था, हालाकि दोनो तरफ कोशिश में कोई कसर नही रही। मुमकिन है, दोष मेरा ही हो, मुझे इसका पता नही है, लेकिन आदमी को अपनी आख का शहतीर शायद ही दिखाई देता है। असलियत यही है कि आज वह आत्मिक वफादारी नही है, जो हमारे दल को बाधकर रखती है। यह एक मशीन जैसा दल है और दोनो ओर एक निस्तेज रोष और दमन की-सी भावना है और जैसा मनोविज्ञान का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है, इससे सब तरह के गैर-मुनासिब निजी और सामाजिक पेच पैदा होते है।

इस बार जब मैं बम्बई पहुचा तो बहुत लोग मेरे मुह की तरफ देखते रहे, क्योकि उनके लिए यह मानना कठिन होगया था कि मैं बच कैसे गया। वहा सबको मालूम था (जैसा 'टाइम्स ऑव इडिया' में पहले समाचार आया था) कि मेरा शान्ति से खात्मा होनेवाला है—अलबत्ता सियासी खात्मा ही। दाह-क्रिया के सिवा और सबकुछ तय हो चुका था, इसीलिए उन्हे अचरज था। मुझे यह अजीब-सी बात मालूम हुई कि जब बाजार में बहुत लोगो को ये सब विश्वासपूर्ण अफवाहे मालूम थी तब मुझे इनका कुछ भी पता नही था। लेकिन हालाकि मुझे उनकी जानकारी नही थी तो भी अफवाहो का होना बिल्कुल वाजिब था, इसीसे मेरी मौजूदा अलहदगी का अदाज लगाया जा सकता है।

मैं अपने मौजूदा विचारो के बारे में अपनी पुस्तक में और बाद में भी विस्तार से लिख चुका हू। मेरे बारे में राय बनाने के लिए मसाले

की कमी नही है। ये विचार आकस्मिक नही है। ये मेरा अग है और हालाकि भविष्य मे मैं उन्हे बदल सकता हू, फिर भी जबतक वे मेरे विचार है, तबतक मुझे उनको प्रकट करना ही चाहिए चूकि मैं एक बडी एकता को महत्व देता था, इसलिए मै उन्हे नरम-से-नरम ढग से जाहिर करने की कोशिश करता था। इसका एक बडा कारण यह भी था कि निश्चित निर्णयो की अपेक्षा मै विचार को निमत्रण देता था। मुझे इस दृष्टिकोण में और काग्रेस कुछ भी कर रही हो उसमें कोई सघर्ष दिखाई नही दिया। जहातक चुनावो का सबध था, मै निश्चित रूप से अनुभव करता था कि मेरा निश्चित दृष्टिकोण हमारे लिए लाभ की चीज था, क्योकि उससे आम लोगो में उत्साह पैदा होता है। परन्तु मेरे दृष्टिकोण के नरम और अस्पष्ट होते हुए भी मेरे साथी उसे खतरनाक और हानिकारक समझते है। मुझसे तो यहातक कहा गया कि हिंदुस्तान की गरीबी और बेकारी पर मेरा हमेशा जोर देना बुद्धिमानी की बात नही थी। कम-से-कम जिस ढग से मै ज़ोर देता था, वह बेजा था।

आपको याद होगा कि दिल्ली और लखनऊ दोनो जगह मैंने स्पष्ट कर दिया था कि सामाजिक मामलो पर मुझे अपने विचार प्रकट करने की आजादी होनी चाहिए। मैंने यह समझा था कि आप और समिति के सदस्य इससे सहमत है। अब प्रश्न स्वय उन विचारो की अपेक्षा उन्हे प्रकट करने की स्वतत्रता का अधिक हो जाता है और इससे भी बडा प्रश्न जीवन के मूल्यो का है। यदि हम किसी चीज का बडा मूल्य समझते है तो हम उसका बलिदान नही कर सकते।

यह सघर्ष है, जिससे इन्कार नही किया जा सकता। कौन सही है और कौन गलत, इसकी बहस करना व्यर्थ है। परन्तु पिछले सप्ताह की घटनाओ के बाद मुझे यह सदेह होने लगा है कि क्या हम सचमुच सही रास्ते पर चल रहे है। मेरा यह विचार होता है कि हमारे लिए ठीक बात यह होगी कि मामला महासमिति की अगली बैठक में सक्षेप में रख दिया जाय और उसका आदेश ले लिया जाय। यह किस प्रकार अच्छी तरह किया जाय, इस बारे में मेरा दिमाग अभी साफ नही है, परन्तु वह होना चाहिए सादे-से-सादे ढग पर और बिना बहुत बहस-मुबाहसे के। जहा-

तक मेरा सबध है, मेरी तरफ से बहुत कम तर्क होगा।

शायद इसका परिणाम यह होगा कि मै हट जाऊगा और अधिक एक-जैसे विचारो के लोगो की समिति बन जायगी।

आपने मुझसे कहा था कि किसी-न-किसी प्रकार का बयान जारी करने का आपका इरादा है। मै इसका स्वागत करूगा, क्योकि मै मानता हू कि प्रत्येक दृष्टिकोण देश के सामने स्पष्ट रख दिया जाय।

मै अभी इस मामले का जिक्र किसीसे नही कर रहा हू। अलबत्ता भेद लेनेवाली और अशिष्ट आखें इसे आपके पास पहुचने से पहले रास्ते में ही देख लेंगी। उन्हे बर्दाश्त करना पडेगा।

बम्बई में मृदुला से बात हुई थी। वह अहमदाबाद से कुछ घटो के लिए खास तौर से मेरे अनुरोध पर आई थी। उसने मुझे बताया कि जहातक तथ्यो का सबध था, उसे जो कुछ आपने उससे कहा था और जो कुछ मैने लिखा या कहा था उसमे कोई फर्क नही दीखा था (और न बताया था)। सच तो यह है कि उसने आपके नाम अपने पत्र में यह स्पष्ट कर दिया था, लेकिन शायद एक-दो वाक्य आपके देखने से रह गये। उसका इरादा है कि अपने पिछले पत्र की नकल आपके पास भेज दे, ताकि आप खुद इस बात को देख लें।

वर्धा में मुझसे कहा गया कि गुजरात की स्त्रिया यह कह रही है कि आप या वल्लभभाई दोनो स्त्रियो को कार्यसमिति से अलग रखने के लिए जिम्मेदार है। मैने मृदुला से पूछा था। उसने मुझसे कहा कि जहा-तक उसे मालूम है, किसीने ऐसा कहा या सोचा नही।

मैने इस बारे में सरोजिनी से भी बात की थी।

मै डा जीवराज मेहता और खुरशेद से मिला। जीवराज खर्च वगैरा के बारे में विधान से पूरी तरह सहमत नही है, परन्तु उन्होने अपने पहले के आकडे को कुछ कम कर दिया। अब वह कहते है कि अस्पताल की इमारत और सामान वगैरा के लिए दो लाख काफी होने चाहिए।

और दो लाख वह सुरक्षित कोष के लिए चाहते है। उनकी यह भी राय है कि इमारत स्वराज-भवन की जमीन पर नही बनानी चाहिए, जैसी कि शुरू में योजना थी, बल्कि आनन्द-भवन के पूरब मे खेतो पर बनानी

चाहिए। मैं इसके बारे मे म्युनिसिपैलिटी से पूछताछ करूगा।

मेरा इरादा महासमिति के अधिवेशन के आसपास बम्बई में कमला-स्मारक ट्रस्टियो की बैठक बुलाने का है। स्वराज-भवन के ट्रस्टियो की बैठक भी।

बम्बई मे नरगिस ने आग्रह करके मुझे एक गले के जर्मन विशेषज्ञ के पास भेज दिया। इस आदमी ने मुझसे कहा है कि अपने गले को आराम देने के लिए मै एक हफ्ते के लिए बिल्कुल चुप रहू। यह तो मुश्किल काम है।

सस्नेह आपका,
जवाहरलाल

१५१ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
८ जुलाई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। वर्धा की घटनाओ को तुम्हे लिख सकने के लिए मैं समय ढूढ रहा था। तुम्हारे पत्र ने इसे कठिन बना दिया। परन्तु मैं इतना ही कहना चाहूगा कि हट जाने के पत्र का वह अर्थ नही है जो तुमने इसे लेते समय लगाया। वह मेरे देख लेने के बाद तुम्हें भेजा गया था। त्याग-पत्र के स्थान पर इस तरह का पत्र भेजने का सुझाव मेरा था। मैं चाहता हू कि तुम इस पत्र के विषय मे अधिक न्यायपूर्ण विचार करोगे। हर हालत में मेरा यह दृढ मत है कि वर्ष के शेष समय में सारी खीचतान बन्द रहे और कोई त्यागपत्र न दिये जाय। सकट का सामना करने मे महासमिति का सब काम ठप्प हो जायगा और वह सामना कर भी नही सकेगी। वह दो भावनाओ के बीच छिन्न-भिन्न हो जायगी। लोकतन्त्र के नाम पर उसपर एक ऐसा सकट अचानक लाद देना अत्यन्त अन्यायपूर्ण होगा, जो पहले कभी उनके सामने नही आया। तुम उस पत्र के गूढार्थ को बढा-चढाकर समझ रहे हो। मैं बहस नही करूगा, परन्तु यह आग्रह अवश्य करूगा कि स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करो और अपनी शान के सामने उदासी की घडी में हथियार

न डाल दो । कार्य-समिति की बैठको में अपने विनोद को खुलकर क्यो न खेलने दो ? जिन लोगो के साथ तुमने वर्षों तक बेखटके काम किया है, उनका साथ निभाना तुम्हारे लिए इतना कठिन क्यो होना चाहिए ? यदि वे असहिष्णुता के अपराधी है तो तुम्हारा हिस्सा अधिक है । तुम्हारी आपसी असहिष्णुता के कारण देश की हानि नही होनी चाहिए ।

आशा है, तुमने जर्मन डाक्टर की बहुत सयानी सलाह मान ली है ।

सस्नेह,

बापू

१५२ जे बी कृपालानी की ओर से

स्वराज्य भवन,
इलाहाबाद
११ जुलाई १९३६

प्रिय जवाहर,

बम्बई से तुम बीमार होकर लौटे । इसलिए मैंने तुम्हे तकलीफ देना पसद नही किया । अब चूकि तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत-कुछ ठीक होगया है, इसलिए कुछ सतरे लिखने का साहस कर रहा हू ।

पिछली बार वर्धावाले कदम का उतना व्यक्तिगत महत्व नही था, जितना तुमने दिया। कम-से-कम मेरे लिए तो वह केवल राजनैतिक महत्व ही रखता है । मैंने कभी कल्पना भी नही की थी कि अपने साथियो से मिल जाने में मेरी तुम्हारे प्रति व्यक्तिगत सम्मान में कमी थी । मैंने हमेशा तुम्हारी दोस्ती का मूल्य समझा है । इसका आधार निश्चय ही राजनैतिक था, परन्तु हमारे बरसो के घनिष्ठ सपर्क ने उसे मित्रता में बदल दिया है । इसकी सीमा कहातक है, यह शायद तुम्हे पता न हो, क्योकि उसे कभी शब्दो में जाहिर नही किया गया है । शायद तुम्हे यह जानकर आश्चर्य होगा, लेकिन यह एक तथ्य है कि मैंने अपना विवाह डेढ साल के लिए महज इसलिए स्थगित कर दिया, क्योकि तुम मुक्त नही थे । जबकि मै चाहता था कि कोई भी इस मौके पर उपस्थित न हो, तब भी मै तुम्हारी उपस्थिति चाहता था । यह सब मैंने सुचेता को बता दिया था, और मेरी उम्र के कारण, इतजार करने की अपनी स्वाभाविक अनिच्छा के बावजूद, उसने मेरी बात

को समझा और मेरी भावनाओ का आदर किया। खुरशेदबहन, जो हम दोनो की समान मित्र हैं, तुम्हारे प्रति मेरे लगाव को जानती है।

बापू ने मुझसे कहा कि मेरे बारे मे तुम्हे बहुत दु ख हुआ। तुम्हारी शिकायत थी कि मैंने तुम्हे सारी बातें पहले क्यो नही बताईं, जबकि हम कई बार मिलते रहे थे। मैं सोचता हू कि तुम्हारी शिकायत में जो बल है, उसे स्वीकार करना होगा। इसके लिए मेरी हद दर्जे की शर्म जिम्मेदार है। लखनऊ से लौटने के बाद से मैं बराबर सोचता रहा हू कि तुमसे बातचीत करू। किसी तरह हमारी भाग-दौड और काम के बोझ तथा हलचलो के कारण मै इस बातचीत को आगे के लिए टालता रहा और कोई अवसर ही नही निकाल सका।

जहातक मुझे पता है, वर्धावाली बात एकाएक और बिना पहले सोच-विचार के हुई थी। हस्ताक्षर करनेवाले हर व्यक्ति की प्रतिक्रिया एक-जैसी थी। उसका व्यक्तिगत महत्व भी है, इस बात का किसीको खयाल तक नही हुआ। तुम्हे शायद पता नही है कि पहले पत्र के मसविदे का बहुत अधिक हिस्सा और दूसरा तो पूरा-का-पूरा राजेन्द्रबाबू का ही लिखा हुआ था। तुम्हे यह जानकर शायद आश्चर्य होगा कि हम सब सचमुच यही समझते थे कि तुम हमें बोझ मानते हो और परिवर्तन से तुम्हे दु ख नही होगा। हमने यह भी सोचा कि कार्य-समिति को फिर से बनाना बिल्कुल सभव है, आवश्यक नही कि सोशलिस्टो को लेकर, बल्कि ऐसे लोगो को लेकर जो निश्चित रूप से सोशलिस्ट पार्टी से सबध नही रखते, लेकिन कम-ज्यादा उनके विचार तुमसे मिलते-जुलते हैं। सबके बारे में मैं नही कह सकता, लेकिन मुझे निश्चय है कि हममे से अधिकाश ने नही सोचा था कि इससे तुमको तकलीफ होगी। परन्तु बाद की घटनाओ ने सिद्ध कर दिया कि हमारा अनुमान गलत था। यह सब मैं इसलिए लिख रहा हू कि तुम उस कदम को सही-सही रूप में समझ जाओ, नही तो, मशा न होते हुए भी, मित्रो के प्रति तुमसे कही अन्याय न होजाय।

इतनी तो हुई निजी तफसील। मेरे राजनैतिक विचारो ने, जैसेकि वे अभी हाल में प्रकट हुए है, तुम्हे हैरत में डाल दिया होगा। तुम मैदान से काफी समय तक दूर रहे। इसलिए पष्ठ-भमि की तुम्हे स्पष्ट कल्पना नही है।

की सेवाओ का उपयोग किया । उन्हे पजाब और बगाल के सप्रदायवादियो से साठ-गाठ करने में भी परहेज नही होगा, बशर्ते कोई तात्कालिक मतलब सिद्ध होता हो । हिंदुस्तान की राजनीति में मेरे विचार में यह एक खतरनाक बात है । मेरा मत है कि बापू ने इससे हमको बहुत बचाया है । मै जानता हू कि खुद बापू के अनुयायी भी ऐसा कर लेते है । इनमें उनमें सिर्फ कम-ज्यादा का फर्क है । मेरा अनुमान शायद गलत हो, परन्तु मेरा खयाल है कि समाजवादी मित्र इस कला में कही आगे बढे हुए है, जो कि एक शिथिल-चरित्र, कमज़ोर और गिरे हुए देश के लिए बहुत खतरनाक है ।

इसलिए मै स्वभावत उस दल के साथ रहना चाहता हू जो विचारो में बापू के अधिक निकट है । पिछले साल इस दल के साथ मेरी अदरूनी लडाई को मेरे समाजवादी मित्र भी अच्छी तरह जानते है । परन्तु मै देखता हू कि अकेले आज वे ही—अधूरे तौर पर सही—रचनात्मक कार्यक्रम, बापू के विचारो और हिन्दुस्तान की राजनीति में बापू के बने रहने के सबसे बडे हिमायती है । यह जानकर तुम्हे शायद आश्चर्य होगा कि लखनऊ में जब मैने सुना कि श्री भूलाभाई को कार्यसमिति में लेने का विचार हो रहा है तब जयरामदास से मैने बातचीत की और हम दोनो मिलकर बापू के पास दौडे-दौडे गये और वल्लभभाई के सामने हमने उन्हें इस विषय में अपने विचार ज़रा सख्त भाषा में सुनाये । जमनालालजी भी थे । बापू ने हमें बताया कि पार्लामेंटरी बोर्ड को तोड दिया गया है, इसलिए इस प्रवृत्ति के भी किसी प्रतिनिधि को कार्य-समिति में रखना जरूरी है । जो हो, बापू पर, सरदार पर अथवा जमनालालजी पर हम कोई असर नही डाल सके । फिर जिस समय समाजवादी मित्रो को शामिल किया गया तब भी हमने इस तरह की कोई आपत्ति नही उठाई ।

ऊपर मैने सक्षेप में बताया कि पिछले दो-तीन वर्षों से मेरा दिमाग किस प्रकार काम करता रहा है । मै आशा नही कर रहा हू कि ऊपर मैने जो कुछ लिखा है, उसका तुमपर कोई असर होगा । परन्तु मेरे लिए इतना जान लेना भी काफी होगा कि तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम और आदर पर तुम अविश्वास नही करते । मै तो सचाई से कह सकता हू कि राजनैतिक क्षेत्र में बापू को छोडकर एक भी आदमी ऐसा नही है, जिसे मै तुमसे अधिक

प्रेम और आदर करता हू ।

पत्र लम्बा हो जाने के लिए मै क्षमा नही मागता, क्योकि मेरे विचार से तो यह अधूरा ही है । यदि इसे पढने पर तुम महसूस करो कि हमको अधिक तफसील के साथ बाते कर लेनी चाहिए तो मै इसका स्वागत ही करूगा । मुझे सतोष होगा, यदि इसका इतना परिणाम भी हुआ कि मुझे भविष्य में चाहे कोई राजनैतिक कदम उठाना पडे, मेरे व्यक्तिगत प्रेम के लिए तुम्हे शका नही होगी ।

तुम्हारा,
जीवत

१५३ महात्मा गाधी की ओर से

दुबारा मैंने नहीं देखा

सेगांव
१५ जुलाई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

१ आशा है तुमको 'टाइम्स ऑव इडिया' के पत्र के बारे में मेरा तार मिला होगा । मैंने कल प्राप्त करके उसे पूरा पढा । इसके विषय में मुझे कभी किसीने नही लिखा । पत्र को पढकर मेरी राय पक्की हुई है कि तुम्हे इसपर मान-हानि की कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए ।

२ यदि तुम मुझे गलत न समझो तो मै चाहूगा कि तुम मुझे नागरिक स्वातत्र्य-सघ से मुक्त रक्खो । फिलहाल मै किसी राजनैतिक सस्था मे शामिल होना पसन्द नही करता और किसी पक्के सत्याग्रही के उसमें शरीक होने का कोई अर्थ भी नही । परन्तु इस सघ में मेरे सम्मि-लित होने-न-होने के परिपक्व विचार के बाद मेरी यह राय पक्की हुई है कि सरोजिनी को या यो कहो कि किसी भी सत्याग्रही को अध्यक्ष बनाने में भूल होगी । मेरा अब यह मत है कि अध्यक्ष कोई प्रसिद्ध वैधानिक कानूनी वकील होना चाहिए । यदि यह बात तुम्हे न जचती हो तो तुम्हे एक टिप्पणी लेखक को, जो कानून-भग करनेवाला न हो, रखना चाहिए । मै यह भी कहूगा कि सदस्यो की संख्या सीमित रखो । तुम्हे सख्या के बजाय गुणो की आवश्यकता है ।

३ तुम्हारा पत्र मर्मस्पर्शी है । तुम ऐसा अनुभव करते हो कि तुम सबसे अधिक पीडित पक्ष हो । लेकिन हकीकत यह है कि तुम्हारे साथियो

में तुम्हारे जैसी हिम्मत और साफगोई नही है। परिणाम विनाशकारी हुआ है। मैंने सदा उन्हें समझाया है कि वे तुमसे साफ-साफ और निडर होकर बात कर लें। परन्तु साहस न होने के कारण जब कभी वे बोले, भद्दी तरह से बोले और तुम्हे उत्तेजना हुई। मै तुम्हे बताता हू कि वे तुमसे डरते रहे, क्योकि तुम्हे उनसे चिडचिडाहट और अधीरता हो जाती है। वे तुम्हारी झिडकियो से और तुम्हारे हाकिमाना ढग पर कुढते रहे और सबसे अधिक इस बात से कि उनके खयाल से तुम अपने-आपको अचूक और श्रेष्ठ ज्ञान-वाला समझते हो। वे महसूस करते है कि तुम उनके साथ शिष्टता से पेश नही आये और समाजवादियो के उपहास और गलत अर्थ लगाने से तुमने उनकी कभी रक्षा नही की।

तुम्हे शिकायत है कि उन्होने तुम्हारी प्रवृत्तियो को हानिकारक बताया। इसका यह अर्थ नही था कि तुम हानिकारक हो। उनके पत्र में तुम्हारे गुणो या तुम्हारी सेवाओ के वखान करने का कोई मौका नही था। वे पूरी तरह जानते है कि तुममें जीवट है और आम जनता और देश के युवको पर तुम्हारा काबू है। वे जानते है कि तुम्हे छोडा नही जा सकता और इस लिए वे झुक जाना चाहते थे।

मुझे यह सारा मामला दुखद लगता है, साथ ही हास्यजनक भी। इस-लिए मै चाहता हू कि तुम सारी बात विनोद-वृत्ति से देखो। मुझे इस बात की चिंता नही कि तुम ए आई सी सी को अपने विश्वास में लो, परन्तु मै नही चाहता कि उसपर तुम्हारे घरेलू झगडे ठीक करने का या तुममें और उनमें चुनाव करने का असह्य भार डाला जाय। तुम कुछ भी करो, उनके सामने बनी-बनाई बातें ही रखनी चाहिए।

तुम इस बात पर रोष क्यो करते हो कि तमाम समितियो में उनका वहुतम प्रकट हो। क्या यह अत्यन्त स्वाभाविक चीज नही है? तुम उनके सर्वसम्मत चुनाव से पदारूढ हो, लेकिन अभी तक सत्ता तुम्हारे पास नही है। तुम्हे पदारूढ करना तुम्हे शीघ्र मनारूढ करने का प्रयत्न था। और किसी तरह ऐसा न होता। जो हो, मेरे दिमाग में यही वात थी, जव मैंने काटो के ताज के लिए तुम्हारा नाम सुझाया था। सिर पर घाव हो जाय तो भी इसे पहने रहो। समिति की वैठको में फिर से

अपनी विनोद-प्रियता दिखाओ। तुम्हारा यही अत्यन्त सामान्य स्वरूप होना चाहिए, न कि एक चिन्तामग्न क्षुब्ध व्यक्ति का, जो ज़रा-ज़रा-सी बात पर उबल पडने को तैयार हो।

काश तुम मुझे तार से खबर दो कि मेरा पत्र पढ लेने के बाद तुम्हें उतनी ही प्रफुल्लता अनुभव हुई जितनी लाहौर में नववर्ष के दिन हुई थी, जब तुम तिरगे झडे के चारो ओर नाचते बताये गए थे। अपने गले को भी तो तुम्हे मौका देना ही चाहिए।

मै अपना बयान फिर से देख रहा हू। मैंने निश्चय किया है कि जबतक तुम इसे देख न लो, मै इसे प्रकाशित न करू।

मैंने यह भी निर्णय किया है कि हमारे पत्र-व्यवहार को महादेव के सिवा और कोई न देखे।

सस्नेह,
बापू

१५४ अर्न्स्ट तोल्ले की ओर से

[अर्न्स्ट तोल्ले जर्मनी के प्रसिद्ध लेखक थे। उन दिनो उनकी पुस्तकें, अनुवाद के रूप में बहुत प्रचलित थीं। हिटलर के कारण उन्हे जर्मनी छोड़ना पड़ा। उसके पहले भी उन्होने कुछ समय राजनैतिक कैदी के रूप में जेल में बिताया था। वह बहुत भावुक थे और स्पेन के गृहयुद्ध जैसी घटनाओ के कारण उन्हें काफी सहन करना पड़ा। उन्होने आत्महत्या कर ली। क्रिस्तियान उनकी पत्नी थीं।]

लन्दन
२१ जुलाई १९३६

प्रिय नेहरू,

पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मुझे इस वात का वडा गर्व है कि पिछले कुछ सप्ताहो के समाचारो में हमारे नाम इतनी वार साथ-साथ लिये गए। मने आपकी पुस्तक पढी है। जव मैंने आपकी पुस्तक पढी, जो मेरी निगाह में अवतक आई आत्मकथाओ में सर्वोत्तम है और जो न केवल एक महान व्यक्तित्व का दर्शन कराती है, अपितु उस सराहनीय सघर्ष का भी, जो आपके देश की जनता ने अपनेको वाहरी और भीतरी वधनो से मुक्त करने के लिए किया है, तो मैंने प्राय हमारे वीच के वधनो को अनुभव किया। मैं

अक्सर सोचा करता हू कि जो लोग जेल मे रह आते है, वे अदृश्य रूप से एक [illegible]
[illegible]
महान कल्पना-शक्ति होती है, जो जेल में विकसित होती है।

श्रीमती तोल्ले और मै आपकी पुत्री इन्दिरा से समाचार पाने की बडी तीव्रता से प्रतीक्षा कर रहे है। हमें उससे मिलकर बडी प्रसन्नता होगी।

कुछ सप्ताह हुए श्रीमती तोल्ले ने मेरे एक नये नाटक 'नो मोर पीस' (बस, अब शाति नही) में काम किया था और उन्हें बडी सफलता मिली थी। सभव है कि जाडो में वह लदन में भी अभिनय करें। सितम्बर के अन्त में मै अमरीका जा रहा हू, जहा मै भिन्न-भिन्न विषयो पर भाषण करूगा जैसे कि—

'हिटलर, उसके वचन और वास्तविकता।'

'क्या आपके समय की जिम्मेदारी आपपर है?'

'आधुनिक रगमच।'

यूरोप की स्थिति के बारे में आपको कुछ लिखने की मुझे कोई आवश्यकता नही है। उसे आप भी उतना ही जानते है, जितना मै। राष्ट्र-सघ की भीतरी कमजोरी ज्यादा-से-ज्यादा प्रकट होगई है, और फासिस्ट तानाशाह इसका फायदा उठा रहे है। अतत यूरोप में फासिस्ट और प्रजातत्रीय गुटो में युद्ध होना अनिवार्य है। समस्या केवल यह है कि जनतत्रीय देश एक स्पष्ट कार्यक्रम को सामने रखकर और दृढ सकल्प के साथ एक-दूसरे के साथ सगठित होते है या नही। यदि वे ऐसा नही करेंगे तो जिस चीज से वे बचना चाहते है उसको ले आयेंगे, यानी निकट भविष्य मे ही युद्ध। दुर्भाग्यवश इतिहास से कोई भी सबक सीखना नही चाहता। जर्मनी का प्रजातत्र भी कमजोर था और हिटलर को एक के बाद दूसरी रियायत देकर गृहयुद्ध से बचना चाहता था। इस प्रकार जर्मन अधिकारियो ने स्वय अपने पतन का रास्ता तैयार कर लिया।

मैंने आपके लेख को बडी रुचि के साथ पढा है। आपने फिलस्तीन की यहूदी-समस्या के बारे में जो कुछ भी कहा है उससे मै पूरी तरह सहमत हू। दो खतरे हैं—एक तो यहूदी राष्ट्रवादी, जो अपनी राष्ट्रीयता की धुन में आजकल की उस विचारधारा को भूल जाते है, जो राष्ट्रवाद मे ऊची है

और दूसरे, अरब राष्ट्रवादी जो फासिस्ट विचारधारा से विषाक्त होने के कारण उस समस्या को नही देख पाते, जो ज्यादा बडी है।

आपकी किताब ने इस देश में बडी रुचि पैदा कर दी है, यहातक कि आपके विरोधियो में भी।

कुछ दिन हुए लार्ड-सभा के एक प्रसिद्ध सदस्य से मेरी बातचीत हुई थी। उन्होंने मुझे बताया कि वह इस पुस्तक को दो बार पहले ही पढ चुके है। सिद्धान्त और व्यवहार .

शुभकामना सहित,

आपका,

अर्न्स्टतौल्ले

१५५ महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव

३० जुलाई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

मै कितना चाहता हू कि तुम 'पागलपन' के कामो को बन्द कर दो और आम भलाई के लिए अपनी शक्ति को बचाओ।

अगर तुम अपना विनोद कभी न छोडो और अपना पूरा कार्यकाल पूरा करो तथा अपनी नीति मौजूदा साथियो के द्वारा ही अधिक-से-अधिक चलाने का प्रयत्न करो तो सब ठीक हो जायगा। समय आ पहुचा है कि भविष्य का अर्थात् अगले वर्ष की योजनाओ का विचार किया जाय। कुछ भी हो, तुम्हे विरोध में नही होना चाहिए। यह मेरी पक्की राय है। जब पिताजी की तरह तुम महसूस करो कि तुम काग्रेस को अकेले ही सभालने को तैयार हो तब मेरे खयाल से मौजूदा साथियो की तरफ से कोई विरोध नही पाओगे। आशा है, बम्बई में तुम्हारा मार्ग साफ रहेगा।

कमला-स्मारक से मुझे बेचैनी हो रही है। मुझे मालूम नही कि चदे या योजना के बारे में क्या हो रहा है। अगर खुरशेद या सरूप या दोनो इस चीज पर पूरा ध्यान लगा रही है तो अच्छा है। सरूप से कहना कि मै आशा रखता हू कि इस सबध मे वह जो कुछ करेगी उससे मुझे परिचित रखेगी।

मै यहा समाजवाद के प्रश्न की चर्चा नही करूगा। ज्योही मै अपनी टिप्पणी को दुबारा देख लेना खत्म कर दूगा, तुम्हारे पास उसका मसविदा

पहुच जायगा और बाद में अखबारो को भेजा जायगा। मेरी कठिनाई दूर भविष्य के बारे में नही है। मै तो सदा वर्तमान पर ही पूरा ध्यान लगा सकता हू और उसीकी मुझे कभी-कभी चिन्ता होती है। अगर वर्तमान को सभाल लिया जाय तो भविष्य अपने-आप सभल जायगा। लेकिन मुझे आगे की बात नही सोचनी चाहिए।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य सचमुच अच्छा रह रहा होगा। सस्नेह,

बापू

मेरे और जेंकिस के बीच का पत्र-व्यवहार तुम देख लेना। मुझे भी कानूनी कार्रवाई से घृणा है। परन्तु यह मामला मुझे ऐसा लगता है, जिसमें कार्रवाई जरूरी है।

१५६. क्रिस्तियान तोल्ले की ओर से

लन्दन

२७ अगस्त १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

आपकी पुत्री इन्दिरा कल हमारे यहा दोपहर का खाना खाने आई थी। दुर्भाग्यवश मिस्टर तोल्ले नही आ सके। उन्हें अमेरीका का वीसा लेने की कोशिश में अमरीकी कौसल के पास जाना था, जिसमें उन्हें कुछ अडचनें पड रही है। इन्दिरा से न मिल सकने के कारण उन्हे बडी निराशा हुई।

मै आपको यह बताना चाहती हू कि इन्दिरा से मिलकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। यही नही कि वह इतनी खूबसूरत ह, बल्कि इतनी पवित्र है कि सभी लोग उसके साथ प्रसन्नता का अनुभव करने लगते है और लोगो के मन में कोई विरोधी भावना उत्पन्न नही हो पाती। मुझे तो वह एक छोटे-से फूल जैसी लगी जिसे हवा बडी आसानी से उडा ले जा सकती है, लेकिन मै समझती हू कि उसे उस हवा का डर नही है।

मैने अभी-अभी आपके जीवन-चरित को बडी रुचि और गहरी सहानुभूति के साथ पढना शुरू किया है।

शुभ कामनाओ और आदरसहित, सप्रेम आपकी,

क्रिस्तियान तोल्ले

हार्दिक शुभकामनाए,

सदा आपका, अर्न्स्ट तोल्ले

१५७. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव
२८ अगस्त १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

कल की मेरी बातचीत ने मुझे विचार में डाल दिया है। क्या कारण है कि पूरी इच्छा होते हुए भी मै उस चीज को नही समझ सकता, जो तुम्हारे लिए इतनी स्पष्ट है? जहातक मै जानता हू मुझे बौद्धिक ह्रास का मर्ज नही लगा है। तो फिर तुम्हे कम-से-कम मुझे यह समझाने पर कि तुम चाहते क्या हो, पूरा दिल क्यो न लगा देना चाहिए? सभव है, मै तुमसे सहमत न होऊ। मगर मेरी स्थिति तो ऐसा कहने की होनी चाहिए। कल की बात-चीत से इसपर प्रकाश नही पडता कि तुम्हारे जी में क्या है। और शायद जो बात मेरे लिए सही है वही और भी कुछ लोगो के लिए हो। मै इसी समय इस चीज की चर्चा राजाजी से कर रहा हू। तुम भी समय निकाल सको तो मै चाहूगा कि अपने कार्यक्रम की चर्चा उनसे कर लो। मेरे पास समय नही है, इसलिए विस्तार से नही लिखूगा। तुम जानते हो मेरा क्या मतलब है।

सस्नेह,
बापू

१५८ एडवर्ड टामसन की ओर से

होटल सेसिल, दिल्ली
२६ अक्तूबर १९३६

प्रिय नेहरू,

क्योकि सरकार (जिसका राजद्रोह का स्तर इस देश में बडा नीचा है) मेरे पत्र-व्यवहार में दिलचस्पी लेती मालूम पडती है, मेरा खयाल है कि इस पत्र के आपके पास पहुचने में काफी देर लग जायगी। इसलिए मै जल्दी लिख रहा हू।

इलाहाबाद मे मै दो-तीन दिन महा राजद्रोही समझे जानेवाले माननीय सर तेजबहादुर सप्रू के साथ बिताऊगा। मेरा खयाल है कि मै ३० अथवा ३१ अक्तूबर को इलाहाबाद पहुच जाऊगा।

क्या आप सप्रू को यह लिख देंगे कि आप इलाहाबाद में कब होगे?

मै आज पक्के तौर पर नही कह सकता कि इलाहाबाद किस दिन पहुचूगा, क्योकि यह इस बात पर निर्भर करता है कि सप्रू को २९-३० तारीख सुविधाजनक होगी या नही। मुझे परसो तक इसका पता चल जायगा, लेकिन मेरी चिट्ठियो को एक दिन का रास्ता तय करने में चार-पाच दिन लगते है।

मुझे विश्वास है कि जो सज्जन इस पत्र को आपके पास पहुचने से पहले ही पढेंगे वह भले और मेहरबान होगे। इसलिए मुझे उम्मीद है कि वह इस चिट्ठी की नकल करके शीघ्र ही आपको भेज देंगे।

आपका,
एडवर्ड टामसन

फिर से---

लन्दन के एक अखबार ने मुझसे कहा है कि मै जो भी चाहू लिखकर भेज दू। मै किसी विषय की तलाश में था। अब मै सोचता हू कि भारत सरकार के राजद्रोह के स्तर के बारे में एक लेख उन्हें भेज दू। अगर मै भारत की अपनी २६ साल की जानकारी के आधार पर कुछ लिखू तो वह पढने में बड़ा बेतुका लगेगा।

१५९ एडवर्ड टामसन की ओर से

३० अक्तूबर १९३६

प्रिय नेहरू,

मै सम्भवत कल १८-३८ की गाडी से कलकत्ता जाऊगा।

मुझे मालूम होता है कि यहा इस जल्दी में मै लिख नही सकता। कुछ लिखू तो भी वह बेमन से लिखा जायगा। लेकिन इस पत्र के साथ कुछ भेज रहा हू, जिसे भूमिका के तौर पर देने का मेरा विचार है। यह बहुत बुरा लिखा गया है, और अगर वक्त होता तो मै इससे कही अच्छा लिख सकता था। लेकिन यह जरूरी है कि इसमें जो कुछ कहा गया है, वह आप देख लें। हो सकता ह कि खुफिया इसे रोक दे।

दूसरी चीज यह कि इस पत्र के साथ मै कुछ सवाल भेज रहा हू। ये भी अच्छे ढग से नही लिखे गये, लेकिन इन्हें आपके इग्लैण्ड के दोस्त पूछना चाहेंगे। अगर आपके सामने कोई भी निष्कर्ष ऐसा रक्खा जाय, जो आपको

गलत मालूम दे तो आप बेशक अपने उत्तरो में उसका खण्डन कर दें। जसे कि कह दें कि 'स्पर्श' एक भ्रमपूर्ण अनुवाद है, या अगर कोई ऐसा सवाल हो जो मैंने नही पूछा, लेकिन जिसे आप स्पष्ट करना चाहते हो तो वह सवाल पूछ लीजिये और उसका जवाब दे दीजिये।

यह सब बहुत ही भोडा-सा लगता है। लेकिन मै एक (अनभ्यस्त और बहुत बूरा) पत्रकार हू।

मझे यह कह देना चाहिए कि कुछ समय पहले मैंने 'न्यूज क्रॉनिकल' में लिखा था कि मेरी राय में (१) काग्रेस आखिरकार सविधान को अमल में लावेगी, (२) गाधी अब पहले दर्जे के सियासी नेता नही रह जायगे (अगर यह राय गलत है तो इसमें ज्यादातर उन्ही का दोष है, क्योकि उन्होने मुझे एक 'दोस्त' कहकर भी मेरे साथ न्याय नही किया), (३) काग्रेस जब सविधान पर अमल करेगी तो उसके जिस मौजूदा रूप को हम जानते है, वह जरूर ही बदल जायगा, और इसलिए वह काग्रेस के रूप में खत्म हो जायगी।

अगर मेरी बातें बिल्कुल गलत निकलें तो कोई मुज़ायका नही। लेकिन मैंने अपनी ओर से कोई कसर नही उठा रक्खी है। कुछ चीजें तो सही निकलेगी।

हिन्दुस्तान में जहाज से उतरने के बाद मैंने कुछ लिखा था—प्रकाशन के लिए नही—उसे साथ भेज रहा हू। उससे आपको मेरी निजी स्थिति का मोटा अन्दाज हो जायगा। मुझे डर है कि मै पूरी तरह से एक 'लिबरल' हू।

इस चिट्ठी को पढने के बाद मेहरबानी करके फाड दें। यह पुरानी पड गई है। यह मुझे भ्रातियो से भरी हुई दिखाई देती है।

आपका,
एडवर्ड टामसन

फिर से—

अगर आप अपने उत्तरो पर नम्बर डाल देंगे तो मुझे पता लग जायगा कि उनका आशय किससे है। कृपया विश्वास रक्खें कि मै जरूरी तौर पर हिंदुस्तान की आजादी का एक दोस्त हू और अगर एक बार मेरा मन आश्वस्त

हो जाय तो फिर मेरी दृढता पर भरोसा किया जा सकता है। अगर मैं असहमत होऊ तो मैं ऐसा नही कर सकता, न वैसा करने का ढोग ही करूगा।

१६० एडवर्ड टामसन की ओर से

१६ सदर स्ट्रीट, कलकत्ता
१ नवम्बर १९३६

प्रिय नेहरू,

ये पुस्तके पाकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई।

लेकिन आपने उनपर मेरा नाम नही लिखा।

मैने आपसे पूछा था कि क्या आप मेरी कोई रचना लेना पसन्द करेंगे। आपने कहा—नही। बडे दु ख की बात है, शायद इसलिए कि मेरा मैसोपोटामियन-युद्ध पर लिखा उपन्यास और कुछ भले ही न हो, पठनीय तो है ही।

मै गाधी के बारे में और कुछ न कहूगा, सिवा इसके कि अगर वह कोई नया सदेश नही खोज पाते तो सविनय अवज्ञा के पार पडते-पडते नाकामयाब हो जाने पर वह अब से आगे एक खतरा उठायेंगे। वह खतरा यह है कि वह एक शक्तिशाली गणपति मात्र रह जायगे, जो अपने गणो को जगाने की ताकत तो रखता है, लेकिन उसके पास ऐसा कोई प्रयोजन नही है, जिसकी ओर वह उन्हें ले जा सके। मुझे नही लगता कि वह राजाओ के लोकापवाद को महसूस करते है। मैं कहू, राजा लोग आपकी बडी बुराइयो में से एक है। वह (गाधी) एक रुढिवादी है।

अगर मैं आपसे मिल लिया होता तो 'न्यूज क्रॉनिकल' को लिखे मेरे दो लेख कुछ और ही तरह से लिखे गये होते। तब भी मेरा खयाल है कि सिर्फ काग्रेसजनो से मिलने-जुलने से काग्रेस की ताकत को बहुत ज्यादा समझ लेना सभव है। कम-से-कम मुझे यह लगा कि जवान शेरो के विरुद्ध, जो कल मुझे घेरे रहे, इस आरोप का यह एक मुनासिब बचाव हो सकता है कि मैं सिर्फ 'लिबरलो' से मिला हू।

सौ बातो की एक बात आज यह दिखाई देती है—(१) जो शक्तिया शासन करती है, वे शासित शक्तियो से कही अधिक बढकर होती है। (२) निष्ठुरता का स्तर बेहद ऊचा होगया है। जब मैने कहा कि आपके

दावपेच मुझे बुरे मालूम होते है, तब मै आपके विरुद्ध (और हर जगह सब प्रकार की स्वतत्रता के विरुद्ध) ताकतो के बहुत ही निष्ठुर होने की बात सोच रहा था, और अब उनकी मजबूत मोर्चेबदी की बात सोच रहा हू। मुझे घटनाओ की चीड-फाड करने अथवा जो हुआ उसकी जिम्मेदारी दूसरो के सिर थोपने में तनिक भी दिलचस्पी नही है, लेकिन जैसाकि प्राय रोज दैनिक पत्र से पता लगता है, अपने-आपको मूर्ख बनाये रखने में मुझे कोई तुक नही दिखाई देती। ये लोग नही चाहते कि कोई उन्हें दबोच सके।

आपका,
एडवर्ड टामसन

१६१ एडवर्ड टामसन की ओर से

स्कारटॉप, बोर्स हिल,
ऑक्सफोर्ड
२४ नवम्बर १९३६

प्रिय नेहरू,

बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने समय निकालकर बडी मेहरबानी की।

अब मै बूढा हो चला हू और हिंदुस्तान की तथा पश्चिम की सभी बातो से बहुत निराश और हताश होकर अपने थोडे-बहुत बचे समय को अपने ही देश के मामलो में लगाना चाहता हू। मुझे जो सत्य और शिष्ट लगा उसे बढावा देने के प्रयत्न में २६ वर्ष बरबाद करने के बाद अब मै यह जान गया हू कि कोई भी अग्रेज हिन्दुस्तान के बारे में परेशान होता है तो वह मूर्ख है। यही फैसला हिन्दुस्तानियो का भी है और निस्सदेह वे ठीक है। मै यह देखता हू, यद्यपि कुछ आश्चर्य के साथ, कि आपके देशवासी जिन विदेशियो को पसद करते है और जिन्हे वे अपना साथी मानते है, वे सौभाग्यशाली लोग है, जो हर भारतीय चीज को सुनहरे रूप में देखते है। मानना चाहिए कि हर देश के लोग अपने कर्तव्य को अच्छी तरह से जानते है और यदि आपके देशवासी इन मूर्तिपूजको की नितान्त निष्क्रियता को नही देख सकते तो मुझे इस नतीजे पर आना होगा कि उनकी क्रियाशीलता किसी ऐसे रूप में है, जिसे मेरी

आखें नही देख पाती। मेरा खयाल है कि भावुक लोगो तथा आलोचना करनेवाले उत्साही आदमियो की महान सेना ने हिन्दुस्तान को मूर्खता के लबादे में लिपटा (अगर आप इसे देख सके तो) एक दु स्वप्न बना दिया है। और २६ साल तक मैंने ऐसे अग्रेज, यूरोपियन तथा अमरीकी पुरुषो (और स्त्रियो—नेहरू, ढेरो मूर्ख स्त्रियो) का असीम जलूस देखा है, जिनके दिमाग इतने दो कौडी के है कि हिन्दुस्तान से बाहर कोई भी उनकी राय पर पाच मिनट भी बरबाद न करेगा। फिर भी हिन्दुस्तान के साथ अपनेको नत्थी करके वे एक बनावटी महत्व के रोमाच और उसके लगातार शोर-शराबे में रहते है। हिंदुस्तान ही एक ऐसा विषय है, जो मूर्खों को हिंदुस्तान में अखबारो के पहले पृष्ठ की खबरो में जगह पाने का आधार दे देता है। इतना ही नही, बल्कि दुनिया में भी उन्हे कुछ हद तक शोहरत दिला देता है। ऐसे लोग हिन्दुस्तान के प्रेम की खातिर नही, बल्कि अपने मिथ्याभिमान के कारण आपकी ओर खिचकर आते है।

मुझे आपके लिए अफसोस है। अगर मै कह सकू तो कहूगा कि बरसो से इतनी थोडी जान-पहचान में जितना मैंने आपको पसद किया है, उतना और किसीको नही। मै अब भी सोचता हू कि अगर हम एक-दूसरे को अधिक समझ सकते और एक-दूसरे से भिन्न अपने अनुभवो को फुरसत से इकट्ठा कर सकते तो बौद्धिक रूप में हम एक-दूसरे की काफी मदद कर सकते थे। परन्तु हमें अलग रास्तो पर चलना है। 'रास्ता रास्ता है और उसका भी अत होता है।' मै अपनी जीवन-यात्रा के इस आखिरी हिस्से में अग्रेजी कवि और उपन्यासकार के अपने अधिकारपूर्ण धधे में जुट जाऊगा और आप अपनी जनता की मूर्खता पर अपना दिल तोडने में सलग्न हो जायगे। मैंने देखा कि भारत माता के नये मदिर की पूजा करने के लिए और हरिजनो को ट्रावनकोर द्वारा नगण्य चीजो के विशाल रूप से भेंट देने के अवसर पर असामयिक जय-जयकार में शामिल होने के लिए आपको बाध्य किया गया, तब भी आपने अपना विवेक कायम रक्खा और इसके लिए मैंने आपकी सराहना की। आपने अपना आत्म-सम्मान शानदार तरीके से बचा लिया है, लेकिन

आप इस तरह कबतक बचाते रहेगे ? कोई भी शक्ति आपके चारो ओर सरकस के उत्तरोत्तर बढते घेरे को रोक नही सकती, जैसे कि महात्माजी घिरे हुए है। आपके भाग्य में यही बदा है। पर है यह भयकर दुर्भाग्य, क्योकि जो कुछ होता है, उसपर कभी-कभी आपका कोई अधिकार नही रहता।

पडितजी, हर चीज का कारण होता है, यहातक कि अग्रेजो की तर्कहीनता का भी कारण है। साल के उन तीन दिनो में से आज वह दिन है, जबकि श्री अरविंद घोष दर्शन देते है। पाडिचेरी को, जहा बैठा मै यह पत्र लिख रहा हू, खाज हो रहा है। सौ से अधिक गधे साष्टाग प्रणाम और अर्चना करने के लिए उस व्यक्ति के सामने लाये (और सामने से ले जाये) जा रहे है, जो कहता है कि मै सर्वशक्तिमान आत्मा का अवतार हू। माता (पार्वती—और किसी-किसी भाव में, 'इन्द्र'—मेक रिचार्ड) उनके साथ होती है। जिस देश में इस प्रकार की ऊल-जलूल बातें होती है वहा आप क्या करेंगे ? और जो बुद्धिमान समझे जाते है वे भी ऐसे मामलो में हिस्सा लेते है ! फिर भी कभी अरविन्द बडे कुशाग्र बुद्धिवाले व्यक्ति थे और वह अदर से कभी—जैसाकि मै अच्छी तरह जानता हू, क्योकि वह मेरे साथियो में से एक थे—एक सुन्दर, सादे और चारित्रिक ईमानदारीवाले भारतीय थे।

लेकिन शायद मुझे ऐसा नही लिखना चाहिए। हममें से हरकिसी की कोई-न-कोई अपनी विशेप असगति होती ही है। जैसेकि आपने अपनी 'विश्व-इतिहास की झलक' पुस्तक में नेपोलियन की पूजा (जवाहरलाल नेहरू के लिए यह महान् आश्चर्य की बात है !) करके पाठक को आश्चर्य में डाल दिया है, इसी प्रकार इस पाडिचेरी-आश्रम में हर काम इस आश्चर्यजनक विश्व के आन्तरिक सत्य तथा शक्ति से होता है। उस दशा में मुझे आपसे क्षमा मागनी होगी।

हम अन्य विषयो पर आयें। आप नेहरू लोग बहुत बातो में भाग्यशाली रहे है, सबसे ज्यादा भाग्यशाली अपनी मोहक और शानदार स्त्रियो में। आपके इन्दिरा को लिखे पत्र बहुत सुन्दर है। यदि वह मुझे और मेरी पत्नी को मित्र समझेगी तो हमें गर्व का अनुभव होगा और वह

हमें मित्र ही पायेगी।

मैं ५ दिसम्बर को बम्बई से पी एण्ड ओ 'मालोजा' से यात्रा करूगा और इसके बाद (जो ताने-बाने मैंने बुने है, जिनमें मेरी दो ऐतिहासिक रचनाए भी है और जिनका पहला खाका तैयार भी हो चुका है) भारतीय मामलो से मेरा सक्रिय सम्बन्ध समाप्त होता है। मैं उनके सम्बन्ध में कुछ नही जानता, वे अरविन्द घोष के नये (और जो कभी स्पष्ट नही हुआ) विश्व-धर्म की भाति अगम्य है तथा वे निस्सदेह अपने रास्ते बढते जायगे। आपको मेरी व्यक्तिगत शुभकामनाए। आपकी यह बात ठीक है कि सभी चीजो को ऊपर से नीचे तक एक साथ नया रूप देने की आवश्यकता है। लेकिन आपके (और मेरे) देशवासियो का हर वर्ग केवल एक भाग का ही नया रूप चाहता है तथा असदिग्ध रूप से अपने विशिष्ट भाग के लिए ही लडने के लिए तैयार है।

कृपया अपनी बहन को मेरी याद दिलाइयेगा, जिनके प्रेमपूर्ण आतिथ्य को मैं चिरकाल तक याद रखूगा। मेरी इच्छा है कि वह मेरी पत्नी से परिचित होती। जब आप अगली बार ऑक्सफोर्ड आयेंगे तो मैं आशा करता हू कि वह उनसे परिचित हो जायगी। आपका,

एडवर्ड टामसन

१६२. एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड

६ दिसम्बर १९३६

प्रिय नेहरू,

आपने अच्छा किया जो पत्र लिखा। 'न्यूज क्रॉनिकल' वाला लेख हम लोगो की मुलाकात से पहले लिखा गया था। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण होते हुए भी मैं समझता हू कि उसकी मुख्य बातें ठीक है। जब मैं हिन्दुस्तान आया था तब मैं समझता था कि यूरोप में और मेरे देश मे भी लोकतात्रिक उद्देश्य समाप्त होता जा रहा है और हिन्दुस्तान छोडते हुए, यह समझकर मैं त्रस्त हू कि हिन्दुस्तान मे भी उसका खातमा होता जा रहा है।

जब मैंने 'न्यूज क्रॉनिकल' को लिखा तो मेरे दिमाग में सिर्फ आपकी

'आत्मकथा' थी। शास्त्री के प्रति आपकी सख्ती, जैसाकि आप भी शायद महसूस करते है, अधिकतर पाठको को एक बढिया किताब मे भारी कमी लगी। मै आपके प्रति हुए अन्याय के निवारण के लिए 'न्यूज क्रॉनिकल' को लिखूगा।

शास्त्री मेरे दोस्त है। इसके अलावा मै समझता हू कि राजाओ के सवाल पर, जिसे मै कसौटी मानता हू, उन्होने वडी हिम्मत दिखाई। पिछले दो साल की मेरी ऐतिहासिक खोजो ने मुझे पूरी तरह राजाओ का विरोधी वना दिया है। आप कहते है कि हिन्दुस्तान और इग्लैण्ड में आगाखा के अछूते बच जाने पर आपको आश्चर्य हुआ है। ऐसा ही मुझे भी हुआ है, लेकिन मुझे इस बात पर भी उतना ही आश्चर्य है कि राजा भी कैसे बच रहे है।

अव मै समझा कि 'न्यूज क्रॉनिकल' को लेख लिखते समय मेरा यह सोचना कि सप्रू और अम्वेडकर को किसी राष्ट्रीय मोर्चे में खीचा जा सकता है, गलत था। सप्रू तो समाजवाद के डर (?) से गुस्से में आ जाते है और अम्बेडकर के वर्ग के लोगो में अभी तक देश-भक्ति विकसित नही हो सकी। उनको तो पहले एक पीढी तक सामाजिक और आर्थिक न्याय का कुछ अशो में आनन्द लेना चाहिए।

लेकिन कृपा करके आप अपना यह विश्वास खत्म कर दीजिये कि मै हिन्दुस्तान के विरुद्ध कटुता लेकर लौटा हू, अथवा मैने अपना वक्त 'मदर इडिया' की तरह विवादग्रस्त मुद्दे खोजने में लगाया है। मेरे वारे में आपकी इस तरह की धारणा, मै अनुमान करता हू कि 'मॉडर्न रिव्यू' आदि पत्रो के द्वारा सुनी-सुनाई वातो पर ही वहुत-कुछ आधारित है। और आपके वारे मे मेरी जानकारी भी हाल तक मुख्यत सुनी-सुनाई वातो पर ही वहुत-कुछ आधारित थी। कुछ महत्वपूर्ण पहलुओ मे मैने आपको निश्चित रूप से गलत समझा। सभवत आपके लिए यह वहुत महत्व की वात नही कि आपने मुझे गलत समझा या नही, और यदि आप उन लोगो में से हो, जो 'मॉडर्न रिव्यू'-ग्रुप के देश-भक्तो की वात गम्भीरतापूर्वक लेते है तो भी मै समझता हू कि इसका वहुत असर नही पडता। जो हो, मेरे पास पिछले वीस साल से प्रकाशित कृतियां है, गल-

तियो से भरपूर, लेकिन किसी भी तरह उस प्रकार के ओछेपन से मुक्त, जैसाकि आप मानते है। मैं यह अच्छी तरह जानता हू कि अगर कोई थोडी आलोचना भी कर दे तो वह दुश्मन मान लिया जाता है। लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन के असली दुश्मन वे नही है, जो कभी-कभी आलोचना कर देते है, अपितु वे लोग है, जो उसपर निर्भर करते है, अर्थात् शैलेन घोष, सैयद हुसैन और रजमी जैसे लोग (वे उतने ही देशभक्त है, जितने लकडबग्घे होते है) और उनके अज्ञानी पश्चिमी प्रशसक। भले ही आप यह विश्वास न करें, लेकिन एक वक्त आयेगा जब आप यह मान लेंगे कि हिन्दुस्तान को पूरी आजादी हासिल करने में मेरी मदद देने का मौका आयेगा तो मैं जरूर दूगा।

मेरे पत्र ने स्वभावत आपको प्रभावित किया। मैं मानता हू कि मेरी दिमागी और आत्मिक तथा शारीरिक थकान बहुत बढ गई है, लेकिन पत्र में एक खास बात थी—पाडिचेरी। मैं मानता हू कि अरविन्द का गोरखधधा बहुत महत्वपूर्ण बात नही है। ऐसा हो तो भी, भले ही कोई व्यक्ति बहुत-से माया-जालो को छोड चुका हो, अन्य बधन छोडने पर उसे चोट लगती है। मुझे सदा ऐसा लगा है कि वह व्यक्ति वास्तव में बहुत अच्छे दिमाग और चरित्र का है तथा असली देशभक्त है। मैं यह जानने को तैयार न था वह ऐसा मायावी है। मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि उसका एक मुख्य सहयोगी (जिससे आश्रमवासियो ने मुझे मिलने नही दिया) अब वैसा व्यक्ति नही रहा, जैसा कि मैं उसे पहचानता था, पहले अपने साथी के रूप मे, बाद में उस आदमी के तौर पर, जिसने मेरा कालेज ही उजाड दिया (अमृतसर-काल के तुरन्त बाद ही) और जिस आदमी में निस्स्वार्थ देशभक्ति और सादगी की एक जोत जलती थी। तीसरे, हिन्दुस्तान और इग्लैण्ड में बडे भक्त के रूप मे एक मुसलमान विख्यात है। उस व्यक्ति की धार्मिक आस्था का मुझपर स्पष्ट रूप में बडा प्रभाव पडा, जबकि हाल ही में वह मुझे सुबह के सत्सग में अपने साथ ले गया था। उस भक्त में साम्प्रदायिकता इतनी थी कि जहा-कही वह उच्च पदासीन हुआ, हिन्दुओ के प्रति उदार न रहा। यह व्यक्ति अरविंद की 'शिव' के समान और उस फ्रासीसी महिला की 'पार्वती' की

तरह पूजा करता था। मुझे लगा, जैसाकि मुझे तब लगता, अगर मैं सुनता कि कैन्टरबरी के आर्चबिशप एक गुप्त थियोसोफिस्ट है। आप किसका विश्वास कर सकते है, यदि एक सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता भी इस प्रकार के पाखड को पूजने लगे ?

अगर हम फिर कभी मिले (मुझे आशा है, जरूर मिलेंगे। यदि आप दुबारा ऑक्सफोर्ड आयें तो क्या हमारे साथ ठहरेंगे ? इसका उत्तर देने का कष्ट न उठायें, लेकिन ध्यान में रखियेगा) तो मैं आपसे यह पूछना चाहूगा कि इतनी बातें होते हुए भी आप अपनी 'आत्मकथा' में महान दयालु बने रहे, किन्तु अपनी 'विश्व-इतिहास की झलक' में निरतर मेरे देशवासियो के प्रति अनुदार क्यो होगये ? यह आपके महान् और उदार तरीको के अनुरूप न था। हम सब तथ्य की भूलें करते हैं और आपकी पुस्तक तो शक्ति और बुद्धि का चमत्कार है, लेकिन यह केवल या मुख्य रूप से एक तथ्य की भूल नही है। मैं तो यह समझता हू कि उसका कुछ विशेष और अस्थायी सन्दर्भ है, जैसे कि मानसिक और शारीरिक अस्वस्थता की अवस्था में मेरी भारत के प्रति हुई हाल की प्रतिक्रियाए। मैं नही कहूगा कि आप अपना समय, जिसकी बहुत ज्यादा जरूरत है, इसपर खतो-किताबत में नष्ट करें, और फिर किसी भी मामले में चिट्ठी-पत्री हमेशा गलतफहमी पैदा करती है। लेकिन आपको उस आदमी की भाति, जो पूरी तरह से नाकामयाब साबित होगा, या उन थोडे-से लोगो में से उस व्यक्ति की तरह, जो मानवता में आस्था रखने के मानव-जाति के अधिकार को फिर से स्थापित करेगा, अपनी ख्याति और प्रभाव की खातिर, इस मामले में ध्यान देना चाहिए। अपनी ही खातिर आपको इसके लिए कुछ प्रायश्चित्त करना चाहिए—मेरे लोगो की खातिर नही, क्योकि आपको जो उत्तेजना मिली, उससे उनके प्रति कोई भी अन्याय क्षम्य हो सकता है।

मेरे कहने का मतलब यह है कि मैं जानता हू कि यह पत्र आपतक पहुचने से पहले जरूर ही ध्यानपूर्वक पढा जायगा। इस कारण यह बताने की कोशिश करते हुए कि आखिर असली महत्व की चीज क्या है, मुझे बहुत ही सरल और सक्षेप में लिखना चाहिए।

मै अपने साथ किसी प्रकार की कोई भारत-विरोधी भावना नही लाया हू, लेकिन मै जानता हू कि हम हिन्दुस्तान मे हो या इग्लैण्ड में, बहुत ही निम्न कोटि के जन्तु है, और यह मेरे लिए घोर निराशा की बात है ।

मै जानता हू, आपके और दूसरे राष्ट्रवादियो के दिमाग में यह बात भरी रहती है कि किसी भी अग्रेज को, अगर वह हिन्दुस्तान का दोस्त समझा जाना चाहता है, तो कभी आलोचना नही करनी चाहिए । हमारा अपना मजदूर-दल भी (जिसका विश्वासघात, पलायन और लोकतत्र-विरोधी कठोरता का इतना निन्दनीय रिकार्ड रहा है) इसी तरह की इच्छा करता है, लेकिन मै इस कमी को पूरा नही कर सकता । अगर आप-को ऐसा लगता है कि जिस कदम को मै गलत मानता हू उसे मुझे कभी नही कहना चाहिए तो आप मुझे अपना दुश्मन मान लीजिये ।

सोलह वर्ष पहले असहयोग-आन्दोलन को मैं गलत नही समझता था । नैतिक आधारो पर मै उसे पूरी तरह उचित मानता था और यह सोचता था कि अगर इसे आगे बढाया गया तो इसके सफल होने में सदेह नही, लेकिन जब मुसलमानो और दूसरे बडे दलो ने इसका समर्थन नही किया तो इसे छोडकर दूसरी युक्तिया काम में लाई जानी चाहिए थी । इसको बेमन जारी रखने से मुसलमानो को और निहित स्वार्थों को ही बल मिला है ।

गोलमेज-परिषद् के अवसर से पहले जबतक कि गाधीजी ने असगत और हठी रुख नही अपनाया, मैंने उन्हे कभी गलत नही माना । शायद उन्हे आना ही नही चाहिए था, लेकिन वह आ ही गये तो उनका दूसरे हिन्दुस्तानियो को, जिनमें से बहुतो ने अपने विचारो के लिए भारी कीमत चुकाई थी, अपने परामर्श के योग्य मानने और सामान्य प्रयत्न तथा आशा मे सलग्न मित्र स्वीकार करने से इन्कार कर देना अनौचित्य-पूर्ण था ।

जो चीज (कृपया मेरी बात सुनें, मै पूरी तरह या सब पहलुओं से गलत नही हू) काग्रेस को सबसे ज्यादा नुक्सान पहुचा रही है, वह है उसके द्वारा पैदा की गई यह धारणा कि वह बिल्कुल प्रगति नही कर

रही है । मै काग्रेस के आदोलन को २६ वर्ष से जानता हू और मुझे तो ऐसा लगता है कि वह अपनी रीति-नीति में कठिनाई से और अनिच्छा-पूर्वक परिवर्तन करती है । और मुझे तो वह आज भी वैसी ही दिखाई देती है, जैसी कि विभाजन-विरोधी दिनो में थी । और अगर गाधी वही है, जिस रूप में वह हाल ही में मुझे दिखाई दिये है, तो उनमें सिवा उन भावनाओ को उभारने के और कुछ कर सकने की शक्ति नही रह गई है, जिनका उपयोग या सचालन करने का उन्हे अदाज ही नही है ।

जहातक आपके समाजवाद का सवाल है, मुझे इसमें कोई सदेह नही कि यदि उसे ऊपरी तौर से देखा जाय तो यह गलत चाल है । पर इस विषय में मुझे विश्वास है कि आपकी सहज प्रवृत्ति आगे चलकर सही सिद्ध होगी । सारा आर्थिक और सामाजिक (और विशेष रूप से हिंदुस्तान मे धार्मिक) ढाचा ही विकट है । मेरे लिए यह चाहना सभव नही हो सकता कि आप यहा अपना तरीका बदलें, यद्यपि मै जानता हू कि उससे आपके विरोधी तत्वो को अस्थायी बल ही मिला है ।

जिन तरीको को मै गलत मानता हू, वे वे ही है जो आपपर थोपे जा रहे है । मै समझता हू, दुनिया के हालात को देखते हुए काग्रेस को सहयोग करना चाहिए और यह वचन देना चाहिए कि वह सहयोग करेगी । साथ ही काग्रेस को यह भी चाहिए कि वह सविधान की उन बातो का स्पष्ट रूप से खडन कर दे, जिनके पीछे कोई नैतिक आधार नही है और जिन्हें केवल बल पर आश्रित होने के कारण सहन किया जाता है । जब परमात्मा अवसर देगा (जैसाकि मौजूदा घटना-चक्र देखते लगता है कि वह अवश्य देगा), तब उससे आपके हाथ बहुत मजबूत होगे । आज के दो योग्यतम राजनीतिज्ञ रूजवेल्ट और डि वेलरा है, जिन्होने नैतिक बल का ही आश्रय लिया है और केवल वही बात कही है, जोकि उन्होने कर भी दिखाई है ।

आपका काम तो कई गुना मुश्किल है, क्योकि राजे-महाराजे और मुसलमान आपके विरुद्ध है, आपके विरोधी आपके बीच ही मौजूद है, पडापन और अधविश्वास की सारी प्रतिक्रियावादी ताकतें भी है । लेकिन काग्रेस जनता को पहले भ्रम में डालकर और फिर उतना ही भयाकुल

बनाकर अपने रास्ते को और भी कठिन बना रही है। लोग ऐसी भाषा का प्रयोग क्यो करे, जिसका वे जानते है कि एक ही चीज से बोध हो, जबकि उनके कार्य तुरन्त ही उस भाषा के विपरीत हो ? आप खुद ही अपनेको झूठा साबित कर रहे है। इसकी प्रतिक्रिया बडी भयकर और हानिप्रद होगी।

मुझे खेद है कि आप मुझे भारत का कट्टर विरोधी समझते है। मैं जानता हू कि ऐसा करना आपके लिए प्राय अनिवार्य है। मेरी कटुता हिन्दुस्तान के प्रति नही है, वह तो उस मार्ग के प्रति है, जिसपर दुनिया चली है। मुझे आपके यहा के मुसलमानो और राजे-महाराजो की कठोरता की पूरी जानकारी है। इन राजा-महाराजाओ का हमारी कजरवेटिव पार्टी के साथ गठबन्धन है और ये हर सभव अस्त्र का उपयोग करके जो कुछ हथिया सकते है, हथिया लेगे। काग्रेस, जिसका ऐसे निर्दयी शत्रुओ से मुकाबला है, (१) या तो स्वय सत्तारूढ होने से इन्कार करके इनको राजकाज में प्रमुख स्थान ले लेने देगी, (२) या उन्हे ऐसा बहाना देगी, जिसका वे बाह्य तत्वो के साथ अपने गठ-बधन को मजबूत करने में तत्काल इस्तेमाल करेंगे। वे पद-ग्रहण तो करेंगे, लेकिन उन्हे नष्ट ही करने के लिए।

नही, आप अपनी स्थिति को इतना स्पष्ट कर दीजिये कि किसी भी सदेह की गुजाइश न रहे और दुनिया आपकी बात सुने और समझे। यह कोई ३० वर्ष पुराने असहयोग-आन्दोलन की पुनरावृत्ति नही है। तब तो आप जहा भी सत्तारूढ हो सकते हो, और शासन तथा विधान-सभा में जो भला आप कर सके, करें। आप अपने हर अधिकार की माग कीजिये और किसी भी स्वत्व को हाथ से न जाने दीजिये। आपको तो सबसे पहले ही मौके पर यह कह देना चाहिए कि आप और भी आगे बढनेवाले है।

इसी तरह से आप मुसलमानो को ज्यादा-से-ज्यादा अनुभव करा सकेगे कि उनका भविष्य हिन्दुस्तान के साथ है, इग्लैण्ड के टोरियो के साथ नही। आप राष्ट्रीय आन्दोलन को मुख्यत एक हिन्दू-आन्दोलन नही बनावेंगे, लेकिन (जैसा मुझे खेद ह) आज वह है, बल्कि एक

भारतीय आन्दोलन का रूप देंगे ।

मुझे विश्वास है कि ध्येय पीछे रह गया है । इस अवस्था में अन्यथा कहने में ईमानदारी नही होगी ।

इस पत्र का उत्तर न दीजिये । फिलहाल केवल अपनी इस धारणा को दबाये रखिय कि मै हिन्दुस्तान के प्रति कटुता रखता हू ।

भवदीय,

ए. टामसन

१६३ रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन, बगाल
२१ दिसम्बर १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

इदिरा ने अपने पत्र में जिस स्नेह से मेरा उल्लेख किया है उसने सचमुच मेरे मर्म का स्पर्श किया है । वह बडी मनमोहक वालिका ह, जो अपने शिक्षको और सहपाठियो के मन में बडी सुखद स्मृति छोड गई है । उसमें तुम्हारे चरित्र की दृढता भी है और तुम्हारे विचार भी । और मुझे इस बात से आश्चर्य नही हुआ कि आत्मसतुष्ट अग्रेज-समाज से वह अपनेको पृथक् पाती है । उसे आगे जव पत्र लिखो तो कृपया मेरा आशीर्वाद भी भेजना ।

हम लोग अपने वार्षिक समारोह में घिरे है, और मुझे भय है कि भीडभाड और हलचल का मेरी शारीरिक शक्ति पर वडा भारी श्रम पडता है । लेकिन मै अपने भाग्य की तुलना तुम्हारे भाग्य से करने में बुद्धिमत्तापूर्वक अपनेको बचाता हू ।

स्नेहपूर्ण आशीर्वादसहित,

तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

पडित जवाहरलाल नेहरू,
काग्रेस-शिविर,
फैजपुर ।

१६४. महात्मा गाधी की ओर से

२८ दिसम्बर १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

जैसी मुझे आशा है, तुम आज खत्म कर लो तो शायद मुझे कल दोपहर के बाद चला जाने दोगे।

यदि आयदा काग्रेस-अधिवेशन गावो में करने के बारे में मेरा सुझाव तुम्हे पसन्द आ गया हो तो मै चाहूगा कि तुम काग्रेस से फरवरी और मार्च के बीच में अधिवेशन करने के पुराने नियम को फिर से चालू कर देने के लिए कहो। सभव हो तो हजारो को जाड़े के मौसम के कष्टो से बचाना चाहिए। ससदीय लोगो को इस व्यवस्था के अनुकूल बन जाना चाहिए। अगर विधान-मडलो मे काग्रेस को बहुमत प्राप्त हो जाय तो कोई कारण नही कि बडे दिन, ईस्टर आदि की तरह उन्हे छुट्टी क्यो नही रखनी चाहिए। मैने सरूप से कहा है कि कमला-स्मारक के लिए कही-न-कही जल्दी ही जमीन जुटा लेनी चाहिए और फिर उसके लिए घर-घर चदा इकट्ठा करने का काम शुरू कर देना चाहिए।

सस्नेह,
बापू

१६५ एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड,
३ जनवरी १९३७

प्रिय नेहरू,

इस ढग से यह इटरव्यू प्रकाशित हुआ है। इसके बेहूदा शीर्षको, मोटे टाइपो आदि के लिए मै जिम्मेवार नही हू। मेरी प्रारभिक टिप्पणी ही ग़ायब होगई, जिसका मुझे दुख है। उस टिप्पणी से पता लग जाता कि मै आपका कितना ध्यान रखता हू और आपके प्रति मेरे कितने ऊचे विचार है। लेकिन सचाई यह है कि हमारी सभ्यता आज छिछोरेपन पर आधारित है तथा हर चीज सनसनीखेज बनाई जाती है। सिनेमा तथा सब तरफ व्याप्त नारी-आदोलन ने हम सबको खत्म कर डाला है। यह युग पूरी हद तक भ्रष्ट होगया है।

मुझे यह भी भय है कि हमारे सिरो पर अपनी स्वय की विपदाओ की काली घटाए तो मडरा ही रही है, हिंदुस्तान भी हमारे हितो से बहुत दूर पड गया ह ।

एक लेख जो आपको पसद आता और जिससे आप मुख्यत सहमत होते, कई हफ्ते से रुका पडा है, क्योकि पहले तो श्रीमती सिग्सन ही खबरो म चढी रही और शायद फिर (मेरा अनुमान है) किसी फिल्मी सितारे का किसी दूसरे फिल्मी सितारे से 'रोमास' चला । मुझे खेद है । मेरे लिए यह एक सबक होगा । दुबारा कभी भी किसी लोकप्रिय पत्र के लिए लिखने में मै अपना समय बरबाद नही करूगा । आप इनका विश्वास नही कर सकते ।

अभी हाल मे एक लडकी (पेट्रीसिया ऐग्न्यू) हमारे साथ ठहरी हुई थी, जो आपकी लडकी की बडी उत्साही दोस्त है । वह उसके बारे में लगातार बातें करती रही । वे दोनो स्कूल मे साथ-साथ थी ।

१९३७ के वर्ष के लिए शुभकामनाए ।

आपका,
एडवर्ड टामसन

न्यूज क्रॉनिकल

२ जनवरी १९३७

सुधारो के श्रीगणेश के साथ हिंदुस्तान में खतरा

नेहरू की 'न्यूज क्रॉनिकल' को मुलाकात

नये साल ने हिंदुस्तान को दुनिया के मच के बीचोबीच फिर ला खडा किया है । अगले महीने नये सविधान के अनुसार काम करनेवाले विधान-मडलो के लिए प्रथम चुनाव होनेवाले है और १ अप्रैल से प्रातीय स्वायत्त शासन अमल मे आ जायगा ।

राष्ट्रवादियो अथवा होमरूलरो की गैर-सरकारी 'सनद' हिंदुस्तान की राष्ट्रीय काग्रेस ने सविधान को अस्वीकार करने तथा उसके मार्ग मे अड़चन डालने की कोशिश करने का फैसला किया है ।

हैरो और केम्ब्रिज मे शिक्षित तथा कुछ ही दिन पहले तीसरी बार

काग्रेस के अध्यक्ष चुने गए जवाहरलाल नेहरू इस विरोधी दल के नेता है।

हिंदुस्तानी मामलो के सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ एडवर्ड टामसन द्वारा 'न्यूज क्रॉनिकल' के लिए एक विशेष मुलाकात में नेहरू ने घोपणा की कि "सविधान नाकामयाब होकर रहेगा" तथा "ब्रिटिश फौज को जाना ही होगा।"

"हमें छोड़ देना होगा"

लेखक

एडवर्ड टामसन

नेहरू के चरित्र के मेरे अध्ययन से मुझे लगा कि उनकी रुचि मुख्य रूप से हिंदुस्तान को साम्राज्य से 'स्वतन्त्र' कराने में नही है।

अगर उन्हे यह विश्वास हो जाय कि साम्राज्य वास्तव में बराबरी के राष्ट्रो का एक परिवार है, जिसके अलग-अलग सदस्य को अपने विचारो को रखने का पूरा अवसर हो तो वह इस बात पर राजी हो जायगे कि हिंदुस्तान इन राष्ट्रो मे से एक रहे।

लेकिन उनका खयाल है कि निहित स्वार्थों ने हमारा गला दबाया हुआ है और हमारे अपने दकियानूसीपन और बुद्धिहीनता से हिंदुस्तान की गुलामी में रही-सही कसर भी पूरी हुई है, इसलिए हिंदुस्तान के लिए उस समय तक कोई आज़ादी नही हो सकती जबतक कि वह हमसे सभी सम्बन्ध-विच्छेद न कर ले।

मै यहा प्रश्नोत्तर रूप में नेहरू से हुई अपनी बातचीत दे रहा हू।

प्रश्न : कहा जाता है कि आपने कहा है कि हिंदुस्तान नये सविधान को 'छुयेगा' ही नहीं, इससे आपका क्या तात्पर्य है ?

उत्तर नये सविधान को न छूने का कोई सवाल ही नही है, क्योकि हमारा चुनाव लडना जाहिर करता है कि हम उसके छूने में आते जा रहे हैं। जो कुछ मतलब है वह यह है कि हम इस सविधान को सहयोग की भावना से नही ले रहे है। वह हमारी मर्जी के खिलाफ हमपर लाद दिया गया है। हम इसे बिल्कुल नही चाहते है और हम उसका अमल मुश्किल-से-मुश्किल कर देना चाहते है। उसका सघीय भाग तो भयंकर है।

प्रश्न : फिर भी हिंदुस्तान की भीषण गरीबी के होते हुए, क्या यह बेहतर न होगा कि सविधान को हिंदुस्तानियो को कष्ट से छुटकारा पाने के किसी अवसर के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाय ?

बड़ी समस्याएं

उत्तर . सविधान नाकामयाब होना ही है, क्योकि वह हिंदुस्तान की किसी बडी समस्या को हल नही कर सकता। भूमि, गरीबी और बेकारी की समस्याओ का हल होना जरूरी है।

हमारा खयाल है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अन्तर्गत कोई उचित हल नही निकल सकता।

हमने सविधान-सभा के जरिये हल की ओर इशारा भी किया है।

प्रश्न : काग्रेस की मेरी आलोचना यह है कि उसे यह याद रखने का साहस नहीं कि ऐसे लोग भी है जो रजवाडों की प्रजा है और उनके अधिकारो की बात भी होनी चाहिए। आप क्या सोचते है ?

उत्तर काग्रेस रजवाडो की रियाया को नजरदाज नही करती, हालाकि उसकी हलचले ज्यादातर ब्रिटिश हिंदुस्तान में ही केन्द्रित रही है। वह जैसी दूसरो के लिए वैसे ही रियासतो की रियाया के लिए भी एक-सी राजनैतिक, सामाजिक और नागरिक तथा दूसरी तरह की आजादियो के हक में है।

देसी रियासतो के लिए वह बहुत नही कर पाई है, क्योकि दूसरी जगह उसके हाथ घिरे हुए थे और उसके ज्यादातर नेता अपना बोझ और ज्यादा बढाना नही चाहते थे।

कोई तानाशाही नहीं

लेकिन उसूलन यह माना जा चुका है और उसकी घोषणा भी कर दी गई है।

प्रश्न : क्या वास्तविक 'डोमिनियन स्टेटस' स्वाधीनता के समान ही अच्छा न होगा ?

उत्तर मैं हिंदुस्तान के लिए साम्राज्य में रहते हुए किसी सच्ची आजादी की बात नही सोच सकता हू, यहातक कि ब्रिटेन की दूसरी डोमीनियन के बराबर भी नहीं। दोनो में कोई समानता नही है। मै एक

ऐसे आज़ाद हिन्दुस्तान की बात सोच सकता हू, जो ब्रिटेन के साथ किसी दोस्ताना समझौते पर पहुच सके।

प्रश्न : क्या आप यह पसद करेंगे कि हिंदुस्तान ऐसी तानाशाही के नीचे चला जाय, जैसाकि आज हम फॉसिस्ट देशो में देखते है ?

उत्तर मै इस विचार के पूरी तरह खिलाफ हू, खासकर किसी एक आदमी की तानाशाही के। तो भी, मै यह तो सोच सकता हू कि गभीर सकट के वक्त में, आमतौर से एक सैनिक सकट में, चन्द अदमियो की तानाशाही का साधन जरूरी हो सकता है।

लेकिन यह मामूली हालत में नही रहनी चाहिए।

प्रश्न : क्या हिंदुस्तान की एकता अधिकतर बनावटी और हाल की चीज नहीं है ? क्या यह बेहतर न होगा कि हिंदुस्तान को जाति और भाषा के आधार पर अलग-अलग राष्ट्रो में बाट दिया जाय ?

उत्तर मेरे विचार से अगर हिंदुस्तान के इस रूप में टुकडे हुए तो वह बदकिस्मती की बात होगी। हिंदुस्तान की एकता न सिर्फ वाजिब है, बल्कि बहुत जरूरी भी है। मुझे शक है कि हिंदुस्तान में ऐसा कोई अक्लमन्द आदमी होगा, जो इस बारे में जुदे ढग से सोचता हो।

तो भी यह एकता किसीको दबानेवाली नही होनी चाहिए, बल्कि उससे सास्कृतिक तथा अन्य भिन्नताओ को पूरी आजादी होनी चाहिए।

प्रश्न : हिंदुस्तान की गरीबी हर नये आनेवाले को बेचैन कर देती है। आप इससे कैसे निपटेंगे ?

उत्तर मुझे ऐसा लगता है कि हिंदुस्तान की बडी-बडी समस्याओ को हल करने का एक ही रास्ता है कि हिंदुस्तान की अर्थ-व्यवस्था को एक सुनियोजित ढग से बनाया जाय, जिसमें यहा की भूमि, छोटे-बडे उद्योग, सामाजिक सेवाए वगैरा आ जाय।

'कोई निहित स्वार्थ नहीं'

यह प्रणाली तभी चल सकती है जब बडे-बडे निहित स्वार्थों की शक्ल में जो अडचनें है वे दूर कर दी जाय। इसलिए यह जरूरी हो जाता ह कि ऐसी ज्यादातर अडचनें दूर हो।

प्रश्न : अंग्रेज ही आपकी अकेली कठिनाई नहीं है। क्या आप नहीं

सोचते कि हिंदुस्तान और उसकी आजादी के बीच उसके साम्प्रदायिक झगड़े और राजे-महाराजे अड़े हुए है ?

उत्तर मै नही समझता कि जब आर्थिक सवालो पर सोचा जा रहा हो तो फिरकेवारान मसला थोडी-सी भी कठिनाई पेश करेगा। जहातक हिंदुस्तानी राजा-महाराजो की बात है, यह सोचना बेहूदगी होगी कि ब्रिटिश हुकूमत के नुमाइदो के साथ सौ बरस पहले हुई किसी सधि की वजह से वे अपने सामन्ती और मनमाने तरीको को अपनाये जायगे। आखिर में तो देसी रियासतो के लोगो को ही यह तय करना होगा कि राजाओ की स्थिति क्या रहे।

प्रश्न : जहातक फौज का सवाल है, कुछ सूबे एक भी आदमी नहीं भेजते और दूसरे सैकडो भेजते है। ज्यादातर फौजी दो सूबों से ही आते है। क्या आप समझते है कि आपके यहां कभी भी एक लोकतत्रीय सरकार हो सकेगी, जबकि हिंदुस्तान के एक क्षेत्र के हाथ में हथियार होगे और दूसरो के लिए वह जोखम उठायेंगे ?

उत्तर फौज का सवाल कोई मुश्किल कठिनाई पैदा नही करता। फौज और एक तरह की मिलीशिया पूरे हिंदुस्तान में भरती करनी होगी, और यह सोचने की भी कोई वजह नही कि मौजूदा हिंदुस्तानी फौज नये निजाम के तई वफादार नही रहेगी।

हा, ब्रिटिश फौज को चला जाना पड़ेगा।

१६६ वी गल्लेन्ट्स की ओर से

लदंन
८ फरवरी १९३७

प्रिय नेहरू,

अलवर्ट हॉलवाली रैली के लिए आपने जो सदेश भेजा है, उसके लिए वहुत-वहुत हार्दिक धन्यवाद। मैने यह घोषित नही किया है कि यह सदेश कहा से आया है, लेकिन जैसे ही 'भारत की जनता' शव्द पढे गए वैसे ही तालिया गडगडा उठी। तार के अन्त मे आपका नाम पढने से पहले एक वार फिर ऐसा ही हुआ और जव मैने आपका नाम पढा तव तो तालियो का ठिकाना ही नही रहा। हर्प के इन प्रदर्शन ने इस वात को

बिना किसी सदेह के प्रमाणित कर दिया कि दर्शको में से प्रत्येक व्यक्ति आपकी अपील को स्वीकार कर रहा था ।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूरी-की-पूरी सभा आश्चर्य-जनक रूप से सफल रही और हमें विश्वास है कि इसकी बहुत ही महत्व-पूर्ण राजनैतिक प्रतिक्रिया होगी ।

हार्दिक धन्यवाद और समस्त मगलकामनाओ सहित,

आपका,
वी. गल्लेन्ट्स

पडित जवाहरलाल नेहरू
स्वराज्य भवन,
इलाहाबाद, यू पी

१६७ सर स्टैफर्ड क्रिप्स की ओर से

३ एल्म कोर्ट
टेम्पिल ई. सी. ४
३ मार्च १९३७

प्रिय नेहरू,

इतना लम्बा और रोचक पत्र लिखने के लिए समय निकालकर आपने बडी कृपा की । इसे हम 'ट्रिब्यून' में छापेंगे, क्योकि यह जानकारी से भरा हुआ है और इसमें विजय की वह भावना है, जिसकी हमारे देश के लोगो को इस समय बडी जरूरत है ।

हमारी एकता का आन्दोलन आगे बढने लगा है, यद्यपि मजदूर सघर्षों और दल के अधिकारी-वर्ग की ओर से इसका बडा कडा विरोध हो रहा है । इससे बहुत अधिक मात्रा में राजनतिक रुचि और भावना जागृत करने में सफलता मिल चुकी है और अबतक इससे भलाई-ही-भलाई हुई है ।

हिंदुस्तान के लोगो में जो शानदार उत्साह है, उससे मुझे ईर्ष्या होती है । मैं चाहता हू कि ऐसा ही आन्दोलन हमारे यहा भी चले, लेकिन शायद हम लोगो में छल-कपट बहुत है और हमें अपने प्रजातत्र में अत्यधिक अधिकार प्राप्त है । आपने जो महान विजय पाई है, उसके लिए म आपको और काग्रेस को अपनी हार्दिक बधाई भेजना चाहता हू । हम आपके कन्वेन्शन के निर्णय की बडी रुचि के साथ प्रतीक्षा करेंगे और यह

भी जानना चाहेगे कि इडियन ऐक्ट को काम में लाने के बारे में आप क्या रुख अपनाते है।

मुझे निश्चय है कि आप हर प्रकार के साम्राज्यवाद के प्रति और उनके अनेक फासिस्ट तरीको के प्रति भी, जो आज हिंदुस्तान में अमल में लाये जा रहे है, कडे-से-कडे विरोध की भावना बनाये रखेंगे। मुझे भय है कि यहा हम आपकी बहुत ही कम सहायता कर सकते है, क्योकि अभी तक हमारा दल साम्राज्यवादी स्थिति के झझटो को नही समझ सका है। फिर भी हम यहा के लोगो में जानकारी फैलाने की भरपूर चेष्टा कर रहे है और यह भी समझाने की चेष्टा कर रहे है कि शाही मामलो में ऐसे आन्दोलन के प्रति क्या-क्या जिम्मेदारिया होती है।

मै समझता हू, यह एक महत्व की बात होगी कि हम 'ट्रिब्यून' में अधिक-से-अधिक भारतीय समाचार छापें, इसलिए यदि समय-समय पर आप हमें कोई पत्र या छोटे लेख भेज सके तो वह बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा, हालाकि मै जानता हू कि आप कितने व्यस्त है।

शुभकामना-सहित,

आपका,
स्टैफ़र्ड क्रिप्स

१६८ लार्ड लोथियन की ओर से

सेमूर हाउस,
१७, वाटरलू प्लेस, एस. डब्ल्यू १
४ मार्च १९३७

निजी

प्रिय श्री जवाहरलाल नेहरू,

मै भारतीय चुनावो के क्रम को इतनी बारीकी से देखता रहा हूं जितनी कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे इस समय मुख्य रूप से व्यस्त इस देश मे रहकर सम्भव है। मुझे खुशी है कि कांग्रेस को छ सूबो में बहुमत प्राप्त है अथवा उसके और सब पार्टियो से अधिक सदस्य चुने गये है। वह प्रथम बार सबसे अधिक सक्रिय और अनुशासित राष्ट्रीय शक्ति को हिंदुस्तान में एक दायित्वपूर्ण और हकूमत के पद पर आसीन करेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिन सूबो में काग्रेस को बहुमत प्राप्त है, वहा वह पद-ग्रहण करना और जिम्मेदारी लेना स्वीकार करेगी। मै जानता हू, इस बारे में आपकी राय भिन्न होगी और आपकी वह राय न सिर्फ सविधान में सुरक्षित ब्रिटिश हकूमत के अधिकारो पर आधारित है, बल्कि इस तथ्य पर भी कि केन्द्रीय असेम्बली में सम्पतिशालियो का ही बहुमत होनेवाला है। मै अपनी बात पर दो कारणो से ज़ोर देता हू। प्रथम तो इतिहास में एक बार भी ऐसी मिसाल नही मिलती, जबकि उत्तर-दायी सरकार का सिद्धान्त उस असेम्बली में लागू किया गया हो, जहा-पर कि बहुमत सरकार की पूरी जिम्मेदारी उठाने मे समर्थ न हो, भले ही सविधान में कितनी ही सुरक्षा बरती गई हो। पार्लमेंट का इरादा था कि सूबाई अधिकारो के क्षेत्र के अन्तर्गत सूबो में पूरी जिम्मेदार सरकारें बनाई जाय। जबतक कोई मत्रिमडल ऐसी नीति न अपनाये, जिससे जनमत की भारी अवहेलना होती हो, कोई भी गवर्नर जनता के प्रतिनिधियो की इच्छा का विरोध तबतक नही कर सकता जबतक कि वे प्रतिनिधि अपनी नीति के परिणामो की पूरी जिम्मेदारी खुद उठाने को तैयार हो। इसलिए मेरा विश्वास है कि हकूमत के काफी मामलो में काग्रेस पूरी जिम्मेदारी उठाने की स्थिति में है और वह उस अनुभव को प्राप्त करने लायक भी है, जो सरकार की जिम्मेदारी उठाने पर ही मिल सकेगा। और फिर जब वह शासन करने की अपनी योग्यता सिद्ध कर चुकेगी तब वह सविधान एव सघीय मामलो पर बातचीत करने के लिए अधिक मजबूत स्थिति में होगी, यही तो ब्रिटेन और उसके बीच झगडे की जड है।

दूसरा कारण यह है कि मेरा विश्वास है, हिंदुस्तान का सबसे महत्वपूर्ण और एकमात्र हित अपनी असीम एकता कायम रखने में है और जो सघीय सविधान में समाविष्ट है। जब आप अकथनीय दुर्भाग्यो और निस्सीम निराशा में लिप्त, अपनी समस्याओ को हल करने में नितान्त असमर्थ यूरोप को देखते है जिसकी यह स्थिति उसके २६ सर्व-प्रभुत्व-सत्ता-सम्पन्न राज्यो में बट जाने के कारण हुई है तब पता चलता है कि पूरे देश में सरकार की स्थापना के ढाचे को शुरू करनेवाले हिंदुस्तान को कितना अच्छा सुअवसर मिला ह। एक समय था जब ब्रिटेन भारत में चीन

की तरह मचू अथवा रूस मे जार की तरह से देश की एकता को निरकुश साधनो द्वारा कायम रख सकता था। वे दिन गये। कोई शक नही कि आप उस सविधान के अन्तर्गत मताधिकार एक भिन्न तरीके से चाहेगे, लेकिन क्या यह अधिक महत्वपूर्ण नही कि सघीय ढाचे में रहकर सघर्ष किया जाय, बजाय इसके कि उस ढाचे को ही नष्ट कर दिया जाय और हिंदुस्तान की एकता को खतरे में डालकर यूरोप के रास्ते पर चलने की जोखिम उठाई जाय ? मेरा खयाल है कि उस रास्ते को अपनाने से आप अपने लक्ष्य पर अधिक जल्दी पहुचेंगे और किसी अन्य मार्ग के अपनाने की अपेक्षा हिंदुस्तानी जनता को अधिक लाभ पहुचा सकेगे।

आखि ी बात यह कि मैं समझता हू कि गवर्नरो से यह वादा लेना कि वे सुरक्षित अधिकारो का उपयोग न करेंगे, ठीक रास्ता नही है। वे यह वचन नही देगे और वचन मागने का मतलब होगा अवास्तविकताओ पर लडाई लडना। खास चीज तो यह है कि जिम्मेदारी ले ली जाय और तब उस जिम्मेदारी के अपनाने पर आग्रह किया जाय कि जिम्मेदारी में हस्तक्षेप न हो, क्योकि आप अपनी नीति की जिम्मेदारी लेने को राजी है।

मुझे यकीन है कि एक साल पहले हुई दोस्ताना बातचीत को ध्यान में रखकर इस पत्र को लिखने के लिए आप क्षमा करेगे। यह पत्र आपके तथा हिंदुस्तान दोनो के प्रति शुभेच्छा से प्रेरित होकर तथा इस विश्वास से लिखा गया है कि सविधान ने अधिकतर मताधिकार के कारण हिंदुस्तानियो के हाथ में शक्ति की एक ऐसी कुजी दे दी है, जिससे वे यद्यपि बिना सघर्ष और कठिनाई के तो नही पर सवैधानिक तरीको से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है बजाय उन तरीको के, जिनसे पिछले सालो मे दुनिया पर आफते आई, ऐसी आफतें जो पूजीवादी शोषण से भी गई-बीती है और जिन्हे केवल लोकतत्र ही अकेला दूर करने के लिए प्रयत्न-शील है।

आपका,
लोयियन

१६९. वल्लभभाई पटेल की ओर से

अहमदाबाद
९ मार्च १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

अखबारो के समाचारो से मैं देखता हू कि ८ ता को पूना में महाराष्ट्र प्रान्तीय काग्रेस कमिटी की बैठक हुई और उसने पद-ग्रहण के विरुद्ध निश्चय किया। परन्तु उसी दिन महाराष्ट्र की धारासभा के सदस्यो (नये चुने हुए सदस्यो) की एक बैठक हुई और उन्होने पद-ग्रहण के पक्ष में एक प्रस्ताव पास किया। इतना ही नही किया, बल्कि और आगे बढे और उन्होंने एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा मुख्यमत्री पद के लिए श्री नरीमान की नामजदगी की सिफारिश की है। यह बडी बुरी बात है। इस सबध मे हाल ही में तुम्हारे द्वारा भेजी गई हिदायतो की ये प्रत्यक्ष विरोधी हैं। मुझे भय है कि बम्बई से मत्रियो के पदो के लिए जो जोरो का प्रचार शुरू हुआ है, यह प्रस्ताव उसीका परिणाम है। मालूम होता है कि धारासभा के लिए चुने गए अपने सदस्यो को महाराष्ट्र प्रान्तीय काग्रेस अपने काबू में रख पाने में असमर्थ है। यदि केन्द्र द्वारा मजबूत नियत्रण नही रखा गया तो हालत बिगड जायगी। इन रिपोर्टो की एक कतरन तुम्हारी सूचना के लिए भेज रहा हू।

बम्बई होता हुआ १४ की शाम को मै दिल्ली पहुच रहा हू। आशा है, तुम प्रसन्न होगे।

सप्रेम तुम्हारा,
वल्लभभाई

१७० रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

'उत्तरायण'
शान्तिनिकेतन, बगाल
२८ मार्च १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे अभी-अभी तुम्हारा तार मिला, जिससे आशा होती है कि आगामी १४ अप्रैल को होनेवाले हमारे समारोह की अध्यक्षता के लिए

तुम आ सकोगे। पर राजनैतिक स्थिति की जिस अनिश्चितता का तुमने ज़िक्र किया है वह, जहातक हमारे इस छोटे-से समारोह का सवाल है, बहुत ही भयावनी है और मै तुम्हे यह बताने के लिए फिर से लिख रहा हू कि मै स्वय इस प्रसग को किस प्रकाश मे देखता हू।

विशाल पुस्तकालय और ५०,००० रु की निधि चीनी जनता की भारत को भेंट है और इसे सही पृष्ठभूमि मे न देख सकना दुर्भाग्य की बात होगी। इस कार्य का प्रेरक चीनी-हिन्दी सास्कृतिक समाज है, जिसके सगठनकर्ताओ में मार्शल च्याग काई शेक, राष्ट्रपति डा तसाई ताओ और चीनी राष्ट्रीय अनुसधान सस्थान के सचालक आदि, चीनी-जीवन के सभी नेता शामिल है। हमारे ऊपर इस बात की ज़िम्मेदारी है कि भेंट को मित्रता और सहयोग की समुचित भावना के साथ ग्रहण करें और समाज का औपचारिक उद्घाटन इस प्रकार होना चाहिए, जिससे हमारे चीनी मित्रो को तत्काल विश्वास हो सके कि भारत इस सुन्दर कार्य का उचित प्रत्युत्तर ही देगा। उद्घाटन-समारोह के लिए मुझे तुमसे अधिक उपयुक्त कोई दूसरा नही सूझता और तुम्हे आना ही होगा। जरूरत हो तो हवाई जहाज़ से आना, हमारे यहा हवाई जहाज के उतरने का अच्छा प्रबध है। अपने साथ इदिरा को लाना न भूलना।

आशीर्वाद-सहित,

सप्रेम तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१७१ अर्न्स्ट तोल्ले की ओर से

दी मिरामर
सांता मोनिका, केलिफोर्निया,
३० मार्च १९३७

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

पिछला पत्र लिखे महीनो बीत गये है। मुझे पूर्ण आशा है कि जब यह पत्र आपके पास पहुचेगा तब आप खूब स्थिर होगे।

मै आपके जीवन और कार्य का गहरी दिलचस्पी और बडे ध्यान के साथ अध्ययन करता रहा हू। अमरीका के कुछ समाचार-पत्रो और

पत्रिकाओ मे हिंदुस्तान की स्थिति की खबरें बिना किसी व्यक्तिगत राग-द्वेष के और काफी विस्तार के साथ छपती है।

मै यहा अमरीका में अक्तूबर के आरम्भ में भाषण देने के लिए आया था। इन भाषणो का उद्देश्य हिटलर और नाजी-प्रणाली का विरोध करना था, लेकिन हिटलर की केवल घरेलू नीति, हत्याओ और अल्प-सख्यको, उदारदलीय सदस्यो तथा समाजवादियो के दमन के विरुद्ध ही नही, बल्कि उसकी विदेश-नीति के खिलाफ भी, जिससे सारे ससार की शान्ति को खतरा पैदा होगया है। स्वभावत मैंने लोगो को यह भी बतलाया कि स्पेन के फ्राको-विद्रोह को तैयार करने में और उसे समर्थन देने में हिटलर का हाथ था। मैंने सारे अमरीका का भ्रमण किया और सार्वजनिक सभाओ, विश्वविद्यालयो, महिला क्लबो में, लेखको और पत्रकारो के सामने और रेडियो आदि पर भी भिन्न-भिन्न सामाजिक स्तर के लोगो के सामने भाषण किये।

यह भाषण-यात्रा तीन महीनो तक चली। अक्सर ऐसा होता था कि मै दिन में दो-दो बार भाषण करता था। एक दिन तो चार बार भाषण किया। मै जानता हू कि आपको मेरे काम में रुचि है, इसलिए मै अपने भाषणो के बारे मे कुछ अखबारो की कतरनें इस पत्र के साथ भेजने की धृष्टता कर रहा हू।

इस यात्रा की एक बहुत ही रोचक बात यह है कि यहा की साधारण जनता और हॉलीवुड के फिल्मी कलाकारो ने भी, जिनसे उम्मीद नही की जाती थी, बडी सहानुभूति दिखलाई है।

हॉलीवुड में एक बहुत ही प्रभावशाली नाजी-विरोधी सघ है, जिसके सदस्यो मे बहुत-से सुप्रसिद्ध फिल्म-निर्माता, फिल्म-लेखक और फिल्म-कलाकार भी है।

यात्रा समाप्त करके मै हॉलीवुड लौट आया और इस समय मैं मीट्रो गोल्डविन मेयर के लिए 'लोला मोन्टेज' फिल्म की कहानी लिख रहा हू। (लोला मोन्टज उस विचित्र आयरिश लडकी का नाम है, जो कि एक अफसर की बेटी थी, जिसने अपनी युवावस्था भारत में बिताई थी और जो बाद में लन्दन में एक 'स्पेनिश नर्तकी' के रूप में सामने आई

और फिर ववेरिया के शाह लुडविग प्रथम की मित्र बन गई। इस शाह की राजनीति पर सबसे अधिक उसीका निर्णायक प्रभाव रहा और ऐसा वह उस समय तक करती रही जबतक कि १८४८ में म्यूनिक का हास्यास्पद विद्रोह न उठ खडा हुआ, जिसके फलस्वरूप लोला मोन्टेज को देश-निकाला मिला और राजा को गद्दी छोडनी पडी। इतिहास भी अक्सर कितना विचित्र होता है! यूरोपीय प्रतिक्रिया के समय यही लोला मोन्टेज आजादी की सदेश-वाहिका बनी।)

यहा का अपना काम खत्म हो जाने पर मै न्यूयार्क चला जाऊगा, जहा मेरे दो नाटक खेले जायगे। दोनो ही पुस्तक के रूप में छपेंगे। छपते ही मुझे उनकी प्रति आपके पास भेजने में वडी प्रसन्नता होगी।

पिछली बार जब मै यहा १९२९ में आया था, तबके बाद से यहा अमरीका में वडे-वडे परिवर्तन होगये है। यहा के महान आर्थिक सकट ने यहा की जनता पर, विशेष रूप से युवको पर, वडा गहरा असर डाला है। तुच्छ आशावादिता और डालर की पूजा के वदले यहा आजकल एक वहुत ही गहरी आध्यात्मिक वेचैनी दिखाई दे रही है। लोगो में वास्तविक सामाजिक समस्याओ की ओर झुकाव और सामाजिक क्षेत्र के साथ-ही-साथ कला के क्षेत्र में भी सत्य की आकाक्षा दिखाई दे रही है।

इसके अलावा मै समझता हू कि अकेला अमरीका ही वह देश है, जिसने फासिज्म से इतनी जल्दी सवक सीखा है।

जनसख्या का एक बहुत वडा भाग अव स्वतत्रता के प्रति जागरूक हो गया है और रूजवेल्ट के चुनाव में दाव यह था कि कौन आजादी के पक्ष में है और कौन विरोध मे।

मुझे अगले महीने रूजवेल्ट से मिलने की आशा है। अमरीकी इतिहास के वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है।

इग्लैंड मैं कव लौटूगा, यह मै अभी नही जानता। अभी तो मै अमरीका मे ही रहूगा।

यूरोप के मामलो की शायद आपको भी उतनी ही जानकारी है, जितनी मुझे। निश्चय ही आजकल हम लोग एक यूरोपीय युद्ध के मध्य में

है। अभी तो अलग-अलग देशो के सैनिक दस्ते और टुकडिया लड रही है। सेना के मैदान में आने में अब थोडे समय का ही सवाल रह गया है। इग्लैण्ड और इटली के बीच झगडा लगातार बढता चला जा रहा है और मेरी राय में मुसोलिनी के हिटलर के साथ मिल जाने के पीछे ब्रिटिश-विरोधी भावना काम कर रही है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि लडाई आशिक रूप में हिटलर और सोवियत रूस के बीच नही, बल्कि इग्लैंड और इटली के बीच आरम्भ होगी।

स्पेन के मामलो में लोकतन्त्रो ने आर्थिक कारणो से एक भयकर भूल कर दी है, जिसे कि बाद की पीढी शायद ही समझ पायगी। फ्रैंको और उसके फासिस्ट मित्रो की विजय का यूरोप की स्थिति पर क्या प्रभाव पडेगा, इस बात को फौरन ही समझ लेने के बदले उन्होंने अपने को तटस्थ घोषित कर दिया और इस प्रकार यूरोपीय लोकतन्त्रो की स्थिति को और भी सकटजनक बना दिया। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि इस मामले में लोकतन्त्रो के हस्तक्षेप में बहुत देर नही होगी, जैसी कि बहुत-से मामलो में पहले हो चुकी है।

क्या हिंदुस्तान में भी फासिस्ट आन्दोलन है? क्या वहा भी नाजी लोग प्रचार द्वारा प्रभाव डालने की चेष्टा कर रहे है।

आपकी पुत्री के क्या समाचार है? क्या वह अब भी लन्दन में ही है? कृपया मेरा आदर और मेरी शुभकामनाए स्वीकार कीजिये।

आपका,
अर्न्स्ट तोल्ले

१७२ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
५ अप्रैल १९३७

दुबारा नहीं देखा

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हे बीमार क्यो होना चाहिए? बीमार हो जाने पर तुम आराम क्यो नही लेते? मैंने सोचा था कि इन्दू के आने के बाद तुम चुपके-से

कही चले जाओगे। जब वह आ जाय तो उसे मेरा प्यार पहुचा देना। इस पत्र के साथ उसे भी दो शब्द लिख रहा हू।

अब तुम्हारे रूठने की बात। किसी भी तरह सही, मैं जो भी कहता या शायद करता भी हू वही तुम्हे खटकता है। चुप रहना असभव था। मेरा खयाल था कि सदर्भ में शिष्टता और अशिष्टता शब्द बिल्कुल ठीक आ गये। बयान के बारे में काग्रेस की तरफ से शिकायत का पहला स्वर तुम्हारा निकला है। अगर सभीको शिकायत थी तो मैं क्या कर सकता था? मुझे खुशी है कि तुमने लिख दिया। जबतक मेरी समझ साफ न हो जाय या तुम्हारे डर दूर न हो जाय तबतक तुम्हे मुझे बर्दाश्त करना होगा। मुझे अपने बयान से कोई हानि होने का अदेशा नही है। क्या तुम्हारे दिमाग में कोई ऐसी चीज है जिसे मै नही समझता?

कमलादेवी ने वर्धा से मद्रास तक हमारे साथ सफर किया। वह दिल्ली से आ रही थी। वह मेरे डब्बे में दो बार आईं और लम्बी बातें कर गईं। अन्त में वह जानना चाहती थी कि सरोजिनीदेवी को क्यो नही शामिल किया गया, लक्ष्मीपति को राजाजी अलग क्यो रख रहे है, अनुसूयाबाई को क्यो बाहर रखा गया? तब मैंने उन्हे बताया कि अलग रखने के मामले में मैंने क्या भाग लिया और उस दिन मौनवार को मैंने तुम्हारे लिए जो नोट लिखा था उसका जितना भाग मुझे याद था, लगभग सारा उन्हे कह सुनाया। अवश्य ही मैंने उन्हे बताया कि शुरू मे सरोजिनी को न लेने और बाद में ले लेने में मेरा कोई हाथ नही था। मैंने उनसे यह भी कहा कि जहातक मुझे मालूम है, लक्ष्मीपति को न लेने से राजाजी का कोई वास्ता नही था। मैंने सोचा, तुम्हे यह सब मालूम होना चाहिए।

आशा है, इस पत्र के पहुचने तक तुम फिर पूरी तरह तदुरुस्त हो जाओगे। माताजी के बारे में तुमने कुछ नही लिखा।

सस्नेह,

बापू

१७३. लार्ड लोथियन की ओर से

ब्लिकलिंग हॉल,
ए ल्स्हम

गोपनीय

९ अप्रैल १९३७

प्रिय श्री जवाहरलाल नेहरू,

२५ मार्च के पत्र के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। 'टाइम्स' मे प्रकाशित मेरा पत्र आपने देखा होगा। "मन्त्रियो की उनकी वैधानिक गतिविधियो से सम्बन्धित सलाह को गवर्नर हस्तक्षेप के अपने विशेषाधिकार द्वारा रद्द नही करेगा", ऐसा आश्वासन मिलने पर ही हम सरकार बनायेंगे, कांग्रेस कमेटी का यह प्रस्ताव "बहुत ठीक" है, आपके इस विचार से मैं पूर्णत सहमत नही हू। ऐसा मानने के लिए जो कारण हैं उन्हे मैं यहा नही दोहराऊंगा। सिर्फ इतना कहूंगा कि गवर्नर अपने विशेषाधिकारो का प्रयोग करे या नही, यह कुछ आदेशात्मक नही है, बल्कि यह उसकी इच्छा पर निर्भर होगा और स्थिति इसीसे स्पष्ट हो जाती है। दूसरे शब्दो में, जैसा कि ज़ेटलैण्ड ने कल लार्ड-सभा में स्वीकार किया है, गवर्नर द्वारा अपने विशेषाधिकार के प्रयोग का प्रश्न उसके अपने निर्णय पर निर्भर करता है। वह इस बात पर विचार करेगा कि विशेषाधिकार का प्रयोग कानून और व्यवस्था तथा अल्पसख्यको आदि के लिए अपने मन्त्रिमडल की सलाह मानने की बनिस्बत अधिक हानिकर तो नही होगा। उत्तरदायी शासन-प्रणाली का यह एक बुनियादी तत्व है। और ठीक इसी कारण से, जहा-कही भी यह पद्धति लागू की गई है और लोकप्रिय मन्त्रिमडलो ने शासन-भार सम्हाला है, धीरे-धीरे सारे अधिकार विधानमडलो और निर्वाचको को सौंप दिये गए हैं। ऐसा क्यो होता है, इसके भी कारण है। जबतक मन्त्रिमडल अपनी नीति का अतिरेक कर निर्वाचको को अपना विरोधी नही बना लेता तबतक व्यवहारत विशेषाधिकार का प्रयोग करना गवर्नर के लिए असम्भव नही तो कठिन जरूर रहता है, क्योकि ऐसा करने पर वैधानिक सकट उत्पन्न होता है, जिसके फलस्वरूप फिर से आम चुनाव कराना

लाजिमी हो जाता है। इस स्थिति में एक विदेशी ताकत द्वारा अधिकार के प्रयोग के कारण ही निर्वाचको के हाथ उसकी नीति की हार हो जाती है। इसलिए मै कहना चाहूंगा कि आपके दृष्टिकोण से भी पूर्व आश्वासन मागने की नीति ठीक नही है। न तो आप और न गवर्नर ही वचनबद्ध होना चाहते है। इस प्रकार के आश्वासनो से और भी गलतफहमिया पैदा होती है। आप यह परम्परागत रास्ता क्यो नही अपनाते—शासन-भार सम्हालिये, अपने कानून बनाइये और फिर गवर्नर को हस्तक्षेप की चुनौती दीजिये ? अगर वह हस्तक्षेप नही करता तो आप पूरा भार सम्हाल लेंगे और कुछ ही सप्ताह या महीने में ससदीय प्रणाली प्रान्तो में पूरी तरह चालू हो जायगी और हर नये महीने के आरम्भ के साथ हस्त-क्षेप अधिकाधिक कठिन होता जायगा। हा, मन्त्रिमडल ही कोई गलती कर बैठे तो बात और है। यदि उसने हस्तक्षेप किया ही तो अपने दृष्टि-कोण को बुलन्द करने के लिए आपके पास आज की अपेक्षा अधिक अच्छा हथियार रहेगा।

अपने पत्र के अन्तिम पैरे में आपने कहा है कि हिंदुस्तान की आगिक एकता को बनाये रखने तथा उसे शक्तिशाली बनाने के महत्व से आप पूर्णत सहमत है, लेकिन आपकी राय में नये सविधान के सघ-विषयक खण्ड से इस एकता को सबल नही मिलेगा। मेरी समझ में यह नही आता। जहातक बुनियादी बातो का सम्बन्ध है, नया भारतीय सवि-धान ठीक उसी सिद्धान्त पर आधारित है, जिसपर अमरीका, कनाडा अथवा आस्ट्रेलिया का सविधान बना है, अर्थात् सघीय विधान-मडल के द्वारा हिंदुस्तान की आगिक एकता, जिसमें लोकप्रिय निर्वाचक-मडल समेत प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व होगा और रियासतें तथा प्रात सवि-धान के अन्तर्गत अपने कानूनी अधिकारो का प्रयोग करेगे। सम्पूर्ण हिंदु-स्तान के लिए बननेवाला कोई भी सविधान अनिवार्यत इन्ही सिद्धातो पर आधारित होगा। यह बिल्कुल सच है कि ऐसे अन्य तत्व भी है, जो अस्थायी तौर पर आवश्यक हो भी सकते है और नही भी, लेकिन जो आपके खयाल से ही नही, वस्तुत किसी भी व्यक्ति की राय में अन्त-तोगत्वा आपत्तिजनक है। एक तत्व तो यह है कि सघीय विधान-मडल में

लोकतन्त्र और निरकुश सत्ता दोनो एक साथ बैठेंगे और यह कि मत-प्रयोग के मामले में रियासतो को अनुचित महत्व दिया गया है । आपकी दृष्टि से दूसरा तत्व वह है, जिसमें सम्पत्ति-अधिकारो को सरक्षण दिया गया है। व्यक्तिगत तौर पर मेरा भी यह खयाल है कि सघीय विधान-मडल को प्रत्यक्ष और व्यापक मताधिकार द्वारा न चुनना भारी गलती है, क्योकि जबतक सघीय सभा में प्रातो के प्रतिनिधि रहेगे तबतक प्रान्तो में निहित हानिकर प्रवृत्तियो को केन्द्र मे अत्यधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त होता रहेगा। अन्त मे साम्प्रदायिक फैसले की बात आती है। लेकिन, जैसाकि मेरा विश्वास है, सविधान के इन तत्वो का निराकरण खुद सघीय सविधान को नष्ट किये बिना भी हो सकता है। इस बात में मुझे सन्देह है कि मुसलमानो और अधिकतर अन्य अल्पसख्यको को नई सविधान-सभा में आने के लिए तैयार करना आपके लिए सम्भव है। लेकिन, उत्तरदायी शासन-प्रणाली जनता के प्रतिनिधियो के हाथ में जो अधिकार देती है उसका मै इतना कायल हू कि मेरा विश्वास है कि सविधान को नष्ट करने का प्रयास करने की अपेक्षा इसके ढाचे के अन्तर्गत ही लड-झगडकर इन त्रुटियो का निराकरण अधिक विवेकपूर्ण ढग से और अधिक तेजी से किया जा सकता है। मै भी सोचता हू कि उसको नष्ट करने का प्रयास अनिवार्य रूप से हिंदुस्तान की आगिक एकता को नष्ट कर देगा। मेरा विश्वास है कि यदि उत्तरदायी शासन-प्रणाली का सचालन शक्तिशाली अनुशासित दल द्वारा हो तो इससे न केवल सविधान में परिवर्तन ही किये जा सकते है, जो स्वय भारतीय विधान-मडलो के अधिकार में है, बल्कि एक बार यह मालूम हो जाने पर कि हिंदुस्तानी जनमत एक निश्चित रूप ले चुका है, ब्रिटिश ससद को भी उन तत्वो को सविधान से निकालने के लिए बाध्य किया जा सकता है, जिन्हे सविधान को लागू करने के निमित्त गोलमेज-सम्मेलनो के समय उसमें सम्मिलित करना आवश्यक था। आप इस विचार से सहमत नही होंगे, क्योकि मै नही समझता कि उत्तरदायी शासन-प्रणाली अनुशासित बहुसख्यक दल के हाथ में 'स्वाधीनता' प्राप्ति की वह शक्ति देती है, जिसमें आपका उतना विश्वास है जितना मेरा। लेकिन मुझे यकीन है कि यदि

आप जाकर सप्रू से बात करें तो आपको वह यह तसल्ली दिला देंगे कि यह सविधान जितना आप समझते है उससे कही अविक अधिकार वहुसख्यक दल को देता है। वस्तुत यह सविधान आपको अधिकार प्राप्त करने की कुजी देता है, यदि आप इसका इस्तेमाल करना जानते हो। यही कारण है कि यहा के कटटरपथियो ने इसका इतना कडा विरोध किया है।

आपका,
लोथियन

पडित जवाहरलाल नेहरू
इलाहाबाद।

१७४ एडवर्ड टामसन की ओर से

३ मई १९३७

प्रिय नेहरू,

आपकी अस्वस्थता का हाल सुनकर मुझे बडा दु ख हुआ। मै आपके वेहतर होने की आशा करता हू। मुझे पत्र लिखने का समय निकालकर आपने मुझपर बडी मेहरबानी की है।

जहातक हिंदुस्तान के राजनैतिक मामलो का सवाल है, आपके मुकावले मुझे वोलने का वहुत कम अधिकार है। अगर हमारे विचार नही मिलते तो शायद इसमें मेरी गलती है। अगर मै कोई दिलचस्पी लेता हू तो किसी वाहरी आदमी या अग्रेज की हैसियत से नही, वल्कि एक ऐसे आदमी की हैसियत से जिसका विश्वास है कि हिंदुस्तान में काग्रेस एक आधुनिकतम और महत्वपूर्ण आन्दोलन है, जिसकी तुलना किसी और से नही की जा सकती और यह कि वह उन वातो के लिए प्रयत्नशील है, जिन्हे मै अपने देश मे भी देखना चाहता हू। इसलिए आपकी लडाई मेरी लडाई है।

मेरे खयाल से 'न्यूज क्रॉनिकल' में राजनीति पर एक ही लेख आया था और वह, जैसाकि मैंने आपसे कहा था, यदि वम्वई में नही लिखा गया होता तो कुछ दूसरे ही तरीके से लिखा जाता। दूसरे लेख में कुछ सामान्य विचार दिये गए थे, जिसे एक सहायक सम्पादक ने और

सरल कर दिया (कभी-कभी तो इससे वक्तव्य ही असत्य हो गया है। मिसाल के तौर पर तीन लाइने बचाने के लिए मुझसे यह कहलाया गया कि राष्ट्रीय कांग्रेस का आरम्भ ब्रिटिश अधिकारियो ने किया था।)

फिर भी, एक बात है, जिसपर मेरे खयाल से, मेरे प्रति सामान्य न्याय के लिए आपको अपनी राय स्थिर कर लेनी चाहिए। जब हमारी मुलाकात हुई थी तब मै बहुत ही दु खी, थका और हैरान था और हताश भी। इसलिए मै कुछ इस तरह बातें कर गया कि जिससे आपका यह सोचना स्वाभाविक ही है कि मै रेजमी, रामानन्द चटर्जी और उसी तरह के दूसरे लोगो को जरूरत से ज्यादा महत्व देता हू, हालाकि ये बातें मैने एकात में कही और उनका जिक्र सार्वजनिक तौर पर या लिखित रूप में कभी नही किया। जब मन की हालत सामान्य होती है तो मेरे दिल में उनके प्रति कोई श्रद्धा नही होती और न साल में पाच मिनट के लिए भी उनपर कोई विचार करता हू। मै यह स्वीकार करता हू कि पहले कई बार मुझको उनसे इस कारण खिन्नता हुई है कि आपके आन्दोलन में ऐसे स्वार्थी और अपना विज्ञापन करनेवाले लोग भरे है, जिनका, अगर इससे सम्बन्ध न हो तो थोडा भी महत्व नही हो सकता—ऐसे ही लोगो के लिए शैली ने 'दि इलस्ट्रियस ऑवस्क्योर' का विशेषण दिया है—और कुछ परले दर्जे के बेवकूफ लोगो से भी मुझे खिन्नता हुई है। विवेकशील और सद्भावी लोग इन्हे खडा करके सामने लाते है और फिर उन्ही लोगो की राय में उन उद्देश्यो को हानि पहुचती है, जिनका वे गलत प्रतिनिधित्व करते है। अनेक देशो के बहुत-से लोग यदि हिंदुस्तान के सवाल पर गम्भीरता से विचार नही करते तो इसके लिए ज्यादातर ऐसे ही लोग जिम्मेदार है। जो हो, मै इसपर सहमत हू कि इनसे खिन्न होने का सम्मान भी इन्हे नही दिया जाना चाहिए।

अब हम उन बातो पर विचार कर सकते है, जिनपर हम दोनो के विचार बिल्कुल मिलते है। मेरी पिछली हिंदुस्तान-यात्रा से मुख्य परिवर्तन यह हुआ है कि अब मै राजाओ का पक्का विरोधी होगया हू। मै इतिहास-सबधी एक काम कर रहा हू, जिसमें यह बात स्पष्ट हो जायगी। इन्ही जाडो में मै एक किताब प्रकाशित कर रहा हू, उसमें भी यह प्रकट

होगा। मेरी राय मे ये राजे-महाराजे रक्त-शोषक कीडे है। उनमे से अधिकतर तो निरे बेहूदे है। उनके बारे में जो चापलूसीपूर्ण बाते कही जाती है, वे तो और भी भयकर है। लेकिन उनसे पिण्ड छुडाना आसान न होगा।

जेटलैण्ड के दिखावटीपन के बारे में भी मै बिल्कुल सहमत हू। मेरी अपनी राय यही है कि वह बिल्कुल अपवादरूप से दलीय व्यक्ति है। जन-सामान्य क्या सोचता है अथवा उसपर क्या बीतती है, इसकी उसे कोई जानकारी नही। उससे न तो हिंदुस्तान का और न हमारे देश का कोई लाभ होनेवाला है। वह विशुद्ध टोरी है।

हा, शायद मै भौतिक शक्ति के सम्बन्ध मे बहुत अधिक सोचता हू। आपको मालूम है, मै ५१ वर्ष का हू। मेरा सम्बन्ध सुखद (जो किसी समय सुखद था!) आश्वस्त उदार आन्दोलन से है, जो महायुद्ध से पूर्व श्रमजीवी वर्गों के लिए कुछ (कम-से-कम उनके लिए जो कुछ भी किया जा सकता सब) करा सकने में समर्थ हुआ और जिसका विश्वास था कि किसी भी देश में किसी भी अन्याय को हम शातिपूर्ण तरीके से मिटा सकते है। हममें से अधिकतर लोगो का एक पैर कब्र में है। जो बाकी है वे निराश हो चुके है और समय से पहले ही उनका दिल टूट चुका है। १९१३ में हमने सपने में भी नही सोचा था कि हम ऐसे जमाने से गुजरेंगे, जिसमें जर्मन गुप्तचरो को टावर में गोली मारी जायगी और एक आदमी को एडवर्ड तृतीय के कानून के अन्तर्गत 'बडे देशद्रोह' के अपराध में फासी पर चढाया जायगा। स्वय मैने एक ऐसे आदमी को देखा है, जिसे डरपोकपन के कारण दूसरे दिन गोली मारी जानेवाली थी, और अब एक देश के बाद दूसरे देश मे मर्दों और औरतो के प्राण ऐसे राजनैतिक विचारो के कारण लिये जा रहे है, जिनपर थोडी-सी भी उदारता का रग चढा है। कुछ दिन पहले एक रात बेतार के तार की खबर इतनी नीरस और दु खात थी कि वह मजाक बन गई। पहले तो हमने सुना कि मोरक्को में कोई तीस आदमियो को गोली मार दी गई, फिर स्पेन मे एक जत्थे को, इसके बाद अबीसीनिया में एक जत्थे को, इसके बाद चीन मे और सबसे अन्त में रूस में एक स्टेशन-मास्टर को इसलिए

गोली मार दी गई कि उसने अपने आदेशो की खिचडी बना दी थी, जिससे एक दुर्घटना होगई। अत हम यह नही कह सकते कि निरकुशता और सैनिक कानून से उत्पन्न बुराइया हर हालत में असम्भव है। आखिर आयरलैण्ड समुद्र के उस पार ही तो है, और कुछ ही समय पहले फ्री स्टेट शासन ने कुछ सप्ताह में ही ८० से अधिक लोगो की जानें ले ली।

दूसरे, स्पेन के बारे में हम लोग बहुत ज्यादा सोचते है। मेरे घनिष्ठ मित्र और साथी ज्योफ्रे गैरेट और कुछ दूसरे दोस्त काफी समय तक वहा रहे है। जिस प्रकार काग्रेस मेरी अपेक्षा आपके अधिक निकट है, उसी प्रकार स्पेन आपकी बनिस्वत मेरे ज्यादा नजदीक है। और, जब मै हिंदुस्तान में था तो यह सुना था कि बहुत-से लोग—हिंदुस्तानी और ब्रिटिश—यदि हालात पैदा हुए और क्रोध को इतना भडका सके कि ब्रिटेन में समर्थन मिल जाय—राजद्रोह को हिंसात्मक तरीके से दबा देने के लिए बिल्कुल निर्दयता से तयार है। मेरा यह विचार था और आज भी है कि शासन-भार सम्हाल लेना काग्रेस के लिए इस दृष्टि से अच्छा रहेगा कि वह अत्यावश्यक कानून बना सके और जब उसका समय आवेगा तब वह शासनारूढ हो जायगा। यही नही, यदि काग्रेस ने शासन नही सम्हाला, तो भी नाममात्र के और बेकार मत्रिमडल जारी रहेगे, और सम्प्रदायवादी तथा स्वार्थी लोग अपने गुटो तथा मजहबो की वहा जडें जमायेंगे, जैसाकि उन्होंने पिछले बीस साल में किया है।

फिर भी इन सबका कोई खास महत्व नही है। सिर्फ एक बात है। कृपया आप यह न सोचे कि आपका यह पत्र लिखना निरर्थक रहा। मैंने इसे बहुत ध्यानपूर्वक पढा है और यह अधिकाशत बहुत सही लगनेवाला है। यदि आप मुस्लिम फिरकापरस्ती से पल्ला छुडा सके तो यह एक बडी शानदार बात होगी। आपका पत्र पढने के बाद मुझे यह विश्वास हो रहा है कि आप जीत रहे हैं, फिरकापरस्ती के विरुद्ध भी। मै जानता हू, यदि आपकी धमकी ने बहुत भयकर रूप धारण किया तो ये लोग शारीरिक दल पर उतर आयेंगे। आप मुस्लिम राजाओ और मौलवियो के खिलाफ है। जो हो, मैं आपकी सफलता की कामना करता हू। मालूम नही, आपके मन में यह विचार कैसे आया कि मै हिंदुस्तान में काग्रेस

को सबसे अधिक महत्वपूर्ण आन्दोलन नही मानता। यदि मै आपकी मदद कर सकता हू तो जरूर करूगा। यह कहना कठिन है कि कैसे, लेकिन अवसर आयेगे और तब आप मुझपर भरोसा रख सकते है।

आपका,

एडवर्ड टामसन

अब 'ग्लिम्पसेज ऑव वर्ल्ड हिस्ट्री' (विश्व-इतिहास की झलक) के बारे में आप जिस स्थिति में है, उसमें होते हुए मेरा खयाल है कि आप दूसरो पर यह असर छोडना नही चाहेगे कि आप अग्रेजो का छिद्रान्वेषण कर रहे है। यदि आपकी जगह मै होता तो उनसे सम्बन्धित सारे अशो को बहुत नजदीक से देखता। विचित्र बात तो यह है कि इस पुस्तक के उन स्थलो का, जहा आपने हिंदुस्तान के गहरे दु ख-दर्द की चर्चा की है, मुझपर यह असर हुआ कि आप वहा सज्जन तथा आश्चर्यजनक रूप से उदार है। जहा कोई भारतीय प्रश्न नही है और जहा अधिकतर इतिहासज्ञो की राय में मामला इग्लैण्ड के अनुकूल है, वहा आप उदार नही रहे है।

मेरे विचार में इस पुस्तक का सबसे घटिया भाग वह है, जिसमें नेपोलियन का वर्णन दिया गया है। मै स्वीकार करता हू कि आपकी नेपोलियन-पूजा मेरी समझ में नही आती। ये पन्ने मुझे कलई पुते-से लगे। डक डे एघेन अथवा न्यूरेम्बर्ग के उस पुस्तक-विक्रेता की निर्मम हत्या का कोई उल्लेख नही है। और, मै यह निश्चित रूप से कह सकता हू कि अग्रेजो की उनकी कमीनेपन की आलोचना में सतुलन का अभाव है, क्योकि १८१४ में अभूतपूर्व सद्व्यवहार प्राप्त करने के बाद नेपोलियन के विद्रोह तथा यूरोप मे फिर खून की नदी बहाने के कारण स्वय उसके ही बोरबन अथवा प्रशावासियो ने उसे अपराधी की तरह गोली मार दी होती। मै जानता हू कि उसके दमन के बाद बहुत समय तक हर जगह प्रतिक्रिया का बोलबाला रहा और उसके विजेता भी बहुत बुरे लोग थे। इसके विपरीत उनकी दृष्टि में वह नगण्य था और वे सब-के-सब राजाओ के दैवी अधिकारो पर बल देते थे, इसलिए उन्हे चोटी छोड़ दिया। मुझे यह कुछ आश्चर्यजनक लगता है कि आपने नेपोलियन-

पूजा और सेंट हेलीना के शहीद होने के बारे में इतनी गम्भीरता दिखाई है। मेरी अलमारी में सेंट हेलीना के वास्तविक बलिदान के बारे में एक पुरानी किताब पडी है। क्या आपके मन में हडसन लो के लिए कोई दु ख नही हो सकता, जो कुचक्री और झगडालू लोगो के बीच पडा था, जहा नेपोलियन पुन सत्ता-प्राप्ति के लिए जी-तोड कोशिश करता रहा ? उन पृष्ठो को देखने से वास्तव मे ऐसा लगता है कि आप सफल हिंसा के प्रशसक है। आप उन्हे योही नही रहने दे सकते। उनके कारण आपकी किताब की बडी अप्रतिष्ठा होती है। आप स्वय अपने मन से पूछकर देखिये कि वाटरलू के बाद अथवा १८१४ में मित्र-राष्ट्र क्या करते अथवा उन्हे क्या करना चाहिए था और तब क्या होता ?

फिर मेरा विचार है, महायुद्ध के प्रश्न पर आप हमारे राष्ट्र के प्रति अनुदार है। आपके शब्दो और वाक्यो को देखकर लगता है कि हमने जो कुछ किया, उसका तात्पर्य समुद्री नाकेबन्दी करना और रुपया देना ही था। यहा आप वही गलती करते दीखते है जो कभी-कभी मैंने स्वय की है, अर्थात् तटस्थ वाद-विवाद-सभा की भावना से ऐसी बातो के बारे में लिखना, जो उनसे सम्बन्धित लोगो के लिए गहरी वास्तविकता रखती है, दुखदायी है और जिनकी जड में तीव्र भावावेश है। कृपया ऐसी मनोवैज्ञानिक गलती न करें, क्योकि ऐसी गलतियो के लिए लोगो को बुरी तरह भुगतना पडता है। आपके विचार में जलियावाला बाग मे जनरल डायर की मन स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए मैंने ऐसी ही भूल की है। मेरा खयाल है कि आप भी ऐसा ही करते है, जब आप ऐसे महायुद्ध के बारे में लिखते है, जिसमे हमारे राष्ट्र ने अपने दस लाख से ऊपर आदर्श नौजवान खो दिये और जिसमें हममें से प्रत्येक का या तो भाई या बेटा या दिली दोस्त काम आ गये।

अब मित्र-राष्ट्रो के सवाल को लीजिये। मेरा खयाल है कि बेल्जियम पर हमले के नतीजो को आप गलत ढग से प्रस्तुत करते है। सिर्फ इस बात से कि आक्रमणकारी सेना चौबीस घटे पहले ही तैयार हो चुकी थी, वह साबित नही होता, जो आप कहते है। मै इतना जरूर जानता हू कि फ्रास के साथ मिल जाना हमारे लिए जरूरी था, नही तो बाद में हमारा

दमन कर दिया जाता। लेकिन उस जमाने से गुजरनेवाले एक अग्रेज की हैसियत से मै यह भी जानता हू कि बेल्जियम पर अचानक हमला और वहा के राजा की अपील के कारण ही समूचा राष्ट्र एकबद्ध होकर सरकार के समर्थन पर आ गया। हमला अचानक इसलिए रहा कि कुछ समय से राष्ट्रो की प्रवृति अपने वचन-पालन की ओर दिखाई दे रही थी और हमारे लोगो को आक्रमण के कुछ दिन पहले तक इस बात की जरा भी आशका न थी कि हम भी उसकी लपेट मे आ जायगे। आप कहते है कि काग्रेस की चर्चा करते समय मै गलती करता हू, क्या दूसरे राष्ट्रो की चर्चा करते हुए वही गलती—सरकारो या कार्यपालिकाओ या नेताओ के गुटो के पीछे जो जनता है उसे भूल जाने की गलती—आप नही करते ?

जो हो, आपके जैसा व्यक्ति, जो भयकर कष्टो के बाद भी इतना उत्कृष्ट ग्रथ 'मेरी कहानी' लिख सका, वह किसी परदेशी को, चाहे वह अग्रेज हो या अमरीकी, ऐसी किसी चीज को देखने का मौका नही दे सकता, जिसपर आपके हस्ताक्षर हो, फिर भी जो इस पुस्तक की भावना के प्रतिकूल हो।

मेरे विचार से अन्य कई अलग-अलग सदर्भों मे भी उदारता का ऐसा ही अभाव है। लेकिन मै उनके विस्तृत अध्ययन से आपको कष्ट नही देना चाहूगा (वस्तुत मैने उसका कोई सविस्तर अध्ययन किया भी नही है)। आपकी यह पुस्तक एक चमत्कारपूर्ण चीज है, मै इतना ही कहूगा (वल्कि पहले ही कहना चाहिए था)। यहा कुछ छोटे-मोटे स्थलो का उल्लेख कर रहा हू, जो कल शाम पुस्तक पर फिर सरसरी निगाह डालते समय मुझे दिखाई दे गये।

पृष्ठ ६५९[1]—१८३० मे मैटकाफ सुप्रीम कौंसिल का सदस्य था, १८३४ तक। वह गवर्नर (जनरल) नही था या १८३५ तक (आगरा का) गवर्नर नही था।

पृष्ठ ६७३—नीचे से चार लाइनें, 'प्रोग्रेस' वस्तुत 'प्रोफेस' की जगह गलती से आ गया है।

---

[1] ये पृष्ठ-सख्याएं पुस्तक के अग्रेजी संस्करण के अनुसार हैं।—स०

पृष्ठ ६७४—राममोहन राय वस्तुत सती-प्रथा के उन्मूलन को जबर्दस्ती का और अविवेकपूर्ण मानते थे, लेकिन बाद मे उन्होने इसका समर्थन किया। मेरी जानकारी में ऐसा कोई शासक नही है, जिसने पहले इसका निषेध किया हो, सिवा आसानी से नियन्त्रित क्षेत्रो के—जैसे सेरामपुर मे डेनो ने (मेरा खयाल है), गोवा मे पुर्तगालियो ने, तजोर मे मराठो ने—अतिम निषेध के रूप में यह असफल रहा, १९ वी शताब्दी में भी तजोर मे विधवाए जलाई जाती रही। लेकिन, आपको यह भूलना नही चाहिए कि स्थानीय कारणो ने भी निषेध को आसान बनाया। मलाबार व्यवहारत मातृ-प्रधान है, इसलिए उस तट पर सती होना सम्भव न था और यही भावना दक्षिण भारत मे फैल गई थी। मुगल सम्राटो की तरह मेटकाफ ने दिल्ली में सती-प्रथा पर रोक लगाई थी। निश्चित रूप से, ऐसे भी मौके आये, जबकि अकबर और शाहजहा के राजकाल में निषेध का उल्लघन किया गया। मुझे एक ऐसा स्थल भी मिला है, जबकि मद्रास के ब्रिटिश गवर्नर ने १६६५ में एक महिला को नगर में सती होने से रोक दिया था।

हाथ में मेरे पास कोई सन्दर्भ मौजूद नही है, मेरे नोट कही पडे हुए है, फिर भी यह कहना बिल्कुल गलत है कि मराठो ने सती-प्रथा पर रोक लगाई थी। पूना-स्थित ब्रिटिश एजेण्ट मेलेट का मकान सगम के निकट था, बाद में एलफिस्टन उसमे रहने लगे थे। सती देखते-देखते मेलेट का तो मन ही उकता गया था। सच तो यह है कि मराठे भारत की सर्वाधिक मानवीय परम्परा का एक प्रकार से प्रतिनिधित्व करते है और यह कि सतियो की सख्या उनके प्रदेश में अपेक्षाकृत कम थी। शिवाजी के साथ उनके गुलाम (स्त्री और पुरुष दोनो) और जानवरो के जल मरने की रोमाचकारी विनाश-लीला के बाद भी ऐसी काफी घटनाए मिलती है। मराठो के लिए मेरे मन में बडी प्रशसा और स्नेह है, जिनकी मानवता उस समय निश्चित रूप से हमारे अपने लोगो से ऊची थी, लेकिन तजौर को छोडकर उन्होने कही भी सती का निषेध नही किया था और तजौर में भी वे असफल रहे। सती-निषेध एक ही वीर पुरुष का काम था और वह थे लार्ड विलियम बेंटिक। इसलिए ऐसा

क्यो नही कहते और क्यो नही उनका प्रसग आने पर एक वीर पुरुष का अभिनन्दन करने का आनन्द प्राप्त करते ? उदाहरणार्थ, उज्जैन में दुनियाभर की सती-सबधी कहानिया प्रचलित हैं, और अहिल्याबाई की पुत्र-वधू महेश्वर में जल मरी थी।

पृष्ठ ६८४—हा, अब आप यह मानते है कि महर्षि रवीन्द्रनाथ के पिता थे।

पृष्ठ ६९९—पेकिंग की लूट के सम्बन्ध में अनेक ताजा कहानिया सुनने को मिली है और चीन के साथ किये गए वर्ताव के सम्बन्ध में आपने जो कुछ कहा है, उससे मैं अधिकाशत सहमत हू, लेकिन साफ-साफ कह दू कि आपकी इस मान्यता से मे सहमत नही कि हमेशा मिशनरियो की ही दुष्टता रही थी। जिन मिशनरियो की हत्या की गई, उनमे से अधिकतर लोग 'चायना इनलैण्ड मिशन' से सम्बन्धित थे। यह एक ऐसी सस्था है, जिसका कोई खास प्रभुत्व नही है और जिसके सदस्य बिल्कुल गरीब और अकिंचन है और जिनका अपना कोई प्रभाव नही है और अपने वेतनो के लिए भी जिन्हे दैव पर भरोसा करना पडता है। यही नही, यह भी सच है कि जब जर्मनी ने मिशनरियो की हत्या को क्याउचो पर कब्जा करने का बहाना बनाया, परन्तु उस समय भी ब्रिटिश मिशनरी सस्था इस बात के लिए सतर्क रही कि उनकी अपनी सरकार मिशनरियो की हत्या का लाभ उठाने का यत्न न करने पाये। ऐसा उन्होने अतीत का ध्यान करते हुए ही किया था, फिर भी उद्देश्य पूर्णत सही न होने पर भी उन्हे श्रेय दिया जाना चाहिए। मेरे खयाल मे आपने मिशनरियो पर सही ढग से प्रकाश नही डाला है और चीन-सम्बन्धी अध्याय समाप्त हो जाने पर वे इस रूप में सामने आते हैं, मानो सारा मामला उन्हीको लेकर था, हालाकि बात ऐसी नही है। पेकिंग की लूट का नेतृत्व मिशनरियो ने किया, इसका आपके पास क्या प्रमाण है, मैं जानना चाहूगा ? (पृष्ठ ७२२)। मुझे इसमें सन्देह है।

पृष्ठ ७८०—फारस। यदि ब्रिटेन वास्तव में चाहता तो युद्ध की समाप्ति के बाद फारस को आसानी से अपने राज्य मे मिला सकता था अथवा उसे अपनी सुरक्षा मे ले सकता था। मेरी समझ मे नही आता कि इस्माल

के हाथ यूनान की उस पराजय का उससे क्या सबध है, जिसे आपने आगामी के लिए ब्रिटेन की 'योजनाओं' की हार कहा; लेकिन शायद आपको पता होगा कि उसकी पूरी जिम्मेदारी व्यक्तिगत रूप से लायड जार्ज पर ही है। तथ्य तो ये थे कि हमारी सरकार को भी पता था कि साम्राज्यवादी कार्रवाई तबतक काफी बड़े हिस्से पर अपना अधिकार जमा चुकी थी और इसलिए फारस के मामले को, जैसा वह था, चलने दिया। अपने पुराने मित्र मोहम्मेरा के शेख को भी अपनी आजादी खोने दी तथा उसे तेहरान जाने देना पड़ा और उसका इलाका फारस में मिला दिया गया। मेरे खयाल मे आप यह नही समझते कि युद्ध की समाप्ति के समय हर क्षेत्र मे कैसी गड़बड़ मच रही थी। बोल्शेविको का महत्व हम सचमुच नही समझ रहे थे। जिस समय उन्होने अपनी महत्ता स्थापित की, उस समय मै टाइग्रिस नदी के पूरब मे था और मुझे याद है, हमारे जनरलो को (नवम्बर १९१७ में) कितना विस्मय और अचरज हो रहा था। क्या आप नही समझते कि जो चीज बाद मे हुई, उसे आपने पहले ही स्थान दे दिया है ?

पृ ८८२—हा, अग्रेजो ने वाशिंगटन को जलाया और यह बडी गलती थी, परन्तु यह सब पहले अमरीकनो द्वारा कनाडियन भवनो और सग्रहालयो के जलाये जाने के प्रतिशोधस्वरूप जान-बूझकर किया गया था।

पृ ९६८—मैने इसका जिक्र किया है। मै इसपर विश्वास नही करता कि "इग्लैण्ड बहुत पहले ही निर्णय पर पहुच चुका था और बेल्जियम का प्रश्न एक सुविधाजनक बहाने के रूप में सामने आ गया।" आपका तात्पर्य क्या है, मै अच्छी तरह समझता हू, लेकिन और कोई इसे इस अनुदारतापूर्ण ढग से प्रस्तुत करता है तो इसका खमयाजा उसे ही भुगतना पडेगा और इसका दण्ड यह होगा कि उसकी रचना ठोस होते हुए भी लोग उसपर विश्वास नही करेंगे। नेहरू, आप किसी चीज को इस ढग से पेश नही कर सकते! आप न तो रामानन्द चटर्जी है और न शैलेन्द्रनाथ घोष। आप जवाहरलाल नेहरू है और यदि कोई अग्रेज आपको तथ्य का स्मरण दिलाता है तो उसे जरूर माफ कर देंगे।

पृ ४६५—अब डायनो को जीवित जलाने के बारे में । डायनें यूरोप महाद्वीप और स्काटलैण्ड में जलाई जाती थी । मेरे खयाल में ऐसा एक भी उदाहरण नही मिलेगा, जबकि इग्लैण्ड में कोई भी डायन जलाई गई हो । वे या तो डुबो दी जाती थी अथवा फासी पर लटका दी जाती थी । यह एक छोटी बात है । लेकिन, मुझे याद है, उस गधे शैलेन्द्रनाथ घोष, 'अमरीका में भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के अध्यक्ष' ने बोस्टन में यह कहा था, "१८१८ में आप लोग बोस्टन कामन में डायनो को जीवित जला रहे थे" और तब सभी श्रोता (स्त्री और पुरुष दोनो—विशेषत महिलाए) एक साथ खडे होगये और जोरो से "नही" कहकर चिल्लाये, क्योकि तीन बातें है, जिनपर बोस्टनवालो के कान जल्दी खडे होते है, वह साल १८१८ नही, बल्कि १६९० है, वह स्थान बोस्टन नही, सेलम है और उन्हे फासी पर लटकाया जाता था, जलाया नही जाता था । उसके बाद उसके एक-एक शब्द का हरेक ने मखौल उडाया ।

प्रसगवश यह कह दू कि अग्रेजो में तीन गुण है, जिनका कुछ श्रेय आप हम लोगो को दे सकते है, वैसे तो मानव-जाति की कहानी बडी दर्दनाक है । हमने किसी अन्य राष्ट्र से बहुत पहले डायनो के वध को रोक दिया था, हमने कानूनी उत्पीडन पहले ही समाप्त कर दिया था, और गुलामो की मुक्ति का मूल्य चुकाकर तो हमने वास्तव में बडा शानदार काम किया । कम-से-कम जहा हम श्रेय के हकदार है, वहा तो श्रेय दीजिये ही । इससे निश्चय ही आप द्वारा की गई आलोचना को और बल मिलेगा ।

पृ ४८१ और अन्य स्थलो पर 'अशोक'[1] 'असोक' का भद्दा रूप है ।

पृ ५०७—'ब्लैक होल' पर सही टिप्पणी यह नही है कि यह मनगढत बात थी (इसपर मेरा विश्वास नहीं है) बल्कि यह है कि यह घटना एक मूर्खता थी, जान-बूझकर नही की गई थी और १९१८ में मोपला बदियो की घुटन के बिल्कुल समान थी (जो अपेक्षाकृत कम क्षम्य है) ।

---

[1] अग्रेजी में 'असोक' लिखा जाता है । इसीसे यह भ्रम पैदा हुआ है ।

पृ ५१०—जब आप कहते हैं कि मराठो ने अंग्रेजो को "दक्षिण मे" हरा दिया तो मेरे खयाल मे आप 'दक्खन' का शब्दश अनुवाद करते है। हमारे लिए दक्षिण का अर्थ होता है मैसूर के आसपास का क्षेत्र, वरगाव का इलाका नही।

पृ ५५९—यह यकीन करना कठिन है कि आप दरअसल यह मानते है कि तेरह उपनिवेशो के साथ झगडा उतना साधारण था, जितना आप समझते है, और जिन युद्धो से उनको ही लाभ मिल रहा था, उनका खर्चा न देकर वे जो नीचता दिखा रहे थे, उसके खिलाफ ब्रिटेन का कोई पक्ष नही था। मेरे खयाल मे ये सारे अश इस पुस्तक के सामान्य स्तर से नीचे ठहरते हैं। मै समझता हू, कोई भी अच्छा अमरीकी इतिहासज्ञ इसे स्वीकार नही करेगा। यदि बेल्जियम पर हमला ब्रिटेन की पूर्व-निश्चित योजना के लिए सिर्फ बहाना ही था तो "प्रतिनिधित्व के बिना कर लगाने" के सम्बन्ध में आप क्या कहेगे ? फिर भी आप जानते हैं कि इसके कारण कितने गम्भीर थे, और इन तेरह उपनिवेशो में सहयोग इतना कम था कि जब गृह-युद्ध छिडा तो दक्षिण को यह दावा करने का अच्छा कानूनी आधार मिल गया कि वह सघ से सम्बन्ध-विच्छेद करने को स्वतन्त्र है। १७८९ मे वर्जिनिया के खिलाफ इस अधिकार को चुनौती भी नही दी गई (मेरा खयाल है)। लेकिन आप यह जानते हैं कि अमरीकी इतिहासकारो की नई पीढी उस क्रान्तिकारी युद्ध के बारे मे क्या लिखती है।

पृ. ६०९ —अत मे एक बात और। अन्तिम पैरे के बारे में आप खुद अपने मन से पूछिये और कभी बताइये कि आपकी राय में "उदार और सौजन्यपूर्ण व्यवहार" क्या होता ?

ये सब बातें महान चमत्कारपूर्ण कार्य की तुच्छ आलोचनाए है। आपने ऐसा चाहा भी था। लेकिन मै अच्छी तरह जानता हू कि जो बाते बिना कोई हानि पहुचाये कही जा सकती है, वही लिखे जाने पर हमेशा आपत्तिजनक लगती है। इन सबसे भी बडी मेरी शिकायत यह है कि उन तीनो किताबो पर आपने मेरा नाम नही लिखा। 'एडवर्ड टामसन को जवाहरलाल नेहरू की ओर से,' ऐसा लिखकर तीन पर्चिया आपको मेरे

पास भेजनी चाहिए ।

इन्दिरा से यह कहना न भूलें कि वह जब इधर आये तो हमसे जरूर मिले । पेट्रिशिया एग्न्यू मेरी पत्नी की प्रिय सखियो मे से एक की पुत्री है (वह महिला हाल ही मे मर गई) ।

शुभकामनाओ सहित,

आपका,
एडवर्ड टामसन

१७५ महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
२५ जून १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

सरहदी नीति पर तुम्हारा वक्तव्य अभी मिला । खानसाहव ने और मैंने उसे पढ लिया । मुझे वह बहुत पसन्द आया । पता नही स्पेनवालो और अग्रेजो की वमवारी विल्कुल एक-सी है या नही । क्या अग्रेजो द्वारा की हुई हानि की मात्रा मालूम कर ली गई है ? अग्रेजो की वमवारी का प्रकट कारण क्या वताया गया है ? इस वात पर हँसना भी मत और क्रोध भी न करना कि मै इन चीजो को उतना अच्छी तरह नही जानता जितना तुम जानते हो । अखबारो को जितना कम मै देखता हू उससे मुझे वहुत कम ही जानकारी हो सकती है । मगर मेरे प्रश्नो का उत्तर देने का कष्ट मत उठाना । तुम्हारे बयान पर होनेवाली प्रतिक्रियाओ का मै ध्यान रखूगा । शायद उनसे कुछ प्रकाश पडे । और जो कमी रह जाय वह तो जव हम मिलेंगे तव तुम पूरी कर ही दोगे । आशा है, मौलाना आयगे । लेकिन वह न आ सकें तो भी मै चाहूगा कि तुम तो उस तारीख पर अवश्य पहुच जाओ । इन तीनो शान्त दिनो में हम साथ रहेंगे ।

आशा है, इन्दू अच्छी तरह होगी ।

सस्नेह,
बापू

पृ ५१०—जब आप कहते हैं कि मराठो ने अंग्रेजो को "दक्षिण में" हरा दिया तो मेरे खयाल में आप 'दक्खन' का शब्दश अनुवाद करते हैं। हमारे लिए दक्षिण का अर्थ होता है मैसूर के आसपास का क्षेत्र, वरगाव का इलाका नही।

पृ ५५९—यह यकीन करना कठिन है कि आप दरअसल यह मानते है कि तेरह उपनिवेशो के साथ झगडा उतना साधारण था, जितना आप समझते हैं, और जिन युद्धो से उनको ही लाभ मिल रहा था, उनका खर्चा न देकर वे जो नीचता दिखा रहे थे, उसके खिलाफ ब्रिटेन का कोई पक्ष नही था। मेरे खयाल मे ये सारे अश इस पुस्तक के सामान्य स्तर से नीचे ठहरते हैं। मैं समझता हू, कोई भी अच्छा अमरीकी इतिहासज्ञ इसे स्वीकार नही करेगा। यदि बेल्जियम पर हमला ब्रिटेन की पूर्व-निश्चित योजना के लिए सिर्फ बहाना ही था तो "प्रतिनिधित्व के बिना कर लगाने" के सम्बन्ध मे आप क्या कहेगे? फिर भी आप जानते हैं कि इसके कारण कितने गम्भीर थे, और इन तेरह उपनिवेशो में सहयोग इतना कम था कि जब गृह-युद्ध छिडा तो दक्षिण को यह दावा करने का अच्छा कानूनी आधार मिल गया कि वह सघ से सम्बन्ध-विच्छेद करने को स्वतन्त्र हैं। १७८९ मे वर्जिनिया के खिलाफ इस अधिकार को चुनौती भी नही दी गई (मेरा खयाल है)। लेकिन आप यह जानते हैं कि अमरीकी इतिहासकारो की नई पीढी उस क्रान्तिकारी युद्ध के बारे में क्या लिखती है।

पृ. ६०९—अत में एक बात और। अन्तिम पैरे के बारे में आप खुद अपने मन से पूछिये और कभी बताइये कि आपकी राय में "उदार और सौजन्यपूर्ण व्यवहार" क्या होता?

ये सब बातें महान चमत्कारपूर्ण कार्य की तुच्छ आलोचनाए हैं। आपने ऐसा चाहा भी था। लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हू कि जो बातें बिना कोई हानि पहुचाये कही जा सकती हैं, वही लिखे जाने पर हमेशा आपत्तिजनक लगती हैं। इन सबसे भी बडी मेरी शिकायत यह है कि उन तीनो किताबो पर आपने मेरा नाम नही लिखा। 'एडवर्ड टामसन को जवाहरलाल नेहरू की ओर से,' ऐसा लिखकर तीन पर्चिया आपको मेरे

पास भेजनी चाहिए ।

इन्दिरा से यह कहना न भूलें कि वह जब इधर आये तो हमसे जरूर मिले । पेट्रिशिया एग्न्यू मेरी पत्नी की प्रिय सखियो मे से एक की पुत्री है (वह महिला हाल ही में मर गईं) ।

शुभकामनाओ सहित,

आपका,
एडवर्ड टामसन

१७५ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
२५ जून १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

सरहदी नीति पर तुम्हारा वक्तव्य अभी मिला । खानसाहब ने और मैंने उसे पढ लिया । मुझे वह बहुत पसन्द आया । पता नही स्पेनवालो और अग्रेजो की बमबारी बिल्कुल एक-सी है या नही । क्या अग्रेजो द्वारा की हुई हानि की मात्रा मालूम कर ली गई है ? अग्रेजो की बमबारी का प्रकट कारण क्या बताया गया है ? इस बात पर हँसना भी मत और क्रोध भी न करना कि मै इन चीजो को उतना अच्छी तरह नही जानता जितना तुम जानते हो । अखबारो को जितना कम मै देखता हू उससे मुझे बहुत कम ही जानकारी हो सकती है । मगर मेरे प्रश्नो का उत्तर देने का कष्ट मत उठाना । तुम्हारे बयान पर होनेवाली प्रतिक्रियाओ का मै ध्यान रखूगा । शायद उनसे कुछ प्रकाश पडे । और जो कमी रह जाय वह तो जब हम मिलेंगे तब तुम पूरी कर ही दोगे । आशा है, मौलाना आयगे । लेकिन वह न आ सकें तो भी मै चाहूगा कि तुम तो उस तारीख पर अवश्य पहुच जाओ । इन तीनो शान्त दिनो में हम साथ रहेंगे ।

आशा है, इन्दू अच्छी तरह होगी ।

सस्नेह,
बापू

१७६. खलीकुज्जमा के नाम

इलाहाबाद
२७ जून १९३७

प्रिय खलीक,

कल तीसरे पहर मैंने २५ जून के 'खिलाफत' अखबार में बुन्देलखड चुनाव के बारे में एक बयान पढा। इस बयान पर तुमको शामिल करके छ-सात आदमियो के दस्तखत थे। उसे पढकर मुझे ताज्जुब हुआ। मैं कभी नही सोच सकता था कि इस किस्म के दस्तावेज पर तुम्हारा नाम हो सकता है। किसी भी हालत में मेरे लिए इसपर यकीन करना मुश्किल होता, लेकिन पिछले अप्रैल में हमारी बातचीत के बाद तो मैं अपनी आखो पर भरोसा ही नही कर सकता था। पिछले दो-तीन महीनो में हिंदुस्तान में होनेवाली घटनाओ के साथ मेरा ताल्लुक छूट गया था, कुछ तो मेरी बीमारी की वजह से और कुछ मेरी गैर-मौजूदगी से। लेकिन घटनाओ से उसूलो में बहुत असर नही पडता और तुमने 'खिलाफत' में जो कुछ कहा है वह उन उसूलो की जड काटता है। पहले हम इस बारे में एकराय नही रहे होंगे कि हमें किस किस्म के काम करने चाहिए। लेकिन मेरा खयाल हमेशा यह रहा कि हमारे आम नजरिये एक-से हैं। मालूम होता है, मेरे समझने में भूल थी। जहातक मेरा ताल्लुक है, मैंने पहले भी अपने प्यारे उसूलो का ज्यादा खयाल रखकर काम किया है और आगे भी करूगा। मेरे कामो से जो नतीजे हो सकते हैं उनका खयाल न पहले बहुत रखा, न अब रखूगा। खयाल और काम की इस बुनियाद के बिना मैं पानी पर एक तिनके की तरह हो जाऊगा, जो हर हवा के झोके के साथ इधर-उधर जाता है और उसका कोई डाड या कुतुबनुमा (कम्पास) नही है। मैंने जिदगी को अक्सर एक भारी बोझा पाया है, लेकिन मुझे इस बात से कुछ तसल्ली रही है कि मैंने कुछ पक्के उसूलो पर कायम रहने की कोशिश की है।

तुमने जो कुछ किया, या कहा जाता है कि किया, उसपर मुझे गहरा अफसोस है। मेरा फर्ज है, तुमको बताऊ कि इस मामले में मैं क्या महसूस करता हू। मैंने सोचा था और मेरे खयाल से मुझे यह उम्मीद रखने का हक था कि तुम मुझसे चर्चा किये बिना ऐसा कोई कदम नही उठाओगे। तुम्हारे

यकीन दिलाने का मेरे मन पर असर हुआ था और मैं उसकी कद्र करता था। अब चूकि यह यकीन नही रहा, इसलिए कुदरतन मुझे कुछ-न-कुछ चोट महसूस हुई।

यह खत बिल्कुल निजी है। सियासी नज़रिये से इसे लिखने का मेरा काम नही था।

तुम्हारा,
जवाहरलाल

[चौधरी खलीकुज्ज़मा यू. पी. के एक खास कांग्रेसी थे। बाद में वह मुस्लिम लीग में शामिल हो गये। विभाजन के होते ही वह पाकिस्तान चले गये।]

१७७. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे खत मुझे अच्छे लगते हैं। उनसे जो जानकारी मुझे होती है वह अन्यथा नही मिलती। इस्लाम-पक्षी आन्दोलन का मुझे कुछ भी पता नही था। उसपर मुझे आश्चर्य नही होता। मुलाकात पर तुमने मेरा बयान देखा होगा।

मेरा तरीका तुम्हें मालूम है। मुझे इन मुलाकातो से बल मिलता है। यह देखना तुम्हारा और दूसरे साथियो का काम है कि देश को, मैं जो कुछ करता हू उसका, ठीक-ठीक अर्थ प्राप्त हो। मै चाहता हू कि तुम राजाजी के बारे मे कोई चिन्ता नही करोगे। वह बिल्कुल ठीक है। फिर भी मैं चाहूगा कि तुम अपनी शकाए उनपर प्रकट कर दो। मैं १५ तारीख की शाम को शान्तिनिकेतन के लिए और उसके बाद १९ तारीख को बालिकादा के लिए रवाना हो रहा हू।

सस्नेह,
बापू

१७८ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
१० जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

कल मौलानासाहब से मेरी लम्बी बातें हुई। यदि प्रान्तो में मुस्लिम

मंत्रियों का चुनाव उनकी सलाह से करना है तो मेरे विचार से इस आशय की सार्वजनिक घोषणा कर देना बेहतर होगा। मौलाना सहमत हैं। यदि तुम्हारे खयाल में कार्य-समिति से परामर्श लेना चाहिए तो मेरा सुझाव है कि तार से ले लिया जाय।

मैं आशा करता हूं कि तुम हिन्दी-उर्दू के विषय में जल्दी ही लिखोगे।

सस्नेह,
बापू

[मौलाना से मतलब यहां मौलाना अबुल कलाम आजाद से है।]

१७९ महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
१५ जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

आज चुनाव का दिन है। मैं निगाह रख रहा हूं।

परन्तु यह पत्र मैं तुम्हें यह बताने के लिए लिख रहा हूं कि मैंने कांग्रेसी मंत्रिमंडलों के कार्यकलाप और सम्बन्धित विषयों पर लिखना शुरू कर दिया है। मुझे हिचकिचाहट थी, परन्तु मैंने देखा कि जब मेरी भावनाएं इतनी तीव्र होगई हैं तो लिखना मेरा कर्तव्य है। काश मैं तुम्हें 'हरिजन' के लिए मेरे लेख की अंतिम प्रति दे सकता! यह महादेव देख लेंगे। यदि उनके पास नकल होगी तो भेज देंगे। तुम देख लो तो मुझे बताना कि मैं इस तरह लिखता रहूं क्या? सारी स्थिति से निपटने के तुम्हारे काम में मुझे हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि देश के लिए मैं तुम्हारा अधिक-से-अधिक उपयोग चाहता हूं। यदि मेरे लिखने से तुम्हें अशान्ति हो तो मेरे हाथों निश्चित हानि होगी।

आशा है, मौलाना-संबंधी मेरा पत्र तुम्हें मिला होगा।

सस्नेह,
बापू

१८० महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
२२ जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मौलानासाहब एक दिन वर्धा ठहर गये थे और हमारी लम्बी बातचीत हुई। उन्होने मुझे विधान-सभा के मुस्लिम लीगी और काग्रेसी सदस्यो के समझौते का मसविदा दिखाया। मेरे खयाल से यह अच्छा दस्तावेज है। परन्तु उन्होने मुझे बताया कि तुम्हे तो यह पसन्द है, टडनजी को नही है। मौलाना के सुझाव के अनुसार मैने इसके विपय में टडनजी को लिखा है। आपत्ति क्या है ?

पाचसौ रुपया वेतन, बडी-सी कोठी और मोटर पर कडी आलोचनाए हो रही है। मै जितना ही सोचता हू उतना शुरू मे ही इतनी फजूलखर्ची बुरी मालूम होती है। इसके बारे मे मैने मौलाना से भी बातचीत की थी।

इन्दू कैसी है ?

सस्नेह,
बापू

१८१ वल्लभभाई पटेल की ओर से

काग्रेस हाउस,
गोपनीय बम्बई
३० जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

पिछले दिनो में कुछ महत्वपूर्ण सवाल उठ खडे हुए थे, इसलिए मै २७ तारीख को वर्धा चला गया था। वहा से आज सुबह लौटा हू। बहुत-से मामलो पर बापू से लंबा मशविरा किया। विभिन्न प्रान्तो में जो वेतन और भत्ते निश्चित किये गए है, उनके समाचारो से स्पष्ट ही उन्हें ज्यादा चिंता है। मै तुम्हारी मजूरी के लिए, जिन विभिन्न मुद्दो पर मेरी बापू से चर्चा हुई, उनपर हिदायतो के मसविदे की एक नकल तुम्हें भेज रहा हू। तुम इसमें जो रद्दोबदल करना चाहो, कर सकते हो। परन्तु चूकि मामला बहुत जरूरी है, इसलिए छहो मुख्य मन्त्रियो के पास मैं उनके मार्ग-दर्शन के लिए हिदायतो के मसविदे की अग्रिम नकलें भेज रहा हू, साथ ही उन्हें यह सूचना

दे दी है कि यह मसविदा उन्हें अग्रिम रूप में भेजा जाता है, लेकिन इसपर तुम्हारी मजूरी बाकी है। जब वह मुझे मिल जायगी तभी अतिम हिदायतें उन्हें भेजी जायगी।

समाचार-पत्रो की रिपोर्ट से मुझे मालूम होता है कि तुम्हारे प्रान्त में मुस्लिम लीग से जो बात-चीत चल रही थी वह असफल रही। फिलहाल किसी ऐसे समझौते की अपेक्षा करना शायद ज्यादा जल्दवाजी होगी।

वर्धा से लौटने के बाद श्री नरीमान ने अपनी बदले की मुहीम जारी रखना ही पसन्द किया है। अखबारी मुहीम बहुत भद्दी और आतककारी हो गई है। श्री नरीमान का ताजा वक्तव्य तुमने समाचार-पत्रो में जरूर देखा होगा। यह साफ होगया है कि अब वह किसी तरह जाच को टालना चाहते हैं, जिसको वह पहले चाहते थे, और इसका दोष वह कार्य-समिति पर डालने की कोशिश कर रहे है। अभी बापू के साथ उनका पत्र-व्यवहार चल रहा है और शायद बापू शीघ्र ही इस सबध मे अतिम वक्तव्य जारी करें। नरीमान ने उनको लिखे तुम्हारे पत्र के कुछ अश उद्धृत किये है। अगर मै इसे जरूरी समझू तो मै तुमसे इस पूरे पत्र को प्रकाशित करने की इजाजत चाहूगा। फिलहाल मैंने अपने-आपको सारे विवाद से अलग रखा है, जोकि पूरी तरह इकतरफा है। तुम्हारे लिए भी जरूरी हो सकता है कि बापू के ऐलान के बाद भी एक आखिरी बयान दो। इसलिए उनके सारे पत्र-व्यवहार की नकलें मैं कल तुम्हारी जानकारी के लिए भेज रहा हू।

कल मै कुछ दिनो के लिए अहमदाबाद जा रहा हू। आशा है, तुम ठीक होगे ?

तुम्हारा,
वल्लभभाई

फिर से—

इस चिट्ठी पर हस्ताक्षर करने के बाद मुझे ए पी से ज्ञात हुआ कि नरीमान ने एक लम्बा वक्तव्य देकर जाचवाली अपनी माग को वापस ले लिया है, परन्तु उन्होंने अपने आरोप वापस नही लिये है, जोकि एक शरीफ आदमी की तरह उनको करना चाहिए था। अब बापू एक वक्तव्य देंगे और उसके बाद तुम अतिम वक्तव्य दे सकते हो।

प जवाहरलाल नेहरू
इलाहाबाद।

१८२. महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा,
३० जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

आशा है कि महादेव ने तुम्हारे हिन्दी-सम्बन्धी निबन्ध की पहुच के अलावा कल यह भी लिख दिया है कि वाइसराय ने मुझे ४ तारीख को दिल्ली बुलाया है। महज मिलने की खातिर मैंने उत्तर दिया है कि उन्होंने मेरी इच्छा पहले से ही जान ली है, क्योंकि खानसाहब पर लगाये गए प्रतिबन्ध और सीमा प्रान्त के दौरे की मेरी इच्छा के बारे मे मैं उनसे मुलाकात मागना चाहता था।

तदनसार मैं ४ तारीख को दिल्ली पहुच रहा हू। मुलाकात ११ ३० बजे है। इसलिए मुझे आशा है कि मैं उसी दिन वापस होकर ५ तारीख को सेगाव पहुच सकूगा।

परन्तु यह पत्र तो तुम्हे जाकिर के खत की नकल भेजने के लिए है। वह सब मेरे उस पत्र का उत्तर था, जिसमें मैंने बम्बई के हाल के दगे और हिन्दी-उर्दू के कम्बख्त विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया लिखी थी। मैंने सोचा कि इस विचारपूर्ण पत्र को तुम्हे भी बताऊ।

मैं झासी के चुनाव को बुरी हार नही मानता। यह सम्मानपूर्ण पराजय है और उससे यह आशा होती है कि यदि हम परिश्रम करते रहे तो मुसलमानो तक काग्रेस का सन्देश कारगर ढग से पहुचा सकते है। परन्तु मेरी यह राय अब भी कायम है कि केवल सन्देश ही पहुचाया जाय और साथ-साथ देहातो में ठोस काम न किया जाय तो अन्तत हमारा उद्देश्य पूरा नही होगा। परन्तु यह सब इसपर निर्भर है कि हम शक्ति किस ढग से पैदा करना चाहते है।

मेहरअली का मद्रास का भाषण मेरे लिए आखें खोलनेवाला है। पता नही, वह सामान्य समाजवादी विचार को कहातक व्यक्त करते है। राजाजी ने मुझे उनके भाषणवाली एक कतरन भेजी थी। आशा है, उन्होंने तुम्हे भी एक नकल भेजी होगी। मैं इसे बुरा भाषण कहता हू। तुम्हे इसपर ध्यान देना चाहिए। काग्रेस की नीति के, जैसी मैं समझता हू यह विरुद्ध पडता है।

मद्रास मे रॉय का भाषण भी हुआ। मै मान लेता हू कि तुम्हें ऐसी सब कतरनें मिलती होगी। फिर भी तुरन्त तुम्हारे देखने के लिए कतरनें साथ में है, जो प्यारेलाल ने मेरे लिए तैयार की है। राय मुझे भी लिखते रहे हैं। तुम्हें उनका ताजा पत्र देखना चाहिए। मैंने फाड न दिया हो तो वह इस पत्र के साथ होगा। उनके रवैये पर तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया है? जैसा मै तुम्हें पहले ही बता चुका हू, उन्हें समझना मेरे लिए कठिन हो रहा है।

खादी को तुम्हारा दिया हुआ नाम 'आजादी की वर्दी' जबतक हिंदुस्तान में अग्रेजी भाषा बोली जायगी तबतक जिन्दा रहेगा। इस मनोहर शब्द-प्रयोग के पीछे जो विचार है उसका पूरी तरह हिन्दी मे अनुवाद करने के लिए किसी प्रथम श्रेणी के कवि की आवश्यकता होगी। मेरे लिए वह केवल काव्य ही नही, परन्तु वह एक ऐसे महान सत्य का प्रतिपादन करता है, जिसका पूरा अर्थ समझना अभी शेष है।

सस्नेह,
बापू

यद्यपि राय के भाषण से सबधित अश मेहरअलीवाले अश के बाद ही आता है फिर भी इसका यह अर्थ नही है कि वह मेहरअली के अश के मुकाबले का है।

१८३ महात्मा गाधी की ओर से

रेल में,
३ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

यह मै दिल्ली ले जानेवाली रेलगाडी में लिख रहा हू। मेरा प्राक्कथन या जो कुछ भी इसे कहो, साथ मे है। मै तुम्हे कोई लम्बी-चौड़ी चीज नही दे सका।

तुमने पश्तो और पजाबी के पहले 'शायद' रखा है। मेरा सुझाव है कि तुम यह क्रिया-विशेषण हटा दो। मिसाल के लिए खानसाहब पश्तो को कभी नही छोडेंगे। मेरा खयाल है, वह किसी लिपि में लिखी जाती है। भूल गया हू किसमे? और पजाबी? गुरुमुखी मे लिखी हुई पजाबी के लिए सिक्ख तो मर मिटेंगे। उस लिपि में कोई शोभा नही है। लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि सिंधी की तरह वह भी सिक्खो को हिन्दुओ से अलग करने के लिए खास तौर

पर ईजाद की गई थी। यह बात हो या न हो, फिलहाल तो सिक्खो को गुरुमुखी छोडने को राजी करना मुझे असभव लगता है।

तुमने चारो दक्षिणी भाषाओ में से कोई सामान्य लिपि तैयार करने का सुझाव दिया है। मुझे उनके लिए चारो की मिली-जुली लिपि की तरह ही देवनागरी भी उतनी ही आसान मालूम होती है। व्यावहारिक दृष्टि से उन चारो में से मिली-जुली लिपि का आविष्कार हो नही सकता। इसलिए मेरा सुझाव है कि तुम सिर्फ इतनी ही सामान्य सिफारिश करो कि जहा कही सभव हो, जिन प्रान्तीय भाषाओ का सस्कृत से सजीव सम्बन्ध है, वे अगर उसकी शाखाए नही है तो उन्हे सशोधित देवनागरी अपना लेनी चाहिए। तुम्हें मालूम होगा कि यह प्रचार जारी है।

बस, अगर तुम मेरी तरह सोचते हो तो तुम्हें यह आशा प्रकट करने में सकोच नही होना चाहिए कि चूकि किसी-न-किसी दिन हिन्दुओ और मुसलमानो को दिल से एक होना ही है, इसलिए जो हिन्दुस्तानी बोलते है उन्हे भी एक देवनागरी लिपि ही अपना लेनी चाहिए, क्योकि वह अधिक वैज्ञानिक है और सस्कृत से निकली हुई भाषाओ की महान प्रान्तीय लिपियो के निकट है।

अगर तुम मेरे सुझाव आशिक या पूरे स्वीकार कर लेते हो तो तुम्हें आवश्यक परिवर्तन मजूर करते हुए स्थानो को खोज निकालने में कोई कठिनाई नही होगी। तुम्हारा समय बचाने की खातिर मैंने स्वय ही ऐसा करने का इरादा किया था, परन्तु अभी मुझे अपने शरीर पर इतना भार नही डालना चाहिए।

मै यह मान लेता हू कि तुम्हारे सुझाव के मेरे समर्थन का यह अर्थ नही है कि मै हिन्दी-सम्मेलनवालो से हिन्दी शब्द का प्रयोग छोड देने को कहू। मुझे विश्वास है कि तुम्हारा यह मतलब नही हो सकता। मै जहातक सोच सकता हू, मै उस मतलब को अतिम सीमा तक ले गया हू।

अगर तुम मेरे सुझावो को स्वीकार नही कर सकते तो ठीक-ठीक बात बताने की खातिर 'प्राक्कथन' में यह वाक्य जोड देना बेहतर होगा "बहरहाल, मुझे उनका सामान्य ढग पर समर्थन करने में कोई सकोच नही है।"

आशा है, इन्दू का आपरेशन सकुशल हो जायगा।

सस्नेह,
बापू

१८४ महात्मा गाधी की ओर से

३ अगस्त १९३७

मैंने हिन्दू-उर्दू के प्रश्न पर जवाहरलाल नेहरू का निवध बहुत ध्यान से पढा है। पिछले दिनो यह प्रश्न एक दुर्भाग्यपूर्ण विवाद बन गया है। इसने जो भद्दा मोड लिया है, उसके लिए कोई उचित कारण नही है। कुछ भी हो, राष्ट्रीय और शिक्षा की शुद्ध दृष्टि से सोचा जाय तो जवाहरलाल के निवध से सारे विषय के उचित निरूपण में मूल्यवान सहायता मिलेगी। उनके प्रस्तावो को सम्बन्धित लोग व्यापक रूप में स्वीकार कर लें तो उनसे यह विवाद, जिसने साम्प्रदायिक रग ले लिया है, खत्म हो जाना चाहिए। सुझाव विस्तृत और बहुत माकूल है।

मो. क गाधी

१८५ महात्मा गाधी की ओर से

रेल में
४ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मैं मूर्ख हू। तुम्हारा पत्र मिलने पर मैंने अपनी फाइल देखी तो मेहरअली के भाषणवाली कतरन मिल गई। मैंने उनके भाषण का, न कि मसानी के भाषण का, हवाला दिया था।

यह पत्र मुझे वर्धा ले जानेवाली बहुत हिलनेवाली गाडी में लिखा जा रहा है। अब रात के १० ३० वज गये हैं। मै नीद से जाग उठा, भापण का खयाल आया और ढ्ढने लगा। कलवाला डिव्वा ज्यादा अच्छा था।

मैं वाइसराय से मिला। तुमने सरकारी विज्ञप्ति देखी होगी। उसमें मुलाकात का सार सही-सही दिया गया है। कुछ और प्रासगिक वातें भी थी, जिनका जिक्र कृपालानी तुमसे मिलने पर करेंगे। एक वात का उल्लेख यहा कर दू। जैसे मुझे वुलाया वैसे शायद वह तुम्हें भी वुलायें। मैंने उनसे कहा

कि अगर निमत्रण भेजा जायगा तो शायद तुम इन्कार नही करोगे। क्या मैंने ठीक कहा ?

मुझे अफसोस है कि मैंने राय के भाषण तुमपर थोपे। लेकिन मैंने सोचा कि तुम उन्हें पढोगे तो जरूर ही, लेकिन मुझे उनपर तुम्हारी राय जानने की जल्दी नही है। अगर तुम पहले ही पढ न चुके हो तो सुविधा से पढ लेना।

मैंने जान लिया कि तुम इन्दू का आपरेशन बम्बई मे करा रहे हो।

सस्नेह,

बापू

१८६ महादेव देसाई की ओर से

झासी के निकट कहीं

४ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरभाई,

वायदे के अनुसार पत्र लिखना दिन मे तो मेरे लिए असभव था और चूकि मुझे बापू का पत्र झासी में १ ५० वजे डाक में डालना है, इसलिए उसीके साथ अपना पत्र भी रख रहा हू। जिन मुद्दो पर मुझे तुम्हारे सामने जोर देना था वे ये है

१ पजाबी और पश्तो के पहले 'शायद' नही रहना चाहिए। (पृ २ और १०) बापू ने सुझाव दे दिया है, मै इतना और कहना चाहता हू कि सिक्खो के अनेक उत्तम गीत (गुरु नानक के और दूसरो के) जो उनकी गौरवशाली सम्पत्ति है, पजाबी में है और यदि सिक्ख उसकी मान्यता के लिए नही लडते तोभी हमें उसे मान्यता देनी चाहिए। पश्तो के बारे में मुझे याद है कि खानसाहब मुझसे कह रहे थे कि पश्तो की सिंधी जैनी—एक प्रकार का उर्दू का सशोधन—एक लिपि है और सारे पठान वही भाषा बोलते है। खानसाहब और कुछ और लोग उर्दू जानते और बोलते है, क्योकि उन्होने कोशिश करके सीख ली है। दूसरे लोग—विशाल जन-साधारण—उर्दू बिल्कुल नही जानते।

२ पृ ४ (पैरा १ और २) और ११ (पैरा ६ और ७)। सिंधी—तुम्हारा सुझाव है कि उर्दूमें सिंधी समा जाय। इससे उल्टी बात क्यो न हो ?

सिंधी ने उर्दू को सम्पूर्ण बनाकर अपनाया है और उसमें कुछ अक्षर ऐसे उच्चारणो के लिए जोड लिये है, जो सस्कृत में तो है, मगर अरबी और फारसी में नही है। बुरा न माना जाय तो यो कह सकते हैं कि उसने उर्दू को सम्पूर्ण बना दिया है। इसलिए सिंधी में उर्दू समा सकती है, न कि उर्दू में सिंधी। परन्तु मेरा अनुमान है कि तुम्हारा भी यही मतलब है। इतना ही है कि तुम उसे कम बुरा लगनेवाले ढग से पेश करोगे। मेरा कहना ठीक है ?

दक्षिण भारत—(पृ ४ के ऊपर-ही-ऊपर) एक पैरा है। उससे अनजाने में अलगाव की शरारत की ज्वाला भडक सकती है। कुछ कट्टरपथी आध्रो, तामिलो और कन्नडो ने हिन्दी के विरुद्ध एक हल्ला-सा खडा कर दिया है। सही बात तो यह है कि विद्वानो ने मान लिया है कि एक तरफ तामिल और मलयालम और दूसरी तरफ देवनागरी में या एक ओर तेलुगु और कन्नड तथा दूसरी ओर देवनागरी में जितनी निकटता है उतनी तामिल, मलयालम, तेलुगु और कन्नड में आपस में नही है। भाषा की हैसियत से तामिल और मलयालम का एक वर्ग है और तेलुगु तथा कन्नड का दूसरा है। राजगोपालाचार्य ने एक लेख-माला लिखकर सुझाया है कि देवनागरी में कुछ परिवर्तन कर दिये जाय ताकि दक्षिण भारत के लिए उसे अपनाना आसान हो जाय और यह तथ्य कि लाखो दक्षिण भारतीयो ने थोडे-से प्रयत्न से देवनागरी लिपि सीख ली है, सारे दक्षिण के लिए देवनागरी लिपि के पक्ष में एक प्रबल युक्ति है।

उस दिन मुझे एक दक्षिण भारतीय सौराष्ट्र से (जनसख्या लगभग ५०,०००) एक पत्र मिला था। उसका कहना है कि उनके यहा तेलुगु-तामिल की मिली-जुली लिपि थी जो अब नष्ट हो गई है, परन्तु वह तामिल और तेलुगु के बजाय देवनागरी को खुशी से अपना लेगे।

तामिलो, आन्ध्रो और कन्नडियो को हमारे धर्म-ग्रन्थ पढने पडते है, जो सब सस्कृत में है। उनसे देवनागरी को अपनाने की आशा रखना उनपर बोझा डालना नही है, परन्तु धर्म-शास्त्रो के उनके अध्ययन में सुविधा पैदा करना है।

अन्त में, यदि चारो दक्षिणी भाषाए अपनी ही कोई मिली-जुली लिपि चाहती हो (जो मेरे खयाल से असम्भव है) तो सदा के लिए यह सभावना

छोड दो कि उत्तर भारतवाले दक्षिण भारतीय भाषाए सीखेंगे। कोई सामान्य लिपि होने से उत्तर भारतीयो को तामिल और तेलुगु जैसी भाषाए सीखने की प्रबल प्रेरणा मिलेगी। (मै इन दो का ही उल्लेख कर रहा हू, क्योकि मलयालम तो तामिल और सस्कृत का सम्मिश्रण है और कन्नड का कोई ऐसा साहित्य नही, जिसकी तुलना किसी भी प्रकार से तामिल या तेलुगु के साथ की जा सके।)

अब एक ही अन्तिम विचार रह गया है, जिसका वर्णन करना मै भूल गया था। तेलुगु, कन्नड और मलयालम में सस्कृत शब्दो की बहुत बडी मिलावट है। यह भडार दिन-दिन बढ रहा है और तामिल भी अब सस्कृत-शब्द बडी सख्या में ले रही है। देवनागरी को अपनाने से यह प्रक्रिया तेज होगी।

इसलिए मुझे जरूर आशा है कि तुम देवनागरी और फारसी, इन दो लिपियो से अधिक का विचार नही करोगे।

३ पृ ७ यह बडा मामूली-सा मुद्दा है और जानकारी-भर की बात है। तुम कहते हो कि जन-साधारण के साथ सम्पर्क बढाने में बगला सबसे आगे पहुची है। मुझे मालूम नही है। मै उस दिन अमिय चक्रवर्ती से बाते कर रहा था। उन्होने कहा कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पुस्तको की भी बहुत बिक्री नही हुई है। 'गीताजली' की इन सब वर्षो में दो हजार प्रतिया, 'जीवन-स्मृति' की अधिक-से-अधिक एक हजार प्रतिया इत्यादि। पता नही इस तथ्य से तुम वही नतीजा निकालोगे या नही, जो मै निकालता हू।

परन्तु झासी समीप आ रही है। अब मुझे बन्द करना चाहिए। इसे दुबारा देखने के लिए मेरे पास एक क्षण भी नही है। खराब अक्षरो के लिए क्षमा करना। यह कसूर मेरा नही, गाडी का है।

तुम्हारा,
महादेव

१८७. महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
८ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मेहरअली के भाषण-सम्बन्धी तुम्हारे पत्र के एक मुद्दे पर लिखना मै

भूल गया था। मेरा मतलब ग्रीष्म विद्यालय के कैदियो को छोडने के बारे में राजाजी की विज्ञप्ति से है। तुम्हारा पत्र प्राप्त होने से पहले मैं उसे पढ चुका था, परन्तु उसपर मैंने बुरा नही माना। मेरा विचार है कि चूकि तुमने तो ग्रीष्म विद्यालय के छात्रो की कारंवाई को पसन्द किया था और मैं किसी भी तरह से उसका समर्थन नही कर सकता था, इसलिए मेरे विचार से इस बात की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक था कि रिहाई का अर्थ इस कानून-भग का समर्थन करना नही है, और कानून-भग तो था ही। मुझे अन्देशा है कि जब काग्रेस सत्ता में होगी तब वह अकसर वही भाषा काम में लेगी, जो उसके पहले के शासक लिया करते थे। फिर भी उसका हेतु दूसरा ही होगा।

आशा है, बम्बई में आपरेशन के सिलसिले में तुम्हारी अच्छी गुजर रही होगी। जब वह हो जाय तो तार देना।

सस्नेह,

बापू

यदि नरीमान तुम्हारे पास आयें तो उन्हें जाच करने की आज्ञा दे देना। मुझे खेद है कि बम्बई में तुम्हें इस मामले की झझट रहेगी। महादेव तुम्हें बतायेंगे कि मैं क्या करता रहा हू।

बापू

१८८. अर्न्स्ट तोल्ले की ओर से

सान्ता मोनिका, केलीफोर्निया
२३ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

२९ जुलाई के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। इतना कष्ट उठाकर आपने कितनी कृपा दिखाई है। आपके प्रयत्नो के लिए मैं आपका बहुत कृतज्ञ हू। आप खुद सोच सकते है कि अगर मेरी पुस्तकें हिन्दी और मराठी में छप सकी तो मुझे कितनी प्रसन्नता होगी।

क्या आपको मेरा सुखान्त नाटक 'नो मोर पीस' (अब और शान्ति नही) मिला? मैंने प्रकाशक से आपको एक प्रति भेजने के लिए कहा था।

मेरी पत्नी हॉलीवुड में मेरे साथ रह रही है। वह बहुत बीमार थी,

लेकिन सौभाग्यवश अब वह अस्पताल से लौट आई है और तेजी से स्वास्थ्य लाभ कर रही है।

मैं चीन की घटनाओ का बडी उत्सुकता और दिलचस्पी के साथ अध्ययन कर रहा हू। ऐसा लगता है कि चीनियो के शक्तिशाली विरोध के बावजूद जापान जो प्रदेश लेना चाहता है उसे लेने में वह सफल हो जायगा। राष्ट्रसघ की भी आजकल कैसी हास्यास्पद स्थिति है! जो सस्था मूलत जनता के अधिकारो की रक्षा करने और उसपर होनेवाले आक्रमणो को रोकने के लिए स्थापित की गई थी, वह इतनी असहाय होगई है कि निर्णय करना तो दूर, वह आजकल की आवश्यक समस्याओ पर विचार तक करने का साहस नही करती है।

हमारे इस युग की सबसे बडी कठिनाई यह है कि फासिस्ट और अर्द्ध-फासिस्ट राज्य तो इस बात को जानते है कि उन्हें क्या चाहिए और अपने सकल्प को कार्यान्वित करने के लिए वे हर प्रकार के साधनो का प्रयोग कर रहे है, जबकि प्रजातत्र देश दूषित अन्त करण के साथ रक्षा की चिन्ता में लगे हुए है और सत्य का सामना करना नही चाहते, बल्कि समझौतो के रास्तो से भाग निकलना चाहते है, जिनसे कोई समस्या हल नही होती। स्पेन इसका एक दूसरा उदाहरण है। आजकल हमारे चारो ओर एक ऐसी उथल-पुथल मची हुई है, जो कि सारे ससार की राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओ तक फैल जायगी। १९१४ मे जो विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ था, वह वास्तव मे कभी समाप्त नही हुआ और पता नही कबतक चलता रहेगा। हम तो बस यह आशाभर कर सकते है कि जो कुछ भी अवश्यम्भावी रूप से होगा, उससे इस ससार के सभी आवश्यक अग छिन्न-भिन्न नही हो जायगे।

जर्मनी से मुझे जो समाचार मिले है, उनसे पता चलता है कि नाजी-विरोधी सघर्ष बडी बहादुरी के साथ चल रहा है, किन्तु इतना शक्तिशाली नही है कि आज की राजसत्ता पर प्रभाव डाल सके। जबतक कि सचमुच ही सकट की स्थिति पैदा न हो जाय तबतक उन नाजियो की शक्ति को स्वीकार करना ही होगा, जो कि जर्मनी को बडी ही निर्दयता के साथ युद्ध के लिए तैयार कर रहे है। इसका यह मतलब नही है कि मुझे इस बात में विश्वास है कि वे निकट भविष्य में ही युद्ध करना चाहते है। डराकर और

बहकाकर वे विजय प्राप्त करने की चेष्टा कर रहे है और उस युद्ध से वचना चाहते है जो उनके लिए अत मे घातक सिद्ध हो सकता है। इस बीच वे फासिस्ट शक्तियो को सगठित करने की चेष्टा कर रहे है। कुछ दिन हुए मैंने 'न्यूयार्क टाइम्स' में एक लेख पढा था, जिसमें दक्षिण अमरीका के कुछ भागो में नाजियो के प्रभाव के सम्बन्ध मे बहुत-से आश्चर्यजनक तथ्य प्रकाशित हुए थे।

मेरी पत्नी और मै आपको और आपकी पुत्री को अपनी शुभकामनाए और स्नेहपूर्ण आदर भेजते है।

आपसे फिर पत्र पाने की आशा मे,

आपका,
अर्न्स्ट तोल्ले

१८९. हाजी मिरजा अली (फकीर साहब इपी) की ओर से

[**ईपी के फकीर उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त के कुछ कबीलो के लोकप्रिय नेता थे। वह ब्रिटिश सरकार के घोषित शत्रु थे और उसे काफी परेशान करते थे।**]

शीवाल
(वजीरिस्तान)
१० रज्जव, १३५६ हिजरी
१६ सितम्वर १९३७

आजादीपसन्द लोगो के रहनुमा और हिन्दुस्तानी कौम के सरदार के नाम

हम आपकी खिदमत में अदव के साथ यह अर्ज करते है

हिन्दुस्तान के वहुत-से अखवारो के जरिए हमें यह मालूम हुआ कि वहा एक सिरे से दूसरे सिरे तक हमारे खिलाफ वहुत जवर्दस्त प्रोपेगण्डा किया जा रहा है (यह कहने के लिए माफी चाहता हू)। हमारी विल्कुल वही कैफियत है जो मसीहा की थी, हालाकि उनके मुकावले में हमलोग वहुत नाचीज है। हम लोग सच्चाई और जोश के साथ अपनी कौम और अपने मुल्क के तई वफादार है। यही वजह है कि इस ज़माने के ईमाइयन के दुश्मन, जो हमे अपनी आजादी मे महरूम रखना चाहते है, हमारे खिलाफ

बदनीयती से भरा झूठ बोल रहे है। लेकिन, जनाबेआला, आपको हम इतमीनान दिलाना चाहते है कि जबतक इन ज़ालिमो को हम लोग अपनी तलवार की नोक से अपनी ज़मीन से निकाल बाहर न करेंगे या इस कोशिश में खुद फना न हो जायगे तबतक सरकार हिन्द और हमारे दरमियान अमन कायम नही हो सकता। हमारे नज़दीक आजादी का एक लमहा आरामतलब गुलामी के हजारो बरस से बेहतर है। (चाहे इस गुलामी से हमारी दुनियवी कैफियत कितनी ही बेहतर क्यो न हो।)

आगे हम यह अर्ज और करना चाहते है कि बन्नू और डेरा इस्माइल खा के करीब वक्तन-फ-वक्तन लोगो के जबर्दस्ती उडाने और डकैतियो के जो मामले सुनाई पडते है वे सब अग्रेजो के एजेण्टो की कारस्तानी के नतीजे है। इन बदफेलियो की हम हरगिज़ ताईद नही करते। हमारा मज़हब इस तरह की बातो की साफ-साफ मुमानियत करता है। जो लोग इस किस्म के जुर्म करते है, इस्लाम के बमूजिब वे लोग 'ज़ालिम' और 'मरदूद' है। इस्लाम से उनका कोई ताल्लुक नही। इस्लाम अमन और सुलह का पैगाम लाया है। वह जुल्म और ज्यादती की ताईद नही करता। ऐसी हरकते साफ तौर पर शैतानी और हैवानी है।

इस्लाम दुनिया में तनाजो और जग को पसन्द नही करता। फिर भी जुल्म के आगे सिर झुका देना या एक बुज़दिल की तरह ज़ालिम के आगे घुटने टेक देना इस्लाम की तालीम के खिलाफ है। इस्लाम ने बुज़दिलो पर बदतरीन लानते भेजी है।

आपको, जनाबेआला, यह सफाई के साथ समझना है कि ज़ालिम सरकार और हमारे बीच आज की यह लडाई पूरे तौर पर इसलिए चल रही है कि हमारी आज़ादी के ऊपर बिला वजह हमला किया गया है, न कि इसलिए कि हममें इस्लाम के प्रोपेगैन्डा का जुनून है। अल्लाह ने मज़हब के मामले मे कुरानशरीफ मे यह साफ-साफ हिदायत दी है कि—"ला इकराहा फिद्दीन" यानी मज़हब के मामले मे कोई जबर्दस्ती नही होनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि मज़हब के मामले में हर शख्स आज़ाद है। जिस मज़हब को चाहे वह कुबूल करे और मुसलमान, हिन्दू या ईसाई जो चाहे बने। इसलिए कुरान मे यह साफ है कि मज़हब लोगो के मिज़ाज, अन्द-

रूनी कैफियत और रूहानी नजरिये से ताल्लुक रखता है। इसीलिए कयामत का एक दिन मुकर्रर है कि जब, इन्सान नही, बल्कि अल्लाह इस ज़िन्दगी के आमालो के लिए सज़ा और इनाम अता करेंगे। मोहतरम जनाब ! आप हमारी बात पर ऐतबार कीजिये कि वज़ीरिस्तान की इस वक्त जो कैफियत है, उसके लिए (अग्रेजो के) जुल्म और हिन्द सरकार की हमला करके हमारे मुल्क को फतह करने की नीति जिम्मेवार है। इसके अलावा और कोई वजह नही। चुनाचे जबतक हम लोगो मे ज़िदगी की एक सास भी बाकी है तबतक हमारे लिए गुलामी कुबूल करना नामुमकिन है। अल्लाह के फजल से हिन्दुस्तान भी अपनेको इनके हाथो से आज़ाद करे और हम भी तलवार की नोक पर अपने मुल्क को आज़ाद करे। अल्लाह हमारी मुराद पूरी करे! आमीन !

मोहर
हाजी मिरजा अली
(फकीरसाहब इपी)

१९० रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन, बगाल
२० सितम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

यह आश्वासन मेरे लिए बडा मूल्यवान् है कि विपत्ति के समय और जब जीवन की पकड सहसा ढीली पड जाय तो तुम्हारे स्नेह का पूरा-पूरा भरोसा कर सकता हू। इससे मेरा हृदय बहुत अभिभूत हुआ है।

सस्नेह तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१९१ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
१ अक्तूबर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

जहातक मेरा सबध है, पट्टाभि भी अच्छा चुनाव है। परन्तु मेरे ख्याल से समिति के सदस्यो की राय ले लेनी चाहिए।

पता नही, वर्धा में होनेवाले शिक्षा-सम्मेलन में शरीक होने का समय तुम निकाल सकोगे या नही। इसके लिए तुम्हे निमत्रण गया है। समय निकाल सको तो मै चाहता हू कि आ जाओ। परन्तु मै यह नही चाहता कि अधिक महत्वपूर्ण कार्य के कारण तुम्हारी और कही आवश्यकता हो तो भी तुम सम्मेलन के लिए समय निकालो। बेशक दो दिन तक जोर पडेगा, परन्तु तुम आ सको तो तुम्हारे रहने से शाति मिलेगी। सस्नेह,

बापू

फिर से—

इस पत्र के साथ सैयद हबीब से मेरे पत्र-व्यवहार का परिणाम एक चैक और पत्र के रूप मे भेजा जा रहा है। मैने तुम्हारे साथ हुई बातचीत का जिक्र किये बिना उन्हे इधर-उधर से रुपया ले लेने के लिए खूब झिडक दिया है।

१९२ रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन, बगाल
१० अक्तूबर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद। तुमसे मिलने की सभावना से मै बहुत ही प्रफुल्लित हू और तुम्हे शातिनिकेतन आने का कष्ट नही उठाना पडेगा। मै कल ११ अक्तूबर से लगाकर महीने के अत तक कलकत्ता मे रहने की आशा करता हू और २५ तारीख को, या जिस दिन भी तुम्हे सुविधा हो, तुमसे मिलने की उम्मीद करूगा। तुम जानते हो, मै अभी तक डाक्टरो के हाथो मे हू, जो प्रकृति की ओर से यह धमकी दे रहे है कि अगर मैने कलकत्ता मे बिजली का एक जादुई इलाज कराना स्वीकार न किया तो बडा भयकर दड मिलेगा। तुम्हे समय मिले तो एक बार नही, दो बार मुझसे मिल जाना। मै शायद शहर के बाहर किसी उद्यान-भवन में ठहरूगा, और कृष्ण जो उन दिनो कलकत्ता में होगा, तुम्हे मेरे पास ले आयेगा।

सप्रेम तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१९३ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
१२ अक्तूबर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। २५ तारीख को यहा से चलकर कलकत्ता आने की कोशिश कर रहा हू। तब मुझे काग्रेसी प्रान्तो मे मन्त्रि-मडलो के कार्य-कलाप का सब हाल बताना। आशा है, गले की खराबी और जुकाम थोडे ही दिन रहे होगे और तुमने पजाब का श्रम बरदाश्त कर लिया होगा। सरहद की जलवायु तो बहुत ही सुखद होगी। मै कितना चाहता हू कि कम-से-कम कुछ ही समय के लिए तुम आराम कर लो। सस्नेह,

बापू

१९४ अमृत शेर गिल की ओर से

[अमृत शेर गिल एक अत्यत प्रतिभाशाली कलाकार थीं, जिन्होने अपना शिक्षण पेरिस में पाया था और जिनके चित्र पेरिस की अकादमी में प्रदर्शित किये गए थे। चढती जवानी में ही अचानक उनकी मौत हो गई।]

६ नवम्बर १९३७

कुछ ही देर पहले किसीने मुझसे कहा, "आप जानती है, जवाहरलाल नेहरू बीमार हैं।" मुझे यह पता नही था। मै कभी अखबार नही पढती।

आपके बारे में बहुत सोचती रहती हू, परन्तु किसी तरह—शायद इसी कारण—आपको कभी लिखने की इच्छा अनुभव नही हुई।

आपका पत्र पाकर चकित रह गई। कितना आनददायक था वह! क्या यह भी कहने की बात है?

पुस्तक के लिए धन्यवाद।

आम तौर पर जीवनियो और आत्मकथाओ को मै नापसद करती हू। उनमें झूठ की भनक होती है। उनमे अतिरजना अथवा प्रदर्शन-मात्र होता है। परन्तु मेरा विचार है, आपकी आत्मकथा मुझे पसद आयेगी। कभी-कभी आप अपने प्रभा-मडल को पृथक् कर सकते हैं। आपमें यह कहने की क्षमता है कि "पहले-पहल मैंने जब समुद्र को देखा", जबकि दूसरे लोग कहेंगे, "पहले-पहल जब समुद्र ने हमारे दर्शन किये।"

चाहती हू, आपको ज्यादा अच्छी तरह जानू । मैं उन लोगो के प्रति हमेशा आकर्षित हो जाती हू, जो इतने परिपूर्ण होते हैं कि वे असगत हो सकते हैं—बेसुरे हुए बिना, और जो अपने पीछे शोक-सताप के स्निग्ध धागे नही छोड जाते ।

मैं नही सोचती कि जीवन की दहलीज पर ही मनुष्य अपने-आपको अव्यवस्थित अनुभव करता है । होता यह है कि दहलीज पार करने के बाद ही उसे पता चलता है कि जो चीजें पहले सीधी-सादी मालूम होती थी और जो भावनाए स्वाभाविक लगती थी, वे ही अब अनतगुनी यातनादायक और जटिल हैं, और यह कि केवल असगति में ही सगति होती है ।

परन्तु वास्तव मे आपका मस्तिष्क व्यवस्थित है ।

मुझे नही लगता कि आपकी मेरे चित्रो में सचमुच रुचि थी । आपकी आखें मेरे चित्रो पर थी, परन्तु आप उन्हें देख नही रहे थे ।

आप कठोर नही हैं । आपका चेहरा सौम्य हे । मुझे आपका चेहरा अच्छा लगता है । वह भावनाशील, उद्दीपक और साथ ही अनासक्त है । मैं एक कतरन साथ भेजती हू, जिसे मेरे पिता ने आपके पास भेजने के लिए कहा था । यह उन्हीकी लिखी हुई थी ।

आपकी,
अमृत शेर गिल

१९५ सरोजिनी नायडू की ओर से

महात्माजी का शिविर,
कलकत्ता
१३ नवम्बर १९३७

मेरे प्रिय जवाहर,

मैं वैवेल की मीनार के आधुनिक सस्करण में से लिख रही हू । वह 'छोटा-सा इन्सान'[1] निस्सग भाव से बैठा पालक और उबली हुई ककडी खाने मे लगा है, जबकि इसके चारो ओर ससार-सागर के ज्वार-भाटे में बगाली, गुजराती, अग्रेजी और हिंदी की लहरे उठकर परस्पर टकरा रही हैं । विधान और उसके साथी इस व्यक्ति की अपनी स्वास्थ्य-सबधी हठ-

[1] गांधीजी की ओर सकेत है ।

धर्मों से हार चुके हैं। वह सचमुच बीमार है सिर्फ अपनी सूखी हड्डियो और पतले होते खून में ही नही, बल्कि अपनी अतरात्मा के भीतर। अपने युग का सबसे अकेला और व्यथित व्यक्ति हिन्दुस्तान का भाग्य-पुरुष अपनी ही नियति के कगार के समीप

दूसरे भाग्य-पुरुष तुम हो, जिसे मै जन्मदिवस की शुभकामनाए भेज रही हू। तुम्हे ये वक्त से नही मिलेगी, क्योकि बीच मे तुम्हारी चिट्ठी-पत्री पर नजर रखनेवाली आखें हैं। पिछले दो वर्षों से मैं तुम्हारे अकेलेपन को और तुम्हारी व्यथा को तीव्रता से अनुभव करती रही हू और यह जानती रही हू कि और कोई चारा नही।

आनेवाले वर्ष में तुम्हारे लिए मैं क्या कामना करू ? सुख ? शाति ? विजय ? ये सब वस्तुए जो दूसरे लोगो को परम प्रिय है, तुम्हारे लिए गौण हैं करीब-करीब प्रासगिक है। मैं तुम्हारे लिए कामना करती हू, मेरे प्रिय अटूट निष्ठा और अडिग सत्य, साहस की, अपने काटोभरे रास्ते पर चलने के लिए, जिसपर आजादी की—व्यक्तिगत स्वाधीनता की नही, बल्कि एक राष्ट्र की मुक्ति की—चाह रखनेवाले और उसे अपनी जान से अधिक मूल्यवान माननेवाले हर व्यक्ति को चलना ही पडता है। उस ढालू और खतरनाक रास्ते पर तुम मजबूती के साथ चलते जाना चाहे दुख और व्यथा और अकेलापन ही हाथ आये। याद रखना कि तुम्हारे सारे त्याग का चरम वरदान स्वाधीनता ही है पर तुम्हे अकेले नही चलना पडेगा।

तुम्हारी स्नेहमयी,
सरोजिनी

१९६ महात्मा गाधी के नाम

१४ नवम्बर १९३७

प्रिय बापू,

महासमिति के अधिवेशन पर आपका लेख मैंने अभी पढा। मैसूर के प्रस्ताव के बारे में आपने कहा है कि महासमिति के लिए वह अनियमित था। यदि ऐसी बात थी तब तो उसपर चर्चा होने देना मेरा काम नही था और मुझे उसपर रोक लगा देनी चाहिए थी। मुझे किसी ऐसे सवैधानिक नियम की जानकारी नही है, जिससे यह नतीजा निकलता हो और इस तरह

का कोई नियम हो तो ही ऐसे प्रस्ताव को रोका जा सकता है जो मामूली तौर पर रखा जाय और महासमिति का बहुमत जिसका समर्थन करे। सविधान को छोड दें तो भी मुझे काग्रेस या महासमिति के पहले के किसी ऐसे फैसले का पता नही है, जिसमें यह कहा गया हो कि ऐसे मामलो पर विचार नही होना चाहिए। ऐसा कोई प्रस्ताव होता तो भी मेरी समझ में नही आता कि वह महासमिति को किसी मामले पर विचार करने से, यदि वह विचार करना चाहे तो, कैसे रोक सकता है, जबतक कि उस प्रस्ताव में कोई नियम न बना लिया जाय। महासमिति को किसी ऐसे प्रस्ताव पर विचार करने की पूरी आजादी है, जो खुद उसके पास किये हुए किसी पिछले प्रस्ताव के खिलाफ जाता हो, लेकिन अगर कोई अमल या कार्य-विधि का नियम है तो जबतक महासमिति उसे बदल नही देती तबतक उसपर अमल करना पडता है। ऐसे किसी नियम का तो सवाल नही है, परन्तु मुझे तो किसी ऐसे प्रस्ताव का भी पता नही है, जिसमें ऐसी नीति तय की गई हो, जिसका मैसूर के प्रस्ताव से उल्लघन होता है। हमारे जारी किये हुए पहले के बयानो में उल्लेख किया गया है कि काग्रेस रियासतो में दखलदाजी न करने की नीति का अनुसरण करना चाहती है। वे बयान स्वय महासमिति को दखल देने से, यदि वह दखल देना चाहती हो, रोक नही सकते। मैं नही समझ सकता कि कानूनी शब्द 'अनियमित' कैसे लागू किया जा सकता है।

एक और सवाल उठता है कि दखल क्या है। क्या किसी प्रस्ताव में किसी राज्य का जिक्र करना ही दखलदाजी है? क्या नागरिक स्वतन्त्रताओ की माग अथवा दमन की निंदा दखलदाजी है? यदि ऐसा है तो काग्रेस खुद पिछले दो वर्षो मे निश्चित और असदिग्ध शब्दो में उसकी दोषी रही है।

महासमिति के मैसूरवाले प्रस्ताव की भाषा बहुत खराब है और मैं किसी भी सूरत में नही चाहता था कि अभी महासमिति उसे पास करे। लेकिन इस मामले से मेरी भावनाओ का सबध नही है। मुझे तो एक लोक-तत्री सम्मेलन के अध्यक्ष की हैसियत से काम करना पडता है। प्रस्ताव मैसूर में दमन की निंदा का था। यह दमन कैसा भी हो तो क्या भविष्य में राज्य के दमन की निंदा करने से भी हमें परहेज रखना है? अगर इस दमन में खुद काग्रेस पर हमला करना, हमारे झडे का अपमान करना या हमारे ग्र-

ठन पर रोक लगा देना आदि बाते होती है तो क्या हम चुप रहे ? इन बातो की सफाई हो जानी चाहिए ताकि हमारे दफ्तर और हमारे सगठन को निश्चित रूप से मालूम हो जाय कि हमे क्या ढग अख्तियार करना है।

आपने कहा है कि महासमिति को कम-से-कम दूसरे पक्ष की बात सुने बिना यह प्रस्ताव पास नही करना चाहिए था। क्या आपके खयाल से हमारे लिए यह सभव है कि हम राज्यो में जाकर जाच करने के लिए समितिया नियुक्त करें ? क्या रियासते रजामन्द होगी ? मैंने रियासतो को कई मौको पर यह सुझाव दिया है—जाच-समिति का नही, परन्तु इतना ही कि कोई व्यक्ति वहा जाकर दोनो ओर से जाच कर ले। इसको उन्होने हमेशा ठुकराया है।

यह मैसूरवाला मामला लबे समय से चला आ रहा है। कर्नाटक प्रदेश काग्रेस कमिटी ने इस मामले मे कुछ कदम उठाये है। उसके मत्री ने मैसूर के दीवान से लबी मुलाकात की है। मैंने दीवान को बार-बार लिखा है और उनके सामने बहुत-से निश्चित मामले रखे है। उन्होने लबे जवाब दिये है और मेरी राय में राज्य की नीति को मुनासिब साबित नही कर सके है। महीनो से मै मैसूर के काग्रेसियो को आज्ञा भग करने से रोकता रहा हू और हाल ही में नरीमान के सिवाय और किसीने आज्ञा भग की भी नही। अन्त में कर्नाटक प्रातीय काग्रेस समिति ने स्थिति पर विचार किया और मैसूर की दमन-नीति की निंदा की और आगे के लिए हमसे निर्देश मागे कि उन्हें क्या करना चाहिए। इसलिए यह कहना सही नही है कि महासमिति ने किसी-को उसकी बात सुने बिना या एक पक्ष की बात सुनकर किसीकी निंदा की हो। हमारे लिए जितने मामूली रास्ते खुले हुए थे, उन सबको हमने आज़माया।

यह सब मै आपको लिख रहा हू, क्योकि मै खुद अपने दिमाग मे साफ रहना चाहता हू कि हमारी नीति क्या है। महासमिति ने और मैंने जो रास्ता अख्तियार किया, उसपर आपने ऐतराज किया है। मै अभी तक समझ नही पाया कि मैंने कैसे और कहा भूल की है और जबतक मै यह

समझ नही लेता तबतक दूसरी तरह काम नही कर सकता ।

महात्मा गाधी
वर्धा
मध्यप्रदेश

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

१९७ महात्मा गाधी की ओर से

वर्धा जाते हुए
१८ नवम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मेरा खयाल है कि उस भयकर रविवार की रात मे और सोमवार के मौन मे जब तुम मेरे आसपास मडरा रहे थे तब तुम्हारी आखो मे मै वह खानगी पत्र पढ सकता था । कमजोरी ने अभी मुझे छोडा नही है । सारे मानसिक श्रम से मुझे लम्बे विश्राम की आवश्यकता है, परन्तु शायद वह मिल नही सकता । यह पत्र तुम्हे यह खबर देने को लिख रहा हू कि मैने बगाल के कैदियो के बारे में क्या किया है । मै यह भी जानना चाहता हू कि मेरा काम तुम्हे पसन्द आया है या नही । समझौते की बातचीत का दिमाग पर काफी बोझ रहा है । उसे शुरू करने से पहले मैने दोनो भाइयो से परामर्श कर लिया था कि बातचीत के द्वारा राहत प्राप्त करना वाछनीय है या नही । परिणाम के बारे मे उदासीन रहना और रिहाई के लिए जब भी हो जाय, लोकमत के विकास पर निर्भर रहना सम्भव था । दोनो भाई जोरो मे बातचीत के पक्ष मे थे, जबकि सार्वजनिक आन्दोलन चलता रहे । मैने अपनी योजना भी बताई । वह उसी ढग की थी जैसी अडमान के कैदियो के नाम मेरे तार मे बताई गई थी । तदनुसार मै देवली से वापस लाये गए नजरबन्दो से और कल रात को हिजली के कैदियो से मिला । मत्रियो ने उन नजरबन्दो को, जिन्हे वह 'गाव और घर' मे 'नजरबन्द' कहते है, लगभग तुरन्त छोड देना स्वीकार कर लिया है और नजरबन्दो की छावनियो मे, जिन्हे छोडना वे सुरक्षित समझेगे उन्हें भी, चार महीने के भीतर रिहा कर दिया जायगा । बाकी के लिए, यदि वे पहले ही न छोड दिये गए हो तो, मेरी सिफारिश मान ली जायगी । मेरी सिफारिश नजरबन्दो के वर्तमान विश्वास के पता लगा लेने पर निर्भर रहेगी । यदि मै सरकार से यह कहूगा कि लोग स्वाधीनता

की प्राप्ति के लिए हिंसक उपायो में विश्वास नही रखते और समय-समय पर काग्रेस द्वारा पसन्द की गई काग्रेस की प्रवृत्तियो में लगे रहेंगे तो उन्हें छोड दिया जायगा। नीति की घोषणा किसी भी समय की जा सकती है। कई जेलखानो में और हिजली की छावनी में कैदियो के साथ जो बातचीत हुई उसका ब्यौरा देने की मुझे आवश्यकता नही है। मुझे पता नही कि यह सब तुम्हे पसन्द है या नही। यदि बहुत नापसन्द हो तो मै चाहूगा कि तुम मुझे तार कर दो। नही तो मै तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूगा।

अहमदाबाद की हडतालो से मुझे अशाति हुई। अखबारो से जो कुछ जानकारी होती है उसके सिवा उनके बारे में मै कुछ नही जानता। शोलापुर के बारे में भी यही बात है। यदि हम स्थिति पर काबू नही रख सकते, या तो इसलिए कि कुछ काग्रेसी लोग काग्रेस के अनुशासन को नही मानना चाहते, या इसलिए कि जो लोग काग्रेस के प्रभाव से बाहर है उनकी प्रवृत्तियो का नियत्रण काग्रेस नही कर सकती तो हमारा पदारूढ रहना काग्रेस के हित में बाधक सिद्ध हुए बिना नही रहेगा।

'वन्देमातरम्' का विवाद अभी तक शान्त नही हुआ है। कार्य-समिति के निश्चय पर अनेक बगालियो को हार्दिक दु ख है। सुभाष ने मुझे बताया कि वह वातावरण को शात करने की कोशिश कर रहे है।

आनेवाले गवर्नर के पद सभाल लेने के बाद जल्दी ही शायद मुझे बगाल लौट आना होगा।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। सरूप के बारे में अखबारो की खबर चिन्ताजनक थी। उसपर जो जोर पड रहा है, क्या उसका स्वास्थ्य उसे सहन नही कर सकता है ?

यह पत्र नागपुर के निकट आते-आते लिखा जा रहा है। हम आज शाम को वर्धा पहुच रहे है।

सस्नेह,
बापू

['दो भाई' शायद शरत बोस और सुभाष बोस है।]

[काग्रेस कार्यसमिति के इस निर्णय पर कि राष्ट्रीय अवसरो पर 'वन्देमातरम्' गान की केवल प्रथम पक्तिया ही गाई जाय, एक साधारण-सा विवाद उठ खड़ा हुआ था।]

१९८ महादेव देसाई की ओर से

मगनवाडी, वर्धा
१९ नवम्बर १९३७

प्रिय जवाहरभाई,

८ तारीख का तुम्हारा पत्र मिला। सेम्युअल के आगमन के विषय में मैंने तुम्हारी सब बात समझ ली और मै पोलक को लिख रहा हू कि वह तुमसे मिलना चाहते हो तो तुम खुशी से मिलोगे।

अनूपचन्द शाह के प्रस्ताव के सबध में तुमने गाधी-सेवा-सघ के अस्तित्व के बारे में उन्हें लिखकर बहुत अच्छा किया। अब मै उन्हें लिख रहा हू।

मैसूर-सबधी प्रस्ताव पर अपने लेख के विषय मे बापू खुद तुम्हारे १४ तारीख के पत्र का उत्तर देते, परन्तु वह अपना जवाब लिखवा नही सके। वह इतने अधिक क्षीण हो गये हैं कि डाक्टरो के खयाल मे उन्हे परिश्रम करने देना खतरनाक होगा, परन्तु मैंने तुम्हारे पत्र का सार उन्हें बता दिया था। उन्होने मुझसे कहा कि उनकी राय में हस्तक्षेप न करने की नीति का स्पष्ट भग हुआ है। वह जानते है कि पहले भी काग्रेस ने हस्तक्षेप का दोष किया है, परन्तु वह यह भी जानते है कि वह ठीक नही था और यदि उन्हे इसे बन्द करना अति आवश्यक प्रतीत न हुआ होता तो वह यह लेख न लिखते। उन्हें खुशी है कि तुम मानते हो कि प्रस्ताव की भाषा अच्छी नहीं थी और उन्हे भरोसा है कि यदि कार्य-समिति के दूसरे सदस्य इस बात की तरफ तुम्हारा ध्यान दिलाने की सावधानी रखते कि प्रस्ताव नियम-विरुद्ध है तो तुम प्रस्ताव पर हुए भाषणो को रोक देते, क्योकि वे भाषण प्रस्ताव से भी बुरे थे। बापू चाहते है कि मै तुम्हे विश्वास दिला दू कि उनका इरादा तुम्हारी निन्दा करने का कभी नही था। तुम सिर तक काम में डूबे हुए थे और कार्य-समिति के साथियो का फर्ज था कि तुम्हारा ध्यान दिलाते। तुम इतने अधिक अनुशासन-प्रेमी हो कि उनकी सलाह की उपेक्षा नही कर सकते थे, परन्तु बापू का विचार है कि वे लोग अपने कर्तव्य में चूक गये।

बापू के दिमाग मे जो भावना है, उसे मेरी यह नीरस और भोंडी भाषा व्यक्त नहीं कर सकती। जिस दिन उन्हें दौरा पड़ा इस प्रस्ताव पर उन्हें बहुत

गहरी चिन्ता थी, और आज भी वह उसी हालत में मालूम हुए, जब वह इस मामले की बातचीत कर रहे थे। मैंने उन्हें रोक दिया और कहा कि उनके विचारो को मै यथाशक्ति ज्यो-का-त्यो तुमतक पहुचा दूगा।

रक्त-चाप में इतना उतार-चढाव रहता है कि डाक्टरो के खयाल से बापू को बहुत स्वतत्रता नही देनी चाहिए। वह एक पखवारे के भीतर कलकत्ता जाना चाहते थे, परतु वह स्वय मानते है कि शारीरिक दृष्टि से यह असभव है। उन्होने कम-से-कम उस समय तक बिस्तरे में ही रहने का वचन दिया है, जबतक कि खून का दवाव एक पखवारे या इससे अधिक तक के लिए स्थिर न हो जाय। प्यार।

तुम्हारा,
महादेव

१९९ येगनेस् स्मेड्ली की ओर से

जनरल हेडक्वार्टर्स,
चाइनीज़ एर्थ रूट आर्मी, (रेड आर्मी)
वेस्टर्न शान्सी प्रॉविन्स, चीन
२३ नवम्बर १९३७

प्रिय श्री नेहरू,

मै आपको फिर एक आवश्यक कार्य के सबध में पत्र लिख रही हू।

जापान द्वारा अधिकृत प्रदेशो में—उदाहरण के लिए सुयुआन, चहर और होपेई प्रान्तो में—हजारो चीनी विद्यार्थियो, मजदूरो और किसानो ने विद्रोह करके स्वयसेवक दल बना लिया है और वे जापानियो से लड रहे है। उनके पास हथियार है, लेकिन न तो जाडे में पहनने के कपडे है, न जूते और अक्सर कई दिनो तक उनके पास भोजन भी नही होता। यहा हमारी सेना बहुत गरीब है और वह उत्तर की जनता को सगठित तथा हथियारो से लैस कर रही है। उसके पास स्वयसेवको के लिए पैसे नही है। अभी-अभी उसने दो हजार लोगो की एक स्वयसेवक सेना को एक हजार डालर की रकम दी है, जो करीब पचास सेट फी आदमी पडता है। यह रकम चार-पाच दिन के भोजन का काम चलाने के लिए दी गई है, जिसका मतलब यह है कि लोगो को करीब-करीब भूखे रहना पडेगा।

क्या इडियन नेशनल काग्रेस चीनी स्वयसेवको के लिए कुछ रुपया दान में दे सकती है? आज और पिछले हफ्ते भी मैंने इस समस्या पर अपने सदर

मुकाम में बातचीत की थी । हम अमरीका मे और यहा चीन में भी रुपया जमा करने की कोशिश कर रहे है, हालाकि सभी जगह चीनी जनता बहुत भारी बोझ से दबी हुई है । इसीलिए अब मै इडियन नेशनल काग्रेस से अपील कर रही हू । हमारे स्वयसेवको के लिए कुछ अवश्य भेजिये और अगर आप भेजें तो 'बैंक आव चाइना, सिआन्फू शाखा, सिआन, चीन' के नाम बैंक-ड्राफ्ट बनाकर नीचे लिखे पते पर भेजें—

मिस येगनेस् स्मेड्ली
द्वारा लिन पेह-चू, ची सिएन क्वाग ११,
सिआन्फू, शेन्सी प्रान्त, चीन

हवाई डाक से,
हागकाग के मार्ग से ।

आप जो कुछ भी करे, फौरन करें, क्योकि जापानी दक्षिण की ओर बढ रहे है । सिर्फ हवाई जहाज से हागकाग के रास्ते भेजें, क्योकि हागकाग से सियान को हवाई जहाज का सीधा रास्ता है ।

हम आपसे अपील करते है कि आप चीनी जनता को दासता से लडने में सहायता दें ।

भवदीया,
स्मेड्ली

२०० गोविन्दवल्लभ पन्त के नाम

निजी

२५ नवम्बर १९३७

प्रिय पन्तजी,

मै आज आसाम के लिए रवाना हो रहा हू और दिसम्बर के मध्य से पहले लौटने की सभावना नही है । जाने से पहले आपको लिखना और बताना चाहता हू कि जहातक काग्रेस मत्रिमडलो का सबध है, सारे हिन्दुस्तान में घटनाए जिस ढग से हो रही है, उनसे मुझे बडी तकलीफ हुई है । कार्य-समिति के सदस्यो को मैने जो पत्र भेजे है और जिनकी नकल आपको भी भेजी गई थी, उनमें मैने अपनी भावनाए जाहिर की है । यह राय प्रकट करने में सयम रखा गया था, परन्तु उस सयम के पीछे विश्वास की तीव्रता थी । यदि मै पारिभाषिक भाषा में कहू तो काग्रेसी मत्रिमडलो की वृत्ति क्रान्ति-विरोधी हो

रही है। अलवत्ता यह जान-बूझकर नही किया जा रहा है, लेकिन जब चुनाव करना पडता है तो झुकाव इस तरफ को है। इसके अलावा आम रवैया जड है। हम जड नही बन सकते, क्योकि इसका मतलब यह हो जाता है कि हम केवल पिछली सरकारो की परम्परा को छोटे-मोटे फर्क के साथ निभा रहे हैं। सच तो यह है कि हम बहुत अर्से तक जड नही रह सकते, क्योकि दुनिया जड नही है। चुनाव जरूरी तौर से करना पडता है और मुझे डर है कि बहुत बार चुनाव गलत किस्म का होता है।

मुझे पूरा यकीन है कि काग्रेस मत्रिमडलो के आने से हमारी शक्ति बहुत बढ गई है। कुछ तो बिलाशक इसकी वजह उनके द्वारा किये गए शुरू-शुरू के कुछ काम है, लेकिन ज्यादातर तब्दीली मनोवैज्ञानिक थी और वह अनिवार्य थी। लेकिन हम मनोविज्ञान पर अथवा कुछ अच्छे कामो की नेकनामी पर जिन्दा नही रह सकते। हमको अब कई महीने काम करते हो गये। अब हमें ज्यादा बडे नतीजे दिखाने होगे, और अब जबकि आगे बढने के लिए वक्त आ रहा है तो हम पीछे जाने की स्पष्ट वृत्ति का परिचय देते है। अवश्य ही हम पीछे नही जा सकते, क्योकि आन्दोलन इतना प्रबल है कि वह हमे पीछे जाने नही देगा। परन्तु पीछे जाने की कोशिश करके उस आन्दोलन को बहुत कमजोर करते है और ठीक वही काम करते है, जो ब्रिटिश सरकार अनेक वर्षों से हमसे कराने की कोशिश करती रही है अर्थात् फूट पैदा करके काग्रेस से या काग्रेस के एक अग से ऐसी नीति स्वीकार कराई जाय जो असल में साम्राज्यवादियो के पक्ष की नीति है। यदि ऐसा ही होता दीखता है तब तो हम जितनी जल्दी ही पद छोड दें, उतना ही बेहतर है। मेरा विचार बिल्कुल स्पष्ट है कि हम जितनी तेजी से आगे बढते रहे है, उससे बहुत अधिक तेजी से आगे नहीं बढ सकते तो हमारा भीतर रहने से बाहर रहना अच्छा है। असल में फिलहाल तो खास तौर पर मद्रास और बबई में सवाल पीछे जाने का नही है।

मुमकिन है, मेरा नजरिया गलत हो, परन्तु मै तो अपनी ही रोशनी में अनुसार विचार और काम कर सकता हू, और मुद्दे इतने गभीर है कि उन्हें छिपाया नही जा सकता।

आपका
जवाहरलाल

२०१ चू तेह की ओर से

सदर मुकाम, एर्थ रूट आर्मी,
शान्सी, चीन
२६ नवम्बर १९३७

प्रिय श्री नेहरू,

हमने यहा के अखबारो में पढा है कि आपने हमारे स्वतन्त्रता-सग्राम के समर्थन में हिंदुस्तान के कई नगरो मे सार्वजनिक सभाए की। अनुमति दीजिये कि मैं चीनी जनता और खास तौर से एर्थ रूट आर्मी (चीन की लाल सेना) की ओर से आपको धन्यवाद दू।

आप जानते है कि जापानियो ने चीन के वहुत-से शहरो और खास-खास रेल-मार्गों पर अधिकार कर लिया है। हमारी एर्थ रूट आर्मी, जो कि चीनी जनता की क्रातिकारी सेना है, जनता को उस लम्बी लडाई के लिए सगठित और सुसज्जित कर रही है, जिसके अन्त मे हमे विजय और मुक्ति मिलेगी। हमारा यह काम मुश्किल है, क्योकि हमारी सेना निर्धन है। उत्तर मे जहा-जहा भी हमारे अड्डे है, हम किसानो को सहायता दे रहे है और वे वडी तेजी से हमारी सेना का एक अभिन्न अग वनते जा रहे है। किन्तु एक समस्या है, जिसे हम हल नही कर पायेंगे और उसीके वारे में मैं अव आपको लिख रहा हू।

वे प्रदेश जो वास्तव मे जापान के अधिकार मे है—जैसे कि शान्सी के उत्तरी भाग मे रेलवे के किनारे-किनारे का प्रदेश, सुयुयान और चहार प्रान्तो के प्रदेश तथा पश्चिमी होपेई के भी प्रदेश—इन सभी स्थानो मे हजारो किसान, मजदूर और विद्यार्थी आपसे-आप विद्रोह कर उठे है। उन्होंने हथियारो पर अधिकार कर लिया है और आक्रमण करनेवाली शाही फौज के खिलाफ वे स्वयसेवक दल वनाकर लड रहे है। इन स्वयसेवको के पास हथियार है, लेकिन उनके पास न गर्म कपडे है, न कम्बल, न जूते। उनके पास खाने का सामान भी वहुत कम है या अक्सर होता ही नही। अभी हाल मे उनमे से दो हजार आदमियो का एक दल इस प्रान्त के उत्तर-पूर्वी हिस्से की हमारी सेना की एक टुकडी मे आ मिला था। हम उनको सिर्फ १ हजार चीनी डालर दे पाते है, जो कि फी आदमी सिर्फ पचास सेंट पडता है। यह रकम

करीव एक हफ्ते तक दिन मे एक वार के भोजन के लिए काफी होगी। हमारी समस्याए इतनी बडी है कि हम अपने स्वयसेवको को उनकी आवश्यकता के अनुसार सहायता नही दे पा रहे है। यह एक ऐसी समस्या है जो हमारे सामने हर समय रहती है। हम स्वयसेवको के लिए यहा चीन में और विदेशो में भी रुपया जमा करने की चेष्टा कर रहे है। मिस स्मेड्ली ने हमे बताया है कि हम आपको सहायता के लिए लिख सकते है और उन्हें विश्वास है कि इडियन नेशनल काग्रेस, जिसके कि आप अध्यक्ष है, हमारी सेना को कुछ धन दान में देगी, जोकि वह स्वयसेवको को दे सकेगी। आप यह जान लें कि आप द्वारा भेजे गए पैसे-पैसे का हार्दिक स्वागत किया जायगा और वह स्वयसेवको के पास पहुच जायगा तथा उन्हें अपने सघर्ष को जारी रखने में सहायता देगा।

सम्भव है, चीनी स्वयसेवको के नाम पर रुपया जमा करने के लिए आप कोई कमेटी बना सकें। यदि ऐसा हो सके तो कृपया फौरन कीजिये। हम जानते है कि आपके देश में ऐसे लाखो लोग है जो हमारे सघर्ष में हमसे सहानुभूति रखते है और हमारी सहायता के लिए कुछ देने को तैयार होगे।

चीनी जनता की एर्थ रूट आर्मी के सेनापति की हैसियत से मै आपको और हिंदुस्तान की नेशनल काग्रेस को और वहा की सारी जनता को यह बताना चाहता हू कि चीन दास नही बना है, न वह हारा है। हम कभी भी दास नही बनेंगे, न बनाये जा सकते है। हमारी सेना कभी उत्तरी चीन से पीछे नही हटेगी। हम जनता के साथ रहेगे, उसे सगठित और हथियारो से लैस करते रहेंगे और जापानी साम्राज्यवादी सेनाओ से लगातार उस समय तक लडते रहेंगे जबतक कि उनका आखिरी आदमी हमारे देश से, जिसमें मचूरिया भी शामिल है, निकाल वाहर न किया जाय। जापानी चाहे कितना भी झूठ वोलें और प्रचार करे, उनके धोखे में न आयें। हमारा सघर्ष तो अभी शुरू ही हुआ है। चीनी सरकार की नियमित सेनाए लड रही है। हमारी सेनाए कभी भी हराई नही जा सकेंगी, क्योकि हम जनता की सेना है और हजारो की वढती हुई सख्या में हमारे साथी हमारे कधे-से-कधा भिडाकर युद्ध कर रहे है।

हम लोग बहुत ही अनुशासनपूर्ण और अच्छी तरह से सिखाये हुए लोह सैनिक है और हमारे सभी सिपाहियो को, नए वालियटरो से लेकर कमान्डरो तक को, बहुत ऊची राजनैतिक शिक्षा मिली हुई है। एशिया में आज हम जो भूमिका अदा कर रहे है और भविष्य में करेंगे उसके प्रति हम पूरी तरह से जागरूक है। हम जानते है कि हम सिर्फ चीनी राष्ट्र और चीनी जनता की लडाई नही लड रहे है, बल्कि हम सारे एशिया की जनता की लडाई लड रहे है और हम दलित राष्ट्रो तथा दलित वर्गों की मुक्ति के लिए लडनेवाली विश्व-सेना का एक भाग है। अपनी इसी जागरूकता के कारण, हम आपसे, जो भारत की महान जनता के एक महान नेता है, अपने सघर्ष मे हर प्रकार की सहायता मागना उचित समझते है। चीनी स्वयसेवको के नाम में हम आपकी आर्थिक सहायता, दवादारू, डाक्टरी औजारो, युद्ध का काम सीखे हुए डाक्टरो और नर्सो का ही नही, बल्कि उन स्वयसेवको का भी स्वागत करेंगे जो हमारी सेना के स्वयसेवक दलो के साथ लडकर हमारी लडाई के प्रति अपनी एकता की भावना व्यक्त करेंगे। हम आपसे प्रार्थना करते है कि आप इस सवाल पर पूरी गभीरता के साथ विचार करे, हमारी सहायता के लिए अपना आन्दोलन और भी तेज कर दें, जापानी सामान के वहिष्कार के आन्दोलन को और भी व्यापक तथा गहरा बना दें और अपनी जनता को हमारे स्वतत्रता-सग्राम की बातो के बारे मे सही जानकारी दें। यदि जापानी चीन पर कब्जा जमाने मे सफल हो जाते है तो एशिया का कोई भी राष्ट्र अनेक वर्षो, शायद बीसियो वर्षो, तक आजादी हासिल नही कर सकेगा। हमारा सघर्ष आपका सघर्ष है।

आपने हमारे लिए अबतक जो कुछ किया है, उसके लिए हमारी सेना एक बार फिर आपका हार्दिक धन्यवाद करती है।

आपका साथी,
चू तेह
कमाडर इन चीफ,
एथ रूट आर्मी, चीन

२०२ खलीकुज्जमा की ओर से

लखनऊ
२८ नवम्बर १९३७

प्रिय जवाहर,

कुछ दिन पहले, नत्थी कागजो के साथ मुझे तुम्हारा खत मिला। तुम्हे याद होगा कि पिछली मई में जब बुन्देलखड का चुनाव लडा जा रहा था, मैंने तुम्हे तफसील से उन खतरो के बारे में लिखा था, जिनके मुस्लिम अवाम से ताल्लुक पैदा करने की तहरीक उठ खडे होने का मुझे डर था। और मेरे खयाल से मौजूदा हालत काग्रेस की उसी पालिसी की नतीजा है। बावजूद मुश्तरका चुनावो और कम्यूनल एवार्ड के मुस्लिम चुनाव-हलको से काग्रेस के चुनाव लडने के हक को कोई रोक नही सकता, लेकिन मेरी समझ से जबतक मुसलमान मुश्तरका चुनावो के हक मे है तबतक यह ज्यादा बेहतर होता कि मुसलमान अपनी जमात की तरफ से अपने नुमाइन्दे चुनते। बदकिस्मती से मैं इस मामले में तुम्हे एकराय होने के लिए राजी न कर सका। नाखुशगवार वारदातो का सीधा ताल्लुक इन चुनावो से है और जबतक ये चुनाव जारी रहेंगे तबतक, मुझे डर है, मौजूदा हालात का कोई हल नही निकल सकता। काग्रेस का मुस्लिम उम्मीदवार और उसके मददगार इस बात का जरूर ऐलान करेंगे कि वे उतने ही नेक और पाक मुसलमान है, जितने कि उनके मुखालिफ मुसलिम लीगी, और वोटरो को अपनी-अपनी तरफ करने के लिए दोनो मुखालिफ अपने-अपने मजहबी जोश-खरोश का खुलकर इजहार करेंगे। चाहें काग्रेस मुश्तरका चुनाव-हलको से अपने उम्मीदवारो को जिताने मे कामयाब हो भी जाय तब भी ज़ाती तौर से मैं ऐसा महसूस करता हू कि जबतक कम्यूनल एवार्ड को ठीक न कर दिया जाय तबतक इस मसले को लडाई की जड बनाना काग्रेस के लिए मुनासिब नही। अभी हाल मे बिजनौर के चुनाव के बाद डाक्टर मुजे ने अपने एक बयान मे काग्रेस को कम्यूनल एवार्ड की धज्जिया उडाये जाने पर मुबारकबाद दी है। मुझे यकीन है, ऐसे किसी खयाल से काग्रेस मुश्तरका चुनाव के तरीके के मातहत मुस्लिम चुनावो मे हिस्सा न लेगी, लेकिन काग्रेस की इस पालिसी का जरूरी नतीजा कम्यूनल एवार्ड को रद्द करना होगा, हालांकि काग्रेस

इस बात से एकराय है कि बिना आपसी समझौते के इसमे न तबदीली की जाय और न रद्दोबदल । लीग और काग्रेस के मुखालिफ खयाल के अलावा मुझे और कोई बात ऐसी नही दिखाई देती कि जिसका ताल्लुक दोनो जमातो के मेंबरो के बीच की मौजूदा कड़ुवाहट से हो । और ये बाई-इलेक्शन भी हमेशा नही चलते रहेगे । जब ये खत्म हो जायगे तो लोग बैठकर ठडे दिल से, जो प्रोग्राम और काम हमारे सर पर है, उसके बारे मे सोचेंगे । तब मै उम्मीद करता हू कि यह अलगाव बहुत-कुछ खत्म हो जायगा और लोग आपसी कड़ुवाहट को भूल जायगे ।

मुस्लिम लीग ने अब आजादी के मकसद को मान लिया है । उसका यह लाज़मी फर्ज़ होना चाहिए कि वह हर ऐसी मुहीम में मदद दे, जिसका मकसद हुकूमतशाही का खात्मा हो । जैसे ही काग्रेस लडाई का सरगर्म प्रोग्राम बनायेगी, मुझे यकीन है, लीग पीछे नही रहेगी । वह काग्रेस के साथ कन्धे-से-कन्धे लगाकर लडाई में हिस्सा लेगी । इसी तरह जहातक असेम्बलियो के अदर काम करने का ताल्लुक है, लीग ने वर्धा के प्रोग्राम को पूरी तरह मान लिया है । लीग के मेंबर उसकी ताईद करने को बधे हुए है ।

लोगो पर नामुनासिब असर डालने के बारे में मौलाना शौकतअली ने जो बयान दिया है, उसकी तफसील के साथ खबर देने की हालत मे मै नही हू, लेकिन फिर भी मै यह मानता हू कि काग्रेस सरकार ने जनाब हाफिज मोहम्मद इब्राहीम से, अपनी वज़ारत कायम रखते हुए, असेम्बली की मेबरी से जो फिर से चुनाव लडने के लिए इस्तीफा दिलवाया वह अगर पूरी तरह से गैरकानूनी नही तो पक्के तौर पर बहुत गैरवाजिब था । गवर्नमेण्ट ऑव इडिया एक्ट ने गवर्नर को यह हक दिया है कि वह किसी ऐसे आदमी को, जो मेंबर नही है, वज़ीर बना सकता है, बशर्ते कि वह अपने वजीर बनने के छ महीने के अदर अपनेको मेंबर चुनवा ले । लेकिन यह कानून इस बात की इजाजत नही देता कि असेम्बली के मेंबर की हैसियत से जो आदमी वज़ीर बनाया गया था वह अपनी वज़ारत तो कायम रखे और असेंबली की मेम्बरी से इस्तीफा दे दे । इसके अलावा आप आसानी से इस बात को समझ सकते है कि ८० बरस की परदेशी हुकूमत ने मुस्लिम जमात के अन्दर से मुखालफत के सारे जजबात को करीब-करीब खत्म कर

दिया है और अब वह हुकूमत से डरने और अदब करने की आदी हो गई है। कोई शख्स अगर वज़ीर की हैसियत से चुनाव लडे तो लाज़मी तौर पर उसे मुसलमानो की इस कमज़ोरी से फायदा मिलेगा ही। मैंने वज़ीरे-आज़म को इस रवैये के खिलाफ अपना ऐतराज़ भेज दिया था, लेकिन महज़ खत की पहुच के अलावा मुझे कोई जवाब नही मिला। बहरहाल अब तो यह सब पुरानी बात हो गई। जो इत्तिला तुमने मागी है, वह गालिबन नवाब इस्माईल खा दे सकेंगे।

लीग के प्रोपेगैण्डा के तरीके और उसके मेंबरो के ऐतराज करने काबिल और बेढगे तौर से पेश आने के बारे मे जो मिसालें दी गई है, मुझे यकीन है कि जो कुछ तुमको बताया गया है उसमे असलियत और सचाई होगी, लेकिन वह तसवीर का महज़ एक पहलू है। मुस्लिम काग्रेसमैन, अहरारी और जमियत के लोग, रोज़ाना जिस तरह गन्दी जबान इस्तेमाल करते है और गालिया देते है और जिस तरह का बेबुनियाद प्रोपेगैण्डा करते है, वह दूसरी तरफ के लिए भी कोई तारीफ के लायक बात नही है। मिसाल के तौर पर मै तुमको बताऊ कि मौलाना अताउल्लाह शाह बुखारी ने अपनी एक तकरीर में लीग के नुमाइदो को "मुतफहन लाशें" (बदबू देनेवाली लाशें) कहकर बयान किया है। इसी तरह काग्रेस के एक अखबार 'हिन्दुस्तान' ने मुस्लिम लीग के मेंबरो को "भाड" और "मदारी" कहकर गैर-जिम्मेवार अखबारनवीसी की हद कर दी है। लाहौर की एक मसजिद में लीग के एक हमदर्द पर अहरारो का हमला करना यह ज़ाहिर करता है कि काग्रेस के ये मददगार हिसा की तरफ झुकाव में वफादारी रखते है। ये लोग इस बात का ऐलान करते है कि ये अलग सियासी जमातो के होने मे यकीन नही करते, फिर भी मुसलमानो में जो अलग जमात बनाये रखने की कमजोरी है, शायद इसीलिए ये लोग अपना मुस्लिम पार्टी का बिल्ला कायम रखे हुए है। हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच की कड़ुवाहट की निस्बत आज मुसलमानो और मुसलमानो के बीच में कही ज्यादा कडवाहट है। मुझे यकीन है कि आगे आनेवाले वक्त मे गुस्से और गैर-जिम्मेवरी की यह ज्यादती खत्म हो जायगी। जब एक-दूसरे के नज़रिये के बारे मे गलतफहमी का कोहरा और धुध साफ हो जायगे तो हम हिन्दुस्तान की आज़ादी

के लिए कन्धे-से-कन्धे भिडाकर काम कर सकेंगे। इस बीच दोनो जमातो के जिम्मेवार मेंबरो को अपनी-अपनी जमात के बेलगाम लोगो को समझा-बुझाकर और सही रास्ता दिखाकर काबू में रखने की कोशिश करनी होगी।

तुम्हारा,
खलोक

२०३ महादेव देसाई की ओर से

मगनवाडी, वर्धा
२ दिसम्बर १९३७

प्रिय जवाहरभाई,

तुम्हारा २७ तारीख का पत्र मिला। मुझे आश्चर्य हुआ कि तुम लिख पाये और इससे भी अधिक आश्चर्य इसपर हुआ कि तुम इतना लम्बा लिख सके। तुम्हारा जो कुछ कहना है उसकी मै कद्र करता हू। मै तुमपर कोई तर्क थोपना ही नही चाहता था, क्योकि मैंने मान रखा था कि तुम्हें तर्क की ज़रूरत नही हैं, परन्तु तुमने अपने पत्र में जो अनुरोध किया था उसके प्रकाश में तुम सिर्फ बापू की राय जानना चाहते थे।

बापू की हालत में कोई सुधार नही है और हम सब पत्र-व्यवहार उनसे दूर रख रहे है, परन्तु मैंने निश्चय किया कि डाक्टरो के आदेश के बावजूद मुझे तुम्हारा पत्र उन्हें सुना देना चाहिए। उन्हें खुशी हुई कि मैंने पढकर सुना दिया और अगर उनके लिए ज़रा भी सभव होता तो वह जवाब लिखवा देते। परन्तु इसका तो प्रश्न ही नही था और मै ही अपनी भाषा में तुम्हें बताने की कोशिश करूगा कि जब उन्होने यह लिखा कि मैसूर-वाला प्रस्ताव अनियमित है तब उनके दिमाग मे क्या था। पता नही, तुम्हे याद हो या न हो कि बापू ने यही बात कार्यसमिति में भी कही थी। (उन्हे यही खयाल था और जमनालालजी से पूछने पर उन्होने इसका समर्थन किया।) और उन्हें विश्वास था कि इस प्रस्ताव की इजाज़त नही दी जायगी। जब उन्हें मालूम हुआ कि वह पास हो गया है तो उन्हें आघात लगा।

तुम्हारे अपने ही पत्र में तुम स्वीकार करते हो कि प्रस्ताव की भाषा

ख़राब थी, परन्तु कदाचित् तुम यह कहोगे कि इससे वह गैरकानूनी नही हो जाता । बापू समझते है कि हो जाता है, क्योकि उसमें राज्य की दमन-नीति का विरोध ही नही किया गया है, बल्कि ब्रिटिश भारत के लोगो से मैसूर के लोगो की भरसक सहायता करने की अपील भी की गई है । यदि इससे लखनऊ के प्रस्ताव की भावना भग नही होती तो और क्या होता है ? लखनऊवाला प्रस्ताव बहुत बहस-मुबाहसे के बाद निश्चित हुआ था और उसमें राजेन्द्रबाबू की १-८-३५ की नीति-सम्बन्धी घोषणा का प्रतिबिंब था और १७-१०-३५ को महासमिति ने उसे मजूर किया था। उस घोषणा का प्रस्तुत अश यह था "परन्तु यह समझ लेना चाहिए कि राज्यो के साथ लडाई जारी रखने का भार और दायित्व स्वय राज्यो के लोगो पर ही रहेगा । काग्रेस तो राज्यो पर मित्रतापूर्ण और नैतिक प्रभाव ही डाल सकती है और यह प्रभाव जहा भी सभव होगा, ज़रूर डाला जायगा । मौजूदा हालात में काग्रेस के पास और कोई सत्ता नही है, यद्यपि भारत के लोग चाहे अग्रेजो के अधीन हो या राजाओ के या और किसी सत्ता के, वे है भौगोलिक और ऐतिहासिक दोनो दृष्टियो से एक और अविभाज्य । विवाद की गर्मी में काग्रेस की मर्यादा को अक्सर भुला दिया जाता है । सही बात यह है कि और किसी नीति से सामान्य उद्देश्य ही विफल हो जायगा ।"

यह घोषणा उस समय की प्रचलित नीति को ही दोहराना था और लखनऊ के प्रस्ताव ने अधिक-से-अधिक स्पष्ट शब्दो मे यह कहकर कि "हालात को देखते हुए रियासतो की भीतरी आजादी की कशमकश रियासतो के लोगो को खुद ही करनी पडेगी", उस घोषणा को काग्रेस के एक कानून का रूप दे दिया । मैसूरवाले प्रस्ताव के समर्थको ने काग्रेस की उस अपने-आप लगाई हुई मर्यादा को भुला दिया और काग्रेस की चिर-स्वीकृत नीति को भग कर दिया ।

अब मैं तुम्हारे दूसरे सवाल पर आता हू । तुम कहते हो "बापू यह भी उल्लेख करते है कि महासमिति के प्रस्तावो मे सत्य और अहिसा का भग होता है । ये गभीर आरोप है और प्रमाणित होने चाहिए ।" इत्यादि। स्वाभाविक है कि जब तुम यह लिख रहे थे तब बापू का लेख तुम्हारे सामने नही था । उन्होने कहा है कि प्रस्ताव (मसानी का) और भाषण 'मर्यादा से

बाहर' थे। उन्होने समझाया है कि कैसे मर्यादा के बाहर थे और फिर वे उनसे कहते है, "इस मामले में जवाहरलाल नेहरू ने अपने विस्तृत वक्तव्य में जो कुछ कहा है, उसका अध्ययन करें और उसे हृदयाकित करें।" उसके बाद यह वाक्य आता है "मुझे पक्का विश्वास है कि आलोचक अपने अमल मे सत्य और अहिसा से विचलित हुए।" यह बात खुद प्रस्ताव की अपेक्षा भाषणो के सम्बन्ध में अधिक कही गई है। तुम्हें खुद कई वक्ताओ को रोकना पडा था और उन्हें सिद्धान्त और नीति तक ही सीमित रहने को कहना पडा था। श्री मसानी ने कहा, "बहुत-से राजनैतिक कैदी छोड दिये गए और पाबन्दिया हटा ली गई, मगर काग्रेसी प्रान्तो मे अभी तक कुछ कैदी है।" क्या यह इस बात को प्रमाणित करने को काफी है कि मत्री लोग साम्राज्यवाद के साथ तादात्म्य कर रहे हैं या वे हक और सिकन्दर हयात खा जैसे ही बुरे है ? क्या यह कहना सच है कि दमन का सारा शस्त्रागार कायम है, जबकि काग्रेस-मत्रियो के पदारूढ होने के दो मास के भीतर मोपला-अत्याचार कानून उठा दिया गया ? मै और भाषणो का उल्लेख नही करूगा।

मैसूरवाले प्रस्ताव के बारे में बापू की राय यह थी कि जब हम खुद वहा गये और कानून का सामना किया तब मैसूर राज्य की नीति को दमन-नीति बताना असत्य है। "घृणित दमनास्त्र और राज्य में से गुजरनेवालो पर लागू करने के लिए छपे हुए आदेश तैयार रखना" सत्यपूर्ण भाषा नही है।

तुम्हारे पत्र के बाकी हिस्से की बात यह है कि तुमने जो कुछ कहा है उसकी बापू बडी कद्र करते है। सिर्फ इसीलिए कि बापू कहते है, किसी चीज को तुम्हारे मान लेने का कोई प्रश्न नही हो सकता और अनुशासन का अर्थ यह कभी नही हो सकता कि "किसी मामले में किसीकी अपनी बात चुप-चाप स्वीकार कर ली जाय।"

पता नही, तुम इससे पहले अखबारो को अपना बयान जारी कर चुके हो या नही। लेकिन अगर जारी नही किया है तो इस पत्र के प्रकाश मे तुम शायद कुछ तब्दीली करोगे। इस पत्र का या इसके कुछ हिस्सो का तुम जो चाहो तो उपयोग कर सकते हो, हालाकि यह मेरा पत्र है, बापू का नही

और मै इसे बापू को दिखाये बिना डाक में डाल रहा हू। अगर तुम्हें ऐसा लगे कि बयान ज्यो-का-त्यो चला जाय तो तुम उसे जारी करने में स्वतत्र हो, यानी तुम कह सकते हो कि तुम्हें उत्तर तो मिला मगर वह गले उतरने-वाला नही था और तुम्हें अपने ही अन्त करण के आदेश पर चलना चाहिए।

रही बात हमारे कुछ मत्रियो के कामो में प्रकट होनेवाले सत्य और अहिंसा के भग की, सो बापू चाहेंगे कि तुम साफ-साफ और पूरी बात लिखो और उनकी हाल की बीमारी की परवा न करो। कारण, वह भग कही से भी हो, उसकी निन्दा करनी होगी और अगर हमारे मत्री सचमुच अपराधी है तो वे निकाल देने लायक है।

बगाल के मामले में तुम्हारा जो कुछ कथन है वह बापू ने सब समझ लिया। तुमसे यह आशा न रखकर कि तुम इन रिहाइयो पर 'हर्षोन्मत्त' हो उठोगे, वह तुमसे इतना ही पूछना चाहते थे कि जिस ढग से उन्होने गवर्नर से और मत्रियो से मुलाकात की और कैदियो तथा नजरबन्दो के सवाल पर चर्चा की वह तुम्हें पसन्द आया या नही।

स्नेहाधीन,
महादेव

२०४ येडलफ मायेर्स की ओर से

द्वारा दी टाइम्स ऑव इडिया
बम्बई
६ दिसम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

मैने अभी-अभी आपका 'भाषा का सवाल' नाम का पैम्फलेट पढा है, जिसमे आपने बेसिक इग्लिश की चर्चा की है। बेसिक में मुझे साधारण मे अधिक रुचि है और मुझे ऐसा लगता है कि अपने उत्साह के बावजूद आप उसके साथ अपने पैम्फलेट में बहुत ही कम न्याय कर सके है। इसलिए मैं सोच-विचारकर एक ऐसा मुहावरा गढने की चेष्टा करता रहा हू, जिसमें सार रूप में यह स्पष्ट हो जाय कि आपके विवरण मे कहा और कितनी कमी है। तभी मुझे एक उद्धरण का स्मरण हो आया, जो आपने अपनी 'मेरी कहानी' में दिया है। इसका कारण शायद यह है कि इनके लेखक

प्रोफेसर जॉन ड्यूई खुद बेसिक के एक उत्सुक समर्थक है। उद्धरण इस प्रकार है " किसी आदर्श लक्ष्य के लिए की गई कोई भी कार्रवाई अपने सामान्य और स्थायी मूल्य पर विश्वास होने के कारण एक धार्मिक वस्तु है।"

मेरे लिए बेसिक एक धर्म जैसी चीज है। इसका आशिक कारण यह है कि विचार-विनिमय के सामान्य (वल्कि सहायक) साधन के ज़रिये एक अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को या विश्वचेतना को जागृत करने की आवश्यक समस्या का एकमात्र व्यावहारिक हल स्पष्टत इसीमें मिलता है। इसके अलावा आशिक कारण यह भी है कि यह एक दैवी शस्त्र प्रतीत होता है, जिसके ज़रिये अगर आदमी चाहे तो शब्द के उस जादू तक पहुच सकता है, जिसने मानवता को कैद कर रखा है और जिससे लोकप्रिय तथा वैज्ञानिक दोनो ही तरह के विचारो पर वह घातक प्रभाव पडता है, जिसकी आपने स्वय अपनी पुस्तक में चर्चा की है।

आपने अपने पैम्फलेट मे इनमें से एक भी पहलू को नही लिया ह, न अन्तर्राष्ट्रीय पहलू को और न सामाजिक शास्त्र के पहलू को ही। यह मैं मानता हू कि बेसिक की चर्चा आपने केवल सयोगवश की है। लेकिन मैं समझता हू कि बेसिक का जो व्यापक मानवतापूर्ण ध्येय है वह तो है ही, उसके अलावा भी अगर आपने बेसिक के साथ कुछ अधिक न्याय किया होता तो उससे आपकी बेसिक हिन्दुस्तानी की अपील को बल मिलता और उसकी सम्भावनाओ के प्रति लोगो मे अधिक रुचि उत्पन्न होती। मुझे पता नही कि आपने बेसिक का किस सीमा तक अध्ययन किया है। इसलिए मै आपके पास दो छोटी-छोटी किताबे यह सोचकर भेजने की धृष्टता कर रहा हू कि शायद आपने इन्हे न देखा हो। इनमें उन दो पहलुओं का वर्णन है, जिनका मैंने उल्लेख किया है। ये पुस्तके है—स्वय ऑगडन-लिखित 'डेवेलाइ-जेशन' और रिचार्ड्-लिखित 'बेसिक इन टीचिन ईस्ट एन्ड वेस्ट'। उम्मीद है कि आप इनपर नज़र डालने और अवसर आने पर इनमें लिखी बातो का उपयोग करने के लिए समय निकाल सकेगे।

इन सब बातो से निश्चय ही मै एक सनकी मालूम होता होऊगा और कभी-कभी मैं सोचता हू कि 'नो मोर वार' (युद्ध और युद्ध नही) तथा

उस जैसे और आन्दोलनो से निराश होकर और हमारे ऊपर सकट के जो भयकर बादल मडंरा रहे है उनके कारण, कही ऐसा तो नही कि मुझमें सतुलन की जो कुछ भी भावना थी, उसे अब मैं खोता जा रहा हू। फिर भी कुल मिलाकर मुझे इस बात का विश्वास है कि लक्ष्य हमसे चाहे कितनी भी दूर हो और रास्ते की कठिनाइया चाहे कितनी भी वडी हो, हम एक स्थिति पर पहुच गये है, जहा एक समान भाषा का प्रचार, वकीलो के शब्दो में, मनुष्य के विकास के लिए आवश्यक बन गया है और इसके विना एक समान लक्ष्य की भावना कभी इतनी मजबूत नही हो सकती कि हमारी राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विताओ पर विजय पा सके। इसलिए जो कोई भी इसे पास लाने की चेष्टा कर रहा है, वह इतिहास के कदम-से-कदम मिलाकर आगे बढ रहा है। यह एक महान भावना है और अगर इतिहास और आदर्शवादिता की दृष्टि से मुझे इस बात का विश्वास न भी होता तव भी बेसिक को ससार के कोने-कोने में शॉ, वेल्स, स्वेन हेडिन, हॉगबैन, ड्यूयी, डब्ल्यू के, लियाओ, हूक, ओकाकुरा, हक्सले, पर्सी नन, ईलियट स्मिथ, विकहैम स्टीड और मैडम लिटविनोफ जैसे लोगो से जो आश्चर्यजनक समर्थन मिला है, उससे मुझे पुन आश्वस्त होने में सहायता मिलती है। ये थोडे-से लोग, जिनके नाम मैंने योही गिना दिये है, निश्चय ही सनकी नही है।

शायद इससे भी अधिक उत्साहवर्द्धक मेरी कामयावी की बात यह है कि इस वर्ष जब मैं इग्लैंड छुट्टी पर गया हुआ था तव मैं दो साल की चेष्टा के बाद 'टाइम्स ऑव इडिया' के जिद्दी सचालको को (जिनके यहा मैं भी काम करता हू) बेसिक में दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित कर सका। इस बात का और बेसिक के जन्मदाता ऑगडेन के साथ मैंने छुट्टी लेकर उनकी सस्था मे जो विशेष अध्ययन किया, इसका एक नतीजा यह हुआ है कि हम वहुत जल्दी ही हिंदुस्तानी आवश्यकताओ को विशेष ध्यान मे रखते हुए बेसिक के वारे में एक सस्ती पुस्तक प्रकाशित करने जा रहे है। अग्रेजी पढाने की आजकल की बेकार और खर्चीली प्रणाली को बदलकर बेसिक को लाने के लिए जो व्यापक और गहरा आन्दोलन किया जानेवाला है, उसकी यह भूमिका है।

उसके सम्बन्ध में आपके पैम्फ्लेट में एक टिप्पणी है, जिसमें रि

भ्रम पैदा हो सकता है। आपने लिखा है—" ..और बेसिक का शब्दकोश वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यापारिक शब्दो को छोडकर ९८० शब्दों मे सीमित कर दिया गया है।" जैसाकि ऑगडन की पुस्तको में सब जगह लिखा हुआ है, यह सख्या ८५० है और यदि इसमें ५० अन्तर्राष्ट्रीय शब्द भी मिला लिये जाय तब भी कुल जोड ९०० ही होगा। शायद आपने ऐसा भूल से लिख दिया है और मुझे आशा है कि आप हमें इस बात का अधिकार देंगे कि आवश्यकता पडने पर हम इसका स्पष्टीकरण कर सके। इस बारे में एक औपचारिक पत्र भी साथ में भेजा जा रहा है।

अब जबकि मैंने ये सब बातें कहकर अपने मन का बोझ हल्का कर लिया है, मै आपको यह बताना चाहूगा—जो कि मै बहुत दिनो से बताना चाह रहा हू—कि आज से करीब एक साल पहले जब मैंने आपकी 'मेरी कहानी' पढी थी तब उसका मुझपर कितना गहरा असर पडा था। पहली बात तो यह है कि मेरे और आपके विचार बहुत-कुछ एक-से है। जैसा कि आप जानते है, इग्लैंड में जन्म और पालन-पोषण होने के बावजूद मैं जाति का यहूदी हू और पुनरुत्थान के अपने राष्ट्रीय सघर्ष मे मैंने भी आपकी ही तरह अक्सर अपनेको 'अकेला और बेघर' अनुभव किया है। कुछ तो इसलिए कि फिलस्तीन में, जहाकि मैंने जातीय आधार पर पाच वर्ष तक यह आन्दोलन चलाया था, वहा के आवासी अधिकतर प्रवासी यहूदी है (मै अग्रेजो के बीच हमेशा यहूदी और यहूदियो के बीच हमेशा अग्रेज बना रहा हू) और कुछ इसलिए कि मै अपनेको इस आन्दोलन के धार्मिक पहलू के साथ जोड न सका, खास तौर से इस विचारधारा से कि भगवान ने हमारी जाति को चुनकर बनाया है। लेकिन यह तो एक छोटी-सी बात है। पुस्तक को पढने के बाद जहा एक ओर हिंदुस्तान के नेताओ और जनता की नैतिक वीरता और बलिदान के लिए प्रशसा की भावना उठी वहा मेरे मन में मुख्य रूप से यह भी विचार आया कि अपनी निर्धनता और अपने पिछडेपन के बावजूद हिंदुस्तान निकट भविष्य में ही 'भीतरी (आत्मिक) और बाहरी (भौतिक)' विकास के बीच उस सतुलन और मेल को स्थापित कर लेगा जो कि आपके

कहने के अनुसार दुर्भाग्यवश पश्चिमी देश प्राप्त करने में असफल रहे हैं और इस प्रकार वह सभ्य जीवन की कला का अनुकरणीय आदर्श ससार के शेष देशो के सामने रखेगा। मैं समझता हू कि यह विचार सबसे पहले उस समय उठा जब मैं आपकी पुस्तक में जेल-जीवन का वर्णन पढ रहा था—वहा की भयानक अमानुषिकता के बारे में ही नही, बल्कि भावी विकास की सम्भावनाओ से पूर्ण श्रेष्ठ मानवीय शक्ति के भयानक विनाश के बारे में भी। उस समय मैंने सोचा कि जब काग्रेस के हाथो में सत्ता आयेगी तब निश्चय ही वह जेल-जीवन की उस प्रणाली को शीघ्र ही बदलने का प्रयत्न करेगी, जिसमें रहकर वह स्वय इतना दु ख भोग चुकी है और जिसे जेल के सुधारक सालो से ससार के सभी देशो में निन्दनीय बताते रहे हैं, लेकिन जिसका कुछ असर नही पडा है। यही बात दूसरी चीजो के साथ भी है—जैसे शिक्षा, मजदूर-कल्याण, नशाबन्दी आदि। मैंने निश्चित रूप से यह सोचा कि जो पीढी सोचने और काम करने के रूढिवादी तरीको के विरोधी वातावरण में पाली-पोसी गई है उसमें दूसरे देशो के आरामकुर्सी में बैठनेवाले सिद्धान्तवादियो की अपेक्षा सुधार करने की अधिक क्षमता होगी।

जैसाकि मैंने कहा यह एक साल पहले की बात है और पिछले कुछ महीनो में मैं सबसे अधिक रोमाचित यह देख-देखकर होता रहा हू कि अब जबकि आप लोगो को अपने देश के एक बहुत बडे भाग पर अधिकार प्राप्त हो गया है, आप व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित समझ और सहानुभूति को तथा व्यक्तिगत यातना के बीच पले हुए आदर्श को व्यवहार मे लाने के लिए पहली बार प्रयत्न कर रहे हैं और पहली बार उसका रूप सामने आ रहा है। उदाहरण के लिए मत्रिपद से सम्बन्धित आत्म-त्यागपूर्ण आदेश, बदियो की मुक्ति, नशाबदी के प्रयोग, कृषि-सुधार, सार्वजनिक शिक्षा आदि।

निस्सन्देह आपको यह अनुभव हो रहा है कि विनाशकारी आलोचना की अपेक्षा रचनात्मक चेष्टा अधिक कठिन होती है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि चूकि आपने सरलता, सत्य और अहिसा को अपना आदर्श मानकर काम करना शुरू किया है, इसलिए आप अपने लक्ष्य तक, अर्थात्

एक सुखी और सचमुच ही सभ्य समाज की स्थापना के ध्येय तक शायद पश्चिमी देशो से पहले ही और उनकी इच्छा के विरुद्ध भी पहुच जायगे ।

मै समझता हू कि गाधीजी, उनकी लगोटी और उनकी बकरी के दूध ने ससार को आत्मिक और भौतिक विकास के मेल का अर्थ कुछ-कुछ समझा दिया है । जहातक मेरा सवाल है, मै समझता हू कि सरलता पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर दिया गया है, फिर भी उसके पीछे जो आदर्श है वह (जहातक हिंदुस्तान का सवाल है) आपके 'साध्य' और 'साधन' दोनो का प्रतीक है ।

मुझे ऐसा लगता है कि मेरा यह पत्र बडा असम्बद्ध-सा होगया है । मैने बहुत सारी बातें इसमें एकसाथ मिला दी है । अगर इसमें एकता का कोई सूत्र है तो वह इस विचार पर आधारित है कि शायद हिंदुस्तान एक ऐसी सामाजिक क्रान्ति के बीच फसा हुआ है जिसकी सीमा में शिक्षा भी अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए और यह कि बेसिक का विचार (जोकि अपने-आपमें क्रान्तिकारी है) उस क्रान्ति मे एक महत्व-पूर्ण हिस्सा लेगा, जिसका असर न सिर्फ अग्रेजी के पढाने पर पडेगा बल्कि जिसका शिक्षा के तमाम मनोवैज्ञानिक और अध्यापकीय दृष्टिकोण पर पडेगा । (देखिये रिचर्ड्स) ।

आपका,
येडल्फ मायेर्स

२०५ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
७ दिसम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मैने मथुरा के प्रस्तावो या तुम्हारे भाषण को नही पढा । मै दोनो देखना चाहूगा ।

महादेव के पत्र में तुम्हारी कोमल शिकायत पढी । मै क्या कर सकता हू ? मै जैसा हू वैसा ही तुम्हे मुझको स्वीकार करना होगा । मै जानता हू, तुम कर रहे हो । मै यह भी जानता हू कि मेरे प्रति तुम जितने

कोमल हो ।

क्रिप्स को जब चाहो अपने साथ ला सकते हो ।

सस्नेह,
बापू

२०६ राजेन्द्रप्रसाद की ओर से

पो आ जीरादेई (सारन)
२४ दिसम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलालजी,

आपका ता २९ नवम्बर का पत्र और उसके साथ के कागजात ठीक वक्त पर मिल गये थे, परन्तु मुझे खेद है कि काग्रेस के पिछले प्रस्ताव उस वक्त मेरे पास न होने के कारण मै आपको नही लिख सका ।

मै अखिल भारतीय काग्रेस कमिटी की बैठक में हाजिर नही था, इसलिए नही कह सकता कि उसकी कार्रवाई सत्य और अहिंसा से किस प्रकार दूर चली गई । परन्तु मेरा खयाल है कि महात्माजी का सकेत श्री मसानी के प्रस्ताव के शब्दो की तरफ उतना नही होगा, जितना उसपर किये गए भाषणो की ओर रहा होगा ।

मैसूर-प्रस्ताव 'अधिकार के बाहर था' इस वक्तव्य पर काग्रेस के पिछले प्रस्तावो के सदर्भ में विचार किया जाना है । मैसूर राज्य में नागरिक स्वतत्रता को दबाने के लिए जो दमन की नीति जारी है, उसका इस प्रस्ताव में महासमिति ने जोरदार विरोध किया और मैसूर की जनता को बधाई देते हुए और उसके न्यायोचित और अहिसात्मक सघर्ष में उसकी सफलता की कामना करते हुए "रियासतो की जनता तथा ब्रिटिश भारत की जनता से राज्य के विरुद्ध मैसूर की जनता को अपने आत्म-निर्णय के अधिकार के लिए किये जानेवाले सघर्ष में उसे प्रोत्साहन तथा समर्थन देने की अपील की ।" मै नही जानता कि महासमिति अथवा काग्रेस का इससे पहले ऐसा कोई प्रस्ताव है, जिसमें एक देशी राज्य के किसी खास कार्य या नीति के प्रति विरोध प्रकट किया गया हो और रियासतो तथा ब्रिटिश भारत की जनता से अपील की हो कि वह उस राज्य की जनता का उनके सघर्ष में समर्थन करे तथा उसको प्रोत्साहन

दे । परपरागत नीति तो भारतीय रियासतो के मामलो में हस्तक्षेप न करने की रही है । काग्रेस में केवल तीन प्रस्ताव ऐसे हो चुके है, जिनके प्रकाश मे पता लगाया जा सकता है कि क्या नीति बदल दी गई है या उसमें कुछ हेर-फेर कर दिया गया है । १९२८ में कलकत्ता-काग्रेस मे पास किये गए प्रस्ताव मे भारतीय रियासतो के लोगो को उनके न्यायोचित तथा शातिपूर्ण सघर्ष में काग्रेस की सहानुभूति तथा प्रोत्साहन का आश्वासन दिया गया था । अगस्त १९३५ में कार्य-समिति ने काग्रेस-नीति को अपने एक वक्तव्य में विस्तारपूर्वक दोहराया, जिसे उसी वर्ष मद्रास में महासमिति ने अपनी १७-१८ अक्तूबर की बैठक में स्वीकार कर लिया । इस वक्तव्य में रियासती लोगो के शान्तिपूर्ण और न्यायोचित सघर्ष के साथ काग्रेस की सहानुभूति और प्रोत्साहन की प्रतिज्ञा को दोहराने के बाद यह निर्देश दिया गया कि सहानुभूति तथा प्रोत्साहन किस किस्म का होगा तथा उनका रूप क्या होगा । "तो भी यह समझ लेना चाहिए कि रियासतो मे होनेवाले इस सघर्ष को चलाने की जिम्मेदारी और बोझ जाहरा तौर पर उनकी जनता पर ही पडेगा । काग्रेस तो रियासतो पर मित्रतापूर्ण तथा नैतिकतापूर्ण प्रभाव डाल सकती है और इतना तो जहा-जहा भी सभव होगा, वह जरूर करेगी । वर्तमान परिस्थितियो में उसके पास कोई और शक्ति नही है, यद्यपि भारत की समस्त जनता, चाहे वह अग्रेजो के अधीन हो, चाहे राजाओ के या किसी दूसरी सत्ता के, भौगोलिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से एक है और अविभाज्य है । विवाद की गरमी में प्राय काग्रेस की मर्यादाए भुला दी जाती है । वस्तुत दूसरी कोई नीति सामान्य उद्देश्य को असफल बना देगी ।" कलकत्ता-अधिवेशन के प्रस्ताव तथा महासमिति के इस वक्तव्य की अप्रैल १९३६ में लखनऊ काग्रेस ने फिर से पुष्टि की और कहा कि "रियासतो के अन्दर होने वाली आजादी की लडाई का स्वरूप ही ऐसा है कि उसे स्वय वहा के निवासियो को ही लडना होगा ।" मेरी याद में इस प्रस्ताव में "मुख्यत" शब्द जोड देने के सशोधन को ठुकरा दिया गया था । महासमिति के कलकत्तावाले प्रस्ताव में न केवल मैसूर के किसी कार्य और नीति का विरोध किया गया है, बल्कि रिया-

सतो और ब्रिटिश भारत की जनता से अपील की गई है कि वे मैसूर की जनता को पूरा-पूरा समर्थन और बढावा दें। दूसरे शब्दो में मित्रतापूर्ण और नैतिक प्रभाव डालने से यह कही आगे बढ जाता है और काग्रेस की मर्यादाओ को भुला देता है, और ठीक उसी नीति को अगीकार करता है, जिससे सामान्य उद्देश्य असफल हो जाता है और जिसका लखनऊ-काग्रेस के उस प्रस्ताव से मेल नही बैठता, जिसमे नीति के पिछले वक्तव्य की दुबारा पुष्टि की गई थी। बेशक काग्रेस को अपनी नीति बदल देने की पूरी छूट है, लेकिन जबतक वह कायम है तबतक यह महासमिति की अधिकार सीमा में नही है कि वह रियासत के भीतरी शासन मे हस्त-क्षेप करनेवाला प्रस्ताव स्वीकार करे और वहा चल रहे किसी सघर्ष में भाग ले। यदि महासमिति के प्रस्ताव पर अमल होता है तो कार्य-समिति को मैसूर की जनता की धन-जन तथा और सब तरह से मदद करनी पडेगी और यदि उसके आह्वान पर अमल होता है तो देशी राज्यो और ब्रिटिश भारत की जनता को भी यही करना चाहिए, परन्तु काग्रेस ने इस प्रकार के समर्थन के लिए कभी नही सोचा या वादा किया था। दूसरे, अखिल भारतीय काग्रेस कमिटी का कलकत्तावाला प्रस्ताव लखनऊ-काग्रेस के प्रस्ताव का उल्लघन करता है। मेरा ख़याल है कि गाधीजी ने इसी कारण कलकत्ता के प्रस्ताव को महासमिति के अधिकार से बाहर बताया है।

आपका,

राजेन्द्रप्रसाद

२०७ एडवर्ड टामसन की ओर से

स्कारटीप

वोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड,

२ जनवरी १९३८

प्रिय नेहरु,

मैं मानता हू कि मानवीय हित पहले आता है, लेकिन दूसरे नीवचारियों का भी महत्व है और उनके लिए भी साथ-ही-साथ कुछ होना चाहिए। अगर कुछ जातिया खत्म होगई तो यह एक ऐसी शरारत हो जायगी,

जो कभी दुरुस्त नही हो सकती। पुराने समय में हिंदुस्तान को खाई मे डाल दिया गया और मुझे यह हमेशा ही बेहद बदतमीजी लगती रही है कि चन्द मालदार लोग और शासक यह समझें कि उन्हे एक देश की परम्पराओ को आपकी और आगे आनेवाली पीढियो के लिए नष्ट कर डालने का हक हासिल है।

आप इस बारे में कुछ चीजे कर सकते है ? जब कोई जानवर या चिडिया सरक्षण में इसलिए ली जाती है कि उसकी नस्ल खत्म होनेवाली है तो उसका बेचा जाना कानूनन अपराध माना जाना चाहिए। आपके यहा कुछ ऐसी चिडिया है, जो करीब-करीब खत्म हो चली है, लेकिन उनका मास खुले आम बिकता है। गैंडो के सीग भी, जिन्हे कलकत्ता के चीनी तथा दूसरे लोग कामोद्दीपक समझते है, बेचे जाते है। इससे कोई अन्याय नही होगा कि इस प्रकार के नीच प्रयोजनो के लिए मागी जानेवाली वस्तुए मुनाफाखोरी से बाहर रखी जाय।

लेकिन सबसे जरूरी बात यह है कि इस तरह का जनमत तैयार किया जाय, जो शिकार की नीच मनोवृत्ति को समाप्त कर सके, ताकि हिंदुस्तानी यह सुनकर कि फला राजा ने पाचसौ चीते मार डाले (जैसा कि रीवा ने किया है) या अनगिनत मुरगाबियो को गोली से उडा दिया या काले बारहसिगे का शिकार करते हुए कोई राजा तीस मील फी घटे की रफ्तार से मोटर चला सकता है, तारीफ मे 'वाह-वाह' करने से इन्कार करके पश्चिम का पथ-प्रदर्शन कर सके। इस प्रकार की झूठी प्रतिष्ठा को नष्ट करना होगा। दक्षिण अफ्रीका में जनमत इसे नष्टप्राय कर चुका है (और कनाडा में भी)। अहिंसा की भावना पुन प्रतिष्ठित कीजिये और यह भावना फैलाइये कि हिंदुस्तान के जगली जीव आपकी विरासत के एक अग है, जिन्हे दूसरे लोगो को नष्ट करने का कोई हक नही है।

एक साल हुआ, मैंने आपके यहा 'टाइम एण्ड टाइड' पत्र देखा था। अगर आप उसे अब भी पढते हो तो उसके ताजा (१ जनवरी) अक में महाराज बीकानेर पर लिखा मेरा लेख आपको दिलचस्प लगेगा।

मुझे यह पढकर बेहद खुशी हुई थी और उत्साह मिला था कि

कांग्रेसी मन्त्री सिर्फ पाचसौ रुपया मासिक वेतन ले रहे है और—यद्यपि जीवन में अनेक भ्रम होते है—मुझे यह सुनकर बडा दु ख पहुचा कि मंत्रियो का यह त्याग अधिकतर मिथ्या है, क्योकि बाकी का वेतन वह 'भत्तो' के रूप में ले लेते है। अगर यह सच है तो काग्रेस को इससे इतना बड़ा नुकसान पहुचेगा जितना कि किसी भी सरकार की कार्रवाई से नही पहुंच सकता। मै उम्मीद करता हू कि आप मुझे बता सकेगे कि यह बात झूठ है। मुझे यह बात एक हिंदुस्तानी ने ही बताई थी, जिसे सच्चाई मालूम होनी चाहिए।

१९३८ के वर्ष के लिए शुभकामनाओ-सहित,

आपका,
एडवर्ड टामसन

२०८ सैयद वजीर हसन की ओर से

३८, केनिंग रोड,
इलाहाबाद
११ फरवरी १९३८

प्रिय जवाहरलालजी,

पिछले अक्तूबर में लखनऊ में मुस्लिम लीग के इजलास में उसके सदर की तकरीर से न सिर्फ मुसलमानो और हिन्दुओ, वल्कि मुसलमानों और मुसलमानो के वीच गलतफहमी, झूठ और मजहवी तथा फिरकेवारान नफरत का फैलाव शुरू होगया। उस दिन से वाकयात के बारे में वढा-चढाकर झूठे वयान निकालकर मजहवी नफरत और अक़लियत के हको की आड में रोज-व-रोज इसे वढाया जा रहा है। खास तौर से मै नीचे लिखी वातो का जिक्र कर सकता हू

१ यह कि काग्रेस एक हिन्दू जमात है।

२ वह हिन्दुस्तान में स्वराज नही, वल्कि हिन्दूराज कायम करना चाहती है।

३ यह कि काग्रेस और सात सूवो में उसकी सरकारें कम तादादवाले फिरको को, खासतौर पर मुसलमानो को, सताने और कुचलने की कोशिश कर रही हैं।

४ यह कि हिन्दुस्तान के आठ करोड लोगो के खयालो की सच्ची

२०९ मुहम्मदअली जिन्ना की ओर से

१, हेस्टिंग्स रोड,
नई दिल्ली
१७ मार्च १९३८

प्रिय पडित जवाहरलाल नेहरू,

आपका ८ मार्च १९३८ का खत मुझे मिल गया। १८ जनवरी के आपके पहले खत से मुझे यह मालूम हुआ कि हिन्दू-मुस्लिम-एके को बढाने के लिए आप यह जानना चाहते है कि दोनो में किन-किन बातो में फर्क है। मैंने आपको जवाब मे लिखा था कि यह मामला खतो-किताबत से हल नही हो सकता और खतो-किताबत से हल करने की कोशिश वैसी ही नामुनासिब होगी जैसी अखबारो में इस मामले पर बहस करने की कोशिश। इसपर आपने अपने ४ फरवरी के जवाब मे काग्रेस के ऊपर मेरी कुछ फर्जी नुक्ताचीनी के बारे में और मेरे कुछ और बयानो के बारे में, जिनका उन बातो से, जिनपर हमें इस वक्त गौर करना चाहिए, कोई खास ताल्लुक दिखाई नही देता, अपनी शिकायतो की एक फेहरिस्त तैयार करके मुझे भेजी थी। आप इन्ही शिकायतो पर अडे रहे और अभी तक आपकी यही राय है कि हम उन्ही शिकायतो पर बहस जारी रक्खे, हालाकि इनका हमारे इस वक्त के मामले मे कोई ताल्लुक नही है। जैसाकि मैंने अपने पिछले खत मे आपको पहले ही तफसील से समझा दिया, इस बहस के लिए मै तैयार नही हू।

मै समझता हू कि हमारी बातचीत की शुरुआत इस सवाल से हुई थी कि मुल्क की ज़िंदगी में मुसलमानो के मज़हब, उनकी तहज़ीब, उनकी ज़बान, उनके अपने निजी कानून, सरकार और मुल्क के इतज़ाम में उनके सियासी हक, इन सबके बारे में मुसलमानो के हको की हिफाज़त किस तरह की जा सकती है। इस तरह के बहुत-से सुझाव दिये गए है, जो मुसलमानो को तसल्ली दे सकेगे और अकमरियतवाले फिरके में यकीन और महफूज़ होने का खयाल पैदा कर देंगे। मुझे हैरत हुई, जब आपने जिस खत का मै जवाब दे रहा हू, उसमें आपने कहा है, "लेकिन वह कौन-से मामले है, जो मौजू है ? मुमकिन है कि मै कुन्दज़हन हू और या

इस मसले की पेचीदगियो से पूरी तरह वाकिफ नही हू । अगर ऐसा है तो मै इसका मुस्तहक हू कि आप मुझे रोशनी दें । मै वडा मशकूर होऊगा, अगर आप मुझे हाल का कोई ऐसा बयान बता दें जो अखबारो में या किसी प्लैटफार्म से दिया गया हो और जिससे मुझे इस बात के समझने में मदद मिले ।" शायद आपने 'चौदह पाइटो' की बावत सुन लिया है ।

इसके वाद आपने लिखा है, "इसके अलावा पिछले कुछ सालो में वहुत-सी ऐसी बातें हुई है, जिनसे हालत अब वदल गई है ।" हा, मै आपसे एकराय हू । हाल में अखबारो के अन्दर वहुत-से सुझाव सामने आ चुके है । मिसाल के तौर पर, अगर आप १२ फरवरी १९३८ के 'स्टेट्मैन' अखबार को देखे तो उसमें एक मज़मून है, जिसका हैडिंग है 'थ्रू मुस्लिम आईज़' (मुसलमानो की आखो से) । (आपके सुभीते के लिए मैं उस मज़मून की एक नकल इस खत के साथ भेज रहा हू) । उसके वाद १ मार्च १९३८ के 'न्यू टाइम्स' में एक मज़मून निकला है, जिसमे आपके हाल के एक वयान का जिक्र किया गया है । वह बयान, मै समझता हू, आपने हरिपुरा-काग्रेस के इजलास में दिया था । अखबारो के मुताबिक आपने वहा यह कहा था कि "मैंने इस सवाल को, जिसे फिरकेवारान सवाल कहा जाता है, खुर्दवीन लगाकर देखा, लेकिन अगर कही कुछ हो ही न तो दिखाई क्या दे सकता है ?" 'न्यू टाइम्स' के उस १ मार्च सन १९३८ के मज़मून में भी बहुत-से सुझाव पेश किये गए है । (आपके सुभीते के लिए उसकी एक नकल भेज रहा हू) । इसके अलावा आपने मिस्टर अणे की उस मुलाकात को भी देखा होगा, जिसमें उन्होने काग्रेस को चेतावनी दी है और कुछ ऐसी बातें गिनाई है, जिनकी माग मुस्लिम लीग कर सकती है ।

अब इतने से आप अच्छी तरह समझ गये होगे कि जिस तरह के सुझाव दिये जा चुके है, या दिये जा सकते है, या जिनके दिये जाने की उम्मीद की जा सकती है, उन सबको हमें गौर से समझना होगा, और अखीर में मै समझता हू कि हर सच्चे नेशनलिस्ट का यह फर्ज है, चाहे वह किसी भी जमात या किसी भी फिरके का क्यो न हो, कि वह इस सारी हालत को अच्छी तरह समझने की कोशिश करे और मुसलमानो और हिंदुओ

के बीच समझौता करावे और मुल्क में सच्चे मानी मे एक मिला-जुला मोर्चा कायम करे। इस बात की उतनी ही फिक्र आपको होनी चाहिए, जितनी मुझे। आपका भी यह उतना ही फर्ज है, जितना मेरा, चाहे हम किसी भी जमात या फिरके के क्यो न हो। लेकिन अगर आप यह चाहते हो कि मै खुद इन सब सुझावो को जमा करके एक फरियादी के तौर पर आपके सामने पेश करू, ताकि आप और आपके साथी उनपर गौर कर सके तो मुझे डर है मै ऐसा नही कर सकता और न मै उन मुख्तलिफ बातो पर आपसे ज्यादा खतो-किताबत जारी रखने के लिए भी यह सब करने को तैयार हू। लेकिन अगर आप फिर भी इस बात पर ही ज़िद करें, जैसा कि आप करते मालूम होते है, जब आप अपने खत में कहते है, "मेरा दिमाग, पेश्तर इसके कि वह ठीक-ठीक काम कर सके या मै कोई क़दम उठाने की बात सोच सकू, यह चाहता है कि सब बात साफ-साफ सामने आ जाय। गोलमोल बात और असली मुद्दो से बचते रहने से तसल्ली-बख्श नतीजे पैदा नही हो सकते। मुझे यह बडा अजीब मालूम होता है कि बावजूद मेरे बार-बार पूछने के मुझे यह नही बताया जाता कि हमें किन बातो पर बहस करनी है।" आपका यह लिखना न ठीक है और न असलियत के मुताबिक है, लेकिन अगर ऐसा हो तो मै आपसे गुज़ारिश करता हू कि आप काग्रेस से यह कहे कि वह बाज़ाप्ता तरीके से मुझसे खतो-किताबत करे और मै ऑल इडिया मुस्लिम लीग की कौंसिल के सामने उस सारे मामले को पेश कर दूगा। यह मै इसलिए कह रहा हू, क्योकि आपने खुद अपने खत में लिखा है कि "मै काग्रेस का सदर नहीं हू और न उस तरह की नुमाइन्दा हैसियत रखता हू, लेकिन अगर मै इस मामले में किसी तरह की मदद कर सकता हू तो मै काग्रेस की खिदमत के लिए तैयार हू और मै बडी खुशी से आपसे मिलकर इनसब बातों पर आपसे बतचीत करूगा।" जहातक आपसे मिलने और इन मामलों पर बातचीत करने का ताल्लुक है, मुझे यह कहने की जरूरत नही है कि मै खुशी से इसके लिए तैयार हू।

आपका,

एम ए जिन्ना

२१० महादेव देसाई की ओर से

१ वुडवर्न पार्क,
कलकत्ता
२० मार्च १९३८

प्रिय जवाहरभाई,

खाली से तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई। इससे भी अधिक प्रसन्नता वापू को तुम्हारा हार्डीकर को दिया गया उत्तर पढकर हुई। उन्हे वहुत ही आनद हुआ कि जो कसर उन्होने रख दी थी तुमने पूरी कर दी। सारी चीज़ को रखने के तुम्हारे ढग को उन्होने वडा पसन्द किया, यद्यपि यह सभव है कि कुछ भागो मे वह जुदी भाषा काम मे लाते।

खाली के वारे में वापू कहते हैं कि तुम्हारा चित्र अनिवार्य रूप में लुभावना है, परन्तु उनका यह भी कहना है कि किसी प्रलोभन की ज़रूरत नही थी। उन्होने मुद्दत से वहा जाने की आकाक्षा रखी थी, परिवर्तन की खातिर इतनी नही, जितनी उस छोटे-से स्वर्ग को देखने के लिए जिसे रनजीत पृथ्वी पर उतार लाये हैं। वह उनके प्रयोगो में गहरी दिलचस्पी रखते हैं और जव कभी उन्हे काम से छुट्टी मिल सकेगी, वहा जाने को उत्सुक रहेगे।

पिछली दफा से अव वह वहुत अच्छे हैं। ज़ोर भी उतना ही अधिक पडा है, और उसका कोई फल निकलने की सभावना नही है, परन्तु उन्होने पिछली बार की अपेक्षा उसे अधिक अच्छी तरह सहन किया है।

प्यार,

तुम्हारा,
महादेव

२११ गोविन्दवल्लभ पन्त की ओर से

लखनऊ
२३ मार्च १९३८

प्रिय जवाहरलालजी,

आपके कृपापत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मुझे खुशी है कि खाली में कुछ दिन बिताकर आप कडी मेहनत के लगातार और सख्त वोझ से

कुछ राहत पा सके। जैसाकि आप कहते है, यह स्थान रमणीक है और यह हमारी कृतज्ञता का भी पात्र है, क्योकि इसने अपने सुन्दर और स्वास्थ्यप्रद वातावरण में आपको कुछ विश्राति और शाति का आनद उठाने का मौका दिया। मै एक दूसरे व्यक्तिगत कारण से भी खाली का आभारी हू, इसलिए कि इसने आपको जो अवकाश प्रदान किया, उसके कारण मै आपका शिक्षाप्रद पत्र पा सका।

अपने बारे में आपने जो कहा है, जीवन की जो दृष्टि बताई है और विभिन्न प्रश्नो को आप जिस तरह देखते है, वह पद्धति, ये सब मेरे लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। ऐसी बात नही कि मै उनकी तरफ से बिलकुल अनजान था, परन्तु विभिन्न महत्त्वपूर्ण मामलो में आपका दिमाग किस तरह काम करता है, उसका आपके इस पत्र में स्पष्ट चित्र मुझे मिला। आपने हमारे सामाजिक जीवन के कुछ पहलुओ का भी उल्लेख किया है। सचमुच यह मानना पडेगा कि हममें से बहुतो का निजी जीवन एकदम नीरस, बजर, और मूर्खों का-सा भद्दा होता है, देखकर अत्यन्त दु ख होता है। इस पत्र में उन सब बातो की बहस में मै नहीं पडना चाहता, जिनका आपने जिक्र किया है, क्योकि अगर मै उनके बारे मे कुछ लिखने बैठूगा तो यह पत्र बहुत अधिक लम्बा हो जायगा और मै इतना लम्बा खर्रा इस समय आपके सिर नही मढना चाहता। ऐसा मै बाद में कर सकता हू।

आज तो मेरे दिमाग को यूरोप में हिटलर के राज्य-विप्लव और हमारे अपने प्रात के साप्रदायिक उपद्रव घेरे हुए है। ये घटनाए अस्थायी महत्त्व से ज्यादा अहमियत रखती है और इनकी तुलना में दूसरी सारी समस्याए गौण हो उठती है। आस्ट्रिया पर कब्जा होना प्रथम श्रेणी के अतर्राष्ट्रीय महत्त्व की घटना है। इसके परिणाम जरूर ही बहुत दूरगामी होगे। तमाम राजनैतिक व्यवस्था अनिश्चित अवस्था में है और दुनिया के सामने केवल दो विकल्प है—एक तरफ तो सशस्त्र और अधिनायकवाद और दूसरी तरफ व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतत्रता का पोषक जनतत्र। यद्यपि ये घटनाए यूरोप में हो रही है, फिर भी इनके परिणामो से हम अछूते नहीं रह सकेंगे।

इस सूबे के साम्प्रदायिक दगो में जो हिसा तथा रक्तपात हुआ, उससे मुझे अत्यन्त क्लेश और दु ख हुआ है । अब तो इलाहाबाद और बनारस में लगभग शान्ति है, परन्तु साम्प्रदायिक पागलपन किसी भी समय उभड़ सकता है । इलाहाबाद के उपद्रव के बारे मे आपका तार मिल गया था और मैंने भी एक तार आपको भेजा था, क्योंकि समाचार-पत्रो में आपने इन उपद्रवो का हाल पढा ही होगा और चूकि आप जल्दी ही यहा आनेवाले है, इसलिए मै उनके बारे मे विस्तार से नही लिखना चाहता । पिछले कुछ महीनो से राजनीति के लबादे में मुस्लिम लीग द्वारा जो प्रचार हो रहा है, वही मुख्यरूप से इस तरह की हालतो के लिए जिम्मेदार है । धार्मिक भावनाओ को उभाडना बहुत आसान है और जब कोई दल अपने राजनैतिक मतलब को पूरा करने के लिए इसका सहारा लेता है तब उसे इसके परिणामो की शिकायत नही करनी चाहिए ।

आशा, है आप स्वस्थ होगे ।

सप्रेम आपका,
गो ब पत

२१२ सरोजिनी नायडू की ओर से

दि गोल्डन थ्रेशोल्ड,
हैदराबाद (दक्षिण)
२९ मार्च १९३८

प्रिय जवाहर,

मुझे आशा है कि पुराने जमाने के सत की भाति ही पर्वतो की ओर निगाह उठाकर तुमने भी उनसे शाति, शक्ति और प्रेरणा प्राप्त की होगी और तुम उसीकी जवानी के दिनो की तरह झरने के पास से पाच ककड उठाकर उनसे प्रत्येक गोलिआथ को मार सके होगे । तुम्हारे तो इतने सारे खास-खास गोलिआथ है, जिन्हे तुम मारना चाहोगे । [1]

---

[1] इसका आशय बाइबिल में वर्णित गोलिआथ नामक दैत्य से है, जिसने इजराइल की सेना को चुनौती दी थी और जिसे डेविड नामक गड़रिये ने गोफन से पत्थर फेंक-फेंककर मार डाला था । —सम्पा०

मुझे बहुत दु ख है, और ऐसा लग रहा है मानो किसीने मुझे ठग लिया, और कि मै कलकत्ता न जा सकूगी। कम-से-कम एक बार तो मै डाक्टरो के हुक्म को मान ही रही हू, यद्यपि इसका कारण शायद मेरी भलमनसाहत इतना नही, जितना इस समय अन्य किसी काम के लिए शारीरिक असमर्थता है। इसलिए मैं ज्यादातर सोफे पर पडी-पडी अपने बगीचे में चिडियो की चहचहाहट सुनती रहती हू। बुलबुलो ने सतरे के पेड में घोसला बनाया है, और एक रामचिडिया दोपहर को फव्वारे में नहाने आती है, और हनीबर्ड्स क्लिमैटिस और बिग्नोनिया की बेलो में व्यस्त है। क्या तुमने कभी एक फारसी कविता 'पत्तियो की ससद' का अनुवाद पढा है ?

जबतक वह 'छोटा-सा इन्सान' दूसरी चीजो पर अपना 'गाधी-जादू' चला रहा है, तबतक यह तो बताओ कि साम्प्रदायिक समझौते के सवाल पर 'नेहरू के मिजाज' का क्या हाल है ? मै उस कठिन समस्या का सही हल पाने के लिए बहुत चिंतित हू। बेबे को एकदम बेबे-जैसी सर्दी होगई है, जिसकी तुलना बस उसकी बेबे-जैसी जिद से ही की जा सकती है। पर अब वह पहले से अच्छी है और अपने हाथ ऐसे रगो में डुबोती रहती है, जिसके आगे जोसेफ का रगबिरगा कोट भी कुछ नही और अपनी अलमारी में भरे हुए कपडो को फिर से नया करती और तरह-तरह के रगो में छिपाती रहती है।

मेरे पति १४ तारीख को 'कोंते रोस्सो' द्वारा वियना जा रहे है। बेबे शायद उन्हे विदा करने बम्बई जाय और शायद बेटी के यहा ठहरे। हा, बेटी मुझसे बेहद नाराज है, क्योकि उसके विचार से मै राजा के राजनैतिक विचारो को गभीर नही समझती। कैसी बच्ची है वह—और राजा भी!—प्यारे बच्चे! दोनो में से एक में भी जरा खुशमिजाजी होती तो उनके लिए—और मेरे लिए भी—कितना अच्छा होता।

इस पत्र का उद्देश्य तुम्हारे हालचाल का पता लगाने के लिए पूछ-ताछ करना था। पर यह एकदम अपठनीय और बेसिर-पैर का दस्तावेज हो गया है! यह सौ फीसदी स्वदेशी कागज, देशभक्ति को साबित

करने के लिए तो बेहद अच्छा है, पर ओफ, इसपर लिखने में कैसी तकलीफ होती है।

सप्रेम तुम्हारी,
सरोजिनी

मैंने सी एल. यू के वास्ते पैसे के लिए बहुत-से लोगो को लिखा है, पर अभी कोई उत्तर नही।

२१३. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव
२५ अप्रैल १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

महादेव के सीमाप्रान्त के दौरे के विवरण की प्रतिलिपि साथ मे है। चूकि मै नही जा सकता था और हमे अशातिप्रद समाचार मिल रहे थे, इसलिए मुझे लगा कि उन्हे भेज दिया जाय। मै यह विवरण सब सदस्यो मे नही घुमा रहा हू। मै मौलाना और सुभाष को नकलें भेज रहा हू। विवरण से मै बेचैन होगया हू। महादेव को अधिक कहना है। अवश्य ही एक प्रति भाइयो[1] को भेज रहा हू। आशा है, तुमको भाइयो पर अपना बडा असर इस्तेमाल करने की प्रेरणा होगी। मै तो तार द्वारा उनके सम्पर्क मे हू ही। मुझे जो आघात लगा है, उसके बावजूद अगर खान-साहब चाहेगे तो मै कुछ दिन के लिए उस प्रान्त मे जा भी सकता हू। मालूम होता है, हम भीतर से कमजोर होते जा रहे है। इससे मुझे चोट लगती है कि हमारे इतिहास के इस बहुत नाजुक अवसर पर हम महत्व-पूर्ण मामलो में सहमत दिखाई नही देते। मै तुम्हे बता नही सकता कि यह जानकर मुझे कितना घोर अकेलापन महसूस होता है कि आजकल मै तुम्हे अपने विचार का नही बना सकता। मै जानता हू, तुम प्रेमवश बहुत-कुछ करोगे। परन्तु राजनैतिक मामलो मे स्नेह के आगे आत्मसम-र्पण नही हो सकता, जब बुद्धि विद्रोह करती हो। तुम्हारी बगावत के कारण तुम्हारे प्रति मेरा आदर और भी गहरा है। परन्तु इससे अकेले-

---

1. खान अब्दुल गफ्फार खां और डा खानसाहब

पन का दु ख और भी तीव्र हो जाता है । लेकिन अब मुझे अपनी कलम रोकनी चाहिए ।

प्यार,

बापू

२१४ महात्मा गाधी के नाम

इलाहाबाद
२८ अप्रैल १९३८

प्रिय बापू,

मै आज सुबह लखनऊ से इलाहाबाद लौटा । आपका पत्र और साथ में महादेव की सरहदी यात्रा पर उनके नोट की नकल मिली । मैंने इस नोट को पढ लिया है और मै खानसाहब और अब्दुलगफ्फार खा को लिखूगा । महादेव ने जो कुछ लिखा है, उसपर मुझे अचरज नही है । मैंने स्वय जो कुछ देखा यह उसका स्वाभाविक विकास है, किन्तु मैंने यह आशा रखी थी कि वहा उस समय जो वृत्तिया देखने में आई, उनपर कुछ रोक लगाई जायगी । आपके सिवा यह काम कारगर तरीके पर कोई आदमी कर सकता है तो वह मौलाना अबुल कलाम ही है । मेरे खयाल से यह बहुत आवश्यक है कि वह सरहद में जाय । इस बीच मुझे यह आशा जरूर है कि दोनो खानबन्धु मत्रियो की सभा और कार्य-समिति के लिए आयगे ।

जैसा आपको मालूम है, पिछले छ महीनो मे काग्रेस की राजनीति में घटनाओ ने जो रुख अख्तियार किया है, उससे मुझे बडा दु ख हुआ है । जिन मामलो ने मुझे अशान्त किया है, उनमें से गाधी सेवा सघ का नया रूप भी है । हम बहुत तेजी से टैमनी हॉल[1] का ढग अपना रहे है और

---

[1] अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समाजोपयोगी कार्यों के लिए न्यूयार्क में स्थापित सस्था, जो आगे चलकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सभी तरीके अपनाने के कारण भ्रष्टाचार का प्रतीक बन गई । —सम्पा०

यह देखकर तकलीफ होती है कि गाधी सेवा सघ भी मामूली सतह पर उतर आया है। वह तो दूसरो के लिए नमूना कायम कर सकता था और किसी-न-किसी तरह चुनाव जीतने पर उतारू एक दलगत सगठन बन जाने से इन्कार कर सकता था। मुझे बहुत दुख होता है कि काग्रेस-मन्त्रि-मडल क्षमता के साथ काम नही कर रहे हैं और जो वे कर सकते थे वह भी बहुत नही कर रहे हैं। वे पुरानी व्यवस्था के बहुत ज्यादा अनुकूल बन रहे हैं और उसे उचित साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। परन्तु बुरी होते हुए भी ये सब बाते बर्दाश्त की जा सकती थी। इससे कही बुरी बात यह है कि हमने जो ऊची प्रतिष्ठा इतनी मेहनत करके लोगो के दिलो में बना ली है, उसे खो रहे हैं। हम मामूली राजनीतिज्ञो की सतह पर उतरते जा रहे हैं, जिनके कोई उसूल नही होते और जिनका काम रोजमर्रा के अवसरवाद के असर से होता है।

इसका कुछ कारण तो अलबत्ता दुनिया-भर की आम खराबी है और कुछ जिस सक्रमण-काल से हम गुजर रहे हैं वह है। फिर भी इससे हमारी खामिया सामने आती हैं और यह देखकर दुख होता है। मेरे खयाल से काग्रेस में काफी सद्भावनावाले लोग हैं, जो ठीक ढग से काम में जुट जाय तो स्थिति का सामना कर सकते हैं। परन्तु उनके दिमाग दलगत सघर्षों से और इस व्यक्ति या उस गुट को कुचलने की इच्छा से भरे हैं। जाहिर है कि भले आदमियो की अपेक्षा बुरे ज्यादा पसन्द किये जाते हैं, क्योकि बुरे दलबदी में साथ देने का वचन देते हैं। जब ऐसा होता है तब बिगाड तो होगा ही।

महीनो से मैं महसूस करता हू कि जिस तरह से चीजें चल रही थी उनमें मैं हिंदुस्तान में कारगर तौर से काम नही कर सकता था। जैसे हमेशा काम चलाया जा सकता है, वैसे अलबत्ता मैंने भी चलाया, परन्तु मुझे यह महसूस हुआ है कि मैं ठीक जगह पर नही हू और अयोग्य हू। (कारण तो और भी थे) परन्तु यह एक कारण था जिससे मैंने यूरोप जाने का निश्चय किया। मैंने महसूस किया कि मै वहा अधिक उपयोगी हो सकता हू और हर हालत में मैं अपने थके हुए और चक्कर में पडे हुए दिमाग को तो ताजा कर ही लूगा। मुझे आपके साथ विस्तार से किसी

मामले की चर्चा करने में कठिनाई मालूम हुई, क्योकि आपके स्वास्थ्य की मौजूदा हालत मे मैं आपको थकान और चिन्ता में डालना नही चाहता, और फिर मुझे यह भी अनुभव हुआ कि ऐसी चर्चाओ से कोई ठोस नतीजे नही निकलते ।

मैंने २ जून को बम्बई से जहाज पर रवाना होने का फैसला किया है । पता नही, मैं कितने अर्से दूर रहूगा । परन्तु सभव है, मैं सितम्बर के अन्ततक लौट आऊ ।

पहली मई को मैं एक सप्ताह के लिए गढवाल जा रहा हू । स्वरूप मेरे साथ जायगी और हम बदरीनाथ और बर्फ पर थोडी-सी हवाई उडान करेंगे । गढवाल से लौटकर मैं मत्रियो की सभा और कार्यसमिति के लिए बम्बई जाऊगा ।

महात्मा गाधी,
जुहू (बम्बई)

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

२१५ महात्मा गाधी की ओर से

पेशावर जाते हुए, रेल में
३० अप्रैल १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

जिन्ना के साथ ३॥ घटे की बातचीत का जो सक्षिप्त विवरण लिख डाला है, उसकी नकल साथ में है । सभव है, तुम्हे और दूसरे सदस्यो को बातचीत का आधार पसन्द न आये । स्वय मुझे तो और कोई चारा नही दीखता । आज मेरी कठिनाई यह है कि मैं तुम्हारी तरह देश में इधर-उधर घूमता नही और इससे भी गभीर बाधा वह भीतरी निराशा है, जो मुझपर छा गई है । मैं काम चला रहा हू, परन्तु यह सोचकर आत्म-ग्लानि होती है कि मेरा वह आत्म-विश्वास जाता रहा, जो मुझमे एक महीने पहले था । मुझे आशा है कि मेरे जीवन में यह सिर्फ एक अस्थायी घटना है । मैने यह जिक्र इसलिए कर दिया है कि तुम्हे प्रस्तावो पर उनके गुणो के आधार पर जाचने में मदद मिले । मै नही समझता कि पहले प्रस्ताव के बारे में कठिनाई पेश आयेगी । दूसरा प्रस्ताव अपने सारे गूढार्थो सहित

अनोखा है। अगर वह तुम्हे न जचे तो उसे योही अस्वीकार कर देने में सकोच न करना। इस मामले में तुम्हे आगे होना पडेगा।

मै ११ तारीख को लौट आने की आशा रखता हू। मेरे इस तार के उत्तर मे कि सुभाष को जिन्ना के साथ जाव्ते से समझौते की बातचीत शुरू करनी चाहिए, उनका तार है कि वह १० तारीख को बम्बई में होगे। मै चाहता हू कि तुम भी वहा जल्दी जा सको। मै मौलानासाहब को इसी ढग से लिख रहा हू और इस पत्र की नकल उन्हे भेज रहा हू।

प्यार, बापू

२१६ महात्मा गाधी की ओर से

७ मई १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

गाधी सेवा सघ के नये स्वरूप में ऐसी कौन-सी बात है, जिसने तुम्हे अशात बना दिया ? मै स्वीकार करता हू कि उसकी जिम्मेदारी मेरी है। मै चाहता हू कि तुम मुझे नि सकोच बताओ कि तुम्हे किस चीज से अशाति हुई है ? अगर मेरी भूल हुई है तो तुम जानते हो कि भूल मालूम होते ही मै अपने कदम पीछे हटा लूगा।

आम हालात खराब होने के बारे में मै तुमसे सहमत हू, भले ही दुर्बल स्थानो के सबध में हमारा मतभेद हो।

शेष मिलने पर।

प्यार, बापू

२१७ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
२६ मई १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

तुम कितने काम से काम रखनेवाले और मुस्तैद हो। मुझे खुशी है कि तुमने गुडगाव जिला काग्रेस कमेटी के मामले की जाच कर ली। आशा है, दोनो फरीक तुम्हारी सलाह को मान लेंगे। ऐसा ही होना चाहिए।

आज तुम्हारा पत्र मेरी और जिन्ना की बातचीत के मेरे विवरण के

बारे में मिला और मेरा खयाल है कि उनसे मेरी दूसरी बातचीत अनिवार्य थी। मुझे आशा है कि इससे कोई हानि नही होगी। तुम्हे समय मिल जाय तो जाल से मिलने के बाद मैं चाहूगा कि तुम मुझे दो शब्द लिख भेजो। क्या अच्छा हो, यदि तुम अपने यूरोप के दौरे के दिनो थोडा-सा आराम ले लो और यहा की तरह सारा समय भाग-दौड मे ही न बिता दो।

प्यार,

बापू

२१८ गोविन्दवल्लभ पन्त की ओर से

ब्रुक हिल हाउस
नैनीताल
३० मई १९३८

प्रिय जवाहरलालजी,

खेद है कि आपके रवाना होने से पहले अपनी शुभकामनाए प्रकट करने तथा आपसे विशेष मामलो पर बातचीत करने मैं स्वय नही आ सका। जब २१ या २२ तारीख को मै आपके साथ था, तब उपाध्याय से हो रही आपकी बातचीत से मै समझ गया था कि आप उसी रात को १०-३० बजे आजमगढ के लिए रवाना होगे। मै आपके यहा लगभग ८ बजे पहुचा और तेजी से रेलवे स्टेशन गया, परन्तु दुर्भाग्य से आपसे मुलाकात नही हो सकी। आपको विदा करने मैंने इलाहाबाद जाना चाहा, परन्तु ऐसा करने में मै असमर्थ था, क्योकि अपनी लडकी की बीमारी के कारण, जो कि तेज मियादी बुखार से पीडित है, मुझे अचानक नैनीताल जाना पडा। जब आप हिन्दुस्तान से बाहर जा रहे है, मै अपनी समस्याओ और कठिनाइयो का रोना सुनाकर आपको परेशानी मे डालना नही चाहता। मै आपकी निर्विघ्न और सुखकर यात्रा, यूरोप में आपके प्रसन्नतापूर्ण समय तथा जल्दी ही हिन्दुस्तान वापसी के लिए शुभ-कामना भेजता हू। देश से आपकी गैरहाजिरी से निस्सदेह हमारी कठिनाइया बढ जायगी। प्रान्त में दूसरा कोई ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्व नही है, जिसके पास मुसीबत के समय विश्वास के साथ सही सलाह और मार्ग-दर्शन के लिए हम जा सकें, और जो, अगर ऐसी जरूरत आ पडे तो प्रभावशाली ढग से मामलो में हस्तक्षेप कर सके। तो भी मै महसूस करता हू कि ससार की

वर्तमान स्थिति पर विचार करते हुए, देश के व्यापक हितो के लिए, यह अनिवार्य है कि आप यूरोप जाय। वर्तमान मगठन वडी अनिश्चित अवस्था मे है और नई व्यवस्था का उदय होना ही है, जिसका दूसरे देशो की तरह भारत पर भी एक-सा प्रभाव पडेगा। ऐसे समय मे यह महत्वपूर्ण है कि हम बाहरी दुनिया से अपना सबध बनाये और इस काम के लिए सारे हिदुस्तानियो मे आप सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति है। हमपर तो शायद अपनी स्थानीय समस्याओ का ही बहुत ज्यादा भूत सवार है और हम मामलो को उस व्यापक दृष्टि से नही देख रहे है, जिस दृष्टि से देखना चाहिए। देश में फैली नीरस गभीर उदासीनता धीरे-धीरे विचार और जीवन के नये स्पन्दनो को स्थान दे रही प्रतीत होती है और शहरी और ग्रामीण दोनो क्षेत्रो मे काफी बडे पैमाने पर वाछनीय और स्वस्थ क्रियाशीलता विद्यमान है। सर्वत्र लोगो की आखे खुल रही है और समस्याए स्पष्ट की जा रही है। तो भी मुझे इस मामले को विस्तार देने की जरूरत नही, क्योकि यह पत्र पहले ही बहुत लबा हो गया है।

आशा है, आप एक ऐसे निष्णात व्यक्ति के लिए मेरी प्रार्थना को ध्यान में रखेंगे, जो पुर्ननिर्माण के काम मे हमारा सहायक हो सके। यदि कोई आदमी मिल जाय तो मुझे अवश्य सूचित करेगे।

चि इन्दू से मिले तो उसे मेरा प्यार कहे।

सद्भावनाओ-सहित,

सस्नेह आपका,
गो. व. पन्त

[सन् १९३८ के जून के शुरू में मै यूरोप गया। बम्बई से जिनेवा तक समुद्र से गया। वहा से मै मार्सेलीज गया और मार्सेलीज से खुश्की की राह सें बार्सेलोना गया, जहा मैंने कुछ दिन बिताये। उन दिनो स्पेन म गृहयुद्ध चल रहा था। इसके बाद मै लन्दन चला गया।]

२१९. लार्ड लोथियन की ओर से

ब्लिकलिंग हॉल,
एल्स्हम
२४ जून १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप इग्लैंड सकुशल पहुच गये और बार्सेलोना पर फ्रैंको के बमो से बच आये। मै यहा ९ जुलाई के सप्ताहात में आपका स्वागत करने की प्रतीक्षा में हू। उस पार्टी में बहुत थोडे लोग होगे। आशा है, लेडी येस्टर होगी। वह बडी विनोदप्रिय है और उनसे मिलकर आप प्रसन्न होगे। जनरल आयरन साइड आयेंगे, जो कि इग्लैण्ड के सर्वोत्तम योद्धाओ में से एक हैं, और जो आपको दुनिया के सैनिक और आम हालात से अवगत करा सकेंगे। शायद किसी दूसरे से यह जानकारी आपको हासिल नही हो सकेगी। श्री टामस जोन्स भी होगे, जो बाल्डविन के प्रधान मत्रित्व के काल में उनके सबसे नजदीकी सलाहकार थे और जो एक खास व्यक्ति है। मैंने सर फिंडलेटर स्टुअर्ट को भी बुलाने का कुछ विचार किया है। वह इडिया आफिस के प्रधान है। बडे अच्छे आदमी है, लेकिन मै सोचता हू कि वह कुछ ज्यादा सरकारी हो सकते है। इनके अलावा और कोई नही होगा। मुझे उम्मीद है कि पार्टी से पहले मै आपसे मिलूगा और तब अतिम व्यवस्था पर विचार हो जायगा। मेरा मुख्य उद्देश्य सुन्दर वातावरण में आपको एक शात सप्ताह जुटाना है, जहा हम कुछ बातचीत भी कर सकेंगे।

लोथियन

ऊपर से—

मुझे खेद है कि आपकी लडकी यही और व्यस्त है।

२२० सर जार्ज शुस्टर की ओर से

[सर जार्ज शुस्टर तीसरी दशाब्दि के मध्य में भारत सरकार की कार्यकारिणी परिषद् में वित्त-मन्त्री थे ।]

३० सेंट जेम्स प्लेस,
लन्दन, एस डब्ल्यू. १
७ जुलाई १९३८

प्रिय पडित जवाहरलाल नेहरू,

मैं आपके उस भाषण के बारे में बहुत सोचता रहा हू जो आपने मगल की शाम को दिया था—खास तौर से आर्थिक समस्याओ के बारे में। मुझे अफसोस है कि मैं अपने विचार कुछ इस ढग से रख रहा हू कि उससे आपका मौखिक क्रोध (मैं समझता हू कि वह मौखिक से अधिक और कुछ नही था) न्याय-सगत सिद्ध होगा। मैं इस बात को सचमुच बहुत ज्यादा महसूस करता हू कि आपको हिंदुस्तान में जिन आर्थिक समस्याओ का सामना करना पड रहा है, वे मूलभूत कठिनाइयो से परिपूर्ण बडी महत्वपूर्ण समस्याए है और ब्रिटिश प्रभाव को केवल हटा देने से वे हल नही हो सकेगी।

आपने मुझे जो उत्तर भेजा है, उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि असल में आप अग्रेजो के सबध को नही, बल्कि पूजीवादी प्रणाली को रोग का मुख्य कारण मानते है और अग्रेजो के सबध पर आप जो आक्रमण करते है उसका आधार यह है कि आप पूजीवादी प्रणाली को उसके साथ अनिवार्य रूप से जुडा हुआ मानते है। इससे कई मुश्किल सवाल उठ खडे होते है, जिनके बारे में मैं आपसे विचार-विनिमय करना पसन्द करूगा। लेकिन इस पत्र में मैं उनपर कुछ लिखने की चेष्टा नही करूगा। इसमें तो मैं केवल दो-चार सक्षिप्त विचार प्रकट करूगा।

मैं आपसे इस बारे में सहमत हू कि हिंदुस्तान की भौतिक स्थिति को सम्हालने के लिए जिस वस्तु की आवश्यकता है वह है राष्ट्रीय प्रयत्न—इस राष्ट्रीय प्रयत्न के कार्यक्षेत्र में इतनी व्यापकता होनी चाहिए और उसे प्रेरणा देनेवाली भावना में इतनी प्रबलता होनी चाहिए, जितनी कि पूजीवादी प्रणाली को सचालित करनेवाले उद्देश्यो तथा लाभ की आकाक्षा

से प्राप्त नही हो सकती । मेरा विश्वास है कि यह प्रयत्न एक महान सहकारिता की भावना पर आधारित होना चाहिए और वह हिंदुस्तान के तमाम गावो में राष्ट्रीय नेताओ द्वारा फैलाया जाना चाहिए । दूसरी ओर, मैं यह भी विश्वास करता हू कि आप जैसे राष्ट्रीय नेता उद्योग पर घातक आघात किये बिना ही अधिकाश सफलता प्राप्त कर सकते है, क्योकि वह उद्योग आजकल मुख्यत शहरो मे केन्द्रित है ।

इन विषयो के प्रति अपनी विचारधारा का स्पष्टीकरण करने के लिए मै एक पेम्फ्लेट भेज रहा हू । इसमे मेरा वह भाषण है जिसे मैंने आज से साढे तीन साल पहले (हिंदुस्तान से लौटने के तत्काल बाद ही) लदन की रॉयल सोसाइटी ऑव आर्ट्स मे दिया था । निश्चय ही यह बहुत ही प्रारम्भिक ढग का है और मुझे आशा नही है कि यह आपके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकेगा । फिर भी मुझे विश्वास है कि मैंने जो कुछ भी कहा है उसमें आप सत्य का अश पायेगे और समस्या तक पहुचने के मेरे तरीके और ढग को पूर्ण रूप से सहानुभूतिरहित नही पायेंगे । आप देखेंगे कि इस भाषण में मैंने कहा था कि इस विषय पर मै गाधीजी के बहुत-से विचारो से सहमत हू । यदि आप इसको पढने का समय निकाल सकें और इस सबध में मुझसे आगे बातचीत करें तो मै अपनेको बडा सम्मानित मानूगा ।

एक और चीज है, जिसके बारे में मै आपसे फिर से बात करने का अवसर प्राप्त करना चाहूगा । मगल की शाम को मैंने आपको यह योजना बताई थी कि मिस्टर बिन्ट नाम के जिस नवयुवक से मैंने आपका परिचय कराया था उन्हें कुछ विशेष विषयो का अध्ययन करने के लिए हिन्दुस्तान भेजा जाय । यदि आप इस समय मुझसे मिलने का अवकाश न निकाल सके तब भी मुझे आशा है कि आप मिस्टर बिन्ट को हिंदुस्तान में आपसे मिलने के लिए अवसर देंगे । जब वह आपके पास मेरी यह प्रार्थना लेकर जायगे तब मै आपको और भी अधिक विस्तार से बताऊगा कि हम क्या करना चाहते है ।

यदि आप समय निकाल सकें तो आर्थिक और राजनैतिक प्रश्नो पर मतभेद होते हुए भी, मुझे और मेरी पत्नी को आपसे यहा लन्दन मे

अपने घर पर मिलने का अवसर पाकर हार्दिक प्रसन्नता होगी। क्या आप सोमवार को हमारे यहा—जहा परिवारवालो के अतिरिक्त और कोई नही होगा—रात का भोजन करने आ सकेंगे ?

आपका,
जार्ज शुस्टर

पडित जवाहरलाल नेहरू,
ऑरमैन्डे हाउस।

२२१. मैडम सनयात सेन की ओर से

चाइना डिफेंस लीग
सेन्ट्रल कमेटी,
हागकाग
७ जुलाई १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

मैं आपसे जॉन लीनिंग का परिचय कराना चाहती हू, जो यहा से हिंदुस्तान के लिए रवाना हो रहे है। मिस्टर लीनिंग हमारे चाइना डिफेंस लीग की कार्यकारिणी के सदस्य है और चीन मे जब जापानी आक्रमण की लहर आई थी तब की और उसके बाद की स्थिति की वह प्रत्यक्ष जानकारी रखते है। चीन के प्रति उनकी मित्रता बहुत गहरी और सच्ची है। वह सब प्रकार की विघ्न-बाधाओ का सामना करते हुए भी प्रजातंत्र के हित का समर्थन करेंगे।

चूकि आप चीन के एक बहुत बडे मित्र है, मुझे विश्वास है कि आप हमारे प्रतिरोध-आन्दोलन के सबध में सारी बातें एक ऐसे आदमी से जानना पसन्द करेंगे जो कि युवक-वर्ग के निकट सम्पर्क में है।

आपने हमारे प्रति जो सहानुभूति और मैत्री व्यक्त की है उसे जान कर हम आपके कृतज्ञ है। उससे हमें प्रोत्साहन मिला है और इस अवसर पर हम आपके प्रति अपनी कृतज्ञता और मित्रता के भाव व्यक्त करना चाहते है।

हार्दिक अभिवादन-सहित,

आपकी,
सुग चिग लिग

२२२ हैवलेट जॉनसन की ओर से

डीनरी
कैन्टरबरी
१६ जुलाई १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

कैसी आनन्ददायक पुस्तकें भेजी है आपने! मै इनके लिए बडा कृतज्ञ हू और फुर्सत मिलते ही मै इन्हें पढने में बडी लगन के साथ जुट जाऊगा।

आपका यहा आना हम लोगो के लिए सदा एक सुखद स्मृति बना रहेगा। उसे हम उतना ही महत्व देते है, जितना मिस्टर गाधी की यात्रा को। मै तो यह भी कहने का साहस करता हू कि आपकी यह यात्रा उनकी यात्रा की उसी प्रकार पूरक है, जिस प्रकार आपकी नीति उनकी नीति की। आपकी अगली यात्रा की मै बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा करूगा। आशा है, वह इस बार अधिक लबी होगी।

आदरसहित,

आपका,
हैवलेट जॉनसन

२२३ एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड
२० जुलाई १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

कुछ मनोदशाओ में मै एक अभिमानी व्यक्ति हू, (मुझे आशा है कि मै घमडी नही हू, वह तो बिल्कुल दूसरी चीज है) और उस अभिमान के कारण भी है। लेकिन आजतक मुझे किसी भी चीज से इतना अभिमान नही हुआ, जितना कि इस किताब से, जिसपर आपने लिखा है—"मेरे मित्र एडवर्ड टामसन को।"

मै जानता हू, आप ऐसे व्यक्ति है, जो अपनी अल्पभाषिता को अमानवीय दर्जे तक ले जाते है। मै यह भी जानता हू कि आप जो कहते है, उससे उन सारी चीजो का बोध होता है, जो उन शब्दो मे कही जा सकती है।

मुझे आपसे और आपकी प्यारी बेटी तथा श्रीमती रॉवसन से मिलकर बडी खुशी हुई।

आपका,
एडवर्ड टॉमसन

२२४ श्रीमती पॉल रॉवसन की ओर से

लन्दन
शुक्रवार की शाम
जुलाई १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

आज के आनन्ददायक भोजन के लिए अनेक-अनेक धन्यवाद। पॉल और मै आपके बहुत बडे प्रशसक है और हमारे साथ आपने अनुग्रहपूर्वक जो दो घटे विताये, उनसे हम रोमाचित हो उठे। किसी ऐसे आदमी के साथ, जिसकी रुचिया अपनी जैसी हो और जो हमारी विशेष समस्याओ और पृष्ठभूमि को समझता हो, आजादी के साथ बातचीत कर सकना एक बहुत बडा सौभाग्य है।

जैसाकि मैने वचन दिया था मै आपको राष्ट्रीय नीग्रो काग्रेस की कार्रवाइयो का सक्षिप्त विवरण भेज रही हू। साथ मे मै अपनी भी एक विनम्र कृति भेज रही हू, जिसे लिखे आठ साल से भी अधिक हो गये है। अब जब मै बडी हो गई हू, मुझे वह बचकानी-सी मालूम होती है, लेकिन उससे कुछ सीमा तक उस उद्देश्य की पूर्ति तो होती ही है, जिसकी पूर्ति मैने उससे करनी चाही थी, अर्थात् उससे अमरीका मे हब्शियो की पृष्ठभूमि की एक झलक मिल जाती है। मैने जान-बूझकर उसे व्यक्तिगत कथा का रूप दिया है, क्योकि मुझे लगा कि किसी दूसरे रूप में लोग हब्शियो की पृष्ठ-भूमि मे रुचि नही लेंगे। मुझे इसका बडा ही आश्चर्यजनक पुरस्कार मिला, क्योकि लोगो ने उसे खूब खरीदा और पढा और अब भी खरीदने तथा पढते है और अनजाने ही कुछ तथ्यो का परिचय प्राप्त कर लेते है।

जैसाकि निश्चय हुआ था, हम आपके साथ अगले सोमवार को गोले-

गल्लेन्ट्स में खाना खायेंगे। आपसे फिर मिलने की प्रतीक्षा में,

आपकी,

स्लेंडा गुड रॉबसन

२२५ मुस्तफा-अल-नहास की ओर से

[जून १९३८ के शुरू में जब मै समुद्र के रास्ते से यूरोप लौट रहा था तो मेरा जहाज स्वेज में रुका। वहां आने से कुछ ही पहले मुझे मिस्र की वफ्द पार्टी के नेता नहास पाशा का सदेश मिला, जिसमें मुझे निमत्रण दिया गया था कि मै सिकदरिया में उनसे मिलूं। मैंने फौरन स्वेज से सडक द्वारा काहिरा, और फिर हवाई जहाज से सिकदरिया, जहां नहास पाशा और उनके साथियो से मै मिला, जाने का निश्चय किया। उसके बाद मै पोर्ट सईद गया और वहा किसी तरह से जहाज पकड लिया, जो कि इस बीच स्वेज नहर से चला गया था।

दिसबर १९२८ में यूरोप से हिंदुस्तान आते समय में कुछ दिनों के बाद मिस्र में रुका। मेरी बेटी इदिरा मेरे साथ थी।]

सा स्तिफनो

२ अगस्त १९३८

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

मुझे जहाज और लदन से भेजे आपके दोनो दोस्तीभरे खत मिले, जिनमें आपने मेरे साथियो और मेरे लिए वडे नेक जज़्बात जाहिर किये है।

कहने की जरूरत नही कि आपके आने से हम लोगो को, और खासकर मुझे, कितनी खुशी हुई और उसकी याद कभी मिट नही सकती।

हालाकि आप कुछ घटे ही हमारे साथ रहे, पर वाकई यह एक खुशगवार मौका था और उससे हमें उस पाक मकसद के बारे में अपने खयालात और जज़्बात एक-दूसरे के सामने जाहिर करने का मौका मिला, जिसके लिए हम अपने दोनो मुल्को में लड रहे हैं। अगर सिर्फ हमारे दोनो मुल्को की एक-सी आजादी की जद्दोजहद को मिलाया जा सके तो हमारे मिलने से जरूरी तौर पर एक बहुत वडा फायदा होगा।

अगर मुझे आपको लिखने में देर हुई है तो इसलिए क्योंकि सबसे

पहले मैं हमारी नेशनल वफिदस्ट काग्रेस की मीटिंग की तारीख तय करना चाहता था, जिससे मैं आपको निजी हैसियत से और आपकी पार्टी के डेलीगेशन को मीटिंग के दौरान मिस्र घूमने के लिए दावत दे सकू। अभी तक मैंने यूरोप के सफर का अपना पक्का प्रोग्राम भी तय नही किया है।

वफ्द (वफिदस्ट पार्टी) ने अभी फैसला किया है कि इस साल हमारी काग्रेस की मीटिंग २४ और २५ नवबर को होगी। इसने यह भी फैसला किया है कि इस साल हिंदुस्तानी काग्रेस, नजदीक-पूरब के दबाये हुए लोगो की काग्रेस, फिलस्तीन की काग्रेस और दीगर अरब अवाम को भी बुलाकर, अपनी काग्रेस को मुल्की शक्ल देने के अलावा एक नई शक्ल दी जाय। अपने साथियो और अपनी तरफ से यह बुलावा आपको और काग्रेस के डेलीगेशन को देते हुए मुझे बडी खुशी महसूस होती है।

कहने की जरूरत नही कि आपकी तरफ से बुलावा आने पर हम भी खुशी से वफिदस्ट पार्टी का डेलीगेशन हिंदुस्तान भेजेंगे।

जहातक यूरोप मे मेरे सफर के प्रोग्राम का ताल्लुक है, मैंने अपनी बीवी के साथ इस तरह तय किया है ११ अगस्त को हम लोग 'कवसार' जहाज में जिनेवा के लिए सवार होगे और मातेकातिनी (इटली) को इलाज के लिए जायगे। यह इलाज करीब-करीब पद्रह से बीस दिन तक (पॉस होटल में) चलेगा। इलाज के बाद हम लोग दस रोज तक कोरतीना दम्पेज्जो (इटली मिरामोती होटल) में आराम करेंगे। उसके बाद स्विट्जरलैंड होते हुए पेरिस जायगे। अगर हमारे लिए ठीक रहा तो हम लोग वहा रुक सकते है। ११ अक्तूबर तक हम पेरिस में रहेंगे और १२ अक्तूबर को नील में मार्सेल्स पर जहाज में बैठकर वापस लौटेंगे।

अगर इस सफर में यूरोप मे हम लोग कही भी मिल सकें तो वाकई बडी खुशी की बात होगी और पिछली १० जून को सा स्तिफानो मे हमने जो दिलचस्प बातचीत शुरू की थी, उसे जारी रखने का हम दोनो को मौका मिलेगा।

मै अलग लिफाफे मे आपके यहा आने के वक्त की तीन तस्वीरें भेज रहा हू।

आपका,

एम. नहास

२२६ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
३१ अगस्त १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

अपनी सीमित शक्ति के कारण मुझे मजबूर होकर तुम्हे लिखने की इच्छा को दबा देना पडा था।

इन्दू के बारे में मेरे तार के तुम्हारे जवाब की प्रतीक्षा है।

सघ के सबध में तुम्हारी चेतावनी मैंने समझ ली है। मैं इस खबर पर विश्वास नही करता यानी अगर वह अफवाह से कुछ अधिक है तो। पहले काग्रेस की अनुमति लिये बिना वे उसे आमत्रित नही करेंगे। अनुमति उन्हें मिल नही सकती।

फिर रही बात यहूदियो की, सो मेरा बिल्कुल तुम्हारे जैसा ही खयाल है। मै विदेशी माल का बहिष्कार करता हू, विदेशी योग्यता का नही। और पीडित यहूदियो के लिए तो मेरी भावना तीव्र है। एक ठोस प्रस्ताव के रूप में मेरा सुझाव है कि तुम सबसे योग्य व्यक्तियो के नाम इकट्ठे करलो और उन्हे साफ बता दो कि उन्हें हमारे भाग्य के साथ अपना भाग्य मिला देने और हमारा जीवन-स्तर स्वीकार करने को तैयार होना पडेगा। बाकी महादेव लिखेंगे।

प्यार,

बापू

२२७. महात्मा गाधी की ओर से

(१९३८-३९)

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं जानता हू, गलतफहमिया हो सकती हैं। इनका और अज्ञान या स्वार्थपूर्ण आलोचना का मुझपर कभी असर नही हुआ। मैं जानता हू कि अगर हम भीतर से मजबूत हैं तो सब ठीक हो जायगा। विदेशी मामलो में तुम मेरे पथप्रदर्शक हो। इसलिए तुम्हारे पत्र से मुझे सहायता मिलती है।

कुमारप्पा के मामले में तुमने काफी से ज्यादा क्षति-पूर्ति कर दी है।

उनका पत्र तुम देखना पसन्द करोगे। उसे पढकर फाड सकते हो। हा, उनके जैसे कार्यकर्ता हमारे पास वहुत थोडे है।

प्यार,

बापू

२२८. एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड
२ सितम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

आपकी वहन और पुत्री की अस्वस्यता की खवर से हम दोनो दुखी हैं। विश्वास है, वे जल्द ही अच्छी हो जायगी।

आयरलैण्ड जाते समय आपका लदन का पता न लेकर मैंने कैसी बेवकूफी की। मैंने आपको प्राग् के पते पर तो लिखा ही, लदन के उस बिल्कुल गलत पते से भी लिखा। यह पता मेरी मूढ कल्पना की ही ईजाद था।

मैंने अभी कोर्डा से फोन पर बातचीत की है। वह रविवार को विमान द्वारा लदन जा रहे है और सोमवार की शाम को अमरीका रवाना होगे। इसलिए, अगर आप कुछ सप्ताह लदन में रुकें तो ठीक ही है, अगर नही तो आपसे न मिल सकने का उन्हे बडा मलाल रहेगा।

वह निश्चित रूप से एक पखवारे के अन्दर अमरीका से लौट आयेंगे। उन्हें गुप्त रूप से यह चेतावनी दे दी गई है कि राजनैतिक अनिश्चय के कारण अधिक समय तक वहा रहना ठीक न होगा। विदेशो में जो आशावाद प्रकट किया जा रहा है उसका आधार गलत है। न्यूरेम्बर्ग रैली से पहले निश्चित रूप से कुछ कहा नही जा सकता।

हो सकता है, कोर्डा अपनी अमरीका-यात्रा मुल्तवी कर दें, ऐसी कुछ सम्भावना है। इस बारे में वह मुझे कल तीसरे पहर फोन पर वतायेंगे।

लेकिन आप और आपके लोग क्यो न स्टूडियो देख लें। अगर कोर्डा सोमवार को अमरीका रवाना हो भी गये तो भी यह देखने में तो कोई रुकावट होनी नही चाहिए कि आधुनिक सभ्यता का उनका "पेस्ट नम्बर वन" कैसे चल रहा है।

अथवा, अगर वह चले गये तो आप ऐसा क्यो न करें कि सप्ताह के

२२६ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
३१ अगस्त १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

अपनी सीमित शक्ति के कारण मुझे मजबूर होकर तुम्हे लिखने की इच्छा को दबा देना पडा था।

इन्दू के बारे में मेरे तार के तुम्हारे जवाब की प्रतीक्षा है।

सघ के सबध में तुम्हारी चेतावनी मैंने समझ ली है। मै इस खबर पर विश्वास नही करता यानी अगर वह अफवाह से कुछ अधिक है तो। पहले काग्रेस की अनुमति लिये बिना वे उसे आमन्त्रित नही करेंगे। अनुमति उन्हें मिल नही सकती।

फिर रही बात यहूदियो की, सो मेरा बिल्कुल तुम्हारे जैसा ही खयाल है। मै विदेशी माल का बहिष्कार करता हू, विदेशी योग्यता का नही। और पीडित यहूदियो के लिए तो मेरी भावना तीव्र है। एक ठोस प्रस्ताव के रूप में मेरा सुझाव है कि तुम सबसे योग्य व्यक्तियो के नाम इकट्ठे करलो और उन्हे साफ बता दो कि उन्हें हमारे भाग्य के साथ अपना भाग्य मिला देने और हमारा जीवन-स्तर स्वीकार करने को तैयार होना पडेगा। बाकी महादेव लिखेंगे।

प्यार,

बापू

२२७. महात्मा गाधी की ओर से

(१९३८-३९)

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मै जानता हू, गलतफहमिया हो सकती हैं। इनका और अज्ञान या स्वार्थपूर्ण आलोचना का मुझपर कभी असर नही हुआ। मै जानता हू कि अगर हम भीतर से मजबूत है तो सब ठीक हो जायगा। विदेशी मामलो में तुम मेरे पथप्रदर्शक हो। इसलिए तुम्हारे पत्र से मुझे सहायता मिलती है।

कुमारप्पा के मामले में तुमने काफी से ज्यादा क्षति-पूर्ति कर दी है।

उनका पत्र तुम देखना पसन्द करोगे। उसे पढकर फाड सकते हो। हा, उनके जैसे कार्यकर्ता हमारे पास बहुत थोडे है।

प्यार,

बापू

२२८ एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड
२ सितम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

आपकी बहन और पुत्री की अस्वस्थता की खबर से हम दोनो दुखी है। विश्वास है, वे जल्द ही अच्छी हो जायगी।

आयरलैण्ड जाते समय आपका लदन का पता न लेकर मैंने कैसी बेवकूफी की। मैंने आपको प्राग् के पते पर तो लिखा ही, लदन के उस बिल्कुल गलत पते से भी लिखा। यह पता मेरी मूढ कल्पना की ही ईजाद था।

मैंने अभी कोर्डा से फोन पर बातचीत की है। वह रविवार को विमान द्वारा लदन जा रहे है और सोमवार की शाम को अमरीका रवाना होगे। इसलिए, अगर आप कुछ सप्ताह लदन में रुकें तो ठीक ही है, अगर नही तो आपसे न मिल सकने का उन्हे बडा मलाल रहेगा।

वह निश्चित रूप से एक पखवारे के अन्दर अमरीका से लौट आयेंगे। उन्हें गुप्त रूप से यह चेतावनी दे दी गई है कि राजनैतिक अनिश्चय के कारण अधिक समय तक वहा रहना ठीक न होगा। विदेशो में जो आशावाद प्रकट किया जा रहा है उसका आधार गलत है। न्यूरेम्बर्ग रैली से पहले निश्चित रूप से कुछ कहा नही जा सकता।

हो सकता है, कोर्डा अपनी अमरीका-यात्रा मुल्तवी कर दे, ऐसी कुछ सम्भावना है। इस बारे में वह मुझे कल तीसरे पहर फोन पर बतायेंगे।

लेकिन आप और आपके लोग क्यो न स्टूडियो देख लें। अगर कोर्डा सोमवार को अमरीका रवाना हो भी गये तो भी यह देखने में तो कोई रुकावट होनी नही चाहिए कि आधुनिक सभ्यता का उनका "पेस्ट नम्बर वन" कैसे चल रहा है।

अथवा, अगर वह चले गये तो आप ऐसा क्यो न करें कि सप्ताह के

बाद मे, जब आपकी बहन बिल्कुल स्वस्थ हो जाय और इदिरा भी आने की स्थिति में हो, आप यहा चले आयें ? बुधवार या गुरुवार को। आप लोग दोपहर का खाना हमारे साथ खायें, चाय भी यही पियें। हम आपको अरब गाव के सामने बहती हुई नदी, सूडानी किला, विक्टोरियन महल आदि दिखायेगे। बडी मजेदार चीजे है। आप जोल्टन कोर्डा से भी मिल सकेंगे। इन सबके पीछे उन्हीका कला-कौशल है।

जो हो, कल रात जब आप फोन करेंगे तो मैं आपको यह निश्चित रूप से बता सकूगा कि कोर्डा अपनी अमरीका-यात्रा स्थगित कर रहे है या नही।

प्राग् से लिखा गया आपका पत्र बडा दिलचस्प और बहुत ज्ञानवर्द्धक था। मुझे बहुत पहले से मालूम है कि एलेन ऑव हर्टवुड एक असहनीय कटक था। लेबर पार्टी में लोग उसे क्रीपिंग जीसस के नाम से पुकारते है।

अगर कोर्डा के जाने के बाद सप्ताह में देर से किसी दिन आना सुविधाजनक रहे तो आपकी बहन और पुत्री को देखने का आनन्द लाभ कर सकूगा। आशा है, बुधवार तक वे दोनो अच्छी हो जायगी।

अब ऐसा लगता है कि कोर्डा को गुप्त चेतावनी दी जाने की बात शायद नही कहनी चाहिए थी। लेकिन आपसे कहने मे क्या हर्ज ! पता होने पर आप भी वही चेतावनी देते।

आपका,

एडवर्ड टामसन

स्टूडियो का निकटवर्ती स्टेशन डेनहम (पेडिंग्टन से) है, जो बेकसफील्ड / प्रिसेज रिसबरा लाइन पर है। आध-आध घटे पर गाडी छूटती रहती है। हमने समय का पक्का पता करने की कोशिश की थी। लेकिन स्टेशन आफिस बन्द हो चुका था। फिर भी, गाडियो की सख्या काफी है।

२२९ जे बी कृपालानी की ओर से

स्वराज भवन,
इलाहाबाद
९ सितम्बर १९३८

प्रिय जवाहर,

मुझे अफसोस है, पिछले कोई तीन हफ्तो से तुम्हें नही लिख सका।

मै इलाहाबाद मे नही था। वर्धा होता हुआ मै परसो लौटा हू, जहा अध्यक्ष, मौलानासाहब, वल्लभभाई और राजेन्द्रबाबू किसी-न-किसी काम से मौजूद थे। मैंने उनसे कृष्ण मेनन के बारे में बात कर ली। जो कुछ मैंने तुमको लिखा था, उस बारे मे वे सब मुझसे सहमत थे। उन्होंने मुझसे यह भी कहा कि मै मेनन को लिख दू कि ग्लासगो मे होनेवाली 'शाति और साम्राज्य काग्रेस' मे वह हमारा प्रतिनिधित्व कर सकते है। इसीके अनुसार मैंने मेनन को लिख दिया है। सुभाष ने कहा कि इस परिषद् को वह अपना एक सन्देश भेजेगे। मुझे आशा है, वह जरूर भेजेंगे।

वर्ल्फ्डस्ट कान्फ्रेंस मे शामिल होने के निमत्रण को मजूर करने के बारे मे अभी कुछ तय नही हुआ। जब हम दिल्ली मे २० तारीख को मिलेंगे तब मै समिति के सामने मामले को दुबारा रख दूगा। इस बार महासमिति की बैठक भी होगी। जुलाई में कार्य-समिति की पिछली बैठक में बापू ने युद्ध और सैनिक शिक्षा के बारे मे अपने विचार हमे सक्षेप में सुनाये थे। यह सब जल्दी में किया गया था और बैठक के बिल्कुल अन्त मे। यह सुझाव दिया गया था कि पूरे दो दिन खास तौर पर इसी सवाल की चर्चा के लिए रखे जाय। इसलिए इस बार दो दिन इसके लिए दिये गए है। हम २० को दिल्ली पहुच जाना चाहते है, जबकि यह घोषित किया गया है कि हमारी औपचारिक बैठक २२ को शुरू होगी। महासमिति २४ से शुरू होगी।

यूरोप की स्थिति के बारे मे ता० ३० को बुडापेस्ट से लिखे तुम्हारे पत्र की नकलें मैंने कार्यसमिति के सभी सदस्यो को भेज दी है। चूकि हम शीघ्र ही मिल रहे है, इसलिए मध्य यूरोप की स्थिति की अलग से चर्चा के लिए कोई खास बैठक नही बुलाई जा सकती। युद्ध, शस्त्रीकरण और सैनिक शिक्षा के बारे में हमारा जो आम रुख है, उसीके प्रकाश मे, मुझे विश्वास है कि इस सवाल पर चर्चा हो जायगी। तुम जानते हो कि केंद्रीय धारा-सभा ने भर्ती-विरोधी विधेयक स्वीकार कर लिया है, जिसमें सैनिक-भर्ती के खिलाफ प्रचार पर सजा रखी गई है। मुस्लिम लीग ने सरकार के साथ मत दिया। इसलिए युद्ध और दूसरे सबधित विषयो पर हमारे रुख के सवाल पर पूरी तरह से अगली बैठक मे विचार होगा। मै चाहता हू कि तुम उस समय यहा हो। यह इच्छा वर्धा मे हमारे दूसरे मित्रो ने भी प्रकट

की है। वल्लभभाई तो कहते थे कि दिल्ली की बैठको के लिए तुम समय से हवाई जहाज द्वारा आ सको तो बहुत अच्छा हो। आम तौर पर यह महसूस किया जाता है कि यह समय है जब तुम घरेलू राजनीति में हमारी मदद करो।

१ ता को बुडापेस्ट से तुमने जो पत्र भेजा था, उसकी नकल मैंने बापू के पास भेज दी है। तुमको शायद याद हो कि फेडरेशन के बारे में बापू मित्रो को जो छोटे-छोटे पत्र लिखते रहे है, उसी प्रसग में यह पत्र था। वर्धा में मैंने बापू के नाम आई अगाथा हैरिसन की चिट्ठी पढी थी। उन्होने लिखा था कि उन्हें दु ख है कि भूलाभाई के रुख को गलत समझा जा रहा है और उसे गलत ढग से प्रस्तुत किया जा रहा है। उनका कथन है कि उन्होने लन्दन में ऐसी कोई बात नही कही जो हमारे प्रस्तावो में प्रकट किये गए काग्रेस के रुख से मेल न खाती हो। इसका महत्व जो भी हो, यह तो केवल तुम्हारी जानकारी के लिए लिख दिया है।

मुझे मालूम हुआ है, पिछली बार इग्लैंड में जिन विभिन्न लोगो या गुटो से तुम मिले, उनके प्रति जो रुख तुमने अख्तियार किया, उससे बापू को बडा सतोष हुआ। तफसील में कोई राय नही दी, लेकिन तारीफ जोरदार की। किसी और ने कोई राय जाहिर नही की। मुझपर जो असर हुआ, वह मैंने तुमको लिख दिया है। सघ, सविधान-सभा और स्वतन्त्रता के बारे में तुमने जो रुख अपनाया, उसकी हर कोई सराहना करता है। मेरी अपनी राय तो यह है कि मजदूर-दल ने योजना की जो रूपरेखा प्रस्तुत की है, उसका आज बहुत कम व्यावहारिक मूल्य है। भविष्य में उसका मूल्य क्या होगा, यह बहुत-कुछ इग्लैंड की दलीय राजनीति पर निर्भर करता है। लेकिन इस और किसी दूसरी चीज का भी दारोमदार आखिरकार विश्व-स्थिति पर है। यह बिलकुल सभव है कि दुनिया की बिगडती हुई हालत के साथ इग्लैंड हमारी बात और ज्यादा मानने को तैयार हो जाय, लेकिन उसकी आम राजनीति अनुदार ही रह सकती है। बाहरी खतरा अक्सर तीव्र घरेलू राजनैतिक नीतियो पर विपरीत प्रभाव डालता है। फिर भी मजदूर-दल के ज्ञापन को अगर प्रकाशित कर दिया जाता है तो प्रचार की दृष्टि से उसकी बडी कीमत होगी। कम-से-कम वह इतना तो दिखा देगा कि कुछ

गुट, वर्तमान मे वे कितने ही छोटे क्यो न हो, हमारे साथ यह सोचते है कि हिंदुस्तान और इग्लैंड में दोस्ताना सबधो या किसी व्यापाराना समझौते से अधिक और कुछ नही होना चाहिए। वहा की जनता हिंदुस्तान की आज़ादी के विचार को अच्छी तरह जान लेगी।

तुम्हारे खत में दफ्तर से सबध रखनेवाली जितनी भी सूचनाए थी, सबपर अमल हो गया है। लोहिया अब भी दफ्तर में बने है और अपना हमेशा का काम कर रहे है। मैंने उनसे कह दिया है कि तुम्हारे आने से पहले वह नही जा सकते। अहमद इस महीने के शुरु से ही हमें छोडकर चले गये है, परन्तु वह यही बस गये है। अशरफ़ भी अपना काम कर रहे है।

चीन जानेवाले हमारे शुश्रूषा-दल के साथ कोई राजनीतिज्ञ भी रहे, तुम्हारे इस सुझाव को मैंने वर्धा में अपने साथियो के सामने रख दिया है। परन्तु यह दल रवाना हो गया, उसके बाद तुम्हारा वह पत्र मुझे मिला। इस-लिए उन्होने कहा कि इस प्रश्न पर भी अगली बैठक में ही विचार हो सकेगा।

यहा जो कुछ चल रहा है वह सब विजयालक्ष्मी ने तुमको बताया होगा। हमें यह जानकर खुशी हुई कि अब इन्दिरा की सेहत पहले जैसी ठीक हो गई है। हम आशा करते है कि इस परिवर्तन से विजयालक्ष्मी भी बेहतर महसूस कर रही होगी। अहमदाबाद में भारती से मालूम हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नही है। थोडा आराम क्यो न कर ले? हर आदमी पूछ रहा है कि तुम कबतक घर वापस आ रहे हो? तुम उसका कोई अदाज ही नही कराते। इस सबध में अपनी राय लिखो।

मेरा और सुचेता का तुम सबको प्यार।

सप्रेम तुम्हारा,
जीवत

२३० क्रिस्टीन ह स्टर्जन की ओर से

कैर्नगोर्म,
क्यूरी मिडलोथियन
१९ सितम्बर १९३८

प्रिय डाक्टर नेहरू,

पिछले सप्ताह के 'मैनचेस्टर गार्जियन वीकली' में आपका जो अत्यत

सुन्दर पत्र छपा है, उसके लिए मै आपको धन्यवाद देना चाहती हू। उस पत्र मे आपने बडे ही गौरव और स्पष्टवादिता के साथ वे भावनाए व्यक्त की है जो आजकल के दु खमय समय मे हममें से भी बहुत-से लोग अनुभव करते है। मुझे उम्मीद है कि आपको इसी प्रकार के और भी पत्र उन लोगो के पास से प्राप्त होगे, जिन्हे मेरी ही तरह आजकल की अपनी सरकार की नीतिहीनता से धक्का और आघात लगा है और जो सच्चाई को जान गये है।

हम यहा के महत्वपूर्ण व्यक्तियो मे से नही है, लेकिन मै समझती हू कि इस देश में हम जैसे सरल, शांतिप्रिय और मूलत अच्छे आदमियो का बहुमत है, यद्यपि हमारे पास वह सस्था नही है जिसके जरिये हम अपनी आवाज दूसरो तक पहुचा सकें। शायद कभी वह दिन आयेगा जब सामूहिक रूप से हम इतने उद्वेलित हो उठेंगे कि दूसरो को अपनी इच्छा महसूस करा सके।

इसके पहले कि आज जो कुछ भी कलकल करता हुआ एक साधारण-सा झरना मालूम देता है वह एक तीव्र वेगवती धारा बनकर उन्नति के मार्ग में आनेवाली धाराओ को वहा ले जाय, हमें शिक्षा, जागृति और सगठन के एक लम्बे और कठोर रास्ते को पार करना है। लेकिन मै आपको यह बताना चाहती हू कि हममें से बहुत-से लोग बौद्धिक और आत्मिक रूप से आपके साथ है। 'मैनचेस्टर गार्जियन' में प्रकाशित आपके पत्र के उत्तर में आपको जितने भी पत्र मिलेंगे, समझ लीजिये कि उतने ही सैकडो और हजारो ऐसे अज्ञात तथा सतप्त लोग है, जिन्हें आपने सोचने में सहायता दी है, किन्तु जो आपको यह बात लिखते नही।

एक बार फिर आपको धन्यवाद। भगवान करे, आजाद हिंदुस्तान और प्रजातत्रीय विश्व के लिए आप जो कार्य कर रहे है वह हर तरह से फले-फूले।

आपकी,
त्रिस्टीन ह स्टर्जन

२३१. टी मैस्की की ओर से

१० अक्तूबर १९३८

प्रिय नेहरू,

मुझे यह सुनकर दु ख हुआ कि आप अब सोवियत यूनियन की यात्रा पर नही आ सकते। मै जानता हू कि इसके लिए आप कितने इच्छुक थे। मुझे उम्मीद है कि जो यात्रा आपको विवश होकर स्थगित करनी पडी है उसके लिए आप कभी भविष्य मे अवसर निकाल सकेगे।

आप से जिनेवा मे मिलकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई थी और उस भेंट की मधुर स्मृतिया सदा मेरे साथ रहेगी। मुझे हार्दिक आशा है कि आपकी पुत्री और बहन यदि अबतक बिल्कुल ही अच्छी नही हो गई है तब भी पहले से बेहतर जरूर होगी।

आपका,
टी. मैस्की

२३२ मुस्तफा-अल-नहास की ओर से

हैलियोपोलिस
१७ अक्तूबर १९३८

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

आपके दोनो खत मिले और मै तहेदिल से आपका उस हमदर्दी के लिए शुक्रगुजार हू, जो हमारे काहिरा लौटने पर हमारे शानदार इस्तकबाल के दौरान में पुलिस के हाथो जान-बूझकर हमारी जान लेने के लिए की गई खौफनाक कोशिशो से बचने पर, मकराम पाशा और मेरे तई आपने जाहिर की है। गहरी चोटो और घावो के बावजूद, जिनसे हमें अभी तक पूरी तरह आराम नही हुआ है, अल्लाह ने हमारी जिदगी बचा दी।

मकराम पाशा को अपने माथे मे बहुत बडा आपरेशन करवाना पडा।

खुशी की बात है कि मकराम पाशा या मेरी कोई हड्डी नही टूटी।

लोग बहुत भडके हुए है।

हमारे कुछ दोस्तो को आपकी बहन के सिदकरिया उतरने पर उनका इस्तकबाल करने में खुशी हासिल होगी और उनके साथ जाकर

उनके आराम के लिए सारी चीजो का इतजाम करने का मौका मिलेगा।

जहांतक आपका और आपकी लड़की का ताल्लुक है, हमारे साथियो का एक डेलीगेशन आपको सिकदरिया पर मिलेगा और सारे हफ्ते मिस्र में और काहिरा में अपने बीच आपको रखने का हमें मौका मिलेगा।

साम्राज्यशाही और फिलस्तीन में हाल ही में हुई सरकारी कान्फ्रेंस के बारे में आपके खयालात से हम एकराय हैं।

आपका,

मुस्तफा-अल-नहास

मैं इस खत की एक नकल अहतियातन लदन के पते पर भी आपको भेज रहा हू।

२३३. सुभाषचन्द्र बोस की ओर से

रेल से

१९ अक्तूबर १९३८

प्रिय जवाहर,

तुम आश्चर्य कर रहे होगे कि मै भी कैसा अजीब आदमी हू कि तुमने इतने पत्र लिखे और मैने उनका कोई जवाब नही दिया। मुझे तुम्हारे सब पत्र मिल गये थे। काग्रेस कार्यसमिति के सदस्यो के नाम लिखे गए तुम्हारे पत्रो को सभीने पढा है। युद्ध-सकट के समय तुम्हारे वक्तव्य सामयिक और हमारे लिए सहायक थे।

तुम कल्पना नही कर सकते कि इस अवधि में तुम्हारा अभाव मुझे कितना खटका है। अवश्य ही, मै अनुभव करता हू कि तुम्हे परिवर्तन की सख्त जरूरत थी। मुझे अफसोस इसी बात का है कि तुमने काफी शारीरिक विश्राम नही लिया। कुल मिलाकर, समाचारपत्रो में तुम्हे अच्छा स्थान मिला, रायटर की कृपा के कारण। जनता तुम्हारी यूरोप की गतिविधि और प्रवृत्तियो से परिचित रह सकी और लोग तुम्हारे उद्गारो में गहरी दिलचस्पी लेते रहे हैं। मुझे बडी खुशी है कि तुम अपने यूरोप-प्रवास के दौरान में इतना कीमती काम कर सके, हालाकि यहा हमने तुम्हारा अभाव बहुत अधिक महसूस किया।

वापस लौटने पर तुम्हे अनेक समस्याओ का सामना करना होगा।

हिन्दू-मुस्लिम सवाल है। मि जिन्ना असगत है और अकडे हुए है। अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के दक्षिणपथियो और वामपथियो मे फूट है। वामपथी उठकर चले गए थे, इसपर महात्माजी ने बुरा माना। फिर अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न है।

मुझे आशा है, तुम योजना-समिति की अध्यक्षता स्वीकार कर लोगे। अगर उसे सफल बनाना है तो तुम्हे स्वीकार करना ही होगा।

सप्रेम,

तुम्हारा स्नेही,
सुभाष

फिर से—

मै कल बम्बई से कलकत्ता पहुच रहा हू।

२३४ एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल,
ऑक्सफोर्ड
२१ अक्तूबर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे बडा खेद है।

मै इस निश्चय पर पहुचा हू कि कुछ उदार किस्म का ही सही, लेकिन हू मै आखिरकार कजरवेटिव ही। हर चीज बडी उलझी है, और वामपथी लोग फिलस्तीन के प्रश्न पर बडे तीखे हो रहे है। 'मैनचेस्टर गार्जियन' हमेशा से विवेक-रहित ज़ायोनिस्ट अखबार रहा है। अग्र-लेख लिखकर वह यही दिखाता रहा है कि अरब-अशान्ति का कारण इटली का प्रचार ही है। वह अमरीकनो के पत्रो को विशेष स्थान देता रहा है, जिनमें राष्ट्रवादियो के खिलाफ बडी कार्रवाई करने का आग्रह किया जाता रहा है। उसने मेरा एक पत्र छापने से इन्कार करके वापस कर दिया है। मेरे खयाल में 'न्यू स्टेट्समैन' में आज जो पत्र छपा है, यह मुझे उम्मीद है, वही है। 'न्यूज़ क्रॉनिकल' पत्र नही छापेगा, पर उसने कम-से-कम इतनी शिष्टता जरूर बरती है कि उसने पत्र को साफ इन्कारी के साथ वापस नही किया है। तीनो ही पत्रो में उस भयकर घटना की चर्चा है, जिसे प्रकाशित करने की अनुमति मैंने आज 'टाइम एण्ड

टाइड' से ले ली है। (इसमे उस अश को मेरे लेख से काटकर निकाल दिया था)। 'न्यूज़ क्रॉनिकल' और 'डेली टेलीग्राफ' में एक ही चित्र छपा है। लेकिन 'न्यूज़ क्रॉनिकल' ने उसका परिचय 'अरब लुटेरे लाये जा रहे है' इस रूप में दिया है, जबकि 'डेली टेलीग्राफ' ने उन्हे 'अरब बदी' कहा है। 'डेली टेलीग्राफ' ने मेरा एक पत्र छापा, हालाकि उसने भी उस घटना को काट दिया। मेरी जिन्दगी में पहले कभी ऐसा मौका नही आया, जब किसी अलोकप्रिय आन्दोलन की सुनवाई कराना इतना असभव हो गया हो। अखबारो पर यहूदियो का प्रभुत्व है, इसपर पहले मै कभी विश्वास नही कर सकता था। यहूदी और अमरीकन मिलकर और 'लिबरल और लेबर' समाचार-पत्र अरब पक्ष की सुनवाई के हर प्रयास को कठोरतापूर्वक दबा रहे है। मेरे खयाल से 'टाइम एण्ड टाइड' का आज का 'फिलस्तीन पर नोट' बडा बेहूदा है। 'न्यू स्टेट्समैन' मेरा पत्र छाप देगा, इसमें मुझे बडा सन्देह है।

यह बात मुझ और आप ही तक रहे, मेरे खयाल में लिडसे जीत नही सकेगा। बैठ जानेवाले दोनो ही उम्मीदवारो का आचरण ठीक नही रहा है। लेबरपार्टी का उम्मीदवार लोगो को यह एहसास कराता है कि उसके साथ व्यवहार अच्छा नही हुआ है। वह उस मच पर नही आयेगा, जिसपर लिबरल पार्टी का उम्मीदवार होगा और सुनने मे आया है कि उसने 'राजद्रोह' के सम्बन्ध में 'डेली हेरल्ड' को एक पत्र लिखा था, जिसका इस्तेमाल उस कम्बख्त अखबार ने लिडसे के खिलाफ किया है। लिबरल उम्मीदवार बार-बार यह जता रहा है कि बैठकर उसने कितना अच्छा काम किया है और अनेक प्रमुख लिबरल नेता खुले आम हॉग के पक्ष में हो गये है। मेरे खयाल में वक्ताओ का ठीक-ठीक उपयोग नही हो रहा। जहातक मेरा खुद का सवाल है, मैंने उसी क्षण कह दिया था मैं जहा कही भी और जब कभी भी बोलने को तैयार हू, विशेषकर लिब-रलो और महिलाओ के बीच, क्योकि मै लिबरल हू (जहातक मेरा किसी पार्टी से ताल्लुक है) और मै उस कुख्यात भोज में मौजूद था, जहा लिडबर्ग ने पहले हमारी सरकार को भयभीत कर दिया था। बाद में उसने लायड जार्ज और मन्त्रिमडल की भी खबर ली। इसमें और अन्य

कई सूत्रो से हाल की घटनाओ की अन्दरूनी कहानी से मै बहुत वाकिफ हू और मै अनिश्चित मन रखनेवाले लोगो को प्रभावित कर सकता हू। यही नही, जब मै क्रोधित हो जाता हू—और अब जितना मुझे क्रोध है, उतना जिन्दगी मे कभी नही आया—तो अच्छा भाषण करता हू। लेकिन पार्टी के लोग इस चुनाव मे केवल पके-पकाये वक्ताओ का उपयोग करेगे। यह चुनाव ऐसा है, जहा चुनाव-परिणाम निर्दलीय मतदाताओ पर निर्भर करेगा। पार्टीवालो ने मुझसे चन्दा भर लिया है। वे मुझे छोटी-सी गोष्ठी में भी भाषण करने देना नही चाहते। बहरहाल हमारे सामने दो ऐसे उम्मीदवार है, जिनके भाषण, ऑक्सफोर्डवालो को जबानी याद है। पार्टी के अन्य लडाकू लोग तो है ही।

मै ऐसे लोगो मे नही हू, जो ऐसी सभा में भाषण करते है, जहा से निकल ही न सके। लेकिन इस बार मै बवण्डर का सामना करना चाहता था। मै एक-दो वे बाते कहना चाहता था, जो लिंडबर्ग ने कही थी और जो जान-बूझकर दबा दी गई थी। कुछ और बाते भी कहता। मै पहले ही जानता था कि लिंडसे के खिलाफ क्या-क्या बातें कही जानेवाली है और मै उनका जवाब पहले ही दे देना चाहता था।

यहा जलियावाला बाग पर अक्षम्य दो बहसें होने पर टैगोर को जो एहसास हुआ था, मुझे भी वैसा ही हो रहा है। दुनिया को मेरे बारे में गलतफहमी पैदा हो गई है और मै हताश हो चला हू, लेकिन अगर अरब लोग लदन में एक सभा बुला सके और वक्ता की जरूरत हुई तो मै वहा बोलूगा। हमारे अखबारो ने जहातक जो कुछ करने का अवसर मुझे दिया, मैने किया है। लेकिन जैसाकि मै कहता हू, हमारे ही पक्ष के अखबार विवेकरहित है, 'मैचेस्टर गार्जियन' तो सबसे अधिक (यह तो वास्तव मे नफरत लायक और सकुचित विचार का अखबार है और हमेशा से रहा है)।

अब कुछ अधिक खुशी की बातें बता दू। 'दि ड्रम' की समालोचनाओ का कोर्डा की आत्मा पर बडा गहरा असर पडा है। पिछले मगलवार को उन्होने टेलीफोन किया था और मुझे डेनहम आकर मिलने को कहा था। वह साबू के लिए कोई कहानी जल्द प्राप्त करने के लिए बेचैन

है। साबू घोडा और हाथी सम्भालने में तो बडा होशियार है। दूसरी बातें उसे उतनी नही मालूम। कोर्डा उसे चीथडो में लिपटे एक गदे आदमी के रूप मे पेश करना चाहते है, हालाकि साहसिकताओ की भी भरमार रहेगी। उन्होने कहा कि मै भारतीय अभिनेताओ के माध्यम से एक सच्चा भारतीय जीवन पेश करना चाहता हू। अन्त में उन्होने यह भी कहा कि मै हिंदुस्तान के लिए कुछ प्रचार करना चाहूगा, एक ऐसा चित्र जिसमें हिंदुस्तान के सौन्दर्य की झाकी होगी, ऐसे हिंदुस्तानी चरित्र रहेगे, जो हत्यारे और देशद्रोही नही थे, बल्कि ऐसे पुरुष और स्त्री, जिन्हे आप प्यार करते थे और जिनका आदर करते थे। इस बारे में आपके क्या विचार है? फिल्म ससारभर में जाती है। प्रचार के हर साधन पर हमारे दुश्मनो का कब्जा है और मेरा मन उनका जवाब देने का होता है। मै एक ऐसी फिल्म बनाऊगा, जिसमें वे बस्तिया दिखाई जायगी, जिनमें हिंदुस्तानी मजदूर रहते है। उसमें उनके कारखाने के हालात दिखाये जायगे। आप और नैन इसपर सोचें। ऐसी हालतें मुझे कलकत्ता में मिल सकती है—सडाध फैलाती हुई नहरें और दलदल जहा भूख से तडपडाते पुरुष और स्त्रिया रहते है। परन्तु सारी दुनिया को दिखाने के लिए प्रयाग-सगम की फिल्म बनाने के बारे में आपके क्या विचार है? गौरव-मडित गगा और यमुना हिंदुस्तान की गरीबी और हिंदुस्तान की सुन्दरता का ऐसा प्रदर्शन करती है, जिसे भुलाया नही जा सकता। यह काम मै कहा करू—कलकत्ता, ग्वालियर (उत्कृष्ट दृश्यावली के लिए), इलाहाबाद, कानपुर में?

हिंदुस्तान के निवास के दिनो की मेरी मानसिक क्लान्ति की झलक इस अन्तिम उपन्यास में है—एक बहुत ज्यादा थके हुए लेखक की एक बेहद थकानभरी किताब। इसमें कहानी जैसी कोई चीज नही है। इससे हमारे अपने कट्टरपथियो से लेकर हिंदुस्तानी राष्ट्रवादी तक कोई खुश न होगा। हमारे कट्टरपथी तो आरम्भिक पृष्ठो के कारण मेरी जिन्दा खाल उतरवा लेना चाहेगे और अन्य पृष्ठो के कारण हिंदुस्तानी राष्ट्र-वादी मुझपर पत्थरो की बौछार करना चाहेगे। यह कोई अच्छी बिनाव नही है, लेकिन अब तो लगभग मेरा खातमा ही हो चुका है।

आपके और आपकी पुत्री के लिए शुभकामना ।

आपका,
एडवर्ड

फिर से—

एच एन ब्रेल्सफोर्ड ने बडी बदमाशी की है । पिछले रविवार के 'रेनाल्ड्स' में उसने यहातक आग्रह किया है कि चेकोस्लोवेकिया के शरणार्थियो को फिलस्तीन में बसा दिया जाय । 'टाइम एण्ड टाइड' मे उससे मैंने जो सीधे सवाल किये थे, उनका जवाव देने की कोशिश उसने कभी नही की । फिलस्तीन का प्रश्न मैं उठा दू, यह वात 'टाइम एण्ड टाइड' वालो को नापसन्द थी । लेकिन उसकी 'नोट्स ऑन दि वे' की शर्त के अनुसार उसे छापना ही पडा । आपने गैरेट की 'दि शैडो ऑव दि स्वस्तिक' देखी है ?

२३५ रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन
बगाल
१९ नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

मैंने अभी-अभी अखबारो में तुम्हारे भारत लौटने की बात पढी है और मै जल्दी-से सारे देश के साथ अपना भी स्वागत का स्वर जोड देना चाहता हू ।

मै तुमसे मिलने को बहुत उत्सुक हू और यदि शातिनिकेतन-यात्रा भी अपने कार्यक्रम में रख लो तो मुझे वडी प्रसन्नता होगी ।

अभी उस दिन डा मेघनाद साहा से भारतीय उद्योग के वैज्ञानिक नियोजन के बारे में मेरी बडी लबी और दिलचस्प बातचीत हुई । मै भी इसके महत्व को मानता हू और क्योकि काग्रेस के दिशा-दर्शन के लिए सुभाष द्वारा बनाई गई समिति के अध्यक्ष बनना तुमने स्वीकार कर लिया है, मै इस विषय पर तुम्हारे विचार जानना चाहूगा ।

इदिरा को मेरी याद दिलाना और उसे मेरा प्यार देना।
सप्रेम,

तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

[यह राष्ट्रीय योजना कमेटी है, जिसे सुभाषचद्र बोस ने तब नियुक्त किया था जब वह काग्रेस के अध्यक्ष थे। मुझे इस कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया था।]

२३६ जयप्रकाशनारायण की ओर से

कालीकट
२३ नवम्बर १९३८

प्रिय भाई,

स्वदेश लौटने पर सारे राष्ट्र के साथ मै भी आपका स्वागत करता हू। मेरी इच्छा थी कि यह सभव होता कि मै जल्दी से इलाहाबाद आता, आपसे मिलता और यूरोप में जो दुखद घटनाए आपने अपनी आखो से देखी तथा आपके जाने के वाद यहा जो कुछ हुआ, उन सबके वारे मे आपसे बातचीत करता। यदि आप किसी तूफानी कार्यक्रम में नही फस गये तो एक-दो हफ्तो में मै यह इच्छा पूरी कर सकूगा। मै यहा मलावार मे पडा हुआ हू और अपनी साइटिका का आयुर्वेदिक इलाज करवा रहा हू। एकदम अच्छा तो नही हो गया हू, परन्तु कुछ सुधार लगता है। प्रभावती मेरे साथ है। अखवारो में यह पढकर हमे खुशी हुई कि यूरोप-यात्रा से आपका स्वास्थ्य काफी सुधर गया है।

मुझे आशा है कि इतनी वडी-वडी घटनाओ के वीच आप सोशलिस्ट बुक क्लव के छोटे-से काम को भूले नही है, जिसके वारे में मैने आपको लिखा था। अपनी योजना से हम कुछ आगे है और सुभाषवावू की सहायता से उसके लिए कलकत्ता में ३०००) के करीव हम इकट्ठे कर सके हैं। क्लव का दफ्तर इलाहावाद में है और अहमद मैनेजिग डायरेक्टर की हैसियत से उसका काम देखते है। क्लव का किसी दल से सम्बन्ध नही है। यूरोप से भेजे अपने खत में आपने सस्थापक सदस्य के नाते क्लव मे शामिल होने में तवतक अपनी असमर्थता प्रकट की थी, जबतक आप

उसके बारे में और ज्यादा मालूम न कर लें । इसी प्रकार किसी गुट के साथ मिलने के लिए भी आपने अपनी अनिच्छा प्रकट की थी । जैसा कि मैंने कहा है, क्लब का किसी गुट से सबध नही है और समाजवादी साहित्य को छोडकर और किसीके प्रति उसकी निष्ठा नही है । जहातक दूसरी बात का ताल्लुक है, अगर आपको वक्त होगा तो अहमद आपसे हमारी पूरी योजना पर चर्चा कर लेंगे और कहने की जरूरत नही कि आपका कोई सुझाव होगा तो हमें उसे स्वीकार करने में बहुत-बहुत खुशी ही होगी । सुभाषबाबू क्लब के सस्थापक सदस्य पहले ही बन चुके हैं । इसमे शामिल होने की आपकी इन्कारी से हमें बडा धक्का लगेगा । मै मानता हू कि क्लब छोटे पैमाने पर काम करेगा, परन्तु मेरा विचार है कि समाजवादी आदोलन से हिंदुस्तान में ऐसे परिणामो की आशा करना, जो उसके साधनो से परे है, तर्कसगत नही होगा । और, आप मुझे यह कहने के लिए क्षमा करेंगे कि आपके लिए, जिन्हे स्वभावत बडे पैमाने पर ही काम करने की आदत है, हिंदुस्तान में समाजवादी प्रयत्नो से असहयोग करना ठीक नही होगा, महज इसलिए कि ये पुरानी और बडी सस्थाओ के प्रयत्नो के मुकाबिले छोटे है । मै सोचता हू कि हमारा यह अपेक्षा करना अनुचित नही है कि अगर आप अपनेको पूरी तरह हमारे साथ न मिलायें तो बतौर एक समाजवादी के थोडा-बहुत हम जो भी करें, उसे अच्छी तरह करने में हमारी मदद करें ।

आपने अपने पत्र में कहा था कि हिंदुस्तान में राजनीति पुरानी लकीरो में जा पडी है । आपकी अनुपस्थिति में इन लकीरो में वह और भी गहरी धस गई है । मै महसूस करता हू कि अगर मचो की राजनीति के शोर-गुल को छोड दिया जाय तो ऐसी चीजें हो रही है, जो काग्रेस को करोडो पद-दलितो के जनतत्रीय सगठन से बदलकर धीरे-धीरे उसे हिंदुस्तान के स्थापित स्वार्थों के हाथ की कठपुतली बना रही है । गाधीवाद ने जो भद्दा रूप ग्रहण कर लिया है, वह इस परिवर्तन को और भी आसान कर देता है । वह काग्रेस को दुर्जन-सगठन का कवच पहना देता है । मुझे लगता है कि काग्रेस की नीति की प्रवृति के पुनर्परीक्षण की आवश्यकता उठ खडी हुई है, खास तौर पर काग्रेस-शासित प्रान्तो में । उसके

सामाजिक और आर्थिक लक्ष्य को एक वार फिर से साफ करने की आवश्यकता भी है। काग्रेस ने मजदूर-आन्दोलन के प्रति, जिसका प्रतिनिधित्व ट्रेड यूनियन काग्रेस द्वारा होता है, जो रुख अख्तियार किया है वह उन लोगो की आखें खोल देनेवाला है, जो यह नही चाहते कि मत्रिमडलो का उपयोग मजदूर-सगठन के हाथ-पाव वाधकर उन्हे मालिको के हाथो सौंपने के लिए हो। आज हमारे सामने वास्तविक खतरा यह है कि मात्र भारतीय उद्योग ही राष्ट्र-रूप का पर्यायवाची बनता जा रहा है। फिर काग्रेस के सगठनो का कार्य है। आज ये प्राय कुछ भी काम नही कर रहे है और जहा वे काम कर रहे है वहा वे या तो चुनाव-यत्र होकर रह गये है या जो काम करते है और या चुनावो के लिए जो तैयारी करते है, उसका उन्हे कुछ भी भान नही है। मै सोचता हू कि अव आपको इस प्रश्न का जवाव देना होगा, कथनी से नही वल्कि करनी से कि काग्रेस को अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिए क्या केवल तथाकथित रचनात्मक कार्यक्रम पर ही निर्भर रहना चाहिए ? जव किसी गाधीवादी के सामने यह सवाल आता है कि क्या काग्रेस को अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए उचित रीति से तैयार किया जा रहा है तो उसका जवाव साफ और सीधा यही है कि केवल रचनात्मक कार्य द्वारा ही हम उस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। अव आपका काम देश को यह वताना है कि क्या केवल इतना करना काफी होगा या और भी कुछ करने की जरूरत है, और यह भी कि वह दूसरा कुछ क्या और कैसे करना होगा। जैसा कि आप जानते है, समाजवाद ने देश के सामने मजदूरो और किसानो के सगठन का कार्यक्रम रक्खा है, जिसमें युवको, स्वय-सेवको और विद्यार्थियो के सगठनो को भी वढाया जा सकता है। मजदूरो और किसानो के सगठनो को तो काग्रेस के अगो के रूप में सोचा गया है, उसके प्रतिस्पर्धी सगठनो के रूप मे नही। आपने कार्यक्रम के वारे में अनगिनत वार अपनी स्थिति साफ की है, परन्तु मै समझता हू कि अव वह समय आ गया है जव आपको आगे आना चाहिए और इन्हे नया रूप देने तथा वढाने का काम हाथ में लेना चाहिए। अव आपको सोचना चाहिए कि इस देश के अधिकाश लोगों में, और मैं तो समझता हू कि खुद काग्रेसजनो में भी, सामाजिक स्वतन्त्रता की जो

भावना और भूख असदिग्ध रूप में है, उसे एक निश्चित रूप देकर स्थायित्व देने के लिए क्या किया जाना चाहिए। इस भूख को अभी तो केवल नये-नये समाजवादी सगठनो ने प्रकट भर किया है। इससे अधिक व्यापक प्रकाशन उसका अभी नही हो पाया है। मै समझता हू कि इसके लिए कुछ वुनियादी काम करने की जरूरत है और वह केवल आप ही कर सकते हैं, वशर्ते कि आप उसके लिए कुछ समय निकाल सके और सोचें।

यह तो हुआ हमारे राष्ट्रीय आदोलन के समाजवादी उद्देश्यो को एक नई दिशा और गति देने के बारे में। एक तात्कालिक और ज्यादा महत्व का काम रह जाता है—दुश्मन पर अगले आक्रमण (क्या यह अतिम आक्रमण होगा?) का। हमारे सामने इसकी कोई निश्चित धारणा है? अपने-आपको इसके लिए तैयार करने के लिए हम क्या कर रहे है? हम इसे कब आरभ करेंगे? इसके लिए क्या हमें तबतक ठहरना है, जबतक कि अग्रेज स्वय हमें मौका दें? यह तो उनके ही अधिक हक में होगा। मेरा खयाल है कि सत्याग्रह की पद्धति में आक्रमण की योजनाओ की अग्रिम तैयारी की गुजायश नही होती। वहा तो केवल एक योजना होती है कि खूब कातो और इसी तरह के आत्मा को हिला देनेवाले काम करो। परन्तु क्या इससे आपको सन्तोष हो जायगा? काग्रेस-कमेटियो को जनतान्त्रिक बनाना, लोकसपर्क, मुस्लिम-सपर्क, गुलामी के विधान को उखाड फेंकना, इत्यादि जितनी भी योजनाए और कार्यक्रम आपने कार्य-समिति में लड-झगडकर शामिल करवाये थे, उन सबको ताक में रख दिया गया है। फिर भी आशा की किरण है—वह है रियासतो में जागरण, और आप उसपर ध्यान देना चाहते है, यह प्रसन्नता की बात है। लेकिन दूसरी चीजो को आपके ध्यान की और ज्यादा जरूरत है।

मैं आशा करता हू कि २३ नवम्बर को मै कालीकट से रवाना होऊगा और दिसम्बर के पहले हफ्ते में विहार पहुच जाऊगा।

सप्रेम आपका,

जयप्रकाश

२३७. महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव
२४ नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा खत मिला। मैं जानता था कि जहा तुम घोडे पर सवार हुए वहा फिर तुम अपने समय के मालिक नही रहोगे। मुझे जो कुछ मिल जायगा उसीसे सन्तोष कर लूगा।

गुरुदेव से पत्र-वाहक द्वारा मिला हुआ एक खत भेज रहा हू। मैंने उत्तर दे दिया है कि मेरी अपनी राय यह है कि अगर उन्हे बगाल को भ्रष्टाचार से मुक्त करना है तो अध्यक्ष के काम से छुटकारा पा लेने की जरूरत है। मुझे सन्देह नही कि गुरुदेव या तो तुम्हे सीधा लिखेंगे या तुमसे बात करेंगे। तुम अपनी ही राय देना।

आशा है, इन्दू को यात्रा से कोई हानि नही हुई होगी।

प्यार,

बापू

२३८. खुवान नेग्रिन् लोपेथ् की ओर से

[सन् १९३८ की गर्मियो के आरम्भ में मैंने रिपब्लिकन सरकार के निमंत्रण पर बार्सेलोना (स्पेन) की थोडे दिन की यात्रा की थी। उन दिनो वहां गृहयुद्ध हो रहा था। वहां से लौटकर मैंने महात्मा गाधी को अपनी यात्रा के सम्बन्ध में लिखा और मेरी प्रार्थना पर गाधीजी ने रिपब्लिकन सरकार के प्रधानमंत्री के नाम एक पत्र लिखकर मेरे पास भेजा, जिसे मैंने प्रधानमंत्री के पास भेज दिया।]

एल प्रेसीडेंटे डेल कोन्सेजो डी मिनिस्ट्रोस
वाई मिनिस्ट्रो डी डिफेन्सा नेशनल

खुवान नेग्रिन् लोपेथन

बार्सेलोना (स्पेन)
२६ नवम्बर १९३८

मिस्टर जवाहरलाल नेहरू,
ओर्मोन्डे हाउस,
सेंट जेम्स स्ट्रीट,
लन्दन, एस डब्ल्यू १

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे सचमुच बडा अफसोस है कि मैं आपके पिछले महीने की ११ तारीख के पत्र का इससे पहले उत्तर न दे सका। मैं आपको उस पत्र के लिए और साथ-ही-साथ उसके साथ भेजे गए महात्मा गाधी के पत्र के लिए धन्यवाद देता हू।

महात्माजी के पत्र का उत्तर मैं इस पत्र के साथ भेज रहा हू। कृपाकर उसे आप उनके पास भेज दीजियेगा।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि हमारे देश में इतने थोडे दिन रह-कर भी आप यहा के सबध में इतने अच्छे विचार बना सके। आपने हमारी जनता के लिए जो अभिवादन और हमारी सफलता के लिए जो शुभ काम-नाए भेजी है उनके लिए मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देता हू।

आप स्वय देख रहे है कि हमें कैसी-कैसी बाधाओ के साथ लडना पड रहा है। हमें न केवल प्रजातत्र के घोषित शत्रुओ के विरुद्ध लडना पड रहा है, बल्कि दुर्भाग्यवश हमें उन लोगो की ओर से भी कठिनाई भोगनी पड रही है, जो हमारे मित्र बनने का ढोग रचते है।

सहानुभूति और प्रोत्साहन के कृपापूर्ण शब्दो के लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद।

आपका,
खु. नेग्रिन्
प्रधानमत्री

२३९. खुवान नेग्रिन् लोपेथ् की ओर से महात्मा गाधी के नाम

खुवान नेग्रिन् लोपेथ
एल प्रेजीडेन्टे डेल कोन्सेजो डी मिनिस्ट्रोज
ाई मिनिस्ट्रो डी डिफेन्सा नेशनल

बार्सेलोना
२६ नवम्बर १९३८

ाहात्मा गाधी,
ाव,
र्धा (इडिया)

प्रिय मित्र,

आपका ४ सितम्बर का कृपापत्र, जो आपने हमारे नेक मित्र श्री नेहरू के द्वारा भेजा था, मुझे बहुत देर से मिला। यही कारण है कि मैं इससे पहले उसका उत्तर देने का सौभाग्य प्राप्त न कर सका। आशा है, उसके लिए आप मुझे क्षमा करेंगे।

अपने प्रिय देश की स्वतत्रता के लिए हम जो बडा सघर्ष कर रहे है उसके लिए आपने हमारी जनता के प्रति सहानुभूति और प्रोत्साहन के शब्द लिखे है। उनके लिए मै आपको अपना हार्दिक धन्यवाद भेजता हू।

यह जानकर बडा सतोष होता है कि आप जैसे प्रतिष्ठा के लोग हमारे पक्ष में है और हमारे कार्य की न्यायोचितता को पूरी तरह से समझते हैं। मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हुई है कि आपके देशवासी स्पेन की घटनाओ का बडी सहानुभूति और रुचि के साथ अध्ययन कर रहे है। आपने अपने पत्र में जो शुभकामनाए और अभिवादन भेजे है उन्हें मै बडी प्रसन्नता के साथ अपनी सरकार, बहादुर सेना और जनता के पास पहुचा दूगा। उनकी ओर से और अपनी ओर से भी मै आपको हार्दिक धन्यवाद भेजता हू।

आपका,

ख्. नेग्रिन

२४० रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर स

शातिनिकेतन, बगाल
२८ नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

मैने तुम्हे आने और मिलने के लिए इसलिए नही कहा था कि मुझे किसी निश्चित योजना पर बातचीत करनी थी या कोई अनुरोध करना था। मै सिर्फ बगाल के बारे में तुम्हारी राय जानना चाहता था, जिसकी वर्तमान स्थिति मुझे उलझन में डालती है और मुझे निराश करती है। मेरा प्रदेश चतुर तो है, पर नैतिक दृष्टि से अशिक्षित होने और अपने पडोसियो को हीन समझने के कारण अपनी इच्छा में तनिक-सी भी बाधा पडते ही होशहवास खोकर पागलो-जैसी हरकते करने लगता

है । मै उसकी दुर्बलता जानता हू, पर उसे विनाश की ओर बढते देखकर भी चुपचाप बैठे रहना और तटस्थ बने रहना मेरे लिए सभव नही । लेकिन साथ ही मै इस बात के लिए भी बिल्कुल तैयार हू कि मै अपने विशेष काम में लगा रहू और उसकी देखभाल काग्रेस के ऊपर छोड दू । पर मै स्वय ढीले पेचो को कसने और चुभनेवाले हिस्सो को रेतकर दूर कर देने के लिए किसी वैयक्तिक शक्ति में विश्वास करता हू—उस मुख्य मिस्त्री की भाति, जो इन्सान के नाते निर्दोष चाहे न हो, पर कुशल मिस्त्री हो । किन्तु मै तुमसे बातचीत करना, और उससे भी अधिक तुम्हारी बात सुनना, चाहता हू, यद्यपि उससे कोई व्यावहारिक नतीजा चाहे न निकले । सच्ची बात यह है कि मै तुमसे मिलना चाहता हू, पर यह शायद तबतक सभव न हो पाये जबतक तुम्हारे पास कुछ खाली वक्त न हो ।

मै इदिरा के स्वास्थ्य के बारे में चिंतित हूं । आशा है, जाडे के महीने हिंदुस्तान में बिताने से उसे मदद मिलेगी ।

सप्रेम,

तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

२४१ अनिलकुमार चन्दा की ओर से

शान्तिनिकेतन, बंगाल
२८ नवम्बर १९३८

प्रिय पडितजी,

गुरुदेव ने आज फिर आपको लिखा ह, बहुत-कुछ मुझे लिखे आपके पत्र के उत्तर में, परन्तु मुझे निश्चय नही है कि उनका पत्र आपको बहुत ज्यादा बोध देगा ।

डा साहा की रैशनल प्लानिंग के विचारो ने उन्हें लुभा लिया है और वह कमेटी से बहुत आशा कर रहे हैं । इससे पहले कि आप दूसरा कोई काम अपने हाथ में लें, वह आपसे बातचीत करना चाहते थे, जिससे कही ऐसा न हो कि घटनाओ के प्रभाव से आप प्लानिंग कमेटी के काम से अपने-आपको सक्रिय रूप से अलग कर लें । आपसे मिलने की उनकी आतुरता का यही मुख्य कारण है ।

वह यह भी चाहते हैं कि अगले वर्ष कांग्रेस का अध्यक्ष कोई आधुनिक विचारोवाला व्यक्ति बने ताकि रिपोर्ट जब तैयार हो जाय तो उसे कांग्रेस दिल से स्वीकार कर ले और उसे उठाकर पटक न दिया जाय। उनकी राय मे—और हम सबकी राय में भी—हाई कमाण्ड मे केवल दो व्यक्ति सही अर्थों में आधुनिक विचारो के हैं—आप और सुभाषबाबू। आपके प्लानिंग कमीशन के अध्यक्ष बन जाने से आपका सक्रिय सहयोग पहले ही मिल गया है और इसलिए वह बडे आतुर है कि सुभाषबाबू दुबारा कांग्रेस-अध्यक्ष चुन लिये जाय। मुझे आशा है, मुझमे जो विश्वास रक्खा गया है, उसका मैं घात नही कर रहा हू—और आप सभवत पहले ही से जानते है। यदि न जानते होगे तो निश्चय ही आप जल्दी जान लेंगे—लेकिन उन्होने हाल ही में गाधीजी को इस बारे में लिखा है। यदि अब उनकी आपसे मुलाकात हो सकी तो सुभाषबाबू को पुन चुनवा लेने में वह शायद आपकी मदद चाहेगे। यह दूसरा कारण है। इस सबके अलावा वह आपसे इसलिए भी मिलना चाहते है, क्योकि आपसे मिलकर उन्हें बहुत सहज आनद होता है और वह आपसे बातचीत करना चाहते है, क्योकि वह वास्तव में आपको बहुत चाहते हैं।

उन्होने मुझसे कहा है कि यहा आने के लिए आप किसी भी कारण से अपना कार्यक्रम न बिगाडें, लेकिन अपनी सुविधा से जितनी जल्दी आ सकें आ जाय। आपके आने से उन्हे आनद होगा, परन्तु प्राथमिकता आपके काम और कांग्रेस की जरूरतो को मिलनी चाहिए।

इन्दिरा कैसी हैं? उन्हे कुछ दिन आराम के लिए यहा क्यो न भेज दें? हमारे लिए इससे बढकर खुशी की बात और क्या होगी?

सादर,

आपका,
अनिल

२४२. एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल,
ऑक्सफोर्ड,
२८ नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

सलग्न पत्र एक ब्रिटिश वकील ने लिखा था। वकील महोदय का चरित्र बडा ऊचा है और वह इस बात के मर्मज्ञ है कि गवाही किसको कहते है। मैंने पूछताछ की है और मै सतुष्ट हू कि इस पत्र को तथ्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। कोई भी लिबरल अथवा लेबर अखबार इसे नही छापेगा, कोई लिबरल अथवा लेबर ससद-सदस्य कुछ पूछेगा नही। दलितो के सभी सच्चे दोस्त यहूदियो के आन्दोलन के पक्षपाती है और इसके विपक्ष की किसी भी बात पर नजर डालने के लिए तैयार नही। 'मनचेस्टर गार्जियन' यहूदी-आन्दोलन के अतिरिक्त कोई चीज अब नही छापता। अब अरब लोग बडी मुसीबत में है। यहूदियो पर नाजी अत्याचार के कारण हर कोई अपनेको यहूदियो के खिलाफ दिखाना नही चाहता और वे (यहूदी) अमरीकी दबाव को दुगुना करने के मौको का इस्तेमाल कर रहे है और अपनी मागें बढाने के लिए सचेष्ट हैं। (मुझे यह कहते दु ख होता है कि रूजवेल्ट ने भी अपने एक भाषण में यह कहा है कि फिलस्तीन का द्वार यहूदियो के लिए खोल दिया जाना चाहिए।)

मुसीबत तो यह है, यह सरकार चाहे खराब ही क्यो न हो, यदि अमरीका और हमारे वामपथियो का दबाव न हो तो फिलस्तीन में सभ्यता-पूर्ण कार्रवाई करेगी।

मै जो पत्र भेज रहा हू, उसकी प्रामाणिकता के बारे में मुझे सतोष है। कोई सुझाव रखने का काम मेरा नही है। लेकिन १ अगर राष्ट्रीय काग्रेस इसी क्रिसमस पर मजबूती के साथ अरबो का पक्ष ले और साफ-साफ वे बातें कह दे, जो हममें से कुछ लोग यहा कहते रहे हैं—यह कि, फिलस्तीन में 'आतक के विरुद्ध' आतक के कारण हिंदुस्तान को विमुख किया जा रहा है, तो इससे इस छोटे-से दलित राष्ट्र को बडा बल मिलेगा (फिलस्तीन में जघन्य तरीके अपनाये जाने और उत्पीडन की बातें सुनने में

आ रही है, जो हिंदुस्तान में पुलिस के खिलाफ कही जानेवाली कहानियो की याद दिलाती है)। २ मुस्लिम लीग से भी इसी तरह का प्रस्ताव पास कराने का कोई तरीका है ? हमारे लोग मुसलमानो की सहानुभूति खोने से बहुत घबराते हैं। दो प्रतिया भेज रहा हू, इस आशा में कि एक प्रति मुसलमानो तक पहुचाई जा सकती है। अब जबकि इकबाल नही रहे, मैं किसी प्रभावशाली मुसलमान को नही जानता। अकबर हैदरी हैं, पर वह कोई कार्रवाई नही करेंगे।

पता नही, यह पत्र आप तक पहुचेगा भी या नही। मैं भेज तो रहा हू, पर मुझे सन्देह है। अगर पहुच जाय तो सूचित कर दें।

आख के आपरेशन के लिए मेरी पत्नी लदन आई थी। वह ठीक नही रहा। आख की पुतली खिसक गई और एक दूसरा आपरेशन जरूरी था। उनके लिए बड़ी मुसीबत का समय था और बडी तकलीफ रही। वह अब भी नर्सिंग होम में है और धीरे-धीरे अच्छी हो रही है।

क्रिसमस और नववर्ष की शुभकामनाए।

आपका,
एडवर्ड टामसन
(इमेरिटस फ्राम इण्डिया)

२४३. महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
३० नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

चीनी मित्र आये और पाच के वजाय पैंतीस मिनट ले लिये। अन्त में मुझे कोमलता से कहना पडा कि वे अपने समय से सात गुना अधिक ठहर गये।

अगाथा की वाइसराय से जो मुलाकात हुई उसके विवरण की तुम्हारी प्रति साथ में है। मेरा सन्देश इतना ही कहने को था कि वे मुझे अंग्रेज-जाति का मित्र समझें और उसका राजनीति से कोई सरोकार नही था।

आशा है, तुमको मेरा वह पत्र ठीक तरह मिल गया होगा, जिसमें मैंने सुभाष-सबधी गुरुदेव का पत्र भेजा था।

मै आशा रखता हू कि तुम काम से अपने-आपको मार नही रहे हो और इन्दू के हालचाल अच्छे है।

सरूप जो भारी काम कर रही है उससे उसे छुडा देना चाहिए। उसे अपना जर्जर शरीर फिर से बना लेना चाहिए।

प्यार,

बापू

२४४ मुस्तफा-अल-नहास की ओर से

हैलियोपालिस,
१२ दिसम्बर १९३८

प्यारे दोस्त,

अपनी रवानगी के वक्त पोर्ट सईद से आपने जो बढिया खत भेजा था, उसका मुझपर बहुत असर हुआ। यकीन रखिये कि अगर हमारे साथ थोडे दिन रहने की आप अच्छी छाप लेकर गये है तो यहापर भी आपके ऐसे दोस्त है, जो आपके बारे में उतनी ही बढिया यादे रखते हैं।

मैं आपको वे अखबार भेज रहा हू, जिनमें आपके मिस्र में रहने का ब्यौरा दिया गया है। इनसे आपको पता चलेगा कि मिस्र के वफादार लोग आपको कितनी ऊची जगह देते है और आपकी कितनी इज्जत करते है।

फिलहाल मै उस सवाल को आगे लाने में लगा हू, जो कि हमारे सामने है। मुझे उम्मीद है कि अपनी-अपनी आजादी को कायम रखते हुए हम साम्राज्यशाही के खिलाफ अपनी लडाई के एक-जैसे मुद्दो पर एक-दूसरे को बराबर खबर देते रहेगे। हम जैसे-जैसे आगे बढते है, वैसे-वैसे दुनिया की साम्राज्यशाही रुझान के बुरे कारनामे साफ होते जाते है। अफसोस है कि वे ही झगडे और आफत की असली जड है। मि दयालदास के जरिये पोर्ट सईद से आपने अपनी जो किताब भिजवाई, उसके लिए मै आपका शुक्र-गुजार हू। इस किताब के पढने से आपकी बहुत ही बहादुराना जिंदगी के लिए मेरे नजदीक आपकी कद्र और भी बढी।

हमारी नेशनल वफ्दिस्ट काग्रेस की, जिसम बहुत ही अहम मसलो पर बहस होगी, पक्की तारीख की खबर देने की मै जल्दी ही उम्मीद करता हू।

मुझे अफसोस है कि आपकी बहन को उनके सिकदरिया में रहने के दिनो में उनकी खराब तदुरुस्ती की वजह से हमारे दोस्त उतनी इज्जत नही दे सके, जितनी देना उनका फर्ज था और उनके लिए खुशी की बात थी।

प्यारे दोस्त, मेरी सच्ची दोस्ती में यकीन रक्खो। मेरी बीवी मेरे साथ आपको और आपकी मेहरबान लडकी को नेक ख्वाहिशें भेजती है।

आपका,
एस. नहास

फिर से—

आपके जाने के दिन की ली गई कुछ तस्वीरें भेज रहा हू।

एम. एन.

२४५. कामेल एल चादरजी की ओर से

बगदाद
१३ दिसम्बर १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

आज की तहजीब का एक सबसे बडा तोहफा शायद यह है कि बिना निजी ताल्लुकात के भी एक इन्सान दूसरे लोगो से गहरी दोस्ती कायम कर सकता है। आपका मुल्क न जाने कितने सालो से यकीनन बहुत बडा है। कुदरत ने उसे कभी खत्म न होनेवाले जरिये दिये है, हालाकि तहजीब की शुरुआत से ही हिदुस्तान उतना बडा नही रहा, जितना कि आज है। आज तो इसके दिमागी बीज फूटकर ऐसे आदमियो की शक्ल मे खिल उठे है, जिनकी मुल्क को जरूरत है, खास तौर से आप-जैसे निराले शख्स पूरबी आसमान पर चमककर, मेरे और मेरे भाइयो के मन मे बस गये है।

जबतक हिदुस्तान लगातार ऐसे अक्लमदो को पैदा करता रहेगा और दुनिया के लिए ऐसी कुरबानिया करता रहेगा, जो इन्सान की तारीख मे अपने ढग की निराली है, तबतक हिदुस्तान के आनेवाले जमाने के बारे में मैं नाउम्मीद नही हू।

हम आपकी जद्दोजहद की तहेदिल से तारीफ करते है और चाहते है कि हमें भी उसमें थोडा-बहुत हाथ बटाने का मौका मिले, क्योकि

हम दोनो एक ही नाव के मुसाफिर है। साम्राज्यशाही और नाजायज फायदा उठाने के खिलाफ की जानेवाली तहरीक की सच्ची कोशिशो पर अलग-अलग इकाइयो की शक्ल में गौर नही करना चाहिए, बल्कि यह सोचना चाहिए कि न तो कोई जुगराफिया से ताल्लुक रखनेवाली हदें, न सियासी अड़चनें, उन्हें दबा सकती है।

अरब दुनिया के इस हिस्से में रहनेवाले हम जैसे लोगो को यह बात मजूर करनी चाहिए कि हमें आपकी जबरदस्त लडाई की बहुत थोडी जानकारी थी और मिस्टर यूसुफ मेहरअली से, जिनके साथ सिवा इसके और कोई खराबी न थी कि वह हमारे मुल्क में बहुत कम ठहरे, हमें आपके सही मकसद की खबरे पाकर बडी खुशी हुई।

हम बहुत चाहते है कि आपकी तहरीक से ताल्लुक कायम करें और उससे वाकिफ हो। हम आपको और आप जैसे दूसरे हिंदुस्तानी लोगो को निजी तौर से भी जानना चाहते है। मिस्र की तरह क्या आप कभी ईराक आने की बात नही सोचते, जो आपके इतना नजदीक है? अगर मै यह कहू कि जिस तरह हमारा फर्ज है कि आपके बडे मुल्क और उसकी मुल्की और इन्सानी कोशिशो के बारे में जितना भी हो सके उतनी जानकारी हासिल करें, उसी तरह आपको भी अरब दुनिया के इस हिस्से के बारे नें जानकारी हासिल करनी चाहिए तो शायद आप मेरे इस बयान की मुखालफत नही करेंगे।

मुझे पक्का यकीन है कि मि मेहरअली का यह थोडे दिन का सफर आपसे और आपकी तहरीक से, जिसको हम बडी दिलचस्पी के साथ देख रहे है, ताल्लुकात कायम करने की शुरुआत होगी।

इस खत को खत्म करने से पहले मै आपसे गुजारिश करता हू कि अपनी कामयाबी के लिए आप हमारी दिली ख्वाहिशें मजूर करें।

आपका,
कामेल एल चादरजी
सेक्रेटरी
दी पीपल्स रिफार्म पार्टी

२४६. एस. राधाकृष्णन की ओर से

लन्दन
३० दिसम्बर १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे दु ख है कि हिंदुस्तान में आपसे नही मिल पाया। एक या दो चीजें हैं, जिनके बारे में आपसे बातें करना चाहता था।

१ आप जानते हैं, गाधीजी अपना सत्तरवा साल पूरा कर रहे हैं और उनकी अगली सालगिरह पर मेरा विचार उन्हें भेंट करने के लिए एक ग्रथ निकालने का है, जिसमें केवल शुभकामनाए ही नही होगी, बल्कि उनके जीवन और कार्य पर ससार के बडे-बडे विचारको और नेताओ के निबन्ध और विचार भी होगे। ज्योही मै ऑक्सफोर्ड पहुचूगा, आपको उन लोगो की फेहरिस्त भेजूगा, जिन्हें लिखने के लिए निमत्रित किया गया है। फेहरिस्त में आप और कोई नाम जोड सकते है। उसकी मुझे सूचना दे दें। आपकी राय में हमारे भारतीय रजवाडो में से किसीसे लिखने को कहा जा सकता है? मुझे इसकी बडी चिन्ता है। मुझे दक्षिण अफ्रीका भी जाना है और जनरल स्मट्स और रामराव को मैंने ईस्टर की छुट्टियो में उसे निश्चित करने के लिए लिखा है।

१९ सितम्बर से ८ दिसम्बर १९३९ तक दक्षिण कैलिफोर्निया के विश्वविद्यालय में एक सत्र तक के लिए काम करने को वचनबद्ध हू, परन्तु गाधीजी को दी जानेवाली इस भेंट—ग्रथ—की दृष्टि से मुझे इसे स्थगित करना पडेगा। सभा इत्यादि की व्यवस्था के लिए मै आपपर निर्भर रहूगा। मैं ग्रथ को अवसर के अनुरूप बनाने का भरसक प्रयत्न करूगा। वर्धा में मैंने प्यारेलाल से बातचीत की थी और उन्होने कहा कि इसमें उन्हें कोई आपत्ति नही हो सकती। हिन्दू तिथि के हिसाब से हम दिन रक्खेंगे।

आपको भी इसके लिए लगभग एक हजार शब्दो की सामग्री देनी होगी और मार्च सन् १९३९ के अन्त तक आपका लेख मेरे पास पहुच जाय तो ठीक रहेगा।

२ मुझे गाधीजी द्वारा पता लगा कि गवर्नमेंट ऑव इडिया एक्ट में प्रस्तावित सघ के बारे में उनकी मुख्य आपत्ति उस बेमेल तत्र पर है, जो

जनतत्रीय प्रातो तथा सामतवादी राजाओ को साथ-साथ लाकर स्थापित किया जायगा। उनका आग्रह है कि उससे पहले कि राजा लोग सघ में शामिल हो, वे अपने यहा उत्तरदायी शासन स्थापित कर लें। मैंने उनसे पूछा कि अगर राजाओ के प्रतिनिधियो का बहुमत (½+१) लोकप्रिय विधान-मडलो द्वारा चुनकर भेज दिया जाय तो उन्हें कोई आपत्ति होगी ? उन्हें यह पसन्द नही था। आपका क्या विचार है ?

ब्रिटिश सरकार को यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि उनकी मशा हिंदुस्तान की जनता पर सघ को थोप देने की नही है, जबकि काग्रेस उसका उसके वर्तमान रूप में विरोध करती है।

१४ जनवरी तक मै इपीरियल होटल में रहूगा। उसके बाद ऑक्स-फोर्ड जा रहा हू, जहा मेरा पता होगा—१५, बार्डवेल रोड।

आपका,
राधाकृष्णन

२४७. सर स्टैफर्ड क्रिप्स की ओर से

लन्दन
३ फरवरी १९३९

प्रिय नेहरू,

मै बता नही सकता कि आपके लम्बे और मोहक पत्र को पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। मुझे ऐसा लगता था कि हमारे एक-दूसरे के बीच सम्पर्क समाप्त होने का खतरा है, क्योकि हम दोनो ही काम में बहुत ज्यादा व्यस्त थे। हिंदुस्तान की स्थिति का आपने जो वर्णन किया है वह मेरे लिए बहुत ही बहुमूल्य है, यद्यपि इस समय—जैसाकि शायद आपनें अखबारो में पढा होगा—मै घरेलू समस्याओ और मजदूर पार्टी के भीतरी झगडो में इतना फसा हुआ हू कि हिंदुस्तानी या औपनिवेशिक मामलो पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना मेरे लिए मुश्किल है।

फिर भी मुझे इस बात की बडी खुशी है कि मै लन्दन में हिंदुस्तानी स्वतत्रता-दिवस की सभा में बोल सका।

यहा की स्थिति दिन-पर-दिन उग्र होती जा रही है। राष्ट्रीय सरकार के साथ जा मिलने की प्रवृत्ति मजदूर-दल में बढती जा रही है। मैं इसी

भी जाहिर हुए और बहुत-सी चीजें जो एक-सी थी, वे भी सामने आई। तबसे खानगी में और कार्य-समिति में कई बार चर्चाए हुई है। कई मौको पर मै अध्यक्ष-पद से और कार्य-समिति से भी त्यागपत्र देने को तैयार हो गया था, लेकिन मै रुका, क्योकि मैने सोचा कि इससे ऐसे मौके पर सकट पैदा हो जायगा, जब एकता की निहायत जरूरत थी। शायद मेरी भूल हुई।

अब यह सकट ऐसे तरीके पर आया है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। मेरा अपना कार्यक्रम निश्चित करने से पहले मुझे कुछ कल्पना होनी चाहिए कि तुम्हारे खयाल से काग्रेस को क्या होना चाहिए और क्या करना चाहिए। मुझे तो इस बारे में कुछ भी मालूम नही है। वामपक्ष और दक्षिणपक्ष के बारे में और सघ-शासन वगैरा के बारे में बहुत-सी बातें हुई है, फिर भी जहातक मै याद कर सकता हू तुम्हारी सदारत के दौरान में हमने कार्य-समिति में इन सवालो के बारे में कोई खास महत्व की बातो पर चर्चा नही की। मुझे पता नही तुम किसे वामपक्षी और किसे दक्षिणपक्षी समझते हो। अध्यक्ष के चुनाव के दौरान तुम्हारे बयानो में जिस ढग से इन शब्दो का प्रयोग किया गया उनसे यह अर्थ निकलता था कि गाधीजी और कार्य-समिति में जो उनकी मडली समझी जाती है वे दक्षिणपक्षी नेता है। उनके विरोधी जो भी हो, वे वामपक्षी है। यह मुझे बिल्कुल गलत-बयानी दिखाई देती है। मुझे ऐसा मालूम हाता है कि कई कहे जानेवाले वामपक्षी कथित दक्षिणपक्षियो से अधिक दक्षिणपक्षी है। तेज भाषा और काग्रेस के पुराने नेतृत्व की नुक्ताचीनी करने और उनपर हमला करने की क्षमता राजनीति में वामपक्ष की कसौटी नही है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि तात्कालिक भविष्य में हमारे मुख्य खतरो में से एक यह है कि ऐसे लोग पदारूढ होगे और जिम्मेदारी के स्थान में आ जायगे, जिनमें कुछ भी जिम्मेदारी की भावना नही है या स्थिति को वे अच्छी तरह समझते नहीं है और न उनमें ऊचे दर्जे की बुद्धि मालूम होती है। वे ऐसी स्थिति पैदा कर देंगे, जिससे बडी प्रतिक्रिया हुए बिना नही रहेगी और फिर सच्चे वामपक्षियो का सफाया हो जायगा। चीन का उदाहरण हमारे सामने है और मैं नहीं चाहता कि हिंदुस्तान उस दुर्भाग्यपूर्ण रास्ते को अपनाये। मेरा बस चले तो मै उसे रोकू।

मेरे खयाल से वामपक्ष और दक्षिणपक्ष शब्दो का प्रयोग आम तौर पर बिल्कुल गलत और गडबड पैदा करनेवाला हुआ है। यदि इन शब्दो के बजाय हम नीतियो के बारे में बात करे तो कही बेहतर होगा। तुम किस नीति के समर्थक हो ? सघ-विरोधी ? बहुत ठीक। मेरा खयाल है कि कार्य-समिति के सदस्यो का बडा बहुमत उसका समर्थन करेगा और इस मामले में उनकी कमजोरी का सकेत करना न्यायपूर्ण नही है। क्या तुम्हारे लिए यह बेहतर न होता कि इस मामले की चर्चा कार्यसमिति में पूरी तरह की जाती और इस बारे में कोई तजवीज भी पेश की जाती और फिर उसकी प्रतिक्रियाए देखी जाती ? अपने साथियो के साथ इस मामले की पूरी चर्चा किये बिना उन सबपर पीछे हटने का दोष लगाना अवश्य ही न्याय नही था। मै यहा उस बात को नही दोहराऊगा जो मैने तुमसे इस असाधारण अभियोग के बारे में कही थी कि सघ-शासन मे मत्रिमडलो का बटवारा पहले ही हो चुका है। अनिवार्य रूप से अधिकाश लोगो ने सोचा कि कार्य-समिति के तुम्हारे साथी दोषी थे।

तुम्हे याद होगा कि मैने यूरोप से तुमको और कार्य-समिति को लम्बी रिपोर्ट भेजी थी। मैने बहुत ब्यौरेवार चर्चा की थी कि सघ-शासन के प्रति हमारा क्या रवैया होना चाहिए और निर्देशो की माग की थी। तुमने मुझे कोई निर्देश नही भेजा, पहुच तक नही दी। गाधीजी मेरे तरीके से सहमत थे और मुझे बताया गया है कि कार्य-समिति के अधिकाश सदस्य भी सहमत थे। मुझे अभी तक पता नही कि तुमपर क्या प्रति-क्रियाए हुईं, परन्तु मुझे सूचना देने की बात छोड दी जाय तो भी क्या तुम्हारे लिए यह मौका नही था कि इस मामले की कार्यसमिति में खूब चर्चा की जाय और इधर या उधर फैसला कर लिया जाय ? दुर्भाग्य से इस मामले में और दूसरे मामलो में तुमने कार्यसमिति मे बिल्कुल निष्क्रिय वृत्ति धारण की है, हालाकि कभी-कभी बाहर तुमने अपने विचार प्रकट किये है। नतीजा यह निकला कि तुमने एक निर्देशक अध्यक्ष की अपेक्षा स्पीकर के रूप में अधिक काम किया है।

महासमिति के दफ्तर का काम पिछले साल के दौरान में बहुत बिगड गया है। तुमने उसे देखा तक नही और तुम्हारे नाम के पत्रो और तारो

का जवाब शायद ही दिया गया हो। नतीजा यह होता है कि दफ्तर के बहुत-से मामले अनिश्चित काल तक लटके रहते है। ठीक जिस समय हमारे सगठन को गहरे ध्यान की जरूरत है, उस समय मुख्य कार्यालय कारगर तरीके पर काम नही करता।

हमारे सामने रियासतो का सवाल है, हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न है और किसानो तथा मजदूरो की समस्या है। इनके बारे में कई दृष्टिकोण है और कुछ सघर्ष भी है। क्या इनमे से किसीपर तुम्हारे निश्चित विचार है जो अपने साथियो के विचारो से भिन्न है ? बाम्बे ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल को लो। मै उसकी कुछ धाराओ से सहमत नही हू और यदि मै यहा होता तो उन्हे बदलवाने की पूरी कोशिश करता। क्या तुम भी असहमत हो और हो तो क्या तुमने उन्हे बदलवाने की कोशिश की ? किसानो-सबधी आम स्थिति के सबध में, बगालसहित, विभिन्न प्रान्तो में, मुझे पता नही कि तुम्हारे निश्चित विचार क्या है।

प्रान्तीय काग्रेसी सरकारें तेजी से छोटे-मोटे सकटो की ओर जा रही है और यह बिल्कुल सभव है कि रियासती आन्दोलन के बढने से कोई बडा सकट उपस्थित हो जाय, जिसमें हम सब और प्रान्तीय सरकारे भी फस जायगी। तुम्हारे खयाल से हमें कौन-सा रास्ता अख्तियार करना चाहिए ? बगाल में मिले-जुले मत्रिमडल की तुम्हारी इच्छा का सविधान-वाद की ओर बह जाने के खिलाफ तुम्हारी नाराजी के साथ मेल नही बठता। मामूली तौर पर इसे एक दक्षिणपक्षी कार्रवाई समझा जायगा और खास तौर पर अब जबकि स्थिति का तेजी के साथ विकास हो रहा है।

और फिर वैदेशिक नीति का भी सवाल है। तुम जानते हो कि खास तौर पर इस नाजुक ... पर मै उसे ... अहमियत देता हू। जहातक मै समझ सका ... देते ... अभी तक मुझे ठीक-ठीक पता नही है ... ने क ... हो। मुझे सामान्य रूप में गाधीजी का न ... औ ... तरह सहमत नही हू, हालाकि अतर्रा ... और ... ते है औ ... न।

अक्सर उसे स्वीकार किया है।

ये और कई दूसरे सवाल मेरे मन मे पैदा होते है और मै जानता हू कि और बहुत-से लोगो को भी उनसे परेशानी होती है। उनमे वे लोग भी शामिल है, जिन्होने चुनाव में तुम्हारे लिए राय दी है। यह बिल्कुल मुमकिन है कि इनमें से बहुत-से लोग काग्रेस में उठनेवाले सवालो पर बिल्कुल दूसरी तरह राय दें और वहा कोई नई स्थिति पैदा हो जाय।

कार्य-समिति की रचना से बहुत-सी समस्याए खडी होगी। अतिम समस्या ऐसी समिति बनाने की होगी, जिसे महासमिति का और आम तौर पर काग्रेस का विश्वास प्राप्त हो। वर्तमान परिस्थिति में यह स्वय बहुत कठिन बात है। ऐसी समिति का होना बहुत अच्छी बात नही है, जो ऐसे लोगो की इच्छा पर कायम रहती है, जो जिम्मेदार नही समझे जाते और जिनकी प्रमुखता का मुख्य कारण यह हो कि वे जिसे दक्षिण-पक्षी समझते है, उनकी उन्होने टीका-टिप्पणी की है। ऐसी समिति पर किसीका, चाहे वह वामपक्षी हो या दक्षिणपक्षी, विश्वास नही होगा। वह या तो उठाकर फेंक दी जायगी या महत्वहीन बनकर रह जायगी।

यह बिल्कुल सभव है कि रियासती सग्राम के बढने पर वल्लभभाई और गाधीजी तक उसमे अधिकाधिक फस जायगे। हिंदुस्तान की राजनीति में वह केन्द्रीय वस्तु बन जायगी और कोई कार्यसमिति, जिसमें दूसरे लोग होगे, कारगर नही होगी और उसका महत्व नही रहेगा। पिछले दस-पद्रह साल में कार्यसमिति का हिंदुस्तान में और बाहर भी बहुत ऊचा दर्जा रहा है। उसके फैसलो का कुछ अर्थ माना जाता है और उसकी बात में ताकत होती है। वह इतनी चिल्लाती नही है, परन्तु जो कुछ वह कहती है उसके पीछे ताकत और क्रिया होती है। मुझे डर है कि हमारे बहुत-से कथित वामपक्षी और किसी बात की अपेक्षा तेज भाषा में अधिक विश्वास करते है। मेरे दिल में नरीमान-ढग के सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के लिए कुछ भी प्रशसा नही है और इस किस्म के बहुत लोग है।

हम दुखदायी पेच में फस गये हैं और फिलहाल मुझ उसम से

निकलने का कोई रास्ता नजर नही आता। मैं पूरी कोशिश करने को तैयार हू, लेकिन स्पप्टीकरण और नेतृत्व तुम्हारी तरफ से होना चाहिए और तभी दूसरो के लिए यह निश्चय करना सभव होगा कि उनका मेल बैठता है या नही। इसलिए तुमको मेरा सुझाव है कि तुम स्थिति के सभी गूढार्थो की जाच करो, ऊपर बताई समस्याओ पर विचार करो और उनपर एक ब्यौरेवार नोट लिखो। इसे प्रकाशित करने की जरूरत नही, परन्तु उसे उन लोगो को दिखलाना चाहिए, जिन्हे तुम सहयोग के लिए निमत्रण दो। ऐसा नोट चर्चा का आधार बन जायगा और चर्चा से तुमको मौजूदा गुत्थी सुलझाने में मदद मिलेगी। बातचीत से बहुत फायदा नही होता। वे अस्पष्ट और अक्सर गुमराह करनेवाली होती ह और हमारे यहा पहले ही काफी अस्पष्टता रही है। मैं चाहता हू कि तुम ब्रिटिश सरकार को चुनौती देने के बारे में अपने सुझाव का विस्तार करो। ठीक-ठीक, तुम इस बारे में क्या कार्रवाई करना चाहते है और बाद में क्या करोगे ? जैसा मैंने तुमको बता दिया है, मुझे यह विचार बिल्कुल पसन्द नही है, परन्तु यह सभव है कि अगर तुम इसका विस्तार करो तो शायद मैं उसे ज्यादा अच्छी तरह समझ सकू। मैंने अखबारो में तुम्हारा बयान देखा है। मेरे लिए वह इतना अस्पष्ट है कि मैं तुम्हारी इस स्थिति को नही समझ सकता। इसलिए मेरा अनुरोध है कि पूरा स्पप्टीकरण करो।

सार्वजनिक मामलो में सिद्धान्त और नीतिया होती है। हममें एक-दूसरे को समझने और साथियो की नेकनीयती में विश्वास रखने की बात भी होती है। अगर यह समझ और विश्वास नही है तो लाभदायक सहयोग बहुत कठिन हो जाता है। उम्र बढने के साथ-साथ मैं साथियो के बीच इस विश्वास और समझ को अधिकाधिक महत्व देने लगा हू। मैं बढिया-से-बढिया उसूलो का भी क्या करू, अगर मुझे सबधित व्यक्ति में भरोसा न हो ? अनेक प्रान्तो की दलबदिया इसका उदाहरण है और जो लोग मामूली तौर पर सम्माननीय और खरे है उनमें अत्यन्त कटुता और अक्सर बिल्कुल बेउसूलपन पाया जाता है। मैं इस तरह की राजनीति को हजम नही कर सकता और मैंने कई साल से अपने-आपको

उससे बिल्कुल अलग रखा है। मै किसी गुट या किसी दूसरे आदमी के समर्थन के बिना निजी तौर से काम करता हू, हालाकि मुझे खुशी है कि मुझे बहुतो का विश्वास प्राप्त है। मुझे लगता है कि यह प्रान्तीय खराबी अब अखिल भारतीय स्तर पर फैलाई जा रही है। यह मेरे लिए बडी गम्भीर चिन्ता का विषय है।

तो हम फिर इस बात पर आ जाते है राजनैतिक समस्याओ के पीछे मनोवैज्ञानिक समस्याए है और उनसे निपटना हमेशा अधिक कठिन होता है। इसका एक ही उपाय है कि एक-दूसरे के साथ बिल्कुल खुले दिल से बात करें और इसलिए मुझे आशा है कि हम सब पूरी तरह साफ-साफ बातें करेंगे।

मै यह आशा नही रखता कि तुम इस पत्र का जवाब फौरन दोगे। इसमें कुछ दिन लगेंगे। लेकिन मै चाहूगा कि तुम मुझे इसकी पहुच भेज दो।

तुम्हारा,
जवाहर

२५० वल्लभभाई पटेल की ओर से

बम्बई
८ फरवरी १९३९

प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पिछला पत्र बारडोली में मिला, जो मेरे उस आग्रह के उत्तर में था कि तुम सयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर करो या एक स्वतत्र वक्तव्य दो। मैंने तुम्हे यह सुझाव बापू के कहने पर दिया था। तुम्हारा जवाब भी मैंने उन्हे दिखा दिया है और उन्होने मुझसे कहा है कि इसके बारे में मै अपने विचार तुम्हे लिख दू। वह स्वय भी उस पत्र से अप्रसन्न हुए, परन्तु मैंने तुम्हे और ज्यादा कष्ट देना ठीक नही समझा। सयुक्त वक्तव्य भी उन्हीके कहने से जारी किया गया था। वास्तव में मैंने उनसे कह दिया था कि मुझपर कीचड उछालने का यह एक और बहाना हो जायगा, लेकिन वह नही माने और मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया। मौलाना ने अन्तिम क्षण पर अपना नाम वापस ले लिया।

वास्तव में मुझे प्रसन्नता है कि हम हार गये। बिना एक विचार की

कार्य-समिति के कोई भी प्रभावकारी काम सभव नही है। मै तो सदा ऐसे अवसर के लिए भगवान से प्रार्थना करता रहा हू।

जिससे मै सबसे ज्यादा घृणा करता हू वह वह तरीका है, जो इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनेको वामपक्षी कहने का दावा करनेवाले लोगो द्वारा, और उससे भी ज्यादा अध्यक्ष द्वारा, अपनाया गया, जिसका हमपर यह आरोप है कि हम ब्रिटिश सरकार के साथ षड्यन्त्र में शामिल हो गये है और स्थायी तौर पर सघ-मत्रिमडल भी बना लिया है। दुश्मनो को भी हमारी ईमानदारी पर भरोसा है, परन्तु हमारे अध्यक्ष को नही। किसी तरह भी हमे इस बारे मे सदेह नही है कि हमे क्या करना है और मैने सुभाष को लिख भी दिया है कि हम उनकी सुविधा से बाहर निकल आने को तैयार है। जीवत तुम्हे उस पत्र की एक नकल दिखायेंगे, जो मैने कल उन्हे भेजा है।

मै तुम्हारे विचार नही जानता, परन्तु इतनी आशा तो है कि हमने जो कुछ करने का सोचा है, उसके लिए कम-से-कम तुम हमें दोष नही दोगे। मेरा विचार है कि मेरी किस्मत में ही गालिया खाना बदा है। बगाल के अखबार मुझपर आगबबूला है और खरे और नरीमान-काड के लिए वे मुझे दोष देते है, हालाकि मेरे सब साथी भी इन कामो के लिए सयुक्त रूप से जिम्मेदार हैं। तथ्य यह है कि डा. खरे के मामले में सुभाष शुरू से आखिर तक उपस्थित थे और उन्होने ही सारी चीज का सचालन किया था।

बडौदा में भी मेरे कारण एक बवडर उठ खडा हुआ है। महाराष्ट्र के अखबारो मे मेरे विरुद्ध जहर भरा रहता है। वे मेरे खून के प्यासे है।

राजकोट की वजह से सारे काठियावाड मे आग-सी सुलग रही है। वहा जबरदस्त जन-जागृति हो गई है। अगर रेजिडेन्टो ने दबाव न डाला होता तो सारे नरेश फौरन झुक जाते।

आशा है, तुम स्वस्थ होगे।

तुम्हारा,
वल्लभभाई

२५१ सुभाषचंद्र बोस की ओर से

चौरम, जिला गया
१० फरवरी १९३९

प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा लंबा पत्र कलकत्ता में मिला। तुमने मेरी कमजोरियों का जिक्र किया है। जबकि मुझे उनका पूरी तरह भान है, मुझे कहना चाहिए कि कहानी का दूसरा पहलू भी है। इसके अलावा किसीको उन बाधाओं को नहीं भुलाना चाहिए, जिनका मुझे सामना करना पड़ा। उनका मैं इस पत्र में जिक्र नहीं करना चाहता, कुछ तो इसलिए कि उससे एक विवाद छिड़ जायगा और कुछ मुझे दूसरों की आलोचना करनी पड़ेगी। अब मुख्य प्रश्न त्रिपुरी कांग्रेस के कार्यक्रम का है। जयप्रकाश तुमसे १२ ता० को मिलेंगे और कार्यक्रम के बारे में मेरे विचार तुम्हें बतायेंगे। मैं उसी समय तुमसे मिलना चाहता, किन्तु मैं नहीं समझता कि यह संभव हो सकेगा। जो हो, मैं ता० २० को इलाहाबाद में तुमसे मिलने की कोशिश करूंगा।

राजकोट आदि के बारे में मैंने तुम्हारा वक्तव्य देखा। वक्तव्य बहुत अच्छा है, किन्तु मेरे विचार से उसमें एक दोष है। ब्रिटिश सरकार राजाओं के जरिये कांग्रेस से लड़ना चाहती है, किन्तु हमें उसके जाल में नहीं फंसना चाहिए। रियासती समस्याओं के बारे में राजाओं के साथ मोर्चा लेते हुए भी, हमको स्वराज्य के प्रश्न पर ब्रिटिश सरकार को सीधी चुनौती देनी चाहिए। तुम्हारे वक्तव्य में मुझे यह विचार नहीं मिला और मैं अनुभव करता हूं कि अगर हम स्वराज्य का प्रश्न छोड़ देते हैं और केवल रियासती प्रश्नों पर ब्रिटिश सरकार और राजाओं से लड़ना शुरू कर देते हैं तो हम अपनी असली लड़ाई से भटक जाने का खतरा मोल ले रहे हैं। शेष मिलने पर।

सप्रेम तुम्हारा,
सुभाष

२५२. वाई टी वू की ओर से

दी नेशनल कमिटी,
ऑव यगमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन ऑव चाइना
१३१, म्यूजियम रोड, शघाई
२३ फरवरी १९३९

प्रिय श्री नेहरू,

आपसे बारडोली में मिलने के बाद मै कुशलपूर्वक और सानन्द घर लौट आया। बारडोली में इतनी व्यस्तता के बीच भी आपने हमसे जो भेंट की थी और जहाज पर मेरे पास आपने जो सदेश भेजा था, उसके लिए मै एक बार फिर कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हू। वह सदेश और साथ-ही-साथ जो सदेश आपने मिस्टर साई को भेजा था, उन दोनो का ही चीनी भाषा में अनुवाद किया गया और वे सिंगापुर, हागकाग तथा शघाई में चीनी और विदेशी पत्रो मे प्रकाशित हुए।

यह पत्र मै आपको उस बातचीत की पुष्टि करने के लिए लिख रहा हू, जो हमने आपकी आत्मकथा को चीनी भाषा में अनुवादित करने के बारे में की थी। हम इस कार्य को जल्दी ही आरम्भ करने जा रहे है और मेरा खयाल है कि आप अपने प्रकाशको को भी इसकी सूचना दे देना चाहेगे। जैसाकि मैने आपसे बारडोली में कहा था, चीन अन्तर्राष्ट्रीय कापीराइट योजना का सदस्य नही है और वह लेखको तथा प्रकाशको से अनुमति लिये बिना ही पुस्तकें छापता रहा है। फिर भी हमारे एसो-सिएशन प्रेस ने अपनी यह नीति रखी है कि वह कम-से-कम लेखक को सूचना दे देता है और जब कभी सम्भव होता है तब शिष्टाचार के नाते अनूदित पुस्तक की कुछ प्रतिया भी उसे भेज देता है।

अनुवाद को हमें कुछ सक्षिप्त करना पडेगा, जिससे कि उसका आकार कुछ कम हो जाय और उसे सस्ते दामो में निकाला जा सके। अगर आपको इसमें कोई आपत्ति हुई तो हम ऐसा नही करना चाहेगे।

निश्चय है कि आपकी इस पुस्तक से चीनी पाठको को बडी प्रेरणा

मिलेगी, जैसीकि कुछ साल पहले गाधीजी की आत्मकथा के अनुवाद से मिली थी ।

भवदीय,
वाई. टी. वू
प्रधान सम्पादक

२५३ शरच्चन्द्र बोस के नाम

इलाहाबाद
२४ मार्च १९३९

प्रिय शरत्,

गाधीजी मौलाना आज़ाद से मिलने आज सुबह यहा पहुचे और उन्होने मुझे आपका २१ मार्च का उनके नाम का खत दिखाया । उसे पढकर मुझे दुख और अचरज हुआ । हम सब जानते है कि प्रमुख काग्रेसियो में नीति और कार्यक्रम की बातो पर मतभेद है और हमने अक्सर अपने-अपने नजरिये को प्रकट किया है, हालाकि हम साथ-साथ चलने में कामयाव हुए है । आम तौर पर काग्रेस ने गाधीजी के कार्यक्रम का पालन किया है और उनके नेतृत्व को स्वीकार किया है । खुद मुझे ऐसे मतभेदो में कोई नुकसान दिखाई नही देता, बशर्ते कि सामान्य कडी बनी रहे और हम मिलकर काम करते रहे । हमारे आन्दोलन में ये प्राणशक्ति के चिह्न है । परन्तु आपके पत्र में शायद ही किसी नीति या कार्यक्रम के सवाल का जिक्र है । उसमें निजी मुद्दो का जिक्र है और खास आदमियो के खिलाफ गम्भीर आरोप लगाये गए है । उससे बहस नीची सतह पर उतर आती है और यह जाहिर है कि यदि किसी आदमी या गुट की दूसरे के खिलाफ ऐसी राय हो तो किसी सामान्य कार्य में आपसी सहयोग अस-भव हो जाता है । मुझे पता नही कि आपके पत्र में इस बारे मे सुभाष के विचार कहातक व्यक्त होते है । कुछ भी हो, यह जाहिर है कि आपने जो निजी सवाल उठाये है, उनकी सफाई नही होगी तो उनसे कारगर सहयोग में बाधा पडेगी ।

आपके पत्र से निजी मुद्दा तीव्र हो जाता है । लेकिन यह सवाल तो पहले भी था और, जैसा आपको मालम है, त्रिपुरी में वह प्रमुख रहा ।

सबध था। और बातें जिनका आपने जिक्र किया है बहुत-कुछ मेरी जानकारी के बाहर की है, लेकिन जो आरोप आप लगाते है वे इतने आश्चर्यजनक है कि मुझे उनके सच होने पर भरोसा नही होता। मै मानता हू कि काग्रेस के दिनो में वोट मागने का काम व्यापक रूप में हुआ और सब तरह की बाते कही गई होगी। मुझे इस तरह की चीज से अरुचि है, इसलिए मैं दूर-दूर रहा और प्रतिनिधियो के शिविर में भी नही गया। अलबत्ता, शुरू-शुरू में उत्तर प्रदेश काग्रेस-समिति की सभा में गया था। लेकिन आपके आरोप पुरानी कार्यसमिति के कुछ प्रमुख सदस्यो के खिलाफ है। मुझे इनके बारे में कोई जानकारी नही है और मुझे विश्वास है, आप सहमत होगे कि व्यक्तियो के विरुद्ध निश्चित सबूत के बिना ऐसे आरोप योही नही लगाये जा सकते। किसीके लिए यह कहना बेहूदा बात थी कि सुभाष की बीमारी बनावटी थी और जहातक मै जानता हू मेरे किसी साथी ने इसका सकेत भी नही किया। सच तो यह है कि हम सबको बडी चिन्ता थी।

भूलाभाई देसाई ने क्या कहा होगा, इसका जवाब देना तो उन्हीका काम है। मै तो यही मानता हू कि आपने गलत समझा, क्योकि मै कल्पना नही कर सकता कि वह ऐसी बात कहेगे।

कार्यवाहक अध्यक्ष के निर्णय अथवा व्यवहार के बारे में कुछ भी कहना मेरा काम नही है। परन्तु मुझे विश्वास है कि फिर से सोचने पर आप मुझसे सहमत होगे कि वह बहुत कठिन स्थिति में थे और उन्होने कार्रवाई शान और इन्साफ के साथ चलाई। राष्ट्रीय माग के प्रस्ताव पर आपको सशोधन रखने देने में उन्होने किसी बात को खीचा होगा, परन्तु आपको काग्रेस के सामने अपना नजरिया रखने का पूरा मौका था। मतदान के समय प्रस्ताव का विरोध करनेवाले आप अकेले ही आदमी थे। मैं आपको बताऊ कि मुझे इसपर कितना अचरज हुआ था, क्योकि मै कल्पना नही कर सकता था कि अपने-आपको वामपक्षी समझनेवाला कोई काग्रेसी उसका विरोध करेगा।

त्रिपुरी में मेरे निवास के दिनो में प्रतिनिधि-कैपो से तरह-तरह की खबरें और अफवाहे मेरे कानो तक पहुचती थी। कुछ तो बहुत ही

भद्दी थी, परन्तु मैंने प्रमाण के बिना किसीको भी मानने से इन्कार कर दिया। आपकी जाच के लायक एक मामला बगाल के प्रतिनिधियो को प्रतिनिधि-टिकिट देने का था। यह जिम्मेदार व्यक्तियो का बयान था और महासमिति के दफ्तर से किसी हद तक उसका समर्थन हुआ कि बहुत-से टिकिट ऐसे लोगो के लिए जारी किये गए, जो त्रिपुरी नही आये थे। यह भी कहा गया कि प्रतिनिधियो को काग्रेस में लाने के लिए बडी-बडी रकमें खर्च की गई।

मेरे खयाल से आपके या दूसरो के लगाये हुए विविध आरोपो की कुछ-न-कुछ जाच करना वाछनीय है। यह अनुचित है कि ऐसे आरोप अस्पष्ट रूप में लगाये जाय, और बहुत-से आदमी उन्हे मान लें तो इससे वह साबित नही हो जाता। हम अपने सार्वजनिक जीवन को एक-दूसरे की निन्दा की सतह तक गिरने नही दे सकते।

आपने काग्रेसी मत्रियो का जिक्र किया है। मै उनकी तमाम प्रवृत्तियो का बहुत प्रशसक नही हू, लेकिन त्रिपुरी में उन्होने जो भाग लिया उसपर आपकी आपत्ति से मुझे अचरज होता है। क्या मत्री होने के कारण उन्हे काग्रेस में भाग नही लेना चाहिए? यह तो अजीब प्रस्ताव है और मेरे विचार से गलत है। जहातक मुझे मालूम है वे अपनी निजी हसियत में काम कर रहे थे और इसका उन्हे पूरा हक था। उनके 'भौतिक प्रभाव' से आपका क्या मतलब है? मै समझता हू कि इसकी सफाई हो जानी चाहिए, क्योकि उसके विचित्र गूढार्थ है, जो बिल्कुल अनुचित है। मेरी समझ में यह भी नही आता कि काग्रेस की प्रवृत्तियो में भाग लेने का अर्थ काग्रेस पर छा जाना हो। इससे तो वे बहुत दूर है।

मैंने आशा रखी थी कि भीतरी और बाहरी सकट के इन दिनो में काग्रेसियो में बहुत-कुछ सहयोग हो सकेगा, और इसके लिए त्रिपुरी में और पहले भी मैंने परिश्रम किया। मुझे साफ नजर आता है कि किसी कार्रवाई अथवा वामपक्षी कार्यक्रम के पहले यह अत्यावश्यक है कि हम कारगर तौर पर काम करें। अगर हम ऐसा नही करते तो सारे कार्यक्रम फिजूल है और उनका कोई नतीजा नही निकलता, और हममे धीरे-धीरे परन्तु निश्चित रूप से यही वृत्ति आ रही है। इसी वजह से मैंने दिल्ली

से सुभाष को तार द्वारा सुझाव दिया था कि त्रिपुरी के प्रस्ताव के अनुसार कार्यसमिति जल्दी बना ली जाय । मैंने यह भी सुझाया था कि अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का विचार करने के लिए महासमिति की बैठक की जाय ।

त्रिपुरी के प्रस्ताव में काग्रेस के अध्यक्ष और गाधीजी के बीच सह-योग की कल्पना की गई थी और नीति थोडी बहुत ज्यो-की-त्यो जारी रहनेवाली थी । आपके पत्र से यह अर्थ निकलता है कि यह सभव नही है । मुझे मालूम नही कि सुभाष का भी यही विचार है या क्या । है तो स्पष्ट ही ऐसी ग्रिच पैदा हो गई है जिसे महासमिति ही मिटा सकती है और महासमिति की बैठक जितनी जल्दी हो जाय, उतना अच्छा है ।

मै हमेशा की तरह जोर के साथ महसूस करता हू कि हमे जो नीति और कार्यक्रम चलाना है उसके बारे में हमारे अपने दिमाग साफ होने की बहुत ज्यादा जरूरत है । खास तौर पर कथित वामपक्षियो को साफ रहना चाहिए । वामपक्षियो के लिए अस्पष्ट रहना और दु साहस की स्थिति में बह जाना खतरनाक है । मेरा अनुरोध है कि सुभाष अपनी स्थिति साफ करें और आपको भी मेरा यही सुझाव है । मै देखता हू कि बहुत-से लोग, जो अपने-आपको वामपक्षी कहते है, ऐसे उपाय और नीतिया सुझाते है जो बहुत दक्षिणपक्षी और नरम है । बगाल में मिले-जुले मत्रिमडल के सवाल को ही लीजिये । किन्ही हालात में इसकी कल्पना की जा सकती है, परन्तु इस समय तो यह निश्चित रूप से एक दक्षिणपक्षी कदम है । मेरी समझ में नही आता कि आप बगाल में सदिग्ध हालात मे मिला-जुला मत्रिमडल क्यो चाहे और फिर भी दूसरी जगह काग्रेस-मत्रिमडलो पर आपत्ति करें, हालाकि कमजोरिया होते हुए वे भी बेहतर हालात में काम कर रहे है ।

आपने त्रिपुरी में कार्यसमिति के कुछ पुराने सदस्यो की तरफ से अडगेबाजी होने का जिक्र किया । मै नही जानता, आपका इससे क्या मतलब है । किसी व्यक्ति या गुट के काग्रेस के सामने कोई प्रस्ताव रखने पर आपका ऐतराज हो तो बात दूसरी है । इसके अलावा मै नही जानता कि वहा क्या अडगेबाजी की गई ।

आपने अपने पत्र में ऐसी भाषा इस्तेमाल की है, जो बहुत ही तेज और

कडवी है। मुझे उसे पढकर बडा अफसोस हुआ और मुझे उसका औचित्य मालूम नही हुआ। मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ इस बात से हुई कि तमाम राजनैतिक प्रश्नो पर व्यक्तिगत मामले छा गये है। यदि काग्रेसजनो में सघर्प होना ही है तो मै दिल से आशा रखता हू कि उसे ऊची सतह पर रखा जायगा और नीति और सिद्धान्त के मामलो तक ही वह सीमित रहेगा।

' मै इस पत्र की नकल सुभाप को भेज रहा हू। गाधीजी ने भी इसे देख लिया है।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

श्री शरत्चन्द्र बोस,
कलकत्ता

२५४ सुभापचद्र बोस की ओर से महात्मा गाधी के नाम

जीलगोरा पो आ
जिला मानभूम, बिहार
२५ मार्च १९३९

प्रिय महात्माजी,

आशा है, आपने आज शनिवार २५ तारीख का मेरा वह बयान देख लिया होगा जो मैने उन लोगो को जवाब देने के लिए निकाला है, जो मुझ-पर काग्रेसी मामलो में गतिरोध पैदा करने का दोष लगा रहे है। हमारे सामने तात्कालिक और जरूरी समस्या नई कार्यसमिति का गठन करने की है। इस समस्या को सतोपजनक रूप से हल करने के लिए व्यापक महत्व रखनेवाली कुछ दूसरी समस्याओ पर हमको पहले विचार करना चाहिए। फिर भी मै प्रथम समस्या को पहले हाथ में लूगा।

इस समस्या के बारे में अगर आप कृपाकर नीचे लिखे मुद्दो पर अपनी राय मुझे बता सकेगे तो मै आभारी होऊगा

१ कार्यसमिति के गठन की आपकी मौजूदा कल्पना क्या है ? क्या वह समानशील होनी चाहिए या काग्रेस के भीतर मौजूद विभिन्न पार्टियो या गुटो के आदमी उसमें लिये जाने चाहिए, ताकि समिति कुल मिलाकर, जहातक सभव हो, काग्रेस के सामान्य स्वरूप की दिग्दर्शक

हो सके ।

२ अगर आपकी अब भी यही राय हो कि समिति को समानशील होना चाहिए तो जाहिर है कि एक ओर मेरा जैसा आदमी तथा दूसरी ओर सरदार पटेल एव आप लोग एक ही समिति मे नही रह सकते। (मै यहा यह कह दू कि मैने इस विचार का विरोध किया है कि समिति को समानशील होना चाहिए ।)

३ अगर आप इससे सहमत हो कि कार्यसमिति मे विभिन्न पार्टियो अथवा गुटो का प्रतिनिधित्व हो तो हरेक की सख्या कितनी हो ?

मेरी राय में काग्रेस में दो मुख्य पार्टिया या 'ब्लॉक' है। उनका सख्याबल कम-ज्यादा बराबर-बराबर है । अध्यक्षीय चुनाव में हमारा बहुमत रहा । त्रिपुरी में बहुमत दूसरे पक्ष का था, किन्तु ऐसा काग्रेस-समाजवादी पार्टी के रुख के कारण हुआ । अगर काग्रेस-समाजवादी पार्टी तटस्थ न रहती तो अनेक बाधाओ के होते हुए भी, (इनका मै बाद की चिट्ठी में या मिलने पर जिक्र करूगा) खुले अधिवेशन मे हमको बहुमत मिलता ।

४ मुझे यह व्यवस्था न्यायसगत प्रतीत होती है कि सात सदस्यो के नाम मै सूचित करू और सात नाम सुझाने के लिए आप सरदार पटेल से कहे ।

५ इसके अलावा अगर मुझे अध्यक्ष बना रहना हो और ठीक तरह से काम करना हो तो सेक्रेटरी मेरी पसद का होना चाहिए ।

६ कोषाध्यक्ष का नाम सरदार पटेल सुझा सकते हैं ।

अब मै पन्त-प्रस्ताव के एक-दो मुख्य फलितार्थों का जिक्र करूगा। (मै इस बारे में विस्तार से अलग चिट्ठी लिखूगा) । एक तो यह कि क्या आप इसे मेरे प्रति अविश्वास का प्रस्ताव समझते है और क्या आप यह चाहेगे कि उसके फलस्वरूप मै इस्तीफा दे दू ? मै आपसे यह प्रश्न इसलिए पूछता हू कि इस प्रस्ताव की स्वय उसके समर्थको ने भी अनेक व्याख्याए की है ।

दूसरे, पन्त-प्रस्ताव के पास हो जाने के बाद अध्यक्ष की सही स्थिति क्या है ? काग्रेस-सविधान की धारा १५ कार्यसमिति को नियुक्त करने के बारे में अध्यक्ष को कुछ अधिकार देती है और सविधान की उस धारा में

अभी तक कोई परिवर्तन नही हुआ है। साथ ही पन्त-प्रस्ताव यह कहता है कि कार्यसमिति मुझे आपकी इच्छा के अनुसार बनानी चाहिए। इसका असली नतीजा क्या हुआ ? क्या मेरा कोई स्थान रहता है ? क्या आप कार्यसमिति के सदस्यो की सूची अपनी इच्छा के अनुसार बनायेगे और मुझे आपके फैसले की घोषणा कर देनी होगी ? इसका नतीजा यह होगा कि काग्रेस-सविधान की धारा १५ उसमें तब्दीली हुए विना ही रद्द हो जायगी।

इस बारे मे मुझे यह कहना चाहिए कि पन्त-प्रस्ताव मे उपर्युक्त धारा स्पष्टत अवैधानिक और अनियमित है। असल मे तो पन्त-प्रस्ताव सारा ही देर में आने के कारण अनियमित था। यह मेरे अधिकार में था कि मै पूरे पन्त-प्रस्ताव को अनियमित करार दे देता, जिस प्रकार कि मौलाना आजाद काग्रेस के खुले अधिवेशन में राष्ट्रीय मागवाले प्रस्ताव में शरत्चन्द्र वोस के सशोधन को अनियमित ठहराने के अधिकारी थे। फिर, वैधानिक दृष्टि से, पन्त-प्रस्ताव को विचार के लिए स्वीकार कर लेने के बाद भी मुझे कार्यसमिति के गठन-सम्बन्धी उसकी आखिरी धारा को अनियमित ठहरा देना चाहिए था, क्योकि वह काग्रेस-सविघान की धारा १५ के खिलाफ पडती है। किन्तु मै स्वभाव से इतना अधिक लोक-तत्री हू कि कानूनी और वैधानिक मुद्दो को ज्यादा महत्व नही देता। इसके अलावा, मैंने महसूस किया कि जब वोट मेरे खिलाफ जाने की सम्भावना है तो सविधान की ओट लेना मर्दानगी की वात न होगी।

यह पत्र पूरा करने के पहले एक बात का और जिक्र करूगा। अगर तमाम बाधाओ, रुकावटो और कठिनाइयो के बावजूद मुझे अध्यक्ष बना रहना है तो आप मुझसे किस तरह काम करने की आशा रखेंगे ? मुझे याद है कि आपने मुझे पिछले बारह महीनो में जब-तब (शायद अक्सर) इस तरह की सलाह दी कि मुझे कठपुतली अध्यक्ष नही रहना चाहिए और मुझे अधिकारपूर्वक काम करना चाहिए। वर्धा में १५ फरवरी १९३९ को जब मैंने देखा कि आप मेरे कार्यक्रम से सहमत नही है तो मैंने कहा था कि मेरे सामने दो विकल्प है या तो आत्मसमर्पण कर दू या अपने प्रामाणिक विश्वासो पर डट जाऊ। अगर मेरी याददाश्त

ठीक हो तो आपने मुझसे यह कहा था कि जबतक मैं आपके दृष्टिकोण को स्वेच्छापूर्वक स्वीकार नही करता, आत्म-समर्पण का मतलब आत्म-दमन होगा और आप आत्मदमन को पसद नही कर सकते । अगर मुझे अध्यक्ष बना रहना है तो क्या अब भी मुझे कठपुतली अध्यक्ष की तरह काम न करने की सलाह देंगे, जैसीकि आपने गत वर्ष दी थी ?

मैंने ऊपर जो कुछ लिखा है, उसका मतलब यह है कि अध्यक्ष के चुनाव और खासकर त्रिपुरी-काग्रेस में जो कुछ हुआ, उसके बाद भी काग्रेस की सब पार्टियो (या गुटो) के लिए साथ काम करना सभव हो सकता है ।

अपने अगले पत्र में कुछ समस्याओ की चर्चा करूगा, जिनमें से कुछ का मैंने अपने आज के अखबारी बयान में जिक्र किया है ।

मेरी तबीयत में धीरे-धीरे पर बराबर सुधार हो रहा है । काफी नींद न आने के कारण ही मुख्यत जल्दी सुधार नही हो रहा है ।

आशा है, भारी काम-काज में फसे रहने के बावजूद आपका स्वास्थ्य बराबर सुधर रहा होगा ।

प्रणाम !

आपका,
सुभाष

२५५ सुभाषचन्द्र बोस की ओर से

जीलगोरा पो. आ
जिला मानभूम, बिहार
२८ मार्च १९३९

प्रिय जवाहर,

मुझे लगता है कि तुम कुछ समय से मुझे बहुत ज्यादा नापसद करने लगे हो । यह मैं इसलिए कहता हू कि कोई भी बात, जो मेरे विरुद्ध पडती हो, उसे तुम बडे उत्साह से ग्रहण कर लेते हो और मेरे पक्ष में जानेवाली बातो की उपेक्षा करते हो । मेरे राजनैतिक विरोधी मेरे खिलाफ जो कुछ कहते हैं, उसे तुम मान लेते हो, किन्तु तुम उनके खिलाफ कही जा सकनेवाली बातो के प्रति करीब-करीब अपनी आखें बन्द कर लेते हो । मैं इस कथन को आगे स्पष्ट करने की कोशिश करूगा ।

मेरे लिए यह एक पहेली ही है कि तुम मुझे इतना अधिक नापसद क्यो करने लगे हो। जहातक मेरा सबध है, जबसे मै सन् १९३७ में नजर-बदी से बाहर आया हू, मैं व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन मे तुम्हारा बहुत अधिक लिहाज और खयाल रखता आ रहा हू। राजनैतिक दृष्टि से मैंने तुम्हे अपना बडा भाई और नेता माना है और अक्सर तुम्हारी सलाह लेता रहा हू। पिछले साल जब तुम यूरोप से वापस आये तो मैं तुम्हारे पास इलाहाबाद आया और पूछा कि अब तुम हमें क्या नेतृत्व दोगे। आम तौर पर, जब मैं तुम्हारे सामने इस रूप में आया तो तुम्हारे जवाब अस्पष्ट और अनिश्चित रहे। उदाहरण के लिए, गत वर्ष जब तुम यूरोप से लौटे तो तुमने मुझे यह कहकर टाल दिया कि तुम गाधीजी से परामर्श करोगे और उसके बाद मुझे बताओगे। जब हम वर्धा में मिले, तब तुम गाधीजी से मिल लिये थे, किन्तु तुमने मुझे कुछ भी निश्चित नही बताया। बाद में तुमने कार्यसमिति के सामने कुछ प्रस्ताव पेश किये, जिनमें नया कुछ नही था और न देश को कोई नेतृत्व दिया गया था।

अध्यक्ष-पद के पिछले चुनाव के बाद एक कटु विवाद छिड गया और उसके दौरान में बहुत-सी बाते कही गईं—कुछ मेरे हक में और कुछ मेरे खिलाफ। तुम्हारे उद्गारो और बयानो में हरेक मुद्दे का मेरे विरुद्ध अर्थ लगाया गया। दिल्ली के एक भाषण में तुमने यह कहा बताया कि तुम मेरे द्वारा या मेरे पक्ष में हुए चुनाव-प्रचार को पसद नही करते। मैं नही जानता कि तुम्हारे मन में ठीक-ठीक क्या था, किन्तु तुमने इस तथ्य को बिल्कुल ही भुला दिया कि मेरी चुनाव-अपील डा पट्टाभि की अपील पत्रो में छपने के बाद ही जारी हुई थी। जहातक चुनाव-प्रचार का ताल्लुक है, तुमने जाने या अनजाने इस तथ्य को नजर-अदाज किया कि दूसरे पक्ष का चुनाव-प्रचार कही ज्यादा बढा-चढा था और डा पट्टाभि के लिए मत प्राप्त करने में काग्रेसी मन्त्रि-मडलो की मशीनरी का पूरा-पूरा उपयोग किया गया। दूसरे पक्ष के पास नियमित सगठन था (गाधी सेवा सघ, काग्रेसी मन्त्रिमडल, और शायद चरखा सघ और अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ भी) जिसे तुरन्त गतिमान कर दिया गया। इसके अलावा, सभी बडे-बडे नेता और तुम भी मेरे खिलाफ थे—महात्मा गाधी का नाम और प्रतिष्ठा दूसरे

पक्ष के साथ थे—और अधिकतर प्रदेश काग्रेस कमेटिया उसके हाथो में थी। उन सबके खिलाफ मेरे पास क्या था ? मै अकेला खडा था। मुझे व्यक्तिश पता है—क्या तुम्हे मालूम नही—कि कई जगह चुनाव-प्रचार डा पट्टाभि के लिए नही, गाधीजी और गाधीवाद के लिए हुआ, हालाकि अनेक आदमियो ने ऐसे मिथ्या प्रचार के वशीभूत होने से इन्कार कर दिया। फिर भी, एक सार्वजनिक सभा मे खडे होकर, तुमने ऐसे आधार पर मेरी निन्दा करने की कोशिश की, जो बिल्कुल गलत प्रतीत होता है।

अब त्यागपत्रो की बात ले लो। बारह सदस्यो ने त्यागपत्र दिये। उन्होने एक स्पष्ट पत्र लिखा—शिष्ट पत्र था वह, जिसमें उन्होने अपनी स्थिति को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया। मेरी बीमारी का खयाल करके उन्होंने मेरे बारे में एक भी कटु शब्द का प्रयोग नही किया, हालाकि वे चाहते तो मेरी प्रतिकूल आलोचना कर सकते थे। किन्तु तुम्हारा बयान—उसके बारे में मै क्या कहू ? मैं कटु भाषा का प्रयोग नही करूगा और केवल यही कहूगा कि वह तुम्हारे लायक नही था। (मुझे बताया गया है कि तुम अपने बयान का मोटे रूप में त्यागपत्र के भीतर समावेश कराना चाहते थे, किन्तु यह स्वीकार नही किया गया।) तुम्हारे बयान से ऐसा असर पडता है कि अन्य बारह सदस्यो की तरह तुमने भी त्यागपत्र दे दिया है, किन्तु इस समय तक आम जनता के सामने तुम्हारी स्थिति एक पहेली बनी हुई है। जब कोई सकट पैदा होता है तो अक्सर तुम इस पक्ष या उस पक्ष में अपनी राय नही बना पाते और नतीजा यह होता है कि जनता को तुम दो घोडो पर सवारी करते हुए दिखाई देते हो।

मैं फिर तुम्हारे २२ फरवरी के वक्तव्य पर आता हू। तुम्हारा खयाल है कि तुम जो कहते हो या करते हो, उसमें बहुत ही युक्तियुक्त और सगत रहते हो। किन्तु विभिन्न अवसरो पर तुम्हारे रुख से अक्सर लोग स्तब्ध और आश्चर्यचकित रह जाते हैं। कुछ उदाहरण ले लो। २२ फरवरी के अपने वक्तव्य में तुमने कहा कि तुम मेरे दुवारा चुने जाने के खिलाफ थे और इसके तुमने कुछ कारण दिये। उन कारणो की २६ जनवरी को अल्मोडा से जारी किये अपने वक्तव्य में दिये गए कारणो से तुलना करो। तुमने स्पष्टत अपना आधार बदल लिया। फिर कुछ बम्बई के मित्रो ने मुझसे

कहा कि तुमने उनसे पहले कहा था कि तुम्हे मेरे अध्यक्ष-पद के लिए खडे होने मे कोई एतराज नही है, बशर्ते कि मै वामपक्ष के उम्मीदवार के रूप में खडा होऊ।

अल्मोडा के बयान को तुमने यह कहकर खत्म किया था कि हमको व्यक्तियो को भुला देना चाहिए और केवल सिद्धान्तो और अपने ध्येय को ही याद रखना चाहिए। तुम्हे कभी यह खयाल नही आया कि व्यक्तियो को भुला देने की बात तुम तभी कहते हो, जब कुछ खास व्यक्तियो का सवाल सामने होता है। जब सुभाष बोस दुबारा चुने जाने के लिए खडा होता है तो तुम व्यक्तियो की उपेक्षा करते हो और सिद्धान्तो आदि की दुहाई देते हो। जब मौलाना आजाद पुन निर्वाचन के लिए खडे होते हैं तो तुम्हें लम्बा प्रशसा-गीत लिखने में कोई सकोच नही होता। जब मामला सुभाष बोस और सरदार पटेल तथा दूसरो के बीच होता है तो सबसे पहले सुभाष बोस को अपने व्यक्तिगत प्रश्न का खुलासा करना चाहिए। जब शरत् बोस त्रिपुरी में कुछ बातो की शिकायत करते है (उन लोगो के रवैये और व्यवहार की शिकायत करते है, जो अपनेको महात्मा गाधी के कट्टर अनुयायी कहते है) तो तुम्हारे खयाल से वह व्यक्तिगत प्रश्नो के स्तर पर उतर आते है, जबकि उन्हें अपनेको सिद्धान्तो और कार्यक्रमो तक ही सीमित रखना चाहिए था। मै स्वीकार करता हू कि मेरा तुच्छ दिमाग तुम्हारी सगतता को समझने मे असमर्थ है।

अब मै व्यक्तिगत प्रश्न की चर्चा करूगा, जो, जहातक मेरा सबध है, तुम्हारी निगाह में इतना अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। तुम्हारा आरोप है कि मैने अपने बयानो में अपने सहयोगियो के प्रति अन्याय किया है। प्रकटत तुम उनमें नही हो और अगर मैने कोई आरोप लगाया था तो वह दूसरो के खिलाफ था, अत तुम अपनी ओर से नही, बल्कि दूसरो की वकालत कर रहे हो। एक वकील आम तौर पर अपने मवक्किल से ज्यादा वाचाल होता है। इसलिए तुमको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जब इस प्रश्न पर मैने त्रिपुरी में सरदार पटेल से (और राजेनबाबू और मौलाना से) बातचीत की तो उन्होने मुझे यह आश्चर्यजनक खबर सुनाई कि मेरे विरुद्ध उनकी मुख्य शिकायत काग्रेस कार्यसमिति की गत जनवरी की

बारडोली की बैठक से पहले की अवधि से सबध रखती है। जवाब में जब मैंने यह कहा कि जनता में आम खयाल यह है कि मेरे खिलाफ शिकायत मेरे 'चुनाव वक्तव्यो' से ताल्लुक रखती है तो उन्होने कहा कि यह तो अतिरिक्त आरोप है। आखिर इसका यह मतलब हुआ कि तुम्हारे मवक्किल 'लाछन के मामले' को उतना महत्व नही देते जितना तुम उनके वकील की हैसियत से देते हो। त्रिपुरी में, चूकि सरदार पटेल और अन्य लोग काग्रेस महासमिति की बैठक में शामिल होने के लिए चले गये और वादा करके भी बैठक के बाद वापस नही लौटे, मैं इस बारे मे और बातचीत नही कर सका, ताकि यह मालूम करता कि कार्यसमिति की बारडोली की बैठक के बाद की कौन-सी घटनाओ से उनका आशय है। किन्तु मेरे भाई शरत् ने इस बारे में सरदार पटेल से बात की थी तो उन्होने शरत् को बताया कि उनको मुख्य शिकायत मेरे उस रवैये पर है, जो मैंने काग्रेस महासमिति की दिल्ली की बैठक मे, सितम्बर १९३८ में अपनाया, जबकि समाजवादी बैठक से उठकर चले गये थे। इस आरोप पर मुझे और मेरे भाई दोनो को बडा आश्चर्य हुआ, किन्तु प्रसगवश उससे यह भी पता चल गया कि सरदार पटेल और दूसरो के मन मे 'लाछनवाले मामले' का उतना महत्व नही है, जितना महत्व उसे तुमने दिया है। असल में, जब मैं त्रिपुरी मे था, कई प्रतिनिधियो ने मुझे बताया (मैं तुम्हे बता दू कि वे मेरे समर्थक नही थे) कि 'लाछनवाले मामले' को तो उस समय तक करीब-करीब भुला ही दिया गया था, जबतक कि तुमने अपने बयानो और उद्गारो द्वारा इस विवाद को पुन सजीव नहीं कर दिया। और इस बारे में मैं तुम्हे बताऊ कि काग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के बाद से कार्य-समिति के बारह भूतपूर्व सदस्यो ने जितना एक साथ मिलकर नहीं किया, उससे अधिक तुमने मुझे जनता की निगाह में गिराने के लिए किया है। अवश्य ही, अगर मैं सचमुच इतना दुष्ट हू तो यह तुम्हारा अधिकार ही नही, बल्कि कर्त्तव्य भी हो जाता है कि तुम जनता के सामने मेरा पर्दाफाश करो। किन्तु शायद तुमको यह प्रतीत होगा कि जो दुष्ट व्यक्ति तुम्हारे समेत बडे-से-बडे नेताओ, महात्मा गाधी और आठ प्रान्तीय सरकारो के विरोध के बावजूद अध्यक्ष चुना गया, उसमें कुछ तो अच्छाई होगी। उसने अपने अध्यक्ष-काल में देश की कुछ तो सेवा की

होगी कि उसकी पीठ पर कोई सगठन न होने पर भी और भारी बाधाओ के बावजूद वह इतने वोट प्राप्त कर सका ।

तुमने अपने २२ फरवरी के वक्तव्य में आगे कहा है "मैंने काग्रेस अध्यक्ष को सुझाया कि यह सबसे पहला और सबसे जरूरी विचारणीय मुद्दा है, किन्तु अवतक उसे निपटाने की कोई कोशिश नही की गई ।" किन्तु ये पक्तिया लिखते समय तुमको यह खयाल क्यो नही आया कि गलतफहमी को दूर करने के लिए मेरा सरदार पटेल और दूसरो से मिलना जरूरी था और यह कार्यसमिति की २२ फरवरी की बैठक के समय ही हो सकता था ? अथवा क्या तुम यह खयाल करते हो कि मैंने कार्य-समिति की बैठक को टाला ? यह सही है कि 'लाछनवाले मामले' के बारे में मैंने १५ फरवरी को महात्मा गाधी से चर्चा नही की, हालाकि उन्होने एक बार इसका जिक्र किया था, किन्तु उस समय मै तुम्हारे ही इस निर्देश का पालन कर रहा था कि हमको व्यक्तिगत सवालो के बजाय सिद्धान्त और कार्यक्रमो को ज्यादा महत्व देना चाहिए । मै तुम्हे बता दू कि जब महात्मा गाधी ने मुझसे कहा कि सरदार पटेल और अन्य एक ही समिति में मेरे साथ सहयोग नही करेंगे तो मैंने उनसे यही कहा कि २२ फरवरी को जब हम मिलेंगे तो मै उन लोगो से बात कर लूगा और उनका सहयोग हासिल करने की कोशिश करूगा । तुम शायद मुझसे सहमत होगे कि लाछनो का—अगर कोई थे तो—महात्मा गाधी से नही, बल्कि कार्यसमिति के सदस्यो से सबध था और उनके बारे में उन्हीसे बात करना जरूरी था ।

इस बयान में तुम मुझसे यह चाहते हो कि मै लिखित रूप मे यह ठीक-ठीक बताऊ कि वाम-पक्ष और दक्षिण-पक्ष जैसे शब्दो से मेरा क्या आशय है । मैंने तो यही सोचा कि कम-से-कम तुम ऐसा सवाल नही पूछोगे । क्या तुम उन रिपोर्टो को भूल गये जो तुमने खुद ने और आचार्य कृपालानी ने हरिपुरा मे काग्रेस-महासमिति को दी थी ? क्या तुमने अपनी रिपोर्ट में यह नही कहा था कि दक्षिण-पक्ष वाम-पक्ष को दबाने की कोशिश कर रहा है ? अगर तुम जरूरत पडने पर वाम-पक्ष और दक्षिण-पक्ष जैसे शब्दो का प्रयोग कर सकते हो तो क्या दूसरे लोग वैसा नही कर सकते ?

तुमने मुझपर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलो पर अपनी नीति

स्पष्ट न करने का आरोप भी लगाया है। मेरा खयाल है कि मेरी अपनी नीति है, वह गलत या सही हो सकती है। त्रिपुरी में अपने सक्षिप्त अध्यक्षीय भाषण में मैंने उसका अत्यत स्पष्ट शब्दो में जिक्र किया है। मेरी विनम्र राय मे, भारत की और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए हमारे सामने एक ही समस्या—एक ही कर्तव्य है—कि ब्रिटिश सरकार के सामने स्व-राज्य का प्रश्न पेश करें। इसके साथ-साथ, सारे देश में रियासती जनता के आन्दोलन के पथ-प्रदर्शन की भी एक व्यापक योजना बनानी चाहिए। मेरा खयाल है कि त्रिपुरी-काग्रेस के पहले भी मैंने अपने विचारो की स्पष्ट झाकी तुम्हें उस समय दे दी थी, जब हम शातिनिकेतन में और बाद में आनन्द भवन में मिले थे। मैंने अभी-अभी जो लिखा है, वह भी कम-से-कम निश्चित नीति ही है। अब मैं तुमसे पूछता हू कि तुम्हारी क्या नीति है? हाल के एक पत्र में त्रिपुरी-काग्रेस द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीय माग-सबधी प्रस्ताव का तुमने जिक्र किया है, और तुम उसे काफी महत्व देते प्रतीत होते हो। मुझे खेद है कि एकदम ऐसा अस्पष्ट प्रस्ताव, जिसमें भली लगनेवाली सामान्य बातें कही गई हो, मैं पसद नही कर सकता। वह हमें कही भी नही ले जा सकता। अगर हम स्वराज्य के लिए ब्रिटिश सरकार से लडना चाहते है और हम अनुभव करते हो कि उसके लिए उपयुक्त समय आ गया है तो हमको ऐसा साफ-साफ कहना चाहिए और आगे कदम बढाना चाहिए। तुमने एक से अधिक बार मुझसे कहा है कि चुनौती देने का विचार तुम्हे जचता नही। पिछले बीस वर्षों में महात्मा गाधी ब्रिटिश सरकार को बार-बार चुनौतिया देते रहे है। इन चुनौतियो और जरूरत होने पर साथ-साथ लडाई की तैयारी करने के फलस्वरूप ही वह ब्रिटिश सरकार से इतना कुछ प्राप्त कर सके है। अगर तुम सचमुच यह मानते हो कि राष्ट्रीय माग को मनवा लेने का समय आ गया है तो चुनौती देने के अलावा तुम और कौन-सा रास्ता अपना सकते हो? पिछले दिनो महात्मा गाधी ने राजकोट के सवाल पर चुनौती दी थी। क्या तुम चुनौती के विचार का इसलिए विरोध करते हो कि मैंने उसे पेश किया है? अगर यही बात है तो उसे साफ-साफ और बिना किसी लाग-लपेट के क्यो नही कहते?

सार रूप में कहू तो मैं यह नही समझ पाता कि देश की आन्तरिक राज-

नीति के बारे में तुम्हारी क्या नीति है । मुझे याद पडता है, मैंने तुम्हारे किसी एक बयान में यह पढा था कि तुम्हारे खयाल से राजकोट और जयपुर, देश के सभी अन्य राजनैतिक प्रश्नो को ढक लेंगे । मै तुम्हारे जैसे बडे नेता के मुह से ऐसा उद्गार सुनकर स्तब्ध रह गया । मै नही समझ सकता कि कोई भी सवाल स्वराज्य के मुख्य सवाल को कैसे ढक सकता है ? राजकोट इस विशाल देश के भीतर एक छोटा-सा विन्दु है । जयपुर का क्षेत्र राजकोट से कुछ बडा है, किन्तु जयपुर का सवाल भी हमारी ब्रिटिश सरकार के साथ चलनेवाली मुख्य लडाई की तुलना में चिऊटी की चटक-मात्र है । फिर, हम यह नही भूल सकते कि देश में छ सौ से अधिक रियासतें है । अगर हम मौजूदा टुकडो में विभक्त, थेगली लगानेवाली और समझौता-पसद नीति का अनुसरण करते रहेंगे और अन्य राज्यो में लोक-सघर्ष स्थगित कर देंगे तो रियासतो में नागरिक स्वतत्रता और उत्तरदायी शासन स्थापित करने में हमे ढाईसौ साल लग जायगे और उसके बाद हम स्वराज्य की बात सोचेंगे ।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे तुम्हारी नीति और भी अधिक पगु है । कुछ समय पहले जब तुमने काग्रेस कार्यसमिति के सामने इस आशय का प्रस्ताव किया कि यहूदियो को भारत में बसने दिया जाय तो मै आश्चर्यचकित रह गया । जब कार्यसमिति ने (शायद महात्मा गाधी की सहमति से) इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया तो तुमको बडी चोट लगी । विदेश-नीति यथार्थवादी विषय है और उसका निर्धारण मुख्यत राष्ट्र के हित की दृष्टि से ही होना चाहिए । उदाहरण के लिए रूस को ले लो । अपनी आन्तरिक राजनीति में वह साम्यवाद का पोषण करता है, किन्तु अपनी विदेश-नीति पर वह कभी भी अपनी भावनाओ को हावी नही होने देता । यही कारण है कि जब उसे अपना फायदा नजर आया तो उसने फ्रासीसी साम्राज्यवाद के साथ समझौता कर लेने में कोई सकोच नही किया । फ्रास-रूस-समझौता और चेकोस्लोवाक-रूस-समझौता इसकी पुष्टि करते है । आज भी, रूस ब्रिटिश साम्राज्य के साथ समझौता करने के लिए उत्सुक है । अब बताओ, तुम्हारी विदेश नीति क्या है ? भावनाओ के वुदवुदो और नेक शिष्टाचारो से विदेश-नीति का निर्माण नही होता । हर समय पराजित ध्येयो की वकालत करते

कि तुम्हे यह कभी नही सूझता कि तुम दूसरो को दक्षिण-पथियो के हिमायती के रूप मे नजर आते हो। उदाहरण के लिए अपने २६ मार्च के पत्र को ही ले लो। तुम उसमें कहते हो "मैंने तुम्हारा बयान आज पत्रो में पढा। मुझे डर है इस तरह के दलीलबाजी से युक्त बयान स्थिति को सुधारने में सहायक नही होगे।"

इस समय, जबकि कई हल्को से मेरे ऊपर अन्यायपूर्ण हमले हो रहे हैं—जैसा कि कहा जाता है, कमर से नीचे प्रहार किये जा रहे हैं—तुम विरोध में एक शब्द नही कहते, तुम मेरे लिए एक शब्द सहानुभूति का नही बोलते। किन्तु जब मै आत्म-रक्षा में कुछ कहता हू तो तुम्हारी प्रतिक्रिया होती है—"ऐसे दलीलबाजीवाले बयान अधिक सहायक नही होगे।" क्या तुमने मेरे राजनैतिक विरोधियो के बयानो के लिए भी ऐसे ही विशेषणो का प्रयोग किया है? शायद उनकी तुम सराहना करते होगे।

फिर, तुम अपने २२ फरवरी के वक्तव्य में कहते हो "स्थानीय काग्रेसी झगडो को सामान्य तरीके से निपटाने के बजाय सीधे शीर्ष-स्थान से निपटाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है और इसका यह नतीजा होता है कि खास गुटो और पार्टियो के साथ रियायत होती है, गोलमाल पैदा होता है और काम की हानि होती है। मुझे यह देखकर दु ख होता है कि हमारे सगठन के हृदय-स्थल में नये तरीके दाखिल किये जा रहे है, जिनसे स्थानीय झगडे ऊचे स्तरो पर भी फैल जायगे।"

इस प्रकार का दोषारोपण पढकर मुझे दु ख-मिश्रित आश्चर्य हुआ, जबकि तुमने सब तथ्यो का पता लगाने की परवा नही की है। कम-से-कम तुम यह तो कर सकते थे कि मुझसे तथ्यो के बारे में, जिस रूप में कि वे मुझे मालूम है, पूछ लेते। मै नही जानता कि यह लिखते समय तुम्हारे दिमाग में कौन-सी बातें थी। एक मित्र का कहना है कि तुम दिल्ली प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के मामलो के बारे में सोच रहे हो। अगर यही बात है तो मै तुम्हे बिल्कुल साफ-साफ बता दू कि दिल्ली के बारे में मैंने जो कुछ किया, मेरे लिए वही करना ठीक था।

इस सबध में मुझे कहने की इजाजत दो कि ऊपर से हस्तक्षेप करने के मामले में कोई काग्रेस-अध्यक्ष तुमसे बाजी नही मार सकता। शायद तुम

उन बातो को भूल गये जो तुमने काग्रेस-अध्यक्ष की हैसियत से की है या शायद अपनी ओर विवेचक दृष्टि से देखना मुश्किल होता है। २२ फरवरी को तुम मुझपर ऊपर से हस्तक्षेप करने का आरोप लगाते हो। क्या तुम यह भूल गये कि ४ फरवरी को तुमने मुझे एक पत्र लिखा था, जिसमें तुमने मुझ-पर निराग्रही और निष्क्रिय अध्यक्ष होने का आरोप लगाया है ? तुमने लिखा है "वस्तुत तुमने निर्देश देनेवाले अध्यक्ष की अपेक्षा प्रवक्ता (स्पीकर) की हैसियत अधिक रखी है।" तुम्हारा यह आरोप सबसे अधिक आपत्ति-जनक है कि मै पक्षपातपूर्ण ढग से काम कर रहा हू और किसी खास पार्टी या गुट के प्रति रियायत कर रहा हू। क्या व्यक्तिश मेरे प्रति नही तो काग्रेस के अध्यक्ष के प्रति तुम्हारा यह कर्तव्य नही था कि उसके विरुद्ध समाचारपत्रो में ऐसा गभीर आरोप लगाने के पहले उचित जाच कर लेते ?

यदि चुनाव-विवाद पर समग्र दृष्टि से कोई विचार करे तो वह यही सोचेगा कि चुनाव का दगल समाप्त हो जाने के बाद यह सारा प्रकरण भुला दिया जायगा, लडाई के अस्त्रो को दफना दिया जायगा और जैसाकि मुक्केबाजी के दगल के बाद होता है, मुक्केबाज हंसते हुए हाथ मिला लेंगे। किन्तु सत्य और अहिंसा के बावजूद ऐसा नही हुआ। चुनाव-परिणाम को खिलाडी की भावना से स्वीकार नही किया गया, मेरे विरुद्ध मन में गाठ बाध ली गई और प्रतिशोध की भावना गतिशील कर दी गई। तुमने कार्य-समिति के अन्य सदस्यो की ओर से शस्त्र ग्रहण किये। तुम्हे ऐसा करने का पूरा अधिकार था। किन्तु क्या तुमने कभी यह नही सोचा कि कुछ मेरे पक्ष में भी कहा जा सकता है ? क्या कार्यसमिति के दूसरे सदस्यो के लिए इसमें कुछ अनुचित नही था कि मेरी अनुपस्थिति में और मेरी पीठ-पीछे एकत्र होते और डा पट्टाभि को काग्रेस की अध्यक्षता के लिए खडा करने का फैसला करते ? क्या सरदार पटेल और दूसरो के लिए यह अनुचित न था कि कार्य-समिति के सदस्य के नाते काग्रेस-प्रतिनिधियो से डा पट्टाभि का समर्थन करने की अपील करते ? क्या चुनाव-कार्य के लिए सरदार पटेल का महात्मा गाधी का नाम और उनकी सत्ता का उपयोग करने में कुछ भी अनुचित नही था ? क्या सरदार पटेल का यह कहना अनुचित नही था कि

मेरा दुबारा चुना जाना देश के हित के लिए हानिकर होगा ? क्या विभिन्न प्रान्तो मे काग्रेस-मन्त्रिमडलो का वोट हासिल करने के लिए उपयोग करने मे कोई गलती नही थी ?

जहातक कथित 'लाछनो' का ताल्लुक है, मुझे जो कुछ कहना था, वह मै अपने अखबारी वयानो मे और त्रिपुरी में विषय-समिति के सामने अपने भापण मे पहले ही कह चुका हू । किन्तु मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहूगा । क्या तुम यह भूल गये कि जब लार्ड लोथियन भारत का दौरा कर रहे थे तो उन्होने सार्वजनिक रूप में कहा था कि सब काग्रेसी नेता सघ-योजना के बारे में प नेहरू से सहमत नही हैं ? इस उद्गार के क्या तात्पर्य और अर्थ है ?

तुमने अपने २२ फरवरी के बयान में सगठन के शिखर पर पारस्परिक सदेह के वातावरण और विश्वास की कमी की शिकायत की है । क्या मैं तुमसे कहू कि अध्यक्षीय चुनाव होने तक तुम्हारे कार्यकाल की अपेक्षा मेरे कार्यकाल में कार्यसमिति के सदस्यो में सदेह और विश्वास का अभाव कही कम था ? उसके फलस्वरूप हमारे त्यागपत्र देने की कभी नौबत नही आई, जैसाकि, तुम्हारे ही कथनानुसार, तुम्हे एक से अधिक बार करना पडा । जहातक मुझे मालूम है, झगडा चुनाव-सघर्ष में मेरी सफलता के बाद से शुरू हुआ । अगर मैं हार गया होता तो ज्यादा सभव यही था कि जनता को 'लाछन' प्रकरण के बारे में सुनने को मिलता ही नही ।

तुम यह अक्सर कहते रहते हो कि तुम अपना ही प्रतिनिधित्व करते हो, और किसीका नही, और तुम्हारा किसी भी पार्टी से सबध नही है । अक्सर यह वात तुम इस ढग से कहते हो मानो इस बात पर तुम वडा गर्व या सुख अनुभव करते हो । साथ ही, कभी-कभी तुम अपनेको समाजवादी— 'पक्का समाजवादी' भी कहते हो । मेरी समझ में नही आता कि कोई समाज-वादी, जैसाकि तुम अपनेको मानते हो, व्यक्तिवादी कैसे हो सकता है ? एक दूसरे से विल्कुल भिन्न होता है । मेरे लिए यह भी एक पहेली है कि तुम जिस व्यक्तिवाद के समर्थक हो, उसके जरिये समाजवाद कभी भी कैसे स्थापित हो सकता है । अपने पर किसी भी पार्टी का विल्ला न लगाकर आदमी सव पार्टियो का प्रिय हो सकता है, किन्तु उसका मूल्य क्या ? अगर

एक आदमी किन्ही विचारो और सिद्धान्तो मे विश्वास रखता है तो उसे उन्हें साकार करने की कोशिश करनी चाहिए और यह किसी पार्टी या सगठन के जरिये ही किया जा सकता है। मैंने आजतक नही सुना कि किसी देश ने बिना पार्टी के समाजवाद की स्थापना की है या उस दिशा में कदम आगे बढाया है। महात्मा गाधी की भी अपनी पार्टी है।

एक और विचार है, जिसका तुम अक्सर राग अलापते हो—उसके बारे में भी मै कुछ कहना चाहूगा। मेरा आशय राष्ट्रीय एकता के विचार से है। मै भी उस विचार का पूरा समर्थक हू, जैसा कि, मै मानता हू, सारा देश है। किन्तु इसकी एक प्रकट सीमा है। जिस एकता की हम कोशिश करते है या कायम रखना चाहते है, वह काम करने की एकता होनी चाहिए, हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे रहने की नही। एक पार्टी अगर दो टुकडो में बटती है तो यह हमेशा ही बुरा नही होता। ऐसे मौके आते है जब आगे बढने के लिए अलहदगी जरूरी होती है। जब रूस की सोशल डेमोक्रेट पार्टी सन् १९०३ मे टूटी और बोलशेविक और मेनशेविक अस्तित्व में आये तो लेनिन ने राहत की सास ली थी। मेनशेविको का भारी बोझ सिर से उतर गया और लेनिन ने महसूस किया कि आखिर तेज तरक्की का रास्ता खुल गया है। भारत में जब 'मोडरेट' (नरम दली) काग्रेस से अलग हो गये तो किसी भी प्रगतिशील विचार-धारा के व्यक्ति ने इस अलहदगी पर अफसोस प्रकट नही किया। उसके बाद, जब बहुत-से काग्रेसी सन् १९२० में काग्रेस से हट गये तो शेष काग्रेसियो ने उनकी जुदाई पर आसू नही बहाये। इस तरह की अलहदगियो से वास्तव में आगे बढने में मदद मिली। कुछ समय से हम एकता के अध भक्त बन रहे है। इसमें खतरा छिपा हुआ है। उसका कमजोरी को छिपाने के लिए या ऐसे समझौते करने के लिए उपयोग किया जा सकता है जो बुनियादी तौर पर प्रगति-विरोधी होते है। तुम अपना ही उदाहरण ले लो। तुम गाधी-इर्विन-समझौते के खिलाफ थे, किन्तु तुमने एकता के नाम पर उसे स्वीकार कर लिया। फिर, तुम प्रान्तो में मन्त्रि-पद स्वीकार करने के खिलाफ थे, किन्तु जब पद ग्रहण करने का निश्चय हुआ तो तुमने शायद उसी एकता के नाम पर इस फैसले को मान लिया। दलील की खातिर मान लो कि किसी तरह काग्रेस का बहुमत सघ-योजना को

अमल में लाना स्वीकार कर लेता है तो उसके विरोधी, अपने दृढ सिद्धान्तो के बावजूद, उसी एकता के नाम पर अपने राजनैतिक विश्वासो के विरुद्ध सघ-योजना को स्वीकार करने के लिए प्रेरित हो सकते है। एक क्रान्तिकारी आन्दोलन में एकता साध्य नही हुआ करती, साधन ही होती है। उसकी तभी तक जरूरत है, जबतक कि वह प्रगति में सहायक होती है। ज्यो-ही वह प्रगति में बाधक बनने लगती है कि वह एक बुराई बन जाती है। मै पूछता हू, अगर काग्रेस बहुमत से सघ-योजना को स्वीकार कर ले तो तुम क्या करोगे ? क्या तुम उस फैसले के आगे सिर झुकाओगे या उसके खिलाफ बगावत करोगे ?

तुम्हारा इलाहाबाद से लिखा ४ फरवरी का पत्र दिलचस्प है। उससे प्रकट होता है कि मेरे प्रति तुम्हारा रुख उस समय तक कडा नही हुआ था जैसाकि बाद में हुआ। उदाहरण के लिए तुम अपने पत्र में लिखते हो "जैसा कि मैने तुमसे कहा, तुम्हारे चुनाव-सघर्ष से कुछ लाभ हुआ है तो कुछ हानि।" बाद में तुम्हारी यह धारणा बन गई कि मेरा दुबारा निर्वाचित होना बिल्कुल बुरा हुआ। आगे तुमने लिखा है "इस भविष्य पर हमको व्यक्तियो के अर्थ मे नही, बल्कि व्यापक दृष्टि से विचार करना चाहिए। जाहिर है कि घटना-चक्र हमारी इच्छा के अनुकूल नही घूमा, केवल इसी-लिए हममें से किसीको रुष्ट नही हो जाना चाहिए। कुछ भी होता रहे, हमें तो अपने ध्येय की पूर्ति के लिए पूरी ताकत खर्च करनी होगी।" यह स्पष्ट है कि तुम 'लाछन'-प्रकरण को वह महत्व नही देते थे, जो बाद में देने लगे। यही नही, जैसा मै पहले कह चुका हू, 'लाछन'-प्रकरण पर बाद में जो आन्दो-लन हुआ, उसके मुख्यत जनक तुम्ही थे। इस बारे में शायद तुम्हे याद होगा कि जब हम शातिनिकेतन मे मिले थे तो मैने सुझाया था कि अगर हमारी कोशिश के बावजूद हम कार्य-समिति के सदस्यो का सहयोग हासिल न कर सकें तो हमको काग्रेस को चलाने की जिम्मेदारी से मुह नही मोडना चाहिए। उस समय तुम मुझसे सहमत हुए थे। बाद में, पता नही, किन कारणो से तुम मानो बडी बहादुरी से दूसरे पक्ष में जा मिले। बेशक, तुम्हे ऐसा करने का प्रत्येक हक हासिल था, किन्तु फिर तुम्हारा समाजवाद या वामवाद कहा गया ?

अपने ४ फरवरी के पत्र में तुमने एक से अधिक बार यह आरोप लगाया है कि मेरी अध्यक्षता के जमाने मे सघ जैसे महत्वपूर्ण सवालो पर चर्चा नही हुई। यह एक अजीब आरोप है जबकि तुम खुद करीब छ महीने देश से बाहर रहे। क्या तुम्हे पता है कि जब श्री भूलाभाई देसाई के कथित लन्दनवाले भाषण पर तूफान पैदा हुआ था तो मैंने कार्यसमिति को यह सुझाया था कि सघ के विरुद्ध हमे अपना प्रस्ताव दोहराना चाहिए और देश में सघ-विरोधी प्रचार चलाना चाहिए, पर मेरा प्रस्ताव गैर-जरूरी समझा गया। क्या तुम्हे मालूम है कि बाद मे जब कार्यसमिति की बैठक सितम्बर में दिल्ली में हुई तो सघ की निन्दा करनेवाला प्रस्ताव जरूरी समझा गया और काग्रेस महा-समिति ने ऐसा प्रस्ताव स्वीकार किया ?

इस पत्र मे एक आरोप तुमने यह लगाया है कि मैंने कार्यसमिति में निष्क्रिय रुख रखा और मैंने वस्तुत निर्देशक अध्यक्ष बनने के बजाय स्पीकर की तरह काम किया। इस प्रकार का कथन कुछ न्यायोचित नही है। क्या यह कहना गलत होगा कि आमतौर पर कार्यसमिति का ज्यादातर समय तुम खुद ही ले लेते थे ? अगर कार्यसमिति मे तुम्हारे जितना वाचाल कोई दूसरा सदस्य होता तो हम अपना काम कभी निपटा ही नही पाते। इसके अलावा, दूसरे तौर-तरीके कुछ ऐसे थे कि तुम लगभग अध्यक्ष के काम अपने हाथो में ले लेते थे। अवश्य ही मै तुम्हारी लगाम खीचकर समिति को सम्हाल सकता था, किन्तु उसके फलस्वरूप हमारे बीच खुली दरार पड जाती। बहुत साफ-साफ कहू तो तुम कभी-कभी कार्यसमिति में लाड़-प्यार से बिगडे बेटे की तरह बर्ताव करते थे और अक्सर तुम्हारा पारा चढ़ जाता था। अब बताओ, तुमने अपनी तमाम 'गरममिजाजी' और उछल-कूद से क्या नतीजे हासिल किये ? तुम आमतौर पर घटो अड़े रहते और तब आखिर में घुटने टेक देते। सरदार पटेल और दूसरो के पास तुमसे निपटने के लिए एक कुशल तरीका है। वे तुम्हे खूब बोलने देंगे और अन्त में तुमसे कहेंगे, अच्छा प्रस्ताव लिख डालो। एक बार तुमको प्रस्ताव बनाने दिया कि तुम खुश हो जाओगे, फिर भले ही वह प्रस्ताव कैसा भी क्यो न हो। मैंने तुम्हे अपने मुद्दे पर आखिर तक डटे रहते शायद ही कभी देखा है।

मेरे खिलाफ दूसरा अजीब आरोप यह है कि पिछले वर्ष में काग्रेस

महासमिति के दफ्तर की हालत बडी खराब हो गई है। मै नही जानता कि तुम्हारे खयाल से अध्यक्ष के क्या काम है। मेरे खयाल से वह किसी शानदार क्लर्क या शानदार सेक्रेटरी से कही ज्यादा हैसियत रखता है। अध्यक्ष की हैसियत से तुम सेक्रेटरी के काम भी अपने हाथ मे ले लिया करते थे, किन्तु यह कोई वजह नही कि दूसरे अध्यक्ष भी तुम्हारे जैसा ही बर्ताव करें। इसके अलावा, मेरी मुख्य कठिनाई यह थी कि कांग्रेस महासमिति का दफ्तर काफी दूर था और जनरल सेक्रेटरी मेरी पसन्द का नही था। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी कि जैसा एक सेक्रेटरी को अपने प्रेसीडेण्ट के प्रति वफादार होना चाहिए, वैसा जनरल सेक्रेटरी वफादार न था। (मै जान-बूझकर बहुत नरम शब्दो में यह बात कह रहा हू।) असल में, कृपालानीजी को मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझपर थोपा गया। शायद तुम्हे याद होगा कि मैंने कांग्रेस महासमिति के दफ्तर का एक भाग कलकत्ता लाने की भरसक कोशिश की, ताकि मै उसके काम की ठीक तरह से देखभाल कर सकू। किन्तु तुम सबने उसका विरोध किया और अब तुम उल्टे मुझे ही कांग्रेस महासमिति के दफ्तर की कमियो के लिए दोष देते हो! अगर कांग्रेस महासमिति का दफ्तर, जैसा तुम कहते हो, सचमुच बिगडा है तो इसके लिए मै नही, बल्कि जनरल सेक्रेटरी जिम्मेदार है। तुम मुझपर यही आरोप लगा सकते हो कि मेरे अध्यक्ष-काल में जनरल सेक्रेटरी के काम में कम हस्तक्षेप हुआ और उसे पहले की अपेक्षा वास्तव में ज्यादा अधिकार प्राप्त रहे। फलस्वरूप, अगर सचमुच कांग्रेस महासमिति के दफ्तर की हालत खराब हुई है तो उसकी जिम्मेदारी मुझपर नही, बल्कि जनरल सेक्रेटरी पर है।

मुझे आश्चर्य है कि बिना पूरे तथ्य जाने तुमने यह आरोप लगाया है कि मैंने बम्बई श्रमिक विवाद विधेयक को उसकी मौजूदा शक्ल में स्वीकृत होने से रोकने की भरसक कोशिश नही की। असल में, कुछ समय से, तथ्यो का पता लगाने की चिन्ता किये बिना तुमने मेरे खिलाफ आरोप लगाने की, कभी-कभी सार्वजनिक रूप से लगाने की, कला का विकास कर लिया है। अगर तुम जानना चाहते हो कि मैंने इस बारे में क्या किया तो सबसे अच्छी बात यह होगी कि सरदार पटेल से पूछ देखो। जो बात मैंने नही की, वह यही कि मैंने इस सवाल पर उनके साथ नाता नही तोडा।

अगर यह अपराध है तो मै अभियोग को स्वीकार करता हू । प्रसगवश, क्या तुम्हे पता है कि बम्बई की काग्रेस-समाजवादी पार्टी ने विधेयक का उसके मौजूदा रूप मे समर्थन किया था ? और अब तुम्हारी अपनी बात ले लो। क्या मै पूछ सकता हू कि तुमने इस विधेयक की स्वीकृति को रोकने के लिए क्या किया ? जब तुम बम्बई लौटे तो तुम जरूर कुछ कर सकते थे । मेरे खयाल से कुछ श्रमिक कार्यकर्ता तुमसे मिले थे और उनको तुमने कुछ उम्मीद बधाई थी । मेरी अपेक्षा तुम अच्छी स्थिति में थे, कारण, तुम मेरी अपेक्षा कही अधिक गाधीजी को प्रभावित कर सकते हो । अगर तुमने जोर लगाया होता तो जहा मै विफल रहा, वहा तुम सफल हो सकते थे । क्या तुमने ऐसा किया ?

एक और मामला है, जिसके बारे में तुम अक्सर मेरे ऊपर तीर चलाया करते हो । वह है मिला-जुला मत्रिमडल बनाने का विचार । सिद्धातवादी राजनीतिज्ञ की तरह तुमने हमेशा के लिए यह तय कर दिया कि मिला-जुला मत्रिमडल दक्षिण-पथी कदम होगा । इस प्रश्न पर अपने आखिरी निर्णय की घोषणा करने के पहले क्या तुम एक बात करोगे ? क्या तुम एक पखवारे के लिए असम का दौरा करोगे और फिर आकर मुझे वताओगे कि क्या वर्तमान मिला-जुला मत्रिमडल प्रगतिशील रहा है अथवा प्रतिक्रियावादी ? इलाहाबाद में बैठकर बुद्धिमत्ताभरे ऐसे उद्गार प्रकट करने से क्या फायदा, जिनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नही ? सादुल्ला-मत्रिमडल के पतन के बाद जब मै असम गया तो मुझे एक भी ऐसा काग्रेसी नही मिला, जो मिला-जुला मत्रिमडल वनाने पर जोर न देता हो । तथ्य यह है कि प्रात प्रतिक्रियावादी मत्रिमडल के नीचे कराह रहा था । हालत वद से वदतर होती जा रही थी और भ्रष्टाचार रोजाना बढता जा रहा था । जव नये मत्रिमडल ने पद ग्रहण किया तो असम की समस्त काग्रेसी विचारधारा को माननेवाली जनता ने राहत की सास ली और नये विश्वास और आशा का अनुभव किया । अगर तुम पदग्रहण की नीति को सारे ही देश के लिए छोडने को तैयार हो तो मै भी असम और वगाल जैसे प्रान्तो के काग्रेसजनो के साथ-साथ उसका स्वागत करूगा । किन्तु अगर काग्रेस-पार्टी सात प्रान्तो में पदग्रहण करती है तो

यह जरूरी है कि दूसरे प्रान्तो में मिले-जुले मन्त्रिमडल स्थापित हो। अगर तुम्हे पता हो कि मिला-जुला मन्त्रिमडल बनने के बाद तमाम बाधाओ और कठिनाइयो के बावजूद, असम की हालत में कितना सुधार हुआ है तो तुम अपनी राय बिल्कुल बदल लोगे।

बगाल के बारे मे, मुझे भय है कि तुम करीब-करीब कुछ नही जानते। अपनी अध्यक्षता के दो वर्षों में तुमने इस प्रान्त का कभी दौरा नही किया, हालाकि इस प्रान्त को जिस भयकर दमन में से गुजरना पडा, उसे देखते हुए उसकी ओर दूसरे प्रान्तो की अपेक्षा कही अधिक ध्यान देने की जरूरत थी। क्या तुमने कभी यह मालूम करने की परवा की कि हक-मन्त्रिमडल के पद ग्रहण करने के बाद इस प्रान्त मे क्या हुआ ? अगर तुमने की होती तो तुम एक सिद्धान्तवादी राजनीतिज्ञ की तरह बात न करते। तब तुम मुझसे सहमत होते कि अगर इस प्रान्त को बचाना हो तो हक-मन्त्रिमडल को खत्म होना चाहिए और मौजूदा परिस्थितियो में सर्व-श्रेष्ठ शासन की यानी मिले-जुले मन्त्रिमडल की स्थापना होनी चाहिए। किन्तु यह सब कहते समय मुझे यह भी कहना चाहिए कि मिले-जुले मन्त्रिमडलो का सवाल इसलिए उठता है कि पूर्ण-स्वराज्य का सक्रिय सघर्ष स्थगित कर दिया गया है। इस लडाई को कल शुरू कर दो और मिले-जुले मन्त्रिमडलो की सारी चर्चा हवा मे उड जायगी।

अब मै तुम्हारे दिल्ली के २० मार्च के तार का जिक्र करूगा। उसमें तुमने कहा है "अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और नाजुक राष्ट्रीय समस्याओ की दृष्टि से कार्यसमिति का गठन और दफ्तर के इन्तजाम जरूरी है।" आदि। कार्यसमिति के शीघ्र गठन की जरूरत को हरकोई समझ सकता है, किन्तु तुम्हारे तार में मेरी कठिनाइयो के लिए तनिक भी सहानुभूति नही दिखाई दी। तुम अच्छी तरह से जानते हो कि अगर पन्त का प्रस्ताव पेश और स्वीकृत न हुआ होता तो कार्यसमिति की घोषणा १३ मार्च को हो गई होती। जब यह प्रस्ताव पास हुआ तो काग्रेस अच्छी तरह जानती थी कि मै सख्त बीमार हू, महात्मा गाधी त्रिपुरी नही आये है और मेरा उनसे निकट भविष्य में मिलना मुश्किल होगा। मै यह समझ सकता हू कि कार्यसमिति के गठन में एक महीने की देरी हो जाती है तो स्वभावत

लोगो को बेचैनी होगी। किन्तु त्रिपुरी-काग्रेस के एक सप्ताह वाद ही आन्दोलन शुरू कर दिया गया और 'लाछन'-प्रकरण की तरह ही इस मामले में भी तुमने ही मेरे खिलाफ आन्दोलन शुरू किया। क्या महात्मा गाधी से मिले बिना कार्यसमिति का गठन करना आसान था ? मै महात्मा-जी से कैसे मिल सकता था ? और क्या तुम भूल गये कि गत वर्ष हरिपुरा-काग्रेस के छ सप्ताह बाद कार्यसमिति की बैठक हुई थी ? क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारा तार अखबारो में छपने के बाद मेरे खिलाफ कुछ लोगो ने और अखवारो ने जो आन्दोलन शुरू किया, वह सर्वथा शुद्ध हेतु से प्रेरित था ? क्या मै जान-बूझकर कार्यसमिति को नियुक्त न करके काग्रेस के मामलो में गतिरोध पैदा कर रहा था ? अगर आन्दोलन सर्वथा उचित न था तो क्या एक सार्वजनिक नेता की हैसियत से तुम्हारा यह कर्त्तव्य न था कि तुम मेरे पक्ष में कुछ शब्द बोलते—उस समय जबकि मै बिस्तर में पडा था ?

मै तुम्हारे इस आरोप की चर्चा कर चुका हू कि मेरी अध्यक्षता के जमाने में काग्रेस महासमिति की हालत खराब हुई है। इस बारे में मै एक शब्द और कहूगा। क्या तुम्हे यह खयाल नही हुआ कि तुम मेरी निन्दा करने की कोशिश में जनरल सेक्रेटरी की निन्दा करने के अलावा दफ्तर के सारे कर्मचारियो की भी निन्दा कर रहे हो ?

तुमने अपने तार में 'नाजुक राष्ट्रीय समस्याओ' का जिक्र किया, जिनके लिए तुम तुरन्त कार्यसमिति के गठन की माग करते हो, हालाकि तुम कहते हो कि तुम कार्यसमिति में नही रहना चाहते। कृपया बताओ भी कि ये 'नाजुक राष्ट्रीय समस्याए' क्या है ? तुमने अपने एक पिछले पत्र में कहा था कि राजकोट और जयपुर की समस्या ही अत्यन्त नाजुक समस्या है। पर चूकि महात्माजी इन मामलो से निपट रहे है, एक तरह से वे कार्यसमिति और महासमिति के कार्यक्षेत्र से वाहर है।

तुमने अपने तार में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का भी जिक्र किया है। मैने अखवारो में देखा है कि तुम्हारे द्वारा इसका उल्लेख होने के वाद ऐसे कई आदमी, जिनमें तनिक भी अन्तर्राष्ट्रीय समझ नही है, जो अन्तर्राष्ट्रीय मामलो को समझने की कोई इच्छा नही रखते और जो अन्तर्राष्ट्रीय

स्थिति का भारत के हित में उपयोग भी नही करना चाहते, बोहेमिया और स्लोवाकिया की किस्मत के बारे में चिन्तित हो उठे है। जाहिर है कि यह मुझपर प्रहार करने का अच्छा हथियार मिल गया है। पिछले दो महीनो में यूरोप में ऐसा कुछ नही हुआ, जिसकी आशा नही थी। चेकोस्लोवाकिया में हाल मे जो कुछ हुआ वह म्यूनिख-समझौते का नतीजा है। असल में यूरोप से जो जानकारी मुझे मिलती रही है, उसके आधार पर मैं पिछले छ महीनो मे काग्रेसी मित्रो से कहता रहा हू कि वसन्त में यूरोप मे सकट पैदा होगा, जो गरमियो तक जारी रहेगा। इसलिए मैं अपनी ओर से गतिवान कदम उठाने पर जोर देता आया—वह यह कि ब्रिटिश सरकार को पूर्ण स्वराज्य की माग करनेवाली चुनौती दी जाय। मुझे याद पडता है कि जब मैंने पिछले दिनो (शान्तिनिकेतन या इलाहाबाद में) एक बार तुमसे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की चर्चा की थी और उसके आधार पर ब्रिटिश सरकार के सामने राष्ट्रीय माग पेश करने की दलील दी थी तो तुमने यह ठडा उत्तर दिया कि अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कुछ साल जारी रहनेवाला है। अचानक ही तुम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में बडे उत्साही हो गये हो। किन्तु मैं यह बता दू कि तुम्हारी ओर से या गाधीवादी समुदाय की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का हमारे हित में उपयोग कर लेने का कोई इरादा नजर नही आता। तुम्हारे तार में यह भी लिखा है कि अन्तर्राष्ट्रीय सकट पर विचार करने के लिए काग्रेस महासमिति की बैठक जल्दी होनी चाहिए। किस मकसद के लिए ? एक लम्बा-चौडा प्रस्ताव पास करने के लिए, जिसका कोई व्यावहारिक नतीजा न हो ? या तुम अपनी राय बदल लोगे और काग्रेस महासमिति से कहोगे कि अब हमको पूर्ण स्वराज्य की ओर कदम बढाना चाहिए और एक चुनौती की शक्ल में राष्ट्रीय माग ब्रिटिश सरकार के सामने पेश करनी चाहिए ? नही, मैं महसूस करता हू कि या तो हम अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का अपने हित में लाभ उठायें या फिर उसकी बात ही न करें। अगर हम कुछ करना-धरना नही चाहते तो खाली दिखावा करना बेकार है।

मुझे बताया गया है कि जब तुम दिल्ली में थे तो तुमने महात्माजी

को यह सदेश दिया कि उन्हे मौलाना आजाद से मिलने इलाहाबाद जाना चाहिए। यह जानकारी बिल्कुल गलत हो सकती है। लेकिन अगर गलत न हो तो क्या तुमने उनको सुझाया कि उन्हे साथ-साथ धनबाद भी हो आना चाहिए? जब मेरे सेक्रेटरी ने तुमको २४ मार्च को टेलीफोन किया कि अखबारो में यह छपा है कि डाक्टरो की मनाही के कारण महात्माजी धनबाद नही आ सकते और इसका आप खडन करे तो तुमने ऐसी कोई इच्छा प्रकट नही की कि महात्माजी धनबाद आयें, हालाकि तुम इस बात के लिए बडे उत्सुक थे कि मुझे गाधीजी की इच्छा के अनुसार कार्यसमिति के गठन की घोपणा कर देनी चाहिए। टेलीफोन पर तुमने यही कहा कि धनबाद गाधीजी के कार्यक्रम में शामिल नही है। क्या तुम्हारे लिए महात्माजी को धनबाद आने के लिए रजामद करना इतना अधिक मुश्किल था? क्या तुमने कोशिश की? तुम कह सकते हो कि उन्हे राजकोट के मामले मे वापस दिल्ली लौटना था। किन्तु उनकी वाइसराय से मुलाकात पूरी हो चुकी थी और जहातक सर मारिस ग्वायर से मिलने की बात है, सरदार पटेल को मिलना था, न कि महात्माजी को।

राजकोट-प्रकरण के सम्बन्ध मे मै कुछ शब्द कहना चाहूगा। समझौते की शर्तों को, जिनके आधार पर महात्माजी का उपवास समाप्त हुआ, तुम काफी अच्छा समझते हो। कोई भी हिन्दुस्तानी ऐसा नही होगा, जिसे महात्माजी का जीवन बच जाने पर खुशी और राहत अनुभव नही हुई होगी। किन्तु जब हम समझौते की शर्तों की तर्क की बारीक निगाह से जाच-पडताल करते है तो हमें क्या मालूम होता है? पहली बात तो यह कि सर मारिस ग्वायर को, जो सघ-योजना के अविभाज्य अग है, पच मान लिया गया। क्या इसका यह अर्थ नही कि हमने अप्रत्यक्ष रूप में सघ-योजना को स्वीकार कर लिया? दूसरे, सर मारिस न तो हमारे आदमी है, और न स्वतत्र एजेंट ही है। वह सीधे-सादे रूप में सरकार के आदमी है। ब्रिटिश सरकार के साथ अपने किसी भी विवाद में अगर हम किसी हाईकोर्ट जज या सेशन जज को पच मान ले तो ब्रिटिश सरकार इसके लिए खुशी से राजी हो जायगी। उदाहरण के लिए बिना मुकदमा

चलाये नजरबद राजबदियो के मामले में ब्रिटिश सरकार हमेशा गर्व के साथ कहती है कि तत्सबधी कागजात दो हाईकोर्ट या सेशन जजो के सामने रखे जाते है। किन्तु हमने इस व्यवस्था को कभी सतोषजनक नही स्वीकार किया। फिर राजकोट के मामले में भिन्न तरीका क्यो स्वीकार किया गया ?

इस बारे मे एक और मुद्दा है, जिसे मै नही समझ पाता और जिस-पर तुम प्रकाश डाल सकते हो। महात्मा गाधी वाइसराय से मिलने गये और उनकी भेंट हो चुकी। अब वह वहा क्यो इन्तजार कर रहे है ? अगर सर मारिस ग्वायर को जरूरत हो तो सरदार पटेल को इन्तजार करना चाहिए। अगर महात्माजी वाइसराय से मुलाकात कर चुकने के बाद दिल्ली में ठहरे रहते है तो क्या इससे अप्रत्यक्ष रूप में ब्रिटिश सर-कार की प्रतिष्ठा नही बढती ? तुमने अपने २४ मार्च के पत्र में लिखा था कि महात्माजी का कई दिन तक दिल्ली में ठहरने का निश्चय हो चुका है और वह बाहर नही जा सकते। मै तो ऐसा सोचता हू, महात्माजी के लिए दिल्ली मे इन्तजार करते रहने के बजाय और कई जरूरी काम करने को पडे है। अगर महात्माजी थोडा भी परिश्रम करे तो जिस बहाव और गतिरोध आदि की तुम इतनी शिकायत करते हो, उसे देखते-देखते समाप्त किया जा सकता है। किन्तु इस बारे में तुम चुप हो और सारा दोष मेरे लिए सुरक्षित रखते हो।

अपने २३ मार्च के पत्र में तुमने लिखा है "मैने बाद में दूसरे लोगो को यह गोलमोल बात करते पाया कि काग्रेस महासमिति की बैठक बुलाई जाय। मै ठीक-ठीक नही जानता कि इन आधारो पर कौन सोच रहा है और महासमिति की बैठक बुलाने का उनका क्या उद्देश्य है, सिवा इसके कि उससे स्थिति और स्पष्ट हो सके।" खबरे काफी तेजी से और दूर-दूर फैलती है और मुझे सूचना मिली है कि कुछ केन्द्रीय एम एल ए महा-समिति की बैठक जल्दी बुलाने के अनुरोध-पत्र पर महासमिति के सदस्यो के हस्ताक्षर प्राप्त करने की कोशिश कर रहे है, मानो मै महासमिति की बैठक बुलाने को टाल रहा हू और जान-बूझकर काग्रेस के मामला में गतिरोध पैदा कर रहा हू। क्या तुमने इस तरह की चर्चा दिल्ली में या

अन्यत्र नही सुनी ? यदि हा, तो क्या तुम समझते हो, यह कदम न्यायोचित और सम्माननीय है ?

इसी २३ मार्च के पत्र में तुम राष्ट्रीय माग के प्रस्ताव और शरत् द्वारा उसके विरोध का जिक्र करते हो। जहातक शरत् के रुख का सबध है, वह शायद इस बारे मे तुम्हे लिखनेवाले है। किन्तु यह कहना सही नही है कि उनके विरोध के अलावा प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। मैंने कई लोगो से सुना है कि उन्होने प्रस्ताव का विरोध किया, इसलिए नही कि उसमें कुछ बुनियादी खराबी थी, बल्कि इसलिए कि उसका कोई व्यावहारिक अर्थ नही था। वह भी उन निर्दोष प्रस्तावो जैसा था जो हर काग्रेस-अधिवेशन के अन्त में पेश किये जाते है, अनुमोदित होते है और या तो सर्वसम्मति से या मूक रूप में पास किये जाते है। वह कौन-सा अमली नेतृत्व देता है ?

इस बारे में मै यह कहे बिना नही रह सकता कि पिछले वर्षों में काग्रेस के प्रस्ताव बहुत ज्यादा लम्बे-चौडे रहे है। उन्हे 'प्रस्तावो' की अपेक्षा 'निबध' कहना ज्यादा ठीक होगा। पहले हमारे प्रस्ताव सक्षिप्त, विषय-सगत और व्यावहारिक होते थे। मेरा खयाल है कि हमारे प्रस्तावो को यह नई शक्ल देने में तुम्हारा हाथ रहा है। जहातक मेरा सम्बन्ध है, मै लम्बे निबधो के बजाय अमली प्रस्ताव ज्यादा पसद करता हू।

तुमने अपने पत्रो में एक से अधिक बार आज की काग्रेस में 'दुस्साहसिक प्रवृत्तियो' का जिक्र किया है। तुम्हारा ठीक-ठीक आशय क्या है ? मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे ध्यान में कुछ खास व्यक्ति है। क्या तुम नये आदमियो और औरतो के काग्रेस में आने और प्रमुखता प्राप्त करने के विरुद्ध हो ? क्या तुम चाहते हो कि काग्रेस का शीर्ष नेतृत्व चन्द व्यक्तियो के लिए ही सुरक्षित रहे ? अगर मेरी याददाश्त मुझे धोखा नही देती तो सयुक्त प्रान्त की प्रान्तीय काग्रेस कमेटी की परिषद ने एक बार इस आशय का नियम स्वीकार किया था कि किन्ही काग्रेस सस्थाओ में एक व्यक्ति तीन साल से अधिक पदाधिकारी न रहे। प्रकटत यह नियम मातहत सस्थाओ के लिए था और उच्च सस्थाओ में एक ही व्यक्ति उसी पद पर दसो साल तक रह सकता है। तुम कुछ भी कहो, हम सब, एक अर्थ में,

दुस्साहसी है, कारण, जीवन एक दीर्घ दुस्साहस है। मैंने तो सोचा था कि जो लोग अपनेको प्रगतिशील कहते है, वे काग्रेस सगठन की नई श्रेणियो में नये खून का स्वागत करेंगे।

तुम्हारे लिए यह सोचने का कोई कारण नही है कि शरत् का पत्र मेरी ओर से लिखा गया। (यहा मैं तुम्हारे २४ मार्च के पत्र का हवाला दे रहा हू।) उनका अपना व्यक्तित्व है। जब वह यहा से कलकत्ता लौटे तो उन्हें गाधीजी का तार मिला कि वह उन्हे पत्र लिखें। अगर गाधीजी ने इस तरह का तार नही दिया होता तो मुझे शक है कि उन्होने पत्र लिखा भी होता। किन्तु मैं यह कह दू कि महात्माजी को लिखे गए उनके पत्र में कुछ ऐसी बाते है जो मेरी भावनाओ को प्रकट करती है।

शरत् के नाम तुम्हारे पत्र के बारे में मुझे कुछ कहना है। मैं तुम्हारे पत्र से यह अर्थ लेता हू कि त्रिपुरी में वातावरण आदि के बारे मे उन्होने जो कुछ लिखा, उसपर तुम्हे आश्चर्य हुआ। इसपर मुझे आश्चर्य होता है। हालाकि मैं स्वतत्रतापूर्वक आ-जा नही सकता था, किन्तु स्वतत्र जरियो से उस जगह के दूषित वातावरण की मुझे काफी रिपोर्ट मिली थी। मेरी समझ में नही आता कि तुम उस जगह आये-गये और फिर भी कैसे तुम्हे उसकी गध नही आई या तुमने उसके बारे में सुना नही ?

दूसरे, तुम्हारा यह कहना है कि त्रिपुरी मे दूसरे सवालो के विचार पर व्यक्तिगत प्रश्नो की छाया पडी। तुम्हारा कहना सही है। सिर्फ तुमने यह और नही जोडा कि यद्यपि तुम इस विषय पर विषय-समिति या खुले अधिवेशन में बोले नही, पर तुमने इन व्यक्तिगत प्रश्नो को तीव्र बनाने में और उन्हे सार्वजनिक दृष्टि में प्रधानता दिलाने में और किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा अधिक योग दिया।

तुमने शरत् के नाम अपने पत्र में कहा है "किसीके लिए भी यह कहना बेहूदा बात थी कि सुभाष की बीमारी बनावटी है और मेरे किसी भी साथी ने मेरी जानकारी मे ऐसा इशारा नही किया।" जब तुम ऐसा कहते हो तो लगता है कि तुमने अपनी आखो पर बिल्कुल रगीन चश्मा चढा दिया है, जबकि त्रिपुरी में और उसके पहले मेरे राजनैतिक विरोधियो ने सब जगह इस आशय का व्यवस्थित प्रचार किया था। यह

एक और अतिरिक्त प्रमाण है कि पिछले कुछ समय से तुम्हारा मेरे विरुद्ध झुकाव रहने लगा है (देखो इस पत्र का प्रारभ)। मै नही सोचता कि शरत् ने त्रिपुरी के वातावरण आदि के वारे मे जो कुछ कहा है, वह ज़रा भी अत्युक्तिपूर्ण है।

तुमने त्रिपुरी में सुनी कुछ अरुचिकर रिपोर्टो का जिक्र किया है। तुम्हारे लिए यह अजीब और अशोभनीय बात है कि तुम उन्ही रिपोर्टों से प्रभावित होते हो जो हमारे विरुद्ध जाती है। मै कुछ उदाहरण देता हू। क्या तुम जानते हो कि बगाल ही एक ऐसा प्रान्त नही है जिसके प्रतिनिधियो के टिकिट जारी करने के बारे में शिकायतें की गई है? क्या तुम जानते हो कि इसी तरह की शिकायतें आन्ध्र के विरुद्ध भी की गई थी? किन्तु तुम केवल बगाल का जिक्र करते हो। फिर, क्या तुम्हे पता है कि जब बगाल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के दफ्तर ने मूल रसीदे खो जाने के कारण दुहरी रसीदें जारी की तो उसने इस बारे में काग्रेस महासमिति के दफ्तर को चेतावनी दे दी थी और कहा था कि उसे प्रतिनिधि टिकिट जारी करने में सावधानी रखनी चाहिए? क्या तुमने यह जानने की परवा की कि इस गलती के लिए कौन जिम्मेदार है, बगाल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी या काग्रेस महासमिति का दफ्तर?

फिर, तुमने प्रतिनिधियो को लाने में बडी रकम खर्च करने का जिक्र किया है। क्या तुम नही जानते कि पूजीपति और पैसेवाले लोग किस पक्ष में है? क्या तुमने सुना है कि पजाब के प्रतिनिधियो को लारी भर-भरकर लाहौर से लाया गया? शायद डा किचलू इसपर रोशनी डाल सकते है। पजाब की एक प्रसिद्ध महिला काग्रेस कार्यकर्त्री ने, जो मुझसे पाच दिन पहले मिली थी, बताया कि हमे सरदार पटेल की हिदायत के अनुसार लाया गया है। मै नही जानता, किन्तु निश्चय ही तुमको थोडी तटस्थता की भावना रखनी चाहिए।

त्रिपुरी मे काग्रेस-मन्त्रियो के रवैये के बारे में मुझे दो बाते कहनी है। मुझसे महासमिति के बहुत-से सदस्यो ने अनुरोध किया कि मतदान पर्ची के जरिये होना चाहिए। जब मैंने इसका कारण पूछा तो उन्होने कहा कि अगर उन्होने खुले रूप से काग्रेस मन्त्रियो के विरुद्ध वोट दिया तो उन्हे

दिक्कत में फसना पडेगा। इसका क्या मतलब ? दूसरे, मै इसके खिलाफ हू कि काग्रेसी मत्री इस तरह दलगत तरीके से मत सग्रह करें। इसमें शक नही कि उन्हे ऐसा करने का वैधानिक हक है, किन्तु इसका नतीजा यह होगा कि हर प्रान्त में काग्रेस पार्लमेंटरी पार्टी में फूट पड जायगी। अगर काग्रेसी मन्त्रियो को अपने प्रान्त की असेम्बलियो और परिषदो के तमाम काग्रेसी सदस्यो का सयुक्त समर्थन प्राप्त नही होगा तो वे कैसे अपना काम चला सकेगे ?

क्या तुम इससे सहमत नही कि त्रिपुरी-काग्रेस में (विषय-समिति में भी) पुराने नेतृत्व ने जनता की दृष्टि में निष्क्रिय रुख रखा और मत्री रगमच पर हावी रहे ? जब शरत् ने यह कहा तो क्या वह गलती पर थे ?

यह जले पर नमक छिडकना हुआ जब तुम शरत् के नाम अपने पत्र में कहते हो "त्रिपुरी-प्रस्ताव काग्रेस-अध्यक्ष और गाधीजी के बीच सहयोग की कल्पना करता है।"

तुम इसी पत्र में दावा करते हो कि तुमने त्रिपुरी में और उसके पहले काग्रेसियो में सहयोग स्थापित करने की कोशिश की। क्या मै तुम्हे यह अप्रिय तथ्य बताऊ कि दूसरे लोगो की इस बारे में दूसरी राय है ? उनके खयाल से, त्रिपुरी-काग्रेस में काग्रेसजनो और काग्रेसजनो के बीच जो खाई पैदा हुई, उसकी जिम्मेदारी से तुम बच नही सकते।

अब मैं तुम्हे अपनी नीति और कार्यक्रम स्पष्ट करने की दावत देता हू—अस्पष्ट सामान्य बातो के द्वारा नही, बल्कि यथार्थवादी विस्तार के साथ। मै यह भी जानना चाहूगा कि तुम क्या हो, समाजवादी या वाम-पक्षी या मध्यमार्गी या दक्षिणपथी या गाधीवादी या और कुछ ?

तुम्हारे शरत् को लिखे पत्र मे दो प्रशसनीय वक्तव्य है, "तमाम राजनैतिक प्रश्नो पर व्यक्तिगत पहलुओ को प्रधानता मिलते देखकर मुझे सबसे अधिक दु ख हुआ। अगर काग्रेसियो में सघर्ष होना है तो मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि उसे ऊचे स्तर पर और नीति तथा सिद्धान्त के मामलो तक ही सीमित रखा जाय।" अगर तुमने खुद अपनी बात पर अमल किया होता तो काग्रेस राजनीति की दूसरी ही शक्ल हुई होती।

जब तुम कहते हो, तुम्हारी समझ में नही आया कि त्रिपुरी में क्या

रुकावट थी तो मैं तुम्हारे 'सीधेपन' की बलायें लिये बिना नही रह सकता। त्रिपुरी-काग्रेस ने असल मे सिर्फ एक ही प्रस्ताव पास किया और वह था पन्त-प्रस्ताव और उसमे तुच्छता और प्रतिशोध की भावना भरी हुई थी। सत्य और अहिसा के हिमायतियो ने अध्यक्ष के निर्वाचन के बाद दुनिया को बताया कि वह बहुमत के रास्ते मे रोडे नही अटकायेगे और बाधा न डालने की भावना से उन्होने कार्य-समिति की सदस्यता से त्यागपत्र दिया है। त्रिपुरी मे उन्होने बाधा डालने के अलावा और कुछ नही किया। उन्हे ऐसा करने का अधिकार था, किंतु उन्होने ऐसे दावे क्यो किये, जिन्हे अमल में उन्होने झुठलाया ?

मै इस लम्बे पत्र को समाप्त करने के पहले कुछ और बातो का जिक्र करूगा।

तुमने त्रिपुरी में बगाल के प्रतिनिधियो को टिकिट जारी करने में हुई दिक्कत का जिक्र किया है। एक दिन मैंने पत्रो में पढा कि कलकत्ता की एक सार्वजनिक सभा में काग्रेस महासमिति के एक सदस्य ने कहा कि उसने सयुक्त प्रान्त के कुछ प्रतिनिधियो से सुना है कि इस तरह की दिक्कत सयुक्त प्रान्त के बारे में भी पेश आई थी।

क्या तुम यह नही सोचते कि पन्त-प्रस्ताव का बुनियादी हेतु महात्मा-जी को मेरे विरुद्ध खडा करना था ? क्या तुम ऐसे कदम को प्रामाणिक समझते हो, जबकि मेरे और महात्माजी के बीच, कम-से-कम जहातक मेरी तरफ का सवाल है, कोई खाई पैदा नही हुई थी ? अगर पुराने नेता मुझसे लडना चाहते थे तो उन्होने सीधे तरीके से ऐसा क्यो नही किया ? उन्होने महात्मा गाधी को हमारे बीच में क्यो डाला ? यह चतुर युक्ति थी, किन्तु सवाल यह है कि क्या यह कदम सत्य और अहिसा के अनुकूल था ?

मै तुमसे यह पूछ चुका हू कि क्या तुम सरदार पटेल के इस कथन को उचित समझते हो कि मेरा दुबारा निर्वाचन देश के ध्येय के लिए हानिकर होगा ? तुमने इस बारे मे एक शब्द भी नही कहा कि उन्हे अपना यह कथन वापस लेना चाहिए। इस प्रकार तुमने अप्रत्यक्ष रूप से उनके आरोप का समर्थन किया। अब मै तुमसे यह पूछता हू कि तुम

महात्माजी के इस आशय के उद्गार के बारे में क्या सोचते हो कि आखिर मै (सुभाष) देश का शत्रु नही हू। क्या तुम सोचते हो कि इस प्रकार का कथन उचित था ? यदि नही तो क्या तुमने मेरे पक्ष में महात्माजी से एक भी शब्द कहा ?

तुम कुछ लोगो की इस चाल के बारे में क्या सोचते हो कि जब हम त्रिपुरी में थे तो दैनिक पत्रो में यह प्रकाशित हुआ था कि पन्त-प्रस्ताव को महात्माजी का पूरा समर्थन प्राप्त है ?

और अब तुम पन्त-प्रस्ताव के बारे में क्या सोचते हो ? त्रिपुरी में यह अफवाह थी कि तुम उसके बनानेवालो में से एक थे। क्या यह तथ्य है ? क्या तुम इस प्रस्ताव को पसद करते हो, हालाकि उसपर मतदान के समय तुम तटस्थ रहे थे ? तुम उसकी क्या व्याख्या करते हो ? क्या तुम्हारे खयाल में वह अविश्वास का प्रस्ताव था ?

मुझे खेद है कि मेरा पत्र इतना लम्बा हो गया है। बेशक, उससे तुम्हारा धीरज खो जायगा, किन्तु मुझे लम्बा लिखना पडा, क्योकि मुझे बहुत-सी बाते कहनी थी।

सभव है, मुझे तुम्हे फिर लिखना पडे या अखबारो में बयान देना पडे। यह अपुष्ट रिपोर्ट है कि कुछ लेखो मे तुम मेरी अध्यक्षता की प्रतिकूल आलोचना कर रहे हो। जब मै तुम्हारे लेख पढूगा तो मै इस विषय में कुछ कह सकूगा और हमारे काम की तुलना कर सकूगा, खासकर इस बात की कि वामपक्ष के ध्येय को तुमने दो साल मे और मैने एक साल मे कितना आगे बढाया।

अगर मैने कठोर भाषा का प्रयोग किया हो या कही तुम्हारी भावनाओ को चोट पहुचाई हो तो क्षमा कर देना। तुम खुद कहते हो कि स्पष्टता सबसे अच्छी वस्तु है और मैने स्पष्ट होने की कोशिश की है, शायद नग्न रूप से स्पष्ट।

मेरी तबीयत धीमे, पर लगातार सुधर रही है। आशा है, तुम स्वस्थ होगे।

सस्नेह तुम्हारा,
सुभाष

२५६ महात्मा गाधी की ओर से

नई दिल्ली
३० मार्च १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे दो पत्र मिले। दोनो अच्छे थे।

तुम्हे पत्र-व्यवहार की नकले भेज रहा हू।

यू पी की घटनाओ से मुझे अशाति होती है। मेरा हल यह है कि या तो तुम्हे प्रधानमत्री वन जाना चाहिए या मत्रिमडल को तोड देना चाहिए। तुम्हे उच्छृखल तत्वो पर काबू पाना चाहिए।

जो समाजवादी यहा आये थे, उनसे मेरी तीन दिन दिल खोलकर बातें हुई। नरेन्द्रदेव तुम्हे खबर देगे। वह अपने-आप न दें तो तुम मगा लेना।

प्यार,

बापू

२५७ महात्मा गाधी की ओर से सुभाषचद्र बोस के नाम

नई दिल्ली
३० मार्च १९३९

प्रिय सुभाष,

अपने तार का जवाब पाने की खातिर मैंने तुम्हारे २५ तारीख के पत्र का उत्तर देने में देर की है। सुनील का तार मुझे कल रात को मिला। अव प्रात काल की प्रार्थना के समय से पहले उठकर यह उत्तर लिख रहा हू।

चूकि तुम्हारे खयाल में पडित पत का प्रस्ताव अनियमित था और कार्य-समिति-सम्बन्धी कलम स्पष्ट रूप में अवैधानिक और नाजायज है, इसलिए तुम्हारा मार्ग नितान्त स्पष्ट है। समिति का तुम्हारा चुनाव अबाधित होना चाहिए।

इसलिए इस विषय में तुम्हारे कई प्रश्नो को मेरे उत्तर की जरूरत नही।

जब हम फरवरी मे मिले थे तवसे मेरी राय मजवूत हुई है कि जहा मौलिक वातो पर मतभेद हो, जैसा हम सहमत थे कि है, वहा मिली-

जुली समिति हानिकर होगी। इसलिए यह मानकर कि तुम्हारी नीति को महा-समिति के बहुमत का समर्थन प्राप्त है, तुम्हे बिल्कुल उन्ही लोगो की बनी हुई कार्यसमिति रखनी चाहिए, जो तुम्हारी नीति में विश्वास करते है।

हा, मै उसी विचार पर कायम हू, जो मैने हमारी फरवरी की मुलाकात में सेगाव में प्रकट किया था कि मै किसी भी प्रकार से तुम्हारे आत्म-दमन में भागीदार होने का अपराधी नही बनूगा। स्वेच्छापूर्वक आत्म-विलय दूसरी चीज है। किसी ऐसे विचार को दबा लेना, जिसे तुम देश-हित के लिए प्रबल रूप में रखते हो, आत्म-दमन होगा। इसलिए अगर तुम्हे अध्यक्ष के रूप में काम करना है तो तुम्हारे हाथ खुले रहने चाहिए। देश के सामने जो परिस्थिति है, उसमें किसी मध्यम मार्ग की गुजायश नही है।

जहातक गाधीवादियो का सम्बन्ध है (यदि यह गलत शब्द-प्रयोग करें तो) वे तुम्हे बाधा नही पहुचायेंगे। जहा सभव होगा, तुम्हारी सहायता करेंगे और जहा सहायता नही कर सकेंगे, वहा अलग रहेंगे। अगर वे अल्पमत में है तब तो कुछ भी कठिनाई नही होनी चाहिए। जहा वे स्पष्ट बहुमत मे होगे वहा शायद वे अपने-आपको दबाकर न रख सके।

लेकिन मुझे जिस चीज की चिन्ता है वह यह हकीकत है कि काग्रेस के मतदाता फरजी है और इसलिए बहुमत और अल्पमत का पूरा अर्थ नही रह जाता। फिर भी जबतक काग्रेस की भीतरी सफाई नहीं हो जाती तबतक जो हथियार हमारे पास फिलहाल है उसीसे काम चलाना होगा। दूसरी चीज, जिससे परेशानी है, वह है हमारा आपसी भयकर अविश्वास। जहा कार्यकर्त्ताओ में परस्पर अविश्वास हो वहा मिल-जुलकर काम करना असभव हो जाता है।

मेरे खयाल से तुम्हारे पत्र के और किसी मुद्दे का जवाब देने की आवश्यकता नही है।

जो कुछ करो भगवान से मार्ग-दर्शन लेते रहो। डाक्टरो की आज्ञाओ का पालन करके जल्दी अच्छे हो जाओ।

प्यार,

बापू

जहातक मेरा सम्बन्ध है, हमारे पत्र-व्यवहार को प्रकाशित करने की जरूरत नही । परन्तु तुम्हारा दूसरा विचार हो तो छापने की मेरी इजाजत है ।

२५८. सुभाषचद्र बोस के नाम

निजी और खानगी **इलाहाबाद**

३ अप्रैल १९३९

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा २८ मार्च का लम्बा खत मेरे पास अभी-अभी पहुचा और मै जल्दी से जवाब दे रहा हू । सबसे पहले तो मै यह कहना चाहता हू कि मुझे कितनी खुशी हुई कि तुमने मुझे इतना पूरे और साफ तौर पर लिखा है और स्पष्ट कर दिया है कि मेरे बारे में और विविध घटनाओ के बारे में तुम्हारे क्या भाव है । अक्सर स्पष्ट कहने से चोट लगती है, लेकिन लग-भग हमेशा ही वह वाछनीय है, खास तौर पर उन लोगो के बीच जिन्हे साथ-साथ काम करना पडता है । इससे हमें दूसरे के और अधिक आलो-चक दृष्टिकोण से अपने-आपको ठीक रूप में देखने में मदद मिलती है । इस बारे में तुम्हारा पत्र बहुत सहायक है और इसके लिए मैं तुम्हारा आभारी हू ।

एक ऐसे खत का जवाब देना आसान काम नही है, जो टाइप किये हुए सताईस पन्ने का हो और जिसमें बहुत-सी घटनाए और विविध नीतियो और कार्यक्रमो का जिक्र भरा हो । इसलिए मुझे डर है कि मेरा उत्तर इतना पूरा और ब्योरेवार नही होगा, जितना हो सकता है । इन सब मामलो को ठीक ढग से निपटाने की कोशिश में एक किताब या ऐसी ही कोई चीज लिखनी पडेगी ।

असल में तुम्हारा पत्र मेरे आचरण का अभियोग-पत्र और मेरी खामियो की जाच है । तुम अच्छी तरह समझ सकते हो कि ऐसे अभियोग-पत्र का जवाब देना पड़े तो यह कठिन और परेशान करनेवाला काम हो जाता

है । लेकिन जहातक त्रुटियो का सबध है, या कम-से-कम उनमें से अनेक का सबध है, मुझे कुछ कहना नही है । मैं अपराध स्वीकार करता हू, क्योकि मै अच्छी तरह समझता हू कि दुर्भाग्य से मुझमे वे त्रुटिया है । मैं यह भी कह सकता हू कि तुम्हारे इस उद्‌गार की सचाई की मैं पूरी तरह कद्र करता हू कि जबसे तुम १९३७ में नजरबन्दी से निकले, तुमने मेरे साथ बहुत ही आदर और लिहाज का बर्ताव खानगी में और सार्वजनिक जीवन में भी किया । इसके लिए मैं तुम्हारा कृतज्ञ हू । मैं खुद भी हमेशा तुम्हारे लिए आदर और स्नेह रखता रहा और अब भी रखता हू, हालाकि कभी-कभी तुमने जो कुछ किया या जिस तरह किया, वह मुझे कतई पसन्द नही आया । मेरा खयाल है कि किसी हद तक हमारे स्वभाव अलग-अलग है और जीवन तथा उसकी समस्याओ के प्रति हमारा दृष्टिकोण एक-सा नही है ।'

अब मैं तुम्हारे पत्र को निपटाऊगा और एक-एक पैराग्राफ को लूगा ।

मैं भूल रहा हू कि मैंने तुमसे क्या कहा था, जब पिछले नवम्बर में मेरे यूरोप से लौटने पर तुम मुझसे इलाहाबाद में मिले थे । तुम कराची से कलकत्ता जाते हुए थोडी देर के लिए यहा उतर पडे थे । मैं कल्पना नही कर सकता कि तुमको निश्चित उत्तर दे सकने से पहले उस समय गाधीजी से पूछने के लिए मेरे पास क्या चीज थी । मुझे यह भी याद नही कि सवाल क्या था । लेकिन शायद मेरा मतलब यह था कि मेरा अपना कार्यक्रम विभिन्न मामलो पर गाधीजी की प्रतिक्रिया पर निर्भर होगा । तुमको याद होगा कि हरिपुरा से पहले और पीछे मैंने तुमसे क्या कहा था । मैं कार्यसमिति के सदस्य के नाते उससे सबध रखने के बारे में उस समय बहुत बेचैन था और छोडना चाहता था । इसका कारण यह था कि मुझे अधिकाधिक ऐसा अनुभव हुआ था कि वहा मै कोई उपयोगी काम नही कर रहा था । दूसरा कारण यह भी था कि गाधीजी, जिसे 'एक विचार की' समिति कहते थे, उसकी दृष्टि से सोच रहे थे और मैं नही समझता था कि मैं उसका अग बन सकता हू । मेरे सामने उस समय यह चुनने का मौका आगया कि मैं उससे चुपचाप हटकर बाहर से उसे सहयोग दू या गाधीजी और उनके गुट को चुनौती दू । मुझे लगा कि हिंदुस्तान के हित

के लिए और हमारे पक्ष के लिए यह हानिकारक होगा कि मैं या तुम यह निश्चित फूट पैदा करो। वेशक यह कहना बेहूदा है कि किसी भी कीमत पर एकता होनी चाहिए। कभी-कभी एकता हानिकारक हो सकती है और उस समय वह नही रहनी चाहिए। यह सब उस समय की परिस्थिति पर निर्भर करता है, और मुझे उस समय दृढ विश्वास था कि गाधीजी और उनके गुट को बाहर निकाल देने से या उसकी कोशिश से एक नाजुक मौके पर हम बहुत कमजोर हो जायगे। मै उस स्थिति का सामना करने को तैयार नही था। साथ ही जो घटनाए हो रही थी, उनमें से बहुत-सी मुझे नापसद थी। और कुछ मामलो में, जैसे रियासतो और मत्रिमडलो के बाबत, गाधीजी का आम रवैया भी मुझे पसन्द नही था।

मै यूरोप चला गया और जब वापस आया तो फिर पुरानी समस्या सामने आई। उसी समय तुम मुझसे मिले और शायद मैंने तुम्हे बताया कि मेरे मन में क्या था। मेरा अपना दिमाग साफ था। परन्तु स्थिति के बारे में मेरी क्रिया गाधीजी की प्रतिक्रियाओ पर निर्भर थी। अगर अब भी वह एक-जैसे विचारोवाली बात पर जमे हुए थे तब तो मेरा कोई स्थान नही था, नही तो मैं कार्य-समिति के सदस्य की हैसियत से सहयोग देने की कोशिश करता। मै इस मुद्दे पर काग्रेस में दो दल करने के लिए तैयार नही था। मेरा दिमाग तो हिंदुस्तान में और बाहर वढते हुए सकटो से भरा हुआ था और मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद हमें चद महीनो के दौरान ही किसी बड़े सग्राम का सामना करना पडेगा। गाधीजी के सक्रिय भाग और नेतृत्व के बिना उस सग्राम के कारगर होने की सभावना नही थी।

इस सग्राम की मेरी कल्पना का आधार सघ-शासन नही था। मैं चाहता था कि काग्रेस सघ-शासन के सवाल को लगभग मुर्दा समझ ले और आत्म-निर्णय तथा सविधान-सभा की माग पर सारा जोर लगाये और उसे विश्व-सकट से सबद्ध करके रखे। मुझे लगा कि सघ-शासन का मुकाबला करने पर बहुत ज्यादा जोर देने से इस मुर्दे को जिन्दा रखने में मदद मिलती थी और अधिक बुनियादी सतह पर सोचने और बाद में कार्रवाई करने में बाधा पडती है। जब मैं इग्लैंड मे था तब तुमने इस आशय का एक बयान जारी किया था कि तुम सघ-शासन से अन्त तक

लडोगे और काग्रेस ने उसे मान लिया तो भी लडोगे। तुम्हारे इस बयान का इग्लैंड में ठीक उल्टा असर हुआ। हर शख्स ने कहा कि अगर काग्रेस का अध्यक्ष सघ-शासन के मुद्दे पर इस्तीफे की बात सोच रहा है तो जरूर काग्रेस उसे स्वीकार करनेवाली है। मुझे लाचारी महसूस होती थी और मै इस दलील का आसानी से जवाब नही दे सकता था।

मैंने दो प्रस्ताव इस आधार पर तैयार किये। उनमें कोई असाधारण बात नही थी, सिर्फ जोर देने का ढग दूसरा था। तुम्हे मालूम है कि कार्य-समिति के लिए सारे प्रस्ताव इस दृष्टि से बनाने पडते है कि दूसरे सदस्य सहमत हो जाय। कोई ऐसा मसविदा बनाना, जो अपनेको अधिक पसद हो, परन्तु जो दूसरो को मजूर न हो, बहुत आसान है। कार्य-समिति के सामने इन प्रस्तावो को रखने में मेरा विचार यह था कि अगली काग्रेस में अधिक व्यापक और दूर तक जानेवाले प्रस्ताव के लिए जमीन भी तैयार की जाय और देश का मानस भी तैयार किया जाय। किन्तु मेरे प्रस्ताव मजूर नही हुए और मुझसे कहा गया कि उनपर काग्रेस के समय विचार होना चाहिए।

कार्य-समिति की इसी बैठक में मैंने यहूदियो के बारे में एक प्रस्ताव रखा। तुमको याद होगा कि इससे पहले ही जर्मनी में यहूदियो के विरुद्ध एक भयकर कत्ले-आम हो चुका था और ससारभर में उसकी गूज थी। मुझे लगा कि हमें इस बारे में अपनी राय जरूर जाहिर करनी चाहिए। तुम कहते हो कि तुम "हक्के-बक्के रह गये, जब मैंने एक ऐसा प्रस्ताव पेश किया जो हिंदुस्तान को यहूदियो के लिए शरण का स्थान बनाना चाहता था।" मुझे यह जानकर आश्चर्य होता है कि तुम्हारी इस मामले में इतनी तीव्र भावनाए है, क्योंकि जहातक मुझे याद है, तुमने उस समय अपने विचार निश्चित रूप से प्रकट नही किये। परन्तु क्या मेरे प्रस्ताव के लिए यह कहना न्यायपूर्ण है कि वह हिंदुस्तान में यहूदियो के लिए एक शरण-स्थान स्थापित करना चाहता था ? पुराना मसविदा मेरे सामने है। उसमें कहा गया है "इस समिति को इस बात पर कोई ऐतराज नही है कि यहूदी शरणार्थियो में से जो निपुण और विशेषज्ञ है और जो हिंदुस्तान की नई व्यवस्था के योग्य है और हिंदुस्तानी आदर्श स्वीकार करते हो, उन्हें

हिंदुस्तान मे नौकरी दे दी जाय।" मैंने इस सवाल को यहूदियो को सहायता देने के नजरिये से नही सोचा था, हालाकि हमारे देश को हानि पहुचाये बिना जहा सभव हो ऐसी सहायता देना वाछनीय था, लेकिन मेरा नजरिया तो हमारे विज्ञान और उद्योग वगैरा के लिए प्रथम श्रेणी के आदमी साधारण वेतन पर प्राप्त करके अपनी ही सहायता करने का था। नाज़ियो का कब्ज़ा हो जाने के बाद कई देशो ने अच्छे आदमी चुनने के लिए वियना में विशेष कमीशन भेजे। तुर्की को इन विशेषज्ञो से बडा लाभ हुआ है। मुझे सही किस्म के कलाविद और विशेषज्ञ जुटाने का यह आदर्श मौका दिखाई दिया। थोडी तनखाहो पर उनके यहा आने से दूसरे वेतन कम करने में भी हमे सहायता मिलती। वे एक विशेष अवधि के लिए न कि हमेशा के लिए बसने को आते और उनकी एक सीमित सख्या ही आती, और उनमें भी वे ही आते जो हमारे लिए निश्चित रूप में उपयोगी होते और जो हमारे आदर्शों और राजनैतिक नजरिये को मानते। लेकिन इस प्रस्ताव पर भी सहमति नही हुई, इसलिए उसे छोड दिया गया।

काग्रेस-अध्यक्ष के चुनाव के बाद दिल्ली में दिये गए मेरे भाषण का तुमने जिक्र किया है। मुझे अफसोस है कि मैंने वह अखबारी खबर नही देखी, जिसका उल्लेख तुमने किया है, हालाकि बाद मे किसीने मुझे उसके बारे में बताया था। सच तो यह है कि मैंने तुम्हारे या तुम्हारे चुनाव के बारे में कुछ नही कहा। मै दिल्ली और पजाब-काग्रेस के उपद्रवो और झगडो का जिक्र कर रहा था और यह कहा था कि पदो की लिप्सा और उसके लिए मत बटोरने की बेहद लालसा पाई जाती है। मैंने उसे बुरा बताया। शायद अखबारवालो के दिमाग में तुम्हारा चुनाव था, इसलिए उन्होने मेरे कथन को तोड-मरोडकर रख दिया। सभा में जो लोग मौजूद थे उनसे और दूसरे लोगो से मैंने पूछा और मैंने जो कुछ कहा था उसके बारे में उन्होने मेरे ही खयाल की पुष्टि की।

तुम्हारा यह कहना बिल्कुल सही है कि डाक्टर पट्टाभि के लिए मत बटोरने का बहुत काम हुआ, जैसा तुम्हारे लिए भी हुआ। चुनाव के लिए मत बटोरने में मुझे कोई आपत्ति दिखाई नही देती। मुझे ठीक-ठीक पता नही है कि तुम्हारे यह कहने का क्या अर्थ है कि पट्टाभि के लिए

मत प्राप्त करने मे काग्रेसी मत्रिमडलो का तत्र इस्तेमाल किया गया। मै नही जानता कि इस काम के लिए वहा कौन-सा तत्र है और अवश्य ही उत्तर प्रदेश में तो मैंने उसे काम करते नही देखा। अलबत्ता, एक मामले में तुम्हारे पक्ष में ऐसा जरूर हुआ। मुझे कोई कल्पना नही है कि हमारे मत्रियो ने किस तरफ राय दी, लेकिन मेरा यह खयाल है कि आधे से अधिक ने पट्टाभि के लिए मत नही दिये है और जहातक मै जानता हू, इससे भी कम लोगो ने दिये होगे। एक मत्री ने राय देने से इन्कार कर दिया, एक ने तुम्हारे लिए सक्रिय और सार्वजनिक रूप में वोट मागे और यह आम राय थी कि उन्होने तुम्हारे लिए बहुत-से मत प्राप्त किये।

सार्वजनिक सभा मे मै तुम्हारी निंदा करू, इसपर तुम्हारा ऐतराज करना बिल्कुल सही है। ऐसा करना निहायत बेजा होता। लेकिन हकीकत यह है कि मैंने दिल्ली में या और कही ऐसी कोई बात नही की।

अब मै उस बयान पर आता हू, जो मैंने कार्य-समिति के बारह सदस्यो के इस्तीफे के समय जारी किया था। जब मैंने कार्य-समिति के कुछ और सदस्यो द्वारा अपनाये गए उग्र रवैये की अपेक्षा नरम रुख पेश करने का साहस किया तो दो दिन तक लबी बहस हुई। उस बैठक से पहले जब मैंने सुना था कि त्यागपत्र की सभावना है तब मैंने इसे रोकने की चेष्टा की थी। मैंने दुबारा यही कोशिश की, लेकिन कई कारणो से स्थिति पहले से कही मुश्किल होगई। तुम जानते हो कि तुम्हारे अध्यक्षीय वक्तव्यो में कार्य-समिति के कुछ सदस्यो पर जो छीटे उडाये गए उनके बारे में मेरे तीव्र विचार थे। मैंने तुमसे इसका बार-बार जिक्र किया था। तुम गाधीजी से मिलने जा रहे थे तब मैंने विशेष रूप से तुम्हारे दिल पर यह बात जमाने की कोशिश की थी कि राजनैतिक सवालो की चर्चा करने से पहले इस मामले की सबसे पहले सफाई होनी चाहिए। जयप्रकाश मुझसे सहमत थे। जब दो आदमियो के बीच में सन्देह और अविश्वास की दीवार हो तो कोई राजनैतिक चर्चा नही हो सकती। तुमने अपने बयानो में जो कुछ कहा था वह सर्वथा अनुचित था। ऐसी स्थितिवाले शख्स के लिए, जो अन्दरूनी और काग्रेस-अध्यक्ष की जगह पर हो, स्पष्ट ही यह अच्छी बात नही है कि वह अखबारी अफवाहो अथवा बाजारू बयानो

को दोहराये। उसके बारे में यह माना जाता है कि उसकी जानकारी होगी और उसके एक सकेत से भी लोगो को विश्वास हो जाता है। यह सही है कि तुमने किसीके नाम का उल्लेख नही किया, परन्तु तुम्हारे बयानो को पढनेवाला हर आदमी ज़रूर इस नतीजे पर पहुचा कि तुम्हारा मतलब कार्य-समिति के कुछ सदस्यो से था। किसी व्यक्ति का इस कथन से ज्यादा बडा अपमान नही हो सकता कि जिस पक्ष की वह सार्वजनिक रूप में हिमायत करता है उसे गुप्त रूप में धोखा देता है और सघ-शासन में मत्रिमडलो का आपस में बटवारा भी कर दिया है। वह एक मनगढन्त बयान था और उससे दिल को चोट लगी।

ऐसे बयान से तुम्हारे और गाधीजी के बीच आगे कोई सहयोग होने में कारगर बाधा उपस्थित होगई, क्योकि दूसरे लोग तो एक तरह से गाधीजी के प्रतिनिधि थे। मैं उत्सुक था कि तुम दोनो में सहयोग हो, क्योकि दूसरा विकल्प मुझे बहुत हानिकारक मालूम हुआ। इसलिए मैंने तुम्हे दबाया कि इस रुकावट को साफ कर दिया जाय और गाधीजी के साथ साफ-साफ बात कर ली जाय। मैंने समझा, तुम ऐसा करने के लिए सहमत थे। बाद मे जयप्रकाश और गाधीजी से यह मालूम होने पर अचरज हुआ कि तुमने तो इस विषय का जिक्र तक नही किया। मै स्वीकार करता हू कि इससे मैं बहुत परेशान हुआ और इससे मैंने समझ लिया कि तुम्हारे साथ काम करना कितना कठिन था।

गाधीजी ने मुझे यह भी कहा कि तुम्हारी मुलाकात से उन्होने यह खयाल बनाया कि तुम उनके सहयोग के लिए बहुत उत्सुक नही थे, हालाकि तुमने योही सहयोग उनसे मागा जरूर था। ऐसा मालूम होता था कि तुम्हारा विचार ऐसे विभिन्न व्यक्तियो की कार्य-समिति बनाने का था, जिनका तुमने इस काम के लिए पहले ही विचार कर लिया था और शायद वचन दे दिया था। अवश्य ही तुमको ऐसा करने का पूरा हक था। परन्तु इन सब बातो से सकेत मिलता था कि तुम गाधीजी और उनके गुट के सहयोग के अलावा कुछ और ही सोच रहे थे।

पजाब के चुनाव, दिल्ली के चुनाव और आध्र में नेल्लोर के सबध में तुमने जो कार्रवाई की थी उससे मै चौंक गया, कार्रवाई से इतना नही, जितना

उसके करने के ढग से। तुमने महासमिति-कार्यालय से पूछे बिना या आध्र के मामले में प्रान्तीय काग्रेस-समिति से पूछे बिना सीधी कार्रवाई कर ली। पजाब में तुमने महासमिति कार्यालय की तरफ से होनेवाली जाच को वन्द करने का तार भेज दिया। दिल्ली में तुमने प्रान्तीय काग्रेस-कमेटी से पहले पूछे बिना कार्रवाई की। मेरा खुद का खयाल है कि तुम्हारा दिल्ली-सबधी फैसला गलत था। लेकिन यह महत्व की बात नही है। मुझे ऐसा लगा कि तुमपर व्यक्तियो और गुटो का सीधा असर पड रहा है और किसी पदाधिकारी को जो अव्यक्तिगत और मामूली तरीका अपनाना चाहिए, उसे तुम कुचले दे रहे हो। यह ढग मुझे खतरो से भरा हुआ मालूम हुआ।

तुम कहते हो कि "ऊपर से हस्तक्षेप करने की आदत में कोई काग्रेस-अध्यक्ष मुझे मात नही दे सकता।" मै महसूस करता हू कि मै दखल देने-वाला आदमी हू। लेकिन जहातक महासमिति के काम का सवध, है मुझे याद नही पडता कि मैने महासमिति के दफ्तर के काम में दखल दिया हो, हालाकि मै अक्सर उसपर असर डालने की कोशिश करता था। मेरी जान-बूझकर यह नीति थी (और इस आशय के गश्ती पत्र जारी किये गए थे) कि दखल न दिया जाय और प्रान्तीय मामलो में महासमिति-कार्यालय भी हस्तक्षेप न करे, जवतक कि अनिवार्य न होजाय।

जब ये विविध घटनाए मुझे बेचैन कर रही थी तभी गाधीजी और वल्लभभाई के नाम तुम्हारे तार आये और इनका अर्थ यह समझा गया कि तुम नही चाहते थे कि हम कार्य-समिति की बैठक करें या मामूली कामकाज भी निपटायें। तुम्हारा कहना है कि तुम्हारा मतलब कोई ऐसी मनाही नही था, लेकिन तारो का जरूर ही यह मतलव निकल सकता था। यह सभव था कि तुमसे पूछ लिया जाता कि तुम्हारा क्या मतलव था, लेकिन यह अवाछनीय प्रतीत हुआ, क्योकि इसका मतलव यह होता कि हम तुमको दवाकर कोई ऐसी चीज करना चाहते है, जो शायद तुम नही चाहते थे कि हम उस वक्त करें।

इन सब वातो से स्पष्ट होता था कि तुम अपनी ही पसद के साथियो के साथ किसी मार्ग का अनुसरण करना चाहते थे, कार्यसमिति के पुराने सदस्य भार वन गये थे और उनकी कोई खास जरूरत नही रह

गई थी। उनके लिए त्याग-पत्र देना विल्कुल जरूरी होगया। उनका ऐसा न करना तुम्हारे प्रति, देश के प्रति और अपने प्रति अन्याय होता और लोकतत्री कार्य-प्रणाली के विपरीत होता। मै नही समझता कि वे कैसे रुक सकते थे या उनके इस्तीफे से कैसे गत्यवरोध पैदा हुआ। त्यागपत्र न देने से अवरोध उत्पन्न हो जाता, क्योकि उसके कारण तुम जो कारंवाई मुनासिब समझते वह नही कर सकते थे।

तुमने ठीक ही बताया है कि मैंने बेवकूफी का-सा रवैया अख्तियार किया। मैंने दरअसल इस्तीफा नही दिया और फिर भी ऐसा दिखाया मानो मैंने वैसा किया हो। इसका कारण यह था कि मै अपने साथियो के सारे नजरिये से बिल्कुल असहमत था। मेरा जोरदार खयाल था कि उस परिस्थिति में मै तुमको सहयोग नही दे सकता था। लेकिन उतना ही जोरदार मेरा खयाल यह था कि मै एक तरह दूसरो से भी अलग हो रहा हू। असल में यह दूसरा भाव अधिक प्रवल था, क्योकि इसका अर्थ एक ऐसे अध्याय को खत्म करना था, जो लम्बा होगया था। 'नेशनल हेरल्ड' में मैंने जो लेखमाला लिखी उसका पहला लेख तुम पढ़ोगे तो शायद तुमको कुछ-कुछ पता लगेगा कि मेरा दिमाग किस तरह काम कर रहा था।

इस्तीफे के सामान्य पत्र में मेरे २२ फरवरीवाले बयान को शामिल करने का कोई सवाल नही था। मेरा बयान स्पष्ट ही निजी था और उसे और कुछ नही समझा जा सकता था। मुझे दूसरो के साथ त्यागपत्र में शामिल होने को बहुत दबाया गया था। मैंने इन्कार कर दिया था। मैंने उनका त्यागपत्र तुमको भेज दिये जाने के बाद तक देखा भी नही था।

मै तुमको थोडा और समझा दू कि पिछले दो-तीन महीने में मेरे मन में किस बात से बहुत वडी बेचैनी रही है। मै दो बडे कारणो से तुम्हारे चुनाव में खडे होने के खिलाफ था एक तो उस समय उसका यह अर्थ होता कि गाधीजी से सबध टूट रहा है और मैं नही चाहता था कि ऐसा हो (इस बात की चर्चा करने की जरूरत नही है कि ऐसा क्यो होता। मुझे लगा कि ऐसा होगा।) दूसरे मैंने सोचा कि उससे सच्चे वामपक्ष को हानि होगी। वामपक्ष इतना शक्तिशाली नही था कि वह स्वय भार को उठा ले और जब सचमुच काग्रेस में मुकावला होगा तो वामपक्ष हार

जायगा और फिर उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया होगी। मैं इसे तो सभव समझता था कि तुम पट्टाभि के खिलाफ चुनाव जीत जाओगे, लेकिन मुझे वहुत सदेह था कि जिसे गाधीवाद कहते है, उसके साथ साफ लडाई मे तुम काग्रेस को अपने साथ ले जा सकोगे। अगर सयोगवश तुम काग्रेस में वहुमत प्राप्त कर लेते तब भी गाधीजी के बिना देश में प्रवल समर्थन न मिलता और कारगर काम और इससे भी अधिक सग्राम के लिए तैयारी वहुत मुश्किल हो जाती। देश में पहले ही इतनी अधिक फूट फैलानेवाली वृत्तिया मौजूद थी और उनपर कावू पाने के बजाय हम उन्हे वढा देते। इस सबका नतीजा यह होता कि ठीक जिस समय हमें शक्ति की आवश्यकता थी तव हम राष्ट्रीय आन्दोलन को कमजोर कर देते। तुम्हारे दुवारा चुने जाने के मेरे विरोध के दो मुख्य कारण थे। बम्बई के कुछ मित्रो ने तुमसे जो कुछ कहा वह पूरी तरह सही नही था। मैंने तो यह कहा था कि अगर तुम्हारे कुछ निश्चित वामपक्षी सिद्धात और नीतिया है तव तो तुमको दुवारा चुनाव में खडे होने का कोई मतलव हो सकता है, क्योकि तब तो चुनाव से लोगो को विचारो और नीतियो की शिक्षा मिलती। लेकिन थोडे-वहुत व्यक्तिगत आधार पर चुनाव लडने मे यह खूवी भी नही होती। जो हो, ऊपर दिये हुए कारणो से मैंने तुम्हारा चुनाव के लिए खडा होना वाछनीय नही समझा।

मेरे २६ जनवरी और २२ फरवरी के बयान जरूर ही कुछ भिन्न है, लेकिन मै नही समझता कि उनसे नजरिये का कोई परिवर्तन प्रकट होता है। पहला बयान तुम्हारे चुनाव से पहले जारी हुआ था और मै भरसक किसीका पक्ष नही लेना चाहता था। मुझे डा० पट्टाभि के लिए अपील करने को कहा गया था। यह मैंने मजूर नही किया। इसलिए मेरा बयान जान-बूझकर हल्का कर दिया गया। वाद मे कुछ और तथ्य मेरी जानकारी में आये। मैंने तुम्हारे चुनाव-सवधी वयान देखे और कई और वातें हुईं, जिनका मैंने ऊपर उल्लेख किया है। मैंने यह भी देखा कि तुम्हारा तरह-तरह के लोगो से गहरा सबध होगया था, जो तुमपर वहुत असर डाल रहे थे। इन व्यक्तियो में से कुछ स्वय तो वाछनीय थे, लेकिन मेरे खयाल से वे किसी वामपक्षी मत अथवा किसी सगठित मत के प्रतिनिधि नहीं

थे । इसीलिए पारिभाषिक राजनैतिक अर्थ में मै उन्हे साहसी कहता हू । किसी आदमी में या राष्ट्र मे साहस की वृत्ति होना अवश्य ही बहुत वाछनीय वस्तु है, परन्तु राजनैतिक सघर्ष में इस शब्द का एक खास अर्थ होता है । वह सबधित व्यक्ति के लिए हरगिज बेइज्जती का शब्द नही है । मैने साहसी वृत्ति को बिल्कुल पसद नही किया और उसे हमारे काम के लिए हानिकारक समझा । अस्पष्ट वामपक्षी नारो के साथ कोई स्पष्ट वामपक्षी विचारधारा अथवा सिद्धान्तो का न होना इन वर्षों में यूरोप मे बहुत नजर आया । इससे फासिज्म का विकास हुआ है और जनता के बहुत बडे समुदाय गुमराह हुए है । भारत मे इस तरह की घटना की सभावना से मेरा मन भर गया और मुझे बेचैनी हुई । अतर्राष्ट्रीय मामलो में तुम्हारे विचार मुझसे भिन्न थे और हमारा नाजी जर्मनी अथवा फासिस्ट इटली की निंदा करना तुमको पूरी तरह पसद नही था । इससे मेरी बैचैनी और बढ गई और सारे चित्र को देखते हुए मैंने उस दिशा की बिल्कुल कल्पना नही की, जिसमें तुम हमे ले जाना चाहते थे ।

इस दिशा अथवा तुम्हारे विचारो के बारे मे मुझे पूरा भरोसा नही था, हालाकि सामान्य सकेतो से मुझे अशाति हुई, इसलिए मैंने फरवरी के शुरू में किसी समय तुम्हे लिखा और अनुभव भी किया कि इन मामलो की सफाई के लिए तुम कोई नोट लिखो । तुम्हारे पास ऐसा करने के लिए समय नही था और फिर तुम बीमार होगये । मेरी कठिनाइया बनी रही और मेरे चित्त को बेचैन करती रही । २२ फरवरी के मेरे बयान में और उसके बाद भी 'नेशनल हेरल्ड' में मेरे लेखो में इन सब बातो की ही झलक है । यह सभावना थी कि कार्यसमिति इधर-उधर के तत्वो से बनेगी, जिनका कोई सगत दृष्टिकोण नही होगा, लेकिन जिनकी एकमात्र कडी सामान्य विरोध की होगी । यह कोई अच्छी बात नही मालूम हुई । मै नही समझ पाया कि मै उसमे कैसे शरीक हो सकता था । मुझे पुरानी कार्यसमिति के साथ भी काफी मुश्किल पेश आ चुकी थी, हालाकि मतभेदो के होते हुए भी हम एक-दूसरे को समझते थे और सालो तक साथ-साथ निभ सके थे । उस स्थिति में बने रहने की भी मेरी इच्छा नही थी, फिर भी छोटी-सी कार्यकारिणी में मेरा ऐसे लोगो के साथ सबध कैसे

होता जिनके और मेरे बीच में एक-दूसरे को समझने की कडी भी नही थी।

एक निजी पहलू भी मै तुमको साफ-साफ बता देना चाहता हू। मै बराबर महसूस करता रहा कि तुम दुबारा चुने जाने के लिए बेहद उत्सुक थे। राजनैतिक दृष्टि से उसमें कोई बेजा बात नही थी और तुम्हे दुबारा चुने जाने की इच्छा रखने का और उसके लिए काम करने का पूरा हक था। लेकिन इससे मुझे दु ख जरूर हुआ, क्योकि मेरे खयाल से तुम्हारा इतना बडा पद था कि तुमको इस किस्म की चीज से ऊपर रहना चाहिए था। मुझे यह भी लगा कि यदि तुम दूसरी तरह से काम करते तो तुम नीतियो और गुटो पर कही अधिक प्रभाव डाल सकते थे।

तुमने मुझे यह याद दिलाया है कि वल्लभभाई ने तुम्हारे बारे मे क्या कहा और बताया है कि मैने इसके लिए उनकी आलोचना नही की। जहातक चुनाव के समय जारी किये गए अलग-अलग बयानो का सम्बन्ध है, मुझे वे बिल्कुल पसन्द नही आये है। काश कोई भी बयान न दिया जाता! लेकिन जहातक मुझे याद है, उनमें कोई ऐसी खास बात मुझे दिखाई नही दी, जिससे मेरा हस्तक्षेप जरूरी होता। वल्लभभाई के ये शब्द कि तुम्हारे चुनाव से देश के हित को हानि पहुचेगी, सूरत भेजे गये एक खानगी तार में इस्तेमाल किये गए थे। मेरे खयाल से इसमें फर्क पड जाता है कि कोई बात किसी सार्वजनिक बयान में कही जाय या किसी निजी पत्र अथवा तार में। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि यह सदेश तुम्हारे भाई को भेजा गया था। यह कहने मे एक तेज बात है, मगर इसमें कोई बेइज्जती करने का इरादा नही मालूम होता। यदि वल्लभभाई की पक्की राय है कि हिंदुस्तान की भलाई के लिए गाधीजी का नेतृत्व आवश्यक है और तुम्हारे फिर से चुने जाने से हिंदुस्तान उस नेतृत्व से वचित हो सकता है तो वह जरूर ऐसा सोच और कह सकते है। ठीक इसी तरह हम गाधीजी का कितना ही आदर करें तो भी हम इस फैसले पर पहुच सकते हैं कि गाधीजी का नेतृत्व देश के लिए खतरनाक और हानिकारक है।

मैंने तुमको लिखा था कि तुम्हारे दुबारा चुनाव मे कुछ हानि और

कुछ लाभ हुआ है। मेरी अव भी वही राय है, हालाकि लाभ से हानि अधिक हो सकती है। हानि इस अर्थ में कि इससे हमारे सगठन में फूट पडती है। लाभ यह हुआ कि इससे हमारे पुराने नेताओ में से कुछ लोगो का आत्मसतोष हिल गया। मेरे मन में कोई शका नही कि तुम्हारे पक्ष में राय बहुत-कुछ इस आत्मसतोष के विरुद्ध थी और किसी हद तक उन तरीको के खिलाफ थी, जो काम में लिये गए थे। मैंने यह वात गाधीजी और दूसरे लोगो को बार-बार और जोर के साथ बताई है और इसपर ध्यान देने की प्रार्थना की है। अध्यक्ष के चुनाव के मतदान के रूप में जो नाराजी जाहिर की गई उसमें सार था।

तुमने मुझे याद दिलाया है कि जहा एक तरफ मै ऊपर से तुम्हारे दखल देने पर आपत्ति करता हू वहा मैंने ४ फरवरी को तुम्हे लिखा था कि अध्यक्ष के नाते तुम बहुत कम अडते हो और निष्क्रिय रहते हो। यह सही है। मैंने जिस हस्तक्षेप का जिक्र किया वह तुम्हारे दुबारा चुनाव के ठीक पहले और ज्यादातर बाद में हुआ। इसका ताल्लुक पहले के काल से नही था। जब मैंने तुम्हारे अडने की बात कही तो मेरा मतलव पिछले साल कार्यसमिति में तुम्हारे रवैये से था। मैंने यह आशा रखी थी कि तुम वहा अधिक जोरदार नेतृत्व करोगे, हालाकि मै फूट नही चाहता था। मै यह भी नही चाहता था कि अध्यक्ष की हैसियत से तुम प्रान्तीय मामलो में दखल दो। तुमने इस बात का जिक्र किया है कि कार्य-समिति के कुछ सदस्य तुम्हारी अनुपस्थिति में इकट्ठे हुए और तुम्हारे पीठ-पीछे अध्यक्ष-पद के लिए डा पट्टाभि को खडा करने का निश्चय किया। मेरा खयाल है कि इस बारे में वल्लभभाई के वयान से कुछ गलतफहमी पैदा होगई है। जहातक मैं जानता हू, ऐसी कोई वैठक नही हुई। बारडोली में हुआ यह था कि मौलाना आजाद पर गाधीजी और मैंने तथा दूसरो ने भी दवाव डाला कि वह खडा होना मजूर कर लें। उनकी इच्छा नही थी। जिस दिन मै बारडोली से रवाना हो रहा था (तुम्हारे रवाना होने के दूसरे दिन), उस दिन मैं गाधीजी से और दूसरे लोगो से विदा लेने गया। हममें से कुछ गाधीजी की कुटिया के वरामदे में खडे थे। मै भूल रहा हू कि मौलाना और वल्लभभाई के सिवा वहा और कौन था। मौलाना ने फिर कहा कि उन्हें यह जिम्मे-

दारी उठाने में सकोच है। इसपर वल्लभभाई ने कहा कि अन्त में मौलाना इन्कार कर दें तो डा पट्टाभि को खडा होने के लिए कहना चाहिए। मुझे डा पट्टाभि का नाम इसके लिए पसन्द नही था, इसलिए इसका खडन किये बगैर मैंने फिर कहा कि मौलाना को राजी करना ही चाहिए। थोडी देर बाद मै बारडोली से चला आया। इलाहाबाद पहुचने पर मुझे तार से यह सूचना मिली कि मौलानासाहब सहमत होगये है। मै सीधा अल्मोडा चला गया और अध्यक्ष के चुनाव से पहले दिन तक वहा रहा।

रही बात 'लाछनोवाले' प्रस्ताव की, सो हकीकत यह है। इस मामले की सफाई करने के लिए तुम्हे एक से ज्यादा वार दबाने के अलावा मेरी इस मामले में अधिक दिलचस्पी नही हुई। मै समझता था कि तुम्हारी तरफ से सफाई हुए बिना गाधीजी और तुम मिलकर काम नही कर सकते। गाधीजी या राजेन्द्रबाबू या सरदार पटेल का इस बारे में क्या विचार था यह तो वे ही कह सकते है। उनका मुझपर निश्चित असर यह हुआ कि वे इसे वडा महत्त्व देते थे। जब हम त्रिपुरी पहुचे तब मुझे फिर ऐसा ही कहा गया। मेरी अपनी निश्चित राय तो यह थी कि मामले को तुम या राजेन्द्रबाबू या दोनो सक्षिप्त वक्तव्यो द्वारा महासमिति में रख दो और इसके बारे में कोई प्रस्ताव न लाया जाय। और लोग इससे सहमत नही हुए। एक सुझाव यह दिया गया कि महासमिति के लिए प्रस्ताव का मसविदा तैयार किया जाय। मेरा खयाल है कि काग्रेस से बचने का विचार नही था, बल्कि विषय-समिति शुरू होने से पहले वातावरण साफ करने का था। सदा की भाति प्रस्ताव का मसविदा बनाने को मुझसे कहा गया। मैंने कहा कि मै सहमत नही हू, मगर तुम्हारे दृष्टिकोण को यथासभव व्यक्त करने की चेष्टा करूगा। मैंने महासमिति के लिए प्रस्ताव का एक सक्षिप्त मसविदा बना दिया, जिसमे पुरानी कार्य-समिति और गाधीजी के नेतृत्व और नीति के प्रति विश्वास प्रकट किया गया और यह भी कहा गया कि उस नीति का कोई भग नही होना चाहिए। उनमें न तो 'लाच्छनो' का जिक्र था और न गाधीजी की इच्छानुसार कार्यसमिति बनाने का। यह प्रस्ताव पसन्द नही किया गया और बाद में शायद और लोगो से सलाह करके राजेन्द्रबाबू ने एक लम्बा और सशोधित प्रस्ताव पेश किया (गोविन्द

वल्लभ पन्त तबतक नही पहुचे थे)। मुझे यह प्रस्ताव पसन्द नही आया और मैने ऐसा कहा। मैने कहा कि मेरे खयाल से अपने-आपमे लाछनोवाली धारा, जिस रूप मे वह रखी गई थी, आपत्तिजनक नही थी, परन्तु फिर भी मुझे वह अवाछनीय मालूम हुई और यह कि उसपर रोष होगा, खास तौर पर चूकि तुम बीमार थे। मुझे बताया गया कि प्रस्ताव में इस मामले का कुछ-न-कुछ जिक्र करना बहुत बडे महत्व की बात थी, क्योकि जिन लोगो के सम्मान पर कलक लगाया गया था उनकी स्थिति की कुछ ऐसी सफाई किये बिना उनके लिए अपना सहयोग देना असभव था। उनके काम करने के लिए यह भी बहुत जरूरी था और गाधीजी की नीति पर चलना भी। यह भी कहा गया कि उल्लेख अधिक-से-अधिक नरम और अव्यक्तिगत बना दिया गया है। इससे आगे वे नही जा सकते थे।

इसके बाद मुझे कुछ कहना नही था। मैने स्पष्ट कर दिया कि कुछ बातो में मै प्रस्ताव को दुर्भाग्यपूर्ण मानता था। लेकिन चूकि यह उनके लिए सम्मान का विषय था, इसलिए मेरा उसके साथ और अधिक वास्ता नही रहा। मै उसकी चर्चा मे भाग नही लूगा।

उसके बाद मुझे मालूम नही क्या हुआ। महासमिति की बैठक में ही मैने देखा कि गोविन्दवल्लभ पन्त उसे पेश करनेवाले थे। तुम वहा मौजूद थे। बाद में जब प्रस्ताव विषय-समिति को दिया गया तब मै प्रस्ताव के कुछ समर्थको के पास गया और फिर सुझाव दिया कि कुछ परिवर्तन कर दिये जाय। मैने बताया कि मूल प्रस्ताव महासमिति के लिए था, ताकि इस घटना और विवाद को समाप्त किया जाय, परन्तु अब चूकि वह काग्रेस में जा रहा था, इसलिए उसपर दूसरी दृष्टि से विचार करना चाहिए। मुझे फिर कहा गया कि यह इज्जत का सवाल था और जबतक उसकी सफाई नही होती तबतक वह सहयोग की दृष्टि से कैसे सोच सकते थे। तुमको याद होगा कि काग्रेस से पहले उन्होने तुमसे कहा था कि वह तुम्हारे साथ सहयोग नही कर सकेंगे। वह इस प्रस्ताव को एक ऐसा जरिया समझते थे, जिसके कारण सहयोग का प्रयत्न हो सके। इसके अलावा कोई जरिया नही था।

खुले अधिवेशन के पहले दिन जब तुम बहुत बीमार थे, मैने प्रस्ताव

को बदलवाने की एक और जोरदार कोशिश की। मुझे सफलता नही मिली, हालाकि श्री अणे के महासमिति में भेजने के प्रस्ताव को मजूर करने में सब सहमत थे। श्री अणे का यह खयाल मालूम होता था और उनकी बात का हम सबपर यह असर पडा कि उनका प्रस्ताव बगाल के बहुत-से भाइयो को पसन्द था। हमपर यह भी असर पडा (वह गलत हो सकता है) कि तुम्हे भी उनका प्रस्ताव पसन्द था। बाद में जो कुछ हुआ वह तुमको मालूम है।

दूसरे दिन जब काग्रेस के अधिवेशन में, जो विषय-समिति के मडप में हुआ था, गोविन्दवल्लभ पन्त प्रस्ताव पेश कर रहे थे तब सुरेश मजूमदार मेरे पास आये। उन्होने सुझाया कि प्रस्ताव महासमिति को भेज दिया जाय अर्थात् उन्होने श्री अणे के प्रस्ताव को फिर से ताजा किया। उन्होने कहा कि पिछली रात कुछ गलतफहमी होगई थी और अब यह प्रस्ताव फौरन मान लिया जायगा। मैंने उन्हें बताया कि खास तौर पर इस स्थिति में जब पन्तजी सचमुच मामले को पेश कर रहे थे, मैं लाचार था। मै पहले कई तरह से भरसक प्रयत्न कर चुका था और अब सबधित पक्षो के पास जाना बेहतर होगा। मुझे मालूम नही, बाद में उन्होने क्या किया।

रही बात यह कि त्रिपुरी में और प्रतिनिधियो के शिविर में पर्दे के पीछे क्या-क्या हो रहा था, सो इस बारे में शायद तुम्हारी जानकारी मुझसे अधिक है। मै तो अपने तम्बू से बाहर भी नही निकला, सिवा विशेष समारोहो के लिए और मेरे पास मिलनेवाले भी बहुत ही थोडे आये। कुछ मै मिस्री प्रतिनिधियो के साथ भी लगा रहा।

तुमने मेरे 'मवक्किलो' का जिक्र किया है। मुझे डर है कि ये मवक्किल मेरी वकालत से बहुत खुश नही है और मै उनका अप्रिय बनने में सफल होगया हू। कितनी बहादुरी की बात है कि लगभग हरेक को नाखुश कर दिया जाय।

यह 'लाञ्छनो' वाला प्रस्ताव अवैधानिक था या अनियमित, यह फैसला करना तुम्हारा काम है। इस सवाल पर मै अपनी राय दू, इसमें बहुत सार नही है। मुझे कुदरती तौर पर दिलचस्पी है कि काग्रेस का काम चलता रहे और अवरोध की भावना, जो आज हममें है, दूर हो जाय। मुझे आश्चर्य है कि तुम ऐसा सोचते हो कि मैंने तुम्हारे विरुद्ध सार्वजनिक आन्दोलन छेड

दिया है। गाधीजी के साथ मेरी बात होने के बाद मुझे बडी चिन्ता हुई और मैंने स्थिति पर देर तक विचार किया। मेरा दुर्भाग्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओ का मुझपर जितना असर होना चाहिए, उससे अधिक होता है। यूरोप में बहुत गभीर सकट पैदा होगया था, जिसका परिणाम युद्ध हो सकता था। मुझे लगा कि हमें निष्क्रिय होकर घटनाओ का इतजार नही करना चाहिए। गाधीजी के नाम शरत् के तार से पता चला कि वह उनसे मिलने नही आ रहे थे। इस प्रकार जब घटनाए तेजी से हो रही थी तब भी कुछ नही किया जा रहा था। इसपर मैंने वह तार भेजने का निश्चय किया। मैंने वह तार बाद में गाधीजी को तथा और एक-दो को बताया। मैंने किसी अखबारवाले को न तो दिया, न दिखाया। सच तो यह है कि मैंने उस समय गाधीजी के साथ एक-दो व्यक्तियो के अलावा किसीसे उसका जिक्र भी नही किया। अब भी मैंने औरो को नही बताया है। शायद किसीको दूसरो से जानकारी मिली और उसने अखबारवालो को दे दी।

क्या तुम्हारा खयाल नही है कि त्रिपुरी से पहले कार्यसमिति के बारह सदस्यो के त्यागपत्र और काग्रेस के बाद की स्थिति की तुलना सही नही है? उनके इस्तीफो के कारण कोई अवरोध नही था या नही होना चाहिए था। अवरोध हो जाता यदि वे त्यागपत्र न देकर काम करने का आग्रह करते। उनके त्यागपत्रो पर नाराजी जाहिर न करके, मेरे खयाल से, व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनो कारणो से उनके लिए और कोई रास्ता खुला नही था।

जब मैंने दिल्ली से तुमको तार भेजा तो मैं अच्छी तरह जानता था कि तुम वहा नही आ सकते। मैं चाहता था कि तुम यह सुझाव दो कि गाधीजी तुमसे मिलने धनबाद चले जाय। मेरा खयाल है कि तुम उन्हें बुलाते तो वह चले जाते। यह स्वाभाविक था कि बिना बुलाये जाने में उन्हें सकोच हुआ। त्रिपुरी का प्रस्ताव विहित था अथवा अविहित, प्रारम्भ तुम्हारे हाथ में था। जबतक उन्हें यह ज्ञान न हो कि तुमपर क्या प्रतिक्रिया होगी, वह कोई कदम नही उठा सकते थे। शायद तुमको ऐसा लगा कि वह धनबाद न आ सकें। जब तुम्हारे सेक्रेटरी ने मुझे यहा टेलीफोन किया तब गाधीजी दिल्ली जाने के लिए सचमुच स्टेशन पर जा रहे थे। अगर निकट भविष्य

राष्ट्रीय अथवा अतर्राष्ट्रीय मामलो के बारे मे अपने विचारो पर तडके ही लिखने का साहस नही होता। आम तौर पर मै उनके बारे में चुप नही रहता। तुमने देखा है कि मै बोलता बहुत हू और लिखता और भी अधिक हू। अभी इसे यही छोड देता हू। परन्तु यह जरूर कहूगा कि जहा मै अक्सर हारे हुए पक्षो की हिमायत और जर्मनी तथा इटली जैसे देशो की निन्दा करता हू, वहा मै नही समझता कि मैने ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यवाद को कभी सदाचार का प्रमाणपत्र दिया है।

एक-दो दिन हुए, मैने तुम्हे एक लेखमाला के कुछ लेख भेजे थे, जो मैंने त्रिपुरी से पहले 'नेशनल हेरल्ड' को दिये थे। उनमें से एक लेख रह गया था। अब पूरे लेख अलग से भेज रहा हू। 'फ्री प्रेस जर्नल' या और किसी पत्र के लिए हाल में मैने कोई लेख नही लिखा।

सस्नेह तुम्हारा,
जवाहरलाल

श्री सुभाषचन्द्र बोस,
काग्रेस अध्यक्ष,
डाकघर जीलगोरा,
जिला मानभूम

२५९ शरत्चन्द्र बोस की ओर से

कलकत्ता
४ अप्रैल १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

आपके २४ तारीख के लम्बे पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। हालाकि गाधीजी को २१ तारीख को भेजे मेरे पत्र की लगभग हर बात से आप असहमत है, फिर भी आपके पत्र को पढकर मुझे एक तरह से खुशी हुई, क्योकि उसमें दूसरे व्यक्ति का दृष्टि-बिंदु मिला। उसके जवाब में देरी होने का मुझे बहुत दुख है। देरी की वजह मेरी खराब तदुरुस्ती थी, जो दुर्भाग्य से अब भी वैसी ही चल रही है।

आपका यह कहना बिल्कुल सही है कि मेरे पत्र मे नीति और कार्यक्रमो की नही, निजी प्रश्नो की चर्चा है। लेकिन ऐसा जान-बूझकर ही किया गया है। ऐसी बात भी नही कि मैं सिद्धान्तो और व्यक्तियो के बीच

के अतर और उनके सापेक्ष महत्व को नही जानता। सच तो यह है कि अगर मेरे लिए सभव होता तो आपकी भाति मैं भी सिद्धान्तो और कार्य-क्रमो के स्तर पर ही चर्चा करना पसद करता, लेकिन दुर्भाग्य से राज-नीति में हम हमेशा कोरे सिद्धान्तो पर ही जीवित नही रह सकते। वर्त्त-मान विवाद में तो केवल सिद्धान्तो और कार्यक्रमो तक अपने-आपको सीमित रखना और भी कठिन है, क्योकि अध्यक्ष के चुनाव का शुरू से ही, यदि पूरी तरह नही तो बहुत-कुछ, वैयक्तिक रूप रहा है।

आप खुद कहते है कि मेरे उठाने के पहले से ही वैयक्तिक सवाल मौजूद था और त्रिपुरी में इसने दूसरे मुद्दो के विचार पर भी अपना रग चढा दिया। इसमें मैं आपसे पूरी तरह सहमत हू। असल मे, मैं तो यह भी कहूगा कि दूसरे सब मुद्दे प्राय भुला दिये गए थे। इसीलिए मैंने वैय-क्तिक प्रश्नो को खोलकर रख दिया और महात्माजी से अनुरोध किया कि वह लीक में से हमें बाहर कर दें। सिद्धान्तो आदि को लेकर व्यर्थ बात करने से कोई लाभ नही था, जबकि असली रोडे तो व्यक्तिगत विरोध और द्वेष है—वह विद्वेष, जो सुभाष के किसी कार्य से या उनके सोचने के ढग से पैदा नही हुआ, बल्कि पुरानी कार्य-समिति के कुछ सदस्यो के रुख और कामो से उपजा है।

इससे मुझे व्यक्तिगत मतभेदो की शुरुआत के आपके विवरण में एक बहुत गभीर छूट का पता चला है। माना जाता है कि अपने चद पुराने साथियो के बारे में सुभाष ने कुछ कहा। आपकी धारणा है कि यह मत-भेद उसी बात से आरभ हुआ। यह सही नही है, क्योकि आपके विवरण में शुरुआत की और उस घटना के सबसे महत्वपूर्ण भाग की उपेक्षा है। गलतफहमी के इस अध्याय का प्रारम्भ बारडोली में हुआ, जहा एक खास दल अगले साल के काग्रेस के अध्यक्ष के सवाल को तय करने के लिए इकट्ठा हुआ और अध्यक्ष और कार्य-समिति के कुछ दूसरे सदस्यो की बिना जानकारी के और उनके पीठ-पीछे उसने कुछ निश्चय कर लिये और कुछ व्यवस्थाए भी कर डाली। ये विचित्र और गुप्त कार्यवाहिया मेरी समझ से एकदम परे है। मुझे ताज्जुब है कि क्या आपको उनमें साथियो के बीच का वह विश्वास और वह सद्भाव दिखाई देता है,

जिसको आप कहते है कि आप बहुत महत्व देते है ? क्या आप ऐसे मामले में अध्यक्ष को विश्वास में लेने की अनिच्छा को उचित ठहरा सकते है, जिसका काग्रेस और उसके अध्यक्ष दोनो के साथ अत्यन्त गहरा सबध आता है और जिसपर अध्यक्ष को अपनी बात कहने का अधिकार था ? हा, यह बात अलग है कि यह औचित्य अध्यक्ष के प्रति महज व्यक्तिगत विद्वेष से अथवा उसके सामने दिल खोलकर बात कहने की अनिच्छा से उत्पन्न हुआ हो ।

जहातक मुझे पता है, सुभाष ने अपनी तरफ से ऐसे व्यवहार के लिए कोई अवसर नही दिया । उसने अपने पूरे कार्य-काल में एक ओर गाधीजी को और दूसरी ओर कार्य-समिति के अपने साथियो को भी पूरा-पूरा सहयोग दिया । कार्य-समिति की बारडोलीवाली बैठक की तारीख तक उसके और उसके साथियो के बीच किसी भी प्रकार की गलतफहमी की छाया तक नही थी । चुनाव के बाद भी गाधीजी को पूरे दिल से सहयोग देने के अपने इरादे में वह कभी कच्चा नही पडा । जब हम सब बारडोली में थे, उस समय उसके साथियो ने अध्यक्ष के चुनाव के प्रश्न को उसके सामने क्यो नही रक्खा और इसपर सागोपाग विचार क्यो नही किया ? त्रिपुरी में पहली बार मैंने सुना कि सरदार को और कुछ दूसरे लोगो को भी पिछले सितम्बर में महासमिति की दिल्लीवाली बैठक के सुभाष द्वारा सचालन के सबध में शिकायत रही, जबकि उसने समाजवादी दल के कुछ सदस्यो को नागरिक स्वाधीनता के प्रस्ताव पर विस्तार से चर्चा करने की अनुमति दी । उनका यह भी कहना था कि इससे सुभाष में उनका विश्वास डिग गया । दिल्ली की बैठक के बाद जब हम वर्धा और बारडोली में मिले तो इस शिकायत का इशारा तक भी नही किया गया ।

वास्तव में अगले वर्ष के लिए अध्यक्ष के चुनाव के सबध में गुप्त रूप से बारडोली में हुए विचार-विमर्श और लोगो में खुलेपन की कमी के बारे में मैं जितना सोचता हू उतना मुझे लगता है, मानो एक षड्यत्रकारी दल ने कोई साजिश की है, जो चाहता है कि उसे शाहशाह बनानेवाला समझा जाय—उसके हाथ में सारी सक्रिय शक्ति रहे—और जो काग्रेस को अपनी इच्छाओ के स्वर में बुलवाना चाहता है ।

आपके सामने मैं स्पष्ट रूप से स्वीकार करूगा कि साथियो के रूप में काम करने और टीम बनाने की दृष्टि से पुरानी कार्य-समिति के कुछ सदस्यो में लगभग पूरी तरह से विश्वास खो चुका हू। ऐसा मैने इच्छापूर्वक अथवा सहज भाव से नही किया। मेरे इन पुराने साथियो ने स्वय एक-एक कदम करके मुझे इस निराशा तक पहुचाया है। इस समाचार ने कि ये लोग बारडोली में इकट्ठे हुए और इन्होने अध्यक्ष के पीठ-पीछे अध्यक्षता के बारे में निर्णय कर लिया, मुझे गहरी चोट पहुचाई और इनकी सद्-भावना और वफादारी में मेरे विश्वास को, जो कि उस समय तक अटल था, हिला दिया। फिर अध्यक्ष के चुनाव के बारे में बयान और पत्र-व्यवहार निकला, परन्तु त्रिपुरी में मैंने जो कुछ देखा और मुझे अनुभव कराया गया उसके मुकाबले में ये चीजें वडी छोटी थी। वहापर मैंने जो अनुदारता और तगदिली देखी, जो कुछ मामलो में कपट और द्वेष की हद तक पहुच गई थी, उससे मै दग रह गया।

मैंने चद लोगो के बारे में जो बातें आपको बताईं उन्हें वैसा मान लेना आपको मुश्किल लगे तो मुझे अचरज नही होगा। दूसरो के बारे में ऐसी बातो पर विश्वास करना मनुष्य पसद नही करता, साथियो के बारे में तो और भी नही। फिर आपका जैसा स्वभाव और शिक्षण है उसे देखते हुए आपके लिए यह और भी मुश्किल होगा कि आप जिन व्यक्तियो के साथ जुडे हुए है, उनके बारे में बुरा विचार रक्खें। क्या विश्वास करने की इस असमर्थता की मिसाल हमें ससार में नही मिलती कि मौजूदा ब्रिटिश सरकार के सदस्यो के बीच इटन और हैरो में आचार के स्तरो और मूल्यो के जो तरीके व्यवहार में आते है, दुनिया में उनसे जुदा तरीके भी है? उनका विश्वास हैं कि हिटलर और मुसोलिनी सबसे अच्छे है और उन्हें तब गहरा धक्का लगता है जब उन्हें पता चलता है कि ये तानाशाह क्रिकेट, स्कूल के दिनो के पुराने सबध, आदि की कद्र नही करते है। साथ-ही-साथ आप व्यक्तिवादी है। जैसाकि आप स्वय कहते है, आप किसी दल या किसी दूसरे आदमी तक की मदद के बिना अकेले ही काम कर सकते है। जिस प्रकार की राजनीति मे आपको रुचि नही है, उसकी तरफ से आप इस तरह अपना मुह फेर सकते है, मानो वह है ही नही। परन्तु हर आदमी

इतना भाग्यशाली नही होता कि वह राजनीति की चीजो को नजरदाज कर सके। स्वभावत वे वहा की गन्दगी और वदवू दोनो से घवडा उठते हैं और घवराहट में उनकी जबान से ऐसी भाषा निकल पडती है, जिसे उन लोगो के लिए समझना मुश्किल होता है, जिन्होने जिन्दगी के गदे पहलू को न देखने का निश्चय कर लिया है।

मैंने जो आरोप लगाये हैं, उनमे कुछ तो मेरे स्वय के अन्वेषण द्वारा प्रमाणित होते हैं और कुछ ऐसे लोगो की साक्षी द्वारा, जिनके कथनो पर मेरा पूरा विश्वास है। मैंने सिर्फ सुनी-सुनाई वात या अफवाह के आधार पर कुछ नही कहा है। अगर मैं वैसा करता तो इन इलजामो की फेहरिस्त और अधिक लम्वी हो जाती या हो सकती। अगर मौका आया तो मैं अपने आरोपो के समर्थन में सारी सामग्री को उन व्यक्तियो के सामने अवश्य ही रख दूगा, जिनका वास्ता सचाई का पता लगाने से रहता है। परन्तु सामान्य तौर पर मैं कह सकता हू कि सुभाष के पुराने साथियो का रुख इतना खुला और साफ था कि यदि कानूनी कार्रवाई के लिए जिस प्रकार के सवूतो की आवश्यकता होती हैं, उनकी जरूरत यहा भी समझी जाय तो मुझे आश्चर्य ही होगा। अगर मेरे इलजामो के बारे में सचाई का पता लगाने में आपकी रुचि हो—वास्तविक, न कि कानूनी सचाई— तो आपको अलग-अलग क्षेत्रो में पूछताछ करनी पडेगी और आप अपने-आपको सतुष्ट कर सकेंगे कि हर चीज, जो मैंने लिखी है, तथ्य पर आधारित है। उनकी ओर से हाल ही में जो इन्कारी आई है, उसके होते हुए भी, मैं यही कहता हू। त्रिपुरी में उन्होने जो पार्ट अदा किया, उससे मुझे जितना आश्चर्य हुआ उससे ज्यादा आश्चर्य मुझे वास्तव में उनकी इस इन्कारी से हुआ है। अव मैं साफ तौर से समझता हू कि कांग्रेस के उच्च क्षेत्रो में 'सत्य और अहिंसा' का क्या अर्थ है।

मुझे डर है कि कांग्रेस के मत्रियो के वारे मे मैंने जो टिप्पणी की, उसको आप ठीक तरह से नही समझ पाये। उनके कांग्रेस की कार्यवाहियो मे हिस्सा लेने के वारे में मुझे कोई ऐतराज नही है, परन्तु आप आदमी को पूरी तरह पद से पृथक नही कर सकते, और कांग्रेस के काम में मत्रियो की मौजूदगी तथा उनके सक्रिय भाग लेने के फलितार्थो के प्रति हमे जागरुक रहना पडता

हैं, खास तौर पर इस प्रकार के विवाद में, जो सुभाष के चुनाव पर उठाया गया था। प्रान्तीय सरकारो के सदस्यो के रूप मे उनके पास वडी ताकत और साधन हैं, जिनमें दूसरो पर अनुग्रह करना भी शामिल है। गैर-सरकारी काग्रेसी सदस्यो के पास इस शक्ति और इन साधनो का सतुलन करने के लिए कोई चीज़ नही है। व्यावहारिक दृष्टि से मत्रियो के मुकाबले काग्रेस के गैर-सरकारी सदस्य निश्चित रूप से अलाभ की स्थिति मे हैं, क्योकि मत्रियो का सरकारी असर तो पडेगा ही, चाहे वे स्वय इसका उपयोग न भी करना चाहें, हालाकि उनसे ऐसी अपेक्षा रखना कि वे उपयोग नही करना चाहेंगे, जरूरत से ज्यादा होगा। इसके साथ ही अगर वे गतिहीन हो जाय और वर्तमान व्यवस्था को बनाये रखने मे ही रुचि रक्खें तो उनका असर और उनकी आवाज काग्रेस की गतिशीलता मे निश्चय ही बाधक होगी। पद-ग्रहणवाला प्रस्ताव मजूर होने के वाद से प्रान्तो में और काग्रेस के सगठन में जो परिवर्तन हुए हैं, उनसे सम्पर्क रखनेवाला हर व्यक्ति जानता है कि यह एक खतरा पैदा हो गया है। होनेवाली चीज की ओर से आखें मूद लेने में कोई फायदा नही।

इसके अतिरिक्त आपको यह याद रखना है कि त्रिपुरी में मत्रियो ने अपने-आपको विषय-समिति और खुले अधिवेशन में वाद-विवाद में हिस्सा लेने तक ही सीमित नही रखा, उन्होने सक्रिय होकर और डटकर प्रचार किया, और इस उद्देश्य से वे प्रतिनिधियो के कैंपो में भी चक्कर लगाते रहे। वैधानिक दृष्टि से देखें तो उनके आचरण का अर्थ यही था। अपने-अपने प्रातो में सुभाष के खिलाफ मत्री लगातार प्रचार करते रहे। इसके बावजूद जब सुभाष और पुरानी कार्य-समिति के कुछ सदस्यो के वीच चुनाव का मसला आया तब प्रातीय काग्रेस द्वारा चुने गये प्रतिनिधियो ने सुभाष के पक्ष में ही घोषणा की। मत्री इस फैसले को अतिम फैसला स्वीकार करने को तैयार नही थे और उसे पलटने के लिए उन्होने प्रयत्न किया। उन्हें भय था कि अध्यक्ष के चुनाव के परिणाम का मतलव होगा ससदीय कार्यक्रम में परिवर्तन। अततोगत्वा वे सफल हो गये। अब सवाल यह है मतदाताओ के निर्णय को वफादारी के साथ स्वीकार कर लेने के उनके रास्ते में क्या रुकावट थी? जाहिरा तौर पर यह स्पष्ट रुकावट पुरानी

कार्य-समिति के सदस्यो के प्रति उनकी वफादारी थी। ऐसी दशा में उन खास लोगो का मामला उठा, जिन्होने एक स्वतत्र चुनाव के निर्णय को नही माना, बल्कि उलटे उन्होने उसे रद्द करने की कोशिश की और अत में ऐसा करने में वे कामयाब हो गये। मै नही सोचता कि ऐसा हो सकता था, अगर सबधित व्यक्तियो के पीछे प्रातीय सरकारो की प्रतिष्ठा और शक्ति नही होती। इतने पर भी यदि आपको यह विश्वास न हो कि मत्रियो का प्रभाव काग्रेस के स्वतत्र जनतात्रिक निर्णयो को उलट सकता है तब मै आपको दूसरे किसी प्रकार से अपनी राय का नही बना सकता।

काग्रेस में एकता की जरूरत के लिए जितने आप जागरूक है, उतना मै भी हू। परन्तु हमें सोचना यह है कि इस एकता को कैसे लाया जाय? क्या किसी एक आदमी के पक्ष में पद त्यागकर यानी 'नेता-सिद्धात' को स्वीकार करके, या हमेशा के लिए किसी गुट के हाथो मे सत्ता सौंप करके, अथवा महत्वपूर्ण विचारधाराओ को एक स्थान पर लाकर और कोई सर्व-सम्मत कार्यक्रम अगीकार करके, या द्विदलीय प्रणाली को लाकर, जिसमें बहुमत-दल शासन चलायेगा और अल्पमतवाला दल विरोध में रहेगा? इन प्रश्नो का जवाब दिया ही जाना है। नीतियो और कार्यक्रमो के सवाल को लेने से भी पहले, काग्रेस को किस तरीके से चलाया जाय, उसके बारे में हमें अपने विचारो को स्पष्ट करना है। एक स्वीकृत वैधानिक नियम के अभाव में पद के लिए भ्रमपूर्ण सघर्ष और परिणामस्वरूप फूट का उठ खडा होना निश्चित है। सच्ची एकता को प्राप्त किये बिना दो दलो में से एक दल को अपने दुःख भूल जाने की सलाह देने का ज्यादा असर होना सभव नही है, खासतौर पर तब जबकि दूसरा दल अपनी निजी बेजारी को भूल जाने में अपनी असमर्थता दिखाता हो और अपनी बात को अत तक ले जाने के लिए तुला हो। ऐसा मालूम होता है कि आप यह महसूस नही कर सके है कि पडित गोविंदवल्लभ पत का-सा कोई प्रस्ताव निश्चित रूप से फूट की ओर ले जायगा और काग्रेस के विभिन्न गुटो के बीच, भविष्य में, सहयोग मे अडचन पैदा करेगा। अब भी देश में इस प्रस्ताव को लेकर जो भावना उठ रही है, उसकी शक्ति को आप नजरन्दाज करते मालूम होते है। देश के विभिन्न भागो में इसमें कमी-बेशी हो सकती है, लेकिन इसमें कोई सदेह नही कि

वह चारो ओर फैली है। प्रस्ताव और उसके द्वारा दिखाई गई वैयक्तिक कटुता दोनो ने कांग्रेस की एकता पर गहरी चोट की है। अत में परिणाम यह होगा कि या तो वे सभी प्रगतिशील तत्वो को कांग्रेस से बाहर निकाल देंगे, जिससे असली ताकत एक छोटे-से गुट के हाथ में रह जायगी और इस प्रकार कांग्रेस निष्प्राण हो जायगी या अपनी फूट में ही पडी कांग्रेस में सत्ता के लिए झगडे-टटे चलते रहेगे।

मैं नही समझता कि आप क्यो कहते है और कैसे कह सकते है कि पुरानी कार्य-समिति के सदस्यो की ओर से कोई अडचन नही डाली गई, जबकि सबको साफ दिखाई देता है कि विरोध ठेठ शुरू से आखीर तक रहा। अडचनें कहा-कहा डाली गई, यह मै सामने रखने की कोशिश करूगा।

अध्यक्ष के चुनाव के परिणाम की घोषणा के बाद यदि यह नजरिया अख्तियार किया जाता कि उसका अर्थ पुरानी कार्य-समिति की नीति और कार्यों की अस्वीकृति है तो कार्य-समिति के सदस्यो के सामने एकमात्र सम्मानपूर्ण रास्ता यही था कि वे वफादारी से निर्णय को मानते और अध्यक्ष को पूरी तरह उसकी मरजी पर छोड देते कि वह विधान के अनुसार काम करे। लेकिन निजी हैसियत से मै इस नजरिये को ठीक नही मानता और बहुत-से लोग मेरी जैसी राय रखते है। सबसे पहले तो अध्यक्ष के चुनाव के परिणाम को मै दो व्यक्तियो—सुभाष और डा पट्टाभि सीतारमैया—के दावो पर जनता का फैसला मानता हू। दूसरे, अबतक अध्यक्ष के चुनाव के लिए जो पद्धति अपनाई जाती रही थी, उसके लिए मतदाताओ की अस्वीकृति, अर्थात् मतदाता नही चाहते थे कि कुछ इने-गिने लोगो द्वारा इस सवाल का फैसला किया जाय, बल्कि वे चाहते थे कि चुनाव में उनकी एक असरदार आवाज रहे और जनतत्रीय सस्था का अपनी राय को प्रकट करने का अधिकार रहे।

ऐसी सूरत में अध्यक्षीय चुनाव के बाद सबसे अधिक समझदारी का और सीधा रास्ता यह होता कि सर्वसम्मत नीति और कार्य की योजना पर राय जानी जाती। महात्माजी के द्वारा ऐसा करना बिल्कुल आसान था, क्योकि उनकी सलाह की अवहेलना करने या उनके प्रभाव पर उगली

उठाने का सवाल ही नही उठता। सुभाष के चुनाव के कारण काग्रेस में महात्माजी की स्थिति में कोई अन्तर नही पडता। फिर भी समझौते पर पहुचने की कोशिश करने के बजाय पुरानी कार्य-समिति के सदस्यो ने अपने त्याग-पत्र देकर एक गतिरोध पैदा कर दिया। ऐसा करने में उन्होने रोडे अटकाने जैसा काम किया, क्योकि, जैसाकि घटनाओ ने दिखाया, सत्ता छोडने की उनका मशा तनिक भी नही था, बल्कि इसपर जमे रहने के लिए उन्होने महात्माजी की आड ले ली। उन्होने देश को यह समझने का मौका दिया कि क्योकि उनकी ओर से नामजद आदमी अध्यक्ष नही चुना गया, इसलिए उन्हें काग्रेस से अपना सहयोग खीच लेना पड सकता है। इस पृष्ठभूमि से भी ज्यादा गभीर धमकी थी कि काग्रेस-नियन्त्रित प्रातीय सरकारें भी शायद त्याग-पत्र देना जरूरी समझें। मै नही कहता कि यह आखिरी सुझाव कार्य-समिति के सदस्यो के नाम पर दिया गया था, जिन्होने त्याग-पत्र दिया था, या स्वय मन्त्रियो के नाम पर, परन्तु समाचार-पत्रो में ये अटकलें प्रकाशित हुई और इनका कही किसीने खण्डन नही किया। इन अटकलो ने जनता को उस दिशा में विचार करने का काफी मौका दे दिया। त्रिपुरी में जो कुछ हुआ वह अडचन की दूसरी सीढी थी। आपका यह कहना कि कुछ व्यक्तियो या गुटो के द्वारा काग्रेस के सामने कुछ प्रस्तावो को पेश किये जाने का मतलब अडचन डालना नही होता है, बेहद सीधापन कहा जायगा। आप तो इस तरह लिखते है मानो ये प्रस्ताव हवा मे हो और उनकी न कोई पृष्ठभूमि हो, न इतिहास और न जडें ही। प्रस्तावो का मतलब ही क्या, अगर वे प्रस्तावको के कार्य की योजना को प्रकट न करते हो ? इस दृष्टिकोण से विश्लेषण करने पर पडित गोविंदवल्लभ पत का प्रस्ताव कार्य की इस योजना को व्यक्त करता है। अध्यक्ष के हाथ बाधकर और कार्य करने की उसकी आजादी को छीनकर इस प्रस्ताव में अध्यक्षीय चुनाव के असर को रद्द करने की कोशिश की गई है। अध्यक्ष को उसके पद से हटाने की कोशिश करने के मुकाबले यह किसी प्रकार कम बाधक नही था। अध्यक्ष को हटाने की बात, जो पहले सोची गई थी, इसलिए नही आजमाई गई, क्योकि वह आसानी से पार पडनेवाली नही थी।

काग्रेस द्वारा पारित एक औपचारिक प्रस्ताव द्वारा अध्यक्ष से कार्य-

समिति को नामजद करने का अधिकार छीनना अपने-आपमे काग्रेस में पहले से अपनाई जानेवाली प्रथा को छोडने का चौका देनेवाला कदम था। यह इसलिए भी फिजूल था, क्योकि सुभाष ने बिना गाधीजी के मशविरे के कार्य-समिति के बनाने की बात न कभी कही थी, न सोची तक थी। अगर इस प्रकार के विशेष निर्देशन की जरूरत इस साल थी तो मै कहूगा वह १९२१ से काग्रेस के गाधी-युग से अबतक लगातार रही।

प्रस्ताव में जो कपट भरा हुआ था वह मुझे और भी बुरा लगा। प्रस्ताव की मशा थी पुरानी कार्य-समिति के सदस्यो के लिए विश्वास प्राप्त करके उन्हें फिर से सत्तारूढ करना। परन्तु उसी समय महात्माजी के लिए विश्वास के मत के प्रश्न को लेकर असली मुद्दे को घुटाले में डाल दिया गया, मानो त्याग-पत्र देनेवाले पुरानी कार्य-समिति के सदस्यो के प्रति विश्वास प्रकट किये बगैर महात्माजी में विश्वास प्रकट नही हो सकता था। मै मानता हू कि महात्माजी के खुद के बयान ने दो अलग-अलग व्यक्तिगत मसलो को आपस में मिला देना आसान कर दिया। मेरा यह कहना अनुचित नही होगा कि पुरानी कार्य-समिति के सदस्य ज्यादा हिम्मत और खरापन दिखाते अगर वे खुद अपनी जिम्मेदारी पर यह कदम उठाने का निश्चय करते और महात्माजी की आड न लेते। उनका स्पष्ट कर्तव्य तो यह था कि महात्माजी को इस सारे विवाद से अलग रखते, जैसा कि उन्हें हमारे राजनैतिक जीवन में रहना चाहिए।

आपके पत्र में कुछ और भी मुद्दे है, जिनकी सफाई होनी चाहिए। बगाल के प्रतिनिधियो को दोहरे प्रतिनिधि-टिकट देने का जहातक सबध है, मैंने पूछताछ की और यह बात मालूम हुई कि बगाल के बहुत-से प्रतिनिधियो ने त्रिपुरी पहुचने पर पाया कि वे अपने साथ प्रतिनिधि कार्ड नही लाये और उसीके मुताबिक उन्होने अपनी ओर से दूसरे कार्डों के लिए अर्जी दी। कही देर न होजाय, इसलिए अपने उन दोस्तो की ओर से भी अर्जी दे दी, जो उस समय तक आ नही पाये थे। इस बात का पता लगते ही त्रिपुरी में बगाल प्रान्तीय काग्रेस कमिटी के पदाधिकारियो ने तुरत दूसरे प्रतिनिधि-टिकट देने का काम अखिल भारतीय काग्रेस कमिटी से लेकर खुद सभालने को कहा, क्योकि प्रतिनिधियो की उनकी व्यक्तिगत जानकारी

की वजह से उनके लिए काम को जल्दी और बिना गलती किये निबटा लेना सभव था। परन्तु महासमिति के दफ्तर ने यह सहयोग लेने से इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जो प्रतिनिधि सीधे अपने साथियो से बगैर मिले और सलाह किये महासमिति के दफ्तर पर चले गये, उन्हें दुबारा कार्ड मिल गये। इस मौके पर बगाल प्रान्तीय काग्रेस के पदाधिकारियो ने दुबारा हस्तक्षेप किया और दो-दो बार दिये गए टिकटों को खोज निकाला और उन्हें ठीक किया, सिवा छ को छोडकर, जिनका पता नही लग सका। इसके अतिरिक्त बगाल प्रान्तीय काग्रेस के सुझाव पर एक अधिकारी अखिल भारतीय काग्रेस कमिटी की ओर से और एक बगाल प्रान्तीय काग्रेस कमिटी की ओर से, इस प्रकार दोनो ने मिलकर बगाल के प्रतिनिधियो की पडाल में प्रवेश की जाच की, जिससे इस बात का सदेह तक न रहे कि कोई भी अनधिकृत व्यक्ति बगाल के प्रतिनिधि के नाम पर पंडाल में घुस गया है। मैं जानता हू, जाच मे एक भी गलत आदमी नही पाया गया। इस जाच से दोहरे टिकट देने की गलती गौण हो जाती है। मुझे सूचित किया गया है कि आध्र के प्रतिनिधियो के बारे में गभीर अनियमितता हुई है। मुझे पता नही कि उस मामले में भी प्रतिनिधियो की जाच के लिए इसी प्रकार का तरीका अपनाया गया या नही। शायद आप इस बारे में कुछ पूछताछ करेंगे।

मेरे लिए यह एक नई खबर है कि प्रतिनिधियो को काग्रेस में लाने के लिए पैसा खर्च किया गया। क्या मैं जान सकता हू कि किसके द्वारा, कब और कहा ? पहले जब 'परिवर्तनवादियो' और 'अपरिवर्तनवादियो' में कशमकश होती थी तब हम खूब सुना करते थे कि दोनो गुटो की ओर से अपने-अपने समर्थको के सफर-खर्च देने में पैसा खर्च किया जा रहा है और इस प्रकार काग्रेस मे उनकी उपस्थिति निश्चित की जा रही है, लेकिन मैंने कभी भी मामले की तहकीकात करने की परवा नही की। आपके पत्र से मुझे सबसे पहले पता लगा कि इस समय भी उसी तरह पैसा खर्च किया गया।

आप लिखते हैं कि आप द्वारा पेश की गई राष्ट्रीय माग के विरुद्ध मुझे देखकर आपको आश्चर्य हुआ। अगर मुझे अपना सशोधन पेश करने

की इजाजत दे दी गई होती तो मेरे द्वारा इस प्रस्ताव का औपचारिक विरोध करने की नौबत ही नही आती। परन्तु चूकि यह अवसर मुझे नही दिया गया, इसलिए मैंने अनुभव किया कि मुझे प्रस्ताव के विरुद्ध अपना विरोध दर्ज कराना है, और अपने इस रुख के कारण मैंने अपने भाषण में दिये। मेरी राय मे वह एक बेअसर और निष्फल माग थी, जिसका कोई परिणाम होनेवाला नही था। इसी तरह के प्रस्ताव हर साल किये जाते रहे और उनसे न तो हमारे दुश्मन हमारी राय के कायल हुए और न हमारे लोगो का हौसला बढा, क्योकि उनमें यह नही बताया गया था कि अगर वे मजूर न किये गए तो आगे क्या निश्चित इरादा होगा और क्या कदम उठाये जाने की योजना होगी। समय की सीमा के सुझाव का विरोध करते हुए आप इस तरह बोले, मानो काग्रेस के इतिहास मे यह कोई नई चीज थी। हमारी आज की माग को पूरा करने के लिए एक समय-सीमा निर्धारित करने में यदि अति है तो मैं अनुमान करता हू कि यह तब भी थी जब मुझसे बडे लोगो द्वारा काग्रेस के प्रस्तावो में इस प्रकार की समय-सीमाए शामिल की गई थी। अगर जरा-सा मौका मिलते ही, हिटलर की तरह, बिना रू-रियायत के सख्ती और मजबूती से चोट करने का विचार आपके दिमाग में होता और अगर मैं इस बात का कायल हो जाता कि आपमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर इस तरह चोट करने की आवश्यक शक्ति है तो मैं समय-सीमा रखने की आपकी हिचकिचाहट को समझ सकता था। लेकिन मेरा विश्वास है कि ये आकस्मिक उलट-फेर, जिनके लिए कोई पूर्व-सूचना नही दी गई थी, सत्य और अहिंसा के सिद्धातो के विरुद्ध हैं। सत्य की खातिर हमने हमेशा सावधानी रखी है कि जो हम करनेवाले है, उसे दुश्मन पर जाहिर कर दें, जिससे उसे यह कहने का जरा भी बहाना न मिले कि वह बेखबर था। आकस्मिकता युद्ध का एक बहुमूल्य सिद्धात है, लेकिन मेरे विचार से सत्याग्रह का नही।

जो हो, यह सब मुद्दे से परे की बात है, क्योकि मेरी राय में काग्रेस के दक्षिण-पक्ष का समय-सीमा रखने का आधार अपनी शक्ति का बोध नही था, बल्कि अपनी कमजोरी की चेतना थी। दक्षिण-पथी लोग हिंदुस्तान की जनता में उसके सक्रिय प्रतिकार करने की क्षमता मे और उस प्रतिकार

को सगठित करने की अपनी निजी क्षमता में विश्वास खो चुके है। वे समय-सीमा इसीलिए नही चाहते, क्योकि उसकी समाप्ति पर उन्हे बुलाया जायगा और कोई कदम उठाने पर मजबूर किया जायगा। स्थिति का मेरा निदान यही है। हो सकता है, मै पूरी तरह ठीक न होऊ।

आगे किस नीति और कार्यक्रम का अनुसरण किया जाय, इस सबध में मैंने अपने विचार साफ तौर से उन प्रस्तावो में बता दिये है, जो मैंने काग्रेस महासभा के कार्यालय को भेजे है। इससे पहले जलपाईगुरी में हुए बग प्रातीय सम्मेलन में भी अपने अध्यक्षीय भाषण में मैंने उन विचारो को जतला दिया था। दुर्भाग्य से त्रिपुरी में उठाये गए व्यक्तिगत प्रश्न ही सारी चीजो पर छाये रहे। जहातक बगाल में मिली-जुली सरकार के औचित्य या अनौचित्य का सबध है, मैंने गत कार्य-समिति की बैठको में अपने विचारो को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। पद-ग्रहण की स्वीकृति निश्चित रूप से दक्षिण-पक्षीय कदम है। लेकिन एक बार काग्रेस इसके पक्ष में निर्णय कर लेती है तो मेरी राय में, तथाकथित काग्रेसी प्रातो और तथा कथित गैर-काग्रेसी प्रातो में भेद नही किया जा सकता और न किया जाना चाहिए, बशर्ते कि काग्रेस का कार्यक्रम गैर-काग्रेसी प्रातो में भी स्वीकार कर लिया जाता है। आखिरकार यह भी तो एक सयोग है कि कुछ प्रातो में काग्रेस बहुमत में है—एक ऐसा सयोग, जो अपने-आपमें इस सयोग पर आधारित है कि इन प्रातो में हिंदू बहुमत में है। मुझे उम्मीद है कि पिछले दो साल के अनुभव से आपको यह तसल्ली होगई होगी कि अबतक काग्रेस मत्रिमडलो ने गवर्नमेंट ऑव इडिया एक्ट से लडने या उसे समाप्त करने के लिए कुछ भी नही किया है।

आपका यह मानना कि मैंने गाधीजी को जो कुछ लिखा है, उसका मतलब यह है कि अध्यक्ष और गाधीजी के बीच सहयोग खत्म हो जाय, सही नही है। मै आपको पहले ही बता चुका हू कि महात्माजी की स्थिति और नीति तथा पुरानी कार्यसमिति के कुछ सदस्यो की स्थिति और नीति को मै एक-जैसी नही मानता। इस नुक्ते पर मुझे और ज्यादा जोर देने की जरूरत नही है, क्योकि इसपर मै काफी लिख चुका हू।

इससे पहले कि मै यह पत्र समाप्त करू, मै एक और भूल सुधारना

चाहूगा । अक्सर यह मान लिया जाता है कि मैं जो कुछ लिखता हू वह सुभाष के विचारो का भी प्रतिनिधित्व करता है, परन्तु ऐसा हमेशा नही होता, क्योकि न मैं हर बात मे सुभाष का मशविरा लेता हू और न ले सकता हू, और न वह ऐसा करता है । हा, इस खास मामले में गाधीजी को लिखे अपने पत्र की एक नकल मैंने उसके पास भेज दी है और अब यह कहना उसीपर है कि किन मुद्दो पर वह मुझसे सहमत है और किनपर नही । मैं उसका वकील नही हू ।

आशा है, आप अच्छे होगे । पिछले दो या तीन हफ्तो में मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब रहा है । मैं ईस्टर की छुट्टियो मे पहाडो पर जाकर आराम करने की सोच रहा हू ।

सप्रेम आपका,

शरतचन्द्र बोस

२६० सुभाषचन्द्र बोस की ओर से

जीलगोरा पो आ

जिला मानभूम, बिहार

१५ अप्रैल १९३९

प्रिय जवाहर,

पता नही, महात्माजी तुमको हमारे बीच चल रही चिट्ठी-पत्री की नकलें भेज रहे है या नही, जैसे कि वह दूसरो को भेजते है । अगर तुमको ये नकले न मिली हो तो मैं तुमको सबसे ताजा स्थिति बताना चाहूगा । उसके बाद मैं तुम्हारी प्रतिक्रिया जानना चाहूगा और तुम्हारी सलाह भी कि आगे मुझे क्या करना चाहिए ।

महात्माजी का आग्रह है कि कार्यसमिति समानशील होनी चाहिए । वह चाहते है कि मैं ऐसी समिति का गठन कर लू और अपने कार्यक्रम की घोपणा कर दू । उसके बाद मैं काग्रेस महासमिति की स्वीकृति प्राप्त करू ।

मैंने महात्माजी से बार-बार कहा है कि मैं ऐसी कार्यसमिति एक से अधिक कारणो से नही बना सकता । इसके अलावा काग्रेस ने मुझे अपना कार्यक्रम बनाने और उसकी घोषणा करने का निर्देश नही दिया है । मुझे तो सिर्फ एक खास तरीके से अर्थात पन्त-प्रस्ताव के अनुसार कार्यसमिति का गठन करना है ।

कुछ वैकल्पिक सुझाव देने के बाद मैंने आखिर में यह कहा है कि सब-कुछ निष्फल रहने पर उनको कार्यसमिति गठित करने की जिम्मेदारी अपने सिर पर लेनी चाहिए—कारण मै समानशील समिति बनाने की उनकी सलाह का पालन नही कर सकता। अपने दो आखिरी पत्रो में मैंने उनसे यह अनुरोध किया है कि वह यह जिम्मेदारी उठा लें।

मै नही कह सकता कि महात्माजी कार्य-समिति की घोषणा करेंगे। अगर वह कर देते है तो गतिरोध समाप्त हो जायगा। किन्तु अगर वह नही करते तो ? उस दशा में मामला अनिर्णीत अवस्था में काग्रेस महासमिति के सामने जायगा। उस अवस्था में महासमिति क्या करेगी,यह मै नही जानता।

मै महसूस करता हू कि अगर चिट्ठी-पत्री के जरिये कोई समझौता नही होता है तो मुझे गाधीजी से प्रत्यक्ष मिलकर समस्या को सुलझाने की आखिरी कोशिश करनी चाहिए। किन्तु राजकोट की वजह से गाधीजी की गतिविधि अनिश्चित है। यह भी पक्का नही है कि काग्रेस महासमिति की बैठक के समय वह कलकत्ता आ सकेंगे, हालाकि उन्होने मुझे तार दिया है कि वह आने की 'जी-तोड' कोशिश करेंगे।

अब अगर गाधीजी कार्यसमिति का निर्माण नही करते और मै गाधीजी से मिलने का समय निकालने के लिए काग्रेस महासमिति की बैठक स्थगित कर देता हू तो कैसा ? क्या महासमिति के सदस्य इसका समर्थन करेंगे या मुझपर टालमटोल करने का दोष मढेंगे ? बहुत-से लोगो की राय है कि जब-तक हम मिलते नही और समझौते की आखिरी कोशिश नही करते, महा-समिति की बैठक नही होनी चाहिए। बैठक उसी दशा मे स्थगित करनी पडेगी जबकि महात्माजी २७ से पहले कलकत्ता नही आ पाते, जिस दिन कि कार्यसमिति की बैठक होनी है। बैठक स्थगित करने के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है ?

अगर महात्माजी तुमको न भेज चुके हो तो अबतक पूरा पत्र-व्यवहार मै तुम्हें भेज सकता हू।

एक बात और। क्या कुछ घटो के लिए तुम यहा आ सकोगे ? उस दशा में हम बात कर सकेंगे कि आगे मुझे क्या करना चाहिए। इस बारे में तुम्हारी सलाह भी मिल जायगी।

यह पत्र सक्षिप्त है और जल्दी में लिखा गया है और एक मित्र के हाथ भेज रहा हू । पता नही, मै ताजा स्थिति स्पष्ट कर पाया हू या नही—आशा तो यही है कि मैने कर दी है ।

अगर तुम यहा आने का समय निकाल सको तो तुम तूफान एक्सप्रेस (८ डाउन) से आकर कुछ समय बचा सकते हो । वह साढे चार बजे शाम पहुचती है और तुम बम्बई मेल से लौट सकते हो, जो धनबाद आधी रात को पहुचती है । जमदोबा धनबाद से नौ मील है । स्टेशन पर तुम्हे कार मिल जायगी ।

सस्नेह तुम्हारा,
सुभाष

२६१ महात्मा गाधी के नाम

इलाहाबाद,
१७ अप्रैल १९३९

प्रिय बापू,

प्यारेलाल सुभाष के साथ आपके पत्र-व्यवहार की नकलें मेरे पास भेजते रहे है । मुझे अदेशा है कि इस चिट्ठी-पत्री से अडचन की स्थिति आगई है और मुझे कोई रास्ता इससे निकलने का दिखाई नही देता । मै उस आदमी की जैसी बदकिस्मती की हालत में हू, जो दोनो में से एक भी नजरिये से सहमत नही है । इस कारण मैने यही उत्तम समझा कि चुप रहू और किसीको कुछ न लिखू और न जनता में कुछ कहू । लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि हमारे लिए इस तरह लाचारी में बहते चले जाना बहुत अच्छा नही है । मामले इतने गभीर और नतीजे इतने दुखदायी है कि उनकी कल्पना नही की जा सकती ।

मुझे लगता है कि कोई रास्ता नही निकलेगा, जबतक कि आप बहुत हद तक खुद जिम्मेदारी उठाने को तैयार नही होगे । आपको अगुआ बनना होगा और आप घटनाओ के होते रहने के लिए ही इतजार नही कर सकते । सुभाष में अनेक कमजोरिया है, परन्तु प्रेम से उन्हें समझाया जा सकता है । मुझे विश्वास है कि आप निश्चय कर लेंगे तो कोई रास्ता निकाल सकेंगे ।

राजकोट का महत्व मै खूब समझता हू, परन्तु आप मेरे इस विचार से सहमत होगे कि काग्रेस का बडा सवाल उससे कही अधिक महत्वपूर्ण है और वह हमारी सारी प्रवृत्तियो का नियमन करेगा। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि थोडे दिन राजकोट के मामलो पर ध्यान न देकर भी आप कांग्रेस की तरफ ध्यान दें। इस विचार से घबराहट होती है कि शायद आप महासमिति की बैठक मे शरीक न हो। इसका तो यही मतलब है कि हालात बिगडते जाय और काग्रेस चूरचूर होजाय। सही तरीका यह है कि महासमिति की बैठक से पहले कोई निपटारा कर लिया जाय। महासमिति पर इस मामले को छोड देना तो और भी गडबड पैदा करना होगा। काश आप सुभाष से मिल लेते! इस मुलाकात का कोई अच्छा नतीजा निकलने के अलावा भी इससे कई तरह की मदद मिलती।

कार्यसमिति के बनने में देर लगना बुरा हुआ। परन्तु हम झगडने के लिए ही मिलें तो यह और भी बुरा होगा। हालाकि यह मुझे बहुत ही नापसद है, फिर भी एक-दो सप्ताह के लिए महासमिति का अधिवेशन मुल्तवी कर देना बेहतर होगा, ताकि आपको सुभीता रहे और निपटारे का ज्यादा मौका मिले।

मुझे अभी ही सुभाष का एक पत्र मिला है। उनका कहना है कि मै उनसे स्थिति की चर्चा करने के लिए कुछ घटो के लिए मिल लू। मुझे अदेशा है कि हमारी बातचीत का कोई निश्चित परिणाम नही निकल सकेगा, क्योकि मेरे हाथ में कुछ है नही। फिर भी मै उन्हे इन्कार नही कर सकता और एक-दो दिन में जाने का विचार है। मै उनसे क्या कहूगा, इसका मेरे मन में स्पष्ट विचार नही है। मेरे खयाल से मै उन्हें यही सलाह दे सकता हू कि वह आपसे यह कह दे कि कार्यसमिति के नाम सुझाने का काम वे पूरी तरह आपपर छोडते है। वह अपने कुछ सुझाव आपको दे सकते है, परन्तु साफ तौर पर यह समझकर कि आप उन्हें स्वीकार या अस्वीकार कर सकते है। कार्यक्रम की बात यह है कि वह त्रिपुरी-काग्रेस के प्रस्तावो के अनुसार होगा, जिनमें और बातो के साथ-साथ निश्चित रूप से यह बता दिया गया है कि पिछले कार्यक्रम मे कोई भग नही होगा।

अगर सुभाष इससे सहमत हो जाते है तब जिम्मेदारी आपपर रहती

है और आप उससे बच नही सकते। मेरा दिल्ली मे भी यह खयाल था और अब भी है कि आप सुभाष को अध्यक्ष मान ले। उन्हे निकाल देने का प्रयत्न करना मुझे निहायत गलत कदम मालूम होता है। रही बात कार्य-समिति की, सो इसका फैसला करना आपका काम है। लेकिन मै यह जरूर समझता हू कि एक-जैसे विचारोवाली कल्पना का सकीर्ण अर्थ किया गया तो उससे शान्ति अथवा कारगर काम नही हो सकेगा। कुछ-न-कुछ तो एक-जैसे विचार जरूर होने ही चाहिए, नही तो हम काम नही कर सकते। मै नही समझता कि कार्यसमिति मे चन्द लोगो के होने से नीति मे कोई बुनियादी फर्क हो जायगा। अवश्य ही जिन आदमियो की नेकनीयती पर हमें जरा भी विश्वास न हो उन्हें स्वीकार करना कठिन होता है। परन्तु समान विचारो के सिद्धान्त का विस्तार राजनैतिक दृष्टिकोण के भेद तक नही करना चाहिए, बशर्ते कि काम की सामान्य पृष्ठभूमि स्वीकार कर ली जाय। आखिर तो हमें याद रखना होगा कि समान विचारो की कार्यकारिणी बना देने से हम समान विचारो की काग्रेस तो नही बना लेते। दूसरी बात ज्यादा आसान हो जाती है, यदि हममें विचारो की व्यापक समानता हो।

आपको पिछले कई महीनो से काग्रेस की घटनाओ से बडा कष्ट हुआ है और आपने भ्रष्टाचार आदि की निंदा की है। मै समझता हू कि काग्रेस में हरेक सयाना तत्व, चाहे उसके राजनैतिक विचार कुछ भी हो, इस समस्या को हल करने के लिए उत्सुक है। मै काग्रेस के बाहर की बहुत-सी बातो पर काफी ध्यान दे रहा हू और मुझे कहना पडता है कि घटना-चक्र और नई शक्तियो के पैदा होने से मुझे घबराहट होती है। मै केवल साम्प्रदायिक प्रश्न का ही जिक्र नही कर रहा हू। उससे भी गहरी शक्तिया काम कर रही है। अगर इस नाजुक अवसर पर काग्रेस कमजोर और छिन्न-भिन्न हो जाती है तो परिणाम विनाशकारी हो सकते है। हमें एक होकर रहना ही चाहिए। इसलिए मै आपसे प्रार्थना करता हू कि इस मामले को निपटाने का आप निश्चय कर ले, भले ही निपटाने का तरीका हम सबको पसन्द न हो। हम इसी तरह अपनी पसन्द की दिशा मे जा सकते है, नही तो हमारे पैर रुक जाते हैं।

एक बात अपने बारे में भी। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मै अत्यधिक

व्यक्तिवादी हू। पिछले दिनो कार्यसमिति की बैठको मे मुझे अपना निभाव बहुत कठिन मालूम हुआ और शायद मैं अपने साथियो के लिए भी एक आफत होगया था। इसका कारण दोनो तरफ सद्भाव की कमी नही था। इसलिए मुझे महसूस हुआ कि मुझे कमेटी में नही रहना चाहिए। इससे भी अधिक प्रबल कारणो से सुभाष की बनाई हुई भिन्न प्रकार की कमेटी में शरीक होने का विचार मुझे कठिन लगा। मेरे भाव अब भी वे ही हैं, लेकिन जो रुकावट पैदा होगई है उसे देखते हुए कोई रास्ता निकल आता है और कमेटी में मेरा रहना सहायक समझा जाता है तो मैं रहना मजूर कर लूगा। मुझे यह चीज कोई बहुत प्रिय नही है, परन्तु मैं यह जरूर महसूस करता हू कि मौजूदा गैर-मामूली हालात में अगर यह जिम्मेदारी मुझे दी गई तो मैं उससे बच नही सकता।

महात्मा गाधी, सप्रेम आपका,
राजकोट। जवाहरलाल

२६२ अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता
१७ अप्रैल १९३९

प्रिय जवाहर,

जब मैं अपनी इलाहाबाद मे लगी चोट के बारे में सोचता हू तो यह लगता है कि अगर ऐसा कलकत्ता में हो जाता तो मेरे अपने आदमी भी उससे ज्यादा मेरे आराम और इलाज के लिए नही कर पाते, जो इलाहाबाद में मेरे लिए किया गया। सच तो यह है कि मेरे नजदीकी और प्यारे-से-प्यारे रिश्तेदार भी मेरे लिए उतनी गहराई से महसूस नही कर पाते, जितना आपने वहा मेरे लिए किया। मैं नही समझ पाता कि कैसे मैं आपके तई अपनी अहसानमदी जाहिर करू। यकीन कीजिये, आपके प्यार और मेहरबानी के लिए मेरा दिल अहसान से भरा हुआ है।

बहुत-सी ऐसी मामूली बातें होती है, जो दिल पर गहरा असर डालती है। इलाहाबाद से चलते वक्त आपने मेरे आराम-देह सफर के लिए बहुत मामूली-से-मामूली तफसील को देखा, हालाकि यह सफर सिर्फ एक रात

का था। मुझे पता नही था कि कितनी चीजें मेरे साथ भेजी गई थी। यहा पहुचने पर मुझे मालूम हुआ कि यू डी कोलोन तक की शीशी भी टोकरी में रख दी गई थी।

मुझे नही मालूम कि आपने गाधीजी के नाम सुभाष के खत देखे है या नही। यह अफसोस की बात है कि सुभाषबाबू विल्कुल उसी जगह है, जहा वह त्रिपुरी के पहले थे और इस बात की कोई उम्मीद नही कि वह त्रिपुरी की तजवीज पर अमल करके हालत को सुधारेंगे। एक तरफ तो वह कहते है कि पन्त की तजवीज आईन के खिलाफ है और इसलिए हक के बाहर है, दूसरी तरफ वह चाहते है कि गाधीजी कुछ शर्तों को मानें। इसके साथ-साथ वह बेएहतियाती से यह दावा करने में भी नही सकुचाते कि अगर सोशलिस्ट गुट गैरजानिबदार न बन जाता तो पन्त की तजवीज गिर जाती। बावजूद इस सबके, इस बात की कोई उम्मीद नही है कि काग्रेस सुभापबाबू के साथ चल सके। लगता है, सब चीजें ठप्प हो जायगी। इसलिए हमें आइन्दा क्या करना है, इसे तय कर लेना चाहिए।

मै सुभाषबाबू के मामले को न तो राइटिस्टो और लेफ्टिस्टो की लडाई मानता हू और न काग्रेस की मिली-जुली या एकराय वर्किंग कमेटी का ही सवाल मानता हू। यह महज सुभाष और उनके कुछ हिमायतियो का मामला है। यह उलझन किस तरह खत्म होती है, इसकी ज्यादा अहमियत नही। हमें तो इन सवालो पर आजादी से और खास तौर से गौर करना चाहिए, जिससे कोई हल निकल सके।

मुझे उम्मीद है, आपको मेरा पिछला खत मिल गया होगा और आपने सुलतान अहमद के बारे में लखनऊ फोन कर दिया होगा।

आपका,
ए. के आजाद

२६३ सुभाषचद्र बोस की ओर से

जीलगोरा पो आ.
२० अप्रैल १९३९

प्रिय जवाहर,

मैंने आज महात्माजी को दो तार भेजे है। उनमे से एक तार उनके

नाम के मेरे आज के पत्र मे भी दोहराया गया है। मैं अपन पत्र और तार की नकलें इस चिट्ठी के साथ भेज रहा हू।

पत्र-व्यवहार को प्रकाशित न करने के तार के बारे में मैंने तुम्हारे नाम का उपयोग किया है। आशा है, तुमको ऐतराज नही होगा।

मुझे गाधीजी के बुखार की चिन्ता है। आशा है, वह ठीक हो जायगा। परमात्मा न करे, अगर वह बना रहता है तो हम क्या करेंगे ? कृपाकर इस सभावना के बारे मे कुछ सोचना। मै कल २१ ता को कलकत्ता के लिए रवाना हो रहा हू।

सप्रेम तुम्हारा,
सुभाष

२६४ सुभाषचद्र बोस की ओर से महात्मा गाधी के नाम

जीलगोरा पो आ
जिला मानभूम, बिहार
२० अप्रैल १९३९

प्रिय महात्माजी,

मैंने आज आपको यह तार भेजा है

"महात्मा गाधी, राजकोट।

आपको बुखार आने की खबर से बहुत चिन्तित हू। आपके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हू। जवाहरलालजी और मुझे हार्दिक आशा है कि हमारी मुलाकात का अच्छा नतीजा निकलेगा और समान ध्येय के लिए सभी काग्रेसजनो का सहयोग सभव होगा। कलकत्ता में हमारी जल्दी होनेवाली मुलाकात की दृष्टि से हम दोनो पत्र-व्यवहार को उस मुलाकात के पहले प्रकाशित करना अवाछ-नीय समझते हैं। प्रणाम—सुभाष।"

पिछले तीन सप्ताह मे हमारे बीच लम्बा पत्र-व्यवहार हुआ है। जहा-तक कार्यसमिति के गठन का सबध है, इस पत्र-व्यवहार का कोई ठोस नतीजा नही निकला है। फिर भी शायद एक दूसरी तरह से हमारे विचारो का स्पष्टीकरण करने में वह मददगार हुआ है। किन्तु अब तात्कालिक सवाल को हल करना होगा, कारण हम अधिक समय तक कार्यसमिति के

बिना काम नही चला सकते । देश की और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए यह जरूरी हो जाता है कि काग्रेसजन अपने मतभेदो को समाप्त कर दें और सयुक्त मोर्चे का निर्माण करें। आपको अच्छी तरह मालूम है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति किस प्रकार दिन-प्रति-दिन बिगडती जा रही है । ब्रिटिश पार्लामेंट के सामने पेश हुए सशोधन विधेयक से प्रकट होता है कि अगर युद्ध का सकट उपस्थित होता है कि तो ब्रिटिश सरकार काग्रेसी मन्त्रिमडलो को जो थोडे-बहुत अधिकार मिले हुए है, उनको भी छीन लेने की तैयारी कर रही है । सारी जानकारी को ध्यान में रखते हुए इसमें जरा भी शक की गुजाइश नजर नही आती कि हम असाधारण रूप से भारी सकट के निकट पहुच रहे है । हम उसका सामना उसी अवस्था में कर सकेंगे जब हम अपने मतभेदो को तुरन्त मिटा देंगे और अपने सगठन में एकता और अनुशासन स्थापित करने की पूरी-पूरी कोशिश करेंगे। यह काम उसी दशा में हो सकेगा, जब आप आगे आकर नेतृत्व करे । तब आप देखेंगे कि हम सब आपको पूरा सहयोग देते है और आपका अनुसरण करते है । आप यह भी देखेंगे कि भ्रष्टाचार को समाप्त करने और हिंसा की प्रवृत्ति पर अकुश लगाने के बारे में हमारे बीच मतैक्य है—हालाकि देश मे विद्यमान भ्रष्टाचार और हिंसक भावना की मात्रा के बारे में मतभेद हो सकता है । कार्यक्रम का निश्चय तो काग्रेस या काग्रेस महासमिति ही करेगी । हालाकि प्रत्येक व्यक्ति को इन सस्थाओ के सामने अपने विचार रखने का असदिग्ध हक हासिल है । कार्यक्रम के बारे में मेरा यह खयाल है कि जो सकट शीघ्र ही हमारे सिर पर आ रहा है वही बडी हद तक हमारे कार्यक्रम का निर्धारण करेगा और तब इस बारे में किसी बडे मतभेद की कोई गुजाइश नही रह जायगी ।

मैं बडी उत्सुकता और आशा के साथ काग्रेस महासमिति की बैठक के पहले कलकत्ता में या उसके निकट आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहा हू । बगाल में और अन्य प्रान्तो में यह राय तेजी से बन रही है कि काग्रेस कार्य-समिति की समस्या सैद्धान्तिक मतभेदो और पिछले मतभेदो या गलत-फहमियो के बावजूद आपसी समझौते से हल की जानी चाहिए । पन्त-प्रस्ताव के अनुसार कार्य-समिति का गठन करने की जिम्मेदारी आपकी

है और जब आप यह जिम्मेदारी उठाते है तो आप देखेंगे कि हम अपनी शक्तिभर आपको सहयोग देंगे ।

जवाहर कल यहा थे । हमारी मौजूदा स्थिति पर लम्बी चर्चा हुई । मुझे खुशी हुई कि हमारे विचार मिलते है ।

हम सोचते है कि कलकत्ता से बहुत दूर न हो, ऐसे किसी रास्ते के स्टेशन पर आप एक दिन के लिए उतर पडें और हम शाति के साथ बातचीत कर लें । अगर आप नागपुर के रास्ते आयें तो खडगपुर के निकट मिदनापुर सबसे अच्छी जगह रहेगी । अगर आप छिडकी के रास्ते आते है तो हमें बर्दवान के निकट कोई जगह देखनी होगी । मैंने इस बारे में आपको एक तार भेजा है और आपके उत्तर की इतजार करूगा । मैंने जवाहर को बातचीत में शामिल होने को कहा है और उन्होने कृपा करके मान लिया है ।

आपके बुखार के बारे में मै चिन्तित हू । मेरी प्रार्थना है कि वह जल्दी ही ठीक हो जाय ।

सविनय प्रणाम ।

आपका,

सुभाष

२६५ सुभाषचद्र बोस की ओर से महात्मा गाधी के नाम

२० अप्रैल १९३९

महात्मा गाधी, राजकोट ।

बडी खुशी की बात है, आप २७ ता को कलकत्ता आ रहे है । आप जहा चाहे ठहरें, कोई ऐतराज नही । आपके आराम और सार्वजनिक सुविधा की दृष्टि से मेरा सुझाव है कि आप शहर के किनारे नदी-तट के उद्यान-भवन में ठहरें । सतीशबाबू से परामर्श करने के बाद कलकत्ता से आपको फिर तार करूगा । जवाहरलालजी कल यहा थे । हमारे खयाल से यह वाछनीय होगा कि आप कलकत्ता के निकट किसी जगह एक दिन के लिए उतर पडें, जहा हम दोनो आपसे व्यक्तिगत बातचीत के लिए मिल सकते है । अगर आप इस विचार से सहमत हो और अपने रास्ते की खबर तार से दे दें तो मै बीच के किसी सुविधाजनक स्टेशन पर आपके ठहरने का इन्त-जाम कर दूगा । २१ ता को कलकत्ता जा रहा हू ।

सुभाष

२६६ लेडी येस्टर की ओर से

लन्दन
१० मई १९३९

प्रिय पडित जवाहरलाल नेहरू,

आपको याद होगा कि पिछली गर्मियो मे आपने मुझसे गैडिल्यू नाम की नागा जाति की लडकी की बात बताई थी, जो सन् १९३० में हुई कुछ मणिपुरी यात्रियो की हत्या के सबध में सन् १९३३ में कैद की गई थी। उसके मामले में मैने इडिया आफिस से कुछ लिखा-पढी की थी, जिसके फलस्वरूप उन्होने जाच-पडताल की और इस सबध में मुझे काफी विस्तृत जानकारी भेजी। सक्षेप में, मुझे बताया गया है कि जादोनग नाम के एक आदमी ने अपनेको एक प्रकार के मसीहा के रूप में स्थापित कर लिया था और गैडिल्यू उसकी पुरोहितानी थी और जिस हत्या की चर्चा की गई है वह जादोनग के धर्म-देवताओ के सामने एक प्रकार के बलिदान के रूप में थी। आशका की जाने लगी थी कि इस धर्म के नागा अनुयायियो द्वारा कूकियो की पूरी-की-पूरी जाति के मारे जाने का खतरा था। मुझे बताया गया है कि इन हत्याओ में गैडिल्यू का हाथ होने के काफी प्रमाण है, किन्तु केवल इसलिए कि वह अभी युवावस्था मे थी और उसपर जादोनग का प्रभाव था, अदालत ने उसके मृत्यु-दड को बदल दिया है।

यह भी बताया गया है कि नागाओ का यह आन्दोलन अभी सनाप्त नही हुआ है और अगर गैडिल्यू छोड दी गई तो फिर उठेगा। "इस समय गैडिल्यू मणिपुर राज्य और असम प्रान्त की शाति के लिए खतरे का एक सम्भावित साधन मानी जाती है।"

भारत-मत्री ने इस बात पर जोर दिया है कि गैडिल्यू के दण्ड का मामला शाही प्रतिनिधि के अधीन है और चूकि यह प्रश्न ब्रिटिश राज्य से नही, बल्कि मणिपुर के आन्तरिक मामलो से सबध रखता है, इसलिए वह गवर्नर के निर्णय में हस्तक्षेप करने को तैयार नही है।

मैंने उन्हे लिखा था कि क्या एक ऐसी कम उम्र की लडकी के लिए रचनात्मक सुधार का व्यवहार कैद से अधिक लाभप्रद नही होगा, खास तौर से अब जबकि जादोनग का प्रभाव हट गया है? उसके उत्तर में मुझे बताया

गया है कि जेल में बोर्सटल प्रणाली सशोधित रूप में लागू है और उसके अनुसार शिक्षा की सुविधाए दी जाती है। मुझे इस बात का भी विश्वास दिलाया गया है कि गैडिल्यू के मामले में मेरे जो सुझाव थे वे गवर्नर के पास विचारार्थ भेज दिये जायेंगे। मुझे पक्की उम्मीद है कि मेरी चेष्टाओ का कुछ-न-कुछ फल निकलेगा, यद्यपि मुझे इस बात का अफसोस है कि इस काम में इतनी देर लग गई।

मुझे आशा है कि आपकी पुत्री और बहन अब पहले से अच्छी है।

आपकी,
नैन्सी येस्टर

[गैडिल्यू एक नागा लडकी थी। उसे मृत्यु-दड दिया गया था। नागा-विद्रोह हुआ था। इस लडकी की अवस्था केवल २० वर्ष की ही थी। उसके मृत्यु-दड पर मुझे बडा आघात लगा और मैंने उसका मामला अपने हाथ में लिया।]

२६७ माओत्से तुग की ओर से

येनान, शेन्सी
२४ मई १९३९

श्री ज नेहरू,
आनन्द भवन,
इलाहाबाद (यू पी)
प्रिय मित्र,

डाक्टर एम अटल के नेतृत्व में भारत का जो चिकित्सा-दल यहा आया है और भारत की राष्ट्रीय महासभा ने चीनी जनता को उसके जापानी साम्राज्यवादियो से युद्ध करने के लिए अभिवादन और प्रोत्साहन के जो सदेश भेजे है, उन्हे प्राप्त करके हमने वडी प्रसन्नता और सम्मान का अनुभव किया है।

हम आपको सूचित करना चाहते है कि भारतीय चिकित्सा-दल ने यहा अपना काम शुरू कर दिया है। एर्थ रूट आर्मी के सभी सदस्यो ने उनका वडे उत्साह के साथ स्वागत किया है। दल के सदस्यो में हमारी समान कठिनाइयो में हाथ वटाने की जो भावना है, उसमे उसके सम्पर्क

मे आनेवाले सभी लोग बडे प्रभावित हुए है।

आपने चिकित्सा-सबधी और दूसरी वस्तुओ की जो सहायता दी है उसके लिए हम आपकी महान् भारतीय जनता और राष्ट्रीय महासभा को धन्यवाद देते है और उम्मीद करते है कि वे भविष्य मे भी इस प्रकार की सहायता देते रहेंगे और हम मिलकर जापानी साम्राज्यवादियो को निकाल बाहर करेंगे।

अन्त मे, किन्तु कम महत्व के साथ नही, हम आपको अपना धन्यवाद, शुभ कामनाए और हार्दिक अभिवादन भेजना चाहते है।

आपका,
माओत्से तुग

२६८ वल्लभभाई पटेल की ओर से

बम्बई
३ जुलाई १९३९

प्रिय जवाहर,

सर एस १ तारीख को बापू से मिले और अपनी क्षेत्रीय योजना के बारे में उनसे बातचीत की। बापू ने उनसे कहा है कि इस योजना पर उनसे बातचीत करने की जरूरत नही है, लेकिन राजेन्द्रबाबू का सन्देश उन्हें मिल गया है और अगर वह और उनके मुस्लिम लीगी साथी कौमी सवाल को हल करना चाहते है तो वह राजेन्द्रबाबू और काग्रेस के दूसरे मित्रो से मिल सकते है, इस स्पष्ट समझ के साथ कि किसी भी पक्ष की तरफ से किसी भी बात पर कोई आश्वासन नही है। आज रात को वह फिर आ रहे है। इसमे से कुछ भी नतीजा निकलनेवाला नही है।

बापू ने सीमा-प्रान्त जाना मुल्तवी कर दिया है, क्योकि उन्हें बादशाह खान का तार मिला कि उन्हें ५ जुलाई को रवाना होना चाहिए।

उस दिन तुम गुस्से मे आगये और 'हरिजन' मे प्रकाशित उनकी मुलाकात के मामले पर बहुत आवेश में बातचीत की। उस बात पर तुमको इतना ज्यादा नाराज देखकर हम सबको बडा दु ख हुआ और हमने अनुभव किया कि तुमने बापू के साथ बहुत अन्याय किया। मुझे यह भी लगा कि इस तरह की एक-दो घटनाए उन्हे सार्वजनिक जीवन से अलग हट

जाने का निर्णय लेने को बाध्य कर देंगी। वह ७१ वर्ष के है और उनकी बहुत-सी ताकत खत्म हो चुकी है। जब तुम्हारी भावनाओ को चोट पहुचती है तो उन्हें भी बडा दु ख होता है। मै नही सोचता कि वह जितना तुमको चाहते है उतना और किसीको चाहते हो, और जब वह देखते है कि उनके किसी कार्य से तुमको दु ख पहुचा है तो वह बडे सोच में पड जाते है और दुखी हो उठते है। उस शाम के बाद से वह पूरी तरह छुट्टी पाने की सोचने लगे है। पेरिन और भरूचा की उनसे बातचीत और राजेन्द्रबाबू के नाम खुरशेद के पत्र ने आग में घी का काम किया है।

मै उन्हें यह समझाने की कोशिश कर रहा हू कि वह जल्दी में कोई निश्चय न करें। परन्तु तुम उन्हे जानते हो और वह क्या करेंगे, इसका मुझे कोई पता नही है।

तुमको यह सब बता देना मुझे बहुत जरूरी मालूम हुआ, इसलिए लिख रहा हू। यदि तुम उचित समझो तो उन्हे लिख सकते हो कि तुमसे पूरी तरह सलाह-मशविरा किये बगैर कोई निर्णय न करें।

तुम्हारा,
वल्लभभाई

२६९ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
२९ जुलाई १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

धामी के लोगो का पथ-प्रदर्शन करने के बजाय मैने उन्हें तुम्हें सौंप दिया है। मेरे खयाल से मेरी तरफ से किसी हस्तक्षेप के बिना तुम्हीको यह भार वहन करना चाहिए। राज्यो का यह विचार दिखाई देता है कि काग्रेस को अलग रखा जाय और उसकी तथा देशी राज्य परिषद् की उपेक्षा की जाय। मै 'हरिजन' में पहले ही सुझाव दे चुका हू कि तुम्हारी समिति से पूछे बिना किसी रियासती सघ या मडल को अपने-आप कारंवाई नही करनी चाहिए। मुझे कुछ करना ही हो तो तुम्हारे मार्फत करना चाहिए अर्थात् जब तुम मुझसे पूछो तो जैसे कार्यसमिति को अपनी राय दे देता हू वैसे ही तुम्हें दे दू। कल ग्वालियरवालो को भी मैने ऐसा ही कहा है। तुम्हारी समिति को

ठीक ढग से काम करना है तो उसे थोडा-सा पुनर्गठित करना होगा।

आखिर मेरा कश्मीर जाना नही हुआ। शेख अब्दुल्ला और उनके मित्रो को मेरा सरकारी मेहमान बनने का विचार सहन नही होता। अपने पिछले अनुभव के आधार पर मैने शेख अब्दुल्ला की अनुमति की आशा से राज्य का प्रस्ताव मजूर कर लिया था। परन्तु मैने देखा कि मेरी भूल हुई। इसलिए राज्य के आतिथ्य की स्वीकृति रद्द करके मैने शेख का आतिथ्य स्वीकार किया। इससे राज्य को परेशानी हुई। इसलिए मैने वहा जाने का विचार ही छोड दिया। मुझसे दोहरी मूर्खता का अपराध हुआ—एक तो तुम्हारे बिना वहा जाने का विचार करने का दु साहस किया और दूसरे राज्य का प्रस्ताव मान लेने से पहले शेख की इजाजत नही ली। मैने सोचा था कि राज्य का प्रस्ताव मजूर करके मै प्रजा की सेवा करूगा। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि शेख और उनके मित्रो के सम्पर्क से मुझे खुशी नही हुई। वे हम सबको बहुत ही बेतुके मालूम हुए। खानसाहब ने उन्हें समझाया, मगर कोई नतीजा नही निकला।

तुम्हारी लका-यात्रा शानदार रही, मुझे इसकी परवा नही कि तात्कालिक परिणाम क्या हुआ। सालेह तैयबजी मुझसे अनुरोध कर रहे है कि तुम्हें बर्मा भेजू और एण्ड्रूज तुम्हारा विचार दक्षिण अफ्रीका के सम्बन्ध में कर रहे है। लका के लिए तो काग्रेस के शिष्टमडल की कल्पना मुझे स्वय स्फूर्ति से हुई। इन दो स्थानो की प्रेरणा उकसाने पर भी नही होती। लेकिन ये बातें तो जब मिलेंगे तब करेगे। आशा है, तुम ताजे हो और कृष्णा मजे में है। प्यार।

बापू

२७० महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
११ अगस्त १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

योजना-समिति के बारे में (और समय न होने के कारण) कार्यसमिति की मौजूदगी में तुमसे बात करने को आधा ही मन था। शकरलाल आज सुबह तुमसे बात करके आये थे। साथ में इस मामले पर कृपालानी को उन्होने

जो पत्र लिखा था उसकी नकल भी लाये थे। उनकी आपत्ति से मेरी सहानुभूति थी। इस समिति के काम-काज को न तो मैं कभी समझ सका हू और न उसकी कद्र ही कर सका हू। पता नही, वह समिति को बनानेवाले प्रस्ताव की चहारदीवारी के भीतर ही काम कर रही है या नही। मै नही जानता कि उसके कार्यकलाप से कार्यसमिति को परिचित रखा जा रहा है या नही। उसकी अनेक उप-समितियो का हेतु भी मेरी समझ में नही आया है। मुझे ऐसा लगा है कि एक ऐसे प्रयत्न में जिसका कोई फल नही निकलेगा, बहुत-सा रुपया और परिश्रम बर्बाद किया जा रहा है। ये मेरी शकाए है। मै प्रकाश चाहता हू। मै जानता हू, तुम्हारा मन चीन में है। अगर तुम्हारे खयाल से शाह तुम्हारे विचार प्रकट कर सकते है तो मै उनसे जान लेने की कोशिश करूगा या तुम अपने महान मिशन से लौट आओ तबतक प्रतीक्षा करूगा। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे और तुम्हें मातृ-भूमि में सुरक्षित लौटा लाये। प्यार।

बापू

२७१ अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता
१७ अगस्त १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

आपके खत के लिए शुक्रिया। मैंने आपके इलाहाबाद के पते से एक के बाद एक दो खत भेजे है। मुझे उम्मीद है, वे आपको मिल गये होगे।

मुझे नही मालूम आया राजेन्द्रबाबू ने मेरा खत कमेटी के सामने पेश किया या नही। खुद उन्होने और वल्लभभाई ने जोर दिया था कि अगर मैं हाजिर नही हो सकता तो उस सूरत में अपनी राय भेज दू और इसीलिए मैंने तफसील में अपनी राय लिख दी थी। मेरी राय मे सुभाषबाबू का तर्ज गलत था और वर्किग कमेटी के लिए जरूरी था कि वह अपनी राय जाहिर करे। लेकिन मैंने यह सुझाव दिया था कि इस मौके पर बहुत ज्यादा सख्ती न दिखाई जाय। मैंने तजवीज की थी कि वर्किग कमेटी उसी तरह की एक तजवीज पास करे, जिस तरह की आपने यू पी में पास की है और बाकी

चीज सदर के ऊपर छोड दे। उसके बाद सदर उन लोगो से खतो-किताबत करे और अगर वे लोग कमेटी की तजवीज मे एकराय हो तो उनके खिलाफ सदर चाहे तो आगे की कार्रवाई खत्म कर दे। लेकिन अगर वे इस हद तक भी तैयार न हो तब उन्हें उनके मौजूदा ओहदो से निकाल बाहर किया जाय। लेकिन अगले साल उनके चुनाव पर कोई बन्दिश न लगाई जाय।

मैंने आपको फोन पर बातें करने की तकलीफ दी, क्योकि मैं समझता था कि इस मामले पर गौर करने में आप हिस्सा लेंगे, लेकिन अब मालूम हुआ कि आप करीब-करीब अलहदा रहे और आपकी राय के बगैर फैसला किया गया।

आपका,
आजाद

२७२. मैडम सनयात सेन की ओर से

हांगकांग
१५ सितम्बर १९३९

प्रिय मित्र,

आपके चीन आने पर आपका स्वागत न कर सकने के कारण मुझे जो गहरी निराशा हुई उसीको प्रकट करने के लिए ये थोडी-सी पक्तियां लिख रही हू। डाक्टर मुखर्जी से मुझे अभी-अभी मालूम हुआ है कि मेरा सदेश आपको चुगकिंग में नही मिला। मैं आपसे मिलने के लिए हवाई जहाज से आने की योजना बना रही थी, लेकिन तभी अखबारो में यह पढकर मुझे बडा अफसोस हुआ कि आप स्वदेश लौट गये हैं। फिर भी मुझे विश्वास है कि हम जल्दी ही मिलेंगे। मैं उस दिन की बडी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रही हू जब हम आपका स्वतत्र चीन में स्वागत कर सकेंगे।

डाक्टर मुखर्जी के साथ चिकित्सा-सम्बन्धी सहायता-कार्य के बारे में मेरी काफी लम्बी बातचीत हुई और हमने इस बात पर विचार किया कि पहले जो चीजें हम यूरोप से मगाते थे वे अब जब वहा से नही मिल सकतीं तब आपके देश से हमें कितनी और किस प्रकार की सहायता मिल सकती है। मुझे यकीन है कि उनसे मेरी जो बातचीत हुई है और हिंदुस्तान में चाइना डिफेंस लीग की शाखा स्थापित करने के बारे में मैंने जो सुझाव

दिये हैं वे सब बातें वह आपको बतायेंगे। हो सकता है कि यहा की जटिल स्थिति के कारण हमें अपनी सस्था कुनमिन या क्वीलिन में ले जानी पडे। परिवर्तन हुआ तो आपको सूचित करूगी।

आप जिस कार्य का नेतृत्व कर रहे हैं उससे मैं अपनेको परिचित रखने की चेष्टा करती हू और साथ-ही-साथ आपके उद्देश्य की प्रगति का पूरी सहानुभूति के साथ अध्ययन करती हू, क्योकि वही चीन का भी उद्देश्य है।

अभिवादन सहित

आपकी,

सुंग चिन्ग लिन्ग

२७३. महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा

१८ सितम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

च्याग काई शेक के नाम मेरा पत्र साथ में है। पत्र मैं चाहता था उससे लम्बा होगया। शायद मूल के साथ टाइप की हुई प्रति भेजना अच्छा रहेगा। महादेव कल मद्रास गये। प्यार,

बापू

२७४ कृष्ण कृपालानी के नाम

[कृष्ण कृपालानी काफी समय तक रवीन्द्रनाथ टैगोर के सेक्रेटरी रहे थे। इस समय वह साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी हैं।]

आनन्दभवन, इलाहाबाद

२९ सितम्बर १९३९

प्रिय कृष्ण,

२५ सितवर का तुम्हारा खत अभी मिला। तुम्हें उस आदमी का बहुत लिहाज नही है, जो बेहद काम में घिरा हुआ है। अगरचे मामला अहम है, तोभी मैं मामूली तौर पर इस वक्त उसपर कुछ भी लिखने से तुमसे माफी माग लेता, लेकिन जब मैंने प्रो साहा[1] का तुम्हारे नाम लिखा

[1] मेघनाद साहा, एफ़ आर. एस., प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री थे। कुछ वर्ष पहले उनका देहांत होगया।

खत पढा तो मुझे उसमें इतने ज्यादा गलत बयान मिले कि मैं पूरी तरह खामोशी अख्तियार नही कर सकता, इस आशका से कि कही उनसे गलत-फहमिया पैदा न होजाय। उन्होने बार-बार मेरा जिक्र किया है और मेरे बारे मे कई ऐसी बातें कही हैं, जिनसे योजना-समिति में मैंने जो कुछ कहा है, उसकी बिल्कुल गलत छाप पडे बिना नही रहेगी।

मुझे डर है कि इस विषय पर फिलहाल मैं पूरे विस्तार से नही लिख सकता। अभी तो मैं सिर्फ प्रोफेसर साहा या दूसरे लोगो के दिमाग का भ्रम दूर करने की कोशिश करूगा।

योजना-समिति की बैठको मे सीधे गाधीजी के उसूलो पर किसी भी अवस्था में बहस नही हुई। काग्रेस की तजवीजो में जिस तरह काग्रेस के उसूल दिये गए है उनपर हमने जरूर चर्चा की और इस तरह हमने अप्रत्यक्ष रूप में गाधीजी के उसूलो का जिक्र किया, जिन्होने गये बीस सालो से काग्रेस पर बडा असर डाला है। मैंने कभी यह नही कहा कि श्री कुमारप्पा या किसी दूसरे की बनिस्वत मैं गाधीजी के विचारो को ज्यादा अच्छी तरह समझने का दावा करता हू। मेरा खयाल है कि इस खास मामले में श्री कुमारप्पा गाधीजी के विचारो के बारे में यकीनन मुझसे कही ज्यादा बोलने का हक रखते हैं। ग्रामोद्योग के काम में उनका गाधीजी के साथ बरसो से नजदीक का ताल्लुक रहा है। इसलिए ग्रामोद्योगो और उनके बारे में गाधीजी के विचारो के सबध मे बोलने का उन्हें पूरी तरह हक है।

योजना-समिति में मैंने जो कुछ कहा, वह यह था कि काग्रेस ने कभी भी अपने-आपको बडे पैमाने के उद्योगो के खिलाफ घोषित नही किया, लेकिन बहुत-सी वजहो से, जिन्हें मैं ठीक समझता हू, उसने कुटीर-उद्योगो पर जोर दिया है। निजी हैसियत से मेरा बडे पैमाने के उद्योगो को बढाने में विश्वास है। ताहम मैंने राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक कारणो से खादी-आदोलन और बडे ग्रामोद्योगो की पूरे दिल से हिमायत की है। मेरे खयाल में दोनो के बीच जरूरी तौर पर झगडा नही है, हालाकि कभी-कभी दोनो को किस तरह बढाया जाय या उनके किन्ही खास पहलुओ के बारे में झगडा हो सकता है। इस मामले में मैं ज्यादा हद तक गाधीजी के दृष्टिकोण की नुमाइदगी नही करता हू, लेकिन व्यवहार में दो दृष्टिकोणो मे अभी तक

कोई खास झगडा नही रहा है ।

मुझे यह साफ दिखाई देता है कि कुछ जरूरी और खास उद्योग—प्रतिरक्षा उद्योग, और लोक-सेवा के काम तो बडे पैमाने पर ही होने चाहिए। कुछ दूसरे उद्योग ऐसे है, जो बडे पैमाने पर या घरेलू उद्योगो के पैमाने पर हो सकते है। घरेलू उद्योगो के बारे में जुदा-जुदा रायें हो सकती है। इस मतभेद के पीछे दृष्टिकोण और जीवन-दर्शन का मतभेद है और जहातक मै श्री कुमारप्पा को समझा हू, उन्होने दृष्टिकोण के इस भेद पर ही जोर दिया है। उनका नुक्ता यह था कि बडे पैमाने की मौजूदा पूजीवादी प्रणाली बटवारे के मसले को नजरदाज कर देती है और इसकी बुनियाद हिसा पर है। इससे मै पूरी तरह एकराय हू। उनका हल यह था कि छोटे-छोटे उद्योगो के बढने से बटवारा ज्यादा ठीक होता है और हिसा का तत्व बहुत कम हो जाता है। मै इससे भी सहमत हू, लेकिन इससे हम बहुत दूर नही जा पाते है। हिसा, एकाधिकार और सम्पत्ति का एक जगह सग्रह, ये मौजूदा आर्थिक ढाचे से पैदा हुए है। बडे पैमाने के उद्योगो से अन्याय और हिसा नही होती, लेकिन पूजीपतियो और पैसा लगानेवाले लोगो द्वारा बडे उद्योगो के दुरुपयोग से अन्याय और हिसा होती है। यह सच है कि मशीन आदमी की ताकत को बेहद बढा देती है, निर्माण और विनाश दोनो के लिए। मेरे विचार से पूजीवाद के आर्थिक ढाचो को बदलने से मशीन के बुरे इस्तेमाल और हिसा को मिटाया जा सकता है। निजी मिलकियत और लोभ पर समाज के जिस ढाचे की बुनियाद है, वह जरूरी तौर पर होड से पैदा होनेवाली हिसा को बढावा देता है। समाजवादी समाज में यह बुराई चली जायगी, साथ ही हमारे लिए वह अच्छाई रह जायगी, जिसे बडी मशीन लाती है।

मै सोचता हू, यह सच है कि बडे उद्योग और बडी मशीन में कुछ खतरे विरासत में आते है। शक्ति के एक जगह इकट्ठी हो जाने की प्रवृत्ति होती है। मुझे पक्का यकीन नही है कि इसे पूरी तरह खत्म किया जा सकता है। लेकिन मै दुनिया या किसी तरक्की-पसद मुल्क की कल्पना नही कर सकता, जो बडी मशीन को तिलाजलि दे सके। अगर यह मुमकिन हो तो इसका नतीजा होगा उत्पादन का बुरी तरह नीचे गिरना और इस तरह जिदगी

के मानदण्डो का नीचे चला जाना। एक मुल्क के लिए उद्योगीकरण से दूर रहने की कोशिश करने का नतीजा यह होगा कि वह आर्थिक तथा अन्य प्रकार से दूसरे ज्यादा उद्योग-धधोवाले मुल्क का शिकार हो जायगा और वे इसका शोषण करेंगे। छोटे-छोटे उद्योग-धधो को बडे पैमाने पर वढाने के लिए, जाहिर है कि राजनैतिक और आर्थिक सत्ता जरूरी है। यह नामुमकिन है कि जिस मुल्क ने अपनेको पूरी तरह छोटे-छोटे उद्योग-धधो में लगा दिया है, वह कभी भी इस राजनैतिक या आर्थिक सत्ता को हासिल कर सके और इसका असर यह होगा कि वह जैसे चाहता है उस तरह छोटे-छोटे उद्योग-धधो को भी आगे नही बढा सकेगा।

इसलिए मै महसूस करता हू कि वडी मशीन को बढाना और उसका इस्तेमाल करना और इस तरह हिंदुस्तान का उद्योगीकरण करना उचित और अनिवार्य है। साथ ही मै इस बात का भी कायल हू कि चाहे कितना ही उद्योगीकरण हो जाय, हिंदुस्तान में छोटे-छोटे उद्योगो को बढाने की जरूरत से मुह नही मोडा जा सकता, और वह भी सिर्फ सहायक उद्योग के रूप में नही, बल्कि अलग इकाइयो के रूप में। मै नही जानता कि अगली एक-दो पुश्तो मे विज्ञान क्या कर दिखायगा, लेकिन जहातक मुझे दिखाई देता है, बडे उद्योगो के साथ-साथ हिंदुस्तान के लिए छोटे-छोटे उद्योग भी जरूरी रहेंगे और उन्हें हर तरह से बढावा मिलना चाहिए। इसलिए मसला दोनो के बीच ताल-मेल बिठाने का है। यह राज्य की ओर से योजना का सवाल है। आज की अव्यवस्थित पूजीवादी प्रणाली मे इसको सतोषजनक ढग पर सफलतापूर्वक नही किया जा सकता।

इस सवाल पर अपने विचार मैंने थोडे में जाहिर करने की कोशिश की है। मै किसी दूसरे के विचारो का खुलासा करने की वात नही सोच सकता हू, लेकिन मै महसूस करता हू कि छोटे उद्योगो की वकालत करनेवालो से सहयोग करना आसानी से मेरे लिए मुमकिन है, भले ही मै उनके वुनियादी दृष्टिकोण को स्वीकार न कर सकू।

बदकिस्मती से हमारा सावका इस समय समाजवादी राज्य से नही पड रहा है, लेकिन हम वदलती हुई हालत में से गुजर रहे हैं, जवकि पूजीवादी निजाम टूट रहा है। इसमें अनेक मुसीवतें उठ खडी होती है। जो हो, यह

साफ है कि आज भी जो उसूल लागू किये जाय वे वही हो, जो काग्रेस ने रखे है, यानी बुनियादी उद्योग-सेवाए, यातायात वगैरा राज्य के अधीन या नियन्त्रण मे हो। अगर बुनियादी उद्योगो मे सभी महत्वपूर्ण उद्योग आ जाते है तो हमें बहुत हद तक समाजीकरण हासिल हो जाता है। हमारी नीति के जरूरी नतीजे के तौर पर मै यह भी कहूगा कि जहा निजी स्वामित्व के बडे उद्योग और छोटे उद्योग में झगडा हो, वहा वह बडा उद्योग राज्य का हो जाना चाहिए या उसपर राज्य का नियन्त्रण रहना चाहिए। उस हालत में राज्य को किसी भी नीति को, जो कि वह निश्चित करता है, अख्तियार करने की ताकत और छूट होगी, और वह दोनो का तालमेल बिठा सकेगा।

पिछले बीस वर्षों में काग्रेस की नीतियो के काफी तजुर्बे की बुनियाद पर मै विश्वास के साथ कह सकता हू कि छोटे उद्योग हिंदुस्तान के लिए बडे आर्थिक और सामाजिक लाभ के रहे है। यह बिल्कुल सही है कि काग्रेस यह मानकर चली है कि बडे पैमाने के उद्योग अपनी देख-भाल करने के लिए काफी मजबूत है और इसलिए ज्यादा ध्यान छोटे उद्योगो पर दिया जाना चाहिए। इस बात को मुनासिब सदर्भ मे समझने की जरूरत है। हमारा सगठन तो गैर-सरकारी है और राज्य का आर्थिक ढाचा हमारे नियन्त्रण से एक दम बाहर है। ऐसी हालत मे बडे पैमाने के उद्योग को बढावा देने का मतलब निजी निहित स्वार्थों को बढावा देना होता है, अक्सर विदेशी निहित स्वार्थों को। हमारा मकसद सिर्फ यही नही है कि हिंदुस्तान की बेकार पडी इन्सानी ताकत और साथ ही बडी तादाद में लोगो के बेकार वक्त का इस्तेमाल करके पैदावार को बढावें, बल्कि हिंदुस्तान की जनता में अपने पैरो पर खडे होने की ताकत भी पैदा करें। काग्रेस ने इसमें बडी हद तक कामयाबी हासिल की है।

इस विषय पर महज सिद्धान्त के रूप में, हवा में, विचार नही किया जा सकता, बल्कि इसका ताल्लुक उन परिस्थितियो और जीवन के तथ्यो के साथ होना चाहिए, जो मुल्क में मौजूद हो। हम मानवीय तथ्य को कभी नजरदाज नही कर सकते। आज चीन में छोटे उद्योगो की तरफ कोई खास झुकाव नही है। लेकिन हालातो ने चीनियो को अपने गावो के उद्योग-धधो और सहकारी सस्थाओ को तेजी के साथ बढाने के लिए मजबूर कर दिया

ह । हमारे गावो के उद्योग-धधो के आदोलन में चीन की बहुत दिलचस्पी है और मुझसे उन्होने कहा था कि हम उद्योग-धधो के अपने कुछ विशेषज्ञो को चीन भेजें । मुमकिन है कि कुछ अच्छे चीनी विशेषज्ञ भी हमारे गाव के उद्योग-धधो के तरीको को समझने आयें ।

प्रोफेसर साहा कहते है कि गाव के उद्योग-धधे पुराने तरीको पर ही निर्भर नही रहने चाहिए । कोई भी नही कहता कि वे रहने चाहिए । विज्ञान की नई-से-नई तकनीक का फायदा उठाया जाना चाहिए । परतु ऐसा करने में यह याद रखना चाहिए कि गाववालो के लिए क्या सभव है और क्या साधन उनके पास है । अगर कोई चीज उनकी पहुच के बाहर है तो वह व्यावहारिक नही है । अगर बिजली बहुत सस्ती हो और गावो में आसानी से पहुचाई जा सके तो उससे पूरा फायदा उठाना चाहिए । अगर गाव के उद्योग के लिए नई तरह की मशीन ज्यादा खर्चीली हो या जो गाव में आसानी से न सुधारी जा सके तो मौजूदा हालत मे यह गाववालो के लिए ज्यादा अच्छी नही है । मामूली पुराने ढग की सादी मशीन, जैसे मामूली चर्खा, न-कुछ में से कुछ पैदा कर देती है, क्योकि उसपर गाववाला खाली या बेकार घटो में काम करता है । उस गाववाले को जरूर उससे अच्छी मशीन दीजिये ।

जापान की जो मिसाल प्रो साहा ने दी है, वह बहुत ठीक नही है । वहा छोटे-छोटे उद्योग नही है, लेकिन विकेन्द्रित उद्योग है । इसमें शक है कि बडे पैमाने के भरे-पूरे उद्योगो के मुकाबले इन्हें कितनी तरजीह दी जा सकती है ।

प्रो साहा सोचते मालूम होते है कि हिंदुस्तान में कुछ लोग यह महसूस नही करते कि बुनियादी उद्योगो का नियत्रण विदेशी शोषको के हाथो में है । वे हमारे नेताओ पर इलजाम लगाते है, मानो इसमें उनकी मजूरी हो । दरअसल यह गैर-मामूली बात है, और यह जाहिर करती है कि हिंदुस्तान में क्या हो रहा है, इसकी जानकारी प्रो साहा को नही है । यह छोटे या बडे उद्योग का सवाल नही है । हमारे उद्योग में विदेशी निहित स्वार्थो के बढने की हर हिंदुस्तानी निन्दा करता है, और उन्हें रोकने के लिए लगातार कोशिशें की गई है । प्रो साहा बिना तनिक भी जानकारी

के यह भी कहते है कि काग्रेस के मन्त्री उद्योगपतियो के (जिनमें ज्यादातर विदेशी है) हाथो की कठपुतली-मात्र है। यह सच है कि हमारे मन्त्री कई तरह से परिस्थितियो के हाथो की कठपुतली है और वे जिस तरह चाहते है उस तरह काम नही कर सकते। आज हर सरकार पूजीवादी आर्थिक ढाचे के चगुल में फसी है, परन्तु यह कहना कि हमारे नेता मुगल बादशाहो के जैसा अपराध कर रहे है और विदेशी व्यापार यूरोप के व्यापारियो के हाथो में जाने दे रहे है अचरजभरा है, और हिंदुस्तान के हाल के इतिहास की तमाम राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक घटनाओ की जानकारी की कमी को जाहिर करता है।

यह विपय बहुत बडा है। मैने तो सिर्फ एक या दो पहलुओ को छुआ है, जो मुझे सूझे। यह विपय तो इस तरह का है कि जिसपर चर्चा हो और पूरी तरह से हो, लेकिन यह बदकिस्मती है कि प्रो साहा का खत ऐसी भावना से लिखा गया है, जो वैज्ञानिकता या तटस्थता से बहुत दूर है।

तुम्हारा,
जवाहरलाल

श्री कृष्ण कृपालानी
शातिनिकेतन, बगाल।

२७५ सर स्टैफर्ड क्रिप्स की ओर से

हाउस ऑव कामन्स
११ अक्तूबर १९३९

प्रिय नेहरू,

मै इस इन्तजार मे रहा हू कि आपकी ओर से बातें कुछ अधिक निश्चित होती हुई दिखाई दें तब मै आपको पत्र लिखू। मै जो कुछ भी यहा कर सकता था, करता रहा हू। मै जेटलेन्ड से मिला था और मैने उन्हें स्थिति की गम्भीरता को समझाने की चेष्टा की। मैने अपनी ओर से कुछ सुझाव भी रखे, जो कि उन सुझावो जैसे है, जिन्हें (जैसाकि अब मुझे कृष्ण से मालूम हुआ है) आपने स्वीकार कर लिया है। जेटलेन्ड ने खुद कहा कि इन सुझावो को वह तार से वाइसराय के पास भेज देंगे और मुझे उम्मीद है कि उन्होने ऐसा किया भी है। लेकिन यह बात वाइसराय के साथ आपकी पहली मुलाकात से एक दिन पहले की है। मै समझता हू कि हमें यहा काग्रेस के कार्य के लिए

बहुत काफी प्रचार करने में सफलता मिली है, जिसे मैं दूसरी स्थितियो को ध्यान मे रखते हुए आश्चर्यजनक रूप से अच्छा मानता हू। लेकिन स्वभावत हम जनता के मत पर बहुत ज्यादा दबाव डालने की आशा नही कर सकते। मन्त्रिमडल के सदस्यो के सामने मैंने देश-विदेश और युद्ध की सामान्य स्थिति के बारे में जो बहुत-से विवरण उपस्थित किये है उनमें मैंने लोकतत्र और स्वतत्रता के तर्क की भी चर्चा करने की चेष्टा की है, जैसाकि वह हिंदुस्तान के प्रति हमारी प्रवृत्ति से सिद्ध होता है। इसलिए मुझे विश्वास है कि सम्भावित्त परिणामो की ओर से मन्त्रिमडल पूरी तरह से सचेत है, यद्यपि मुझे इस बात का निश्चय नही है कि असल में जो वास्तविक स्थिति पैदा हो रही है उसकी यथार्थता की ओर से वे लोग अभी जागरूक हुए है या नही। मजदूर-दल, जिसका कि आप जानते है, मैं अब सदस्य नही रह गया हू, एक बहुत ही अच्छा और सहायक दृष्टिकोण अपना रहा है और वह सरकार पर दबाव भी डाल रहा है। मुझे उम्मीद है कि कुछ ही दिनो में हम इस मामले को कामन्स-सभा में खोलकर रख देंगे, क्योकि उससे और भी अधिक प्रचार होगा।

लेकिन इन बातो के बावजूद, इस प्रकार से एक निरर्थक सकेत-मात्र से कुछ अधिक की आशा रखना सम्भव से बहुत ज्यादा की उम्मीद करना होगा। विंस्टन चर्चिल के मन्त्रिमडल में आ जाने से भारतीय स्वतन्त्रता के समर्थको की सख्या बढी नही है, फिर भी यह एक अच्छी बात है कि वह सब बातो को यथार्थता की दृष्टि से देखते है। अपनी इसी यथार्थवादी प्रवृत्ति के कारण ही उन्हें रूसी मामलो में दूसरो की अपेक्षा अधिक कीर्ति मिली है।

मैं जानता हू कि आपको और काग्रेस को इस बात के लिए सावधान करने की जरूरत नही है कि आप ऐसी कोई भी अव्यावहारिक चीज स्वीकार नही करेंगे, जो निर्णयात्मक रूप से सिद्ध न कर दे कि जो कहा जाता है, उसे माना भी जाता है। मुझे पूरा विश्वास है कि अग्रेजो और हिंदुस्तानी जनता दोनो की भलाई इसीमें है कि अब काग्रेस अपनी मागो पर चट्टान की तरह अडिग खडी रहे। स्वभावत मेरा मतलब विस्तार की बातो से नही है। मैं जानता हू कि अगर स्वतत्रता और लोकतत्र की बात एक बार क्रियात्मक रूप से स्वीकार कर ली जाय तो आप इन विस्तार की बातो पर समझौता करने को हमेशा तैयार है। लेकिन अगर आप लोग इस समय दृढ न रहे तो फिर किसी

ऐसे समझौते की आशा नही की जा सकती, जिसपर यहा के सब लोग सहमत हो, और ऐसी हालत में, मुझे डर है—मैं समझता हू कि आपको भी उतना ही डर होगा—कि हिंदुस्तान मे एक बार फिर हिंसात्मक दमन का चक्र चल पडेगा।

अब मै दो-चार शब्द यूरोप की स्थिति के बारे में कहना चाहूगा, जैसीकि वह आज दिखाई देती है। मुझे उम्मीद है कि आपने 'ट्रिब्यून' में मेरे लेख देखे होगे और उनसे आपको इस बात का सकेत मिल गया होगा कि मेरा दिमाग किस दिशा में कार्य कर रहा है, यद्यपि आपको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे पीछे सेंसर मडराता रहता है। मैंने जो कुछ भी लिखा है उसमें सेंसर के लोगो ने अभी तक कुछ अधिक या महत्वपूर्ण परिवर्तन नही किया है। लेकिन कुछ मामलो में हम राय देने के लिए इतने स्वतत्र नही है, जितने कि होने चाहिए। जबतक मैं युद्ध का समर्थन कर रहा हूं तबतक निश्चय ही मुझे कोई ऐसी बात नही कहनी चाहिए जिसको जर्मनी का रेडियो इस देश के खिलाफ उद्धृत कर सके।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि जर्मनी और रूस में नई जागृति के कारण वहा की स्थिति में परिवर्तन आगया है। फ्रास की सरकार द्वारा अपने यहा के सबसे बडे राजनतिक दल का दमन, इटली के साथ पुन मैत्री की स्थापना और हिंदुस्तान तथा औपनिवेशिक समस्याओ के प्रति हमारी सरकार का रुख, इन सभी बातो से यह पता लगता है—जैसाकि कल दलादिये ने कहा था—कि यह युद्ध सिद्धान्तो का युद्ध नही है। मै समझता हू कि यह एक बहुत ही घातक और दु खदायी स्वीकारोक्ति है। कुछ लोग अब भी सोचते है कि हम लोकतत्र और स्वतत्रता के सिद्धान्तो के लिए लड रहे है, किन्तु अब यह बिल्कुल स्पष्ट होगया है—जैसा कि पहले भी हो चुका है—कि इस बहाने साम्राज्यवाद अपने जीवन के लिए लड रहा है। यह जीवन का सघर्ष है और यह बहुत ही गम्भीर होगा, खास तौर से अगर रूस और जर्मनी हमारे विरुद्ध मोर्चा ले लें, जो कि बिल्कुल भी असम्भव नही है। इसलिए हमारे लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदुस्तानी जनता के साथ ठीक सम्बन्ध बनाये रखने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते है, करें।

जबतक ब्रिटिश सरकार अपने युद्ध-सम्बन्धी उद्देश्यो के बारे में पहले

से अधिक निश्चित और स्पष्ट वक्तव्य नही देगी और जबतक ये घोषित उद्देश्य अबतक के खोखले शब्दो को असलियत का जामा नही पहनायेंगे तबतक निश्चय ही इस देश मे बहुत बडा और गहरा मतभेद बना रहेगा। इसका सकेत अभीसे मिलने लगा है और चाहे कैसा भी दमन-चक्र क्यो न चलाया जाय, वह स्थिति को और भी अधिक बिगाडने के अतिरिक्त और कुछ नही कर सकता।

दुर्भाग्य की बात है कि पिछले कुछ वर्षों में राजनीति का जो रूप रहा है उससे यहा की सरकार के पैर और भी मजबूत हो गये है और फिलहाल उसमें कोई परिवर्तन आने की आशा नही है। लेकिन जबतक ऐसा परिवर्तन नही होगा तबतक इच्छित लाभ प्राप्त नही हो सकता।

आज की बहुत ही अन्धकारपूर्ण विचारधारा में एक उज्ज्वल रेखा यही है कि अधिकाश जनता, जिनमें कुछ कट्टर-से-कट्टर अनुदारदली भी है, इस बात को महसूस करने लगे है कि हमारी पुरानी सभ्यता खत्म हो चुकी है और अब वे उस नई सभ्यता का निर्माण करने में हाथ बटाने को तैयार है जिसकी उन्नति के रास्ते मे किसी भी निहित स्वार्थ को बाधा नही डालने दी जा सकती, यहातक कि उनके अपने निहित स्वार्थों को भी नही। यह एक बहुत ही उल्लेखनीय और स्पष्ट परिवर्तन है। ये लोग इस बात को जानने के लिए बडे चिन्तित है कि आखिर हम लोग किस बात के लिए लड रहे है। अपने युद्ध-उद्देश्य के बारे में हमने जो नीति प्रकट की है, अगर युद्ध उसीके आधार पर चलता रहा तो इसमे सन्देह नही कि यहा और हिंदुस्तान में दोनो ही जगह झगडे उठ खडे होगे। यह बात मै यहा की सरकार को समझाने की पूरी कोशिश करता रहा हू और मुझे विश्वास है कि यहा के मत्रिमडल में भी अब कुछ-कुछ जागृति पैदा होगई है। कठिनाई यह है कि सदा की तरह इस जागृति के आने में इतनी देर लग जायगी कि फिर विगडी बात बन नही सकेगी। यह भी एक कारण है, जिससे मै उम्मीद करता कि काग्रेस अपनी घोषणा पर एक चट्टान की तरह अडिग रहेगी, क्योकि उससे हम लोगो को भी सरकार को यह समझाने में सहायता मिलेगी कि कुछ-न-कुछ क्रियात्मक रूप से अवश्य करना चाहिए। केवल अस्पष्ट गोलमोल घोषणाओ पर ही भरोसा नही रखा जा सकता।

आपको और कांग्रेस को मेरी शुभ कामनाए। काश कि आप और हम मिलकर विस्तार के साथ बातचीत कर सकते !

आपका,
स्टैफ़र्ड क्रिप्स

२७६. रोजर बाल्डविन की ओर से

न्यूयार्क सिटी
१२ अक्तूबर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

'विश्व-इतिहास की झलक' के अग्रेजी सस्करण की आपने जो प्रति भेजी है उसके लिए अत्यत कृतज्ञ हू। पुस्तक-प्रकाशन की दृष्टि से ही नही, बल्कि विद्वत्तापूर्ण खोज और आकर्षक अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी यह एक अद्भुत कृति है।

उल्लेखनीय कार्यों के समाचार होते है ।

हार्दिक शुभकामनाओ सहित,

आपका मित्र,
रोजर बाल्डविन

२७७ रघुनन्दनशरण की ओर से

[रघुनन्दनशरण दिल्ली के एक प्रमुख उद्योगपति थे । वह यहां के प्रमुख कांग्रेसी भी थे । नवाबजादा से मतलब लियाकतअली खां से है, जो बाद में पाकिस्तान के प्रधान मंत्री बने ।]

दिल्ली
निजी और गोपनीय १४ अक्तूबर १९३९

प्रिय पंडितजी,

आपके दिल्ली से चले जाने के दो दिन बाद मैं नवाबजादा से, उनके द्वारा फोन से बुलाये जाने पर, मिला । हालाकि किसी खास चीज पर हमने चर्चा नही की, तो भी मेरे लिए यह साफ था कि वह जानना चाहते है कि क्या मि जिन्ना से आपकी बातचीत और आगे बढेगी या नही । यह भी साफ तौर से मालूम होता था कि वह हिन्दू-मुस्लिम सवाल का हल सच्चे दिल से चाहते है ।

इसके कुछ ही समय बाद सुभाष दिल्ली आये । आने के थोडी देर बाद ही उन्होंने मुझे फोन किया और कहा कि मैं उनसे फौरन मिल लू । मैं तुरन्त उनसे मिलने चला गया और आपसे हुई मुलाकात के बारे में जितना थोडे में हो सकता था, उतने में उन्हे बता दिया । उनपर यह गलत छाप जान पडती थी कि 'स्टेट्समैन' में प्रकाशित खबर किसीके उक-साने से छपी है । मैंने उन्हे बताया कि ऐसा नही है । वाइसराय से मिलने से पहले वह मि जिन्ना से नही मिल सके । उनके पास इसके लिए समय नही था । यहापर यह कहा जा सकता है कि मि जिन्ना चाहते थे कि इससे पहले कि वह वाइसराय-भवन के लिए रवाना हो, उनसे मिल लें ।

इसलिए वह दोपहर बाद मिले। रात को लाला शकरलाल ने मुझसे कहा कि हाई कमाण्ड में विश्वास का नितात अभाव समझौते के मार्ग में रुकावट था और अगर सारी बातें सुभाष पर छोड दी जाती तो जो होता, समझौते पर पहुचने में कोई दिक्कत न होती। मुझे तो वस्तुत इसपर विश्वास करना ही मुश्किल होगया, इसलिए दूसरे दिन सुबह मैं सुभाष से मिला। उन्होने भी कम-ज्यादा वही बात मुझे बताई, जो पिछली रात को लाला शकरलाल ने कही थी। इसपर मैंने उनसे पूछा कि क्या मि जिन्ना आपपर उतनी पूरी तरह अविश्वास करते हैं, जितने कि आपके साथी ? इस सवाल से थोडा घबराते हुए उन्होंने उत्तर दिया कि अगर आप सबसे पहले अपने साथियो को किसी ऐसे समझौते को मानने के लिए राजी कर सकते हैं, जिसपर आप मि जिन्ना से व्यक्तिगत बातचीत के परिणाम पर पहुच सके तो आप मि जिन्ना से अपनी बातचीत उपयोगितापूर्वक आगे बढा सकते है। उन्होने मि जिन्ना को झूठे अभिमान का साक्षात अवतार बताया और यह भी कहा कि सफलतापूर्वक उनसे कैसे निबटना चाहिए, यह केवल वही जानते है। मैंने कहा कि अगर मि जिन्ना से आगे बातचीत करने का मौका आया तो उनकी सेवाए आपको अवश्य सुलभ रहेगी। परन्तु उन्होंने कहा कि जहातक काग्रेस का सबध है, वहां वह कुछ भी नही है, इसलिए वह इस बातचीत में अच्छी तरह भाग नही ले सकेगे। मैंने उनसे कहा कि वास्तव में यह तो कोई बाधा है नही। फिर भी उन्होंने मुझसे कहा कि मै उनसे शाम को, उनके मि जिन्ना से मिलने के बाद, मिलू। मैंने ऐसा ही किया। उन्होने मुझसे कहा कि मि जिन्ना आपसे मिलकर और मामले पर आगे चर्चा करके खुश होंगे, बशर्ते कि कार्यसमिति आपको औपचारिक या अनौपचारिक रूप से उनसे बात करने का अधिकार दे दे।

सच पूछिये तो सुभाष ने जो कुछ कहा, उसपर मुझे जरा भी विश्वास नही हुआ। इसके लिए मेरे पास उचित कारण है। कुछ समान दोस्तो ने मुझे बताया कि मुलाकात का मि जिन्ना पर अनुकूल असर हुआ और उन्हे उम्मीद है कि बातचीत फिर आगे बढाई जायगी। इसकी पुष्टि करने के लिए मै नवाबजादा से फिर मिला। बडी भावना के साथ

अपनी बातचीत की शुरुआत करते हुए उन्होने कहा कि अगर हमारे नेता सिर्फ इस मौके पर अपने-आपको जरा ऊपर उठा ले तो हम इस बडे मौके का आजादी हासिल करने मे कामयाबी के साथ फायदा उठा सकते है। आखिर यह साम्प्रदायिक सवाल ऐसा नही है, जिसे हल न किया जा सके। मैने उन्हे विश्वास दिलाया कि मै भी उनकी भावनाओ को सही मानता हू और सभी सही तौर पर सोचनेवाले लोग ऐसा ही कहेगे। फिर मैने उनसे पूछा कि आपकी और मि जिन्ना की बातचीत, जो इतनी खुशी के साथ शुरू हुई थी, न्यायसगत समाप्ति तक क्यो नही बढ सकी ? उन्होने थोडा आश्चर्य प्रकट किया और कहा कि मि जिन्ना ने बुनियादी सवालो के बारे में अपने विचार आपको पूरी तरह बता दिये है, अब अगला कदम आपको उठाना है। यह फैसला आपको करना है कि उन्होने जो आधार बताये हैं वे आपको मजूर है या नही ? उन्होने यह भी कहा कि जहातक मि जिन्ना का ताल्लुक है, उनका रुख बडा दोस्ताना और गभीर है और जहातक सभव होगा, वह झगडे के मुद्दो को टालेंगे। उन्होने यह भी कहा कि सब लोगो में इस काम के लिए सबसे काबिल और उनकी पसदगी के आदमी आप ही है। नवाबजादा ने बताया कि अभी जैसा प्रोग्राम है, उसके मुताबिक मि जिन्ना अभी कुछ दिन दिल्ली में ही ठहरेंगे। अगर इस बारे में कुछ करना है तो सरकार की तरफ से कुछ ऐलान होने से पहले ही हो जाना चाहिए। अगर आप समझे कि मि जिन्ना के साथ आपकी बातचीत से कुछ फायदा होगा तो कृपया मुझे खबर कर दें। जैसी हिदायत होगी, मै वैसा ही करूगा।

शायद आपको यह जानना दिलचस्प लगेगा कि मुफ्ती किफायतुल्ला और जमीयत-उल-उलेमा के दूसरे नेताओ से सुभाषबाबू मिले थे। उन्होने इनसे यह आश्वासन चाहा कि वह फारवर्ड ब्लाक का समर्थन करेंगे। सुभाष ने साफ तौर पर उन्हे जता दिया कि काग्रेस अब आगे जो भी निश्चय करे, वह तो सरकार से लडेंगे ही। अब ब्रिटिश सरकार से कोई समझौता करने मे वह शरीक नही होगे। मुफ्तीसाहब ने उन्हे सलाह दी है कि वह तसल्ली से तबतक इतजार करे जबतक कि काग्रेस कोई फैसला न कर ले। जल्दबाजी करने से कोई फायदा नही होगा। उचित यही होगा कि

सारे राष्ट्रीय सगठन मिलकर काम करें। सुभापबाबू कुछ निराश से होकर ही लौटे है।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

सादर आपका,
नन्दन

२७८ रघुनन्दनशरण की ओर से

दिल्ली
१७ अक्तूबर १९३९

प्रिय पण्डितजी,

आपका कृपा-पत्र मिलते ही मैंने नवाबजादा से सम्पर्क स्थापित किया। उन्होने मुझे फोन किया और कहा कि मि जिन्ना इस मामले पर मुझसे बातचीत करना चाहेंगे। इसलिए मै गया और उनसे बातचीत की। अभी लौटा हू और अब आपको लिख रहा हू।

वह मुझसे बडी सौजन्यता और गहरी भावनाओ के साथ मिले और बातचीत की शुरुआत १९२२ के साल के प्रसग की याद दिलाते हुए की, जबकि मै उनसे और उनकी पत्नी से खूब मिला करता था। उन्होने बातचीत भावनापूर्ण ढग और खुले दिल से की। वह खासतौर पर अच्छे मूड में थे और विनोदी मालूम पड रहे थे। शुरू में ही उन्होने मुझसे आपको झूठी बातो और गप्पो के खिलाफ चेतावनी देने के लिए कहा। बडे ही स्पष्ट शब्दो में उन्होने कहा कि सुभाप और उनके लोग जो कुछ कह रहे है, उसमें एक शब्द भी विश्वास करने का नही है। उन्होने कहा कि मै यह सोच भी नही सकता कि मैंने किसीसे कहा हो कि कार्य-समिति के सदस्यो में मेरा विश्वास नही है। इसके विपरीत उन्होने कहा कि वर्किंग कमिटी के अधिकाश सदस्यो को तो वह बहुत आदर की दृष्टि से देखते है। आपके बारे में बातचीत करते हुए उन्होने कहा कि आपके लिए उनमें बडा स्नेह है और आपके चरित्र और ईमानदारी के प्रति उनके दिल में बडी इज्जत है। फिर उन्होने कहा कि हिन्दू-मुस्लिम मसले के बारे मे अपनी तरफ से उन्हें जो कुछ कहना था वह कह चुके है, अगले कदम का दारोमदार आपपर है। असल में उन्होने कहा कि उन्होने निश्चित रूप से आपसे अनुरोध किया है कि आप अपने साथियो

से मशविरा कर लें और फिर बातचीत को आगे बढावें। वाइसराय के साथ बातचीत के बारे मे उन्होने आपसे कहा था कि अगर जरूरत हुई तो इस मुलाकात के बाद वह आपसे सपर्क कर लेगे। आपके अपने साथियो से मशविरा कर लेने के बाद वह पूरी अपेक्षा रखते है कि हिन्दू-मुस्लिम मसले पर चर्चा करने के लिए वह फिर सम्पर्क करेंगे। उन्होने कहा कि यह बडे दु ख की बात है कि मामला दोस्ती की भावना से नही सुलझाया जा सका। उन्होने बताया कि हमारे बीच उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव का-सा फासला नही है। जितना हम सोचते है उससे ज्यादा हम एक-दूसरे के नजदीक है। उन्होने कहा कि आपके साथ बातचीत का सूत फिर से जोडने का वह दरअसल स्वागत करेंगे। वह यहा कम-से-कम २२ तक रहेंगे। उन्होने २२ ता. को वर्किंग कमिटी की बैठक दिल्ली मे बुलाई है। इसके बाद वह कहा-कहा जायगे, यह वह ठीक-ठीक नही जानते।

एक समाचार-पत्र का प्रतिनिधि वाइसराय के बयान अथवा कहू, वाइसराय की उस घोषणा की, जो अगले दिन सुबह प्रकाशित हो जायगी, खबर पहले से ही उन्हें देने आया था। मेरा विचार था कि सारी चीजो से मि जिन्ना बहुत दुखी और बेहद निराश थे। जाहिरा तौर से इसका उनपर अच्छा असर पडा। मैंने इसे शाम को पढा था और मुझे कहना चाहिए कि मै एकदम निराश हुआ। यह हमारी उम्मीद से ज्यादा खराब है। कोई घोषणा इससे ज्यादा प्रतिक्रियावादी और कमीनेपन से भरी हुई नही हो सकती थी। मुझे तो लगा, मानो जेल जाने के लिए मुझे बिस्तर बाध लेना चाहिए।

मै यह कहने का साहस करता हू कि आपसी समझ पैदा करने का यही समय है। मि जिन्ना की चित्त-वृत्ति उपयुक्त है। आप उन्हें लिखिये और उनके साथ मुलाकात का इतजाम करा लीजिये। निश्चय ही आप दोनो मिलकर जो समझौता कर लेंगे वह दोनो सस्थाओ को स्वीकार होगा।

आशा है, आप स्वस्थ और अच्छे होगे।

सादर आपका,
नन्दन

फिर से—

आपको यह बताना रह गया कि मैंने दो महत्वपूर्ण नुक्तो पर खास

तौर पर सकेत किया था—एक यह कि मुस्लिम लीग को स्वतत्रता के लिए काग्रेस के दावे का समर्थन करना चाहिए, दूसरे उसे अपना यह विचार छोड देना चाहिए कि दो राष्ट्र है, एक हिन्दू और दूसरा मुस्लिम। इसका उन्होने कोई साफ जवाब नही दिया। परन्तु जैसीकि उनकी आदत है, उन्होने अपना विरोध या नामजूरी जाहिर नही की। इसके विपरीत हमारी बातचीत जारी रही और धीरे-धीरे वह अधिकाधिक मधुर और मैत्रीपूर्ण होती गई, शब्दो और विषय दोनो दृष्टियो से। अपने विचार प्रकट करने के लिए उन्होने अपनी बात जिस तरह पेश की और जो शब्द कहे, उनपर अगर विश्वास किया जा सके तो उनसे समझौता होने में जरा भी कठिनाई नही होनी चाहिए। लीग के दूसरे खास-खास सदस्यो के मुकाबले, बेहिचक मेरी राय है कि वह उनसे हर तरह से बढकर है। मुझे लगा कि मै सचमुच किसी ऐसे आदमी से बात कर रहा हू जिसके अन्दर कुछ 'दम' है। अगर उन्हें केवल अपने प्रति सहिष्णु बना सकें तो उनपर विश्वास और भरोसा किया जा सकता है—यह है वह अचूक राय, जो मैने उनके बारे में बनाई है।

पत्र-वाहक आपके जवाब के लिए वही रुकेगा। अगर आप मि जिन्ना के नाम कोई पत्र देना चाहें तो इसीके हाथ भेज सकते है और मै ऐसी व्यवस्था कर दूगा कि कोई फौरन जाकर उन्हें दे आये।

सादर आपका,
नन्दन

२७८ मोहम्मद अली जिन्ना के नाम

लखनऊ,
१८ अक्तूबर १९३९

निजी

प्रिय जिन्ना,

नदन ने कल की उनकी और आपकी मुलाकात और बातचीत के बारे में मुझे लिखा है। मुझे अफसोस है कि कुछ गलतफहमी की वजह से आपने तो यह समझ लिया कि मैं दिल्ली में आपसे फिर मिलूगा और मैने यह समझा कि आप मुझे टेलीफोन करेंगे। सचमुच मै आपसे फिर मिलने की उम्मीद कर रहा था और आपकी तरफ से किसी सदेसे के पाने के इतजार में था। यह सही है कि इसका ताल्लुक वाइसराय के साथ बातचीत से था।

हमारी दूसरी बातचीत हालाकि लम्बी थी तो भी मामूली चीजो को लेकर थी और मैं इस मामले को ज्यादा गहराई से समझने के लिए दूसरा मौका चाहता था।

मैं आपसे खुशी से फिर मिलूगा। अगर अभी मेरे पास वक्त होता तो मैं इस काम के लिए दिल्ली चला आता। लेकिन यह मुश्किल मालूम होता है, क्योंकि मुझे कल इलाहाबाद जाना है और कुछ घटे वहा ठहरने के बाद काग्रेस वर्किंग कमिटी के लिए वर्धा जाना है। अगले कुछ दिनो में आप भी बहुत घिरे रहेगे। वाइसराय के बयान के बाद हालत बहुत तेजी से बदल सकती है और आगे के लिए कुछ मन्सूबे बाधना आसान नही है। लेकिन वर्धा की बैठक के बाद मैं आपसे बबई या दिल्ली में, जहा भी आपको सहूलियत हो, मिलने की पूरी कोशिश करूगा। अगर आप जल्दी ही बबई जाते हो तो वर्धा से मैं वहा भी जा सकता हू या मैं दिल्ली जा सकता हू।

मैं आपसे बिल्कुल एकराय हू कि अबतक हिन्दू-मुस्लिम मसले का निपटारा दोस्ताना ढग से नही हो सका। मुझे इस मामले मे बड़ा ही अफसोस होता है और मुझे अपने पर शर्म आती है, क्योंकि इसके हल करने में मैं कोई ठोस मदद नही कर सका हू। मुझे आपके सामने मजूर करना पडता है कि इस मामले में मुझे अपने ऊपर भरोसा नही रहा, हालाकि आम तौर पर मेरी ऐसी आदत नही है। लेकिन पिछले दो-तीन सालो का मुझपर जबरदस्त असर हुआ है। मेरा अपना दिमाग दूसरी ही सतह पर चलता है और मेरी ज्यादातर दिलचस्पिया दूसरी ही तरफ है। इसलिए हालाकि मैंने इस मसले पर बहुत गौर किया है और उसकी ज्यादातर बारीकियो को समझता हू, फिर भी मुझे महसूस होता है कि मैं कोई पराया आदमी हू और मेरे जजबात कुछ दूसरे है। इसलिए मुझे हिचक होती है।

लेकिन इससे कोई हल निकालने में मदद देने की ज्यादा-से-ज्यादा कोशिश करने में कोई रुकावट नही होती और मैं जरूर मदद दूगा। मुस्लिम लीग में आपकी कद्र और असर की वजह से आपके लिए यह काम इतना मुश्किल नही होना चाहिए, जितना लोग सोचते है। मैं आपको पूरी ईमानदारी से यकीन दिला सकता हू कि वर्किंग कमिटी के सारे मेंबर दिलोजान से हल निकालना चाहते है। मेरे लिए यह बहुत ही अचरज और अफसोस की

२८१ महात्मा गाधी की ओर स

रेलवे स्टेशन, दिल्ली
४ नवम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे चले जाने के बाद ही कृपालानी ने मुझे बताया कि उत्तर प्रदेश में सविनय भग के लिए बडा जोश और तैयारी है। उन्होने यह भी कहा कि गुमनाम कागज घुमाये गए है और लोगो से तार काटने और रेलें उखाडने के लिए कहा गया है। मेरी अपनी राय यह है कि अभी सविनय भग के लिए कोई वातावरण नही है। यदि लोग कानून अपने ही हाथो में ले लेते है तो मुझे सविनय भग की कमान छोड देनी होगी। मैं चाहता हू कि तुम इस सप्ताह का 'हरिजन' पढो। उसमें इस सबध में मेरी स्थिति बताई गई है। तुमसे इसीकी चर्चा करने का मेरा इरादा था। परन्तु वह होना नही था। हमारे इतिहास के इस नाजुक वक्त में हममें कोई गलतफहमी नही होनी चाहिए और सभव हो तो एक विचार होना चाहिए।

प्यार,

बापू

२८२ चू चिया-हुआ की ओर से

कुओमिन्ताग की सेंट्रल एक्जीक्यूटिव कमिटी
चुगकिग
११ नवम्बर १९३९

श्री जवाहरलाल नेहरू,
स्वराज्य भवन,
इलाहाबाद, भारत

प्रिय श्री नेहरू,

कुछ दिन हुए आपका तार पाकर वडी प्रसन्नता हुई थी, जिसमें आपने अपने सकुशल भारत पहुच जाने की सूचना दी थी। युद्ध की परिस्थिति में आपका यहा आना सदा स्मरण रहेगा। आपकी इस यात्रा ने चीन की जनता पर बहुत ही गहरा और महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

चीन और हिंदुस्तान के जिस पारस्परिक सबध की आपने यहा अपनी यात्रा के समय चर्चा की थी, उसकी वृद्धि के बारे में आपके विचार बडे व्यापक और विस्तृत है और उनकी मैं हृदय से सराहना करता हू। वे विचार हमारे सुगसाई, जनरल च्याग काई-शेक के निर्देशो के साथ चीनी-हिंदुस्तानी सहयोग-योजना की उस रूपरेखा में सम्मिलित कर लिये गए है, जिसका मसविदा मैंने तैयार किया था। यह रूपरेखा अव स्वीकृत कर ली गई है और उसपर अलग से अमल किया जायगा। उसकी मुख्य बातें ये है—

१ चीन के प्रोफेसर हिंदुस्तान मे और हिंदुस्तान के प्रोफेसर चीन में विभिन्न विश्वविद्यालयो मे पदग्रहण करे।

२ दोनो देश विद्यार्थियो का चुनाव करके एक-दूसरे के यहा अध्ययन करने के लिए भेजें।

३ प्रकाशित सामग्री का आपस में विनिमय किया जाय और उनका चीनी या हिन्दुस्तानी भाषा में अनुवाद किया जाय।

४ सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी की एक शाखा कलकत्ता में और एक उप-शाखा बम्बई में स्थापित की जाय और उनके माध्यम से एक-दूसरे देश की जानकारी प्राप्त की जाय।

५ जाच तथा यात्रा करनेवाले शिष्टमडल एक देश से दूसरे देश में भेजे जाय अथवा जाच या मैत्रीपूर्ण सम्पर्क के लिए विशेषज्ञ भेजे जाय। इसके अन्तर्गत चीन की ओर से प्रारभिक रूप में निम्नलिखित कामो की योजना बनाई गई है—

१ हिंदुस्तान जाने के लिए बौद्ध भिक्षुओ के एक यात्री-दल का सगठन।

२ हिंदुस्तान मे कपडे के व्यवसाय, सूती कपडे की सहकारी समितियो और दूसरी औद्योगिक स्थितियो की जाच करने के लिए विशेषज्ञो को भेजना और हिंदुस्तान के उद्योगपतियो तथा कृषि-व्यवसायियो से मिलना एव विचार-विनिमय करना।

३ एक ऐसे दल का सगठन करना जो हिंदुस्तान की यात्रा करके विज्ञान-सबधी बातो की जाच तथा अध्ययन करे।

इनके अतिरिक्त इस साल जब आल इडिया नेशनल काग्रेस का सालाना

तुम्हारी जिज्ञासु आत्मा को अपना लक्ष्य मिले और वह गौरव तथा सौंदर्य के साथ आत्म-दर्शन कर सके, यही मेरी कामना है। यही तुम्हारी कवयित्री और सहकर्मिणी बहन का आशीर्वाद है।

सरोजिनी नायडू

मैं १७ को आगरा और १९ को सवेरे २-३२ पर पवित्र प्रयागराज पहुचूगी।

२८६. आसफ अली के नाम

इलाहाबाद
१६ नवम्बर १९३९

प्रिय आसफअली,

आपका १४ ता का खत मिला। लडाई में आगे होनेवाली घटनाओं के बारे मे अदाज लगाना मुश्किल है। लेकिन एक बात मुझे तयशुदा मालूम होती है। रूस के खिलाफ या दूसरी कोई गुटबन्दी बहुत दिन नही चलेगी। यूरोप में उनकी गाडी उलट गई है और उसको फिर से खडा करना बहुत मुश्किल होगा। हिंदुस्तान में लडाई से पहले के हालात फिर से नही आ सकते और पुरानी शर्तों पर काग्रेस सूबो में सरकार का काम नही सभालेगी।

मुझे मालूम नही कि जिन्ना के साथ फिरकेवारान बातचीत के बारे में आपका ठीक-ठीक खयाल क्या है। मैंने जिन्ना से कह दिया कि मैं बिल्कुल तैयार हू और उनके खत का इन्तजार कर रहा हू। लेकिन असल में जिन्ना के और हमारे बीच में कोई फिरकेवारान अडचन नही है। यह मुश्किल तो सियासी है। काग्रेस जिस किस्म की कार्रवाई की आदी है, उसके मुताबिक वह (जिन्ना) अपने-आपको नही बना सकते। इसलिए फिरकेवारान मसले

वक्त इसका किसी फिरकेवारान सवाल पर दारोमदार नही है।

श्री आसफअली एम एल ए,
कूचा चेलान,
दिल्ली

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

२८७. एडवर्ड टामसन की ओर से

एल्सबरी वक्स
३ दिसम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

आपने मुझे कुछ गलत समझा। मेरे कहने का मतलब यह कभी नही था कि कौंसिल में काम मिल जाने को मैं एक 'मौका' समझता हू। आपको यह जान लेना चाहिए कि मैं किसी स्थान अथवा उपाधि को कोई महत्व नही देता। मेरा मतलब यह था कि सेना की एकागिता को प्रभावित करने का वह एक मौका था।

मेरा अब भी यह विचार है कि जबतक सेना की एकागिता में सुधार नही होता, तबतक हिंदुस्तान को स्वाधीन राज्य घोषित नही किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त मेरा वह पुराना मूर्खतापूर्ण सपना अब भी विद्यमान है कि ब्रिटिश साम्राज्य का प्रवर्तन समान राष्ट्रो के समूह में विश्व के सयुक्त राज्य (यूनाइटेड स्टेट्स ऑव दि वर्ल्ड) के रूप में हो सकता है। मैं जानता हू, यह बात आपको मूर्खतापूर्ण लगेगी, लेकिन मैं आपको एक साथी नागरिक के रूप में देखना चाहूगा। जो हो, मेरी राय में आप पजाब को सेना के नियत्रण में छोड नही सकते और उस गडबड को थोडा सुधारना ही पडेगा।

परन्तु यह सब मेरे और आपके बीच की छोटी बातें है। अब उन बातो की चर्चा हो जो सचमुच कुछ महत्व रखती है।

मैंने इदू को देखा है। वह ठीक लगती है और भली-चगी भी है। यह बात ठीक है कि वह दुबली है और निस्सदेह उसकी अभी वही हालत है, जिसे नाजुक कहा जाता था और उसे सावधानी बरतनी पडेगी। वह अन्दर से बिल्कुल सूख गई है और किशोरावस्था की समाप्ति के साथ इन कठिन दिनो के बीत जाने के बाद उसे वास्तविक ताकत प्राप्त होगी। जो हो, वह

तुम्हारी जिज्ञासु आत्मा को अपना लक्ष्य मिले और वह गौरव तथा सौंदर्य के साथ आत्म-दर्शन कर सके, यही मेरी कामना है। यही तुम्हारी कवयित्री और सहकर्मिणी बहन का आशीर्वाद है।

सरोजिनी नायडू

मैं १७ को आगरा और १९ को सवेरे २-३२ पर पवित्र प्रयागराज पहुचूगी।

२८६. आसफ अली के नाम

इलाहाबाद
१६ नवम्बर १९३९

प्रिय आसफअली,

आपका १४ ता का खत मिला। लडाई में आगे होनेवाली घटनाओं के बारे में अदाज लगाना मुश्किल है। लेकिन एक बात मुझे तयशुदा मालूम होती है। रूस के खिलाफ या दूसरी कोई गुटबन्दी बहुत दिन नही चलेगी। यूरोप में उनकी गाडी उलट गई है और उसको फिर से खडा करना बहुत मुश्किल होगा। हिंदुस्तान में लडाई से पहले के हालात फिर से नही आ सकते और पुरानी शर्तों पर काग्रेस सूबो में सरकार का काम नही सभालेगी।

मुझे मालूम नही कि जिन्ना के साथ फिरकेवारान बातचीत के बारे मे आपका ठीक-ठीक खयाल क्या है। मैंने जिन्ना से कह दिया कि मैं बिल्कुल तैयार हू और उनके खत का इन्तजार कर रहा हू। लेकिन अमल में जिन्ना के और हमारे बीच में कोई फिरकेवारान अडचन नही है। यह मुश्किल तो सियासी है। काग्रेस जिस किस्म की कार्रवाई की आदी है, उसके मुताबिक वह (जिन्ना) अपने-आपको नही बना सकते। इसलिए फिरकेवारान मसले के निपटारे की बुनियाद पर मिली-जुली सियासी कार्रवाई की नजर मे बात करना इस बुनियादी हकीकत को नजरदाज करना है। मेरा यह मतलब नही कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर कार्रवाई नही कर सकते। मैं समझता हू कि वे कर सकते है और बहुत हद तक करेंगे। लेकिन इस

वक्त इसका किसी फिरकेवारान सवाल पर दारोमदार नही है।

श्री आसफअली एम एल ए, आपका,
कूचा चेलान, जवाहरलाल नेहरू
दिल्ली

२८७ एडवर्ड टामसन की ओर से

एल्सबरी वक्स
३ दिसम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

आपने मुझे कुछ गलत समझा। मेरे कहने का मतलब यह कभी नही था कि कौसिल में काम मिल जाने को मै एक 'मौका' समझता हू। आपको यह जान लेना चाहिए कि मै किसी स्थान अथवा उपाधि को कोई महत्व नही देता। मेरा मतलब यह था कि सेना की एकागिता को प्रभावित करने का वह एक मौका था।

मेरा अब भी यह विचार है कि जबतक सेना की एकागिता में सुधार नही होता, तबतक हिंदुस्तान को स्वाधीन राज्य घोषित नही किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त मेरा वह पुराना मूर्खतापूर्ण सपना अब भी विद्यमान है कि ब्रिटिश साम्राज्य का प्रवर्तन समान राष्ट्रो के समूह में विश्व के सयुक्त राज्य (यूनाइटेड स्टेट्स ऑव दि वर्ल्ड) के रूप में हो सकता है। मै जानता हू, यह बात आपको मूर्खतापूर्ण लगेगी, लेकिन मै आपको एक साथी नागरिक के रूप में देखना चाहूगा। जो हो, मेरी राय मे आप पजाब को सेना के नियत्रण में छोड नही सकते और उस गडबड को थोडा सुधारना ही पडेगा।

परन्तु यह सब मेरे और आपके बीच की छोटी बाते है। अब उन बातो की चर्चा हो जो सचमुच कुछ महत्व रखती है।

मैने इदू को देखा है। वह ठीक लगती है और भली-चगी भी है। यह बात ठीक है कि वह दुबली है और निस्सदेह उसकी अभी वही हालत है, जिसे नाजुक कहा जाता था और उसे सावधानी बरतनी पडेगी। वह अन्दर से बिल्कुल सूख गई है और किशोरावस्था की समाप्ति के साथ इन कठिन दिनो के बीत जाने के बाद उसे वास्तविक ताकत प्राप्त होगी। जो हो, वह

तुम्हारी जिज्ञासु आत्मा को अपना लक्ष्य मिले और वह गौरव तथा सौंदर्य के साथ आत्म-दर्शन कर सके, यही मेरी कामना है। यही तुम्हारी कवयित्री और सहकर्मिणी बहन का आशीर्वाद है।

सरोजिनी नायडू

मैं १७ को आगरा और १९ को सवेरे २-३२ पर पवित्र प्रयागराज पहुचूगी।

२८६. आसफ अली के नाम

इलाहाबाद
१६ नवम्बर १९३९

प्रिय आसफअली,

आपका १४ ता का खत मिला। लडाई में आगे होनेवाली घटनाओं के बारे में अदाज लगाना मुश्किल है। लेकिन एक बात मुझे तयशुदा मालूम होती है। रूस के खिलाफ या दूसरी कोई गुटबन्दी बहुत दिन नही चलेगी। यूरोप में उनकी गाडी उलट गई है और उसको फिर से खडा करना बहुत मुश्किल होगा। हिंदुस्तान मे लडाई से पहले के हालात फिर से नही आ सकते और पुरानी शर्तों पर काग्रेस सूबो में सरकार का काम नही सभालेगी।

मुझे मालूम नही कि जिन्ना के साथ फिरकेवारान बातचीत के बारे में आपका ठीक-ठीक खयाल क्या है। मैंने जिन्ना से कह दिया कि मैं बिल्कुल तैयार हू और उनके खत का इन्तजार कर रहा हू। लेकिन असल में जिन्ना के और हमारे बीच में कोई फिरकेवारान अडचन नही है। यह मुश्किल तो सियासी है। काग्रेस जिस किस्म की कार्रवाई की आदी है, उसके मुताबिक वह (जिन्ना) अपने-आपको नही बना सकते। इसलिए फिरकेवारान मसले के निपटारे की बुनियाद पर मिली-जुली सियासी कार्रवाई की नजर से बात करना इस बुनियादी हकीकत को नजरदाज करना है। मेरा यह मतलब नहीं कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर कार्रवाई नही कर सकते। मैं समझता हू कि वे कर सकते हैं और बहुत हद तक करेंगे। लेकिन इस

इसके कुछ अश इदिरा को दिखाये थे। उनमें आपके बारे में चर्चा थी। कल मुझे ऑक्सफोर्ड जाना पडा। आई सी एस प्रोबेशनरो से बातचीत की। आज प्रात रोड्स ट्रस्ट के सेक्रेटरी लार्ड एल्टन से बाते हुई है। कल एक वार्ता के सिलसिले में लायनेल कर्टिस भी वहा थे। दो बातें है १ रोड्स ट्रस्ट हिंदुस्तान पर कुछ धन व्यय करना चाहता है। मै हिंदुस्तान के लिए पिल्ग्रिम ट्रस्ट के तरीके पर कुछ करने की सोच रहा हू। हमारे पिल्ग्रिम ट्रस्ट को तो आप जानते है ? इसका सचालन बडी दक्षतापूर्वक हो रहा है। यह ऐसे कार्यो के लिए अनुदान देता है जो करने योग्य है, सिर्फ अस्थायी दान नही, बल्कि ऐसे काम शुरू करता है अथवा उसमें सहयोग देता है, जो कुछ रचनात्मक है। मेरा विचार एक ऐसा कोष स्थापित करने का है, जो ऐसे हिंदुस्तानियो को अनुदान देगा, जो आर्थिक क्षेत्र में वास्तव में मूल्यवान शोध कर रहे हैं, जैसे गन्ने या फलो की किस्मो का विकास, अथवा अनुसूचित जातियो के लिए कोई काम, या बुनियादी तालीम का काम ही। २ रोड्स ट्रस्ट अपना एक पुराना प्रस्ताव मनवाने के लिए विश्वविद्यालय पर दवाव डालने जा रहा है। यह प्रस्ताव मेरी पहली रिपोर्ट का परिणाम है। इस प्रस्ताव के अन्तर्गत कुछ हिंदुस्तानी विद्वानो से भारतीय ऐतिहासिक अथवा साहित्यिक विषय पर ऑक्सफोर्ड में भाषण करने को कहा जायगा। वताइये, कौन आदमी अच्छा रहेगा ? ऐसा आदमी हो जो भारतीय झडे को ऊचा बनाये रखे, हमारे मनोरजन कक्षो (कामन रूम) में सबसे अच्छी तरह मिल-जुल सके, हमारे अडर-ग्रेजुएट छात्रो से मिलजुल सके और न केवल ऑक्सफोर्ड, बल्कि बाहरी जनसमुदाय के सामने भी बोल सके।

अब कान खोलिये और फिर सुनिये। मै बडी गभीरतापूर्वक कह रहा हू। यह प्राचीन विश्वविद्यालय जिस किसी व्यक्ति को रोड्स मेमोरियल लेक्चरार बनने का निमत्रण देता है, तो यह उस व्यक्ति को दिया गया विश्वविद्यालय का कई दृष्टियो से सबसे बडा सम्मान होता है। यह एक बिल्कुल भिन्न कार्य है। यह लेक्चरार किसी मनोरजन-कक्ष (कामन रूम) का सदस्य बनाया जाता है, सामान्यत ऑल सोल्स का, जो शायद सर्वोत्तम है, क्योकि यहा वह हमारे सभी प्रमुख राजनीतिज्ञो से मिल पाता है। (वैसे आपको मै अपने कालेज ओरियल के लिए ही चाहूगा)। वह ग्रीष्मकालीन सत्र में

पहले से अच्छी है। हमने चाहा था कि वह हमारे यहा आ जाय, लेकिन वह कहती है कि मैं १५ दिसम्बर को स्विट्जरलैण्ड जा रही हू। यदि कुछ हुआ—जैसे स्विट्जरलैण्ड पर जर्मनी का आक्रमण —तो हम देख लेंगे, आप उसके बारे में कोई चिन्ता न करें।

जबसे मैं लौटा हू, तबसे मुझे अपने दिन बडे लबे लगते रहे है और मुझे बडी बेचैनी महसूस होती रही है। यहा लौटने पर देखा कि एक भाई मर रहा है और उसके पास दो बार मुझे बुलाया गया है और कई दिन मैंने वहा बिताये है। डाक्टर ने कह दिया, "साफ-साफ बता दू, मैं उसे जीवित रखने की भी कोशिश नही कर रहा हू। ऐसा करना बडी निर्दयता होगी।" कई डाक्टरो ने ऐसा कहा है और सब इस बात पर सहमत है कि उसके बचने की कोई उम्मीद नही है। लेकिन उसमें बडी आत्मशक्ति है। वह कहता है, मैं मरनेवाला नही और मरने से इन्कार करता है। डाक्टरो में मेरा बहुत कम विश्वास है और अगर्चे मैं जानता हू कि इस बारे मे मेरी कोई जानकारी नही है फिर भी मेरी भावना ऐसी है कि इस खतरे को पार करने का अब भी सयोग हो सकता है। वह मुझसे छोटा है और उसका व्यक्तित्व बडा आकर्षक है।

कोई काम करना मेरेलिए असम्भव रहा है, और मेरे काम का मानो अन्त नही है। तीन दिन पहले मेरी पत्नी मेरे स्थान पर चली गई थी। वह आज रात को लौट रही है।

सुनिये, वृद्ध और अधिक विवेकी लोगो की बात सुनने की आपकी आदत नही है। है क्या ? अध्यक्ष के मच पर आपकी हरकतो के बारे में सरोजिनी ने कई कहानिया सुनाई थी, वे मुझे याद है। "ओह, वह श्रोताओ के बीच चले जाते और जिस बेचारे ने उनका खडन किया होता उसे पकड लेते, उसकी मुश्कें बाधकर पटाल में उसे इतने घूसे लगाते कि हर किसीके मन में उस गरीब के लिए भय पैदा हो जाता।" ये आदतें आपने हैरो में सीखी थी क्या ? लेकिन, मैं इतनी दूर हू कि आप मेरी मुश्कें बाधकर मुझे घूसे नही लगा सकते (आप मुझे खिन्न बना देते है!) इसलिए मैं कहूगा कि सुनिये' सिर्फ कुछ मिनट।

अपनी रोड्स रिपोर्ट तैयार करने के लिए मैं दिन-रात लगा रहा हू।

राष्ट्रीय अनुभव रख सकते है, हमारे एकान्त और पृथक्त्व को झटका दे सकते है, दुनिया के नक्शे पर अपनी जनता को प्रस्तुत कर सकते है (एक बार आपने मुझसे कहा था कि मै अच्छा राजदूत हू और आप है भी)। और इगलैड की सुहानी गर्मियो में आप हमारे नौजवानो (विश्व में सबसे अच्छे) को देखेगे। अनेक विश्वविद्यालय-सदस्यो के सामने, जिन्होने छात्रो के अलावा किसी हिंदुस्तानी या अन्य किसी विदेशी को नही देखा है, आप हिंदुस्तान की एक बिल्कुल नई तस्वीर रख सकते है, आप सभी राजनैतिक नेताओ से मिल मकते है (चाहने पर भी बच नही सकते), क्योकि वे सबके सब ऑक्सफोर्ड आते है। आप वह काम कर सकते है, जिसे टैगोर ने शुरू किया था और जिसे वह अपने मन की उडानो का प्रकाशन करके पूरा नही कर पाये। यह काम बिल्कुल गैरसियासी है। इडिया आफिस दूर से भी इसमे टाग नही अडाता। यदि यह काम आपको दिया जाय तो स्वीकार कर लीजिये, क्योकि यह सयोग से ही मिल रहा है। इसका मतलब यह हुआ है कि यह आपके दैव और आपके दानव का आदेश है। आप आश्वस्त रहे, कोई गडबड न होगी। विश्वविद्यालय-श्रोताओ को मै पहले ही सावधान कर दूगा कि वे वक्ता के प्रति श्रद्धानत हो और ध्यानपूर्वक सुनें, अन्यथा यह भयकर वक्ता उनके बीच ही प्रकट हो जायगा, उन्हें बडी मार लगायेगा, मानो वे किसी काग्रेसी सभा के श्रोता हो। यदि यह काम आपने स्वीकार नही किया तो दूसरा नम्बर होगा सप्रू का (यह बात हमी तक रहे)। जहा-तक तकरीर करने और मनोरजन-कक्षो में मिलने-जुलने का सवाल है, वह इस काम को अच्छी तरह निभा लेंगे। लेकिन उनके आने में हमारे राजनीतिज्ञो की कट्टरता और भी बढ जायगी। मैंने आपके लिए ही सप्रू का नाम हटा दिया है। वह वाद में आ सकते है। इसी सिलसिले में आप इदिरा को देख सकेंगे। आपको छ सप्ताह तक ही हिंदुस्तान से वाहर रहना पडेगा।

ऐसा लगता है कि रोड्स ट्रस्ट मुझे दक्षिण अफ्रीका भेजना चाहता है, वहा के विश्वविद्यालय तथा अन्य गोष्ठियो मे हिंदुस्तान के इतिहास और राजनीति तथा सस्कृति के वारे मे भापण करने के लिए। ऐसा इसलिए कि मैंने ट्रस्टवालो से कह दिया है कि दक्षिण अफ्रीका के दृष्टि-

कोण से हिंदुस्तानी भावना को चोट पहुच रही है। मै वृद्ध हो चला हू, बहुत थक-थका गया हू और मेरा दिमाग भी साथ नही दे रहा। यदि मुझसे हिंदुस्तान की सेवा हो सकती है तो मै जाऊगा, हालाकि दक्षिण अफ्रीका से मुझे भय लगता है—वह दुनिया में सबसे ज्यादा बदहुकूमत का मुल्क है। लेकिन मै तो एक सेवक-भर हू और अब अवस्था ऐसी नही रही कि कोई दूसरा काम कर सकू। यदि आप ऑक्सफोर्ड आयें तो मै कुछ अधिक सेवा करने का प्रयत्न कर सकूगा और उन अज्ञानियो और असभ्यो के सामने हिंदुस्तान के लिए बोल सकूगा, और मै भी कोई बुरा राजदूत नही हू।

मुझे मालूम हुआ है कि गे विट आपके साथ है। मुझे इस बात का दु ख है कि उसके बारे में आपसे मैंने कुछ अप्रिय बातें कह दी। मुझे ऐसा करना नही चाहिए था। वह भला आदमी है। सिर्फ वह बडा उलझा-उलझा और रहस्यमय लगता है। उसकी आवाज मुझे नही भाती। उससे मेरे मन में खिन्नता पैदा होती है। उसपर कृपा बनाये रखें, मेरी तरफ से प्रायश्चित्त के रूप में ही सही।

'मैनचेस्टर गार्जियन' और 'टाइम एण्ड टाइड' के लिए दो लेख लिखे है। मैंने कई राजनीतिज्ञो और हाउस के कुछ लोगो से बातचीत की है। लौटने के बाद से भूत की तरह काम किया है, इसलिए मेरे बारे में यथासम्भव दयापूर्वक सोचिये। मै बुरा नही चाहता, और ऐसी बात नही कि कोई अंग्रेज मूर्ख नही हो सकता और, कोई काम करवा सकना विशेष रूप से कठिन रहा है।

मै अपनी दो कितावें भेज रहा हू। इन्हें पढकर आपको खिन्नता होगी। लेकिन आपने तो मागी थी। मेहरबानी करके मेरे देश के बारे में निराश न होइये। हममें से कुछ लोग हिंदुस्तान के लिए यथाशक्ति काम कर रहे है और अपनी त्रुटियो के बावजूद हम अन्य कुछ राष्ट्रो से अच्छे ही है। अब भी इंग्लैंड में बहुत-सी बातें है और वे अच्छी है।

आपका,

एडवर्ड टामसन

हरकोई हिंदुस्तान के बारे में सचाई जानना चाहता है। मैनचेस्टर

चैम्बर ऑव कामर्स और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से लेकर कामन्स-सभा और कट्टरपथी विद्वानो की सोसाइटिया तक मुझे फोन पर और पत्रो द्वारा निमत्रण-पर-निमत्रण दे रहे है। ऐसे समय मे हिंदुस्तान जानेवाला हू। यह मेरी बेवकूफी ही तो है। इसी बुधवार को कुछ ससद-सदस्यो के सामने मै फिर भाषण करनेवाला हू।

'मैनचेस्टर गार्जियन' के लिए मैने तीन लेख तैयार किये थे, जो अब नही मिल रहे। इसमें कोई शक नही कि आगथा हैरिसन या मेनन ने वे लेख आपके या गाधीजी के पास भेज दिये।

ए टा.

२८८ महादेव देसाइ के नाम

९ दिसम्बर १९३९

प्रिय महादेव,

तुम्हारा ५ ता का पत्र मिला। जाकिर हुसैन ने बापू को जो सुझाव दिया है उससे मै बिल्कुल सहमत नही हू। सवाल यह नही है कि हम मुस्लिम लीग को खास तरह की मान्यता दें। इसके बहुत दूर तक जानेवाले नतीजे है और इसमे काग्रेस के तमाम बुनियादी सिद्धान्तो को छोड देने की बात है। इसका अर्थ काग्रेस को छिन्न-भिन्न कर देना होगा।

तुमने जिन्ना का नया बयान जरूर देखा होगा। राजनैतिक झूठ और बेहयाई की भी हद होती है, लेकिन सारी मर्यादाओ का उल्लघन कर दिया गया है। मेरी समझ में नही आता कि मै अब जिन्ना से मिल भी कैसे सकता हू। दो ही दिन हुए मैने उन्हें लिखा था कि मै जल्दी ही बम्बई जानेवाला हू और तब उनसे मिलने की मुझे आशा थी। कल से मैने इस मामले पर काफी विचार किया है और मैने उन्हें दूसरा पत्र भेजने का निश्चय किया है, जिसकी नकल बापू की जानकारी के लिए साथ में है।

स्टैफर्ड क्रिप्स यहा आये हुए है और कल दिल्ली और लाहौर के लिए रवाना हो रहे है। वहा से वह बबई और वर्धा जायगे। फिलहाल वह १७ ता की सुबह रविवार को वर्धा पहुचेंगे। वहा दो दिन ठहरेंगे। मुझे ये तारीखें पसन्द नही है, क्योकि ये बापू के मौन और कार्यसमिति के साथ टकराती है। वे वहा १८ और १९ ता को जाते तो कही अच्छा रहता।

यह क्रिप्स के भी अधिक अनुकूल होता ।

क्रिप्स हेली, शुस्टर, फिनलेटर, स्टीवर्ट और जेटलैण्ड से लबी वातचीत करते रहे है। मेरा खयाल है वह हैलीफैक्स से भी मिले है। उन्होने इन लोगो के सामने कोई प्रस्ताव किया, जिसका उनके कथनानुसार अच्छा असर हुआ, हालाकि किसीने अपने-आपको उसके लिए वाधा नही। मैंने यह प्रस्ताव देखा है। उसमें कुछ वाछनीय पहलू है। लेकिन मेरे खयाल से उसमें दो-तीन घातक दोष है। मै वापू के लिए बाद में तुम्हे शायद नकल भेजू, लेकिन मै चाहता हू कि तुम उसे विल्कुल गुप्त रखो।

मै वता दू कि जहा क्रिप्स विल्कुल सीधे है और उनकी योग्यताए असदिग्ध है, वहा उनके निर्णय पर हमेशा भरोसा नही किया जा सकता।

शायद मै १३ ता के आसपास ववई जाऊगा।

श्री महादेव देसाई, सप्रेम तुम्हारा,
सेगाव। जवाहरलाल

२८९ मोहम्मद अली जिन्ना के नाम

इलाहावाद
९ दिसम्वर १९३९

प्रिय जिन्ना,

दो दिन हुए मैंने आपको एक खत भेजा था और यह खवर दी थी कि मेरा ववई जल्दी ही जाने का इरादा है और वहा आपसे मिलने की उम्मीद रखी थी। कल सुवह अखवारो में मैंने आपका वयान पढा, जिसमें २२ दिसम्वर निजात का दिन मुकर्रिर किया गया है। उस दिन इस वात पर अल्लाताला का शुक्रिया अदा किया जायगा कि आखीर काग्रेस सरकारो का कामकाज वन्द होगया। मैंने इस वयान को कई मर्तवा वहुत गौर से पढा है और इस मामले पर चौवीस घटे तक गहराई से सोचा है। इस खत में मुद्दो, खयालो या नतीजो के वारे में किसी वहस में पडने का मेरा काम नही है। आपको इनके वारे में मेरे खयाल मालूम है। ये मैंने पूरी ईमानदारी और सच्चाई जानने की इच्छा से वनाये है। मुमकिन है, मेरी गलती हो, लेकिन मैंने ज्यादा रोशनी की खोज की, पर वह अभी मिली नही।

मगर कल से जो चीज मुझे वुरी तरह सता रही है वह यह अहसास

हैं कि जिंदगी और सियासत दोनो में कीमतो और मकसदो की हमारी समझ में बहुत बडा फर्क है। हमारी बातचीत के बाद मैंने यह उम्मीद की थी कि वह फर्क इतना ज्यादा नही है, लेकिन अब तो खाई पहले से भी चौडी मालूम होती है। इन हालात में मैं नही समझता कि हमारे सामने जो मसले हैं, उनकी आपस में चर्चा करने से कोई फायदा होगा। चर्चा के फायदेमद होने के लिए कोई ऐसी जमीन और मकसद होने चाहिए, जिनपर आम रजामदी हो सके। मैं समझता हू कि आपके तईं और खुद अपने तईं मेरा फर्ज है कि यह मुश्किल आपके सामने रख दू।

आपने दिल्ली में मुझे एक खत दिखलाया था, जो आपको बिजनौर से मिला था। मैंने उस मामले की जाच की तो मुझे खबर मिली कि आपको मुद्दे जिस तरह से बताये गए वे सही नही हैं और बिल्कुल गुमराह करने-वाले हैं। अगर जो कुछ हुआ उसकी आप सफाई चाहें तो मैं आपके लिए बिजनौर से मंगा सकता हू। इसके लिए मैं चाहता हू कि आपने जो खत मुझे दिल्ली में दिखाया था, उसकी नकल मुझे भिजवा दे।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

मि मोहम्मद अली जिन्ना

२९०. मोहम्मद अली जिन्ना की ओर से

बम्बई
१३ दिसम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे आपका ९ दिसम्बर का खत मिला। अखबारो में आपके दौरो के प्रोग्राम को देखकर मैं समझ नही पा रहा था कि आपको अपना जवाब कहा भेजू। हाल की खबर के मुताबिक आप १४ दिसम्बर को बम्बई पहुच रहे हैं, इसलिए मैं आपके बम्बई के पते पर यह खत भेज रहा हू। मैं आपसे पूरी तरह एकराय हू कि "चर्चा के फायदेमद होने के लिए कोई ऐसी जमीन और मकसद होने चाहिए, जिनपर आम रजामदी हो।" इसी वजह से

दिल्ली में पिछली अक्तूबर मे मि गाधी और आपसे मेरी जो बातचीत हुई थी, उसमें मैंने दो बाते साफ कर दी थी पहली बात यह कि जबतक काग्रेस मुस्लिम लीग को हिन्दुस्तान के मुसलमानो की पक्की और नुमाइदा जमात मानने को तैयार नही है, तबतक हिन्दू-मुस्लिम-समझौते की बात चलाना मुमकिन नही है। ऑल इडिया मुस्लिम लीग की वर्किंग कमेटी ने इस बातचीत के लिए यही बुनियादी शर्त रखी है। दूसरी बात यह है कि काग्रेस वर्किंग कमेटी की तजवीज में, जिसपर १० अक्तूबर १९३९ को ऑल इडिया काग्रेस कमेटी ने भी मोहर लगाई है, जिस ऐलान की माग की गई है, वह अव्वल तो साफ नही है, न अमल में आनेवाली है और फिर जबतक अकलियत के मसले में हममें आपस में कोई समझौता न हो जाय तबतक हम उस माग की तसदीक नही कर सकते। मुस्लिम लीग को भी वाइसराय के ऐलान से तसकीन नही है। यदि खुशनसीबी से हम हिन्दू-मुस्लिम सवाल को तय कर लें तो हम ऐसी हालत में आ जायगे कि एकराय से दरमियानी शक्ल निकाल सके और इस बात की माग करें कि हिज मैजिस्टी की सरकार इसका ऐसी शक्ल में ऐलान करे, जिससे हम सबको तसल्ली हो। दिल्ली में मि गाधी को या आपको न तो मेरा पहला सुझाव मजूरी के काबिल लगा, न दूसरा, लेकिन आपने मेहरबानी करके ख्वाहिश जाहिर की कि आप मुझसे फिर मिलना चाहेंगे और मैंने यह कहा था कि मै हमेशा खुशी से आपसे मिलूगा। आपके पहली दिसबर के खत के जवाब में, जिसमें आपने मुझसे बबई में मिलने की ख्वाहिश जाहिर की है, मैंने आपको इत्तिला दी थी कि मै दिसम्बर के तीसरे हफ्ते तक बम्बई में रहूगा और आपसे मिलकर मुझे खुशी होगी, और मै सिर्फ यही कह सकता हू कि अगर आप इस मामले की बातचीत को आगे बढाना चाहते है तो मै आपके अख्तियार मे हू। आपने बिजनौर के वाकये की तरफ जो इशारा किया है, उसके बारे में मुझे यकीन है कि आप मुझसे एकराय होगे कि उसके बारे में किसी नतीजे पर पहुचने से पहले उसकी पूरी-पूरी अदालती जाच होनी चाहिए। सिर्फ एक वाकये पर बहस करना हमारे लिए बेकार है, क्योंकि मै जिस नतीजे पर पहुचा हू, उसके हिसाब से आईन के मुकम्मल अमल और काग्रेस सरकार के खिलाफ हमारे इलजामो की शाही कमीशन के जरिए पूरी-पूरी

जाच होनी चाहिए ।

आपका,
एम. ए. जिन्ना

२९१ मोहम्मद अली जिन्ना के नाम

वम्बई
१४ दिसम्बर १९३९

प्रिय जिन्ना,

आपके १३ दिसम्बर के खत के लिए शुक्रिया। वह मुझे आज दोपहर यहा पहुचने पर दिया गया। मैंने आपको इलाहावाद से आखिरी खत मुसलमानो की तरफ से "निजात और शुक्रिया अदा करने के दिन" को मनाये जाने के बारे में आपके बयान को पढने और उसपर पूरा गौर करने के बाद भेजा था। उस वयान से मुझे वहुत तकलीफ हुई थी, क्योकि उससे मैंने महसूस किया कि अवाम के मसलो के बारे में हमारे नजरिये में खाई वहुत बडी है। इस बुनियादी फर्क को देखते हुए मैंने सोचा कि चर्चा के लिए आम रजामदी की जमीन क्या है और मैंने अपनी मुश्किल आपके सामने रक्खी। वह मुश्किल अब भी है।

आपने अपने खत में दो और इब्तिदाई शर्तों पर जोर दिया है, जिनके बाद ही चर्चा के लिए आम रजामदी की जमीन पैदा हो सकती है। पहली शर्त यह है कि काग्रेस को यह समझना होगा कि मुस्लिम लीग हिंदुस्तान के मुसलमानो की पक्की और नुमाइदा जमात है। काग्रेस ने लीग को हमेशा मुसलमानो की बहुत असरवाली जमात समझा है और इसी वजह से हमारे वीच में जो भी फर्क हो, उन्हें निपटाने के लिए हम ख्वाहिशमद रहे है। लेकिन शायद आपका कहना इससे कुछ ज्यादा है और उसमें यह वात शामिल है कि जो मुसलमान लीग में नही है उन्हें हम किसी-न-किसी तरह रद्द करदें या उनसे नाता तोड दें। आप जानते है कि काग्रेस में मुसलमान वड़ी तादाद में है और वे हमारे वहुत नजदीकी साथी रहे है और है। मजदूर-सघो और किसान-सभाओ के अलावा जमीयत-उल-उलेमा, ऑल इडिया शिया कान्फ्रेंस, मजलिसे ऐहरार, ऑल इडिया-

मोमिन कान्फ्रेंस, वगैरा मुस्लिम जमाते है, जिनके बहुत-से मुसलमान मेंबर हैं। आम तौर पर इन जमातो और आदमियो में से बहुतो ने वही सियासती मच अपना लिया है, जो काग्रेस मे हमने अपनाया है। हम उनसे ताल्लुक नही तोड सकते और न किसी तरह अपनापन छोड सकते हैं।

आपने कई मौको पर ठीक ही बताया है कि काग्रेस हिंदुस्तान में हरेक आदमी की नुमाइदगी नही करती। बेशक, नही करती है। मुसलमान हो या हिन्दू, वह उन लोगो की नुमाइदा नही है, जो उससे एकराय नही है। आखिरी तौर पर देखे तो वह अपने मेंबरो और हमदर्दों की ही नुमाइदा है। यही बात मुस्लिम लीग की भी है। इसी तरह और कोई जमात भी अपने ही मेंबरो और हमदर्दों की नुमाइदगी करती है। लेकिन एक बहुत बडा फर्क यह है कि जहा काग्रेस के आईन के मुताबिक जो उसके मकसद और तरीको को मजूर करते है उन सबके लिए उसकी मेंबरी खुली है, वहा मुस्लिम लीग का दरवाजा सिर्फ मुसलमानो के लिए खुला है। इस तरह आईन की रू से काग्रेस की मुल्की बुनियाद है और वह अपनी खुदी मिटाये बगैर उस बुनियाद को नही छोड सकती। आप जानते है कि हिन्दू महासभा में बहुत-से हिन्दू है, जो हिन्दू होने के नाते इस खयाल के खिलाफ है कि काग्रेस उनकी नुमाइदगी करे, और फिर सिक्ख और दूसरे लोग भी है, जो दावा करते है कि फिरकेवारान मामलो पर गौर होने के वक्त उनकी बात सुनी जानी चाहिए।

इसलिए मुझे अदेशा है कि अगर आपकी यह मर्जी है कि और सब जमातो को छोडकर हम मुस्लिम लीग को ही मुसलमानो की नुमाइदा जमात समझें तो हम इसे बिल्कुल मजूर नही कर सकते। इसी तरह यह भी हकीकत के खिलाफ होगा कि हम काग्रेस जमात के इतने बडे होने के बावजूद काग्रेस के लिए ऐसा ही दावा करें। लेकिन मै यह कहूगा कि जब दो जमातें एक-दूसरे के साथ निपटती है और आपसी दिलचस्पी के मसलो पर गौर करती है तब ऐसे सवाल नही उठा करते।

आपका दूसरा मुद्दा यह है कि मुस्लिम लीग ब्रिटिश सरकार की तरफ से कोई ऐलान होने की काग्रेस की माग की ताईद नही कर सकती। मुझे यह जानकर तकलीफ होता है, क्योकि इसका मतलब यह हुआ कि फिरकेवारान सवालो के अलावा खालिस सियासी बुनियाद पर भी हमारे

नजरियो में फर्क है। काग्रेस की माग असल में यह है कि लडाई के मकसद बता दिये जाय और खास तौर पर हिंदुस्तानी आजादी का ऐलान कर दिया जाय और हिदुस्तानियो का यह हक मान लिया जाय कि वे बाहरी दखलदाजी के बिना खुद अपना आईन तैयार कर लें। अगर मुस्लिम लीग इसपर राजी नही होती तो इसका मतलब यह है कि हमारे सियासी मकसद बिल्कुल अलग-अलग है। काग्रेस की माग नई नही है। वह काग्रेस के आईन की पहली कलम में मौजूद है और पिछले कई सालो से हमारी पालिसी की बुनियाद उसीपर रही है। मै तो यह सोच भी नही सकता कि काग्रेस इसे कैसे छोड सकती है या बदल सकती है। मै खुद तो उसे बदलने की किसी भी कोशिश की पूरी मुखालफत करूगा। लेकिन यह निजी मामला नही है। ऑल इडिया काग्रेस कमिटी की एक तजवीज है, जिसकी हिंदुस्तानभर में हजारो मीटिंगो ने ताईद की है और मै उसे हर्गिज नजरन्दाज नही कर सकता।

इस तरह यह दिखाई देता है कि सियासी नजरिये से हमारी कोई रजामदी की जमीन नही है और मकसद भी जुदा है। इससे भी चर्चा मुश्किल और बेकार हो जाती है। जिस वजह से मैने आपको पिछला खत लिखा, वह अभी मौजूद है, यानी आपके सुझाव के मुताबिक मुसलमानो की तरफ से निजात का दिन मनाया जाना मुमकिन है। इससे ज्यादा अहमियत रखनेवाले और दूर तक जानेवाले सवाल पैदा होते हैं, जिनमें इस वक्त मेरे जाने की जरूरत नही है। लेकिन उनका असर तो हम सबपर पडता ही है। फिरकेवारान मसले के बारे में इस नज़रिये का मेल उसे हल करने की कोशिश के साथ नही हो सकता।

इसलिए मेरा खयाल है कि इस मौके पर, इस हालत में और इस बुनियाद के साथ हमारे मिलने से कोई फायदा नही होगा। लेकिन मै आपको यकीन दिलाना चाहता हू कि काग्रेस और लीग के बीच फिरकेवारान या दूसरे मसलो पर खुली और साफ चर्चा करने के लिए हम हमेशा तैयार है।

बिजनौर के वाकये के बारे में आपने जो कहा वह मेरे खयाल में है। हमारी यह बदकिस्मती रही है कि इकतरफा ढग से इल्जाम लगाये जाते

लेकिन उस ऐलान की वुनियाद को ही चुनौती देना यह जाहिर करना है कि सियासी नजरिये और पालिसियो में वडा फर्क है। इसका हिन्दू-मुस्लिम-सवाल से कोई वास्ता नही है। इसीकी वजह से मै महसूस करता हू कि हमारे सियासी मकसदो में आम रजामदी की वात वहुत थोडी है।

मै फिर कह दू कि जहातक मुझे मालूम है, हमारी तरफ से कोई भी मुस्लिम लीग के हक, असर और अहमियत को न चुनौती देता है, न उसे कम मानता है। इसी वजह से हम उसके साथ मामलो की चर्चा करने और हमारे सामने जो सवाल हैं उनका तसल्लीवख्श हल निकालने के लिए तैयार रहे है। वदस्किमती से हम इन सवालो की ठीक-ठीक चर्चा तक भी कभी नही पहुच पाते, क्योकि पहले से शर्तें लगाकर हम अपने रास्ते में वहुत-सी रुकावटें और अडचनें पैदा कर लेते है। मैं आपको वता चुका हू कि इन शर्तों का दूर तक जानेवाला असर होता है। मैं नही समझता कि क्यो उनकी वजह से हमारी सारी तरक्की रुके या हम इन मसलो पर गौर न कर सके? इन अडचनो को हटाकर सवाल से ही भिड जाना मुश्किल नही होना चाहिए। लेकिन चूकि ये अडचनें बनी रहती हैं और दूसरी उनमें जोड दी जाती है, इसलिए मजबूरन मेरा खयाल होता है कि असली दिक्कत सियासी नजरिये और मकसदो में फर्क की है।

फिलहाल २२ दिसम्वर को सारे हिंदुस्तान में किये जानेवाले मजाहरे के फैसले ने ज़हनी रुकावट पैदा कर दी है, जिससे आपस में मिलकर चर्चा करना नामुमकिन है। इसका मुझे वहुत ही अफसोस है और मै दिल से चाहता हू कि आप इस रुकावट को ज़रूर दूर कर दें, क्योकि इससे आपस में मनमुटाव ही पैदा हो रहा है और हो सकता है। मुझे अब भी उम्मीद है कि आप ऐसा कर सकेगे।

मै आपको यकीन दिलाना चाहता हू कि अपनी तरफ से मै कोई कोशिश उठा नही रखना चाहता, जिससे आपस में समझौता और निपटारा हो सके। लेकिन आप मुझसे नही चाहेगे, जैसे कि मै आपसे नही चाहूगा कि किसी भी वात के लिए दिमागी ईमानदारी और मकसद की सचाई को छोडा जाय। उससे कुछ खास हाथ भी नही लग सकता। मेरे कुछ गहरे

सियासी खयालात है और मैंने कई वरसो से उनके मुताबिक कसकर काम किया है। मै उन्हे किसी भी हालत में नही छोड सकता और इस वक्त जब दुनिया एक जबर्दस्त मुसीबत की तकलीफो में फसी है, तब तो उन्हे हर्गिज नही छोडा जा सकता।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

२९४ महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
२८ दिसम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मै चीनी पत्र सुरक्षित रखूगा।

मुक्ति-दिवस को 'टाइम्स ऑव इडिया' में पूरे पृष्ठ का विज्ञापन मिला है। परन्तु सच यह है कि सब जगह उसका कोई असर नही हुआ दीखता।

फजलुल हक का अभियोग-पत्र तुमने पढा है ? इसके बारे में कुछ भी कहना या करना नही चाहिए ?

तुमने मुझे कुमारप्पा के पत्र नही भेजे, जिनपर तुमने सख्त एतराज किया था। वह यहा है। मैने उनसे पूछा तो वह कहते है कि हाल में तो उन्होने कुछ नही भेजा। तुम्हारे पास जो कुछ हो, जरूर मेरे पास भेज दो।

प्यार,

बापू

२९५. एडवर्ड टामसन के नाम

इलाहाबाद
५ जनवरी १९४०

प्रिय एडवर्ड,

मुझे खबर लगी है कि आपके छोटे भाई का कुछ दिन पहले इतकाल

हो गया। मुझे यह सुनकर बडा रज हुआ, क्योकि यह मै समझ सकता हू कि इससे आपपर कैसी गुजरेगी। अपने पिछले खत में आपने उनकी बीमारी का जिक्र किया था और कहा था कि उनके लिए वहुत कम आशा है। इस बुरी खबर के कारण मुझे आपके खत का जवाव देने में झिझक हो रही है।

कल की डाक में आपकी दो पुस्तकें 'जान आर्निसन' और 'कलेक्टेड पोयम्स' मिली। मुझे बहुत खुशी है कि आपने ये पुस्तकें, खास तौर पर कविताए, भेजी। आप चक्कर तो और मैदानो में भी लगाते है, फिर भी जाहिर है कि आप कवि ही है।

अखबारो में मै आपके कुछ पत्र और लेख भी पढता रहा हू। वे मुझे पसन्द आये। आप जव यहा आये उस समय जो स्थिति थी, उससे असल मे स्थिति अव जुदा नही है, अलवत्ता वहुत-सी घटनाए हो चुकी है। आपने जिन्ना के 'मुक्ति-दिवस' की वात सुनी होगी। उन्होने किसी भी तरह के मुनासिब रवैये को नामुमकिन वना दिया है। लेकिन अबकी बार तो उन्होने हद ही कर दी और मुस्लिम हल्को में उससे काफी गुस्सा पैदा हुआ है।

लेसिन से इन्दिरा का पत्र आया है। वह वहा खुश मालूम होती है और वह जगह उसे पसन्द है। डाक्टर ने उससे कह दिया है कि वह तीन महीने के भीतर उसे खूब तन्दुरुस्त बना देना चाहते है। इससे उसमें खूब उत्साह आगया है।

आपने सेना की जिस कठिनाई का जिक्र किया है वह तो है ही, हालाकि मेरे खयाल से वह उतनी महत्वपूर्ण नही है, जितनी आप बताते है। पजाव से सेना को करीब ५२ फीसदी आदमी मिलते हैं और मुझे बताया गया है कि हिन्दुस्तान-भर में मुसलमानो का अनुपात लगभग ३२ फीसदी है। मुझे पता नही कि ब्रिटिश साम्राज्य समान राष्ट्रो के किसी वडे गुट में, दुनिया के सयुक्त राज्यो में, शामिल हो जायगा या नही, लेकिन अगर आपका पुराना सपना सही होता हो तो मुझे वडी खुशी होगी। यह बहुत अच्छी बात होगी कि आपके सुझाव के अनुसार यात्री-ट्रस्ट जैसी कोई चीज हिंदुस्तान के मामले में दिलचस्पी ले। आपका

दूसरा प्रस्ताव यह है कि मैं आपको किसी ऐसे हिंदुस्तानी विद्वान का नाम सुझाऊ जो किसी हिंदुस्तानी ऐतिहासिक अथवा साहित्यिक विषय पर व्याख्यानमाला दे सके। लगे हाथो कोई नाम सुझाना तो मुश्किल है। वैसे एक नाम सूझ रहा है, डा ताराचन्द का। पता नही, आप उन्हे जानते है या नही। कुछ साल हुए वह ऑक्सफोर्ड मे थे और वहा से उन्होंने इतिहास के किसी विषय पर डॉक्टरेट ली थी। इस वक्त वह यहा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। वह हिंदुस्तानी तरीख के मुगल-काल के खास जानकार है और खास तौर पर इस बात के कि इस्लाम और हिन्दू-धर्म का एक-दूसरे पर क्या असर और क्या प्रतिक्रिया हुई और कैसे उन्होने एक तरह का समन्वय पैदा करने की वृत्ति रखी। कुछ दिन हुए उन्होने इतिहास-परिषद् के सामने इस विषय पर एक बहुत अच्छा निबन्ध पढा था।

प्रोफेसरो वगैरा के साथ मेरा अपना परिचय कुछ सीमित-सा है और यह बिल्कुल सभव है कि बेहतर आदमी इधर-उधर हो।

मैंने रोड्स-स्मारक-व्याख्यान के बारे मे आपके सुझाव को ध्यान से सुना है। मै आपसे सलाह लूगा और अचानक इन्कार नही करूगा। इस सम्मान और प्रतिष्ठा के बारे में जो कुछ आपने कहा है, उस सबकी मै कद्र करता हू और हम सबको इन दोनोका लालच है। लेकिन आप शायद विश्वास नही करेंगे कि मै जरा शर्मीला आदमी हू और नये क्षेत्रो में घुसने का साहस करने से सकोच करता हू। फिर भी मै अपना दिमाग खुला रखूगा और देखूगा कि हालात क्या शक्ल लेते है। हममें से कोई अगले चन्द महीनो में क्या करनेवाला है, यह कहना कठिन है। कई कारणो से मै इग्लैण्ड और शायद अमरीका जाना बहुत पसन्द करूगा। मुझे हमेशा महसूस होता है कि हिंदुस्तान के लिए हिंदुस्तान के बाहर मै ज्यादा उपयोगी हो सकता हू। यह भावना कि मै यहाके लिए पूरी तरह योग्य नही हू, मेरे पीछे लगी हुई है और मेरे उत्साह को मन्द करती है।

साथ में दो चित्र है, जिनसे आपको इलाहाबाद की याद आती रहेगी।

ऐलेन लेन चाहती है कि मै हिंदुस्तान की मौजूदा परिस्थिति पर एक पैंग्विन पुस्तक लिखू । इस तरह का काम असल में आपका है, मेरा नही। मुझे पूरी तरह मालूम नही कि इसके बारे में मुझे क्या करना चाहिए। लिखने को मेरे लिए समय निकालना बहुत कठिन है ।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

डॉ एडवर्ड टामसन
सॉण्डर्स क्लोज, व्लेडलो,
एलसवरी, इग्लैण्ड

२९६. जे. होम्स स्मिथ के नाम

[जे. होम्स स्मिथ एक अमरीकी पादरी थे ।] मेरठ

१० जनवरी १९४०

प्रिय श्री होम्स स्मिथ,

मुझे आपका १ जनवरी का पत्र इलाहाबाद से मेरी रवानगी से थोडी देर पहले मिला । मुझे उत्तर में यह पत्र भेजकर खुशी हो रही है और मुझे यह आशा है कि अमरीका के मित्रो के साथ सम्पर्क करने और वहा के आपके साथियो को सदेश देने का मकसद इस पत्र से सिद्ध हो जायगा ।

हिंदुस्तान की आजादी के काम के लिए आपके महान उत्साह का और अमरीका में इस काम को बढाने के लिए कुछ-न-कुछ करने की आपकी इच्छा का मैंने स्वागत किया है । इसके कारण आपको लालबाग-आश्रम से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने में सकोच नही हुआ । मुझे आशा है कि अमरीका में हमारे मित्रो और हमदर्दों तक आप हमारे अभिनन्दन पहुचा देंगे । जहा हम पूरी तरह समझते है कि हिंदुस्तान की आजादी की लडाई हिंदुस्तान में ही चलानी और जीतनी पडेगी, वहा हम अमरीका के लोगो की नेक राय और सहानुभूति को भी बहुत बडा महत्व देते है । ससार में आज उनका सबसे बलशाली लोकतत्र है और वे विश्व के मामलो के पुनर्निर्माण मे निस्सदेह प्रमुख भाग अदा करेंगे । चूकि हम खुद हिंदुस्तान में एक लोकतत्री स्वतत्र राज्य के आदर्श के भक्त है और

उसके लिए बधे हुए है, इसलिए हम बहुत-सी बातो में कुदरती तौर पर अमरीका की तरफ देखते है। मुझे साफ मालूम होता है कि उस वक्त तक ससार की समस्याओ का उचित निपटारा नही हो सकता, जबतक कि उस निपटारे में हिदुस्तान और चीन को भी शामिल नही किया जाता और उनके साथ स्वतत्र राष्ट्रो का-सा बर्ताव नही किया जाता। कुदरती तौर पर हम अपने लिए आजादी मागते है। लेकिन हमने साफ कर दिया है कि हम नई विश्व-व्यवस्था के पक्ष में है और ससार के मामलो को ऐसा रूप देने में हिंदुस्तान खुशी से सहयोग देगा। यह काम शान्ति, स्वतत्रता और लोकतत्र के आधार पर ही सतोषजनक रूप में किया जा सकता है। इसलिए यह निहायत जरूरी हो जाता है कि हिंदुस्तान और चीन में आजादी और लोकतत्र होना चाहिए, नही तो कोई सतोष-जनक राजनैतिक अथवा आर्थिक निपटारा नही होगा और वर्तमान सतुलन का अभाव और सघर्ष बना रहेगा। जाहिर है कि हिंदुस्तान और चीन के वास्तविक और सभावित दोनो तरह के जबरदस्त साधनो को विश्व के मामलो में महत्वपूर्ण भाग अदा करना चाहिए।

फिलहाल हमें हिंदुस्तान की आजादी पर सारी शक्ति लगानी होगी। लेकिन हम इसे ससार के व्यापक हित की दृष्टि से देखने की कोशिश करते है और ऐसा करने में हम अनिवार्य रूप से अमरीका का विचार करते है। आपको मालूम है कि यूरोप की लडाई के बारे में हमने क्या रवैया अख्तियार किया है। हमने फासिस्ट और नाजी सिद्धान्त का हमेशा विरोध किया है और सब तरह के हमलो की निन्दा की है। यदि हमें विश्वास हो जाता कि मौजूदा जग एक ओर आजादी और दूसरी ओर नाजीवाद के बीच सघर्ष है तो हम खुशी से अपना वजन आजादी के पक्ष में डाल देते। लेकिन हमने ब्रिटिश सरकार से युद्ध के उद्देश्यो को बताने और हिंदुस्तान को आजाद मुल्क समझने के लिए जो अनुरोध किया उसमें हमें मुह की खानी पडी और हमसे साफ तौर पर कह दिया गया कि यह लडाई असल में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की रक्षा के लिए है। इस उद्देश्य के लिए हम अपने मनुष्यो और साधनो का उपयोग होने देना मजूर नही कर सकते। अगर हम नाजीवाद के खिलाफ है तो साम्राज्यवाद के भी विरुद्ध

है। यह लडाई जिस तरह इस समय लडी जा रही है उससे वह हमें दो प्रतिद्वद्वी साम्राज्यो के बीच का सघर्ष मालूम होता है और हम तबतक उसमें शरीक नही हो सकते जबतक यह साफ नही कर दिया जाय कि इसका उद्देश्य स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र है। यह सफाई हिंदुस्तान के साथ होनेवाले वर्ताव से ही हो सकती है। हमारी माग सीधी-सादी है, हालाकि उससे बुनियादी सवाल खडे होते है। हम चाहते है कि हिंदुस्तान की आजादी की घोषणा कर दी जाय और बाहर के किसी हस्तक्षेप के बिना सविधान-सभा के द्वारा अपना सविधान तैयार करने का हिंदुस्तानियो का अधिकार मान लिया जाय। यदि ऐसा कर दिया जाय तो हमारा खयाल है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद और दूसरे साम्राज्यवादो की भी सारी रचना में कायापलट हो जायगी और स्वय साम्राज्यवाद मिट जायगा।

हम चाहते है कि अमरीका के लोग, हमने जो रवैया अपनाया है, उसे समझें, क्योकि हमें विश्वास है कि उसे समझ लेने के बाद एक ऐसे पक्ष के लिए, जिसमें उनका अवश्य विश्वास होगा, उनकी सहानुभूति और सद्भावना अपने-आप हो जायगी।

मै चाहता हू कि यह सदेश आप हमारे अमरीका मित्रो के पास ले जाय। आप जानते है कि हिदुस्तान में वर्तमान स्थिति बहुत अस्थिर है और किसी भी समय गभीर घटनाए हो सकती है। घटनाए कुछ भी हो, हम इन उद्देश्यो पर कायम रहेगे और उनकी प्राप्ति के लिए लडते रहेगे।

हमारी आजादी के रास्ते में अल्पसख्यको की समस्या को बाधक बताया गया है। लेकिन दरअसल ऐसा नही है क्योकि लोकतन्त्र, आजादी और हिंदुस्तानी एकता की मर्यादाओ के भीतर हम हिंदुस्तान के अल्पसख्यको को जो भी गारन्टी सोची जा सकती है, वह देने को तैयार है।

आपके और आपके साथियो के लिए शुभकामनाए।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

श्री जे होम्स स्मिथ
आश्रम लालबाग,
लखनऊ

२९७. महात्मा गाधी के नाम

२४ जनवरी १९४०

प्रिय बापू,

आपने मुझसे मोलोटोव के युद्ध-सबधी भाषण के बारे में सेगाव मे पूछा था और मैंने जवाब मे कुछ कहा था, जो अस्पष्ट-सा था। मोलोटोव के भाषण के बाद बहुत-सी घटनाए हुई है और स्थिति बहुत कठिन हो गई है। मेरे अपने मन में कोई शका नही है कि फिनलैण्ड के मामले मे रूस ने बहुत बेजा कारंवाई की है और इसके लिए उसे भुगतना पडेगा। परन्तु इससे भी अधिक चिन्ता की बात हमारे लिए यह है कि इग्लैण्ड, फ्रास और जर्मनी की लडाई के पीछे वास्तव में जो कुछ हो रहा है, वह यह है कि रूस से लडने के लिए साम्राज्यवादी और फासिस्ट शक्ति मजबूत हो। अब यह पहले से भी अधिक स्पष्ट हो गया है कि लडाई दोनों तरफ से खालिस साम्राज्यवादी दुस्साहस है। १९१४ की तरह राजनीतिज्ञ सुन्दर भाषा का प्रयोग कर रहे है। मुझे यह बहुत महत्वपूर्ण और जरूरी मालूम होता है कि इस भाषा से और नेक बातो से हमें धोखे में नही आना चाहिए। इनसब बातो का हिंदुस्तान में हमारी अपनी स्थिति और ब्रिटिश सरकार के साथ की बातचीत से गहरा ताल्लुक है। सरकार का उद्देश्य उनकी लडाई के लिए हमारा सद्भाव प्राप्त करना है। मौजूदा हालात में हिंदुस्तान का सवाल छोड दें तो भी मेरी समझ में नही आता कि हम एक साम्राज्यवादी युद्ध को अपना नैतिक समर्थन क्यो दें? अलबत्ता, अगर ब्रिटेन हिंदुस्तान के प्रति अपना रवैया बुनियादी तौर पर बदल ले और हमारी आजादी को मान ले तो इसका ही मतलब यह हो जायगा कि उसके साम्राज्यवाद में अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन होगया है। परन्तु अधिक सभावना यह मालूम होती है कि बुनियादी तौर पर यह साम्राज्यवाद बना रहेगा और उसकी खातिर लडाई जारी रहेगी, हालाकि हालात से मजबूर होकर हिंदुस्तान के बारे में कुछ अस्पष्ट घोषणाए की जाती है। यह कहा जायगा कि इन घोषणाओ पर भी युद्ध के अन्त में अमल किया जायगा। मुझे हमारे लिए यह स्थिति बहुत खतरनाक दिखाई देती है, क्योकि हम चाहे या न चाहे

हम अग्रेजो की साम्राज्यवादी नीति का समर्थन करने के लिए फस जायगे और कई तरह के बुरे कामो में शरीक हो जायगे। इसलिए मेरा खयाल है कि हमें बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए और बिल्कुल साफ कर देना चाहिए कि हम युद्ध के इन साम्राज्यवादी उद्देश्यो का समर्थन नही करेंगे ।

जैसा मैंने ऊपर बताया है कि स्थिति जल्दी ही बहुत ज्यादा पेचीदा हो सकती है, अगर पश्चिमी शक्तिया रूस के विरुद्ध गतिमान हो जाय और इटली के साथ उनका षड्यन्त्र सफल हो जाय। वे इसे साम्राज्य के विरुद्ध धर्मयुद्ध बतायेंगे और उसकी आड में न केवल अपने साम्राज्य को मजबूत करने की कोशिश करेंगे, बल्कि सोवियत रूस के समाजवादी राज्य को भी छिन्न-भिन्न कर देंगे। रूसी नीति के साथ हम सहमत हो या न हो, यह हर नुक्तेनिगाह से एक आफत होगी। मेरी आपसे प्रार्थना है कि इस बात को ध्यान में रखें और हिंदुस्तानी वार्ताओ को इस दृष्टि से देखें।

आप देखेंगे कि आपके लेखो में एक-दो आशावादी शब्दो के प्रयोग और उत्तर प्रदेश के गवर्नर के आनन्दभवन मे आने जैसी छोटी घटनाओ से हर जगह यह असाधारण असर पडा है कि ब्रिटेन के साथ किसी-न-किसी तरह का निपटारा हो रहा है और काग्रेसी मन्त्रिमडल जल्दी ही फिर पदारूढ हो जायगे। जिन्ना हमारी आजादी का मजाक उडाकर इससे फायदा उठा रहे है। मुस्लिम लीग को अपना सर जरा उठाने का मौका मिल जाता है और हमारे पत्र-सपादक तो हमेशा की तरह गलत व्यवहार करते ही है। इन सब बातो से हिंदुस्तान और इग्लैण्ड दोनो में जनता के मन पर गलत असर होता है। इससे समझौते की सभावना भी बहुत कम हो जाती है। फिर भी यही होगा कि वाइसराय शिकायत करेगा कि उसे गुमराह किया गया। 'पायनियर' ने यह शीर्षक लगाया है—"काग्रेस मन्त्रिमडलो के त्यागपत्र एक धोखाधडी", इत्यादि। हर जगह पूछा जा रहा है कि पर्दे के पीछे क्या हो रहा है ? हर जगह किसी बडी और आकस्मिक घटना की आशा लगी हुई है।

इनसब बातो का हकीकत से और वर्तमान परिस्थिति से मेल नही बैठता। इतना ही नही, किसी भी तरह की दिमागी या दूसरी तैयारियो,

के लिए गलत वातावरण पैदा होता है ।

मुझे खुद को तो यकीन है कि निपटारे की कोई वास्तविक सभावना नही है, हालाकि ब्रिटिश सरकार बेशक उसे पसन्द करेगी । लेकिन जो हमारी कम-से-कम माग है, उसे वे माननेवाले नही है । आज ब्रिटिश सरकार पहले से कही ज्यादा प्रतिक्रियावादी और साम्राज्यवादी है और उससे हमारी बात मान लेने की आशा रखना ऐसी बात की आशा रखना है, जो इस स्थिति में हो नही सकती । झूठी आशाए पैदा करना इन्साफ और मसलहत दोनो के खिलाफ है और उससे हमारी स्थिति कमजोर भी हो सकती है । मेरा सुझाव है कि दूसरे पहलू पर जोर देना अधिक न्याय-पूर्ण है ताकि दूसरा पक्ष ठीक-ठीक जान सके कि क्या मामला है और वह उसके अनुसार अपनेको बना ले ।

महात्मा गाधी

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

२९८ महात्मा गाधी के नाम

निजी

इलाहाबाद
४ फरवरी १९४०

प्रिय बापू,

आप कल दिल्ली पहुचेंगे और ऐसा मालूम होता है कि आप एक सप्ताह या अधिक वहा ठहरनेवाले है । मुझे पता नही कि वहा क्या घट-नाए होगी और हममें से किसीको बुलाने की आपको जरूरत हो सकती है या नही । मै खुद तो नही समझता कि ऐसा होने की जरा भी सभावना है, क्योकि मुझे सरकार के रवैये में रत्तीभर भी फर्क दिखाई नही देता । जो हो, मै आपको खबर देना चाहता था कि अगले दो सप्ताहो में दिल्ली जाने का विचार करना मेरेलिए बहुत ही कठिन है । मेरा यह सारा समय पूरी तरह भरा हुआ है । आज रात को मै दो दिन के लिए लखनऊ जा रहा हू । ७ ता को एक दिन के लिए इलाहाबाद आऊगा और ८ ता की सुबह बम्बई के लिए रवाना हो जाऊगा । वहा मुझे योजना-समिति

की महत्वपूर्ण बैठको में शरीक होना है, जो मैंने कुछ मामलो पर विचार करने के लिए खास तौर पर बुलाई है। अगर मै वहा नही गया तो सारी बैठक का काम बिल्कुल गडवड और वेकार हो जायगा। वम्बई में मैं ९ ता की सुवह से १२ ता की रात तक रहूगा। १२ ता की रात को लखनऊ के लिए रवाना हो जाऊगा। १४, १५ और १६ ता को प्रान्तीय काग्रेस और प्रतिनिधियो की सभाओ के लिए लखनऊ में रहूगा। वाद के दो दिन, मुझे आशा है, वडी सभाओ के लिए गोरखपुर में होऊगा। अगले दो सप्ताह के लिए फिलहाल मेरा यह कार्यक्रम है।

पिछले महीने में जो घटनाए हुई है, उन सबसे मेरा यह विश्वास पक्का हुआ है कि इस आशा के लिए जरा-सा भी कारण नही है कि ब्रिटिश सरकार हमारी स्थिति को स्वीकार कर लेगी। असल में बहुत-सी घट-नाए ऐसी हुई है, जिनसे साफ जाहिर होता है कि वे लोग एक बहुत निश्चित साम्राज्यवादी नीति पर चल रहे है। आपने देखा होगा कि ब्रिटिश ससद ने अभी एक बिल पास किया है, जिसमें 'गवर्नमेंट ऑव इडिया एक्ट' में सुधार करके कर लगाने के वारे मे प्रान्तीय सरकारो के अधिकार सीमित कर दिये है। यह खास तौर पर उत्तर प्रदेश के सम्पत्ति-कर को ध्यान में रखकर किया गया है। इस तरह वह कर उठा दिया गया। ऐसे फैसले में यह दोष तो है ही कि वह प्रान्तीय विधान-सभा के अधिकारो को कम कर देता है। इसके अलावा उसके लिए जो समय और तरीका चुना गया वह ब्रिटिश सरकार के साम्राज्यवादी दृष्टिकोण का प्रमाण है और इससे जाहिर होता है कि उस दृष्टिकोण में कोई परि-वर्तन नही हुआ।

पता नही, आपका ध्यान रॉयल सैन्ट्रल एशियन सोसायटी द्वारा सगठित लदन के हाल एक के सामाजिक समारोह की तरफ आकर्षित किया गया है या नही। लार्ड ज़ेटलैंड सभापति थे और कई मन्त्रिमडल के मत्री मौजूद थे। जाहिरा मकसद तो लदन में मुस्लिम सस्कृति और धर्म का एक केन्द्र स्थापित करना था, पर असली मकसद इस्लामवाद के प्रचार को वढावा देना और हिदुस्तान में इस भावना का दुरुपयोग करना और इस्लामी देशो में युद्ध के मित्र-राष्ट्रो को लाभ पहुचाना था।

यह असाधारण बात है कि किस तरह लडाई सच्चे साम्राज्यवादी ढग पर बढ रही है और किस तरह घटनाए दोहराई जा रही है।

इन सब बातो का इस धारणा के साथ मेल नही बैठता कि इग्लैण्ड अपने साम्राज्य को समेटने की तैयारी कर रहा है, न यह देखकर तनिक भी प्रोत्साहन मिलता है कि वाइसराय से मुलाकात करने के लिए आपके नेतृत्व में फिर लोगो का एक जलूस बनाया जा रहा है। वही पुराना खेल फिर खेला जा रहा है, पृष्ठभूमि वही है, विविध उद्देश्य वे ही है, पात्र वे ही है और परिणाम भी वही होना चाहिए।

किन्तु कुछ दुर्भाग्यपूर्ण अप्रत्यक्ष परिणाम भी है। देश में आनेवाले समझौते का वातावरण फैला हुआ है, जबकि वास्तव में उसके लिए कोई कारण नही है। वह कमजोर करनेवाला और हिम्मत तोडनेवाला है, क्योकि वह ताकत से पैदा नही हुआ है, परन्तु कई आदमियो के मामले में तो किसी भी तरह सघर्ष से बचने और सत्ता के जो छिछडे हमारे पास पहले थे, उन्हे फिर से प्राप्त करने की अत्यधिक लालसा से पैदा हो रहा है। सघर्ष अवाछनीय तो है, परन्तु जाहिर है कि वह हर कीमत पर नही टाला जा सकता, क्योकि कभी-कभी टालना खुद ही एक निहायत महगा और हानिकारक मामला होता है। लेकिन अभी तो सघर्ष का कोई तात्कालिक प्रश्न नही है। सवाल है हमारी अपनी स्थिति को शान के साथ कायम रखने का और उसे किसी तरह कमजोर न करने का। मुझे अदेशा है कि इग्लैण्ड और हिंदुस्तान दोनो में यह असर व्यापक रूप में फैला हुआ है कि हम किसी भी हालत में कोई सघर्ष नही करेंगे और इसलिए हम जो भी शर्तें हमें प्राप्त हो जायगी उन्हे स्वीकार कर लेंगे। इस प्रकार का खयाल हमें साहसहीन बनाता है। मैंने पिछले पखवारे में देखा है कि हमारे काग्रेस के प्रतिनिधियो के चुनावो पर भी इसका असर पडा है। बहुत लोग जो सघर्ष की सभावना के डर से पीछे-पीछे रह रहे थे अब फिर आगे आ गये है, क्योकि पद और सत्ता के आनद भोगने की सभावना उन्हे फिर सामने दिखाई दे रही है। अवाछनीय लोगो को काग्रेस से बाहर रखने का कई महीनो का प्रयत्न कुछ असफल होगया, क्योकि हिंदुस्तान के वातावरण मे इस आकस्मिक परिवर्तन के कारण

उन्हे विश्वास होगया कि समझौता होनेवाला है।

ब्रिटिश सरकार भाषा चाहे नरम काम में ले, परन्तु उसकी प्रतिक्रिया भी हमारे प्रतिकूल हो रही है। अवश्य ही वह हमारे साथ समझौता करना चाहती है, क्योकि उसे युद्ध में हमारा समर्थन चाहिए। लेकिन यह बहुत निश्चित है कि वह जरा-सी भी वास्तविक सत्ता छोडना और हमसे समझौता करने के लिए अपनी बुनियादी साम्राज्यवादी नीति को बदलना नही चाहती। साम्प्रदायिक सवाल पर वह अपना पुराना षड्यत्र जारी रख रही है और रखेगी, भले ही कभी-कभी वह काग्रेस को तसल्ली देने के लिए मुस्लिम लीग के विरुद्ध कुछ आलोचना के शब्द इस्तेमाल करती है। जहातक उसका सबध है, वह अपनी वर्तमान स्थिति को ज्यो-की-त्यो रखते हुए हमे अपने पक्ष में करने की कोशिश करेगी। यह सभव हो तो उसके लिए बहुत अच्छा है। यह नही होता है, जैसाकि उसे भी दीखता है, तब वह समय-समय पर हिंदुस्तानी नेताओ से बातचीत करती रहेगी, मामले को अधिक वक्त तक खीचेगी, यह दिखायेगी कि हम समझौते के किनारे पर आ गये है और इस प्रकार ससार और हिंदुस्तान दोनो के लोकमत को शान्त रखेगी। उनके दृष्टिकोण से इस दूसरी नीति में यह लाभ और है कि वह हमारी शक्ति को थका देगी और हमें ठडा कर देगी, ताकि यदि अत मे सघर्ष आ ही जाय तो उसके लिए जरूरी वातावरण न रहे। इग्लैण्ड के सरकारी हलको में यह आम विश्वास है कि बातचीत करने और उन्हें स्थगित कर देने की उनकी नीति का यह परिणाम हुआ है और काग्रेस-मत्रिमडलो के इस्तीफे के समय हिंदुस्तान में जो स्थिति खतरनाक मालूम होती थी, वह अब बहुत आसान होगई है और खतरो का कोई अदेशा नही रहा।

मुझे ऐसा मालूम होता है कि जहा हम सघर्ष को जल्दी नही ला सकते और नही लाना चाहिए और जहा हमें किसी सभव और सम्मानपूर्ण समझौते के लिए दरवाजा बद कर देने की आवश्यकता नही, क्योकि आपके तरीके में दरवाजा कभी बद नही किया जाता, वहा हमें यह भी बहुत साफ कर देना चाहिए कि हमारी पहले बताई हुई शर्तों के अलावा और किसी तरह न समझौता हो सकता है, न होगा। सच तो यह है कि इन

हालात का भी लडाई की घटनाओ के दृष्टिकोण से थोडा-सा सिंहावलोकन करना पडेगा । जैसा हमने पहले कहा था, वैसा अब नही कह सकते कि हम यह जानना चाहते हैं कि यह युद्ध साम्राज्यवादी है या नही । हमे ब्रिटिश सरकार ने जो उत्तर दिया है वह और लडाई मे और विदेशी मामलो में उसकी नीति बराबर पूरी साम्राज्यवादी रही है । इसलिए हमें जरूर इस माने हुए तथ्य के आधार पर चलना पडेगा कि यह एक साम्राज्यवादी युद्ध है, चाहे दावा इसके विरुद्ध कुछ भी किया जाय । युद्ध और ब्रिटिश-नीति दिन-दिन अधिकाधिक अपशकुनवाली होती जा रही है, और मै हर्गिज नही कहूगा कि हिंदुस्तान किसी भी तरह उस साम्राज्यवादी दुस्साहस में फसे, क्योकि इससे हिंदुस्तान को न केवल भौतिक वल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी हानि ही हो सकती है । आज मुझे यह मुद्दा बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण दिखाई देता है ।

इस तरह मुझे मालूम होता है कि हमें सबसे महत्वपूर्ण काम यह करना है कि हम ससार के, ब्रिटिश सरकार के और हिंदुस्तानी जनता के सामने अपनी स्थिति बिल्कुल साफ कर दें । समझौते के इस मुद्दे पर बहुत ज्यादा गलतफहमी है और यह गलतफहमी बिल्कुल हमारे विपरीत और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अनुकूल है, क्योकि वह हमारे साधनो का युद्ध के लिए दुरुपयोग कर रहा है और यह वहाना भी कर रहा है कि उसे हमारा बहुत सद्भाव प्राप्त है । ब्रिटिश सरकार या वाइसराय के पास हमारे जाने से वे गलतफहमिया बढती है और ब्रिटिश सरकार सही समझौते से और भी दूर हटती है ।

राजगोपालाचारी के कुछ हाल के भाषणो से मुझे दु ख हुआ है, क्योकि उनमें औपनिवेशिक दर्जे और इसी तरह की बहुत ही समझौते की-सी बातें है । काग्रेस बहुत-सी आवाजो में वोलती है और आश्चर्य नही कि इसका नतीजा गडबड और परेशानी हो । कम-से-कम आजादी के सवाल पर तो एक ही आवाज निकलनी चाहिए ।

मैंने आज आपपर दो लम्बे पत्र थोप दिये है, जिसके लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हू ।

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

महात्मा गाधी,
नई दिल्ली

२९९. अबुल कलाम आजाद के नाम

इलाहाबाद
२२ फरवरी १९४०

प्रिय मौलाना,

कुछ मुद्दे है, जो गौर के लिए आपके सामने रखना चाहता हू। कल स्टेशन पर हमें कोई चर्चा करने के लिए बहुत कम वक्त मिला।

१ जबसे लडाई शुरू हुई, ब्रिटिश सरकार की सारी पालिसी से यह साबित होता है कि वे लोग जानबूझकर और बराबर साम्राज्यशाही ढग पर चल रहे है। लडाई से पहले चैम्बरलेन-सरकार बिल्कुल प्रतिक्रियावादी मशहूर थी और कई मौको पर उन लोगो ने फासिस्ट और नाजी ताकतो को बढावा दिया और यूरोप में जमहूरियत को कुचला। अबीसीनिया, स्पेन, आस्ट्रिया, चैकोस्लोवाकिया और अल्बानिया के मामले में यह साफ होगया। मचूरिया में भी उनकी पालिसी इसी किस्म की थी। इग्लैण्ड में १०० साल से ज्यादा के दौरान में मि चैम्बरलेन की सरकार सबसे ज्यादा प्रतिक्रियावादी और साम्राज्यशाही सरकार हुई।

लेकिन जब उनकी अपनी सल्तनत को खतरा पैदा हुआ तब उन्होंने जमहूरियत की पनाह ली और लडाई शुरू कर दी। यह यकीन करना मुश्किल था कि वे लोग अचानक जमहूरी बन गये है। बाद की घटनाओ ने बता दिया है कि उनकी पुरानी पालिसी बिल्कुल नही बदली है और सच तो यह है कि अब और भी तेजी के साथ उसके पीछे चला जा रहा है। फर्क इतना ही है कि वे हिटलर को हटाना चाहते है, क्योकि वह उनकी सल्तनत के लिए खतरा बन गया है। यह पुरानी पालिसी यूरोप और दूर पूरब और अमरीका में भी तमाम प्रतिक्रियावादी तत्वो

को बढावा देने की और रूस को कमजोर बनाने की कोशिश की थी, क्योंकि रूस इन तमाम प्रतिक्रियावादी तत्वो के लिए और साम्राज्यशाही के लिए भी चुनौती के तौर पर खडा था। जहा एक तरफ बढती हुई नाजी ताकत के डर की वजह से वे कभी-कभी मदद के लिए रूस की तरफ देखते थे, वहा रूस के लिए और बढती हुई जमहूरियत के लिए उनकी नापसदगी इतनी ज्यादा थी कि वे रूस के साथ किसी भी तरह हाथ नही बटा सकते थे। इसलिए आखिरी वक्त तक उन्होने हिटलर और मुसोलिनी के तई खुश रखने की पालिसी बरती और इस तरह उनकी ताकत बहुत बढाई। उनका मकसद यह था कि हिटलर को सोवियत रूस के खिलाफ लडाई में फसाकर अपने दो खास दुश्मनो को इस तरह कमजोर बनाया जाय। वे किसी भी हालत में नही चाहते थे कि जर्मनी या इटली में तरक्कीपसद हुकूमत हो।

इस तरह वे खेल खेलते रहे। आखिर में रूस ने महसूस किया कि उस हालत में उसके लिए बडा खतरा था और चूकि उसे ब्रिटिश पालिसी के खिलाफ पूरा शक था, इसलिए उसने नाजी जर्मनी के साथ समझौता करके उस पालिसी को बिगाडने की कोशिश की। इससे इस वक्त तो ब्रिटिश तजवीजें गडबड होगईं।

अग्रेजी पालिसी बुनियाद में सोवियत के खिलाफ बनी रही और यह अजीब बात है कि आज भी जब इग्लैण्ड की जर्मनी के साथ लडाई है तो ब्रिटिश सरकार जर्मनी के मुकाबले रूस के कही ज्यादा खिलाफ है। उनका मकसद जर्मनी में किसी-न-किसी तरह की भीतरी तबदीली कराने का है, जिससे हिटलर के बजाय जर्मनी के फौजी नेताओ के हाथ में बागडोर आ जाय और फिर उनके साथ सुलह कर ली जाय। इसके बाद इग्लैंड, फ्रास, जर्मनी और दूसरे मुल्को का रूस पर मिला-जुला हमला हो। यह घटना होगी या नही, कहना मुश्किल है। लेकिन बात यह है कि ब्रिटिश पालिसी लडाई के पहले और बाद में बराबर प्रतिक्रियावादी और साम्राज्यशाही रही है, चाहे उनके ऐलान कुछ भी हो।

२ रूस ने कई भूलें की है और मेरे खयाल से उसका फिनलैंड पर हमला करना खास तौर से बहुत गहरी भूल थी, उसूल और मसलहत

दोनो की नजर से। यह सच है कि इग्लैण्ड फिनलैंड को रूस के खिलाफ साजिश की जगह और रूस पर हमला करने के लिए कूदने के मच के तौर पर इस्तेमाल कर रहा था। रूस इस घटना की वात से डर गया और उसने फौरन हमला करके पेशबन्दी करने की कोशिश की। यह बडी वेवकूफी का काम था और वह इग्लैण्ड और फ्रास के हाथो में खेल गया और साथ ही दुनियाभर की तरक्की-पसद राय उससे खिलाफ होगई। इससे इग्लैण्ड को यह ढोग करने का मौका मिल गया कि वह जमहूरियत का दोस्त है और उसके पिछले कुछ सालो के पापो को लोग भूल गये। राष्ट्र-सघ ने फासिस्ट और नाजी हमलो की तो कभी चर्चा तक नही की थी, लेकिन रूस की वुराई करने को वह एकदम जाग गया। अब मेरे मन में कोई शका नही है कि रूस की पालिसी हाल में गलत रही है और उसकी वुराई होनी ही चाहिए, लेकिन साथ ही हमें याद रखना चाहिए कि इस पालिसी की यह शक्ल कैसे बनी। इसकी वजह से यह हुआ कि ब्रिटिश सरकार की तरफ से रूस को घेर लेने की बरावर कोशिश होती रही। अव तो यह बात ज्यादा अहमियत की है कि हम अच्छी तरह समझ लें कि इग्लैण्ड अपने साम्राज्यशाही फायदे के लिए और लडाई को रूस तक फैला देने के लिए फिनलैंड की हालत का नाजायज फायदा उठाने की कोशिश कर रहा है। इसमें हमारे लिए खतरा भरा है, क्योकि अगर इग्लैड और रूस में लडाई हुई तो हमारी अपनी सरहदें उसमें फस जाती है और हमारे लिए अपनी पालिसी के वारे में साफ रहना जरूरी हो जाता है। जहा हमें रूस की बहुत-सी कार्रवाइयो की नुक्ताचीनी और वुराई जरूर करनी चाहिए, वहा यह निहायत खतरनाक बात होगी कि हम ब्रिटिश साम्राज्यशाही को अपने फायदे के लिए उसका फायदा उठाने दें।

मेरे खयाल से यह बडे दु ख की बात होगी कि रूस अपग वना दिया जाय और लडाई की वजह से वह कमजोर होजाय, क्योकि तब तो साम्राज्य-शाही का फकत एक ताकतवर मुखालिफ भी नही रहेगा। लेकिन यह वात छोड दें तो भी कोई चीज जिससे ब्रिटिश साम्राज्यशाही मजबूत होती हो, हमारे लिए खतरनाक है। इसलिए यह बहुत अहम वात है कि हम अपने दिमाग मे रूस के तई ब्रिटेन की मौजूदा पालिसी के वारे में साफ रहे

और यह ऐलान कर दें कि हम उसके खिलाफ है और रूस के खिलाफ ब्रिटिश कार्रवाई की हम किसी भी हालत में ताईद नही कर सकते और न उसे पसद कर सकते है। मेरे खयाल से हम पालिसी साफ जाहिर कर दें तो उसका असर पडेगा। अगर ब्रिटेन यह सोचता है कि जो कुछ वह करता है उसे हिंदुस्तान बहुत ऐतराज किये विना मान लेगा तब तो यह बिल्कुल मुमकिन है कि लडाई फैल जाय और रूस उसमे फस जाय। इसके नतीजे हमारी अपनी हिंदुस्तानी सरहद के लिए क्या होगे, यह सोचने की वात है। दूसरी तरफ अगर इग्लैड यह महसूस करता है कि उसकी तरफ से रूस पर हमला होने के खिलाफ हिंदुस्तान में जबरदस्त ऐतराज है और ऐसी किसी भी पालिसी की हिंदुस्तान में मुखालफत होगी तो इग्लैड दूसरे हलको में इस लडाई को फैलाने से पहले बहुत हिचकिचा सकता है। इस वक्त ब्रिटिश सरकार इस पसोपेश में है कि उसे क्या करना चाहिए। वह रूस पर हमला करना चाहती है, लेकिन नतीजो से डरती है। अगर उसे भरोसा होजाय कि हिंदुस्तान में उससे अमन हो जायगा तो वह हमला कर देगी, नही तो हाथ रोक लेगी। इसलिए इस मामले में हमारे रवैये की अहमियत है और उसे ज्यादा-से-ज्यादा सफाई और मजबूती के साथ जाहिर कर देना मुनासिब है।

३ इग्लैड और फ्रास में जो कुछ हो रहा है, उससे सावित होता है कि ये मुल्क कितने ज्यादा प्रतिक्रियावादी होते जा रहे है। फ्रास में आज फौजी तानाशाही है और लोगो की आजादी पूरी तरह दवा दी गई है। बीसो पार्लमेंट के मेंवर वहा गिरफ्तार कर लिये गए है,क्योकि सरकार को उनके खयालात पसद नही है। इसी वजह से कई सौ म्यूनिसिपैलिटिया खत्म कर दी गई है। इग्लैड में वात यहातक तो नही वढी है, लेकिन रवैया वही है। अमली तौर पर इग्लैड और फ्रास की सरकारे ज्यादा-से-ज्यादा फासिस्ट वनती जा रही है, हालाकि वे वात जमहूरियत की करती है। वे लडाई के मकसदो के वारे में कोई भी वात कहने से इन्कार करती है और १९१४ की तरह उनका साफ मकसद है कि अपनी-अपनी सल्तनतो की जड मजवूत कर लें और अपने मुकावले की सल्तनतो को और अपनी सल्तनतो के भीतर और वाहर की तमाम तरक्की-पसद ताकतो को कमजोर कर दें। सितम्वर में काग्रेस ने ब्रिटिश सरकार के सामने जो सवाल रखा उसका

जवाव साफ-साफ ब्रिटिश पालिसी और फ्रेंच पालिसी ने दे दिया। वह जवाब यह है कि वे साम्राज्यशाही की तरफ है और उसे कायम रखने के लिए लड रहे है। अब हम तो फासिस्म और नाजीशाही की बुराई करते है और हिटलर लडाई में जीत गया तो वुरा होगा। हम यह नही चाहते। इसके मुकावले ब्रिटिश साम्राज्यशाही की जीत का मतलव यह है कि चैम्वर-लेनशाही जारी रहेगी और पहले से ज्यादा मजबूत हो जायगी। यह भी उतना ही वुरा है और उससे बरावर लडाइया होती रहेंगी। इसलिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय हरेक नजरिये से हमारे लिए ऐसी जीत में किसी भी तरह मदद देना बेवकूफी होगी। इस वजह से इग्लैड और हिंदुस्तान के बीच के हिंदुस्तानी मसले के किसी अन्दरूनी हल की बात छोड दी जाय तो भी यह साफ हो जाना चाहिए कि हम ब्रिटिश सल्तनत को महफूज रखने के लिए किसी साम्राज्यशाही लडाई में अपनी ताकत नही लगायेंगे।

४ इस्लामशाही फिर किस तरह से पैदा होकर उठ रही है, यह भी आपने देखा होगा। इसकी वजह महज यहा की मुस्लिम लीग या दूसरी जमातें ही नही है। वुनियादी तौर पर इसकी वजह यह है कि ब्रिटिश सरकार उसे बढावा देना चाहती है। १९१४ में और बाद में इस्लामशाही साम्राज्य की मुखालफत करनेवाली ताकत थी। उसने ब्रिटिश सरकार की लडाई की कोशिश को कमजोर किया और बाद में हिंदुस्तान के खिलाफत-आन्दोलन की बुनियाद को ही वदल दिया। आज भी वही खयाल ब्रिटिश साम्राज्य-शाही की हिमायत में इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे किसी हद तक हिंदुस्तान का कौमी मोर्चा भग होता है और नजदीकी पूरब के मुस्लिम अवाम की राय पर इगलैंड के हक में असर पडता है। तुर्की का इग्लैंड के लिए दोस्ताना ताकत होना भी इस मामले में ब्रिटिश पालिसी को मदद पहुचाता है। मुझे मालूम नही कि ब्रिटिश प्रोपेगैण्डा का मुस्लिम मुल्को में क्या असर हुआ ह, लेकिन मैं यह वताना चाहता हू कि इस्लामशाही के नये दौर की शुरुआत पक्के तौर से साम्राज्यशाही है।

५ इन सब बातो से साबित होता है कि किस तरह हमारे अपने सव अन्दरूनी मसलो का, चाहे वह फिरकेवारान मसला हो चाहे आजादी का वडा मसला हो, लडाई के वडे सवालो और ब्रिटेन की गैरमुल्की पालिसी

के सवालो के साथ गहरा ताल्लुक है। अगर हम हिंदुस्तान को अलग समझें तो भूल करते हैं। फिरकेवाराना मसले की खास मुश्किलें ब्रिटिश सरकार के मौजूदा रवैये की वजह से हैं। अगर मुस्लिम लीग या सिकन्दर हयात राजी हो जाय तो भी उसे हल करना हमारे लिए बहुत मुश्किल हो जाता है। जरूर ही ब्रिटिश सरकार हिंदुस्तानी मसले का हल चाहती है ताकि वह लडाई में अपनेको मजबूत बना सके और अपनी साम्राज्यशाही की जड जमा सके। सिकन्दर हयात पूरी तरह ब्रिटिश पालिसी के हक में काम कर रहा है, इसलिए वह भी वही बात करना चाहता है। लेकिन बुनियादी तौर पर इस पालिसी का दारोमदार ब्रिटिश साम्राज्यशाही की ताकत बढाने पर है। दूसरी तरफ हमारी पालिसी साम्राज्यशाही को कमजोर करने पर मुनहसिर है। यह बुनियादी फर्क है जो समझौता नही होने देता और वाइसराय के साथ या मुस्लिम लीग के साथ कितनी ही बातचीत कर ली जाय, यह दिक्कत उस वक्त तक दूर नही होगी जबतक कि ब्रिटिश सरकार खुद अपनी साम्राज्यशाही छोडने को तैयार नही हो जाती। वर्किंग कमेटी के १४ सितम्बरवाले बयान में उससे इसी कुरबानी की माग की गई थी। ऐसा करना तो बहुत दूर रहा, ब्रिटिश सरकार ने अपनी साम्राज्यशाही पर मोहर लगाई है। हिंदुस्तान के रवैये की बडी अहमियत है, क्योकि उससे अमरीका और दूसरे अलग रहनेवाले मुल्को पर असर पडता है। अमरीका इस वक्त बहुत जोर के साथ हिटलर के खिलाफ और उस खयाल से अंग्रेजो के हक में है। साथ ही इसमें शक नही कि वह ब्रिटिश साम्राज्यशाही के हक में भी नही है और इसलिए वह अंग्रेजो का साथ देने में हिचकिचाता है। अगर अंग्रेज अमरीका को समझा दें कि उन्होने हिंदुस्तान के साथ समझौता कर लिया है तो इससे उन्हें जबरदस्त मदद मिलेगी।

६ पिछले चन्द महीनो में ब्रिटिश सरकार के साथ समझौते के बारे में बातचीत से इतनी गडबड हुई हैं कि हमारे अपने लोग और दुनिया गुमराह हो गई और कोई नही जानता कि क्या होने वाला है। मेरे खयाल मे हमें बिल्कुल साफ कर देना चाहिए कि साम्राज्यशाही को बचाने में हमारे साथ कोई समझौता नही हो सकता और ऐसी तमाम कोशिशें जितनी जल्दी

छोड दी जाय उतना अच्छा है। इस वारे में कोई आखिरी वात हो जानी चाहिए।

७ पिछले चन्द महीनो में हिंदुस्तान में ब्रिटिश पालिसी धीरे-धीरे मनमाने ढग की हुक्मत पर लौट आने की रही है और हिंदुस्तान से वाहर के लोगो को इससे अचरज होता है कि कैसे हमने चुपचाप चैन से इसके आगे सिर झुका लिया है। न सिर्फ चुनी हुई सूवाई सरकारें उखाड दी गई है, वल्कि पार्लमेंट में तरमीमी कानूनो के जरिये सूबाई सरकार का दायरा दरअसल छोटा कर दिया गया है। इस किस्म की चीज वाइसराय के तमाम मीठे लफ्जो से ज्यादा जोर से बोलती है। मामूली तौर पर आईन के महज मुल्तवी होने से ही कडी जद्दोजहद हो जानी चाहिए थी, लेकिन हमने इसे चुपचाप वर्दाश्त कर लिया। हमने तरमीमी कानूनो को भी वर्दाश्त कर लिया। आईन की यह तरमीम, जहातक हमारा ताल्लुक है, अहमियत नही रखती। इससे तो ब्रिटिश पालिसी का झुकाव मालूम होता है। इन सब वातो से पता चलता है कि हमारे और ब्रिटिश सरकार के बीच मे कोई आम रजामदी की चीज नही है और ब्रिटिश साम्राज्यशाही हमेशा की तरह मजबूत हो रही है।

८ जैसा मैंने आपको कल शाम वताया था, मुझे यह बहुत खतरनाक मालूम होता है कि मौजूदा सूबाई विधान-मडलो की बनी हुई सविधान-सभा मान ली जाय। यह वालिग मताधिकार की हमारी वुनियादी माग को छोड देना है। यह माग हम पिछले चार साल से कर रहे है। इसका यह भी मतलब है कि हमारी सविधान-सभा ब्रिटिश साम्राज्यशाही के ढाचे के भीतर होगी। मौजूदा हालात में इससे फिरकेवाराना और दूसरे झगडे पैदा होगे और इस तरह हमारी अपनी कमजोरी का दिखावा किया जायगा और सविधान के बारे में कोई समझौता नही होगा। नतीजा यह होगा कि हमें कुछ छोटी-मोटी तब्दीलियो के साथ १९३५ के कानून के अदर रहकर काम करना होगा। अगर सविधान-सभा को कामयाव होना है तो उसे इस कानून और ब्रिटिश साम्राज्यशाही दोनो के ढाचे के विल्कुल वाहर रहना चाहिए। ब्रिटिश सरकार के साथ हमारे ताल्लुकात के सवाल पर तभी गौर होना चाहिए जबकि सविधान-सभा हमारा सविधान तैयार कर

ले। बालिग मताधिकार की तकनीकी मुश्किल अप्रत्यक्ष चुनाव की बीच की कार्रवाई से दूर की जा सकती है। मुद्दा यह है कि इस सविधान-सभा को हिदुस्तानी अवाम का एक ऐसा हिस्सा माना जाय, जो ब्रिटिश साम्राज्य-शाही और ब्रिटिश पार्लमेंट के दायरे के बिल्कुल बाहर रहकर काम करता हो, नही तो वह ब्रिटिश पार्लमेंट के किसी कानून का पुछल्ला बनकर रह जायगी।

९ मेरे खयाल से यह भी साफ कर देना चाहिए कि नौकरी की मौजूदा शर्तों और कन्ट्रोल वगैरा के रहते हुए हमारी सूबाई सरकारे फिर से काम नही कर सकती। मुझे खुशी है कि पतजी ने इसपर जोर दिया है। सरकार का सारा ढाचा ऊपर से नीचे तक बदलना चाहिए।

मुझे उम्मीद है कि इतना लबा खत लिखने के लिए आप मुझे माफ करेंगे। मेरे दिमाग में और बहुत-से खयाल है, लेकिन अब मुझे खत्म करना चाहिए।

आपका,
जवाहरलाल

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद,
१९ ए बालीगज सर्कुलर रोड,
कलकत्ता।

३०० कृष्ण कृपालानी के नाम

इलाहाबाद
२६ फरवरी १९४०

श्री कृष्ण कृपालानी,
शान्तिनिकेतन, बगाल

प्रिय कृष्ण,

तुम्हारा खत मिला। तुम सुधीर सेन के नाम मेरा पत्र विश्वभारती त्रैमासिक में छाप सकते हो। लेकिन मेरा खयाल है कि ऐल्महर्स्ट के नाम का उसमें जिक्र करना ठीक नही होगा। तुम कह सकते हो कि पत्र किसी अग्रेज़ दोस्त के लिए लिखा गया है। साथ में तुम यह टिप्पणी भी दे सकते हो

"यह साफ तौर से समझ लेना चाहिए कि सम्पूर्ण भारतीय स्वाधीनता

की शर्त अत्यावश्यक है और उसकी चर्चा करने या उसमें मीनमेख निकालने की गुजाइश नही है। जब मैं आजादी की बात करता हू तो यह जरूरी नहीं कि उसका अर्थ ब्रिटेन के साथ अतिम रूप से सबध-विच्छेद कर लेना है। मेरा विचार यह है कि ब्रिटेन साम्राज्यवादी न रहे। इसका अभी या निकट भविष्य में तो कोई लक्षण दिखाई नही देता। सब बातो से यही जाहिर होता है कि ब्रिटिश सरकार पूरी तरह साम्राज्यवादी सत्ता के रूप में ही काम कर रही है और वह अपने साम्राज्य की रक्षा करने और अपने साम्राज्यवाद को मजबूत बनाने पर तुली हुई है। जाहिर है कि किसी भी भावी व्यवस्था में, यदि वर्तमान व्यवस्था को जारी नही रखना है तो, विभिन्न राष्ट्रो में गहरा सहयोग होना चाहिए। विश्व-सघ की आजकल बडी चर्चाए है। ऐसा कोई सच्चा सघ बने तो आजाद हिंदुस्तान कुदरती तौर पर उसका सदस्य बनेगा, लेकिन अगर प्रस्ताव यूरोपियन राज्यो के सघ का अथवा यूरोप, अमरीका और ब्रिटिश उपनिवेशो का सघ बनाने का है तो उसका नतीजा तो यही हो सकता है कि एशिया और अफ्रीका का शोषण करने के लिए साम्राज्यवादी सत्ताओ को मजबूत किया जाय। इससे हम कभी सहमत नही हो सकते।

"सारा मुद्दा यह है कि साम्राज्यवादी रचना के साथ किसी भी तरह बधकर हम हिंदुस्तान के भविष्य का विचार नही कर सकते। अगर हम सविधान-सभा की बात कहते है तो वह कोई ऐसी चीज नही होगी जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ढाचे के भीतर रहे। लेकिन वह उसके बाहर होगी। आपत्ति इगलैड या दूसरे देशो के साथ सहयोग करने पर नही है, लेकिन किसी भी ऐसी रचना के साथ, जो साम्राज्यवादी हो, सहयोग करने पर है।"

उस दिन मैंने एक लम्बा पत्र न्यूयार्क के कुछ फेडरल यूनियनवालो को लिखा था। शायद तुम्हे उस पत्र में दिलचस्पी हो, इसलिए उसकी नकल तुम्हारे लिए भेज रहा हू। अगर तुम चाहो तो उसके अश छाप सकते हो।

तुम्हारी पत्रिका में से लेकर छापी हुई गृह-उद्योगो पर मेरे पत्र की कई नकलें मुझे मिल गईं। नदिता जब यहा आई थी तब मैंने उसके कुछ

चित्र लिये थे । क्या अनिल चदा ने वे तुमको दिखाये या उनकी प्रतिया दी ?

तुम्हारा,
जवाहरलाल नेहरू

३०१ एडवर्ड टामसन की ओर से

एल्सबरी, बक्स
७ मार्च १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

मेरे खयाल में यह पत्र शायद रनजीत को मिलना चाहिए । इसके लिए वास्तव में एक प्रखर बुद्धिवाले पाठक की जरूरत है ।

जानता हू, हिंदुस्तान में एक नदी है, जिसे बाहर के लोग गैंजेज और हिंदुस्तानी गगा कहते है । टेम्स को 'तरल इतिहास' कहा जाता रहा है, गगा भी तरल (बहुत-कुछ) और इतिहास है । मै शायद इस अक्तूबर में फिर हिंदुस्तान आ रहा हू । अक्तूबर से पहले भी आ सकता हू । गगा की फिल्म बनानी है—कैलास से लेकर सागर तक । मुझे बताइये, इसके लिए कुल मिलाकर अच्छा समय कौन-सा ठीक रहेगा । इन बातो को ध्यान में रखना पडेगा १ सुन्दर दृश्यावली । मेरे खयाल में वर्षा का मौसम, जो बाढो के साथ इस दृश्य को उपस्थित करता है, सबसे अच्छा रहेगा २ सुविधा । वर्षा का मौसम खराब रहता है । ३ मेले, जैसे आपके इलाहाबाद का कुम्भ-मेला । लोग सौन्दर्य-गौरव-मडित दृश्यो, मनुष्यो और उनके मेलो की झाकी लेना चाहते है । मेरे खयाल में किराये पर मोटरकार लेकर नदी के किनारे-किनारे चलना सबसे अच्छा रहेगा ।

मैने आपका एक पत्र देखा है जिससे मै प्राय पूरी तरह सहमत हू । एल्महर्स्ट ने मुझे यह पत्र दिखाया था ।

मेरा बडा लडका अब सेना में सेकेण्ड लेफ्टिनेट है और जल्द ही विदेश जाने वाला है । कहा जायगा, यह पत्र में नही बता सकता । ६ महीने में वह २० वर्ष का हो जायगा । छोटा लडका स्कूल में पढता है । मुझे फ्लू हो गया था और अब मेरी पत्नी इससे पीडित है, अन्यथा हम लोग ठीक-ठाक चल रहे है ।

मुझे आशा है कि इंदिरा के समाचार से आप सन्तुष्ट हैं।

आज सुबह मैं प्रसन्नता अनुभव कर रहा हू, अनोखी बात है। सरकार फिलस्तीन के प्रश्न पर दृढ है। मेरे दल के लोगो ने, वामपन्थियो ने, जो अरबो के विरुद्ध और यहूदियो के पक्ष में पागल हो रहे है, जैसे अनैतिकतापूर्ण तर्क पेश किये है, वैसे मैने कभी नही सुने थे। इसके कारण मैं तेजी से 'टोरी' होता जा रहा हू।

हिंदुस्तान आने पर मै टैगोर के शान्तिनिकेतन की भी फिल्म बनाऊगा। आवश्यक जानकारी देकर मेरे मित्र मेरी सहायता कर सकते है। 'मै समझता हू, पटना जैसे स्थानो पर होटल है। लेकिन हरिद्वार अथवा दूसरी छोटी-छोटी जगहो में भी है क्या? यदि हम मोटरकार से गगा के किनारे-किनारे चलें तो हमें कई स्थानो पर ठहरना पडेगा।... बाद को शायद मै रनजीत के साथ उडीसा के जगलो की सैर कर सकू। लेकिन शायद ऐसा होगा नही। जो हो, अगर मै राजी कर सका तो अपनी पत्नी को भी साथ लाने का विचार है।

उनका कहना है कि यह पत्र देकर आपको कष्ट नही देना चाहिए। मेरा भी कुछ ऐसा ही खयाल है। इस पत्र को रनजीत तक पहुचा भर देंगे क्या? मेरे पास उनका पता नही है, सिर्फ नैन का पुराना आफिस का पता है।

आपका,

ए. टा.

३०२ अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता

२७ मार्च १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

जब १५ तारीख को सुबह आपने रेल में मुझे मेरी तकरीर का अंग्रेजी तर्जुमा दिया तो मैंने यह देखने के लिए उसे सरसरी तौर से उलट-पलट लिया कि वह कैसा हुआ है। अब से पहले उसे फुरसत से पढने का मुझे वक्त ही नही मिला था। अब जबकि पहले की बनिस्बत मै कम घिरा हू, मैंने आपके अंग्रेजी तर्जुमे को गौर से पढा। इसने मुझपर जो असर डाला, उसने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं अपनी हस्ब-मामूल खामोशी

को तोडकर आपके ऊचे दिमाग और गैर-मामूली काबलियत की तहेदिल से तारीफ करू । मैंने जितना सोचा था, उससे कही ज्यादा अग्रेजी पर आपका दखल है । मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नही कि हमारे वक्त के चोटी के काबिल लोगो मे से भी बहुत थोडे ऐसे लोग है, जो कई दिनो मे भी इतना बडा काम करने की हिम्मत नही कर सकते, जो आपने चन्द घटो में, बिना किसी खास कोशिश के, कर लिया ।

तर्जुमा करना एक तरह से नई चीज लिखने से कही ज्यादा मुश्किल है । असली मजमून की अदबी शक्ल बनाये रखना और साथ ही तर्जुमे के जरिये लेखक के अदबी तर्ज को जाहिर करना कोई आसान काम नही है । जिस आदमी का दोनो जबानो पर एक-सा काबू है, वही यह काम करने की हिम्मत कर सकता है । आपके तर्जुमे में असली मजमून की कोई भी खासियत बिगडी नही है और आपने अग्रेजी तर्जुमे में मेरे उर्दू के अदबी ढग को इतनी कामयाबी के साथ निबाहा है कि अगर पढनेवालो को ऐसा लगे कि असली तकरीर उर्दू में नही, अग्रेजी में लिखी गई थी, तो मुझे अचरज नही होगा ।

आपके तर्जुमे की एक दूसरी खासियत है तामीरी खयालात की गजब की बुलन्दी, जिसमें से ब्यौरे निकलते हैं। आपने पूरी तरह मेरे उस खयाल को देख लिया, जिसने मेरी तकरीर और जुमलो को यह शक्ल दी है। दर-असल आपने जब तर्जुमा शुरू किया तो जो कुछ मैंने कहा है, उसकी पूरी तस्वीर आपके सामने थी । यकीनन यह बडा मुश्किल काम था, खासतौर पर जबकि मेरे अपने मजमून से आपको कोई सीधी मदद नही मिल सकती थी ।

अग्रेजी तर्जुमे की जरूरत की नजर से कही-कही आपने तर्जुमे में कुछ घटा-बढी करदी है । मैंने इन सब तब्दीलियो को बडे गौर से देखा और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि बाज जगह आपने तर्जुमे को मेरे मजमून से बेहतर कर दिया है । तर्जुमे में कही भी मेरी तकरीर की स्पिरिट और शक्ल में कोई खामी नही आने पाई ।

वाइसराय के ऐलान पर नुक्ताचीनी करते हुए मैंने यह लिखा था

"सफो-पर-सफे पढ जाने के बाद भी बमुश्किल इस कदर बताने

पर मुस्तईद होता है . " अब यहा पर 'बमुश्किल' लफ्ज मैंने मिसाल के तौर पर इस्तेमाल किया था। आपने मेरी मिसाल की शक्ल को बनाये रखते हुए उसके भाव को इस तरह लिखा है

"सफो-पर-सफे पढ जाने के बाद बहुत झिझक के साथ आखिर परदा उठता है। हमें एक झलक मिलती है ।" जो चीज मैं 'बमुश्किल' लफ्ज के जरिये जाहिर करना चाहता था, आपने अपने फैले हुए फिकरे में उसे और जोरदार तरीके से जाहिर किया है। मै यह मजूर करता हू कि आपका तर्जुमा मुझसे कही ज्यादा मौजू है। इस तरह की कई खूबसूरतियो में से यह सिर्फ एक है।

मै शायद ३० तारीख को इलाहाबाद पहुचने की उम्मीद कर रहा हू। मै समझता हू कि तबतक आप इलाहाबाद में ठहरे रहेंगे।

आपका,
अ. क. आजाद

३०३ एडवर्ड टामसन के नाम

इलाहाबाद
७ अप्रैल १९४०

प्रिय एडवर्ड,

आपका ७ मार्च का पत्र मिला। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप अक्तूबर में या जल्दी ही हिंदुस्तान आ रहे है। उस समय आप मुझे कहा पायगे और पा भी सकेगे या नही, इसका मुझे पता नही। परन्तु कुछ भी हो, हिंदुस्तान वही होगा और गगा भी वही होगी।

गगा की फिल्म बनाने का आपका विचार दिलचस्प है। मै इसे अपने से ज्यादा काबिल रनजीत को सौंप रहा हू। लेकिन चूकि मै खुद भी जरा कल्पनाशील हू, इसलिए उसके बारे में कुछ कहना चाहता हू। दुर्भाग्य से रनजीत की तबीयत अच्छी नही है और वह बिस्तर में है। लेकिन मैंने इसका जिक्र उनसे किया और उन्हे इस बारे में काफी उत्साह हुआ। लेकिन उनके दिमाग में विचारो की बाढ आ गई और जो कुछ मै नीचे लिख रहा हू, वह कुछ उनकी तरफ से भी आया है।

चूकि गगा इतिहास है, इसलिए ऐतिहासिक पहलू प्रकट होना चाहिए। गगा का परम्परा, पुराण, कला, सस्कृति और इतिहास के साथ गहरा सबध है। आप उसे हर जगह सामने आती हुई पायगे। इस विषय की काफी चर्चा करना बहुत बडा काम होगा। लेकिन कुछ भी हो, इतिहास और परम्परा के पहलू की उपेक्षा नही की जा सकती। अध-विश्वास के पहलू पर जोर देने की जरूरत नही है। फिर भी हिंदुस्तान के पुराण और कला को समझने के लिए गगा के पौराणिक उद्गम का जिक्र किया जा सकता है, यानी यह दिखाया जा सकता है कि गगा शिव की जटाओ से गिर रही है। जटा से मतलब हिमालय पर्वत से है। मेरे खयाल से इसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसको चित्रित करनेवाले कुछ प्रसिद्ध स्थापत्यो की नकल कर दी जाय। ऐसे अनेक स्थापत्य है।

फिर कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक दृश्य दिखाये जाने चाहिए। मिसाल के तौर पर आर्यों का आना और उनका पहले-पहल गगा पर पहुचना और इस शानदार नदी को देखकर खुश होना। सर मुहम्मद इकबाल के मशहूर गीत "सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा" की दो प्रसिद्ध पक्तिया हैं। उनमें आर्यों के आने का उल्लेख है। चित्र में इन पक्तियो का लाना अच्छा रहेगा। पक्तिया ये.है

ऐ आबरूदे गंगा वह दिन है याद तुझको
उतरा तेरे किनारे जब कारवा हमारा।

पाकिस्तान-आन्दोलन के इन दिनो में यह ध्यान देने की वात है कि मुसलिम लीग के एक नेता ने इस वारे में क्या कहा था।

और फिर वहुत-सी लडाइया भी गगा के आसपास हुई हैं। चद्रगुप्त मौर्य के काल में यूनानी आक्रमण गगा के पास ही कही रोका गया था, शायद इलाहावाद से दूर नही था। चद्रगुप्त के समय के जीवन को दिखाने-वाला चित्र बढिया रहेगा। उस समय कन्नौज वडा शहर था। वहा की वनी हुई चीजें, खास तौर पर तलवारें और फौलाद के हथियार मशहूर थे। मेरे खयाल से सिकदर के हमले का वयान करनेवाले शाहनामे में भी और सोहराब व रुस्तम के वर्णनो में भी कन्नौज की तलवारो का जिक्र आता है।

इससे पहले रामायण और महाभारत की कथाए गूथी जा सकती

है । बाद में अशोक के काल और उसके साथ गगा पर स्थित उसकी विशाल राजधानी पाटलिपुत्र का जिक्र हो सकता है ।

भारतीय साहित्य में गगा का जिक्र भरा पडा है और आपको उसके नाम का जिक्र बर्मा, हिन्द-चीन और दूसरी जगहो पर भी मिलेगा । हर्ष के समय के चीनी यात्री ह्यूनसान ने इलाहाबाद के कुभ-मेले का वर्णन किया है, जो उस समय भी प्राचीन उत्सव था । अवश्य ही असख्य ऐति-हासिक घटनाए है, जिनको लिया जा सकता है। गगा की घाटी और खास तौर पर दोआबा, अर्थात् गगा और जमुना के बीच का इलाका इतिहास और परम्परा तथा गीतो से भरा पडा है । अगर आप बहुत सुन्दर और शालीन नदी जमुना को लें तो आपको मथुरा और वृन्दावन के चारो ओर सारी कृष्ण-लीला और ब्रजभाषा के मधुर गीत मिल जाते है ।

इस लेखे-जोखे के लिए कोई निश्चित समय सुझाना मुश्किल है । जाडो मे गगा सकरी हो जाती है और अनेक स्थानो पर देखने लायक नही रहती । ठीक समय वर्षा ऋतु का रहेगा । लेकिन बडे मेले अधिकतर सरदी के दिनो में होते हैं । उनमें सबसे बडा इलाहाबाद का कुभ है, जो १२ साल में एक मर्तबा होता है । आपका सौभाग्य है कि यह कुभ अगले साल जन-वरी और फरवरी मे पड रहा है ।

मुझे मालूम नही कि आप गगा के उद्गम गगोत्री तक पहुच सकते है या नही । यह मुश्किल यात्रा है और रेल के बाद आपको उसमें एक पखवाडा लग सकता है । ज्यादातर यात्रा घोडे पर करनी पडेगी, क्योकि वहा गाडी की सडके नही है । आप तेज सवार हो तो शायद आप एक हफ्ते में भी पूरा कर सके । मै खुद भी वहा गया हू, लेकिन दो बरस पहले । मै काफी दूर तक गढवाल के पहाडो में गगा के साथ-साथ गया था और बाद में हवाई जहाज से बदरीनाथ गया था और गगा को आकाश से देखा था ।

हरिद्वार, जहा गगा पहाडो से निकलकर आती है, और आसपास का प्रदेश बेशक महत्त्वपूर्ण है ।

ठहरने की कोई खास दिक्कत नही है । आम तौर पर इस्पेक्शन हाउस अथवा डाक-बगले है । पटना जैसे स्थान में घटिया दर्जे के होटल भी है,

लेकिन मित्रो के यहा इतजाम कर लेना आसान है।

जमुना के पास अभी-अभी मैंने एक हफ्ते से अधिक बिताया है और मुझे इस नदी के साथ अधिकाधिक लगाव होता जा रहा है।

मुझे उम्मीद है, आप 'गैंजेज़' शब्द का प्रयोग नही करेंगे। मुझे वह नापसद है। 'गगा' कही भला मालूम होता है। पता नही, कैसे आपके पूर्वजो ने इस अच्छे नाम को बदलकर गैंजेज कर दिया। एक मित्र ने समझाया है और वह ठीक मालूम होता है कि गैंजेज गगाजी का अपभ्रश है।

नैन और रनजीत और मै सब आनन्दभवन में साथ रहते है, इसलिए पता एक ही है। नैन अभी बम्बई में है।

इदिरा ठीक हो रही है, लेकिन मै चाहता हू कि उसकी प्रगति और तेज हो। वह जल्दी ही हिदुस्तान लौटने के लिए बहुत ज्यादा उत्सुक है और मेरा अपना विचार यह है कि वह और तीन-चार महीने के बाद लौटे। लेकिन मै समझता हू कि आखिर सलाह डाक्टरो की ही मानी जायगी।

आपका,
जवाहरलाल

डा एडवर्ड टामसन
एल्सवरी,
बक्स (इग्लैण्ड)

३०४ अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता
२४ अप्रैल १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

आपके २१ अप्रैल के खत के लिए शुक्रिया। मै आपसे एकराय हू कि अगर कृष्ण मेनन अपने आप अमरीका जाते है तो यह वक्त के लिहाज से एक हद तक फायदेमद होगा। अगर यह सवाल काग्रेस की वर्किंग कमिटी की बैठक के पहले हमारे सामने आया होता तो यह उसी बैठक में तय हो जाता। फिर भी मैं जनरल सेक्रेटरी को लिख रहा हू कि वह फौरन उन्हे १०० पौड भेज दें और मुझे उम्मीद है कि आप बम्बई से उन्हे कम-से-

कम १०० पौंड भिजवाने का इतजाम कर देंगे ।

आप कहते है कि मै भी उन्हे एक खत लिखू । मैं सोचता हू कि अगर मै काग्रेस के सदर की हैसियत से उन्हे लिखता हू तो इसका लाजमी तौर पर यह मतलब होगा कि वह वहापर काग्रेस की तरफ से जा रहे हैं और जैसा कि आप खुद लिखते है, मामले को इस हद तक ले जाना मुनासिब नही। बेहतर यह होगा कि आप उन्हे अपने खत में लिखें—"मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि आप अमरीका जा रहे है । मुझे उम्मीद है कि वहा आपकी मौजूदगी से उन लोगो को हिन्दुस्तान की मौजूदा हालत को समझने में मदद मिलेगी ।" आपका खत उन्हे जिम्मेवारी की हैसियत देने में पूरी-पूरी मदद देगा । इससे वह हालत भी बच जायगी, जो सदर की तरफ से सीधा लिखने से पैदा हो सकती है ।

मसूरी के दोस्तो के तीन मकान थे, वे भर गये है । क्या आपके दोस्तो में से कोई मसूरी में मकान का इतजाम कर सकता है ? अगर यह वैसे मुमकिन न हो तो मै किराया देने को तैयार हूं । मकान अच्छा होना चाहिए और खुला होना चाहिए । अगर कोई आदमी आपके खयाल में हो तो मेहरबानी करके इतजाम के लिए उसे तार दे दें । कलकत्ता का मौसम मेरी तन्दुरुस्ती पर बुरा असर डाल रहा है ।

मसूरी के बाद मैंने नैनीताल और अल्मोडा की बावत भी सोचा । मै इसके मुतल्लिक पन्तजी को लिख रहा हू ।

आपका,

अ क आजाद

पडित जवाहरलाल नेहरू,
बम्बई ।

३०५. एडवर्ड टामसन की ओर से

एल्सवरी, बक्स
२८ अप्रैल १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

आपका लम्बा खत मिला । हा, ठीक ही मै जानता था कि रनजीत ही मेरे लिए उपयुक्त आदमी है । लेकिन रनजीत और नैन दोनो से मुझे

बड़ा डर लगता है। इसीलिए आपकी आड लेकर उन दोनो तक अपनी बात पहुचानी पडती है ।

सेंसर के कारण कहने योग्य बहुत ही कम बाते रह जाती है। आपको मालूम हुआ होगा कि नार्वेजियन युद्ध बडा ही दर्दनाक है। मै नार्वे जाने की कोशिश में हू। ऐसी हालत में, जबकि मेरा १९ वर्ष का लडका कमीशन प्राप्त कर चुका है और जरूर और जल्दी ही कही विदेश जायगा, मेरा हाथ-पर-हाथ रक्खे बैठे रहना और मुसीबतो का मुकाबला न करना बडा तकलीफदेह है। अगर सचमुच कयामत का दिन आ गया है तो मै तूफानो के बीच में रहना चाहूगा, सुरक्षित कगारो पर नही। यदि हमारी सभ्यता और अग्रेज कौम के नाम पर धब्बा लगनेवाला है तो मै जीवित रहकर यह सब देखना नही चाहूगा। यहा अग्रेज कौम से मतलब किसी भी कदर उस अस्त-व्यस्त जाति से नही है, जिसकी आप कल्पना करते है और जिसपर स्काचो और आयरिशो की सारी नीचता आरोपित करते हैं। फिर भी मेरी उम्र के लोगो के लिए मोर्चे के निकट जाना कठिन ही है ।

ठीक है, गगा के बारे में मुझे याद रहेगा। लेकिन यह फिल्म, पत्र लिखते समय मेरा पहले जो खयाल था, उससे कही अधिक महत्त्वाकाक्षापूर्ण होगी। मेरा डायरेक्टर अभी कनाडा में है और शीघ्र ही वापस आयगा। हम लोगो की फिल्म दुनिया की महान फिल्मो में से एक होगी और .जो हो, यदि मै पहले की तरह एक बार फिर बहकर हिन्दुस्तान के सुन्दर किनारो पर जा लगा तो सीधा रनजीत के पास जाकर इस बारे मे बात करूगा ।

हिन्दुस्तान जाना मेरे लिए कठिन होता जा रहा है। मै अब दक्षिण हिन्दुस्तान का सबसे ज्यादा नफरत की निगाह से देखा जानेवाला अग्रेज होनेवाला हू। अभी-अभी सुनने में आया है कि मद्रास विश्व विद्यालय ने 'एन इडियन डे' को जो कि 'सिक्स पैनी पैंग्विन' माला में निकल गई है, १९४२ के लिए बी ए के कोर्स में लगा दिया है। मुझे उम्मीद है, उसपर कोई-न-कोई नोट्स तैयार करेंगे। यह याद करके मेरा सिर झुक जाता है कि इस किताब को

जब मैंने लिखा था तब मैं नौसिखिया था। मेरी इच्छा है कि आपके विश्व-विद्यालय 'एन इडियन' के वदले, जो महज एक उपन्यास है, 'दि राइज एड फुलफिलमेंट' का उपयोग करते। यह किताव अच्छी है।

आपके नाम अपने छोटे लडके का पत्र साथ में भेज रहा हू। इस पत्र को मुझे हिन्दुस्तान लाना चाहिए था। शायद यह आपको दिलचस्प लगेगा।

अगाथा हैरिसन से यह जानकर हम लोगो को बडी प्रसन्नता हुई कि इदिरा की सेहत ठीक होती जा रही है। उसे बहुत वुरे दिन गुजारने पडे है। जब वह इगलैड लौट आवे तो कृपया हमें सूचित कर दें। मेरी इच्छा है कि इस स्थान को आप देखें। दक्षिण-पूरबी इग्लैंड में यह सबसे सुन्दर और प्यारा गाव है। अगर आपने इस तरह का स्थान—वनफूलो, दतकथाओ और इतिहास से परिपूर्ण—नही देखा, तो इगलैंड नही देखा।

हिन्दुस्तान के लिए मुझे बडा दु ख है। मै कह तो कुछ नही सकता, पर सोचता बराबर हू। मुझे इस बात का खेद है कि पिछले नवम्बर में आप जिन्नासाहब के साथ समझौता नही कर सके। इससे आपकी स्थिति बहुत मजबूत हो जाती। तार्किक दृष्टि से उसे स्थगित करना आपके लिए ठीक ही रहा, लेकिन ..काश समझौता हो जाता! और उस समय मालूम हुआ था कि समझौता हो सकता है। मै आपकी हर सेवा के लिए तैयार हू और ऐसे मौके आ सकते है, जब मैं आपकी सहायता कर सकूगा। फिर भी, एक-दो बातें गहरी पैठ चुकी हैं और उनका प्रचार भी हुआ है। अब हर कोई जानता है कि हिन्दुस्तान को विना पूछे युद्ध में शामिल राष्ट्र घोषित करके हमने भारी भूल की है। यदि मैं वहा आपसे मिल सका तो कहने योग्य कई बातें होगी। फिलहाल हमारी भावनाए आपके साथ हैं और हमें बडी आशा है, इदिरा जल्द ही ठीक हो जायगी।

आपका,
ए टा.

३०६. अबुल कलाम आजाद की ओर से

नैनीताल
९ मई १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

मसूरी के बारे में मुझे आपका तार मिला, जिसके लिए मै आपका मशकूर हू । नैनीताल मे इन्तजाम हो जाने की वजह से मैने मसूरी का इरादा छोड दिया ।

मै यहा ६ तारीख को पहुचा । हालात ने अगर इजाजत दी तो मै यहा जुलाई तक ठहरूगा । आप भी गालिबन बम्बई में मई के अखीर तक ठहरेंगे और फिर इलाहाबाद के लिए रवाना होगे । नैनीताल क्यो न आवें और कुछ वक्त तक मेरे साथ रहे ? प्लानिंग कमेटी की रिपोर्ट आप यही रहकर तैयार कर सकते है । जहातक सूबे के काम का सवाल है, इलाहाबाद और नैनीताल में कोई फर्क नही । इसके अलावा यहा आपकी मौजूदगी बहुत-से मामलो में फौरन सलाह-मशविरे के खयाल से मुफीद होगी ।

मि० अ० पटवर्धन से वर्धा में मेरी बातें हुई । उन्होने मुझसे कहा कि किसी और मौके पर वह मुझसे बात करेंगे, लेकिन मुझसे मिल न सकेगे । मेहरबानी करके उनसे वर्किंग कमेटी की मेंबरी के बारे में दरियाफ्त करें । मै आपको इसलिए तकलीफ दे रहा हू, क्योकि मै उनका पता नही जानता । सोशलिस्ट दोस्त भी बिल्कुल निकम्मे साबित हुए । उनमें इतनी हिम्मत नही कि काम कर सके । वह मुखालफत से डरते है और अपने पैरो पर मजबूती से खडे होने की हिम्मत नही करते । इस नाजुक मौके पर मुझे उम्मीद थी कि उनसे कुछ मदद मिलेगी, लेकिन मेरी उम्मीदे झूठी साबित हुई ।

अगर पटवर्धन इसके लिए तैयार नही है तो फिर जल्द किसी दूसरे आदमी को नामजद करना चाहिए । क्या आप कोई नाम सुझा सकेगे ?

इम्पीरियल टोबेको कम्पनी ने मेरे पास जो नोट भेजा है उससे मालूम होता है कि मजदूरो ने जो कुछ कहा था उसके खिलाफ हडताल की कुछ

और ही वजह हैं। ताहम मैं कोशिश कर रहा हू कि इज्जत के साथ समझौते की कोई सूरत निकले।

आपका,
अ. क. आजाद

३०७. अबुल कलाम आजाद की ओर से

नैनीताल
२५ मई १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

आपके १६ तारीख के खत के लिए शुक्रिया। अचरज के साथ मैंने अखबारो में राजेन्द्रबाबू का बयान पढा और इसी बीच मुझे उनका खत भी मिला। इस खत से मुझे साफ-साफ पता चला कि उनके खयालो का रुझान किस तरफ हैं। मैंने उन्हे जो जवाब भेजा, मुझे अफसोस है, उसकी नकल मै आपको भेजने से मजबूर हू। मेरा जवाब उर्दू में था और इस दफ्तर में सिर्फ जाब्ते के खतो की नकल रखी जाती हैं। जहातक काग्रेस के मौजूदा रवैये का ताल्लुक है, मेरा खत करीब-करीब वैसा ही था जैसा कि आपका। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि इस मामले में हम दोनो के खयाल एक से है और यह सबसे ज्यादा तसल्ली की बात है कि गाधीजी भी इससे पूरी तरह एकराय है।

राजेन्द्रबाबू के बयान के मुकाबले आसफअली का बयान कही ज्यादा ऐतराज करने लायक है। वाकई उससे मुझे चोट पहुची। मैंने आसफ-अली को एक के बाद एक दो बहुत तेज खत लिखे। अब वह मुझे यकीन दिला रहे है कि आगे से ऐसे बयान नही देंगे।

जो कुछ आपने मुझे और राजेनबाबू को अपने खतो में लिखा है, जहा-तक काग्रेस के रवैये का सवाल है, वह बिल्कुल दुरुस्त है। कोई वजह नही दिखाई देती कि इस वक्त तब्दीली का कोई सवाल उठाया जाय। लेकिन इसके साथ-साथ आपने दो बातें ऐसी लिखी है, जिनसे मै मुत्तफिक नही हू। मुझे ताज्जुब है कि काग्रेस के तर्जअमल के बारे में आपका दिमाग जो तजवीज कर रहा है उसके साथ इनका मेल कैसे बैठेगा। राजेनबाबू के खत में आप लिखते है "हम अगर तैयार भी हो तब भी फौरन सत्याग्रह

का सवाल नही उठता, क्योकि मेरी समझ से इस खास मौके पर, जबकि ब्रिटेन खतरे में है, यह ठीक न होगा कि हम उसका गला दबोचने दौड़ें।" आपने अपनी लखनऊ की तकरीर में भी इसी खयाल को जाहिर किया है। 'पायोनियर' ने आपके असली लफ्जो को देना जरूरी समझा "यह बात हिन्दुस्तान की शान के खिलाफ है कि वह इग्लैण्ड की कमजोरी से फायदा उठाकर इस वक्त सत्याग्रह शुरू कर दे।" मै इस तरह के सोचने के तरीको को बिल्कुल नही समझ सकता।

दरअसल यह तरीका ही बिल्कुल गलत है कि हम सियासी जद्दो-जहद के मामले में पहले से कुछ बुनियाद बना लें और तब अपने तर्जेअमल के मुतल्लिक गलत नतीजे निकालें। मै नही जानता कि हिन्दुस्तान की 'शान' क्या है ? मै सिर्फ यही जानना चाहता हू कि सोच-समझकर जो फैसला किया गया है वह हमें कहा ले जायगा। हम अधो की तरह अधेरे में नही भटक सकते। हम जो भी रास्ता चुनें, वह आख खोलकर चुनें। इससे ज्यादा बेकार की बात क्या होगी कि हम एक रास्ता तय करें और फिर उसपर चलने से इन्कार करें!

हमने ब्रिटेन को पूरा-पूरा मौका दिया कि वह हमें अपने साथ लेकर चले, मगर उसने सख्ती के साथ ऐसा करने से इन्कार कर दिया। हमने मज-बूर होकर यह फैसला किया कि हम इस साम्राज्यशाही लडाई में हिस्सा नही लेंगे। अगर हमारा मौजूदा फैसला ऐसा है कि जो ब्रिटेन को (गाधीजी के लफ्जो मे) 'परेशानी' में डालता है या आपके लफ्जो में हिन्दुस्तान की 'शान' के खिलाफ है तो इसका कोई इलाज नही हो सकता। हम इसके लिए जिम्मेवार नही है। इसके लिए जिम्मेवार है ब्रिटिश सरकार का नासमझी-भरा गरूर।

आप कहते हैं कि इस मौके पर हमें सत्याग्रह नही शुरू करना चाहिए, लेकिन सत्याग्रह से आपकी मुराद क्या है ? क्या यह लडाई का ऐसा नया ऐलान होगा कि जिसे काग्रेस को अभी तय करना है ? काग्रेस की लडाई सिर्फ यह है कि लडाई में किसी तरह की भी मदद न दी जाय। अमल में अभी इस रोक को एक खास हद से आगे नही बढाया गया, लेकिन इसे आगे बढाना जरूरी है। अपने-आपको गिरफ्तार करने और लड़ाई के आर्डिनेन्सो

के मारे इसकी शक्ल अपने-आप सिविल नाफरमानी की हो जायगी।

अगर आपके इखलाकी फलसफे को, हिन्दुस्तान की शान को खयाल में रखते हुए, दुरुस्त समझ लिया जाय तो इसका एक ही मतलब निकलेगा, यानी रामगढ कांग्रेस का फैसला हिंदुस्तान की शान और इज्जत के बिल्कुल खिलाफ था।

इसी खत में आप आगे लिखते है कि अगर सरकार के साथ किसी शक्ल में समझौता हो गया तो हमारा आगे के लिए क्या रवैया होगा? आप कहते है, "अगर ये सब बातें मान ली जाय (यानी आजादी, आत्म-निर्णय और बालिग मताधिकार के मुताबिक चुनी हुई सविधान-सभा) तब भी इससे यह नतीजा नही निकलता कि हम लडाई में अपनी खास ताकत लगा दें।"

लेकिन अगर इससे यह नतीजा नही निकलता तो हम यह उम्मीद क्यो करें कि ब्रिटिश सरकार, जो कुछ हम माग रहे है, वह सब हमें दे देगी। बेशक अगर वह मजबूर कर दी जाय तो वह हमें ये सब चीजें बेमन दे सकती है। लेकिन इस वक्त ताकत-आजमाइश का तो कोई सवाल ही नही उठता, जबकि सत्याग्रह की इखलाकी ताकत का इस्तेमाल भी हिन्दुस्तान की 'शान' के खिलाफ समझा जा रहा है।

मै नही समझता कि इतना उलझन से भरा हुआ और बेतुका खयाल आपके दिमाग में किस तरह घुस गया। कम-से-कम आपसे तो यह उम्मीद नही की जाती थी कि आप इस तरह से सोचेंगे।

मुझे उम्मीद है कि लाहौर का आपका कयाम आपके कामो में पूरी तरह मददगार हो रहा होगा।

मुझे आज ही सिकन्दर हयात का एक तार मिला है। उसकी एक नकल शायद आपको भी भेजी गई है। मैंने तार से जवाब भेज दिया है कि मौजूदा हालात के लिए हम लोग जिम्मेवार नही है, बल्कि ब्रिटिश सरकार जिम्मेवार है।

आपका,
अ. क. आजाद

पडित जवाहरलाल नेहरू,
मार्फत डाक्टर खानसाहब,
भूतपूर्व प्रीमियर, पेशावर

३०८. खान अब्दुल गफ्फार खां की ओर से

दंगा गली, हजारा जिला
१३ जुलाई १९४०

प्रिय पंडितजी,

आपका तार कल यहां मुझे दंगा गली में मिला। कैम्प के लिए अभी कोई आखरी तारीख मुकर्रर नहीं हुई है। लोग मेरा इन्तजार कर रहे थे। यहां पहुंचते ही मैंने उन्हें फौरन लिख दिया है। जो तारीख तय होगी, आपको उसकी इतिला की जायगी। राजाजी और मौलानासाहब ने जो राय जाहिर की है वह आपने रेडियो पर सुनी होगी। इसके अलावा जिन्ना-साहब और मौलानासाहब में जो बातें हुईं उसपर भी गौर किया होगा। मौलानासाहब ने जो कुछ कहा, उसे तो मैं समझा हूं, लेकिन जिन्नासाहब का क्या मकसद है, यह मैं नहीं समझ सका।

जबतक कैम्प चलेगा तबतक मैं यहीं रहूंगा। उसके बाद काम शुरू करूंगा। यहां की आबहवा काफी अच्छी है और मेरी सेहत बहुत-कुछ बेहतर हुई है। यूनुससाहब ने भी मुझे लिखा है। वह लिखते हैं कि खास श्रीनगर में काफी गरमी है, लेकिन वह अपना ज्यादातर वक्त गांवों में खर्च करते हैं।

पूना आना मेरे लिए मुमकिन न होगा। लेकिन अगर ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने वहां भी वह तर्जवीज मंजूर की तब मैं ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी से भी अपना इस्तीफा देने के लिए आजाद हूं।

मुझे उम्मीद है, आप अच्छे होंगे। मेहरबानी करके उपाध्याय और दूसरे साहबान को मेरा सलाम कहें।

अब्दुल वली, गनी, रोशन और मेहरताज आपको बहुत-बहुत याद करते हैं और आपको अपना सलाम भेजते हैं।

आपका,
अब्दुल गफ्फार

३०९ अबुल कलाम आजाद की ओर से

नैनीताल
१९ जुलाई १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

१६ तारीख के खत के लिए शुक्रिया। मेहरबानी करके मेरा बयान दोबारा पढ़ें। मैंने यह नही कहा कि तजवीज एकराय से मजूर हुई थी। मैंने तजवीज के महज दिमागी पहलू की ही सफाई देते हुए कहा है कि सब लोग अपने 'दिमागो' में साफ थे कि अगर हिन्दुस्तान की माग मजूर की जाती है तो उसे (हिन्दुस्तान को) लडाई मे शामिल होना चाहिए। चुनाचे 'स्टेट्समेन' और दूसरे अखबारो ने मेरे बयान से यही मतलब निकाला है।

मै मशकूर होऊगा अगर आप उसके बारे में उस वक्त तक कोई बयान शाया न करें जबतक हम लोग पूना में मिल न लें। इसके बारे में मै आपसे तफसील में बातें करना चाहता हू। अफसोस है कि हमें दिल्ली में कोई ऐसा मौका न मिल सका। मुझे चीन से खत की नकल मिल गई है।

आपका,
अ. क. आजाद

३१० जयप्रकाशनारायण की ओर से

[जयप्रकाशनारायण ने यह पत्र हजारीबाग जेल से भेजा था, जहा वह उस समय कैद थे।]

आदमी द्वारा दिया जाय २० जुलाई १९४०

प्रिय भाई,

आप कल्पना कर सकते है कि हाल की घटनाओ ने हमको कितनी चोट और दु ख पहुचाया होगा। राजाजी ने तो हमारी पीठ में छुरा ही भोक दिया है। यह जानकर वडी तसल्ली हुई कि इस भद्दी चीज का आपने और खान-साहब ने विरोध किया, लेकिन क्या इतना ही काफी है? यहा हममें से सब आपसे आशा और प्रार्थना करते है कि महासमिति में और देश में आप विरोध का नेतृत्व करें। समिति से आप त्यागपत्र दे दें। एक समझौते के वाद अगर

यह हो जाय तो आप कांग्रेस को जाकर छोड दें और शेष राजनैतिक काम और हिंदुस्तानी क्रान्ति के सामाजिक काम के खास हिस्से को पूरा करने के लिए आप एक नया राजनैतिक दल बना लें। क्या आप यह करेंगे ? यह तो शायद आप सब जानते होगे कि राजाजी के प्रस्ताव से कांग्रेस की मृत्यु की घटी वजी है। कागेस को बाटने का भय तो अब अवास्तविक हो गया है। गाधीजी अपने ढग के एक शानदार आदमी है, परन्तु सीधे नही तो उलटे, उनका समर्थन देशद्रोहियो की ओर होगा। वल्लभभाई और राजाजी गाधीजी को छोडने में हिचकिचाये नही है। क्या आप अपने प्रत्यक्ष ऐतिहासिक कर्त्तव्य मे हिचकिचायगे ? मै नही जानता कि आप क्या और कितना कुछ कर सकेंगे। परन्तु हर सूरत मे अपने पीछे आनेवालो के मार्ग को तो आप आलोकित जरूर कर जायगे।

यह पत्र आवेश या गुस्से में नही लिखा गया है, बल्कि बहुत ठडे दिमाग से और सोच-समझकर।

आपका,
जयप्रकाश

फिर से—

अक्तूबर के मध्य में मेरे छूटने की सभावना है।

३११ चेग यिन-फुन की ओर से

चीनी शाखा
इन्टरनेशनल पीस कैम्पेन
पो बा १२३, चुंगकिंग, चीन
२१ अगस्त १९४०

प्रिय श्री नेहरू,

पिछला पत्र आपको इसी साल ९ जनवरी को लिखा था, जिसे काफी लम्बा अरसा बीत चुका है। यह विलम्ब हमारी किसी असावधानी के कारण नही हुआ है—हमें तो अक्सर आपको लिखने की इच्छा हुआ करती थी—किन्तु इतने दिनो के कठोर तथा लगातार सघर्ष ने हमें करीब-करीब पूरी तरह से मूक बना दिया है। हमें तो कार्य और सहनशीलता को ही अपना साथी समझकर धैर्यपूर्वक आगे बढना है।

अबतक हम जिन विचारो और भावनाओ को अपने मन में सचित करते आये है, उनके सामने सर झुकाने के अलावा अव हमारे पास कोई चारा नही रह गया है । हिंदुस्तान के इतिहास के इस कठिन मोड पर भी आप अभी एक ऐसे मित्र को नही भूल पाये है जो आपके पडोस में आप ही जैसे घ्येय के लिए लड रहा है । चीन के प्रति आपकी स्नेहपूर्ण सहानुभूति का एक नया प्रमाण हमें आपके उस लेख में मिला है, जो अभी हाल ही में 'भारत, चीन और इग्लैड' शीर्षक से लखनऊ के 'नेशनल हेरल्ड' में प्रकाशित हुआ है । आपकी इस अटूट सहानुभूति और समर्थन के लिए हम एक बार फिर अपनी कृतज्ञता और सराहना की भावना प्रकट करते हैं और ऐसा करने में हमें विश्वास है कि हम समस्त चीनी जनता की भावना का प्रतिनिघित्व कर रहे हैं । आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि 'भारत, चीन और इग्लैंड' को हमने चुगकिंग में वहुत ज्यादा प्रचारित किया है । जिस रूप में यह अशत 'हैक्को हेरल्ड' के चुगकिंग सस्करण में और चीन के सबसे प्रभावशाली पत्र 'हा कुग पाओ (ल' इम्पारशियल) में छपा है, उसकी कतरनें हम इस पत्र के साथ भेज रहे है ।

तुष्टीकरण की जिस नीति पर इगलैंड लगातार चल रहा है, उसका परिणाम स्वय-सिद्ध है और अभी से इग्लैंड को उसके कडवे फल चखने पड रहे है । बर्मा सडक को बन्द करने में इगलैंड का कोई लाभ नही है, इससे उसका पूर्वी सीमान्त अधिक सुरक्षित नही हो सकता । जिस दिन भी जापानी दक्षिण की ओर बढेंगे, वे इगलैंड की इस नीति की परवा नही करेंगे और इगलैंड पैंतालीस करोड निवासियो के एक बहुत बडे राष्ट्र की मित्रता को खो बैठेगा । किन्तु चीनी जनता इससे भयभीत नही है, विल्कुल नही । जिस तरह हिंदुस्तान की जनता पूर्ण स्वतत्रता के अतिरिक्त और किसी वस्तु से सन्तुष्ट नही होगी, उसी तरह जिस उद्देश्य के लिए हमने हथियार उठाये है वह जबतक पूर्ण नही हो जायगा तबतक कोई भी शक्ति हमें लडते रहने से नही रोक सकेगी, चाहे हमें कितनी ही कठिनाइयो का सामना क्यो न करना पडे । चीन के लाखो सपूतो के प्राण और यहा की अपरिमित सम्पत्ति व्यर्थ ही वलिदान नही की जायगी । जिन लोगो को हमसे महान आशाए है, वे निराश नहीं होगे ।

निश्चय ही यह देखकर दु.ख होता है कि बार-बार मुह की खाकर भी ब्रिटेन के कूटनीतिज्ञ यह नही सीख सके कि आक्रमणकारियो के प्रति अपनी सरकार की विदेश-नीति निर्धारित करने में उन्हें सावधानी से काम लेना चाहिए। किन्तु जिन देशो पर आक्रमण हुआ है, वे इन महानुभावो के चतुर सकेतो से शिक्षा लेना नही भूल सकते। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नही कि इस साल के आरभ में भारतीय काग्रेस ने ब्रिटेन के असली युद्ध-उद्देश्यो का खण्डन किया। अदूरदर्शितापूर्ण स्वार्थ से आखे बन्द रहने के कारण आज की स्थिति में ब्रिटिश सरकार से यह आशा नही की जा सकती कि जो बडी-बडी बाते खतरे में है, उनपर वह ध्यान दे सकेगी। फिर भी हम यह विश्वास करने के लिए तैयार नही है कि आज ब्रिटिश सरकार जिस विरोधी नीति पर चल रही है, उसमें उसे अपने देश के प्रबुद्ध व्यक्तियो का पूरा समर्थन प्राप्त है। हमें आज भी ब्रिटिश इन्टरनेशनल पीस कैम्पेन का वह स्पष्ट वक्तव्य याद है, जो उसकी ओर से वर्तमान यूरोपीय युद्ध के आरम्भ होने के कुछ ही दिनो बाद प्रकाशित हुआ था और जिसमें ब्रिटिश सरकार से अनुरोध किया गया था कि हिंदुस्तान की तीव्र मागो को साहस-पूर्वक स्वीकार करके वह उन प्रजातत्रीय सिद्धान्तो के प्रति अपने विश्वास का प्रमाण प्रस्तुत करे, जिनका समर्थक होने का वह दावा करती है। जहां-तक बर्मा-सडक के मौजूदा मामले का सवाल है, लन्दन में रहनेवाले चीनी राजदूत को ब्रिटिश जनता की ओर से सहानुभूति के अनेक सदेश प्राप्त हुए थे, किन्तु जबतक ये दूरदर्शी लोग अपनी वर्तमान स्थिति में पडे रहेंगे—एक ऐसी स्थिति, जिसपर सरकार की नीति का कोई प्रभाव नही है—तबतक ब्रिटेन धीरे-धीरे उस सहानुभूति को भी खोता चला जायगा, जो अब भी उसके पक्ष में है। इसके नैतिक और भौतिक परिणाम घातक होगे।

हमें हिंदुस्तान की जनता से बडी हमदर्दी है। वहा जो कुछ भी होता रहा है, उसका हम यहा बडी दिलचस्पी के साथ अध्ययन करते रहे है। जीवन-मरण के सघर्ष में कण्ठ तक डूबे रहने के कारण इस समय चीन आपकी कोई सेवा करने में असमर्थ है; फिर भी हमें विश्वास है कि हमारे महान कार्य की सफल समाप्ति परोक्ष रूप मे आपके लिए सहायक सिद्ध होगी। आप तो चीनी जनतत्र के जनक डा सनयात सेन के उद्देश्यो को

अच्छी तरह जानते ही है। हमारी राष्ट्रीय भावना में ये उपदेश कूट-कूटकर भरे हुए है।

आपके सघर्ष से हमने सदैव प्रोत्साहन और प्रेरणा प्राप्त की है। अपनी खोई हुई स्वतत्रता के लिए हमारे हिंदुस्तानी मित्र कठिनाइयो का सामना करते हुए जिस तत्परता के साथ प्रयत्न कर रहे हैं उसने हमे अपनी स्वतन्त्रता को, जो अब भी हमारी मुट्ठी मे है, और भी अधिक प्यार के साथ सुरक्षित रखने की प्रेरणा दी है। हमें विश्वास है कि महात्मा गाधी और आपके नेतृत्व मे हिंदुस्तान तथा जनरल च्याग काई-शेक के नेतृत्व में चीन के प्रयत्न अन्तत हमें हमारी राष्ट्रीय मुक्ति की ओर ले जायगे, जो कि हमारा समान उद्देश्य है। इन दोनो देशो की जनता के सगठित सकल्प को कोई भी वस्तु डिगा नही सकती। हमारा यह विश्वास हमारे आक्रमण-विरोधी युद्ध के तीन साल के अनुभव पर आधारित है। पैतालीस करोड जनता का यह सकल्प कि वह दासता और शोषण के सामने घुटने नही टेकेगी, उस शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध महान दीवार का काम कर रहा है, जो कि युद्ध-सामग्री और तैयारी दोनो मे हमसे श्रेष्ठ है।

हिदुस्तान और चीन के इतिहास में कभी एक-दूसरे के सीमान्त पर कोई सशस्त्र सघर्ष नही हुआ। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सद्भावनापूर्ण यात्रायो के माध्यम से हमने एक-दूसरे की सस्कृति से केवल लाभ ही उठाया है। हमारे बीच चिरस्थायी मित्रता की यह एक दृढ नीव है। हमे विश्वास है कि राष्ट्रीय मुक्ति के लिए हमने आपस में मिलकर जो सकल्प कर रखा है वह हमारी मित्रता के बन्धन को और भी मजबूत कर देगा। हम उस दिन की बडी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे है जब हिंदुस्तान और चीन के निवासी विश्व-शाति के लिए हाथ-मे-हाथ डालकर और कधे-से-कधा मिलाकर काम करेंगे। हिंदुस्तान के सबध में हमें यहा बहुत ही कम समाचार मिलते हैं। आप हमें जो कुछ भी जानकारी भिजवा सकेंगे उसे पाकर हमें खुशी होगी। हम समझते है कि यहा हम उसका अधिक-से-अधिक प्रचार कर सकेंगे और इस प्रकार आपसी सद्भावना को बढाने में योग दे सकेंगे।

आपके श्रेष्ठ प्रयत्नो के लिए समस्त सद्भावनाओसहित,

आपका,
चेंग यिग-फुन
कार्यवाहक सचिव

पडित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद, हिंदुस्तान

३१२ मैडम च्याग काई शेक की ओर से

जनरलसिमो का सदर मुकाम
चुंगकिंग, जेचुआन
चीन
१० सितम्बर १९४०

प्रिय श्री नेहरू,

न जाने कितनी बार विचार आया कि पत्र लिखकर आपको उन पत्रो के लिए धन्यवाद दू, जो आपने श्री हु लियेन चुग के जरिये भेजे थे—साथ ही उस पत्र के लिए भी, जो आपने चीन के कौसल जनरल के द्वारा भेजा था।

इन कष्टपूर्ण दिनो में जनरलसिमो और मै दोनो ही हिंदुस्तान की घटनाओ को बडी दिलचस्पी और चिन्ता के साथ देखते रहे है। आपकी चीन-यात्रा से हिदुस्तानी समस्याए हमारे हृदय के बहुत निकट आ गई है, इसलिए आपके साथ-साथ हम भी यह आशा करते रहे है कि भारतीय नेशनल काग्रेस के प्रति ब्रिटिश सरकार अधिक उदार नीति अपनायेगी।

कुछ महीने हुए मैंने तार भेजकर आपकी बहन श्रीमती पडित को और हिंदुस्तान की दूसरी प्रमुख महिलाओ को अक्तूबर में चीन आने का निमत्रण दिया था। जैसी कि मैंने अपने पत्र मे आशका प्रकट की थी, इन गर्मियो में जिस दिन भी आसमान साफ रहा, जापानी हवाई जहाजो ने चुगकिग पर और सच पूछिये तो आजाद चीन के हर हिस्से पर बडी निर्दयता के साथ बम बरसाये। अगर इन दिनो आप चुगकिग आये तो आप इसे पहचान नही सकेगे। जो जिले किसी समय चीन के सबसे समृद्धशाली व्यापारिक जिले थे, वे अब मीलो तक टूटे-फूटे पडे है और जहातक भी आखें जाती

है वहातक चारो ओर गिरे हुए मकानो के मलबे और खडहर-ही-खडहर दिखाई देते है। हममें से जो लोग अभी सही-सलामत है, वे मिल-जुलकर उन हजारो बेघर शरणार्थियो को राहत पहुचाने के लिए लगातार मेहनत कर रहे है, जिनके पास मानव और सम्पत्ति के इस मूर्खतापूर्ण सहार के कारण पेट भरने का कोई भी साधन नही रह गया है। इतनी भयकर निर्दयता की आजतक शायद ही किसी मनुष्य ने कल्पना की हो।

किन्तु मार्के की बात यह है कि हमारी जनता का नैतिक बल टूटा नही है। जैसा कि कुछ यूरोपीय देशो के साथ हुआ है, ठीक उसके विपरीत, हम पर जितना ही कडा दबाव पडा है, उतनी ही हमारी जनता अधिक दार्शनिक बनती गई है। हम इतना दु ख और इतनी पीडा उठा चुके है कि हमें ऐसा लगता है, मानो सारा जीवन बस एक बात में केन्द्रित हो गया है—वह यह कि हम लोग धीरज के साथ कष्ट सहते रहे और आक्रमण के विरुद्ध अपने विरोध को जारी रखने के लिए दृढतापूर्वक प्रयत्न करते रहे, जिससे कि चीन सदा के लिए जीवित रहे।

पिछले तीन सप्ताह से मै इफ्लुएजा से पीडित हू और जबर्दस्ती चारपाई पर पडी हू। मेरी इस स्थिति को जिन बातो ने सहनीय बनाया है, उनमें से एक आपकी 'मेरी कहानी' को पढते रहना भी है। अपने जीवन में डटकर पढने के लिए समय निकाल सकना मेरे लिए कठिन है और मैने आपकी पुस्तक को शाति और फुरसत के साथ पढना चाहा, जैसा कि इसके लिए उचित था। अबतक मेरे पास इसके लिए समय नही था, किन्तु अब मै सचमुच अनुभव करती हू कि मै आपको जान गई हू, क्योकि अपने देश की मुक्ति के लिए वीरतापूर्वक सघर्ष करते हुए आपके हृदय ने आपको जो प्रेरणाए दी है, उन्हें शान्ति के साथ और ध्यानपूर्वक सुनने का अवसर मुझे अब मिला है।

आपकी पुस्तक एक महान ग्रथ है, क्योकि इसमें एक ऐसी मानव-आत्मा की तीर्थ-यात्रा का विवरण है, जो कि दिन-प्रति-दिन के सघर्ष के शोर-गुल से ऊपर उठकर एक ऐसे बौद्धिक और भावनामय ससार में पहुच गई है, जिसमें भावुकता की दुर्बलता नही है, किन्तु जो इतना अधिक मर्मस्पर्शी है कि उसके कारण युग-युग की महानतम कृतियो में स्थान पाने योग्य हो गया है।

जनरलसिमो और मैं आपको और हिंदुस्तान को अपना स्नेहपूर्ण अभिवादन भेजते है और आपके लिए उज्ज्वल भविष्य की तीव्र आशा रखते है ।

आपकी,
मेलिंग सूंग च्यांग

३१३. जी गेस्ट लेवो की ओर से

लन्दन
२९ सितम्बर १९४०

प्रिय महोदय,

आपके जीवन से काफी लम्बे अपने जीवन में मैंने स्वभावत बहुत-सी भाषाओ में बहुत-सी पुस्तकें पढी है, किन्तु उनमें से किसीको भी पढकर उसके लेखक के प्रति मेरे मन में व्यक्तिगत आदर की इतनी तीव्र भावना उत्पन्न नही हुई जितनी कि आपकी पुस्तक पढकर। यदि आप क्षमा करें तो मै शेक्सपियर के नीचे लिखे शब्दो को, जिन्हें मैंने करीब चालीस साल से नही पढा है और जिन्हें मुझे उम्मीद है, मै ठीक-ठीक लिख रहा हू, मै काल बदलकर उद्धृत करना चाहूगा और शेक्सपियर के स्वर-में-स्वर मिलाकर कहना चाहूगा—

"उसका जीवन उच्च है और उसमें पचतत्त्वो का
ऐसा सुन्दर मिश्रण हुआ है कि प्रकृति खडी होकर
सारे ससार से कह सकेगी 'यह मानव है।' "

आपका,
जी. गेस्ट लेवो
(एम ए मेग्डेलेन, ऑक्सफोर्ड)

३१४ खान अब्दुल गफ्फार खा की ओर से

लखनऊ
१८ अक्तूबर १९४०

प्रिय जवाहरलालजी,

मै खैरियत से कल यहा पहुच गया। नेहरूसाहब[1] स्टेशन पर तशरीफ लाये

[1] नेहरूसाहब से मतलब मेरे भतीजे से है, जो उस समय लखनऊ में था।

में इलाज करवा रही हू । युद्ध के आरभ मे जब मै शघाई के मोर्चे का दौरा करने गई थी तब मोटर से गिरकर बाहर जा पडी थी और मेरी पसली टूट गई थी । इसके एक सप्ताह बाद ही मै फिर से काम करने लगी थी । तभी से मेरी पीठ मे हमेशा तकलीफ रही है, किन्तु कार्य में अधिक व्यस्त रहने के कारण मैंने इसपर अधिक ध्यान नही दिया था । इन गर्मियो मे पीडा सचमुच असहनीय हो गई थी । इस बीच हर रोज बम गिरते रहे और मैंने ऐसा महसूस किया कि बमबारी का मौसम समाप्त होने से पहले मेरे लिए चुगकिंग छोडना असभव होगा ।

जब मै हागकाग आई तब एक्सरे से पता चला कि मेरी रीढ की हड्डी बिल्कुल टेढी-मेढी हो गई थी । इसलिए इसमें ताज्जुब क्या कि मुझे करीब-करीब लकवा मार गया था । मै चिकित्सा करा रही हू और अब पहले से बहुत अच्छी हू । उम्मीद है, कुछ हफ्तो में मै बिल्कुल ठीक हो जाऊगी और फिर से काम करने लगूगी । लौटने पर मै श्री ताई से मिलूगी और तब मुझे आपके बारे में ठीक-ठीक खबर मिलेगी ।

शायद मुझे यह बताने की जरूरत नही कि आपके गिरफ्तार किये जाने की खबर सुनकर मै कितनी दुखी हुई हू । तबसे मुझे लगातार आपका ध्यान आता रहा है और मै चाहती रही हू—बहुत चाहती रही हू—कि आपके लिए और हिंदुस्तान के लिए कुछ कर सकू । जैसा कि आपने लिखा था, समय का अन्दाजा दिनो से नही लगाया जा सकता । आप यहा बहुत थोडे दिन रहे, फिर भी मुझे ऐसा लगा जैसे आप हमारे एक प्रिय पुराने मित्र हो । जनरलसिमो ने और मैंने दोनो ही ने यह अनुभव किया कि आपकी और हमारी आत्माए एक-दूसरे से सम्पूर्ण तादात्म्य के साथ मिलीं और समान उद्देश्य तथा समान महत्वाकाक्षाए होने के कारण आप हमारे सच्चे साथी है ।

मै आपके लिए बहुत ही कम या यह कहिये कि कुछ भी नही कर सकती, किन्तु यदि यह जानकर कि हमें आपसे स्नेह है और आपपर विश्वास है, आपके ये दिन कुछ कम नीरस बन सकते है, तो विश्वास रखिये कि हमे यह सोचकर बडी प्रसन्नता होती है कि इस ससार में आप जैसी नि स्वार्थ और साहसी आत्माए है और हमें इस बारे में सन्देह नही कि हिंदु-

। को अपने उद्देश्य मे सफलता मिलेगी। आपकी विजय के लिए हमारे
और हमारी प्रार्थनाए सदा आपके साथ रहेगी।
जिस मित्र के हाथो मे ये पक्तिया सौप रही हू, वह कुछ ही मिनटो
ानेवाले है। इसलिए इन थोडे-से शब्दो मे यह बता सकना मेरे लिए
व नही कि आपके गिरफ्तार कर लिये जाने से यहा हमारी जनता में
ुलता की कैसी लहर दौड गई है। बहुत-से ऐसे लोग, जिन्होने ब्रिटिश
तत्र से आशाए बाध रखी थी, आज अपने आपसे प्रश्न कर रहे है कि
उन्होने साम्राज्यवाद को भूल से उदारतावाद तो नही समझ लिया
। इससे अधिक और क्या कहू ।
मेरे मित्र, आपको मेरी समस्त शुभ कामनाए है ।

मेलिंग सुग च्याग

९ जीन फ्रॉस्ट की ओर से

न्यूयार्क
मगलवार, १५ अप्रैल १९४१

। श्री नेहरू,

मै आपसे बिल्कुल अपरिचित हू, इसलिए यह मेरी धृष्टता है कि
आपको पत्र लिखने का साहस कर रहा हू, किन्तु इसके लिए मै अपने
एक प्रकार से विवश पा रहा हू, इसलिए आपसे प्रार्थना करता हू कि
र इसका बुरा न माने। आपने मुझे सोचने के लिए बहुत सामग्री दी है
र मै आपका अत्यधिक कृतज्ञ हू। मेरी समझ में नही आता कि अब
के आगे मै क्या कहू। मेरे पास जितने भी थोडे-बहुत शब्द है उनके
रा मै अपने मौन हृदय की कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हू। मेरी
झ में नही आता कि मै अपनी भावनाए किस प्रकार व्यक्त करू, क्यो
जो कुछ भी मैने गहराई के साथ अनुभव किया है उसे व्यक्त करने में मै
शा डरता रहा हू। किन्तु इस समय आवश्यकता भय से बडी मालूम
ती है, इसलिए मै जो कुछ भी कहना चाहता हू उसे अच्छे-से-अच्छे ढग
कहने की चेष्टा करूगा।

मै आपकी 'मेरी कहानी' पढता रहा हू। यह मेरी प्रिय पुस्तक बन गई

है। इसे पढकर मैं अपने प्रति बडी लज्जा का अनुभव करने लगा हू। अब वह समय आ गया है जब मुझे अपने पर पूरी तरह लज्जित होना चाहिए। पिछले दिनो निराशा और भ्रम की अपनी केचुल में पडे-पडे मैंने बहुत समय नष्ट किया है। सारी जिन्दगी मैं विद्रोही बना रहा। मेरे पास कभी कोई कार्यक्रम नही रहा है। फिर भी अपने सम्पर्क में आनेवाली प्राय प्रत्येक वास्तविकता के लिए मेरे पास काफी कठोर शब्द रहे है। मैंने अपनेको मनुष्यो से बिल्कुल अलग करके रखा और आश्चर्यपूर्वक सोचता रहा कि मै किसलिए उदास रहता हू। जिस समाज में मै बडा हुआ था, उससे निकल भागने की मुझमें प्रबल इच्छा मालूम दी और ऐसा मैंने अपने परिवार को कष्ट मे डालकर भी किया। लेकिन मेरे साथ 'गढे से निकले तो खाई में गिरे' वाली कहावत चरितार्थ हुई और आज मै खाई में हू और वह भी अपने परिवारवालो को कष्ट देकर। मेरा खयाल है कि मै बहुत दिनो तक यह महसूस करता रहा कि मेरे परिवारवालो को बिना किसी शर्त के मेरा भरण-पोषण करना चाहिए क्योकि मैंने ऐसा कोई भी काम नही किया है, जिससे उनपर से मेरा बोझ, या यो कहिये कि मेरे उग्र मतो का बोझ, दूर हो जाय।

आज मै अपनेको गन्दे-से-गन्दे कीडे से भी हीन मानता हु। मुझे इस बात की बहुत सख्त जरूरत है कि मैं अपना सिर ऊचा उठा सकू और अपनेको ईमानदार कह सकू। आखिरकार मुझे प्रेरणा मिल गई है। अब मुझे ऐसा लगने लगा है कि जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण काम आदर्शो की रक्षा करना है और उनकी रक्षा हर कीमत पर और राह में कही अटके बिना करनी चाहिए। अन्तत मैंने यह सीख लिया है कि जो कुछ हो चुका है वह बदला नही जा सकता। फिर भी मै ऐसा अनुभव करता हू कि जैसा मै कभी था, लेकिन अब नही हू, उसके लिए मै थोडा-बहुत प्रायश्चित कर सकता हू या कम-से-कम प्रायश्चित्त करने का प्रयत्न कर सकता हू। ओह, मै कितने बुरे ढग से ये सब बातें कह रहा हू।

जो हो, मुझे अपने इस परिवर्तन के लिए आपको धन्यवाद देना है। इस ससार को रहने योग्य एक अच्छा स्थान बनाने में मेरा जो कुछ भी हिस्सा हो सकता है उसे मै पूरा कर देना चाहता हू। दूर अन्धकार में

प्रकाश देखकर मै वियावान में खडा-खडा चिल्ला रहा हू—"धन्यवाद है आपको ।" किन्तु यह प्रकाश धीरे-धीरे, बहुत ही धीरे-धीरे, आगे बढ रहा है और हवा या पानी या मनुष्य-जाति के छल-कपट की पहुच से बाहर है । शायद मेरा यह कथन आलकारिक मालूम हो और उससे कुछ स्पष्ट न हो, फिर भी मै जो कुछ कह रहा हू, उसे मै अपने हृदय से करना चाहता हू (हृदय के ऊपरी, मध्यम और पार्श्व के हिस्सो से भी ।)

आपका,
जीन फ्रॉस्ट

३२० रफी अहमद किदवई की ओर से

गोरखपुर
२६ अप्रैल १९४१

प्रिय जवाहरलालजी,

श्रीमती पडित के चीन जाने के फैसले से मुझे कुछ फिक्र हो गई है । इसलिए नही कि लडाई का खतरा है, वल्कि इसलिए कि हिन्दुस्तान की हालत नाजुक है । मै महसूस करता हू कि अगर हम अपने मामलो मे ईमानदार है और हम चाहते हैं कि दूसरे भी यकीन करें कि हम ईमानदार है तब श्रीमती पडित जैसे खास लोगो को ऐसे किसी काम को हाथ में नही लेना चाहिए, जिसका सीधा ताल्लुक हमारे कामो से न हो । इसी तरह मै इसे भी मुनासिब नही समझता कि राजेन्द्रबावू की इज्जतवाला आदमी मुल्कभर में इस तरह के जल्सो में हिस्सा लेता हुआ घूमे, फिर चाहे वह दरभगा में जनेऊ हो और चाहे दिल्ली में तालीमी सघ की बैटक ।

मुझे यकीन है कि आप या श्रीमती पडित मेरे इस तरह लिखने से बुरा न मानेंगे ।

मै अच्छा हू और खुश हू और मुझे लार्ड हैलीफैक्स की इस धमकी से कोई परेशानी नही है कि वह २० साल तक लडाई चलायेंगे, जिनका मतलब है जेल में हमारी लगातार नजरवदी ।

आपका,
रफी

३२१ पूर्णिमा बनर्जी की ओर से

इलाहाबाद
७ मई १९४१

प्रिय जवाहरलालजी,

यह सोचा भी नही जा सकता कि पूरे चार साल तक मै आपसे मिल भी न पाऊ। जब आप लखनऊ में थे, मैं जानती थी कि आपका वक्त बेहद घिरा हुआ है और शायद देहरादून में भी 'बाहरी' लोगो के लिए आपके पास समय नही होगा। मैं कल्पना करती हू, मैं बाहरी ही कही जाऊगी। लेकिन मै आपसे मिलना चाहती हू। इसकी कोई खास वजह नही है, महज मेरी निजी इच्छा है।

मुझे पप्पू के साथ मसूरी में जाना पडेगा, इसमें मै अनिच्छा अनुभव कर रही हू। परन्तु वह सत्याग्रह की धमकी देते है और अगर मै न जाऊ तो खुद भी जाने से इन्कार करते है। इस तरह अडे रहकर मुझे उनकी छुट्टी खराब करना बुरा लगता है और इसलिए लगता है कि आखिर मुझे झुकना ही पडेगा। यह समस्या तभी हल हो सकती है, जबकि मै इस बीच गिरफ्तार कर ली जाऊ।[१]

. . . . .

सिर्फ आम और फौरन जरूरत की चीजो को छोडकर मैं कभी कुछ लिखने की नही सोचती हू।

मै २५ को सुबह ७-३० बजे देहरादून में होऊगी। वहा आपसे मिलने की मेरी बडी इच्छा है। अगर मेरा ऐसा सौभाग्य न हो तो २५ के बाद किसी भी दिन मुलाकात करने को तैयार हू। मसूरी से मैं आसानी से आ सकती हू।

मुलाकात के लिए मै अलग से सुपरिटेंडेंट को अर्जी दे रही हू। अगर इससे पहले गिरफ्तार करली गई तो सुपरिटेंडेंट को सूचना दे दूगी, जिससे अगर दूसरे किसीकी मुलाकात आपके साथ हो सकती हो तो वह मारी न जाय।

---

१ यहा का कुछ अश सेंसर ने काट दिया है।

मै तो यह भी नही जानती कि यह चिट्ठी पाने की आपको इजाजत मिलेगी ।

थोडी देर के लिए इन्दू से मिली थी । अब तो लगता है कि मै इतनी बडी, बूढी और बुजुर्ग हो गई हू और इतनी बीत चुकी हू कि हाल ही मे यूरोप से लौटनेवाले इन तेजस्वी लोगो से कोई चर्चा भी नही कर सकती । मैने कृष्ण मेनन के बारे मे पूछा । इन्दू कहती है कि वह हमेशा की तरह ही 'अस्थिर' है ।

आजकल इलाहाबाद में कोई नही है । इस पहलू से जेल से बाहर रहना या भीतर रहना एक-सा ही बुरा है ।

कैदियो की इलाहाबाद की टोली मजे में है । मुजफ्फर पहचान मे आनेवाले नही है । पिछले शनिवार को मै उनसे मिली थी । उन्हे फायदा हुआ है ।

यहा से रवाना होने से पहले मौलाना से मिलने का मेरा इरादा है । मेरा खयाल है कि गरमी और जेल एक क्षण के लिए भी उनकी शाति को भग नही कर पाये होगे और जिदगी के प्रति उनकी हमेशा की दृष्टि में भी कोई फर्क नही पडा होगा । दर-असल जेलें बेकार की सस्थाए है । ये किसीमें तब्दीली नही करती । ये न तो सुधार करने में सफल होती है और न दमन करने में ।

आप कैसे है ? मुलाकातें भी बेकार की चीजें है और मुझे यकीन है कि आपसे मिलने के बाद मुझे अच्छा नही लगेगा, लेकिन फिर भी उसमें कुछ तो है ही । अच्छा न लगने पर भी किसी चीज के लिए कीमत चुकाने से बचने या भागने में मेरा विश्वास नही है ।

इलाहाबाद-टोली की महिला सत्याग्रही तारीख ८ तक छूट जायगी । सुचेता को फैजाबाद की अपनी लीडरी का खमियाजा भुगतना पड रहा है । एक साल की सजावाली सिर्फ तीन है—वह, लक्ष्मीदेवी और उमा भाभी । मेरा समय अच्छी तरह से कटा, सिवा कम्यूनिटी बैरको मे रहने की तकलीफ के । श्रीमती पडित और मै कुछ दिन इलाहाबाद में साथ-साथ थे ।

मै प्रभावती से मिली । शायद आप जानते है, जयप्रकाश देवली में है ।

राममनोहर ठीक है, परन्तु उन्होने दाढी वढा रक्खी है और सिर सफाचट करा दिया है। मेरा मतलव है, सिरके वाल। उनकी सूरत देखते ही वनती है। मेरा खयाल है उन्हे, इसकी परवा नही है, क्योकि उनके आसपास वहा कही आइना तो है नही, नही तो वह फौरन पहले जैसी सूरत वना लेते। पिछले महीने की २८ तारीख को मै उनसे मिली थी।

देहरादून में सुन्दरतम पक्षियो मे से कुछ है। क्या आपके अहाते में भी कभी आ निकलते है? पक्षियो की देख-भाल में मै कुछ निपुण है। अगर आप पसन्द करें तो मै आपके लिए एक किताव ले आ सकती हू, जिसमें आपको हिन्दुस्तान के सव पक्षी मिलेंगे। आप उनका नाम जान सकेगे। मसूरी में मै वहुत दूर घूमने जाती हू और पक्षियो को देखते रहने में वडा आनन्द आता है।

सस्नेह आपकी,
नोरा

३२२ रिचार्ड राइत्सनेर की ओर से

सुडेटन जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के
लन्दन स्थित प्रतिनिधि
लन्दन,
१३ अगस्त १९४१

प्रिय पडित नेहरू,

बहुत सोच-सकोच के वाद हमने आपको पत्र लिखने और निर्वासित सुडेटन सोशलिस्टो की ओर से अभिनन्दन भेजने का निर्णय किया है। सन् १९३८ की भाग्य-निर्णायक गर्मियो में [illegible]ोडनवाच और प्राग में हमारी आप-

एक जनतत्रीय देश में नाजीवाद के विरुद्ध अन्तिम राजनैतिक लडाई लडने का सौभाग्य प्राप्त है। हमने अपने तीन हजार दोस्तो को भाग निकलने में सहायता दी है। आज वे इगलैण्ड, स्वीडन और कनाडा में निर्वासितो की तरह रहकर समय काट रहे है और भयानक-से-भयानक हत्याकाड के बावजूद हमारे मित्र स्वदेश में प्रसन्न है। हमें अपने उन साथियो से जो डचाउ में दो साल रहने के बाद भी आज जिन्दा है, चिट्ठिया और बधाइया मिली हैं। उन्होने हमे विश्वास दिलाया है कि अपने पुराने आदर्शों के लिए वे दृढतापूर्वक सघर्ष करते रहेगे।

पडित नेहरू, आपको यह पत्र हम एक ऐसे आन्दोलन के नाम पर लिख रहे है, जिसके सदस्यो की सख्या घटनाक्रम के कारण कम तो हो गई है, लेकिन जो यूरोपियन सोशलिज्म की अमर शक्ति के अभिन्न अग है।

हम आपके और आपके दोस्तो के गिरफ्तार किये जाने से दुखी है। हमें इस बात का अफसोस है कि नेशनल काग्रेस का शक्तिशाली प्रगतिवादी वर्ग इस महान सघर्ष से बाहर है। हमे ऐसा लगता है कि नेशनल काग्रेस और ब्रिटिश सरकार के सबधो के बीच जो गतिरोध उत्पन्न हो गया है उससे नेशनल सोशलिज्म और फासिज्म के विरुद्ध मोर्चा लेनेवाली विश्व की डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट शक्तियो के बीच एक गहरी खाई खुद गई है। हिंदुस्तान की समस्या की ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि से हम पर्याप्त रूप से परिचित नही है और हम उससे सम्बन्धित दोनो शक्तिशाली सहयोगियो में से एक को भी सलाह देने का अधिकार नही रखते, किन्तु हमें विश्वास है कि जबसे रूस युद्ध में आया है तबसे युद्ध ने मुक्ति-युद्ध का रूप ले लिया है। हमें यह भी विश्वास है कि हिटलर, मुसोलिनी और फ्रांस की पराजय से सारे ससार में प्रजातत्रीकरण का एक नया युग आरम्भ होगा और इस विकास-क्रम में हिंदुस्तान को अपनी स्थिति सुधारने का अच्छा अवसर मिलेगा।

सोशलिस्ट होने के नाते हम चाहते है कि इस युद्ध की विभीपिका से एक स्वतत्र और सयुक्त यूरोप का प्रादुर्भाव हो। हमारी सारी चेष्टाए इसी उद्देश्य की प्राप्ति की ओर लगनी चाहिए। हमारे रास्ते में वहुत-सी प्रबल बाधाए हैं फिर भी हमें इससे प्रोत्साहन मिलता है, कि सभी राष्ट्रो

की प्रगतिशील शक्तिया इस बात को निरतर बढती हुई स्पष्टता के साथ अनुभव कर रही है कि शक्ति तभी दृढ और सुरक्षित हो सकती है जब उसके मूल में यह भावना हो कि सभी स्वतन्त्र देश और उनकी जनता एक-दूसरे पर निर्भर है। यूरोप को स्वतत्र हिंदुस्तान जैसे सहयोगी की आवश्यकता है, लेकिन हिंदुस्तान को भी स्वतत्र यूरोप जैसे सहयोगी चाहिए।

इस दृष्टि से क्या हम आपको कुछ ऐसे सुझाव भेज सकते है, जिनका प्रभाव आपसे और हमसे समान रूप से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नो पर पडता है ?

हो सकता है कि ब्रिटिश नीति मे गलतिया हो—उदाहरण के लिए म्यूनिक के पहले शिकार हम बने—फिर भी फ्रास के पतन और रूस पर हिटलर के आक्रमण के बीच के सालो मे ससार की स्वतत्रता का पूरा बोझ इगलैण्ड की जनता पर ही था। १९३८ के पतझड में हमारे स्वप्न बडी कटुता के साथ छिन्न-भिन्न हो गये थे और शायद यही कारण है कि हम उस कटुता को समझ पा रहे है, जो आप अपने कारागृह में अनुभव करते है। किन्तु देश में निर्वासितो की तरह रहते हुए हमने अपनी आखो से अग्रेज राष्ट्र को पीडा भोगते और सघर्ष करते देखा है, जिसके कारण हमारी कडवी भावनाए प्रशसा में बदल गई है। पडित नेहरू, विश्वास कीजिये कि जिस समय लन्दन की जनता घातक बमबारियो का आश्चर्यजनक साहस के साथ सामना कर रही थी, उस समय निस्सदेह वह किसी साम्राज्यवादी उद्देश्य का प्रतिपादन नही कर रही थी। वह स्वतन्त्रता के लिए लड़ रही थी, ठीक वैसे ही, जैसे आप अपने देश में और हमारे साहसी वीर सुडेटन क्षेत्रो में लड रहे है।

हमारा विचार है कि स्वतत्रता, जनतत्र और शान्ति के युग की स्थापना में योग देनेवाली समस्त शक्तियो को इस युद्ध के बाद कधे-से-कधा भिडाकर एक ही रास्ते पर चलना पडेगा। हमें आशा है कि हिंदुस्तान में भी स्थितिया अच्छाई की ओर मोड लेंगी।

यद्यपि हमारी चेक-सुडेटन-जर्मन समस्या हिन्दू-मुस्लिम एकता की समस्या से बहुत ही कम समता रखती है, फिर भी हम बडे प्रसन्न होगे यदि किसी दिन हम अपने स्वतत्र देश में आपका एक स्वतत्र अतिथि के

रूप में स्वागत कर सके और मध्य यूरोप के सगठन की समस्याओ के बारे मे आपकी राय ले सके। इसे आप हमारा निमत्रण समझिये और एक बार फिर प्राग् और बोडनबाच में हमारे अतिथि बनने की कृपा कीजिये।

तब हम और आप अग्रेजी में बातचीत कर सकेंगे, क्योकि अपने निर्वासन के वर्षो में हमने इगलैण्ड की भाषा, साहित्य और दर्शनशास्त्र से परिचित होने का अवसर निकाल लिया है।

अपने सभी साथियो की ओर से हम आपको अपनी गहरी-से-गहरी सहानुभूति का विश्वास दिलाते है।

अगर आप राजनैतिक साहित्य पढने की स्थिति मे हो तो हम आपको 'इगलैण्ड और अन्तिम स्वतत्र जर्मन' नामक पुस्तिका की और सुडेटन समस्या के भावी समझौते के बारे में अपने दल के घोषणा-पत्र की एक-एक प्रति भिजवा रहे है।

आपका,
रिचार्ड राइत्सनेर
वेनजल जेकश्च

३२३. एलिनोर एफ. रैथबोन की ओर से

[चूकि उस समय मै जेल में था, इसलिए यह पत्र यू. पी. के गवर्नर के पास भेजा गया था, जिन्होने इसे मेरे पास देहरादून जिला-जेल में भिजवा दिया था।]

कामन्स सभा
लन्दन
२८ अगस्त १९४१

प्रिय पडित नेहरू,

आपके लम्बे पत्र के लिए धन्यवाद। यह मुझे कई सप्ताह पहले मिल गया था, किन्तु कार्य अधिक होने के कारण मै इस इन्तजार में थी कि पार्लमेट की छुट्टी हो तब जवाब दू। यह समय बरबाद नही गया है, क्योकि इस बीच आपके पत्र को श्री एमेरी, बहुत-से ससद-सदस्य और भारतीय मामलो मे विशेष रूप से दिलचस्पी लेनेवाले कितने ही दूसरे लोग पढ चुके है।

मै पूरे पत्र का उत्तर देने की चेष्टा नही करूगी, बल्कि केवल उन्ही बातो को लूगी जो मुझे अपने और आपके बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रतीत होती है।

मुझे अफसोस है कि आप ऐसा अनुभव करते है कि "हिंदुस्तान के साथ इग्लैण्ड के सम्बन्ध पर विचार करने के लिए हमारे बीच कोई समान आधार नही है।" मै समझती हू कि इसके लिए काफी आधार इस बात में है कि हम दोनो ही न सिर्फ हिंदुस्तान की जनता के लिए, बल्कि सभी देशो की जनता के लिए स्वतत्रता, जनतत्र और सामाजिक उन्नति में समान रूप से विश्वास करते है। किन्तु इसमें सन्देह नही कि हम दोनो इन साध्यो की व्याख्या बिल्कुल भिन्न-भिन्न रूप से करते है और उनकी प्राप्ति के साधनो तथा गति के सम्बन्ध में बहुत ज्यादा मतभेद रखते है।

गति के बारे में जो मतभेद है वह मुझे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मालूम देता है। पिछले बीस वर्षों मे आपने थोडा-थोडा करके स्वशासन का जो अधिकार प्राप्त किया है और कुछ शर्तो पर आपको भविष्य मे औपनिवेशिक स्वराज्य का जो वचन दिया गया है, उसे आप 'तिरस्कार और अपमान' मानते है। मेरी और करीब-करीब सभी अग्रेजो की दृष्टि में स्वशासन और दूसरे सुधारो को थोडा-थोडा करके देने में हिंदुस्तान के साथ उसी प्रणाली को व्यवहार में लाया गया है, जिसका व्यवहार हमारी सरकारो ने स्वय हमारे साथ किया है। यह वही प्रणाली है, जिसपर हमारी अपनी स्वतत्रताए धीरे-धीरे करके खडी की गई है और जिसके द्वारा हमने उन्नति की है। यही कारण है कि हमने 'क्रमिक विकास की अनिवार्यता' में विश्वास करना सीखा है—उसकी दार्शनिक नही, बल्कि व्यावहारिक अनिवार्यता में। इसका यह अर्थ नही है कि इस प्रणाली के विरुद्ध हम अक्सर चीखते-चिल्लाते नही है। इसकी गति बहुधा अनावश्यक रूप से धीमी मालूम देती है और जब सुधार अन्तिम रूप से प्राप्त हो जाता है तब यह सोचकर बडा बुरा लगता है कि न जाने कितने उसकी प्रतीक्षा-ही-प्रतीक्षा मे मर मिटे। फिर भी कुल मिलाकर हमें यह बात स्वीकार करनी पडती है कि इस प्रणाली ने अच्छा काम किया है और हमें उन अनेक दुर्भाग्यो से बचा लिया है, जिनका पहाड हमारे देशवासियो पर पहले टूट चुका है—उदाहरण

के लिए, रक्तमय विद्रोह, हिंसात्मक प्रतिक्रियाए, कुविचारित सुधार, जिन्हे सम्पूर्ण रूप से लागू करने पर परिणाम बुरा निकला, अच्छे सुधार, जो इतनी सरलता से मिल गये कि उनसे लाभान्वित होनेवाले लोग यह अनुभव ही नही करते कि उन्हे कुछ मिला है और इसलिए वे न तो उनकी कीमत समझते है, न उनकी रक्षा करते है।

गति के सिलसिले में मुझे यह बात बडी अजीब मालूम देती है कि आप जैसे विचारोवाले हिंदुस्तानी जब अपने ही देश नही, बल्कि दूसरे देशो की भी सुरक्षा तथा हित पर प्रभाव डालनेवाले महान राजनैतिक परिवर्तनो पर वाद-विवाद करते है तब तो कहते है—'या तो पूरा लेंगे या बिल्कुल नही' और 'सबकुछ एक ही बार में दे दो', किन्तु जब सामाजिक सुधारो की बात आती है, जहा तेजी कम खतरनाक होती है, तब हिंदुस्तानी भी उतने ही क्रमश वादी दिखाई देने लगते है, जितने कि हम है। कम-से-कम बाल-विवाह और पर्दा के प्रश्नो के सिलसिले में तो मुझे ऐसा ही लगा। इन कुप्रथाओ के सम्बन्ध में ब्रिटिश अधिकारियो के धीमे और भयभीत आचरण को अधिकाश उग्र-से-उग हिंदुस्तानी सुधारको ने चुपचाप स्वीकार कर लिया और मुझे इस बात का कोई सकेत दिखाई नही देता कि स्वतत्र हिंदुस्तान उनके सम्बन्ध में कुछ अधिक तीव्रता से कार्य कर सकेगा, यद्यपि मै जानती हू कि इस बात का दावा अवश्य किया गया है। हा, अस्पृश्यता की ओर गाधीजी का रुख एक अपवाद अवश्य है। किन्तु उसका सम्बन्ध पुरुषो और स्त्रियो दोनो से है। फिर भी इन दोनो सामाजिक कुप्रथाओ ने निश्चय ही हिंदुस्तान के स्वास्थ्य, शक्ति, शिक्षा आदि की उन्नति को इतना ही रोका है, जितना कि ब्रिटिश शासन के मत्थे थोपी जा सकनेवाली किसी भी त्रुटि ने रोका होगा।

जो अग्रेज करीब-करीब आप ही जैसा दृष्टिकोण रखते है, उनके प्रयत्नो को भी आप बहुत ही उपेक्षा की दृष्टि से देखते है। "इन नेकनीयत व्यक्तियो या समूहो का ब्रिटेन की शासन-नीति या लूटने-खसोटनेवाले साम्राज्यवादियो पर कोई प्रभाव नही है।" इस विषय पर ब्रिटेन का ससद्-सदस्य शायद आपसे ज्यादा अच्छा निर्णय कर सकता है और मुझे इसमें सन्देह नही कि आप गलत है—यह बात और है कि सन् १९२० से अब

तक थोडे-थोडे करके स्वशासन के जितने अधिकार मिले है, उन्हे आप न केवल नगण्य बल्कि 'तिरस्कारपूर्ण और अपमानजनक' भी मानते है। पार्लमेंट के भीतर और बाहर जो लोग भी हिंदुस्तान के समर्थक है उन्होने इन अधिकारो को दिलवाने और शासन की नीति पर प्रभाव डालने के लिए बहुत काम किया है। शायद वे और भी अधिक दिलवा पाते, यदि उन्होने अपने हिंदुस्तानी मित्रो की इच्छा का पालन करके अप्राप्य को मागने की चेष्टा न की होती। मुझे याद है, सन् ३५ के कानून के बाद श्री जोशी ने मुझसे पूछा था कि महिलाओ से सम्बन्धित कानून के मूल प्रस्ताव में (खास तौर से मताधिकार की योग्यता और सीटो के सरक्षण के प्रश्न पर) मैंने किस तरह इतने सुधार करा दिये, जितने कि मजदूर-दल अपने मजदूर-सघो के लिए भी नही करा पाया था? मैंने जवाब दिया कि इसका कारण यह है कि मजदूर-दल के सशोधन बहुत ही उग्र थे, जबकि मेरी आदत यह है कि मैं पहले ही अपने मन में पक्का कर लेती हू कि मुझे अधिक-से-अधिक कितना मिल सकता है और फिर उसीके अनुसार या तो ठीक उतना ही मागती हू या सौदेबाजी के लिए थोडी-सी गुजाइश छोडकर २० प्रतिशत ज्यादा माग लेती हू। "सबसे अधिक नही, बल्कि प्राप्त हो सकनेवाला सबसे अधिक", यही मेरा सिद्धान्त रहा है। मैं जानती हू कि आप ऐसी अवसरवादिता से घृणा करते है। मैं केवल इतना कह सकती हू कि ऐसी बात करने से काम बन जाता है।

जहातक आपका यह कहना है कि "सिद्धान्तत या व्यावहारिक रूप से आप हिटलर के 'गौलीटरो' और हमारे वाइसरायो तथा गवर्नरो के बीच कोई अन्तर नही पाते", वह तो निश्चय ही आपकी मानसिक स्थिति का परिचायक है। जो कुछ भी हो, आप मुझपर 'युद्ध-मनोवृत्तिवाले व्यक्ति के क्रोध और कटुता' का दोषारोपण करते है। इन शासको में से कुछके व्यक्तित्व के चित्र मेरी आखो के सामने घूम जाते है—लार्ड हेलीफैक्स, लार्ड विलिंगडन, लार्ड लिनलिथगो, लार्ड हेली, सर मान्टेगो बटलर, सर हरबर्ट इमरसन (मैं नये आदमियो को नही जानती)। क्या सैद्धान्तिक या व्यावहारिक रूप से कोई अन्तर नही है हिटलर के गौलीटरो और इन व्यक्तियो में, जो न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और सुलहपसन्द बने रहने

तथा परस्पर-विरोधी उद्देश्यो मे समझौता करने के लिए लगातार चेष्टा करते रहे हैं, भले ही उन्हे इस चेष्टा मे सदा सफलता न मिली हो ?

फिर भी मै स्वीकार करती हू कि जब आप अपने पत्र में आम बातो से विशेष बातो की ओर जाते है और हिंदुस्तानी शासन पर दोषारोपण करते है तब अपने प्रति मुझे उतना विश्वास नही रह जाता। जहातक युद्ध-उद्योग का प्रश्न है—विशेष रूप से हवाई जहाज की आयोजित फैक्टरी का, जिसकी आपने चर्चा की है और हिंदुस्तानी जहाजरानी के प्रति हमारी नीति का—इसका उत्तर श्री एमरी ने आशिक रूप से पार्लामेंट में दे दिया है और मुझे व्यक्तिगत रूप से विश्वास दिलाया है कि आपका दोषारोपण बिल्कुल निराधार है। (इस सम्बन्ध में सर जार्ज शुस्टर की वह राय भी पढिये जो उन्होने पहली अगस्त की बहस मे व्यक्त की थी—मै "हैनसर्ड"—ससद की कार्रवाई की छपी रिपोर्ट—भेज रही हू।) अपूर्ण या पक्षपातपूर्ण जानकारी के कारण निर्णय करने और अनुमान लगाने में गलतियो की गुजाइश हो सकती है, किन्तु यदि आप यह सोचें कि यहा का कोई अधिकारी ब्रिटेन के निहित स्वार्थ या ईर्षा से प्रभावित होकर जान-बूझकर हिंदुस्तानी युद्ध-उत्पादन को सीमित करना चाहेगा, तो इसका यह मतलब है कि आप निश्चय ही हमारे आदमियो को गलत समझते है। इससे पता चलता है कि आप यहा के लोगो की मानसिक प्रवृत्ति को समझने में कितने असफल है। उन्होने तो युद्ध में विजय पाने के अपने मुख्य उद्देश्य पर ही अपनेको केन्द्रित कर रखा है और इसमे सन्देह नही कि व्हाइट हाल में या दिल्ली मे जो सरकारी अधिकारी हैं, वे वास्तविकता को जानने और हिन्दुस्तान के युद्ध-उत्पादन की सम्भावनाओ का अनुमान लगाने मे आपसे कही अच्छी स्थिति में है, क्योकि परिवहन, सामग्री, औजार, कुशल व्यक्तियो की कमी आदि के कारण उत्पन्न सीमाओ को वे जानते है।

लेकिन जब आप दूसरी बातो की चर्चा करते है—उदाहरण के लिए कैदियो और नजरबन्दो के प्रति किये जानेवाले व्यवहार, भेदिया प्रणाली आदि की—तो आप जो कुछ भी कहते हैं अपने अनुभव के आधार पर कहते हैं, इसलिए मैं मन-ही-मन बडी व्यग्रता का अनुभव करती हू।

आज से दस साल पहले जब मै कुछ दिनो के लिए हिंदुस्तान गई थी तब और उसके बाद भी मैने हिंदुस्तानियो और हिंदुस्तान के ब्रिटिश मित्रो के मुह से बहुत-कुछ सुना, जिसका आशय यह है कि शान्ति के दिनो में भी हिंदुस्तान में अनावश्यक निर्दयता का बोलबाला है, जिसका स्पष्ट कारण यह है कि शासन का काम बहुत दूर से चलाया जा रहा है, वह अत्यधिक केंद्रित है और जिनके माध्यम से वह चलाया जा रहा है, वे न पूरी तरह से प्रशिक्षित है, न उनके काम की ठीक से देखभाल ही होती है। आतकवाद से उत्पन्न क्रोध और भय ही उन दिनो इस निर्दयता का आम बहाना था। मुझे उम्मीद थी कि सन् १९३५ के बाद प्रान्तीय सरकारो की शक्ति बढ जाने से यह आतक मिट गया होगा। किन्तु युद्ध से नृशसता को प्रोत्साहन मिलता है, जिसका एक कारण यह है कि आतकवाद की ही तरह युद्ध भी क्रोध और भय को प्रेरणा देता है और दूसरा यह कि उच्च अधिकारियो मे से योग्यतम व्यक्ति युद्ध-कार्यों में लगा दिये जाते हैं। इन सब बातो के बारे में मै उन लोगो से विचार-विनिमय करना चाहती हू, जो सत्य पर कुछ प्रभाव डाल सके और साथ-ही-साथ सम्भव उपाय भी बता सके।

अब मै फिर से मुख्य बात पर आती हू। आपके पत्र में जो मूलभूत भूल मुझे शुरू से आखिर तक दिखाई देती है, वह यह है कि आप यह मान लेते है कि आप पूरे हिंदुस्तान और हिंदुस्तान की जनता की ओर से बोल रहे है। ("अगर हम एक-दूसरे से सहमत नही हो सकते तो फिर ब्रिटिश सरकार हमें अपनी ही युक्तिया क्यो नही करने देती ?") आप अपने देश के उन अनेकानेक वर्गों को भूल जाते है—मानो वे स्लेट पर लिखे अक्षरो की तरह स्पज से मिटाये जा सकते हो—जो हिंदुस्तान के भविष्य के बारे में आपसे पूरी तरह से असहमत है और अगर हम उनसे यह कहकर अलग हो जाय कि 'लो, हम तुमसे थक गये, तुम आपस में ही लडकर फैसला कर लो' तो हमारा ऐसा करना वे साथ छोडकर भाग जाना तथा विश्वास-घात मानेंगे। मै समझती हू कि ऐसा वे ठीक ही सोचेंगे। क्या आपने एक सम्माननीय व्यक्ति की तरह अपने मन से पूछा है कि अगर आप हमारी जगह होते तो ऐसा करते ?

काग्रेस की मागो के औचित्य और अनौचित्य की बात को छोडते हुए

आप यह सोचिये कि किसी एक राजनैतिक दल की मागो को स्वीकार करने के लिए—चाहे वह सबसे बडा और सबसे प्रगतिशील दल ही क्यो न हो—यदि आपको दूसरे विचारोवाले उन सभी दलो और समुदायो को दिये गए आश्वासनो को वापस लेना पडे, जिन्होने आपको सहायता दी है और आपके साथ सहयोग किया है, तो क्या आप उस एक राजनैतिक दल के आगे घुटने टेक देंगे ? जिस युद्ध के भविष्य पर न केवल ग्रेट ब्रिटेन बल्कि यूरोप और स्वय हिंदुस्तान की भी भावी सुरक्षा निर्भर है, क्या उस युद्ध के बीचोबीच—जब इनके सहयोग की सबसे अधिक आवश्यकता है—आप ऐसा करेंगे या करने का वचन देंगे ? और, क्या आप यह सब इस भोले-भाले विश्वास के साथ करेंगे कि काग्रेसी हिंदुस्तान के साथ किया गया उदारता का एक महान कार्य लोगो के हृदय में इतना परिवर्तन ला देगा कि उससे युद्ध मे हमारा साथ देनेवाले हिंदुस्तानियो के दूसरे वर्गों मे उत्पन्न शत्रुता और कटुता की क्षतिपूर्ति हो जायगी ?

मै आपको यह याद दिलाना चाहती हू कि आयरलैंड और ट्रीटी बन्दरगाहो के साथ हमें जो अनुभव हुआ है उससे हमें इस प्रकार के विश्वास-कार्य के लिए प्रोत्साहन नही मिला है। मै तो यह कहना चाहती हू कि ऐसा प्रोत्साहन हमें आपके पत्र के रुख, पुस्तक या आपके दल के दूसरे लोगो के वक्तव्यो से भी नही मिला है, बल्कि इनमें एक प्रकार की शत्रुता है जो कि शायद अपरिवर्तनीय है, क्योकि उसकी जडें अपरिवर्तनशील अतीत मे गडी हुई है।

हा, हम एक-दूसरे के हृदय की सच्चाई में विश्वास कर सकते हैं, जैसा कि आप कहते है। किन्तु आपके हृदय की सच्चाई ने मुझे जो कुछ दिखाया है वह है एक खाई, जो कि पाटी नही जा सकती। हो सकता है कि मै गलती पर होऊ।

सस्नेह आपकी,
एलिनोर एफ. रैथबोन

फिर से—

अलग डाक से मै आपको (१) हिंदुस्तान पर की गई सबसे नई बहस का "हैनसर्ड" और (२) हिंदुस्तान पर अपनी छोटी पुस्तक भेज रही

हू । मै आपको आपकी पुस्तक की भी एक प्रति भेजना चाहूगी, जो कि आप कहते है, आपने देखी नही है । लेकिन मै कह नही सकती कि ऐसा करने के लिए मुझे इजाजत मिलेगी या नही ।

३२४. सर जार्ज शुस्टर की ओर से

मिडिल वार्टन, ऑक्सन,
२३ सितम्वर १९४१

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

मैने मैकमिलन कम्पनी से कहा है कि जैसे ही पार्सल हिंदुस्तान पहुचे वैसे ही वह 'इडिया एड डेमोक्रेसी' ('भारत और लोकतत्र') पुस्तक की एक प्रति आपके पास भेज दें । यह पुस्तक अभी-अभी प्रकाशित हुई है और मै इसका सयुक्त लेखक हू । यह पुस्तक रूस पर आक्रमण होने से पहले जून के प्रारम्भ में ही समाप्त हो गई थी और उसके वाद भी आज की निरन्तर परिवर्तनशील स्थिति मे अनेक परिवर्तन हुए है । किन्तु यह एक लम्वा पर्यवेक्षण है और इसमें जो कुछ भी लिखा गया है उसपर इन दिनो प्रतिदिन होनेवाले परिवर्तनो का कोई प्रभाव नही पडा है । पुस्तक दो भागो में है । पहले भाग को विन्ट ने लिखा है और इसमें ऐतिहासिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि देते हुए हिंदुस्तान की स्थिति का पर्यवेक्षण किया गया है । इसमें वहुत-कुछ ऐसा है जिससे आप असहमत होगे, किन्तु यह ईमानदारी के साथ लिखा गया है और इसमें लेखक का दृष्टिकोण सच्चाई के साथ व्यक्त हुआ है । मैने विन्ट के दृष्टिकोण पर कोई प्रभाव डालने की चेष्टा नही की है और जैसाकि मैने भूमिका मे कहा है, यदि यह भाग मैने स्वय लिखा होता तो मै वहुत-सी वातें दूसरे ढग से प्रस्तुत करता । किन्तु अपने भाग में (भाग दो में) मैने उसकी चर्चा की है और उसकी सराहना करते हुए मैने ये सवाल पूछे है—'भविष्य का क्या होगा ?', 'हमें क्या करना चाहिए ?' मुझे उम्मीद है कि आप मेरे द्वारा लिखे गए भाग को पढने योग्य पायेंगे । इसके बारे मे मै केवल इतना दावा करना चाहूगा कि मैने सत्य को जैसा देखा है उसे वैसा ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है और शायद आप कम-से-कम इतना तो अनुभव करेंगे ही कि मैने जो कुछ भी कहा है, उसमें एक ऐसा रुख छिपा हुआ है, जिसके प्रति आपकी भावना सम्पूर्णत असहानुभूति-

पूर्ण नही है। जो कुछ भी मैंने लिखा है, उससे यदि सत्य को खोजने में सहायता मिलती है—चाहे वह सत्य वैसा न भी हो जैसा मैंने उसे देखा है—तो मैं समझूंगा कि मेरा उद्देश्य पूर्ण हुआ।

मुझे इस बात का पूरा आभास है कि आपको यह बात गुस्ताखी मालूम दे रही होगी कि हम विदेशियो मे से कोई भी आपके देश के बारे मे लिखें और इससे भी ज्यादा यह कि आपको यह उपदेश दे कि आपको क्या करना चाहिए। मैंने अक्सर महसूस किया है कि जब कभी हम एक-दूसरे के सम्पर्क मे आये हैं, मैंने आपको इस मामले में विशेष रूप से उत्तेजित ही किया है—उदाहरण के लिए पिछले मौके पर जब आप चैथम हाउस में बोले थे। काश कि ऐसा न होता! मुझे आपके पिता से विशेष स्नेह था और मैं उनका बडा आदर करता था। जहातक आपका सवाल है, मेरी स्मृति में आपकी उस यात्रा का चित्र सदा अकित रहता है जब आप शिमला मे मुझसे पीटरहोफ में मिले थे और मुझसे मेरे पढने के कमरे में बातचीत करने के बाद आप गोल कमरे में हमारी पारिवारिक पार्टी में शामिल होने आये थे, जिसमें मेरी पत्नी और मेरे वे दो लडके भी थे, जो ऑक्सफोर्ड से अपनी लम्बी छुट्टी बिताने मेरे पास आये थे। उस थोडे-से समय में बन्धुत्व और एक-दूसरे को समझने की भावना की अनोखी चमक दिखाई दी थी। काश कि ऐसा फिर हो सकता! सम्भव है कि युद्ध के समाप्त होने से पहले समान खतरे हमें कुछ अधिक पास ले आयें या युद्ध-सबधी आवश्यकताओ की भट्टी में पुराने हठपूर्ण विरोध जल जाय। जहातक मेरा अपना सवाल है, जिन दो लडको से आप मिले थे उनमें से एक मारा जा चुका है और दूसरा समुद्र-पार एक खतरे की जगह काम कर रहा है। ऐसे तथ्य छोटी-छोटी नगण्य बातो को दूर हटा देते है और हमें मूलभूत बातो के निकट ले आते है। जो लोग एक-दूसरे से बुनियादी बातो मे मतभेद रखते है, जैसेकि आप और मैं (यद्यपि मैं ऐसा विश्वास नही करता), वे भी यदि एक-दूसरे की सच्चाई पर विश्वास रखें तो सयुक्त हित की बातो में वे न केवल एक-दूसरे की सहानुभूति प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि उन्नति के पथ पर भी आगे बढ सकते है। मैं समझता हूं कि आप इस बात से सहमत होंगे कि भारतीय समस्या इस अर्थ मे एक सयुक्त हित की बात है कि

यदि हिंदुस्तान में पूर्ण स्वराज्य की स्थिति उत्पन्न करने के लिए जिन सक्रमणकालीन प्रयत्नो की आवश्यकता है उनमें ब्रिटेन और हिंदुस्तान मिलकर काम करें तो वे मानव के दु ख-दर्द को बहुत-कुछ रोक सकते है। जहा-तक हमारी सच्चाई में विश्वास स्थापित करने का प्रश्न है, मुझे उम्मीद है कि मेरी पुस्तक इस दिशा में कुछ कर सकेगी।

जो हो, कृपाकर मेरी बातो पर गम्भीरतापूर्वक विचार कीजिये और जो कुछ भी मैने पुस्तक में लिखा है उसपर अपनी राय लिख भेजिये, चाहे वह पूर्णरूप से आलोचनात्मक ही क्यो न हो।

सस्नेह आपका,

जार्ज शुस्टर

फिर से—

इस पत्र को लिखने के बाद मिस एलिनोर रेथबौन ने मुझे वह पत्र दिखाया, जो आपने उन्हे लिखा था। जो कुछ भी आपने लिखा है, उसको पढने के बाद मै महसूस करता हू कि न तो मेरे इस पत्र से, न जो कुछ मैंने अपनी पुस्तक में कहा है उससे ही, आपके प्रश्नो का पूरा-पूरा उत्तर मिल पाता है। बहुत-सी बातो में—सब बातो में नही—हमारे उद्देश्य एक-दूसरे के प्रतिकूल हैं। आपने मिस रैथबोन को अपने पत्र में जो बातें लिखी हैं, उनमें से बहुतो पर मै सावधानी के साथ कुछ कहना चाहता हू और मुझे उम्मीद है कि अगर मै कुछ ही दिनो में आपको फिर से पत्र लिखू तो आप बुरा नही मानेंगे।

३२५. पूर्णिमा बनर्जी की ओर से

सेण्ट्रल जेल, लखनऊ

८ नवम्बर १९४१

प्रिय जवाहरलालजी,

हालाकि मेरे मन में उत्सव मनाने की कोई बात नही है, लेकिन मैंने सोचा कि आज आपको पत्र लिखकर 'जवाहर-दिन' मना लू। मुझे उम्मीद है कि मेरे इस पत्र के प्राप्त होने से जिस किसीके पत्र की आप उम्मीद कर सकते है, उसे आपको मिलने में कोई अड़चन नही होगी। अगर अडचन पडी तो मुझे दु ख होगा।

मै आपको हैवलॉक एलिस की आत्म-कथा भेजने की सोचती रही हू।

आप उसे पसन्द करेगे। परन्तु आप हमेशा इतने अप-टू-डेट रहते है और पुस्तको की दृष्टि से इतना आगे बढे हुए कि मुझे कोई दूसरी कल्पना करने में सकोच होता है।

इलाहाबाद में करीब एक महीने रहने के बाद मै यहा आ गई। सुचेता और उमा भाभी अपनी सजा का आखिरी महीना काट रही है। यदि जे गगानाथ के फैसले के फलस्वरूप अधिकारियो की कर्तृत्व-शक्ति में कुछ सुधार हुआ तो इन्हे उसका कोई लाभ नही मिलेगा। डा काटजू तक के लिए भी यह 'का वर्षा जब कृषी सुखानी' जैसी बात होगी। मेरे मामले की जड तो स्पष्टत बजर भूमि में है, लेकिन मुझे इसकी कतई परवा नही है। मुझे न तो ज्यादा फायदा होने को है, न नुकसान, अपनी बेडियो का भी नही। मुझे जिंदगी बिना उत्तर की चिट्ठी जैसी लगती है। अगर कोई काफी समय तक उसका जवाब नही देता तो वह स्वय अपने को जवाब देने लगती है या बिना उसके ही ठीक चलता रहता है।

सुचेता मुझसे बिछुड जायगी, लेकिन अकेला रहना मुझे अखरेगा नही। धीरे-धीरे यहा लोग कम हो रहे है और जल्दी ही हम सिर्फ चार जने रह जायगे—दो सजा-याफ्ता और दो हम नजरबन्द।

आज सुबह के अखबार में एक्जीक्यूटिव कौसिल की खबर है। जब हम देवली में नौजवानो पर कोडे बरसने (?) के बारे में सोचते है तो हमारे दिल इतने उमडते है कि खाना भी हमारे गले नही उतरता। मेरी ज्यादा हमदर्दी तो उनकी औरतो से है। जहातक जयप्रकाश का सबध है, मेरी सरक्षक प्रवृत्ति बहुत ही उभर आती है और मुझे दु ख होता है। क्या आपने 'स्टेट्समैन' और टहलने के कानून के बारे में सबकुछ पढा, भले ही यह जेल के बरामदे मे टहलने के कानून के बारे में है? बतौर मजाक के यह अच्छा है और उसका हास्यास्पद पहलू है, लेकिन 'स्टेट्समैन' द्वारा ऐसा करना ठीक नही जो गभीर राजनीति के साथ इसको मिला देता है।

जल्दी ही आप बिल्कुल अकेले रह जायगे। सुन रही हू कि श्री पडित दिसम्बर में बाहर आ रहे है। आप तो सबके साथ रहते हुए भी अक्सर अकेले ही लगते है और आप दूसरो को ऐसा आभास कराते है कि आप

जव अकेले होते हैं तो उससे कम अकेले कभी नही रहते । इसीलिए मैं विश्वास करती हू, आप अकेले नही होगे ।

श्री पडित और डा रामस्वरूप और आपके मेहरवान जेलर को मेरा स्मरण ।

सादर आपकी,
नोरा

सेन्सर द्वारा पास किया गया
हस्ताक्षर
एस आई, डी आई एस, लखनऊ
९-११-४१

३२६ श्यामाप्रसाद मुकर्जी की ओर से

कलकत्ता
२३ नवम्बर १९४१

प्रिय पडितजी

आपके तुरन्त उत्तर के लिए धन्यवाद । उसका मुझपर गहरा असर हुआ है । मेरी आपसे तर्क करने की कोई इच्छा नही है । अगर आप मुझे कहने की अनुमति दें तो मैं कहूगा कि मैं आपकी भावनाओ को अच्छी तरह समझता हू । भारत में जिस स्थिति में हम हैं, जेलखाना केवल अपनी चहारदीवारी तक ही सीमित नही है, इस विशाल देश का सपूर्ण क्षेत्रफल जेल बना हुआ है। इसे अपने-आपको समझने के लिए अभी बहुत-सी अग्नि-परीक्षाओ में से होकर गुजरना है ।

तो भी, मैं बहुत ज्यादा इच्छुक हू कि आप कृपया अपने निर्णय पर फिर से विचार करेंगे । विश्व-इतिहास के आपके सूक्ष्म विश्लेषण और भारतीय सघर्ष की पृष्ठभूमि ने आपको राजनैतिक विचारको की प्रथम पक्ति में ला खडा किया है । आज हम एक जबरदस्त उथल-पुथल में से गुजर रहे है । यद्यपि फूट और दमन के बादल हमारे दिलो में अक्सर निराशा पैदा करते रहते हैं, फिर भी हम वर्तमान स्थिति को, जो हो चुका सो हो चुका मानकर, स्वीकार नही कर सकते और उसके सामने चुपचाप सिर नही झुका सकते । परिवर्तन निश्चित आयेगा, लेकिन वह आयेगा

मानव-जाति के प्रयत्न से ही, जब वह सत्ता, सपत्ति और प्रतिष्ठा की तीन विनाशकारी शक्तियो से प्रेरित होना बद कर देगी ।

जहातक भारत की स्थिति का सवाल है और खास करके हिन्दुओ के भविष्य का, कुछ बातो मे आप और मेरे जैसे विचार के लोगो के बीच सच्चा मतभेद हो सकता है । परन्तु हम सब विश्वास करते है कि भारत ने युग-युग से मानव-आत्मा की स्वतन्त्रता का एक अमर सन्देश दिया है और वही सभ्यता को विनाश से बचा सकता है और उसे ज्यादा उच्च एव उदात्त स्तर की ओर ले जा सकता है । जब आप मुक्त हो और जब आप चाहे—मैं इसके लिए समय की कोई अवधि नही रखता—मैं चाहूगा कि आप हमारे लिए कमला-व्याख्यान-माला के माध्यम से भारत के घटनापूर्ण इतिहास का एक निष्पक्ष अवलोकन प्रस्तुत करें । यह भी बतावें कि उसकी शक्ति और दुर्बलता के कारण क्या है, तथा यह भी कि उन अमर मूल्यो की स्थापना में उसने क्या भाग लिया है, जिनको राज-नैतिक पराधीनता भी नष्ट नही कर सकी है । साथ ही उन शर्तों को भी बताइये, जो उसे पूरी करनी ही चाहिए, अगर उसे स्वाधीनता तथा आत्म-सम्मान का जीवन जीना है । इस नाजुक समय में आप उन इने-गिने आदमियो में से है, जो दलगत सकीर्ण विचारो से ऊपर उठ सकते है, भिन्न-भिन्न दृष्टि-विन्दुओ को समझ सकते है और इस वर्तमान सभ्यता के गिरते भवन के ढेरो में से उस भावी भारत का चित्र खीच सकते है, जिसमें रहना उपयुक्त है ।

मेरे आग्रह के लिए कृपया 'हा' कहिये । भाषण का विषय बतावें और तय करने के लिए औपचारिक कदम उठाने की मुझे अनुमति दें ।

शुभ-कामनाओ सहित,

आपका,
श्यामाप्रसाद मुकर्जी

३२७ जयप्रकाश नारायण की ओर से

देवली नजरबद कैंप
देवली, राजपूताना
७ दिसम्बर १९४१

प्रिय भाई,

आपका हार्दिक अभिवादन !

[1]······जिस समय देश को आपके मार्ग-दर्शन की सबसे ज्यादा जरूरत है, उस समय आपकी रिहाई से मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

····· · ··· · · · [2]

आपको नरेन्द्रदेव के स्वास्थ्य के वारे में पता चल गया होगा। उनमें सबसे बडा दोष यह है कि वह अपनी सभाल आप नही कर सकते और मुझे भय है कि अगर उनकी ठीक-ठीक देखभाल न की गई तो कही वह हमेशा के लिए रोगी न हो जाय। जिस चीज की उन्हे सबसे ज्यादा जरूरत है, वह दवाइया नही, बल्कि किसी उचित जगह पर लबा आराम है। यू पी या उत्तर भारत में कोई भी स्थान उनके लिए उपयुक्त नही होगा। महाराष्ट्र के कुछ जिले, जैसे सतारा, या उससे भी आगे दक्षिण में बेल्लारी, अनन्तपुर उनके लिए ठीक हो सकते है। गुजरात भी उनके लिए अनुकूल हो सकता है। उन्हीपर छोडा गया तो मुझे निश्चय है वह उत्तर प्रदेश में ही कही पडे होंगे, या बहुत हुआ तो श्रीप्रकाश बनारस मे उन्हे अपने सेवाश्रम में ले जा सकते है। जिसे हम सकोच कहते हैं, वह उन्हे अपने अनगिनत मित्रो में से किसीसे भी अपने लिए कुछ करने को कहने नही देता। इसलिए मैं आपको लिख रहा हू कि आप इस मामले में खास रुचि लें और उन्हे किसी उपयुक्त स्थान के लिए लदवा ही दें। आप यह चीज उनकी इच्छा पर हर्गिज न छोडें। इस मामले में आप उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करें, जैसा बच्चे के साथ किया जाता है। आप बापू से भी इसमें सलाह ले सकते है, क्योकि वह नरेन्द्रदेव के स्वास्थ्य के वारे में गहरी दिलचस्पी रख रहे है।

---

[1][2] यहा का कुछ भाग सेंसर ने काट दिया है।

मै अब ठीक हू और धीरे-धीरे ताकत आ रही है। सेठजी भी ठीक हैं और आपको अभिवादन भेज रहे है। गौतम मलेरिया में पडा है और अस्पताल में है। दूसरे सब मित्र मजे में है।

आपका,
जयप्रकाश

देवली नजरबद कप
सेन्सर किया और मजूर किया।
सुपरिटेडेंट

३२८. आर. अच्युतन् की ओर से

सेन्ट्रल जेल,
राजमुंद्री
८ दिसम्बर १९४१

प्रिय पडितजी,

आपकी रिहाई की बेला में हम आपको अपनी बधाइया और प्रेम भेजते है। इस प्रात के हम सब नजरबन्द विद्यार्थी है और हमारे दिलो में आपको अपनी बधाइया भेजने की तीव्र इच्छा है, क्योकि आप हमेशा तरुणो के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते है। पडितजी, हमारा प्रेम और आदर से भरा प्रणाम स्वीकार कीजिये। इस जेल से हम आपको सिर्फ यह पत्र ही भेज सकते है।

कितने उत्कट उत्साह के साथ हमने जल से छूटने के बाद के आपके वक्तव्य को पढा। गहन राष्ट्रीय अंधकार और गिरती हुई ससदीय वृत्ति के बीच, जो राष्ट्रवादियो में भी बढती दिखाई देती है, आपका स्वर ही एकमात्र स्पष्ट स्वर है। केवल आपकी और बापू की आवाज ही हमारे हृदयो में प्रतिध्वनित होती है और इन ईंट-पत्थरो के घेरे के बावजूद हमारे दिलो में तूफान मचा देती है।

हम प्रयत्न किये जा रहे है और हमारे हृदय मे जो आदर्श है, वे हमें उत्फुल्लता देते है। हम आपके लिए पूरी शक्ति, साहस और दृष्टि की

कामना करते है, जिससे आप इस देश का अभीष्ट लक्ष्य की ओर नेतृत्व करें।

पडित जवाहरलाल नेहरु,
इलाहाबाद।

सादर आपका,
आर. अच्युतन्

नोट--

सेन्सर यह ध्यान रखे कि यह कोई राजनैतिक पत्र नही है, लेकिन यह एक ऐसा पत्र है, जिसमें हमारे उस नेता का हार्दिक अभिवादन है, जिसे हम प्यार करते है, जिसका आदर करते है और जिसके प्रशसक है।

सेन्सर किया ८।१२

आर. अच्युतन्

३२९ सरोजिनी नायडू की ओर से

हैदराबाद (दक्षिण),
९ दिसम्बर १९४१

मेरे प्यारे जवाहर,

जेल से तुम्हारा सुन्दर पत्र और उससे भी सुन्दर छूटने के बाद का तुम्हारा वक्तव्य मेरी अशात आत्मा को बहुत ही प्रेरणाप्रद और आनददायक लगा। मै तुम्हे पहले नही लिख सकी, पर उम्मीद है, तुम्हे मेरा स्वागत का तार मिल गया होगा (क्या वह बडे दिन की छुट्टियो के लिए है ?)। मेरे जीवन में दु ख की वैसे ही कमी न थी, पर पिछले तीन महीने मैने सबसे अधिक यातना के बिताये है, किंतु निजी दु ख और पीडा आखिर निजी और व्यक्तिगत ही है। यह काल उसके लिए और उसके साथ-साथ मेरे लिए तकलीफ का काल रहा है, जो सचमुच धीरे-धीरे तिल-तिलकर मौत की ओर बढती रही है। फिर भी यह एक प्रकार से आध्यात्मिक विकास और प्रेरणा का काल भी रहा है—हम सबके लिए, सबधियो तथा मित्रो के लिए, और उन अजनबियो के लिए भी, जिन्हे मृत्यु-शैया पर पडी बहादुर लडकी को थोडी देर के लिए भी देखने के लिए हमारे यहा आने का अवसर मिला है—उस लडकी को देखने का, जो कि अक्षरश शव-मात्र रह गई है, और केवल कहने को ही जीवित है। आज मै सोचती हू, आशा करती हू और प्रार्थना करती हू कि उसकी इस तीव्र वेदना की मर्मभेदी

यात्रा का अत आ गया है । वेवे उसका दुवला ठडा हाथ पकडे उसके पास बैठी है । बाबा उसके कष्ट को देखते रहने की व्यथा को न सह सकने के कारण बाहर बैठा है । मै जो दिन-रात उसकी सेवा-सुश्रूषा करती रही हू, तुम्हे पत्र लिख रही हू, तुम्हे जिन्हे मै इतना प्यार करती हू, क्योकि तुम्हे लिखने और उसकी अनुभूतिमात्र से ही मुझे सात्वना मिलती है मानव की आत्मा को शारीरिक कष्टो पर ऐसी सम्पूर्ण विजय प्राप्त करते मैंने पहले कभी नही देखा—मृत्यु की प्रक्रिया में ऐसी शालीनता और शिष्टता तथा साहस और सहनशीलता मैंने पहले कभी नही देखी । काश, तुम एवा से मिल पाते ! अव भी अपनी तेज चलती हुई सास पर कावू पाकर जव भी वह एकाध शव्द बोल पाती है, तो यही कहती है, "मै चाहती हू कि जवाहर-लाल मुझे मिल पाते । वह कैसे है ? तुम उन्हे लिखो तो उन्हे मेरा हाल-चाल पूछने के लिए धन्यवाद लिख देना । "

शायद अध्यक्ष शीघ्र ही कार्यकारिणी और काग्रेस महासभा की वैठकें वुलायेंगे । आशा है, मै उनमे शामिल हो सकूगी । महत्त्वपूर्ण समस्याओ के बारे में फैसला होना है, पर जैसा तुम जानते हो और मैं जानती हू, फैसला केवल एक ही हो सकता है । कोई और फैसला न तो सच्चा ही होगा और न हमारे आदर्शो और देश के प्रति वफादारी का ही ।

सप्रेम तुम्हारी,
सरोजिनी

३३० फील्ड मार्शल ए पी वावेल की ओर से

कमाण्डर-इन-चीफ इन इडिया
नई दिल्ली
२८ दिसम्वर १९४१

प्रिय महोदय,

हाल ही में जव मै चुगकिंग मे था तो मैडम च्याग काई-शेक ने मुझसे कहा था कि हिंदुस्तान लौटने पर मै उनका अभिवादन आपको पहुचा दू । वह खूव स्वस्थ है और प्रफुल्लित दिखाई पड़ती है । मैं उनसे पहली वार ही मिला और वहुत ही प्रभावित हुआ ।

आप कृपया इसे एक ऐसे निजी व्यक्ति की चिट्ठी ही समझें जिसने

आप तक यह सन्देश पहुचाने का वचन दिया था। इसे हिंदुस्तान के सेनापति का पत्र न समझें ।

आपका,
ए पी. वावेल

३३१ जेड. ए अहमद की ओर से

नजरवन्दी कैम्प,
देवली, राजपूताना
१० जनवरी १९४२

प्रिय पडितजी,

जबसे आप जेल से छूटे है तबसे मैं आपको खत लिखने की सोच रहा हू । लेकिन यह जानते हुए कि आप बहुत-से अहम मामलो में घिरे होगे, मै यह नही चाहता था कि आपको मिलनेवाले अनगिनत बेकार खतो में, जिसमे से ज्यादातर के जवाब देने की आप पूरी कोशिश करते हैं, अपना एक खत और बढा दू ।

लेकिन आज जब मैं बिस्तर पर लेटा हुआ था, बीती हुई बातें मेरे दिमाग में चक्कर लगाने लगी । मैंने यह महसूस किया कि पिछले पाच या छ बरसो में जो कुछ भी मैंने किया है उस सबके पीछे बुनियाद के तौर पर जो मुझे एक चीज दिखाई दी, वह थी आपके साथ मेरा गहरा ताल्लुक। मुझे यह महसूस करके एक खुशी-भरा अचरज हुआ कि आपने मेरे ऊपर कितना गहरा असर डाला है, न सिर्फ सियासी सवालो को सोचने के मेरे तरीके पर, बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी मे होनेवाली मामूली घटनाओ के बारे में मेरी प्रतिक्रियाओ पर भी । इस खयाल ने मुझे फौरन आपको खत लिखने के लिए बढावा दिया, लेकिन मैं समझ नही पा रहा कि आपको लिखू तो क्या लिखू । और फिर इस कैम्प के कटीले तारो के भीतर से मैं आपको लिख भी क्या सकता हू ? हमारा यह कैम्प राजपूताना के रेगिस्तान के बीचो-बीच है । यहा से नजदीक-से-नजदीक रेलवे स्टेशन भी कोई ७० मील दूर है। हम लोग इतने अलग हैं कि जिंदा मर्द-औरतो की बाहरी दुनिया और उसकी हलचलें और रफ्तार यह सब हम लोगो के लिए एक अधभूले ख्वाब की तरह है । मुझे बेहद खुशी है कि हम लोग अब यहा से अपने-अपने

सूबो को भेजे जा रहे हैं, क्योंकि सूबाई जेलो में हम कम-से-कम यह तो महसूस करेंगे कि हम लोग जिन्दा दुनिया के एक हिस्से हैं। यहा तो हमारी हालत जल्द ही खोई हुई कौम[1] की तरह हो जाती।

हाजरा यहा हर चन्द महीने के बाद आती है, लेकिन सफर इतना तकलीफदेह है कि अक्सर यहा आने से मैं उसे रोकता रहता हू। सूबाई जेल में तो उससे ज्यादा मुलाकातें हो सकती हैं।

हमें अभी तक खबर नही मिली कि कब हमारा यहा से तबादला किया जायगा, न हमें अपनी अगली मजिल का पता है। फिर भी मैं समझता हू कि इस महीने के अखीर से पहले ही हम लोग यू पी की जेलो में से किसीमें होगे।

मेरी सेहत काफी अच्छी है। भूख-हडताल के बाद के जो असर थे उनसे भी मैं पूरी तरह छुटकारा पा गया हू।

मेहरबानी करके श्रीमती विजयलक्ष्मीजी, श्री पडित और टण्डनजी को मेरी याद दिला दें, और दोस्तो और साथियो को, और खासतौर पर केशव और लालबहादुर को, मेरा सलाम कहे।

बहुत-बहुत प्यार के साथ,

आपका,
जेन

३३२ सैयद महमूद के नाम

इलाहाबाद
२ फरवरी १९४२

प्रिय महमूद,

आपका २५ जनवरी का खत मिला। मैंने हिन्दू-मुस्लिम मसले पर आपकी छोटी-सी किताब पढ ली। अच्छी लिखी गई है और अच्छी है। उसके कुछ हिस्से और कुछ नतीजे ऐसे है, जिनसे मैं पूरी तरह से एकराय नही हू, लेकिन कुल मिलाकर मेरे खयाल से आपके नजरिये से इसमें मामले को बडी काबलियत से पेश किया गया है। जरूरी तौर पर मैं अलबत्ता उसे जरा

[1] यहा इशारा इसराइल की उस खोई कौम से है, जिसे असीरियनो ने गिरफ्तार करके मुल्क बदर कर दिया था।

दूसरे ही तरीके से लिखता, यानी मै कुछ उन पहलुओ पर जोर देता जिनको आपने छुआ भी नही है। आपके विवरण मे, कुछ हाल की घटनाए और खास तौर पर दुनिया से ताल्लुक रखनेवाले कुछ पहलू, जिनका असर हिंदुस्तान पर पडता है, नजरदाज हो गये है। मेरे खयाल से असल में जिन्ना और मुस्लिम लीग के रवैये मे यह ख्वाहिश खास तौर पर है कि बुनियादी तब्दीलिया न होने दी जाय या हिंदुस्तान को लोकतत्र न बनने दिया जाय, इसलिए नही कि उसमे हिन्दुओ की अक्सरियत है, बल्कि इसलिए कि बुनियादी तत्त्व सामन्ती हको वगैरा का खात्मा कर देंगे। आपके खत में इसका इशारा है। सविधान-सभा का सारा खयाल यह है कि उन तत्त्वो और उनके जजबातो को आम जनता के सामने लाया जाय, जो फिरकेवाराना मसले या दूसरे मसलो को बीच के तबके के नजरिये से नही देखेंगे, क्योकि इसी नजरिये ने यह रुकावट पैदा की है। खुद मुझे तो मसले का कोई हल दिखाई नही देता, चाहे हम कितनी ही कोशिश करें, जबतक कि तीसरी जमात (अग्रेजो) को नही हटा दिया जाता। जरूरी तौर पर हम किसी हल के नजदीक तब पहुचेगे जब हम हालात से मजबूर होकर समझौता करेंगे। दूसरा रास्ता होगा बडे पैमाने पर जद्दोजहद करना। यह तभी हो सकता है, जब यह साफ हो जाय कि दोनो में से कोई भी तबका अग्रेजो की या और किसी परदेसी ताकत की मदद नही ले सकता।

काग्रेस और मुस्लिम लीग दोनो के लिए (दूसरो के लिए भी) सही रास्ता यह होता कि सिर्फ एक बात को मजूर कर लेते और बाकी सब फिरको को, जिनमें आप चाहे तो पाकिस्तान भी शामिल किया जा सकता है, छोड दिया जाता। वह एक चीज यह है कि परदेसी ताकत और उनकी दखलदाजी के खिलाफ सारी ताकतें एक हो जाय। एक बार यह परदेसी ताकत निकल जाती है तो हम अपने ही पैरो पर खडे हो जाते है और या तो समझौता कर लेते है या लड लेते है। मुमकिन यही होगा कि तब हम लोग समझौता कर लेंगे, क्योकि सचमुच की लडाई की बात किसी-को भी अच्छी नही लगेगी।

जिन्ना गाडी को घोडे के आगे रख देते है। वह कहते है कि जबतक उनकी शर्तें न मानी जाय, कोई सियासी तरक्की नही हो सकती। मौजूदा

हालात में इसका मतलब है तरक्की को रोक देना। ठीक रास्ता यह कहना होगा मैं पाकिस्तान और उसके साथ लगी हुई और सब बातो पर अटल हू और उससे कम पर कभी सतोप नही करूगा। लेकिन मै दूसरे लोगो के साथ परदेमी ताकत को निकालने के काम में मिलने के लिए बिल्कुल तैयार हू। जरूरी हुआ तो बाद मे मै अपने हको के लिए लड लूगा। यह साफ है कि वह मौजूदा हालात को बनाये रखना चाहते है और इस तरह उनकी हालत ऐसी हो जाती है कि उसका कोई बचाव नही हो सकता।

खुशकिस्मती से दुनिया बदल रही है और हमारे कठिन-से-कठिन मसले एक मानी मे घटनाओ से टकराकर अपने-आप हल हो रहे है। तह-जीबी नजरिया सही और मुनासिब तो है, लेकिन उसमें वक्त लगता है और आजकल घटनाए तेजी से हमें छोडती चली जाती है और अपने साथ बडी-बडी तब्दीलिया लाती है। मेरा खयाल है कि इन तब्दीलियो को देख लेंने में हमें बहुत अर्सा नही लगेगा।

मै नही जानता, काग्रेस वर्किंग कमिटी के मेम्बर की हैसियत से आपके लिए यह सुझाव देना कहातक ठीक है कि जिन्ना और लीग के साथ आपके बताये हुए ढग पर मेल किया जाय। इससे वेशक गडबड और गलतफहमी पैदा होगी। क्या यह वेहतर नही होगा कि आप मौलाना आजाद से मशविरा कर लें? वह कल यहा आ रहे है और तीन-चार दिन ठहरेंगे। आप चाहे तो आपका टाइप किया हुआ मसाला उन्हे दे दू।

आपका,
जवाहरलाल

३३३. महात्मा गांधी की ओर से

सेवाग्राम,
वर्धा, सी पी.
४ मार्च १९४२

चि. जवाहरलाल,

तुम्हारा खत कल मिला। आशा है कि इस खत के अक्षर पढने में मुश्किल नही होगी।

इदू की शादी के वारे मे मेरी तो पक्की राय है कि वाहर से किसीको न वुलाया जाय। इलाहावाद में जो है उनमें से साक्षी के रूप में भले कुछ

लोगो को बुलाया जाय। लग्न पत्रिका दिल चाहे इतनी भेजो। सबसे आशीर्वाद मगाओ। लेकिन पत्रिका में साफ लिखना कि खासकर किसीको आने की तकलीफ नही दी गई है। अगर एक को भी बुलावे तो किसीको छोड नही सकेगे। इदू इतनी सादगी तक जाना चाहती है या नही, यह सोचना होगा। तुम भी शायद इतनी सादगी तक जाना पसद न करो तो मेरी राय फेक देना। इदु के बारे में तुम्हारा निवेदन मैंने देखा। अच्छा लगा। मेरे पर रोज खत आते है। कई तो बीभत्स हैं। सब फाड डाले। इन सबके उत्तर में मैंने एक टिप्पणी हरिजन के लिए भेजी हैं, उसकी नकल इसके साथ रखता हू। टिप्पणी लिखी गई सोमवार को, कल से मुसलमानो के खत शुरू हुए हैं। उसमे हमले का मुद्दा सरूपवाला किस्सा हैं। ऐसा तो चलता ही रहेगा।

देशी राज्य के बारे में मैं हो सकेगा वह करूगा। पैसे की कठिनाई बराबर पडेगी। जमनालालजी ने सब बोझ उठा लिया था। किस तरह, वह निश्चित नही हुआ था। अब मैं सोच रहा हू कैसे पैसे पैदा किये जाय। अखबार के बारे में पट्टाभि से मशवरा कर रहा हू। बलवतराय नही आ सकेगे। उससे बहुत फरक नही पडेगा। यहा से मदद मिलती रहेगी, यहा आओगे तब दूसरी बाते करेंगे। मेनन आज बम्बई जाते हैं—वहा का काम पूरा करने के लिए।

च्याग काई शेक का बयान देखा था, अच्छा था। तुम्हारी इजाजत तो आई, लेकिन मैंने सोचा अब उस खत को प्रकाशित करने की आवश्यकता नही रही। बात पुरानी हो गई।

भागीरथी आ गई है, चद्रसिंह को रखना कठिन तो है। बहुत तामसी है, जहन कमजोर है। थोडी-सी बात में लड बैठते है। किसीको पीटें तो मुझे आश्चर्य नही होगा। मेहनती तो हैं। देखता हू। तुम चिता मत करना। मेरे खत पढने मे कठिनाई आवे तो मैं और भी साफ अक्षर लिखने की कोशिश करूगा। लेकिन हमारा धर्म है कि हम एक दूसरे को राष्ट्र-भाषा में लिखते ही जाय। कुछ अर्से में इस तरह लिखने में हम ज्यादा आसानी महसूस करेंगे। गरीबो को बहुत लाभ होगा।

बापू के आशीर्वाद

३३४. अबुल कलाम आज़ाद की ओर से

कलकत्ता
८ मार्च १९४२

प्रिय जवाहरलाल,

आपका दूसरा खत मिलने से पहले मै आपके खत का जवाब दे चुका था। पहले मैंने सोचा था कि मैं दो या तीन दिन के लिए वर्धा जा सकता हू, लेकिन वागल की नाजुक हालत ने मुझे रोक लिया। सत्याग्रह से ताल्लुक रखनेवाले कुछ पेचीदा सवाल भी थे, जिन्हे जाने से पहले हल करना जरूरी था। अब कांग्रेस की वर्किंग की कमेटी बैठक १७ तारीख को हो रही है। मैं ११ या १२ तारीख को वर्धा के लिए चलने का इरादा कर रहा हू। अगर आप भी १७ तारीख से दो दिन पहले वर्धा पहुच सके तो फायदेमद होगा। मै तार से अपनी रवानगी की इत्तिला दूगा।

वादशाह खान ने, वर्धा में जैसा वादा किया गया था, उसके मुताविक बयान शाया करने के लिए मुझे कई खत लिखे। मामले के सव पहलुओ पर गौर करने के वाद मुझे यह कवूल करना पडता है कि उनकी ख्वाहिश पूरी करने के अलावा और कोई चारा नही था। इस लिहाज से अखवारो को एक वयान दे दिया गया है, जिसे शायद आपने देखा होगा। मैं नही जानता कि इस बीच उनके साथ आपकी खतो-कितावत हुई या नही।

चार या पाच दिन पहले वर्लिन से सुभाषवावू का एक वयान रेडियो से ब्राडकास्ट हुआ था। दूसरे दिन इस वात का ऐलान किया गया कि यह बयान रिकार्ड कर लिया गया है और अब इसे सुभाषवावू की ही आवाज में सुना जा सकता है। मैने सुना था। वह सुभाषवावू की आवाज में था। मेरे खयाल से शायद रिकार्ड नही था, वल्कि वह खुद वोल रहे थे। लेकिन तोकियो से उनका जो वयान ब्राडकास्ट हुआ वह वाकई रिकार्ड था। विजली से रिकार्ड की चाल की आवाज साफ सुनाई पड रही थी।

यहा फारवर्ड ब्लॉक मिनिस्टर सतोष और वनर्जी वहुत परेशान है। वे कहते हैं कि फारवर्ड ब्लॉक से उनका वहुत दूर का भी ताल्लुक नहीं है।

पडित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहावाद।

आपका,
अ. क. आज़ाद

३३५. मैडम च्याग काई-शेक की ओर से

जनरलिसिमो का सदर मुकाम,
चुंगकिंग, चीन,
१३ मार्च १९४२

प्रिय श्री नेहरू,

कुनमिंग होते हुए हमारे हिंदुस्तान से चीन लौटने के बाद जनरलिसिमो ने सोमवार को पार्टी के सदर मुकाम में जो रिपोर्ट दी वह आपके पास भेज रही हूं। उस दिन, मैं समझती हू, ९ मार्च थी। जनरलिसिमो का भाषण समाचार-पत्रो में छपने के लिए नही भेजा जायगा, बल्कि उसे पर्चे की शक्ल में छपाकर प्रान्तीय अध्यक्षों, सरकारी संस्थाओ इत्यादि के पास भेजा जायगा। उसका अंग्रेजी अनुवाद, जिसकी प्रति मैं आपके पास भेज रही हू, तार द्वारा वाशिंगटन और लन्दन-स्थित दूतावासो में इस हिदायत के साथ भेजा जा रहा है कि स्वयं हमारे राजदूत उसे रूजवेल्ट और चर्चिल को दे आवें। जनरलिसिमो और मैं दोनो ही यह अनुभव करते है कि इस बात का श्रेय हमारे हिंदुस्तानी मित्रो पर है कि हम सत्य को जैसा देखते है वैसा ही कहते है। फिर भी चूकि हम ब्रिटिश सरकार के मेहमान थे, इसलिए नम्रता का तकाजा है कि हम उस सरकार के इस दावे की खुलकर आलोचना न करें कि हिंदुस्तान को असली शक्ति इसलिए नही दी जा सकती कि वहा के निवासियो में एकता की कमी है। मैंने आज के अखबारो में देखा है कि 'लन्दन क्रॉनिकल' ने तो इसे अपने पक्ष का एक पूरा तर्क बना लिया है। इसे पढकर मुझे बडा गुस्सा आया।

अखबारो से मुझे पता चलता है कि क्रिप्स बहुत-से प्रस्ताव लेकर हिंदुस्तान आ रहे है। इस यात्रा के बारे में जब 'रायटर्स' ने आपकी प्रतिक्रिया पूछी तब आपने जो तटस्थ उत्तर दिया, उसे भी मैंने पढा है। मेरे प्रिय मित्र, कौन कहता है कि आप कूटनीतिज्ञ नही है ?

कुनमिंग पहुचने के अगले दिन अर्थात २२ फरवरी को—जैसा कि मेरे रेकार्ड से मालूम होता है—मैंने आपको एक पत्र लिखा था। चूकि मुझे उसका उत्तर नही मिला था, इसलिए मैंने कलकत्ता में चीन के कौंसल जनरल को तार देकर पूछा कि वह पत्र आप तक पहुचा दिया गया या

नही और पहुचाया गया तो कब ? उनके पास से अभी-अभी उत्तर आया है कि उन्हे वह पत्र ५ मार्च को मिला था और ६ मार्च को उन्होने उसे विशेष दूत द्वारा आपके पास भेज दिया था। हे प्रभो, समझ में नही आता कि पत्रो के पहुचने में इतनी देर क्यो लगती है ! पता नही, आपको यह पत्र मिलेगा या नही और मिलेगा तो कब ? इसे मैं एयरोनौटिकल कमीशन के जनरल माओ के जरिये भेज रही हू और उन्हे मैंने हिदायत दी है कि वह स्वय जाकर इसे कौसल जनरल को दें और फौरन आप तक पहुचाने को कहे। अभी कुछ ही क्षण हुए, मुझे मालम हुआ है कि जनरल माओ कलकत्ता जा रहे हैं।

यह पत्र मैं आपको हुयागशान के उस मकान में बैठी हुई लिख रही हू, जिसमे आप हमसे मिलने के लिए आये थे। आपको याद होगा कि यह मकान चुगकिंग से नदी के पार दक्षिणी तट पर बना हुआ है। यहा हम कल रात थोडे एकान्त में रहने के लिए आये है। जबसे हम स्वदेश लौटे है, काम और लोगो का आना-जाना बहुत बढ गया है। शहर मे तो सब जगह मनुष्यो की हलचल-ही-हलचल का अनुभव होता है, हवा में, गलियो में यहातक कि अपने पढने के कमरे के एकान्त में भी। विचारो की अदृश्य लहरें एक-दूसरे से बार-बार टकराकर चित्त की शान्ति को भग करती है और उनकी इस अस्थिरता से कोई बचाव नही है। मै समझती हू कि सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त होनेवाले इस तथ्य का कोई-न-कोई आत्मिक स्पष्टीकरण अवश्य होगा। जो हो, यहा पहाडियो के बीच अतिशय जनसख्या के दम घोटनेवाले वातावरण से राहत महसूस होती है। मै हिंदुस्तान को प्यार करती हू, किन्तु दिल्ली में सफेद मकानो की चमक ने मुझे करीब-करीब अन्धा बना दिया था। यहा चुगकिंग में हमेशा कुहरा ही छाया रहता है। पहाडो के क्षितिज पर चारो ओर से आये हुए धुधले कुहरे में सुकोमलता और करुणा का अनुभव होता है और जो लोग चमकदार धूप के अभ्यासी नही है उन्हे पहाडियो के पास सब्जियो के हरे-भरे खेत (याद है न आपको) बडे प्रिय मालूम देते है। आपको याद होगा कि हिंदुस्तान में जब कभी मै घर से बाहर निकलती थी तभी मेरे सिर में कितना जबर्दस्त दर्द होने लगता था। फिर भी मुझे इस यात्रा में बडा आनन्द आया और मै इसे

किसी भी कीमत पर खोना पसन्द नही कर सकती थी।

मैं अपने सेक्रेटरी को टेलीफोन करके व्यर्थ ही इस बात की चेष्टा कर रही हू कि वह कुछ ऐसी चीजे तैयार करा दे जिन्हे मै जनरल माओ के द्वारा नैन के लिए भेज सकू। अगर मुझे सफलता मिल गई तब तो ठीक है, नही तो नैन से कह दीजियेगा कि मै ये चीजे उसके पास अगले दूत के द्वारा भेजूगी। मिस चाऊ शायद आनन्द मनाने गई है (अगर चुगकिंग के खडहरो मे यह सम्भव हो तो!)

मेरे पास के डिब्बे मे संयोगवश मिस्मा का एक पत्र है, जो उन्होने ५ मार्च को मेरे घर लौटने के फौरन बाद भेजा था। मै उसे आपके पास यह बताने के लिए भेज रही हू कि जब आप जेल मे थे तब हमे आपके लिए कितनी तीव्र अनुभूति होती थी। लेकिन इसके बिना भी आपको हमारी भावना का अनुमान होना ही चाहिए।

जनरलसिमो हिंदुस्तान की स्थिति के बारे में रूजवेल्ट को तार देते रहे है। उनके पास से जो ताजा समाचार मिला है वह यह है कि रूजवेल्ट ने शान्ति-सम्मेलन के पास तार भेजा है कि १ हिंदुस्तान का प्रतिनिधि कांग्रेस द्वारा चुना जाना चाहिए और वह सचमुच ही राष्ट्रीय हिंदुस्तान का प्रतिनिधि होना चाहिए, २ उनका यह विचार है कि हिन्दुस्तान की समस्या का हल शायद हिंदुस्तान को हिन्दू और मुस्लिम दो हिस्सो में बाटने पर मिल जाय। मैने और जनरलसिमो ने भी मेरे भाई टी वी को तार दिया है कि दूसरी बात बिल्कुल गलत है और उसपर एक क्षण के लिए भी विचार नही किया जाना चाहिए। हिंदुस्तान भी उतना ही अविभाज्य है, जितना चीन। वहा के लोगो मे धार्मिक मतभेद होने का यह मतलब नही है कि अगर उन्हे अपने मतभेदो को बिना किसी तीसरे दल के हस्तक्षेप या सहायता के दूर करने का अवसर दिया जाय तो वे आपस मे सहमत नही हो सकते।

जनरलसिमो मुझसे कह रहे है कि मै लिखना बन्द कर दू, क्योकि जनरल मेगरूडर रूजवेल्ट का सदेश लेकर परामर्श करने आये है। मुझे एक क्षण के लिए भी समय नही मिलता कि मै आपको दिल खोलकर पत्र लिख सकू। सदा ही मुश्किल काम लगे रहते है और मै कुछ असम्बद्ध,

निष्कर्ष-विहीन बातें घसीटकर ही रह जाती हू। लेकिन मुझसे बहुत झुझलायं नही। मेरे पास सूत्रबद्ध होकर सोचने के लिए वक्त नही रहा है और शायद इससे कोई अन्तर भी नही पडता, क्योकि निश्चय ही मै गाधी-जी की तरह कोई ऐसी कार्य-प्रणाली सोचने की प्रेरणा नही दे सकती जो 'कठोर चिन्तन' मात्र से ग्रहण योग्य बन जाय।

मेरे दोस्त, 'आवारा' को—सलाम।

मे. सु. च्यां.

३३६ सर स्टैफर्ड क्रिप्स की ओर से

३, क्वीन विक्टोरिया रोड,
नई दिल्ली
अप्रैल १९४२

व्यक्तिगत और निजी

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे इजाजत दीजिये कि मै आपसे अन्तिम बार अपील करू। आपपर ही निश्चय का भारी बोझ है—एक ऐसा निश्चय, जिसका हम दोनो के राष्ट्रो के सबधो पर बडा गहरा प्रभाव पड़ेगा, इतना गहरा कि उसकी कल्पना तक अद्भुत है।

मै अपने क्षेत्र मे और आप अपने में अपने-अपने देश की जनता को मैत्री तथा सहयोग की ओर ले चल सकते है और जरूर ले चलेंगे।

जो अवसर आज है, वह कभी नही आयेगा। इसके असफल होने पर दूसरी युक्तिया सामने आयेंगी तो अवश्य, किन्तु दोनो देशो की जनता की मित्रता को मजबूत बनाने का इतना अच्छा अवसर फिर कभी न आयेगा।

केवल योग्य नेतृत्व ही—ऐसा जैसा कि आपका है—सफलता प्राप्त कर सकता है। यही वह क्षण है जब एक महान नेता को उन सारे खतरो और कठिनाइयो का, जो कि मै जानता हू, सामना करने मे अद्वितीय साहस दिखलाते हुए वाछित ध्येय तक पहुचना है।

मै आपके गुणो और आपकी क्षमता को जानता हू और मै आपसे अनुरोध करता हू कि अब आप उनको प्रयोग में लावें।

आपका,
स्टैफर्ड

३३७ फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट के नाम

नई दिल्ली
१२ अप्रैल १९४२

प्रिय राष्ट्रपति महोदय,

मैं आपको लिखने की हिम्मत कर रहा हू, क्योंकि मुझे मालूम है कि हिंदुस्तान की मौजूदा हालत में और युद्ध पर उसकी प्रतिक्रियाओ में आपकी गहरी दिलचस्पी है। ब्रिटिश सरकार और हिंदुस्तानी जनता के बीच समझौता कराने में सर स्टैफर्ड क्रिप्स के मिशन की नाकामयाबी से आपको जरूर दु ख हुआ होगा, जैसा कि हमें भी हुआ है। आप जानते है कि हमने हिंदुस्तान की आजादी के लिए लम्बे अर्से से जद्दोजहद की है, लेकिन मौजूदा खतरे से हमारी सब बातो से ज्यादा इस बात की इच्छा हुई कि हमें हमलावरो के खिलाफ वास्तविक राष्ट्रीय और लोकप्रिय प्रतिकार सगठित करने का अवसर दिया जाना चाहिए। हमें पूरा यकीन था कि ऐसा करने का सही तरीका इन लोगों को आजादी देना और हमसे उसकी रक्षा करने के लिए कहना होता। इससे लाखो दिलो में एक चिनगारी पैदा हो जाती, जिससे प्रतिकार की ऐसी जबरदस्त आग उठती, जिसका कोई भी हमलावर कामयाबी से मुकाबला नही कर सकता था।

जैसा हम चाहते थे वैसा न होता और लडाई के काम के लिए यह जरूरी न समझा जाता तो कम-से-कम चीज, जिसे हम बहुत जरूरी समझते है, यह थी कि आज एक सच्ची राष्ट्रीय सरकार बना दी जाय और उसे लोकप्रिय बुनियाद पर प्रतिकार सगठित करने के लिए सत्ता और जिम्मेदारी सौंप दी जाय। बदकिस्मती से ब्रिटिश सरकार ने इसे भी ठीक या मुनासिब नही समझा। इन बातचीतो में, जो बदकिस्मती से फिलहाल नाकामयाब रही, क्या-क्या हुआ, उसका ब्यौरा बताकर मैं आपको तकलीफ देना नही चाहता। बेशक आपके प्रतिनिधियो ने यहा से आपको सब खबरें दी होगी। मैं इतना ही कहना चाहता हू कि हिंदुस्तान की एकता के लिए भरसक कोशिश करने और आजादी और लोकतत्र के बडे काम के साथ सबद्ध होने के लिए हम कितने चिन्तित और उत्सुक थे और अब भी है। हमारे लिए यह दु खद घटना है कि इस मामले में हम जिस ढग से और जितनी मात्रा में करना

चाहते हैं उतना नही कर सकते। अपन देश की रक्षा में हर चीज की वाजी लगा देने को, अपनी पूरी ताकत और प्राणशक्ति के साथ लडने को और आक्रमणकारी को हटाने और स्वदेश के लिए आजादी हासिल करने के लिए किसी भी कीमत और किसी भी वलिदान को नाचीज समझने की हमारी इच्छा थी।

हमारे मौजूदा जरिये सीमित हो सकते हैं, क्योकि हिंदुस्तान में ब्रिटिश सरकार ने पहले भी जो नीति अख्तियार की उससे हमारे देश का उद्योगीकरण रुक गया। हम विना हथियार की प्रजा है। लेकिन हमारी युद्ध-शक्ति वहुत वड़ी है, हमारी जनशक्ति विशाल है और चीन की तरह हमारे वडे-वडे प्रदेशो से हमें मदद मिलती है। पूजी और मजदूरी के सहयोग से हमारा उत्पादन वहुत तेज किया जा सकता है। लेकिन इस सारी युद्ध-शक्ति का उपयोग पूरी तरह तभी किया जा सकता है जव देश की सरकार का जनता के साथ गहरा सवव हो और वह उसकी नुमाइन्दा हो। जिस सरकार का जनता से कोई सवध न हो उसे जनता की तरफ से सहयोग नही मिल सकता, जो वड़ा जरूरी है; कोई परदेसी सरकार तो वह सहयोग प्राप्त कर ही नही सकती, क्योकि जरूरी तौर से उसे कोई पसन्द नही करता और उसका कोई भरोसा नही करता। खतरे ने हमें घेर रखा है और कही हमला न हो जाय, इस डर की छाया से और उसके वाद होनेवाली भयकरता से, जैसी कि चीन मे जापानी हमले के वाद हुई थी, हमारा नजदीकी भविष्य अधेरे से भर गया है। सर स्टैफर्ड क्रिप्स के मिशन की नाकामयावी ने हालात की मुश्किलो को और भी वढा दिया है और हमारे लोगो पर उनका उल्टा असर पडा है। लेकिन मुश्किलें कुछ भी हो, हम उनका सामना अपनी पूरी हिम्मत और प्रतिकार के सकल्प के साथ करेंगे। भले ही हमारी पसन्द का रास्ता हमारे लिए वन्द कर दिया जाय और हम हिंदुस्तान के ब्रिटिश अधिकारियो की प्रवृत्तियो के साथ ही अपना सवध न रख सकें, फिर भी हम जापानी या और किसी हमले के सामने न झुकने की पूरी कोशिश करेंगे। हमने आजादी के लिए और एक पुराने हमले के खिलाफ इतने अर्से तक लडाई लडी है, इसलिए हमें किसी नये हमलावर के सामने सिर झुका देने से मरना ज्यादा पसद होगा।

हम कई बार ऐलान कर चुके हैं कि हमारी हमदर्दी फासिज्म के खिलाफ और लोकतंत्र तथा आजादी के हक में लड़नेवाली ताकतों के साथ है। हमारे अपने देश में आजादी होती तो हम इस हमदर्दी को सक्रिय क्रियाशीलता के रूप में बदल सकते थे।

जिस महान देश के आप सम्मानित अध्यक्ष हैं उसे हम अभिवादन और सफलता के लिए शुभकामनाएं भेजते हैं। और राष्ट्रपति महोदय, आपपर तो सारी दुनिया में स्वतन्त्रता के हक में नेतृत्व के लिए लाखो की आखें लगी हुई हैं, इसलिए हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके प्रति हमारा बहुत आदर और लिहाज है।

आपका,

राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट, जवाहरलाल
वाशिंगटन,
संयुक्त राज्य अमरीका

३३८. महात्मा गाधी की ओर से

सेवाग्राम,
वर्धा, सी. पी.,
१५ अप्रैल १९४२

चि जवाहरलाल,

प्रोफेसर यहा आये हैं। उनसे सब सुना। तुम्हारा प्रेस इन्टरव्यू भी सुना। मैं देखता हू कि हमारे विचारो मे तो भेद था ही, लेकिन अब अमल में हो रहा है। इस हालत में वल्लभभाई वगैरा क्या करें? तुम्हारी नीति को स्वीकार किया जाय तो कमिटी जैसी आज है ऐसे नही रहनी चाहिए।

ज्यो-ज्यो मैं सोचता हू, मुझे लगता है कि तुम कुछ गलती कर रहे हो। अमरीकी लश्कर, चीनी लश्कर हिंदुस्तान में आवे और हम गुरिल्ला लड़ाई में पड़ें, इसमें मैं कुछ भी भला नही पाता हू।

मेरा धर्म है, मैं तुम्हे सावधान करू।

इंदु-फिरोज ठीक होगी।

बापू के आशीर्वाद

मैने कल सुना कि उत्कल में फारवर्ड ब्लाकवाले हथियारबद है और कम्युनिस्ट गुरिल्ला लडाई के लिए। सत्य कितना है, मै नही जानता।

३३९. तुआन-शेग चिएन की ओर से

नेशनल पेकिंग यूनीवर्सिटी,
कुनमिंग, चीन
१८ अप्रैल १९४२

प्रिय पडित,

इस पत्र को लिखने की धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हू। आपको शायद उस व्यक्ति की याद होगी जो एक शाम, जब आप अगस्त सन् १९४१ में कुनमिग के उस बेढगे होटल डू लैक में ठहरे हुए थे, सबसे अधिक बोलता रहा था और मै समझता हू कि सबसे ज्यादा उसीने सीखा भी था। वही आदमी अब आपको पत्र लिख रहा है। सच तो यह है कि अगर मुझे यह मालूम होता कि युद्ध के कारण आपको यहा की यात्रा को कम करना पडेगा और मै आपसे फिर नही मिल सकूगा तो उस शाम मै आपसे और भी अधिक प्रश्न करता। उस समय मै खुद पीपिल्स पोलिटिकल कौंसिल के अधिवेशन में भाग लेने के लिए चुगकिंग जानेवाला था, लेकिन जब मै वहा पहुचा तब आप हिंदुस्तान के लिए रवाना हो चुके थे।

आपको पत्र लिखने का विचार मेरे मन में तबसे ही रहा है, लेकिन वह पूरा नही हो सका। इसका मुख्य कारण सेंसर का भय था। स्थिति अब पहले से कुछ भिन्न है और मुझे विश्वास है कि हमारे कौंसल जनरल आपके पास मेरा यह पत्र बिना किसी दुर्घटना के पहुचवा सकेंगे।

अभी हाल में समझौते की बातचीत के भग हो जाने से मुझे बडा दु ख हुआ है। अन्तिम विच्छेद की खबर मिलने से पहले मैंने प्रोफेसर लास्की को लिखा था—

"मै सर स्टैफर्ड क्रिप्स की जीवनवृत्ति और हिंदुस्तानी स्थिति के विकास के समाचारो को बडी दिलचस्पी के साथ पढता रहा हू। एक तरह से दोनो एक-दूसरे से सबधित है। भारतीय समस्या का सतोषजनक हल अवश्य निकलना चाहिए और सर स्टैफर्ड से बढकर इसके लिए कोई दूसरा माध्यम नही हो सकता। अगर ब्रिटेन इस युद्ध को सफलतापूर्वक पार कर लेना

चाहता है तो ब्रिटिश शासन में सर स्टैफर्ड को निश्चय ही एक महत्वपूर्ण हिस्सा मिलना चाहिए। सर स्टैफर्ड के प्रति ब्रिटेन के शासक दल में जो अरुचि की भावना है, उसे दूर करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि सर स्टैफर्ड एक बृहदाकार डरहम की भूमिका अदा करें। यह बात मुझे कुछ-कुछ मालूम थी कि काग्रेस पूर्ण स्वतत्रता पर जोर दे रही है, इसलिए ब्रिटिश प्रस्ताव को जिस रूप मे सर स्टैफर्ड ने पहली बार सार्वजनिक रूप से घोषित किया था, उससे मुझे बडी निराशा हुई थी। मुझे ऐसा लगा था कि उसमें काग्रेस और सर स्टैफर्ड दोनो के साथ अन्याय हुआ था। काग्रेस के साथ इसलिए कि उसके कारण वह स्वतत्र सयुक्त हिंदुस्तान प्राप्त करने से वचित रह जाती, सर स्टैफर्ड के साथ इसलिए कि वह उनकी जीवनवृत्ति को, जो ब्रिटेन के साथ इतनी निकटता के साथ सबद्ध है, यदि बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट नही कर देता तो कम-से-कम उसमें बाधाए अवश्य उत्पन्न कर देता। बाद के समाचारो से मुझे कुछ प्रसन्नता हुई है, लेकिन अब भी मेरा मन शकाओ से मुक्त नही है। मुझे ब्रिटेन के अधिकारी-वर्ग के उस रुख से कोई हमदर्दी नही है जो 'रायटर' की टीका-टिप्पणी को पढकर बहुत ही आसानी से समझी जा सकती है। मैं अमरीकी प्रेस की टीका-टिप्पणी से भी सहमत नही हू, क्योकि वह ब्रिटिश द्वारा प्रेरित मालूम देती है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरी अपनी सरकार भी सयुक्त रक्षा पर जोर देने की अपनी उत्कठा में ब्रिटिश अधिकारियो के हाथ का खिलौना बन गई है। अगर बात ऐसी है तो मुझे उससे भी कोई सहानुभूति नही है। मुझे तो केवल यह आशा है कि सर स्टैफर्ड काग्रेस की माग के प्रति सदा सच्चे हृदय से सहानुभूति रखते आये हैं और यदि एक बार उन्होने ब्रिटिश मत्रिमडल के प्रस्ताव का समर्थन किया भी था तो केवल इस निश्चित विश्वास के साथ कि काग्रेस और भी अधिक के लिए दृढतापूर्वक हठ करेगी और वह उसकी मागो को अतत पूरी तरह से मनवाने का माध्यम बनने के लिए तैयार रहेंगे।"

समझौते के भग होने के बाद आपने और सर स्टैफर्ड ने जो अनेक वक्तव्य दिये हैं उन्हें मैंने पढा है और मुझे उन प्रस्तावनाओ पर आश्चर्य हुआ है, जो सर स्टैफर्ड के तर्कों की तह में दिखाई देती है। पहली तो यह कि अग्रेज हिंदुस्तान की बहुमत की इच्छा का आदर करने मे नहीं अनि-

अल्पसख्यको की इच्छा-पूर्ति मे सहायता देना अपना नैतिक उत्तरदायित्व समझते है। दूसरी यह कि अग्रेजो ने यह बात मान रखी है कि अल्पसख्यको के हितो का ध्यान रखने में काग्रेस उतनी सचेष्ट नही है, जितने कि अग्रेज। और तीसरी, जो समझौते के भग होने का तात्कालिक कारण मालूम दी, यह है कि अग्रेजो का यह भी खयाल है कि हिंदुस्तान का रक्षा मत्री सेना के मामले में निश्चय ही इतना अधिक हस्तक्षेप करेगा कि उससे सेना के कुशल कार्य-सचालन में बाधा पडेगी। मुझे अधिक आश्चर्य इस कारण से है कि सर स्टैफर्ड एक सीधे-सच्चे स्वभाव के आदमी है और उन्हें हिंदुस्तान की स्वतत्रता से सहानुभूति है। कही ऐसा तो नही कि जिस नई अन्तर्दृष्टि के बिना ग्रेट ब्रिटेन न युद्ध जीतने की आशा कर सकता है, न शान्ति पाने की ही, उससे ब्रिटिश सरकार अभी इतनी दूर है कि सर स्टैफर्ड के लिए अपनेको अनुदार बनाने की चेष्टा करना अनिवार्य हो गया है ताकि वह अपनी सरकार से इतने आगे न बढ जाय कि सन् १९३९ के जनवरी-फरवरी के अपने अनुभवो की पुनरावृत्ति कर दें ? इस प्रश्न का मेरे पास कोई उत्तर नही है। मैं तो केवल यह आशा करता हू कि सबसे पहले सर स्टैफर्ड स्वय काग्रेस के विचारो से सहमत होने के लिए अवसर निकालेंगे और फिर अपने साथियो को इन विचारो को समझने के लिए प्रेरित करेंगे।

विवादग्रस्त मामलो के बारे में मै अपनी सरकार के रुख को जानने का दावा नही करता। सभवत वह सयुक्त रक्षा और सगठन को प्रधानता देने की आवश्यकता पर जोर देगी। साधारण रूप से चीनी लोगो में काग्रेस-नेताओ की मर्यादा को पूरी तरह से समझने की प्रवृत्ति नही है। गाधीजी को लोग एक सत मानते है और आप एक पक्के देशभक्त समझे जाते है। किन्तु आप दोनो इससे कुछ अधिक भी है। आप लोग उसी अर्थ में राजनीतिज्ञ भी हैं, जिस अर्थ में अब्राहम लिंकन वास्तव में थे और आपको एक बडे जनसमूह का नेतृत्व करना है। यह एक ऐसी चीज है, जिसे चीनी लोग हिंदुस्तानियो से कम राजनैतिक होने के कारण बहुत कम समझ पाते है।

मै अपने देश की स्थिति से भी प्रसन्न नही हू—न राजनैतिक स्थिति से, न आर्थिक स्थिति से। इनके बारे में आपको मैं किसी अगले पत्र में लिखूगा,

चाहता है तो ब्रिटिश शासन में सर स्टैफर्ड को निश्चय ही एक महत्वपूर्ण हिस्सा मिलना चाहिए। सर स्टैफर्ड के प्रति ब्रिटेन के शासक दल में जो अरुचि की भावना है, उसे दूर करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि सर स्टैफर्ड एक बृहदाकार डरहम की भूमिका अदा करें। यह बात मुझे कुछ-कुछ मालूम थी कि काग्रेस पूर्ण स्वतत्रता पर जोर दे रही है, इसलिए ब्रिटिश प्रस्ताव को जिस रूप मे सर स्टैफर्ड ने पहली बार सार्वजनिक रूप से घोषित किया था, उससे मुझे बडी निराशा हुई थी। मुझे ऐसा लगा था कि उसमें काग्रेस और सर स्टैफर्ड दोनो के साथ अन्याय हुआ था। काग्रेस के साथ इसलिए कि उसके कारण वह स्वतत्र सयुक्त हिंदुस्तान प्राप्त करने से वचित रह जाती, सर स्टैफर्ड के साथ इसलिए कि वह उनकी जीवनवृत्ति को, जो ब्रिटेन के साथ इतनी निकटता के साथ सबद्ध है, यदि बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट नही कर देता तो कम-से-कम उसमें बाधाए अवश्य उत्पन्न कर देता। बाद के समाचारो से मुझे कुछ प्रसन्नता हुई है, लेकिन अब भी मेरा मन शकाओ से मुक्त नही है। मुझे ब्रिटेन के अधिकारी-वर्ग के उस रुख से कोई हमदर्दी नही है जो 'रायटर' की टीका-टिप्पणी को पढकर बहुत ही आसानी से समझी जा सकती है। मै अमरीकी प्रेस की टीका-टिप्पणी से भी सहमत नही हू, क्योकि वह ब्रिटिश द्वारा प्रेरित मालूम देती है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरी अपनी सरकार भी सयुक्त रक्षा पर जोर देने की अपनी उत्कठा में ब्रिटिश अधिकारियो के हाथ का खिलौना बन गई है। अगर बात ऐसी है तो मुझे उससे भी कोई सहानुभूति नही है। मुझे तो केवल यह आशा है कि सर स्टैफर्ड काग्रेस की माग के प्रति सदा सच्चे हृदय से सहानुभूति रखते आये है और यदि एक बार उन्होने ब्रिटिश मत्रिमडल के प्रस्ताव का समर्थन किया भी था तो केवल इस निश्चित विश्वास के साथ कि काग्रेस और भी अधिक के लिए दृढतापूर्वक हठ करेगी और वह उसकी मागो को अतत पूरी तरह से मनवाने का माध्यम बनने के लिए तैयार रहेंगे।"

समझौते के भग होने के बाद आपने और सर स्टैफर्ड ने जो अनेक वक्तव्य दिये है उन्हें मैंने पढा है और मुझे उन प्रस्तावनाओ पर आश्चर्य हुआ है, जो सर स्टैफर्ड के तर्कों की तह में दिखाई देती है। पहली तो यह कि अग्रेज हिंदुस्तान की बहुमत की इच्छा का आदर करने में यहीं अधिक

अल्पसख्यको की इच्छा-पूर्ति मे सहायता देना अपना नैतिक उत्तरदायित्व समझते है। दूसरी यह कि अग्रेजो ने यह बात मान रखी है कि अल्पसख्यको के हितो का ध्यान रखने में काग्रेस उतनी सचेष्ट नही है, जितने कि अग्रेज। और तीसरी, जो समझौते के भग होने का तात्कालिक कारण मालूम दी, यह है कि अग्रेजो का यह भी खयाल है कि हिदुस्तान का रक्षा मत्री सेना के मामले में निश्चय ही इतना अधिक हस्तक्षेप करेगा कि उससे सेना के कुशल कार्य-सचालन में बाधा पडेगी। मुझे अधिक आश्चर्य इस कारण से है कि सर स्टैफर्ड एक सीधे-सच्चे स्वभाव के आदमी है और उन्हे हिंदुस्तान को स्वतन्त्रता से सहानुभूति है। कही ऐसा तो नही कि जिस नई अन्तर्दृष्टि के बिना ग्रेट ब्रिटेन न युद्ध जीतने की आशा कर सकता है, न शान्ति पाने की ही, उससे ब्रिटिश सरकार अभी इतनी दूर है कि सर स्टैफर्ड के लिए अपनेको अनुदार बनाने की चेष्टा करना अनिवार्य हो गया है ताकि वह अपनी सरकार से इतने आगे न बढ जाय कि सन् १९३९ के जनवरी-फरवरी के अपने अनुभवो की पुनरावृत्ति कर दें? इस प्रश्न का मेरे पास कोई उत्तर नही है। मैं तो केवल यह आशा करता हू कि सबसे पहले सर स्टैफर्ड स्वय काग्रेस के विचारो से सहमत होने के लिए अवसर निकालेंगे और फिर अपने साथियो को इन विचारो को समझने के लिए प्रेरित करेंगे।

विवादग्रस्त मामलो के बारे में मै अपनी सरकार के रुख को जानने का दावा नही करता। सभवत वह सयुक्त रक्षा और सगठन को प्रधानता देने की आवश्यकता पर जोर देगी। साधारण रूप से चीनी लोगो में काग्रेस-नेताओ की मर्यादा को पूरी तरह से समझने की प्रवृत्ति नही है। गाधीजी को लोग एक सत मानते है और आप एक पक्के देशभक्त समझे जाते है। किन्तु आप दोनो इससे कुछ अधिक भी है। आप लोग उसी अर्थ में राजनीतिज्ञ भी है, जिस अर्थ में अब्राहम लिकन वास्तव में थे और आपको एक बडे जनसमूह का नेतृत्व करना है। यह एक ऐसी चीज है, जिसे चीनी लोग हिंदुस्तानियो से कम राजनैतिक होने के कारण बहुत कम समझ पाते है।

मै अपने देश की स्थिति से भी प्रसन्न नही हू—न राजनैतिक स्थिति से, न आर्थिक स्थिति से। इनके बारे में आपको मै किसी अगले पत्र में लिखूगा,

जबकि मुझे आपके पास तक उस पत्र के पहुचने का निश्चय हो जायगा।

इसलिए मेरे लिए कोई ऐसी बात कहना, जो उपदेश-जैसी मालूम हो, स्वय मे एक बहुत ही अनर्गल बात होगी। फिर भी आप मुझे क्षमा करेंगे यदि मै यह आशा करू कि हिंदुस्तानी नागरिक रक्षा का काम ऐसी ही भावना के साथ करेंगे मानो वे स्वय अपने शासक थे। ऐसा करने में न केवल वे एक भयानक शत्रु को मार भगाने में सहायक होगे, बल्कि अपनेको अन्तत प्रान्तीय और केन्द्रीय दोनो ही प्रकार के शासन की बागडोर सभालने के लिए तैयार करेंगे। मै जानता हू कि यह दिन बहुत दूर नही है।

सादर,

आपका,

पडित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद (हिंदुस्तान)

तुआन-शॅग चिएन

३४०. महात्मा गाधी की ओर से

वर्धा
२४ अप्रैल, १९४२

चि. जवाहरलाल,

मीराबहन ने मान लिया कि मुझे कुछ-न-कुछ कदम उठाना होगा, और उसे कुरबानी करनी होगी। मै इलाहाबाद न जाऊ तो भी वह जाना चाहती थी। इसलिए मैंने उसे यहा बुला लिया। उसके साथ में अपने विचार प्रस्ताव के रूप में भेजता हू। मौलानासाहब का आग्रह था कि मै इलाहाबाद जाऊ। मैंने लाचारी बताई। इन दिनो में मुसाफिरी करना मेरे लिए कठिन बात है, इतना ही नही, लेकिन मैंने उसी अरसे में तीन मीटिंगें बुलाई हैं। इसलिए मैंने मौलाना से माफी माग ली और लिखा कि मै अपने विचार प्रस्ताव के रूप में भेजूगा।

प्रस्ताव के समर्थन में दलील देने की आवश्यकता मै नही समझता हू। अगर मेरा प्रस्ताव आप लोगो को अच्छा न लगे तो मेरा आग्रह हो नहीं सकता है। हमारे लिए ऐसा मौका आया है कि हरेक को अपना मार्ग

सोच लेना है।

फेनी वगैरा में सल्तनत का बर्ताव ऐसा चल रहा है कि वह बरदाश्त के काबिल नही है। ऐसी सल्तनत बचकर भी क्या करेगी ? और आज तो वह बचने की कोशिश कर रही है। मेरा विश्वास हो गया है कि सल्तनत उठ जाने से हम जापान के साथ अच्छी तरह से हिसाब कर सकते है। यह दूसरी बात है कि सल्तनत उठ जाने पर हम आपस में लड-मरेंगे। भले ऐसा भी हो। हम थोडे सल्तनत की मेहरबानी से आपस-आपस के झगडो से बचना चाहते है ?

आचार्य नरेन्द्रदेव ने प्रस्ताव देखा है और पसद किया है।

बापू के आशीर्वाद

३४१ लुई जॉनसन की ओर से

अमरीका के राष्ट्रपति के निजी
प्रतिनिधि का दफ्तर,
नई दिल्ली
१२ मई १९४२

प्रिय जवाहरलाल,

'दी बैकग्राउड' को मै बडी रुचि के साथ पढता रहा हू। पिछले हफ्ते-डेढ हफ्ते के बीच यह पहली पुस्तक है जिसे मैने पढा है। अस्पताल से मै कल निकला था और उम्मीद करता हू कि शुक्र या शनिवार के आसपास स्ट्रैटो-लाइनर के किसी जहाज से चल दूगा—जो भी जहाज सबसे पहले मिले। मुझे इस बात की खुशी है कि छुट्टी पर जाने से पहले आपने मुझसे मिलने के लिए समय निकाला। भगवान करे कि आपकी ये छुट्टिया आनन्दप्रद, शान्तिदायक और पूरी तरह उपयोगी सिद्ध हो। मुझे उम्मीद है कि छुट्टियो से लौटने के बाद आप मेरे बारे में शीघ्र ही कोचीन भवन के जरिये कुछ समाचार पायेंगे।

आपके ससर्ग ने मेरी भारत-यात्रा को उपयोगी बना दिया है। जहातक मेरा सवाल है, हम उन जहाजो की तरह नही होगे, जो रात को चुपचाप गुजर जाते है। मुझे उम्मीद है कि आपके साथ मेरी सुखदायक मित्रता वर्षो तक बनी रहेगी।

मगल-कामनाओ-सहित

आपका,
लुई जे.

पडित जवाहरलाल नेहरू,
नागर (कुल्लू)

फिर से—

मैं 'रिवर ऑव किंग्स' को स्वदेश जाते समय रास्ते में पढूंगा। इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हू।

जर्मनी ने आज अपना आक्रमण शुरू कर दिया है। अव हम उस सकट की ओर जा रहे हैं, जो यह निश्चित करेगा कि युद्ध लम्वा होगा या छोटा।

आपका,
लुई

३४२. जी अधिकारी की ओर से

३ मई १९४२

प्रिय पडितजी,

ए आई सी सी के अधिवेशन के नतीजो पर कुछ विचार आपके सामने रखने की दृष्टि से मैं यह पत्र आपको लिख रहा हू। आप मुझे उतनी अच्छी तरह नही जानते, जितनी अच्छी तरह मेरे दोस्त को, जो दिल्ली में क्रिप्स से वातचीत के समय आपसे मिले थे। पर उससे क्या!

इस ए आई सी सी के अधिवेशन के नतीजो के वारे में हमें वडा क्षोभ है। हमारा खयाल है कि इन नतीजो के कारण आज देश और जनता पहले की अपेक्षा अधिक बुरी हालत में है। मेरा अनुमान है कि इनसे आप भी वहुत ज्यादा खुश नहीं है। मैं गलत हो सकता हू, पर मुख्य अविकृत प्रस्ताव पर वोलते हुए आपने अपने उपसहारात्मक भाषणो में जो कहा उससे मुझपर यही असर पडा। इस भाषण की लवी और आत्म-निरीक्षण से भरी—अगर मुझे ऐसा कहने की अनुमति दें तो—भूमिका ने मुझपर यह असर डाला मालूम होता है कि आपने प्रस्ताव पर कुछ सशोधन पेश किये, जिनमें से कुछ स्वीकार कर लिये गए, कुछ ठुकरा दिये गए। युद्ध के दोनों पक्षो को एक ही स्तर पर समझनेवालो को आपकी फटकार वल्यता अच्छे

शब्दो में थी।

असल में यही खास बात है। प्रस्ताव नि सदेह दोनो दुश्मनो के बीच पूरी तरह से तटस्थता की भावना से किया गया था और वास्तव में यह दोनो में तनिक भी भेद नही करता है। सशोधन चाहे कुछ भी थे, इस भावना में उनसे कोई अतर नही पडता। क्रिप्स-मिशन की असफलता के फौरन बाद आपने अखबारवालो को दी गई अपनी शानदार भेंट में जो कहा, उससे इस प्रस्ताव की भावना काफी अलग है। यही वह चीज है, जिसने हमें बेचैन कर दिया है। यह इस नाजुक घड़ी में हर देशभक्त को बेचैन कर देगा।

आप खुद चाहे असतुष्ट हो, लेकिन आप हमसे यही कहेंगे—अच्छा, और क्या किया जा सकता था ? आप लोग हमारी जनता की ब्रिटिश-विरोधी भावना को महसूस नही करते। नही साथी, हम निश्चित रूप से इसे महसूस करते है। यह प्रस्ताव और ए आई सी सी की सारी कार्यवाही ब्रिटिश-विरोधी भावना को और उभार देते है। इसका नतीजा क्या होगा ? साम्राज्यवाद-विरोधी भावना और बढेगी, आजादी के लिए भावना और तीव्र होगी, आत्म-विश्वास में और वृद्धि होगी ? मुझे भय है कि यह कुछ नही होगा। ब्रिटिश-विरोधी भावना अपने साथ तटस्थता का रुख और अहिसात्मक असहयोग की दृष्टि को लेकर, उस समय जबकि दुश्मन हमारे घरो के भीतर घुस आये हो, जापान-पक्षपाती भावना को और पराजय-वृत्ति को जन्म देगी।

इस नाजुक घडी में ए आई सी सी ने हमारी जनता को कोई मार्ग-दर्शन नही दिया। इसने उनको आशा और विश्वास का कोई सदेश नही दिया। उसने काम करने का कोई रास्ता नही दिखाया। फिलहाल इसने ब्रिटिश-विरोधी भावना का बुखार चढा दिया। जब यह बुखार उतरेगा तब पराजय की वृत्ति और जापान-पक्षपाती भावना और ज्यादा हो जायगी। मौलाना ने उन लोगो का जिक्र किया, जो चुपचाप आक्रमणकारी का स्वागत करते है। यह भावना मध्यम-वर्ग के काग्रेसजनो में व्यापक रूप से फैली हुई है। काग्रेस की मौजूदा हालत में यह भावना बढेगी और वह निश्चित रूप से हमारी जनता के दिल को चूर-चूर कर देगी तथा आक्रमणकारी के खिलाफ उनके हाथो को कमजोर कर देगी, यदि मैं बहुत ही दबे शब्दो में कहू तो।

हमने राष्ट्रीय सरकार प्राप्त नही की। हमारे पास जनता को देने के लिए हथियार भी नही, जिससे वह सम्माननीय व्यक्तियो की तरह अपनी प्रतिरक्षा को सगठित कर ले और जो वास्तव में प्रभावशाली हो। यह सही है कि इसके लिए अग्रेज जिम्मेदार है। परतु जनता से यह कहना कि बस, यह इसका अत है, अब हम राष्ट्रीय सरकार स्थापित नही कर सकते, हम अब हथियार नही जीत सकते, अब समय नही है, हमारे सामने सिवाय अपना अहिसक जौहर करने के और कोई चारा नही है. विनाशकारी पराजय-भावना को बताना है। अग्रेज़ो ने हमें राष्ट्रीय सरकार नही दी। उन्होने हमें शस्त्रास्त्र नही दिये...इसलिए हम अपनी जनता से कहते है कि जो भी हथियार उसके पास है, उन्हें भी डाल दो। ब्रिटिश प्रभावशाली ढग से हमें अपने देश की रक्षा नही करने देंगे। इसलिए हम उन्हें मजबूर करने की सारी कोशिशें भी छोड देते हैं और ज्यादा बेअसर ढग से अपनी रक्षा करने का निश्चय करते है ...यह होगा नतीजा तटस्थता की अवस्था का, आक्रमणकारी के साथ अहिसात्मक असहयोग का तथा जिस क्षेत्र में ब्रिटेन की फौजें लड रही है, उस क्षेत्र में कार्रवाई करने से इन्कारी करने आदि का। मुझे लगता है कि अपने चेहरे के प्रति घृणा दिखाने के लिए हम अपनी ही नाक काट रहे है।

कह नही सकता कि मै अपने-आपको स्पष्ट कर सका हू या नही। जो बात मै कहना चाह रहा था वह यह है कि ए आई सी सी का प्रस्ताव आपके अखबारी बयान में अगीकृत स्थिति से कोसो दूर है। ए आई सी सी में दिये गए भाषणो से हमें यह आभास मिल गया कि काग्रेस के प्रातीय नेता जनता के सामने प्रस्ताव की किस प्रकार व्याख्या करेंगे। इस भावना का एक अनोखा उदाहरण एक वक्ता का जापान को ब्रिटिश सरकार का दुश्मन (हमारा नही) बताना था। मुझे भय है कि यह किसी एक सदस्य के मुह से योही नही निकल गया। यह तो तटस्थता की भावना की पराकाष्ठा है। बहुत-से काग्रेसी इसी ढग से प्रस्ताव को समझेंगे और उसकी व्याख्या करेंगे। क्या ये गुट हमारे लोगों के दिल को फौलाद और बाजुओ को ताकतवर बना सकते है ? नही, यह तो पराजय-वृत्ति का बीज बोने जा रहे है। आप तबतक दुश्मन के खिलाफ पूरी ताकत से नही लड सकते जबतक कि आप

उनसे पूरे दिल से नफरत करना न सीख लें। यह है मई-दिवस का सदेश, जो दो दिन पहले स्टालिन ने अपनी जनता को दिया था।

स्टालिन से हम यह सबक सीख सकते है, खासतौर पर इस समय। आज जिस चीज की हमको सबसे अधिक आवश्यकता है वह है देश के इस छोर से उस छोर तक प्रचार-आदोलन—एक ऐसा आदोलन, जिसके द्वारा जापानी हमलावरो और नाजियो के खिलाफ दहकती हुई घृणा का प्रचार किया जाय। कहा जाय कि ये वे लोग है, जिनकी हमारे देश पर आख है और कि ये वे हमलावर है, जो हमारे देशवासियो को गुलाम बनाना चाहते है। आप पूछेंगे कि इसका क्या परिणाम होगा? इसका परिणाम यह होगा कि यह जनता में राष्ट्र की सुरक्षा की भावना पैदा कर देगा। इससे पी वी बी (पीपुल वालटियर बटालियन) तथा दूसरी हलचलो को एक लक्ष्य और दिशा मिलेगी। पी वी बी में आप देशभक्त नौजवानो का आवाहन करते है। उन्हें आप नागरिक प्रतिरक्षा तथा आपात-कालीन सेना के लिए सगठित और अनुशासित कर रहे है। उनके अन्दर जापान-विरोधी भावना भर दीजिये और यह चेतना भी कि जब यह युद्ध हमारी भूमि पर लडा जायगा तो वास्तव में क्या दाव पर होगा—और कल ये मददगार दस्तो और छापामारो के आधार होगे। मुझे विश्वास है कि अग्रेजो के न देने पर भी हमलावर से लडने के लिए हमारे लोगो को हथियार मिल जायगे। लेकिन जापान-विरोधी भावना से उनके दिलो को फौलाद बना दीजिये, जैसा कि चीन ने भी १९३७ से पहले किया था। उनमें तटस्थता का विष न भरिये। इससे पराजय-भावना पैदा होती है। हमारे बालक पी वी बी में है। लेकिन प्रवृत्ति उन्हें उसमें से निकालने की है, सिर्फ इसलिए कि ये जापान-विरोधी आदोलन चला रहे है, सिर्फ इसलिए कि वे कहते है कि यह हमारी लडाई है, हमारे देश की आजादी और रक्षा की लड़ाई। यह प्रस्ताव इस प्रवृत्ति को और तेज कर देगा।

इस अधिवेशन में जो दूसरे राजनैतिक विवाद खडे हुए थे, उन्हें मैंने जान-बूझकर छोड दिया है। मेरा एकमात्र उद्देश्य प्रस्ताव के एक पहलू को आपके सामने रखना था, जैसा कि वह हमें नजर आता है। ऐसा मैंने इसलिए किया, क्योकि मै महसूस करता था कि इसका आपपर असर पड सकता है

और आप शायद इसपर विचार-विनिमय करना जरूरी समझें कि प्रस्ताव के सभावित बुरे नतीजो को कैसे सुधारा जाय। इसके अलावा हम यह भी जानना चाहेगे कि क्या काग्रेस अपने उन सदस्यो को वाहर निकालनेवाली है, जो देश-भक्ति से पूर्ण जापान-विरोधी प्रचार करेंगे और जो जनता को समझाते जायगे कि कौन-कौन से वडे मसले दाव पर है। कुछ कार्यकर्त्ता, किसान और विद्यार्थी तटस्थता के खिलाफ जोरदार प्रचार करते जायगे और पराजय-वृत्ति के विरुद्ध लडते जायगे। क्या काम करनेवाले काग्रेसियो को निकाल दिया जायगा ? ये प्रश्न है, जो उठते है। मेरा विचार है कि यह अनिवार्य है कि इस प्रस्ताव की तटस्थता के रूप में व्याख्या करने से रोका जाय। यह उन लोगो के लिए वेडी का काम न करे जो जनता में आत्मिक बल जगाने का, और जैसा कि चीनी लोग कहते है, हर प्राप्त उपाय से हमलावर के राष्ट्रीय प्रतिकार के लिए उन्हें एक जगह इकट्ठा करने का काम कर रहे है।

कितने ही मतभेद हो, एक वात के लिए हमे एक होना है—जनता में देश-भक्तिपूर्ण, जापान-विरोधी, हमलावर-विरोधी जागृति पैदा करने के लिए तथा किसी भी कीमत पर पुरुषार्थपूर्ण राष्ट्रीय प्रतिकार की भावना उसमें उत्पन्न करने के लिए। हमारी जनता, जो भी हथियार उसे मिलें, उन्हीसे, हमलावर का मुकावला करेगी। इस प्रतिकार को करते हुए वह ब्रिटिश सेना से सहयोग करेगी। इससे उसकी शान घटेगी नही, वल्कि सैंकडो-हजारो गुनी वढेगी। अगर स्थिति ऐसी ही चलती रही, जैसी कि है, तो यह सिर्फ चद जगहो पर होगा और इसे चद दस्ते ही करेंगे, लेकिन इन मुट्ठी भर लोगो की कुरवानी ही हमारी उस नि शस्त्र अवस्था की शर्म को धो डालने में काफी काम कर दिखायेगी, जिसपर हम लवे अरसे से जोर से रोते रहे है। आप कम्युनिस्टो को शायद पसद न करें, जव वे भरती की वात करते है और उस युद्ध-प्रयत्न में भी सहकार करने की जो हमलावर पर चोट करता है और जनता की रक्षा करता है। लेकिन यह एक कम्युनिस्ट की ज्वलत देशभक्ति है, जो उसे ऐसा करने को प्रेरित करती है। ब्रिटिश-विरोधी नेतृत्व और उसके साथ मिली तटस्थता का अर्थ होना है पराजय-वृत्ति और उससे भी ज्यादा पराजय-वृत्ति जनता में। यह वह जमीन नही है जिसमें हम

अपनी मातृभूमि की रक्षा करनेवाले देशभक्त पैदा कर सकें। यह ऐसी जमीन है, जिसपर दुश्मन—गुलाम बनानेवाला नया साम्राज्यवादी दुश्मन अपनी घिनौनी फसल उगायेगा।

इसलिए आपसे हमारी अपील है कि आप देखें कि फासिस्ट-पक्षपाती तत्व इस प्रस्ताव का नाजायज फायदा न उठायें, बल्कि इसे आपके अखबारी बयान की भावना से और छापामारो और 'झुलसी जमीन' वाले आपके बयान की रोशनी में पेश किया और अमल में लाया जाय।

लबे और इधर-उधर की जरूरी और गैर-जरूरी बातो से भरे इस पत्र के लिए क्षमा करें। यह एक देशभक्त की ऐसे व्यक्ति को अपील है, जिसकी हमारे महान राष्ट्रीय सगठन में बेजोड जगह है और जो ए आई सी सी. के प्रस्ताव से निकलनेवाले सभावित विनाशकारी नतीजो का इलाज करने में काफी-कुछ कर सकता है।

आपका,
जी. अधिकारी[1]

३४३. अबुल कलाम आज़ाद की ओर से

कलकत्ता
१३ मई १९४२

प्रिय जवाहरलाल,

दिल्ली से आपने जो तार और खत मुझे भेजा उसके लिए मै आपका शुक्रिया अदा करता हू। मेहरबानी करके गौर करें कि मैंने लिखा है—"मै आपका शुक्रिया अदा करता हू।" मैंने सिर्फ "शुक्रिया" नही लिखा। आपने दिल्ली में बताया था कि दोनो के मायनो में फर्क है। इस तरह इस लफ्ज के दो तरह से जाहिर करने में जो पेचीदा फर्क है उसको मैंने पूरी तरह निभाया है।

मुझे किदवई का खत मिला है। पालीवाल ने भी मुझे तार दिया है कि वे बच्चो को निकालने के मामले में तैयार हैं। मै बगाल सरकार के साथ तफसील तय कर रहा हू। जैसे ही वह किसी पक्के नतीजे पर पहुचे कि मैं यू पी के दोस्तो को इत्तिला दूगा।

---

[1] जी. अधिकारी भारतीय साम्यवादी दल के प्रमुख सदस्य रहे है।

लेकिन आज ही मुझे पता चला कि किदवई कल डिफेंस ऑव इडिया एक्ट के मातहत अचानक गिरफ्तार कर लिये गए हैं। मेरी समझ में नही आ रहा कि पिछले चन्द दिनो में उन्होने ऐसा क्या किया है कि वह यू पी सरकार के लिए नये सिरे से एक खतरनाक आदमी वन गये।

मैंने अपने पिछले खत मे आपको लिखा था कि मै बम्बई जा रहा हू, लेकिन बगाल के मामलो ने मुझे इस तरह फसा लिया है कि मुझे अपनी रवानगी मुल्तवी करनी पडी। चटगाव के ऊपर जो हवाई हमला हुआ है उससे यहा एक खयाल फैल गया है कि चन्द दिनो के अन्दर कलकत्ता पर भी हमला होगा। इसके अलावा समुद्र के किनारे-किनारे रहनेवाले बगाल के जो लोग हैं उनके बारे में एकाएक नये और मुश्किल मसले खडे हो गये हैं। ऐसी सूरतो में मैं यहा से बाहर जाने के लिए तैयार नही हो सका।

मुझे यह देखकर तकलीफ होती है कि इफ्तिखार सही रास्ते से भटक रहा है। मुझे नही मालूम कि आपने उसे रास्ते पर लाने की कोशिश की या नही और अगर की तो उसके क्या नतीजे हुए।

कुल्लू में आप जितने ज्यादा दिन ठहरेंगे, मुझे उतनी ही खुशी होगी। जव मैंने इलाहावाद में आपको थकान से मुरझाया हुआ पाया तो मुझे वहुत फिक्र हो गई थी। आपको यह मजूर करना चाहिए कि अव आपने पचास वरस पार कर लिये है और आपको अपनी तन्दुरुस्ती के वारे मे कुछ ज्यादा अहतियात रखना चाहिए।

आपका,
अ. क. आजाद

३४४ क्लेयर बूथ लूस की ओर से

ग्रीनविच, कनेक्टिकट
४ जून १९४२

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

मुझे एक कहानी याद है। वह मेरे एक मित्र ने मुझे सुनाई थी, जो पहले महायुद्ध के एक कूटनीतिज्ञ थे। उन्होने वताया कि वारसाई सधि के कुछ साल वाद वह पेदरेवस्की के साथ खाना खा रहे थे और उनसे कह उठे—"शीशो-वाले वडे कमरे में यूरोप को वाटनेवाले पतलूनधारी महानुभावो ने यूरोप

के विश्वासी स्वभाव के राष्ट्रो पर जो बहुत-से प्रादेशिक अन्याय किये थे उनको ध्यान में रखते हुए, जनावमन, यह सचमुच बडे मार्के की बात है कि पोलैंड जैसा राष्ट्र एक इतने बडे स्वतत्र और वैभवशाली देश के रूप में विकसित हुआ। युद्ध के दिनो में आप जब वाशिगटन में थे तब आपने किस तर्क से मिस्टर विल्सन को पोलैण्ड इरेडेन्टा की आवश्यकता का विश्वास दिलाया था ?" जैसा कि मेरे मित्र ने बताया, इसपर उस महान पोलैण्ड-निवासी ने उत्तर दिया—"यह सच है कि मैं कई मौको पर व्हाइट हाउस में गया, किन्तु मैंने शायद ही कभी मिस्टर विल्सन से राजनीति की बातें की हो। सच तो यह है कि वहा मैं इसलिए जाता था कि वह मेरा पियानो सुनना पसन्द करते थे।"

यह कहानी निश्चय ही सन्देहजनक है। तब फिर मैं इसकी चर्चा क्यो कर रही हू ? इसलिए कि तब (जैसा कि अब है) और अब भी (जैसा कि तब था) वाशिगटन और व्हाइट हाउस राष्ट्रो के प्रारब्ध का निर्णय कर रहे है (सदा यह मानकर कि जीत हमारी होगी—और मैं भी ऐसा ही सोचती हू।) और तबकी तरह अब भी महान व्यक्तियो की रहस्यपूर्ण टक्कर से वह चिनगारी उत्पन्न होगी, जो प्रकाश करके राष्ट्रो को उनकी स्वतत्रता का मार्ग दिखायेगी या ऐसी ज्वालाए भडका देगी, जो एक शताब्दी तक भडकती रहेंगी।

यदि यहा आने का कोई अनुकूल अवसर आपके सामने आये तो आप-को शायद इन्कार नही करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि हिंदुस्तान, इग्लैंड और अमरीका में ऐसे बहुत-से लोग है जिन्हें यदि एक साथ एक जगह विचार-विनिमय के लिए बुलाया जाय तो वे हिन्दुस्तान के प्रश्न का ऐसा हल निकाल लेंगे, जिससे आपके लिए, ग्रेट ब्रिटेन के लिए और हमारे लिए भी भविष्य में उत्तम जीवन बिताने में आसानी होगी। इनमें से दो आदमी तो निश्चय ही पडित नेहरू और राष्ट्रपति रूजवेल्ट है। मैं नही जानती कि आप एक-दूसरे को पसन्द करेंगे या नही। पसन्द करने के लिए जानना जरूरी है, लेकिन आप लोग एक ऐसी भाषा मे परस्पर बातचीत कर सकेंगे जो १९वी शताब्दी की भाषा नही है। हमारे राष्ट्रपति ने अक्सर समझने में बहुत बडी-बडी भूलें की है (यह जानते हुए भी कि मेरी बात कितनी

अनुचित लग रही होगी, मैं इसे कहे जा रही हू ।) लेकिन वह सदा ही ठीक रास्ते पर चले हैं । अगर कभी उन्होने सडक पर चलने में भूल की भी है तो वह सदा ठीक सडक पर ही रहे हैं । और यही आखिरकार सबसे महत्वपूर्ण बात है । मुझे विश्वास है कि आप दोनो एक-दूसरे को मोहित करने में चूकेंगे नही और बुनियादी समस्याओ पर बुद्धिमत्ता के साथ विचार-विनिमय करेंगे, जोकि सचमुच बहुत जरूरी है । लेकिन छोडिये, कोई कुछ भी कहे, जबतक स्वय आपको ऐसा करना बुद्धिमत्तापूर्ण नही मालूम होगा तबतक आप यहा आयेंगे नही और आपको यह बुद्धिमत्तापूर्ण तबतक नही मालूम होगा, जबतक हमारे राष्ट्रपति को ऐसा न मालूम हो ।

इस सप्ताह और आज सवेरे हिंदुस्तान से जो खबरें आई है, वे बेहतर हैं । मेरा मतलब बडे-बडे रक्षक बेडो के आगमन से है, लेकिन मैं अनुमान नही लगा पा रही हू कि इस सबका क्या मतलब हो सकता है, न यही समझ पा रही हू कि चटगाव में जापानियो की जो स्थिति है उसका हिंदुस्तान के भीतर और बाहर क्या प्रभाव पडनेवाला है ।

सुखपूर्वक रहिये, इस प्रकार के अवाछित परामर्श और सुझाव देने के लिए क्षमा कीजिये । मैं फिर बेचैन होती जा रही हू और आस्ट्रेलिया जाने की सोच रही हू ।

अभिवादन-सहित,

फ्लेयर लूस

३४५. एस एच शेन की ओर से

नई दिल्ली
१६ जून १९४२

प्रिय पडित नेहरू,

मुझे डाक्टर मेनन से आपका १४ जून का पत्र मिला, जिसके साथ आपने जनरलसिमो के नाम लिखा गया महात्मा गाधी का एक पत्र उनके पास पहुचाने के लिए भेजा है ।

मैंने इस पत्र को और मैडम च्याग के नाम लिखे गए आपके खत को भी बर्मा में हमारे आक्रमणकारी दस्ते के जनरल ल्लोत्सो यिन को सौंप दिया है । वह जनरलसिमो से चुगकिंग में मिलने के लिए कल नई दिल्ली से जाने-

वाले है। मैंने यह सदेश तार से भी साकेतिक भाषा मे भेज दिया है और उसे जनरलसिमो तक पहुचने में अधिक देर नही लगनी चाहिए।

इस बीच मैंने अपनेको महात्मा गाधी के पत्र के विवरण से परिचित कराने का अवसर पा लिया है और मै इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि जो कोई भी इस पत्र को खुले और पूर्वाग्रहरहित मस्तिष्क से पढेगा वह या तो हिंदुस्तान को फौरन स्वतत्रता देने की उनकी अकाट्य दलील से आश्वस्त हुए बिना नही रहेगा या उनके इस सद्भावनापूर्ण सकल्प की प्रशसा किये बिना नही रहेगा कि वह कोई भी ऐसा काम नही करेंगे, जिससे चीन को नुकसान पहुचे या जिससे किसी प्रकार भी हिंदुस्तान या चीन में जापानी आक्रमण को प्रोत्साहन मिले। आपके मस्तिष्क मे जिस आन्दोलन की कल्पना है उसे अगर ईमानदारी और सचाई से चलाया जाय तो निश्चय ही उसे तमाम चीनी जनता की सहानुभूति और नैतिक समर्थन प्राप्त होगा और मुझे पूरी उम्मीद है कि उसके सिर पर सफलता का वह सेहरा बधेगा, जिसका वह अधिकारी है यानी हिंदुस्तान की जो स्वतत्रता न्यायपूर्वक और निर्विवाद रूप से आपकी है वह आपको मिलकर रहेगी। मै आपके फिर से नई दिल्ली आने की प्रतीक्षा मे हू जबकि मै इन रोमाचकारी और महत्त्वपूर्ण दिनो की बहुत-सी समस्याओ के बारे में आपसे जानकारी पाने का आनद प्राप्त करूगा।

आपका,
एस. एच. शेन

पडित जवाहरलाल नेहरू,
बम्बई।

३४६. लैम्पटन बेरी के नाम

२३ जून १९४२

प्रिय श्री बेरी,

कर्नल जॉन्सन का सदेश देनेवाले २० जून के आपके खत के लिए धन्यवाद। मैंने सदेश का स्वागत किया। मैंने श्री वेल्स के भाषण को भी दिलचस्पी के साथ पढा है। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि कर्नल जॉन्सन की सेहत काफी सुधर रही है। उम्मीद है, वह जल्दी ही चगे और अच्छे हो जायगे। उम्मीद है, आप उन्हें मेरा प्रेमपूर्ण अभिवादन पहुचा देंगे

और बता देंगे कि मैं उनके बारे में अक्सर सोचता हू।

मैं बिल्कुल समझ सकता हू कि गाधीजी के हाल के कुछ बयानो से अमरीका मे गलतफहमी हुई है। शायद उनके बाद के बयानो से इस गलतफहमी के साफ होने मे मदद मिली है। एक बात पक्की है गाधीजी अपनी ताकत के मुताबिक सबकुछ करना चाहते है, जिससे हिंदुस्तान पर जापान का हमला और कब्जा न हो सके। वह देश के लोगो को प्रतिकार करने के लिए, न कि झुक जाने के लिए, जगाना चाहते है। उन्हें इस बात से तकलीफ हुई है कि हिंदुस्तान मे ब्रिटिश पालिसी बिल्कुल उल्टे नतीजे ला रही है और लोगो को इतना ज्यादा विरोधी बना रही है कि उनके मन में यह भावना पदा हो रही है कि मौजूदा हालत से तो कोई भी तब्दीली, चाहे वह कितनी ही खराब हो, अच्छी होगी। यह भयानक और हानिकारक वृत्ति है, जिसे वह मिटाना चाहते है।

मलाया और बर्मा के बाद हिंदुस्तान में यह यकीन फैल गया है कि जहातक हिंदुस्तान में ब्रिटिश सरकार का ताल्लुक है, जापानी हमले का, खास तौर पर बगाल में, प्रतिकार करने की न कोई गभीर इच्छा है, न ताकत। बगाल में अधिकारियो ने अपने अफसरो के नाम जो गोपनीय सरक्यूलर निकाले है उनमें देश खाली करने के तरीको की पूरी चर्चा है। और यह भी चर्चा है कि बडे अफसरो को अपने मातहतो के हाथ में अधिकार सौपकर किस तरह चले जाना चाहिए। इन मातहतो को सचमुच यह कहा गया कि दुश्मन की आज्ञाओ के अनुसार वे अपना मामूली काम-काज करते रहें, क्योकि यह अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार मालूम होता था। ऐसी हिदायतो से प्रतिकार को प्रोत्साहन नही मिलता। यह तो असल में हार की भावना है। लगभग दो महीने हुए मद्रास सरकार ने जिस तरह का व्यवहार किया वह भी गैर-मामूली था। हमले की सभावना की अफवाह पर वे लोग भाग गये। (बाद में वह अफवाह झूठी निकली)।

अगर बाद में किसी वक्त डटकर मुकाबला करने का इरादा है तो भी सिर्फ इसी बात का कि बगाल का पतन हो गया है हिन्दुस्तान भर में दूर तक असर डालनेवाले नतीजे होगे। यह बहुत मुमकिन है कि सेना के इकट्ठे होने की बात तो दूर रही, बहुत-से देहाती इलाको में असैनिक शासन

धीरे-धीरे खत्म हो जाय। इसका भी जरूरी तौर से फौजी हालात पर असर पडेगा और वह कमजोर होगी।

मुझे पता नही कि कहातक अमरीकी विमानो और दूसरी किस्म की मदद ने हालत को बदला है। लेकिन दरअसल हालत जैसी दो महीने पहले थी, उससे बहुत जुदी नही हो सकती। कोई हिंदुस्तानी इन लक्षणो को शान्त होकर नही देख सकता। इसका नतीजा यह होगा कि देश के महत्वपूर्ण भागो पर जापान का अधिकार हो जायगा और बहुत-से दूसरे भागो में अव्यवस्था बढ जायगी। फिर भी हमारा खयाल है कि इसे रोका जा सकता है। खालिस फौजी अर्थ में हम निकट भविष्य में बहुत-कुछ नही कर सकते और कार्रवाइया हिंदुस्तान में मित्र राष्ट्रो की सेना पर मुनहसिर रहेगी। लेकिन हिंदुस्तानी आजादी को मजूर कर लेने और यहा राष्ट्रीय सरकार कायम हो जाने से वातावरण मे बिजली दौड जायगी और दुनिया में बडा फर्क हो जायगा। अगर बदकिस्मती से जापानी देश के कुछ हिस्सो पर कब्जा कर लें तो भी बाकी के भाग बैठ नही जायगे, बल्कि चीन की तरह हमला जारी रखेंगे। निष्क्रिय होकर भाग्य के भरोसे बैठे रहने के बजाय सक्रिय विरोध और प्रतिकार किया जायगा। इसलिए मित्रराष्ट्रो की सेना की मदद से और चीन को मदद देने के लिए भी हिंदुस्तान की रक्षा के लिए हिंदुस्तान की आजादी की बडी अहमियत हो जाती है। इसलिए आज के मसले का विचार इसी बात को खयाल में रखकर करना पडेगा।

हममें से उन लोगो के लिए, जिन्हें कुछ जिम्मेदारी उठानी पडती है, व्यक्तिगत रूप में काम करना काफी नही है। हमे दूसरो से भी सही दिशा में काम कराना पडता है। और आम तौर पर लोकमत को प्रभावित करना पडता है। मै यह कोशिश करता रहा हू। मै किसी भी हालत में यह नही चाहता कि हिंदुस्तान किसी हमले के आगे झुके। मैं उसका सक्रिय और लगातार प्रतिकार चाहता हू। लेकिन अगर इसे कुछ भी कारगर बनाना हो तो हिंदुस्तान में ब्रिटिश सरकार के बजाय स्वतत्र राष्ट्रीय सरकार कायम करनी होगी। इससे फौजी कार्रवाइयो या हिफाजत की व्यवस्था में कोई खलल नही पडेगा।

अपने पिछले खत में मैने आपको बताया था कि चीनी प्रधान सेनापति

के नाम की गाधीजी की चिट्ठी २१ जून को 'हरिजन' में निकलेगी। करीब-करीब अन्तिम क्षण हमें सदेशा मिला कि सेनापति चाहते है कि उसे छापना रोक दिया जाय। हमने ऐसा ही कर तो दिया, लेकिन इसके लिए १० हजार प्रतिया नष्ट कर देनी पडी।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

श्री लैस्पटन बेरी,
सयुक्तराज्य अमरीका के राष्ट्रपति के निजी प्रतिनिधि
का कार्यालय, नई दिल्ली।

३४७ एस एच. शेन की ओर से

नई दिल्ली
२५ जून १९४२

प्रिय पडित नेहरू,

श्री रघुनन्दन शरण लखनऊ जानेवाले है और इस अवसर से लाभ उठाकर मै उन्हें यह पत्र आपके २३ जून के पत्र के उत्तर में दे रहा हू, जो कि मुझे अभी-अभी प्राप्त हुआ है।

जैसा कि मैंने डाक्टर मेनन के द्वारा भेजे गये अपने पिछले पत्र में लिखा था, मै आपके पुन दिल्ली आने की राह देख रहा हू जबकि मुझे आपसे आजकल की बहुत-सी महत्त्वपूर्ण समस्याओ के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। किन्तु मेरी यह इच्छा कदापि नही है कि मै आपको दिल्ली आने के लिए किसी ऐसे समय में निमत्रित करू जबकि दिल्ली से बाहर हो रही आवश्यक सभाओ के कारण आपका वहा से आना उचित नही होगा। इस प्रकार का निमत्रण विवेकहीन और अदूरदर्शिता-पूर्ण होगा। श्रीमती नेहरू ने आपके पास मेरा जो सन्देश पहुचाया है, वह निश्चय ही किसी और कारण से नही, बल्कि भ्रमवश पहुचाया गया है। इससे बचने के लिए मै भविष्य में केवल अपने हस्ताक्षरो सहित निजी पत्रो द्वारा ही सूचना भेजा करूगा। मुझे विश्वास है कि इस व्यवस्था से आप सहमत होगे।

मुझे यह जानकर दुःख हुआ है कि जनरलिसिमो को लिखे गये महात्मा

गाधी के पत्र के न छाप सकने के कारण 'हरिजन' के अक के प्रकाशन में असुविधा तथा देर हुई। जहातक मेरा सवाल है, मै आपको विश्वास दिलाता हू कि मैंने उस पत्र की बातो को जनरलसिमो के पास तार द्वारा पहुचाने में जरा भी देर नही की और जनरलसिमो ने भी उसे न छापने की प्रार्थना भेजने मे उतनी ही तत्परता दिखाई। जो हो, अब जबकि वह पत्र छपने से रोक दिया गया है, मै आपको जनरलसिमो की प्रार्थना को स्वीकार करने के लिए धन्यवाद देता हू। मुझे उम्मीद है कि इस मामले में आप द्वारा की गई सहायता को वह भी पसन्द करेंगे।

वर्धा में काग्रेस कार्यकारिणी की आगामी बैठक में मै आपके लिए सौभाग्य की कामना करता हू और मुझे उम्मीद है कि यदि समय मिल सका तो आप इस महत्त्वपूर्ण सभा के महत्त्वपूर्ण निर्णयो के बारे में मुझे कुछ पक्तिया लिखने की कृपा करेंगे।

आपका,
एस. एच. शेन

पडित जवाहरलाल नेहरू,
लखनऊ

३४८. मैडम च्याग काई-शेक की ओर से

जनरलसिमो का सदर मुकाम, चीन,
चुगकिंग, जेचुआन,
२६ जून १९४२

यह पत्र आपको गोपनीय सूचना के लिए है।
पत्र-सख्या ८

प्रिय श्री नेहरू,

आपका पत्र-सख्या ९, जो कि वास्तव में पत्र-सख्या १० है, मुझे मिल गया है। मुझे अफसोस है कि मै इससे पहले उत्तर न दे सकी। किन्तु आवश्यक समस्याओ ने, जिनपर फौरन ध्यान देने की जरूरत थी, मुझे करीब-करीब पागल बना दिया है और वह भी ऐसे समय में जब मै बिल्कुल भी स्वस्थ नही हू। कुछ समय के लिए मै जनरलसिमो के साथ चुगकिंग से बाहर चेगटू चली गई थी और वहा से अभी-अभी लौटी हू। मेरी इन सारी समस्याओ

के नाम की गाधीजी की चिट्ठी २१ जून को 'हरिजन' में निकलेगी। करीब-करीब अन्तिम क्षण हमें सदेशा मिला कि सेनापति चाहते हैं कि उसे छापना रोक दिया जाय। हमने ऐसा ही कर तो दिया, लेकिन इसके लिए १० हजार प्रतिया नष्ट कर देनी पडी।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

श्री लैम्पटन बेरी,
सयुक्तराज्य अमरीका के राष्ट्रपति के निजी प्रतिनिधि
का कार्यालय, नई दिल्ली।

३४७. एस एच शेन की ओर से

नई दिल्ली
२५ जून १९४२

प्रिय पडित नेहरू,

श्री रघुनन्दन शरण लखनऊ जानेवाले है और इस अवसर से लाभ उठाकर मैं उन्हें यह पत्र आपके २३ जून के पत्र के उत्तर में दे रहा हू, जो कि मुझे अभी-अभी प्राप्त हुआ है।

जैसा कि मैंने डाक्टर मेनन के द्वारा भेजे गये अपने पिछले पत्र में लिखा था, मैं आपके पुन दिल्ली आने की राह देख रहा हू जबकि मुझे आपसे आजकल की बहुत-सी महत्त्वपूर्ण समस्याओ के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। किन्तु मेरी यह इच्छा कदापि नही है कि मैं आपको दिल्ली आने के लिए किसी ऐसे समय में निमत्रित करू जबकि दिल्ली से बाहर हो रही आवश्यक सभाओ के कारण आपका वहा से आना उचित नही होगा। इस प्रकार का निमत्रण विवेकहीन और अदूरदर्शिता-पूर्ण होगा। श्रीमती नेहरू ने आपके पास मेरा जो सन्देश पहुचाया है, वह निश्चय ही किसी और कारण से नही, बल्कि भ्रमवश पहुचाया गया है। इससे बचने के लिए मैं भविष्य में केवल अपने हस्ताक्षरो सहित निजी पत्रो द्वारा ही सूचना भेजा करूगा। मुझे विश्वास है कि इस व्यवस्था से आप सहमत होगे।

मुझे यह जानकर दुःख हुआ है कि जनरलमिमो को लिखे गये महात्मा

गाधी के पत्र के न छाप सकने के कारण 'हरिजन' के अक के प्रकाशन में असुविधा तथा देर हुई। जहातक मेरा सवाल है, मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि मैंने उस पत्र की बातो को जनरलसिमो के पास तार द्वारा पहुचाने में जरा भी देर नही की और जनरलसिमो ने भी उसे न छापने की प्रार्थना भेजने में उतनी ही तत्परता दिखाई। जो हो, अव जबकि वह पत्र छपने से रोक दिया गया है, मैं आपको जनरलसिमो की प्रार्थना को स्वीकार करने के लिए धन्यवाद देता हू। मुझे उम्मीद है कि इस मामले में आप द्वारा की गई सहायता को वह भी पसन्द करेंगे।

वर्धा में काग्रेस कार्यकारिणी की आगामी बैठक में मैं आपके लिए सौभाग्य की कामना करता हू और मुझे उम्मीद है कि यदि समय मिल सका तो आप इस महत्त्वपूर्ण सभा के महत्त्वपूर्ण निर्णयो के बारे में मुझे कुछ पक्तिया लिखने की कृपा करेंगे।

आपका,
एस एच. शेन

पडित जवाहरलाल नेहरू,
लखनऊ

३४८. मैडम च्याग काई-शेक की ओर से

जनरलसिमो का सदर मुकाम, चीन,
चुगकिंग, जेचुआन,
२६ जून १९४२

यह पत्र आपको गोपनीय सूचना के लिए है।

पत्र-सख्या ८

प्रिय श्री नेहरू,

आपका पत्र-सख्या ९, जो कि वास्तव में पत्र-सख्या १० है, मुझे मिल गया है। मुझे अफसोस है कि मैं इससे पहले उत्तर न दे सकी। किन्तु आवश्यक समस्याओ ने, जिनपर फौरन ध्यान देने की जरूरत थी, मुझे करीब-करीब पागल बना दिया है और वह भी ऐसे समय में जब मैं बिल्कुल भी स्वस्थ नही हू। कुछ समय के लिए मैं जनरलसिमो के साथ चुगकिंग से बाहर चेंगटू चली गई थी और वहा से अभी-अभी लौटी हू। मेरी इन सारी समस्याओ

और बीमारी के बावजूद मुझे सदा आपका और हिंदुस्तान का ध्यान रहा है।

जब जनरलसिमो को गाधीजी का पत्र मिला तब उन्होने फौरन वाशिंगटन तार भेजा और इस बात पर जोर दिया कि अमरीका और चीन को मिलकर काम करना चाहिए। जनरलसिमो अब गाधीजी के पत्र का उत्तर दे रहे है, किन्तु वह चाहते है कि मै आपको यह बात समझा दू कि वाशिंगटन के साथ उनके पत्र-व्यवहार का परिणाम जबतक निश्चित रूप से न मालूम हो जाय तबतक कुछ भी नही किया जाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि निश्चित सूचना मिले बिना इस समय गाधीजी या काग्रेस द्वारा किसी भी आन्दोलन का प्रारभ किया जाना नितान्त अनुचित होगा।

इस बारे मे अभी तो जनरलसिमो कुछ नही कह सकते, लेकिन जैसे ही उन्हें कोई निश्चित सूचना मिलेगी, वह आपको फौरन लिखेंगे। एक बार प्रारभ कर देने के बाद कोई भी आन्दोलन बिना घातक परिणामो के बन्द नही किया जा सकता। हिंदुस्तान के लिए जनरलसिमो जो कुछ भी कर सकते है, कर रहे है। तार इधर-से-उधर भेजे जा रहे है, चीन से वाशिंगटन और वाशिंगटन से चीन को और हम शायद वाशिंगटन में श्री चर्चिल की उपस्थिति का फायदा उठा सकें।

इस बीच विश्वास रखिये कि जनरलसिमो और मेरे दोनो के हृदय में हिंदुस्तान के लिए जो कुछ भी किया जा सकता है करने की हार्दिक इच्छा है और यदि कोई सफल निकल सकता है तो हमारी किसी चेष्टा की कमी के कारण उसमें विलम्ब नही होने पायेगा।

सद्भावनाओ-सहित,

सस्नेह आपका,
मेलिंग सुग च्याग

फिर से—

मै जानती हूं कि गाधीजी ने जो कुछ भी लिखा है उस सीमा तक वचन देने के लिए उन्हें तैयार करने में आपको कितनी चेष्टा करनी पड़ी होगी, क्योकि आपको याद होगा कि जब हम उनसे कलकत्ता में मिले थे तब जापान के सभावित आक्रमण के प्रति उनका सारा दृष्टिकोण अहिंसा और असहयोग का था। उनका अब यह कहना कि हिंदुस्तान द्वारा

जापान के विरोध को वह ठीक समझते है, निश्चय ही एक बहुत बडा आगे का कदम है।

मुझे अभी यह नही मालूम कि मै अमरीका कब जा सकूगी। अभी मुझे यहा की बातो पर ध्यान देना है और इसके अलावा पुराने गैस्ट्रिक फोडे के बार-बार उभर आने के कारण मुझे ऐसा नही लगता कि मै गर्मिया बर्दाश्त कर सकूगी और कौन जाने पतझड के आते-आते आज का हवाई रास्ता ही बन्द हो जाय, जोकि यदि मिस्र तोब्रुक की ओर बढा तो होकर रहेगा। उस हालत में मै समझती हू कि मुझे रूस के रास्ते जाना पडेगा, लेकिन आप तो जानते ही है कि यदि सम्भव हो सका तो मै हिंदुस्तान के रास्ते जाना चाहती हू, ताकि मै आपकी एक झलक ले सकू।

शुभकामनाओ सहित,

आपकी,

मे. सु. च्या.

श्री जवाहरलाल नेहरू, हिंदुस्तान

३४९. एस एच. शेन की ओर से

नई दिल्ली

८ जुलाई १९४२

प्रिय पडित नेहरू,

मुझे जनरलसिमो का निम्नलिखित तार (चीनी भाषा में) मिला है—

"कृपा करके पडित नेहरू के जरिए महात्मा गाधी को सूचित कर दीजिये कि अमरीका से रवाना होने से पहले लार्ड हेलीफैक्स ने, जो अब छुट्टी पर इगलैड गए हुए है, मेरे वाशिंगटन-स्थित प्रतिनिधि को बताया था कि भारतीय समस्या को सुलझाने के लिए वह अपनी सरकार के सामने कुछ ठोस सुझाव रखेंगे और मेरे प्रतिनिधि को स्थिति की सूचना देते रहेंगे। निजी तौर पर मेरी अपनी राय यह है कि लीबिया में सयुक्त राष्ट्र को अभी हाल में ही जिस पराजय का सामना करना पडा है उसको निगाह में रखते हुए काग्रेस के लिए यही अच्छा होगा कि वह अधिक-से-अधिक सहिष्णुता से काम ले, कोई उग्र कार्रवाई न करे और सयुक्त राष्ट्रो के समान हित से सबध रखनेवाले किसी भी सैनिक आदोलन में बाधा डालने से अपनेको अलग रखे, जिससे कि हिंदुस्तान के प्रति उन देशो की सहानुभूति बट जाय

और भारतीय समस्या का हल आसान हो जाय।—च्याग काई-शेक"

वडी ही कृपा हो यदि आप इस तार को मेरे अभिवादनसहित महात्मा गाधी के सामने रख दें, जिनसे मिलने का सौभाग्य मुझे नवम्बर १९४० में प्राप्त हुआ था।

इस अवसर पर मैं आपकी आजकल हो रही वैठक में सफलता की कामना करता हू।

आपका,
एस. एच. शेन

पडित जवाहरलाल नेहरू,
वर्धा

३५० लैम्पटन बैरी की ओर से

अमरीका के राष्ट्रपति के निजी प्रतिनिधि
का दफ्तर,
नई दिल्ली
४ अगस्त १९४२

प्रिय पडित नेहरू,

मैं आपके पास कर्नल जॉनसन का हवाई डाक से आया हुआ एक पत्र फौरन भेज रहा हू, जो अभी-अभी सुरक्षित हाथो से मेरे पास पहुचा है।

मुझे उम्मीद है कि आपको मेरा यह सन्देश मिल गया है कि अमरीकी समाचारपत्रो की जो भी टीका-टिप्पणिया मेरे पास है, वे सब स्थानीय पत्रो में छप चुकी है। जहातक मैं निश्चित रूप से मालूम कर सका हू, ये टिप्पणिया अमरीकी समाचारपत्रो की सर्वसम्मत प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है।

उम्मीद है कि ऐन मौके पर कोई-न-कोई ऐसी वात अवश्य होगी, जिससे आन्दोलन को आरम्भ करने की आवश्यकता से वचा जा सकेगा। मुझे विश्वास है, आप भी यही चाहते है कि आन्दोलन की आवश्यकता न पडे।

आपका,
लैम्पटन बेरी

पडित जवाहरलाल नेहरू
वम्बई

फिर से—

इस पत्र के वाहक को इसमें लिखी गई बातो की जानकारी नही है।

एल. बी.

३५१ क्लेयर बूथ लूस की ओर से

[यह पत्र मूलत. श्री वेन्डल विल्की को सौंपा गया था। उस समय मैं अहमदनगर किले की जेल में था। बहुत समय बाद यह पत्र मेरे पास निम्न-लिखित टिप्पणी के साथ भेजा गया—

"२ नवम्बर १९४२। यह पत्र एक बार सारे ससार की सैर कर चुका है। इसे श्रीमती लूस ने श्री विल्की को तव दिया था जब वह अमरीका से रवाना हुए थे। अब यह आपके पास श्री कू की कृपा से पहुंचाया जा रहा है।]

ग्रीनविच, कोनेक्टिकट
२५ अगस्त १९४२

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

यदि यह पत्र महान सन्देशवाहक श्री वेन्डल विल्की द्वारा, जिन्हें यह सौपा गया है, अन्तत आपके हाथो तक पहुचा दिया जाता है, तो सचमुच ही विश्वास किया जा सकता है कि हम युद्ध को जीतने जा रहे हैं। इस पत्र का वेन्डल विल्की द्वारा हिंदुस्तान मे पहुचा दिया जाना हमारे लिए, सयुक्त राष्ट्र के लिए और आप हिंदुस्तानियो के लिए, एक वडे महत्त्व की वात होगी। इसका मतलब यह होगा कि हमारे युद्ध-लक्ष्य के बारे में सत्य की खोज अन्तत आरम्भ हो गई है, क्योकि श्री विल्की अपने व्यक्तित्व, अपने मस्तिष्क और अपने हृदय द्वारा एक अल्पसख्यक पार्टी के राजनैतिक लक्ष्यो का नही, वल्कि अमरीकी जनता के वहुमत की सत्यतम महत्त्वाकाक्षाओ और आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मुझे कई सूत्रो से मालूम हुआ है कि अमरीका की तथा अमरीका के वास्तविक युद्ध-उद्देश्य की सच्ची जानकारी अपने असली रूप में आज हिंदु-स्तान में कितनी कम पहुच पाती है। इसी तरह हमे भी यहाँ हिंदुस्तान

की स्थिति की सच्ची जानकारी नही मिल पाती। हमारे और ससार की १/५वी जनसख्या के बीच सेंसर की कठोर और दु खदायी दीवार खडी हो जाने से यह स्वाभाविक है कि दोनो ओर अज्ञान, घृणा तथा गलतफहमी की वृद्धि हो। श्री विल्की की उपस्थिति उस दीवार में पहली बडी दरार होगी। उसके जरिये सत्य की लहरें अन्तत फूट निकलेंगी। लेकिन जबतक वह आपसे मुह-दर-मुह और एकान्त में बाते नही कर सकेंगे तबतक उनका वहा जाना एक दूसरा भ्रम-मात्र होगा। हममे से बहुतो को यह बात मालूम है कि सारे एशिया में प्रजातत्र तथा सयुक्त राष्ट्र के हितो के आप ही सबसे बडे और सबसे सच्चे मित्र है। किन्तु आपमें से कितनो को पता है कि इधर पश्चिम में इनके (प्रजातत्र तथा सयुक्त राष्ट्र के हितो के) सबसे बडे और सबसे सच्चे मित्र श्री विल्की है ? निश्चय ही आप दोनो का मिलन फलदायक होगा। केवल सनकी लोग इसमें शका करेंगे। मुझे कोई शका नही है।

और अब वह अपने बमवर्षक वायुयान में अपनी लम्बी यात्रा पर रवाना हो रहे हैं। अगर यह पत्र आपके पास पहुचा भी तो कई महीनो के बाद पहुच पायेगा। मै हार्दिक प्रार्थना करती हू कि यह पत्र आपको सकुशल और स्वस्थ पाये।

इस पत्र में जो आशा भरी हुई है वह शब्दो द्वारा व्यक्त की जा सकने-वाली किसी भी आशा से इतनी अधिक बडी है कि मै उसे शब्दो में बाधने की चेष्टा करते समय अपनेको अज्ञानी और अयोग्य समझ रही हू। आप तो जानते ही है कि सद्भावनापूर्ण स्त्री-पुरुष सभी जगह है—अमरीका में, हिंदुस्तान और ग्रेट ब्रिटेन में भी—और वे सभी इस बात की चेष्टा कर रहे है कि आपस में मिल-जुलकर युद्ध और शान्ति पर विजय पा सकें।

जल्दी में और गहरे आदरसहित,

आपकी,

क्लेयर बूथ लूस

३५२ आसफ अली की ओर से

[भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के मेंबर अगस्त सन् १९४२ में गिरफ्तार किये गए और अहमदनगर किले की जेल में २८ मार्च सन् १९४५ तक एक साथ रखे गये। उसके बाद उन्हें धीरे-धीरे अलग

करके अपने-अपने सूबो में भेज दिया गया। २८ मार्च को मुझे और नरेन्द्रदेव को यू. पी. में एक के बाद दूसरे कई जेलो में भेजा गया। दूसरे लोग अहमदनगर किले से अप्रैल में बाद की तारीखो में गये। आसफ अली को पजाब की एक जेल में भेजा गया, जहां से उन्होने नीचे लिखी चिट्ठी भेजी। अपने इस खत में उन्होने मेरे अहमदनगर किले की जेल से चलने का हवाला दिया है।]

सब-जेल,
गुरुदासपुर (पंजाब)
३० अप्रैल १९४५

प्यारे जवाहर,

तुम्हारी रवानगी मेरे और मौलाना के लिए जुदाई का एक बहुत बडा सदमा थी। दूसरे दिन सुबह हम लोगो ने तुम्हारी जुदाई को महसूस किया। जब मेरी रवानगी का वक्त आया तो मौलाना के चेहरे पर उदासी छा गई।

मेरे पास इतनी खबरें है कि दिल में समा नही रही है, और जो सिफर की हद तक अहम है। सिफर से मेरा मतलब उस रूहानी सिफर से है, जिससे सारे लोग पैदा होते है यानी खुदाबद ताला से। खबरें ये है

१ बोतल में तुमने जो 'लिआना' की बेल लगाई थी उसे मय उसकी हवाई जडो और सूखी पत्तियो के मैंने अपनी उदार वसीयत के तौर पर माली-चौकीदार पिराजी के पास छोड दिया। वह आखिरी वक्त तक सचमुच बडी भलमनसाहत के साथ पेश आया। जब मरचेण्ट मेरी रवानगी के वक्त मुझे रुखसत करने आया तो मैं उस जिम्मेवरी से भी बरी हो गया जो तुमने मेरे सुपुर्द की थी। शाखो के गमलो (?) में जो गुलाब के पौवे थे उन्हें मैंने मरचेण्ट के सुपुर्द कर दिया और उसे कह दिया कि वह उनका जो चाहे करे। अखीर में सन्दक ने खुशी से उन्हें यहा से उखाडकर मरचेण्ट के बगीचे में लगाने की जिम्मेवरी ले ली। जो बाकी लोग रह गये उन्होंने कॉफी-क्लब को फिर से चलाने की हल्की-सी कोशिश की, लेकिन वह चल न सका, हालाकि यह कोशिश महज जुबानी कोशिश थी। हम लोग बहुत थोडे-से आदमी रह गये थे और सब-कुछ उखडा-उखडा-सा था। ऐसी सूरत

में कोई नई चीज शुरू नही की जा सकती थी। लेकिन फूलो की मुरझाती हुई क्यारियो के पास अपना हस्व-मामूल चक्कर लगाने का रोज का प्रोग्राम मैंने बन्द नही किया। बैडमिंटन खेलने का कोर्ट तो खुले हुए जख्म की तरह बन गया। लेकिन वालीवाल टीमो ने अखीर तक अपना जोश कायम रखा। चलते-चलते राशन मे मिली हुई १५ दिनो की चीनी का जखीरा मेरे पास पडा हुआ था। उसे फराकदिली से बटवाने के लिए मुझे अपनी आखिरी वसीयत और करार में शामिल करना पडा। वसीयत की तामील के लिए मैंने सिर्फ मौलाना को मुकर्रर किया। हा, एक नई और प्यारी-सी बिल्ली आ गई (असली कछुए के खालवाली) और मै उसके लिए दो तश्तरी दूध अलग रखनेवाला था कि मुझे खयाल हुआ कि यदि राशन जारी रहना बन्द हो गया (साफ है वह जारी नही रह सकता) तब इसके साथ बेरहमी होगी और तब मैंने जजबात को दबा दिया। जो लोग यहा से चले गये उनकी कमी के अलावा बाकी सब चीजें जैसी-की-तैसी है। (यूनान के एक पुराने किस्से के मुताबिक) चारॉन ने मेरी भी नाव खेकर मुझे अब स्टिक्स नदी के दूसरे किनारे पर पार लगा दिया है।

२ सपने मे मुझे खयाल न था कि यह सफर मेरे लिए घटनाओ से इतना भरा साबित होगा। शुरू में जिस्मानी थकावट बराबर बढती गई और सेहत गिरती चली गई। रास्ते में नींद बिल्कुल उड गई और मैंने अपने लिए सोच-समझकर जो रोजमर्रा का काम लिया था, वह बिल्कुल बेतरतीब हो गया। इन दोनो बातो का नतीजा दिल्ली पहुचते-पहुचते यह हुआ कि मेरे जिस्म और दिमाग, दोनो की हालत हद-दरजे नाजुक हो गई। इतने में अचानक मैंने यह महसूस किया कि मै फिर कैदखानो के सीखचो के पीछे बन्द कर दिया गया हू। मेरी याददाश्त पर इस सारे सफर का एक निशान बाकी रह गया है।

३ हस्व-मामूल अखबारो मे जो कुछ छपा, सब गलत। एक खबर तो यह थी कि मै 'कुछ रिश्तेदारो से 'आसू-भरी खामोशी' के साथ मिला। यह खबर तो मै समझता हू कि अखबारो की रगसाजी थी। दूसरी खबर यह छपी कि भूलाभाई के नाम मेरा एक 'गैर-सियासी पैगाम' सरकार ने रोक लिया। यह खबर भी एक अच्छी दिमागी उडान थी। तीसरी और

आखिरी खवर यह छपी कि, 'शक किया जाता है कि मुझे दिल की बीमारी हो गई है।' यह हमदर्दी से भरा हुआ एक अदाज था। निशाना यहा भी जरा गलत ही लगा। लेकिन अखवारो का कोई कर क्या सकता है! वे तो खवरो के लिए भूखे रहते है। सरकारी तौर पर इन खवरो को गलत कहने में करीव-करीव डेढ हफ्ता या इससे भी कुछ ज्यादा लग गया। लेकिन अखवारो की चक्की अल्लामिया की चक्की की तरह धीरे-धीरे कुछ-न-कुछ पीसती और निकालती ही रहती है।

४ (कानूनी दस्तावेज के तर्ज पर या पुराने अच्छे 'सेक्रेटरीज'[1]—हिज्जे पर ध्यान न दें—की तरह मैंने पैराग्राफो पर नम्बर डाल दिये है, इससे चिढे नही)। किस्सा-कोताह जब मै यहा पहुचा तो मेरा वजन १००-१०१ पौंड निकला। रास्ते में ४-५ पौंड वजन कम हो गया। यहा जब आया तो दर्द के मारे सर फटा जा रहा था। जो जिस्मानी शिकायतें, खामोश पडी हुई थी वे जागकर उभर आई थी। तब 'कुरेद-कुरेदकर उन्हें निकालने' और जमकर रहने की कार्रवाई शुरू हुई। यहा तो बिल्कुल नई हालतें थी और साथ-ही-साथ यहा के कानून-कायदे भी दूसरे थे। उनके साथ अपनी निजी जरूरतो की नजर से हर घटे मेल बैठाने का काम शुरू हुआ। यहा के इतजाम को देखते हुए कामचलाऊ सूरत निकालने और यहा अपनी जिन्दगी की किश्ती के लिए लगर खोजने में मुझे और १५ दिन लग गये।

५ अव मैंने 'सेहत वहाल करने की तरफ' अपने दिमाग को लगाया है। हर तरह का दिमागी काम मैंने बन्द कर दिया है। खुशकिस्मती से जो काम मैंने हाथ में ले रखा था उसे खत्म कर दिया, क्योकि इस वक्त शायरी भी मुझसे रुखसत हो चुकी है। तुम जानते हो, वाज मरतवा छोटी-छोटी अडचनें दिमाग से शायरी का रुझान खत्म कर देती है। मैंने महज मजाक में एक छोटी-सी चीज लिखनी शुरू की थी और नतीजा वहुत हौसला वढाने-वाला था। जवकि अभी मैंने दीवाचा के तौर पर नज्म की सौ के करीव सतरें लिखी थी कि यह तब्दीली आ गई। इसको अपनी पूरी कोशिश करके भी मै आगे नही वढा सका। इसलिए मैंने उस मनसूवे को छोड दिया। अगर दिमाग की शायराना कैफियत फिर लौट आई तो अधूरे काम

[1] अंग्रेजी में 'Secretarese' लिखा गया है।

को मैं फिर से शुरू कर सकता हू । इस वक्त तो मैं फिर से अपनेको मुआफिक करने के दर्द में मुब्तिला हू ।

६ यह इलाका पहाडी दामन का इलाका है । यहा से जो बरफीली चोटिया दिखाई देती हैं उनके नीचे कही रोरिक का आश्रम है । मैं केवल अन्दाज लगा रहा हू । वह पठानकोट से चन्द मील के फासले पर है । इस इलाके में फैली हुई हिमालय की पूरी कतारे यहा से दिखाई देती है । वह वर्फ से ढकी हुई है । बिल्कुल ऐसा महसूस होता है, जैसे तुम्हारे सामने गुलमर्ग और खिलनमर्ग हो । लेकिन यहा का मौसम बदलता हुआ है और कभी-कभी इतनी गरमी पडती है कि दम घुटता महसूस होता है । मुझे उम्मीद है कि जल्द ही पखा मिलेगा । मेरे रहने का इन्तजाम अस्पताल के एक हिस्से में किया गया है । पहले वहा गोदाम था । मेरे यहा पहुचने पर उसे खाली किया गया । मैं यहा अकेला रखा गया हू । और सब चीजो को देखते हुए मैं इसे राहत समझता हू । यह एक बहुत छोटा-सा जेल है । अहमदनगर के किले में जो थेलदीज कोशक था करीब उतना ही बडा यह जेल है । नही, यह कुछ थोडा बडा है । लेकिन यह जेल है । जेल के सब लवाजमात यहा है—सीखचे, रोकथाम, तालाबन्दी वगैरह । इस कमरे में मरीजो के कपडो के लिए एक अलमारी थी । अब वह अलमारी मेरे लिए सिंगारमेज, नाश्ताखाना, कबाडखाना, खाने के बरतन रखने, डोली और गोदाम सब तरह का काम दे रही है । बेशक वह मच्छरो का पनाहघर भी है । इस लिहाज से यहा कुछ तब्दीली है । मैं शर्त लगा सकता हू कि तुम्हारे यहा इससे ज्यादा मच्छर होगे । मक्खियो और जाने और अनजाने किस्म के खटमलो का जहातक ताल्लुक है, मैं बाजी ले जाऊगा । हम लोग (हमसे मुराद जेल से है) खुद अपने लिए आम, जामुन और शहतूत पैदा कर लेते है । फलो की भी बहुतायत है—हालाकि बहुत बढिया किस्म के नही । चार हफ्तो की जुदाई को क्या यह खत पूरा नही करता ?

तुमको और नरेन्द्रदेव को प्यार,

तुम्हारा,
आसफ

फिर से—

किताबों के बारे में हमारा जो करार है उसे मेहरबानी करके

भूलियेगा नही । हफ्तेवार और महावारी अखवार दिल्ली से मगाने का इतजाम कर रहा हू । अभी तक यहा हर चीज उखडी-उखडी-सी है— अभी तक ऐसा नही मालूम होता कि यही रहना है । रूजवेल्ट की खबर कितनी दर्दनाक है । सान फ्रासिसको में सरूप का हाल-चाल मै गौर से पढता रहता हू । लेकिन यहा के अखबारो में बहुत कम खबरें छपती है । मैने सरूप को लिखा है ।

३५३ तेजबहादुर सप्रू की ओर से

मसूरी
१५ जून १९४५

प्रिय जवाहरलालजी,

मै दावे से कह सकता हू कि एक-दो दिन में आप इलाहाबाद में होगे । यह खत तो महज आपको यह वताने के लिए है कि पिछली रात एक दोस्त से, जिसने रेडियो पर वाइसराय की तकरीर सुनी थी, यह जानकर कि आप छोड दिये गए है, मुझे बहुत तसल्ली हुई है । आपकी रिहाई का मै दिल से स्वागत करता हू और विश्वास करता हू कि आप जिस किसी भी फैसले पर पहुचें, वह मुल्क के सबसे ज्यादा फायदे का हो ।

अखबारो में था कि आपको कुछ हरारत रहा करती है । मुझे उम्मीद है कि आपने उससे छुटकारा पा लिया होगा । यह बहुत जरूरी है कि किसी शोर-शराबे से दूर जगह पर आप थोडा आराम करें, लेकिन मुझे डर है कि अगले कुछ हफ्तो में आपपर बहुत बोझ रहेगा ।

मै यहा १३ जून को आया हू, सिर्फ आनन्द को देखने, जिसकी सेहत में अच्छा सुधार हो रहा है और अब वह इस लायक है कि धीरे-धीरे टहल सके । २५ जून तक मै यहा रहूगा । उसके वाद इलाहाबाद चला जाऊगा ।

शुभ कामनाओ-सहित

आपका,
तेजबहादुर सप्रू

पण्डित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद

३५४. मेघनाद साहा की ओर से

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑव साइन्स,
डिपार्टमेंट ऑव फिजिक्स,
कलकत्ता
१२ अगस्त १९४५

प्रिय पण्डितजी,

श्रीनगर से लिखे २८ जुलाई के आपके पत्र को पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। मैं आशा करता हू कि काश्मीर के स्वास्थ्यप्रद वातावरण में कुछ हफ्ते रहने से आप अपनी सेहत सुधार सके होगे, हालाकि अखबारो से तो मालूम होता है कि आप बहुत कम विश्राम कर सके है।

मै कभी भी इलाहाबाद आने को तैयार रहूगा, बशर्ते कि समय रहते मुझे पता चल जाय कि आप वहा कब होगे और सफर की सहूलियत मिल जाय, जो इन दिनो मुश्किल है। अगर ४८ घटे पहले मुझे सूचना मिल जाय तो सभवत यह लिखने की जरूरत नही है कि मै आपसे मिलने के लिए और ब्रिटेन, सयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत रूस के अपने सारे अनुभव आपको सुनाने को उत्सुक हू।

कलकत्ता विश्वविद्यालय ने कमला-व्याख्यान-माला के लिए आपको और मौलाना आजाद को नियुक्त किया है, बावजूद मुस्लिम-लीगियो के जोरदार विरोध के। उनका कहना था कि मौलाना अग्रेजी में अपने विचारो को प्रकट नही कर सकते है। हमें खुशी होगी, अगर आपको अगस्त मे इन व्याख्यानो को देने का समय मिल सके। विषय पूरी तरह आपपर छोड दिया गया है। हा, अगर आपने विषय का निश्चय नही कर लिया हो तो मै 'राष्ट्रीय योजना' का विषय सुझाऊगा।

मेरा विश्वास है कि अब समय आ गया है जब काग्रेस को, अगर वह सत्तारूढ हो जाय तो, अपने कार्यक्रम की बाजाब्ता घोषणा कर देनी चाहिए। उसका वर्तमान कार्यक्रम तो पुरानी दुनिया की विचार-धाराओं मे बधा हुआ है, जैसे चर्खा, हाथबुनाई और मध्ययुगीन आधार पर सत्ता का विभाजन, आदि-आदि। 'हिंदुस्तान की जनता को शानदार जिदगी' के लिए काम करने के विचार पर आधारित नये नारे हमें देश को देने चाहिए। हमारा

आधार हो विज्ञान का पूरा-पूरा उपयोग, शक्ति-स्रोतो, रासायनिक, खनिज और कृषि-उद्योगो का विकास, जल और जमीन का सामूहिक और बहु-उद्देशीय प्रयोग, काम के नये आधारो पर समाज का पुर्ननिर्माण। मै आपके लिए दो लेख भेज रहा हू, जिनमें से एक 'नेचर' में प्रकाशित हुआ था और दूसरा 'हिंदुस्तान स्टैंडर्ड' में। इनमें मेरे विचार प्रकट किये गए है।

सादर आपका,
मे. ना. साहा

पण्डित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद।

३५५. एस. एच. शेन की ओर से

चीनी जनतत्र के कमिश्नर का आफिस,
नई दिल्ली
१५ अगस्त १९४५

प्रिय पडित नेहरू,

आपको शायद याद होगा कि सन् १९४० के पतझड में परीक्षा-विभाग (एग्जामिनेशन यू यान) के अध्यक्ष हिज एक्सेलेसी डा ताई ची-ताओ हिंदुस्तान की यात्रा करने आये थे। वह एक शिष्टमडल के प्रधान थे, जिसका सदस्य होने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त था। यह शिष्टमडल मुख्य रूप से आपकी एक साल पहले की गई चीन-यात्रा के बदले में आया था। दुर्भाग्य से हिंदुस्तान पहुचने पर हमारे लिए आपसे मिलना नामुमकिन हो गया था।

अपनी निराशा को व्यक्त करने के लिए डा ताई ने एक कविता लिखी थी। उसे आपके पास भेजने के लिए उन्होने श्रीमती पडित को दे दिया था, जिन्होने इलाहाबाद मे उनका हार्दिक स्वागत किया था।

नई घटनाओ को निगाह में रखते हुए डा ताई ने मुझसे कहा है कि मै उनकी शुभ कामनाए आपके और मौलाना आजाद के पास पहुचा दू। उन्होने इस कविता की एक प्रति भी स्वय अपने सुन्दर अक्षरो में लिखकर भेजी है। वह अपनी सुन्दर लिखावट के लिए प्रसिद्ध हैं।

मैंने इसका अंग्रेजी मे तर्जुमा करने की कोशिश की है, लेकिन निश्चय ही आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि कोई भी कविता —खास तौर से चीनी—जब किसी विदेशी भाषा में अनूदित होती है तब उसकी मौलिक सुन्दरता बिल्कुल नष्ट हो जाती है।

शुभ कामनाओ सहित

आपका सस्नेह,
एस. एच. शेन

पडित जवाहरलाल नेहरू

पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रति

ढूंढता आया हू मैं आपको बहुत दूर व्यर्थ ही
स्मरण करता हुआ आपको एकान्त स्वर-लहरी में,
भाग्यशाली है वह जो सहेगा मानव-हित पीडा को,
हृदय लिये बुद्ध का और मस्तिष्क एक वीर का।

—ताई ची-ताओ

३५६ गोविन्दवल्लभ पन्त की ओर से

नैनीताल
१५ अगस्त १९४५

प्रिय जवाहरलालजी,

इस पत्र के साथ मै गगनविहारी का पत्र अपने जवाब के साथ भेजता हू, क्योकि मैंने स्वय इस प्रस्ताव पर मजूरी नही दी थी, इसलिए मैंने पहले इसे आपके पास नही भेजा। तो भी बाद में मैंने अखबारो में छपी खबरें देख ली कि इस समय मामले ने आपका ध्यान आकृष्ट कर रखा है। 'सिविल एड मिलिटरी गैजेट' के सवाददाता ने सचमुच इस आशय का एक निश्चित वक्तव्य दिया है। इसलिए गगनबिहारी का सुझाव मैं आपके पास भेज रहा हू। इस मामले मे मुझे अपने स्वय के विचारो को दुहराने की जरूरत नही है, क्योकि उनको लिखे मेरे पत्र की जो नकल नत्थी है, उसमें वे पूरी तरह से लिखे गए है। इग्लैंड के मजदूर-दल से मुझे कोई खास लगाव नहीं है और मै उस उत्साह और आशावादिता में हिस्सेदार नही हू, जिसके साथ कुछ साथियो ने मजदूर सरकार के आने का स्वागत किया है। लेकिन शायद यह

आशा करना भी जरूरत से ज्यादा होगा कि वर्तमान परिस्थितियो में एटली भी सतोषजनक रूप से शाति बनाये रखने में अपनेको मुश्किल में पायेंगे। मैं लास्की तथा मजदूर-दल की कार्य-समिति के खास सदस्यो की ओर से किसी भी दिन आपके लिए निमत्रण आने की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा हू। क्रिप्स के रुख के बारे में भी मेरा दिमाग साफ नही है। शिमला-सम्मेलन के असफल हो जाने के बाद उन्होने जो बयान दिया वह अस्पष्ट है और कुछ पहलुओ से बेचैनी पैदा करनेवाला भी। अपनी बातचीत के दौरान और अपने १९४२ के अभागे प्रस्तावो से सवधित कार्रवाइयो के बीच उन्होने जैसा व्यवहार किया उससे उन्होने अपनी साख और इज्जत नही बढाई है। आपके और मि जिन्ना के स्तर में सतुलन कायम रखने की उनकी जरूरत से ज्यादा परवा करना न सिर्फ सावधानी की हद को पार कर गया, बल्कि बेवकूफी की हदतक पहुच गया। मि जिन्ना के लिए यह नरम सावधानी चर्चिल, एमरी और लिनलिथगो की वजह से कितनी थी और जिन्ना को खुश करने और अपनी ओर करने की उनकी स्वय की चिंता की वजह से कितनी थी, यह कोई नही कह सकता है। किसीको भी आज इसकी फिक्र करने की जरूरत नही है। परन्तु असल बात तो यह है कि आज उनका रुख क्या होगा ? क्योकि हिंदुस्तान से सवध रखनेवाले हर मामले मे उनकी वात का निश्चय ही असर होगा। मैं केवल यही उम्मीद करता हू कि वर्तमान परिस्थितियो मे, जबकि कामन्स-सभा में मजदूर-दल के पीछे अत्यधिक बहुमत है, व्यक्तियो तथा सस्थाओ की समानता के इस तरह के ऊल-जलूल विचार की खपत वह अपने सिर पर सवार नही होने देंगे। तो भी मैं पूरी तरह सदेहो से मुक्त नही हू। वह आदत से सनकी नही है, परन्तु पहेली पैदा करनेवाले जरूर है।

काश्मीर से वापस होने तक आप करीब एक महीना वहा बिता चुके होगे। आशा है, स्वास्थ्यकर वातावरण और शक्ति देनेवाली आबोहवा और साथ ही अपेक्षाकृत विश्राम—इन सबने आप पर अच्छा असर डाला होगा। अहमदनगर में रहने के अपने आखिरी दिनो मे मैं इस खयाल को दूर नही कर सका कि अनजान में आपका स्वास्थ्य दिन-ब-दिन बराबर गिरता जा रहा है और मुझे अपनी बेबसी और अशक्ति पर भीतर-ही-भीतर झुझलाहट होती रहती थी कि मैं आपकी कोई सेवा नही कर पा रहा हू।

मैं आशा करता हू कि अब इस कमी की आपने पूर्ति कर ली होगी और अपनी सामान्य शक्ति और उत्साह प्राप्त कर लिया होगा।

मैं आज अल्मोडा जा रहा हू और वहा लगभग पद्रह दिन रहने का विचार है।

आपका,
गोविन्दवल्लभ पन्त

३५७ सिह शिन हेन्फ की ओर से

चीनी जनतत्रीय कमिश्नर का दफ्तर,
नई दिल्ली,

संदर्भ-सख्या—५६६६ २२ अगस्त १९४५

प्रिय पडित नेहरू,

कुछ दिनो के लिए कमिश्नर के चुगंकिंग चले जाने के कारण मैं आपको जनरलसिमो के आदेशानुसार निम्नलिखित तार भेज रहा हू—

"जापान के आत्मसमर्पण पर आपने जो बधाइया भेजी हैं, उसके लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद। विजय के इस दिन चीनी जनता एक बार फिर अपने को सयुक्त राष्ट्र के ऊचे आदर्शों और उन शाति-प्रयत्नो के प्रति, जो अभी करने को बाकी है, अपनी सेवाए समर्पित करती है। मुझे विश्वास है कि मित्रता के जिस बधन ने चीन और भारत को एकता के सूत्र में बाधा है वह भविष्य में और भी मजबूत बनेगा और हमारे देशो की जनता नई विश्व-व्यवस्था की स्थापना में बहुत अधिक योग दे सकेगी—च्याग काई-शेक।"

आशा है, आप इसके अनुसार कार्य करेंगे।

सस्नेह आपका,
सिह शिन हेन्फ

पडित जवाहरलाल नेहरू

३५८. महात्मा गाधी की ओर से

५ अक्तूबर १९४५

चि जवाहरलाल,

तुमको लिखने का तो कई दिनो से इरादा किया था, लेकिन आज ही उसका अमल कर सकता हू। अग्रेजी में लिखू या हिंदुस्तानी में, यह भी

मेरे सामने सवाल रहा था। आखर मे मैंने हिंदुस्तानी मे ही लिखने का पसद किया।

पहली बात तो हमारे बीच मे जो बडा मतभेद हुआ है, उसकी है। अगर वह भेद सचमुच है तो लोगो को भी जानना चाहिए, क्योकि उनको अधेरे में रखने से हमारा स्वराज का काम रुकता है। मैंने कहा है कि 'हिंद स्वराज' में मैंने लिखा है, उस राज्य-पद्धति पर मै बिल्कुल कायम हू। यह सिर्फ कहने की बात नही है, लेकिन जो चीज मैंने १९०८ साल मे लिखी है उसी चीज का सत्य मैंने अनुभव से आज तक पाया है। आखर में मै एक ही उसे माननेवाला रह जाऊ, उसका मुझको ज़रा-सा भी दु ख न होगा, क्योकि मै जैसे सत्य पाता हू, उसका मैं साक्षी बन सकता हू। 'हिंद स्वराज' मेरे सामने नही है। अच्छा है कि मै उसी चित्रको आज अपनी भाषा में खीचू। पीछे वह चित्र सन् १९०८ जैसा ही है या नही, उसकी मुझे दरकार न रहेगी, न तुम्हे रहनी चाहिए। आखर में तो मैंने पहले क्या कहा था, उसे सिद्ध करना नही है। आज मै क्या कहता हू, वही जानना आवश्यक है। मै यह मानता हू कि अगर हिंदुस्तान को सच्ची आजादी पानी है और हिंदुस्तान के मारफत दुनिया को भी, तब आज नही तो कल देहातो मे ही रहना होगा, झोपडियो में, महलो में नही। कई ˉर आदमी शहरो में और महलो में सुख से और शाति से कभी रह नही सकते, न एक दूसरो का खून करके मायने—हिंसा से, न झूठ से—यानी असत्य से। सिवाय इस जोडी के (याने सत्य और अहिंसा) मनुष्य-जाति का नाश ही है, उसमें मुझे ज़रा-सा भी शक नही है। उस सत्य और अहिसा का दर्शन हम देहातो की सादगी मे ही कर सकते है। वह सादगी चर्खा में और चर्खा मे जो चीज भरी है उसीपर निर्भर है। मुझे कोई डर नहीं है कि दुनिया उल्टी ओर ही जा रही दिखती है। यो तो पतगा जब अपने नाश की ओर जाता है तब सबसे ज्यादा चक्कर खाता है और चक्कर खाते-खाते जल जाता है। हो सकता है कि हिंदोस्तान इस पतगे के चक्कर मे से न बच सके। मेरा फर्ज है कि आखर दम तक उसमे मे उसे और उसके मारफत जगत को बचाने की कोशिश करू। मेरे कहने का निचोड यह है कि मनुष्य-जीवन के लिए जितनी जरूरत की चीज है, उसपर निजी काबू रहना ही चाहिए—अगर न रहे तो व्यक्ति बच ही नही सकता है। आखर तो जगत

व्यक्तियो का ही वना है। बिंदु नही है तो समुद्र नही है। यह तो मैंने मोटी वात ही कही—कोई नई वात नही की।

लेकिन 'हिंद स्वराज' मे भी मैंने यह वात नही की है। आधुनिक शास्त्र की कदर करते हुए पुरानी वात को मैं आधुनिक शास्त्र की निगाह से देखता हू तो पुरानी वात इस नये लिवास मे मुझे वहुत मीठी लगती है। अगर ऐसा समझोगे कि मै आज की देहातो की वात करता हू तो मेरी वात नही समझोगे। मेरी देहात आज मेरी कल्पना मे ही है। आखर मे तो हरएक मनुष्य अपनी कल्पना की दुनिया मे ही रहता है। इस काल्पनिक देहात मे देहाती जड नही होगा—शुद्ध चैतन्य होगा। वह गदगी मे, अधेरे कमरे मे जानवर की जिंदगी वसर नही करेगा, मरद और औरत दोनो आजादी मे रहेगे और सारे जगत् के साथ मुकावला करने को तैयार रहेगे। वहा न हैजा होगा, न मरकी होगी, न चेचक होगी। कोई आलस्य में रह नही सकता है, न कोई ऐश-आराम में रहेगा। सवको शारीरिक मेहनत करनी होगी। इतनी चीज होते हुए मै ऐसी वहुत-सी चीज का ख्याल कर सकता हू जो वडे पैमाने पर वनेंगी। शायद रेल्वे भी होगी, डाक-घर भी होगे। क्या होगा, क्या नही, उसका मुझे पता नही। न मुझको उसकी फिकर है। असली वात को मै कायम कर सकू तो वाकी आने की और रहने की खूवी रहेगी। और असली वात को छोड दू तो सव छोड देता हू।

उस रोज जव हम आखर के दिन वर्किंग कमेटी मे वैठे थे तो ऐसा कुछ फैसला हुआ था कि इसी चीज को साफ करने के लिए वर्किंग कमेटी २-३ दिन के लिए वैठेगी। वैठेगी तो मुझको अच्छा लगेगा। लेकिन न वैठे तव भी मै चाहता हू कि हम दोनो एक दूसरे को अच्छी तरह समझ लें। उसके दो सवव है। हमारा सवव सिर्फ राजकारण का ही नही है। उसमे कई दरजे गहरा है। उस गहराई का मेरे पास कोई नाप नही है। वह सवव टूट भी नही सकता। इसलिए मै चाहूगा कि हम एक दूसरे को राजकारण मे भी भली-भांति समझे। दूसरा कारण यह है कि हम दोनो मे से एक भी अपनेको निकम्मा नही समझते है। हम दोनो हिंदुस्तान की आजादी के लिए ही जिंदा रहते हैं और उसी आजादी के लिए हमको मरना भी अच्छा लगेगा। हमें किसीकी तारीफ की दरकार नही है। तारीफ हो या गालियां—एक ही चीज है। किसमा

मे उसे कोई जगा ही नही है। अगरचे मै १२५ वर्ष तक सेवा करते-करते जिदा रहने की इच्छा करता हू तब भी मै आखर मे बूढा हू और तुम मुकाबले मे जवान हो। इसी कारण मैने कहा है कि मेरे वारस तुम हो। कम-से-कम उस वारस को मै समझ तो लू और मै क्या हू, वह भी वारस समझ ले तो अच्छा ही है और मुझे चैन रहेगा।

और एक बात। मैने तुमको कस्तूरबा ट्रस्ट के बारे मे और हिंदुस्तानी के बारे में लिखा था। तुमने सोचकर लिखने का कहा था। मै पाता हू कि हिंदुस्तानी सभा मे तो तुम्हारा नाम है ही। नाणावटी ने मुझको याद दिलाया कि तुम्हारे पास और मौलानासाहब के पास वह पहुच गया था और तुमने अपने दस्तखत दे दिये है। वह तो सन् १९४२ में था। वह जमाना गुजर गया। आज हिंदुस्तानी कहा है, उसे जानते हो। उसी दस्तखत पर कायम हो तो मै उस बारे में तुमसे काम लेना चाहता हू। दौड-धूप की जरूरत नही रहेगी। लेकिन थोडा काम करने की जरूरत रहेगी।

कस्तूरबा स्मारक का काम पेचीला है। ऊपर जो मैंने लिखा है,वह अगर तुमको चुभेगा या चुभता है तो कस्तूरबा स्मारक मे भी आकर तुमको चैन नही रह सकेगा, यह मै समझता हू।

आखर की बात शरत्बाबू के साथ कुछ चिनगारिया फूटी है, वह है। इससे मुझे दर्द हुआ है। उसकी जड मै नही समझ सका। तुमने जो कहा है, इतना ही है और बाकी कुछ नही रहा है तो मुझे कुछ पूछना नही है। लेकिन कुछ समझने जैसा है तो मुझको समझने की दरकार है।

इस खत के बारे मे अगर हमें मिलना ही चाहिए तो हमारे मिलने का वक्त निकालना चाहिए।

तुम काम बहुत कर रहे हो, तबीयत अच्छी रहती होगी। इन्दू ठीक होगी।

आनद भवन
इलाहाबाद। बापू के आशीर्वाद

३५९. महात्मा गाधी के नाम

आनद भवन,
इलाहावाद
९ अक्तूवर १९४५

प्रिय वापू,

लखनऊ से लौटने पर आज आपका ५ अक्तूवर का पत्र मिला। मुझे इस वात की खुशी है कि आपने इतने खुलासे से लिखा और मैं कुछ विस्तार से ही इसका जवाव देने की कोशिश करूगा। लेकिन मैं उम्मीद करता हू कि अगर इसमे कुछ देर हुई तो आप मुझे क्षमा करेंगे, क्योकि इस वक्त मैं वहुत जरूरी कामो मे फसा हुआ हू। मै अभी यहा सिर्फ डेढ दिन के लिए आया हू। दरअसल यह कही अच्छा होगा कि हम अनौपचारिक रूप से वात करलें, लेकिन फिलहाल मैं नही जानता कि ऐसा कव हो सकेगा। मै कोशिश करूगा।

सक्षेप में, मेरा खयाल है कि हमारे सामने सवाल सत्य बनाम असत्य या अहिंसा बनाम हिंसा का नही है। लोग मानते है, जैसा कि उन्हे मानना चाहिए कि हमारा मकसद सच्चा सहकार और शातिपूर्ण पद्धति होनी चाहिए और जो सोसाइटी इनको वढावा देती है, उसीको हासिल करना हमारा लक्ष्य है। सारा सवाल यह है कि ऐसी सोसाइटी कैसे हासिल हो और उसमे क्या-क्या वाते हो? मेरी समझ में नही आता कि देहात जरूरी तौर पर सत्य और अहिंसा के मूर्त रूप क्यो हो! आम तौर पर हम कह सकते है कि देहात वौद्धिक और सास्कृतिक रूप से वहुत पिछडे हुए है और पिछडे हुए वायुमडल मे रहकर तरक्की नही की जा सकती। तग दिमाग के लोगो के कही अधिक असत्य-भाषी और हिंसक होने की सभावना होती है।

इसके अलावा हमे कुछ मकसद अपने सामने रखने होंगे, जैसे खाने, कपडे, मकान, शिक्षा, सफाई, वगैरा मे पूर्णता। मुल्क के लिए और हरेक के लिए कम-से-कम इतना तो जरूरी होना चाहिए। इन मकसदो को सामने रखकर हमे इस वात को खास तौर पर देखना चाहिए कि इन चीजो को हम जल्दी-से-जल्दी कैसे हासिल कर सकते है। फिर मुझे यह भी लगता है कि आवश्यक यातायात के मौजूदा साधनो और आधुनिक सुविधाओ को चालू रखना और उनका विकास होना जरूरी है।

उनको स्वीकार किये बिना और कोई चारा ही नही। अगर ऐसा है तो जरूरी तौर पर बडे-बडे उद्योग एक हदतक रखने ही होगे। शुद्ध देहाती सोसाइटी के साथ इनका ताल-मेल कहातक बैठेगा ? निजी तौर पर मेरी उम्मीद है कि बडे या छोटे दोनो तरह के उद्योग, जहातक मुमकिन है, विकेन्द्रित होने चाहिए, और अब बिजली के विकास के कारण ऐसा सभव है। अगर देश मे दो तरह की अर्थ-व्यवस्थाए रहे तो या तो उनके दोनो के बीच कशमकश होगी या एक दूसरी पर छा जायगी।

इस सदर्भ में बाहरी हमले से राजनैतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता और सरक्षण के सवाल पर भी विचार करना होगा। मेरे खयाल में यह हिन्दुस्तान के लिए मुमकिन नही है कि जबतक उसकी तकनीकी तरक्की न हो, वह असली तौर पर आजाद होगा। फिलहाल मै महज फौजो के खयाल से नही सोच रहा हू, बल्कि वैज्ञानिक उन्नति की बात मेरे सामने है। आजकल की दुनिया जिस ढग से चल रही है, हम सास्कृतिक दृष्टि से भी तरक्की नही कर सकते, अगर हर क्षेत्र में हमारी वैज्ञानिक खोज की मजबूत बुनियाद न हो। आज दुनिया मे ज्यादा-से-ज्यादा हथियाने की प्रवृत्ति अलग-अलग लोगो में, दलो में, और मुल्को मे बहुत जोर पर है और इससे झगडे और लडाइया होती है। हमारी पूरी सोसाइटी कम-ज्यादा इसीपर आधारित है। यह आधार खत्म होना ही चाहिए और उसकी जगह सहकार, न कि अलगाव, होना चाहिए। अलगाव आज नामुमकिन है। अगर यह मान लिया जाता है और सभव लगता है तो हमे इसे हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए, ऐसी अर्थ-व्यवस्था को ध्यान मे रखकर नही, जो बाकी दुनिया से कटी हुई है, बल्कि ऐसी अर्थ-व्यवस्था को ध्यान में रखकर, जो बाकी दुनिया से मेल रखती है। आर्थिक या राजनैतिक दृष्टि से बाकी दुनिया से अलग होकर हिन्दुस्तान एक तरह का ऐसा शून्य क्षेत्र होगा, जो दूसरो की हथियानेवाली प्रवृत्तियो को बढावा देगा और इस तरह उससे झगड़े बढेगे।

करोडो लोगो के लिए महलो का तो सवाल ही नही उठता। लेकिन इसकी भी कोई वजह नही कि क्यो न करोडो लोग आरामदेह मकानो में रहकर सभ्यो जैसी जिदगी बितायें। आज के बहुत-से अति उन्नत शहरो में बुराइया पनपी हैं, जो निदनीय है। शायद हमे इस प्रकार की जरूरत से

ज्यादा तरक्की को हतोत्साहित करना पडे और साथ ही हमे देहातो को इतना बढावा देना पडेगा कि वे शहर की सभ्यता के मुकाबले आ सकें।

'हिन्द स्वराज्य' को पढे बहुत साल हो गये और मेरे दिमाग मे सिर्फ धुधली-सी तस्वीर है। लेकिन जब मैंने २० साल या उससे पहले इसे पढा था तब भी वह मुझे असलियत से एकदम परे लगा था। उसके बाद के आपके भाषणो और लेखो मे मुझे बहुत-कुछ ऐसा मिला है, जिससे पता चलता है कि आप पुरानी हालत से आगे बढे है और आधुनिक धाराओ की पसदगी भी उनमे दिखाई देती है। इसलिए मुझे ताज्जुब हुआ जब आपने हमे बताया कि अब भी पुरानी तस्वीर आपके दिमाग मे ज्यो-की-त्यो कायम है। जैसा कि आप जानते है, काग्रेस ने इस तस्वीर पर कभी गौर नही किया, उसे मजूर करने की तो बात ही अलग है। आपने स्वय भी सिवा इसके कुछ छोट-मोटे पहलुओ के कभी इसे मजूर करने को नही कहा।। अब आप ही फैसला करे कि काग्रेस के लिए यह कहातक ठीक है कि वह उन बुनियादी सवालो पर गौर करे, जिनका जीवन के विभिन्न दर्शनो से सबध आता है। मेरा खयाल है कि काग्रेस जैसी सस्था को ऐसे मामलो के तर्क-वितर्क में अपने को नही उलझाना चाहिए, जो लोगो के दिमागो में भारी भ्रम पैदा करें, जिससे वे वर्तमान मे काम न कर सकें। इसका नतीजा यह भी हो सकता है कि देश में काग्रेस और दूसरो के बीच दीवार खडी हो जाय। बेशक, आखिरकार इस और दूसरे सवालो को आजाद हिन्दुस्तान के नुमाइदो को तय करना होगा। मुझे लगता है कि बहुत पुराने जमाने की नजर मे इन सवालो पर विचार किया गया है और चर्चा हुई है और उन बडी-बडी तब्दीलियो पर कोई ध्यान नही दिया गया है, जो पिछली पीढी या उससे भी ज्यादा वक्त मे दुनिया भर मे हुई है। ३८ साल हो गये जब 'हिन्द स्वराज्य' लिखा गया था। तबसे दुनिया पूरी तरह बदल गई है, मुमकिन है कि उसकी दिशा गलत हो। जो हो, अगर हम इन सवालो पर गौर करें तो हमें मौजूदा असलियतें, शक्तिया और मानवीय उपकरणो को, जो आज हमारे पास है, सामने रखना चाहिए, नही तो हम असलियत से दूर जा पड़ेगे। बाहरा यह कहना ठीक है कि दुनिया या उसका बड़ा हिस्सा अपना खात्मा करने पर तुला दिखाई देता है। हो सकता है कि जिस सभ्यता का विकास हुआ है, उसने

दूपित बीज का यह अनिवार्य परिणाम हो। मेरे खयाल से ऐसा ही है। हमारे सामने समस्या यह है कि इस बुराई से छुटकारा कैसे मिले और उसके साथ ही वर्तमान मे अच्छाई को कैसे कायम रक्खा जाय, जैसी कि वह पहले थी। जाहिर है कि वर्तमान मे भी अच्छाई मौजूद है।

ये कुछ विखरे विचार है, जो जल्दी मे लिख दिये गए है और मुझे डर है कि ये प्रस्तुत प्रश्नो के गभीर महत्त्व के प्रति न्याय नही करते। मुझे उम्मीद है कि आप मुझे वेतरतीवी से विचारो को रखने के लिए माफ करेगे। वाद मे मै इस विपय पर ज्यादा सफाई से लिखने की कोशिश करूगा।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा और कस्तूरबा निधि के सवध में, जाहिर है कि, दोनो के प्रति मेरी सहानुभूति है और मेरे विचार में वे अच्छा काम कर रही है। लेकिन वे जिस ढग से काम करती है, उसके बारे मे मै पूरी तरह आश्वस्त नही हू और मेरा खयाल है कि वह तरीका हमेशा मेरी पसद का नही होता। दरअसल मै उनके बारे मे इतना नही जानता हू कि पक्के तौर पर कुछ कह सकू। लेकिन आजकल अपने ऊपर जिम्मेदारियो का वोझ वढाने मे मेरी अरुचि पैदा हो गई है, जबकि मै महसूस करता हू कि वक्त की कमी के कारण शायद मै उन्हे अपने ऊपर नही ले सकता। अगले महीने और उससे भी कुछ ज्यादा समय मेरे और दूसरे लोगो के लिए गरमागरमी के होगे, ऐसी सभावना है। इसलिए मुझे यह मुनासिव नही लगता कि मै नाममात्र के लिए किसी जिम्मेदारी की कमेटी का सदस्य वनू।

शरत् वोस के वारे मे मै पूरी तरह अधेरे मे हू कि वह मुझसे क्यो इतने नाराज हो गये है। हो सकता है कि इसके पीछे विदेशी सवधो को लेकर मेरे आम नजरिये के प्रति उनकी कोई पुरानी शिकायत हो। मै आया सही था या गलत, पर मुझे लगता है कि शरत् ने वच्चो का-सा और गैर-जिम्मेदाराना ढग का काम किया है। शायद आपको याद होगा कि पुराने दिनो मे सुभाष ने स्पेन, चेकोस्लोवेकिया, म्यूनिख और चीन के प्रति काग्रेस के रुख को पसद नही किया था। शायद यह विचारो के पुराने भेद का असर है। मुझे नही पता कि इसके अलावा और क्या हुआ ?

अच्छा, आप नवम्बर के शुरू में वगाल जा रहे है ? हो सकता है कि उन्ही दिनो मै भी तीन या चार दिन के लिए कलकत्ता जाऊ। अगर ऐसा

हुआ तो मुझे उम्मीद है कि आपसे भेंट होगी।

आपने अखबारो में देखा होगा कि इडोनेशिया के नये बने गणराज्य के राष्ट्रपति ने मुझे और कुछ दूसरे लोगो को जावा आने के लिए निमत्रित किया है। विशेष परिस्थितियो को नजर में रखकर मैंने उस निमत्रण को फौरन मजूर कर लेने का निश्चय किया, बशर्ते कि वहा जाने की मुझे जरूरी सहूलियते मिल जाय। सहूलियते मिलने में मुझे पूरा शक है। इसलिए शायद मै नही जाऊगा। हवाई जहाज से जावा का दो दिन का रास्ता है अथवा कलकत्ता से एक ही दिन का। इडोनेशिया गणतत्र के उप-राष्ट्रपति श्री मोहम्मद हट्टा मेरे बहुत पुराने दोस्त है। मेरा अदाज है कि आपको मालूम होगा कि जावा की करीब-करीब पूरी आबादी मुस्लिम है।

मै उम्मीद करता हू कि आप स्वस्थ होगे और इफ्लूएजा का जो हमला हुआ था, उससे पूरी तरह ठीक हो गये होगे।

महात्मा गाधी,
नेचर क्योर क्लिनिक,
६, टोडीवाला रोड,
पूना

सस्नेह आपका,
जवाहरलाल

३६० अरुणा आसफ अली की ओर से

९ नवम्बर १९४५

प्रिय जवाहरलालजी,

आपने मेरे बारे में जो मेहरबानी की बातें कही, उनके लिए मैंने आपका शुक्रिया अदा करना जरूरी नही समझा, क्योकि मै जानती थी कि वह मेरी निजी तारीफ नही थी। वह तो उन कम जाने-पहचाने सिपाहियो के तई अपनी इज्जत जाहिर करने का आपका तरीका था, जिन्होने पिछले तीन बरसो में बगावत का झडा ऊचा रक्खा था।

मै उम्मीद कर रही थी कि आप जब पिछली मरतबा बबई आये थे तो मुझे याद करेंगे। आप काम में कितने घिरे है, यह जानकर मैंने अपने-आपको आपपर लादने की खास कोशिश नही की।

हमारी कल की बातचीत के लिए आपको कुछ बुनियाद देने की मुझे एक तरकीब सूझी है। मेहरबानी करके इन खतो को पढ लीजिये। शायद

मेरी सियासत को समझने में आपको इनसे मदद मिले।

आपकी,
अरुणा

३६१. महात्मा गांधी की ओर से

पूना
१३ नवंबर १९४५

चि जवाहरलाल,

हमारी कल की बात से मुझे तो बड़ा आनंद हुआ। उससे अधिक बात कल तो कर नहीं सकते थे और मेरा खयाल ऐसा है कि हम एक ही वक्त मिलकर सब काम पूरा नहीं कर सकेंगे। समय-समय पर हमें अवश्य मिलना चाहिए। मैं तो ऐसे बना हूं कि अगर आज मेरी शक्ति इधर-उधर जाने की रहे तो मैं ही तुमको ढूंढ लूं, एक-दो दिन साथ रह लूं, कुछ वार्तालाप कर लूं और भाग जाऊं। ऐसी मेरी स्थिति आज नहीं रही है, लेकिन ऐसे मैंने किया है इतना समझो। मैं चाहता हूं कि हम एक-दूसरे को समझें, ऐसे ही लोग भी हमको समझ लें। अन्त में ऐसा हो सकता है कि हमारा मार्ग ही अलग है तो अलग सही। हमारा हृदय तो एक ही रहेगा, क्योंकि एक है। कल की बात से यह समझा हूं कि हम दोनों में विचार-श्रेणी में या वस्तु समझने में बड़ा अंतर नहीं है। तुमको किस तरह से समझा हूं वह बताना चाहता हूं, जिससे अगर फरक है तो मुझे बता दोगे।

१ तुम्हारी दृष्टि से हरेक इन्सान की बौद्धिक, आर्थिक, राजकीय और नैतिक शक्ति कैसे बढ़ें, वो ही सच्चा प्रश्न है। मेरा भी वही है।

२ और उसमें भी हरेक इन्सान को ऊंचे चढ़ने का एक-सा हक और मौका होना चाहिए।

३ इस दृष्टि से देखते हुए देहात की और शहर की एक ही हालत होनी चाहिए। इसलिए खाना, पीना, रहना, पहनना और रमत-गमत, एक-सी होनी चाहिए। आज तो यह स्थिति पैदा करने के लिए अपने कपड़े, खुराक और मकान अपने-आप पैदा करना और बनाना चाहिए और ऐसे ही अपना पानी या बत्ती भी अपने-आप पैदा करना चाहिए।

४ इन्सान जंगल में रहने के लिए पैदा नहीं हुआ है, लेकिन समाज में

रहने के लिए पैदा हुआ है। एक पर दूसरा सवारी न कर सके, यह विचार करते हुए पता चलता है कि यूनिट एक काल्पनिक देहात या ग्रुप होना चाहिए, जो स्वावलवी रह सके और उस ग्रुप मे एक-दूसरे पर अवलबन तो होना ही होगा। इस तरह सोचने से सारी दुनिया के इन्सानो के सबध का नकशा बन जाता है।

यहातक मै अगर ठीक समझा हू तो दूसरा हिस्सा मै शुरू करूगा। जो खत मैने तुमको पहले लिखा था, उसका अग्रेजी रा कु से करवा लिया था, वह मेरे पास पडा है। इसकी अग्रेजी भी करवा लेता हू और उसे साथ मे ही भेजता हू। अग्रेजी करवाकर मै दो काम कर लेता हू। एक तो मै अपना कहना तुमको अग्रेजी में ज्यादा समझा सकता हू तो समझाऊ, और दूसरा मै तुम्हारी बात पूरी-पूरी समझा हू कि नही, उसका भी अग्रेजी करने से मुझे ज्यादा पता चलेगा।

इदु को आशीर्वाद।

बापू के आशीर्वाद

३६२ सर फ्रासिस वाइली की ओर से

गवर्नर्स कैम्प

गवर्नर, सयुक्त प्रात

सयुक्तप्रान्त,

२२ फरवरी १९४६

प्रिय पडितजी,

हम आपस में कभी नही मिले, पर वस्तुत इसमें मेरा ही नुकसान हुआ है। फिर भी ऐसे वहुत-से दोस्त है जो आपके भी है और मेरे भी, और आपकी किताबो की मार्फत मेरा आपसे वरसो से ताल्लुक रहा है। जब पिछले महीने मै इलाहाबाद गया था तो मेरे दिमाग में मुख्य उद्देश्य आपसे यह पूछना था कि क्या हम लोग मिल सकते है। मामूली-सी बातो—जिनमें पार्लमेंटरी शिष्टमण्डल भी शामिल है—के कारण वैसा नही हो सका। जब मेरे यहा अगाथा हैरिसन आई तो उन्होंने लखनऊ तक की तीर्थयात्रा अपने-आप सिर्फ ये सुझाव देने के लिए की कि जितनी जल्दी हो सके मै आपसे मिलू। मुझे किसी और को तैयार करने की जरूरत नही थी, हालाकि यहा की

पूर्व-घटनाओ की वजह से आपसे मिलने का विचार मेरे दिमाग में कुछ हल्का पड गया था। अगाथा के जाने के वाद मैंने इसके बारे में फौरन कुछ कर डालने की सोची और इलाहाबाद मे वैंकटाचार से फोन पर बात की। मैंने उन्हें आपसे फौरन ही सम्पर्क स्थापित कर यह पूछने का सुझाव दिया कि क्या आप उनके मकान पर मुझसे मिल सकेंगे और जब मै और मेरा लडका इस उद्देश्य से इलाहाबाद आयेंगे तो वह हमे अपने पास ही ठहरा सकेंगे। कुछ ही घण्टो मे मुझे यह निराशाजनक जवाव मिला कि आप इलाहावाद से जा चुके है और २३ से पहले नही लौटेंगे और उसके फौरन वाद ही फिर चुनाव के दौरे पर रवाना हो जायगे।

मेरे दिमाग में यह चीज साफ हो गई है कि जहातक मुमकिन हो हमे मिलना चाहिए। मेरी धारणा है कि अगर हम कोई बात कर सकेंगे तो बहुत बात वनेगी। मै रहस्यपूर्ण ढग से मिलना मुनासिव नही समझता, क्योकि पहले ही से बहुत-सी रहस्यमयी बाते फैल रही है। मै यह भी नही चाहूगा कि लोग इधर-उधर की बातें करें। फिर भी अगर आप अपने दौरे में कुछ घण्टो के लिए भी लखनऊ आ सकें तो मै किसी भी जगह, जो आपको सुविधाजनक हो, आने को तैयार हू।

मै यह खत आपको एक विशेष दूत के हाथ भेज रहा हू। शायद आप उसीके द्वारा उत्तर भेजने की कृपा करेंगे।

आपका,
एफ वी वाइली

३६३ महात्मा गाधी की ओर से

[नीचे गाधीजी का वह पत्र दिया जा रहा है, जो उन्होने मुझे उस दिन लिखा था, जिस दिन उन्होने उपवास तोड़ा था। उनका उपवास कई दिन चला। उपवास उन्होने दिल्ली में साम्प्रदायिक झगड़ो के लिए अपना दु ख जाहिर करने के लिए किया था।

दिल्ली में जो घटनाए हो रही थीं, उनकी और गाधीजी के उपवास की वजह से मै वडा वेचैन था और एक या दो दिन तक मैंने कुछ भी नहीं खाया। यह बाकायदा उपवास नहीं था, वल्कि घटनाओं के प्रति मेरी निजी प्रतिक्रिया थी, जिसे कोई नहीं जानता था। गाधीजी को किसी तरह पता चल

गया और इसलिए उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं उसे खत्म कर दूं।

यह आखिरी खत था, जो उन्होंने मुझे लिखा था। बारह दिन बाद, ३० जनवरी १९४८ को, एक हत्यारे के हाथों उनकी मौत हो गई।]

चि. जवाहरलाल,

उपवास छोडो।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

बहुत वर्ष जीओ

और हिंद के जवाहर

बने रहो।

बापु के आशीर्वाद

१८-१-४८

पश्चिमी पजाब लेजिस्लेटिव असेंबली के स्पीकर का तार :

"आपके अहम फाके के वेलाग और ऊचे मकसद के वारे में १३ जनवरी को इस असेम्वली मे जो तकरीरें हुई थी, उनके कुछ मौजू हिस्से मैं वडी खुशी से आपको भेज रहा हू। इनमें जो जज़्वात जाहिर किये गए हैं उनमें मैं और यह असेम्वली पूरी तरह से शरीक है।"

मलिक मुहम्मद फिरोज खा नून—"दुनिया के किसी भी मुल्क ने, मजहव चलानेवालो को छोडकर, महात्मा गाधी से ज्यादा वडा इसान पैदा नही किया।"

ऑनरेबल मियां मुहम्मद मुमताज खां दौलताना, माली वजीर—"यह हमारा सवसे बडा फर्ज है कि हम महात्मा गाधी के फाके से मुसलमानो के तईं जो जज़्बात जाहिर होते है उनको समझें और उनकी तारीफ करें। इससे जाहिर होता है कि हिंदुस्तान में कम-से-कम एक आदमी तो ऐसा है, जो हिन्दू-मुस्लिम-एके के लिए अपनी जिंदगी तक कुरवान करने को तैयार है। हम खुदावद ताला से दुआ मागते है कि उनके फाके को जारी रखने की और आगे जरूरत न पडे। मै इस असेम्वली की तरफ से महात्मा गाधी को यकीन दिलाता हू कि अकलियत की हिफाजत के लिए उनके जज़्बातो में हम पूरी तरह शामिल है।"

ऑनरेबल खान इफ्तिखार हुसैन खां, वजीरे-आजम—"मैं अपनी तरफ से और अपने साथियो की तरफ से महात्मा गाधी के एक पाक मकसद को आगे वढाने के ऊचे दर्जे के काम की फिक्र के साथ तहेदिल से कद्र और तारीफ करता हू। उनकी कीमती जिंदगी को वचाने के लिए इस सूवे मे कोई कसर नही उठा रखी जायगी।

स्पीकर,
पश्चिमी पजाव लेजिस्लेटिव असेंवली

३६४ जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के नाम

नई दिल्ली
४ सितम्वर १९४८

प्रिय श्री शॉ,

मुझे ठीक-ठीक नही मालूम कि मैं यह खत आपको क्यो लिख रहा हूं, क्योकि हम दोनो ही वहुत व्यस्त आदमी है और मुझे आपके काम को वढाने

की कोई इच्छा नही है। लेकिन देवदास गाधी ने मेरे पास आपके उस खत की एक नकल भेजी है, जो आपने उन्हें १६ जुलाई को लिखा था और उसने मेरे अदर आपको लिखने की ख्वाहिश पैदा की।

आज से चालीस साल पहले जब मैं १८ साल का था और कैम्ब्रिज में एक अन्डर ग्रेजुएट था तब मैंने आपको एक सभा में भाषण करते सुना था। उसके बाद से मैंने आपको फिर नही देखा है, न कभी पत्र ही लिखा है। लेकिन मेरी पीढी के बहुत-से लोग आपके लेखो और आपकी किताबो के साथ-साथ उम्र में आगे बढे है। मैं समझता हू कि मेरा एक हिस्सा भी, जैसा कि मैं आज हू, उसी पढ़ाई के साचे में ढला है। मै कह नही सकता कि इससे आपको कोई श्रेय मिलेगा या नही।

चूकि एक मानी में आप मेरे नजदीक रहे हैं या यो कहिये कि मेरे विचारो के पास रहे हैं, इसलिए मेरी अक्सर आपके और ज्यादा पास आने और मिलने की चाह रही है। लेकिन मौके नही मिले। और तब मैंने महसूस किया है कि आपसे मिलने का सबसे अच्छा तरीका आपकी लिखी हुई चीजो को पढना है।

देवदास ने आपसे जाहिरा तौर पर पूछा था कि हमें गाधी के हत्यारे के साथ क्या करना चाहिए। मैं समझता हू कि उसे फासी दे दी जायगी और निश्चय ही मैं उसे मौत की सजा से बचाने के लिए कोई कोशिश नही करूंगा। हालाकि पिछले कई बरसो से मैं मौत की सजा के कानून को खत्म करने के हक में अपनी राय जाहिर करता रहा हू। मौजूदा मामले में कोई दूसरा रास्ता नही है। फिर भी मुझे इस बात पर शका होने लगी है कि आम हालत में किसी आदमी को मौत की सजा देने के बदले १५-२० साल तक जेल में रखना क्या ज्यादा अच्छा है?

जिदगी इतनी सस्ती हो गई है कि कुछ हत्यारो को मौत की सजा देने या न देने से कोई बहुत बडा फर्क नही पडता। कभी-कभी यह सोचना पडता है कि क्या जिन्दा रहने का दण्ड सबसे कडा दण्ड नही है।

मैं आपसे अपने उन देशवासियो की ओर से क्षमा माग लेना चाहता हूं जो हिंदुस्तान के बारे में आपके विचार जानने के लिए आपको परेशान

करते रहते है। हममें से बहुत-से लोग दूसरो से प्रमाणपत्र मागने की अपनी पुरानी आदत को अभी छोड नही सके है। शायद इसकी वजह यह है कि हममें अपने-आपमे विश्वास की कमी है। घटनाओ ने हमें बुरी तरह से झकझोर दिया है और भविष्य उतना उजला दिखाई नही देता जितना कि हमने सोचा था।

अगले अक्तूबर में दो या तीन हफ्तो के लिए मेरी इगलैंड आने की सम्भावना है। मै आपसे मिलना बहुत ही पसन्द करूगा, लेकिन अगर इससे आपके रोजमर्रा के काम में कोई अड़चन पडे तो मै ऐसा हर्गिज नही चाहूगा। मै आपको किन्ही सवालो से परेशान करने नही आऊगा। दिमाग में बहुत-से सवाल उठते है, जिनके पर्याप्त उत्तर दिखाई नही देते या अगर उत्तर है भी तो हालत कुछ ऐसी है कि माकूल आदमियो की कमी की वजह से उन्हे अमल में नही लाया जा सकता। अगर मुझे आपसे कुछ क्षणो के लिए मिलने का सौभाग्य मिला तो मै उसका इस्तेमाल एक ऐसी याद को सदा बनाये रखने के लिए करूगा, जो कि मुझे अबसे कुछ अधिक खुशहाल बना देगी।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ,
आयोट सेंट लारेंस,
वेलविन, हर्ट्स, इगलैंड

३६५. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की ओर से

लंदन
१८ सितम्बर १९४८

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे यह जानकर बड़ा सतोष हुआ है कि आप मेरे राजनैतिक लेखो से परिचित है। मुझे इससे अधिक और कुछ नही कहना है कि आपके यहा आने से मै अपनेको सम्मानित अनुभव करूगा, हालाकि मैं अपनेको इस भ्रम में नही रखना चाहता कि अपने बहुमूल्य समय की एक दोपहरी मेरे साथ बिताने के लिए आपका इस दूर के गांव के लिए सफर करना उचित होगा,

जहा कि बर्नार्ड शॉ का कुछ भी शेष नही बचा है, सिवा पुरानी हड्डियो के एक जर्जर ढाचे के, जिसे वर्षों पहले खत्म हो जाना चाहिए था।

एक बार मै एक सप्ताह के लिए बम्बई में रहा था और एक सप्ताह के लिए श्रीलका में। हिंदुस्तान के बारे में मै प्रत्यक्ष रूप से बस इतना ही जानता हू। श्रीलका को देखकर मुझे यह विश्वास हो गया था कि वह मानव-जाति का पालना है, क्योकि वहा प्रत्येक व्यक्ति मौलिक दिखाई देता है, जबकि दूसरे सभी राष्ट्र स्पष्टत सामान्य ढग के है।

हलाकि मै हिंदुस्तान के बारे में सिर्फ उतना ही जानता हू, जितना अखबारो में छपता है, तो भी मै उसपर अवैयक्तिक दृष्टि से ही विचार करता हू, क्योकि मै अग्रेज नही बल्कि आयरिश हू। मैने अपनी आखो से उस लम्बे सघर्ष को देखा है, जो अग्रेजी शासन से मुक्ति के लिए आयरलैण्ड ने किया है। बाद में मैने उसे दो हिस्सो—आयर और उत्तरी आयरलैड—में बटते भी देखा है, जो कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का पश्चिमी समानान्तर है। इगलैड के लिए मै वैसा ही विदेशी हू जैसे कि आप केम्ब्रिज में थे।

मै सोच नही पा रहा हू कि जिन्ना की मृत्यु से आपका इगलैड आना रुक तो नही जायगा। अगर उनका कोई कुशल उत्तराधिकारी नही है तो आपको सारे प्रायद्वीप पर शासन करना होगा।

आपका,
जा. बर्नार्ड शॉ

हिज एक्सेलेंसी प्रधान मत्री,
नई दिल्ली, भारत

३६६. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के नाम

जार्ज होटल
पेरिस
२८ अक्तूबर १९४८

प्रिय श्री शॉ,

आपका १८ सितम्बर का नई दिल्ली भेजा हुआ खत मेरे पास आज यहां पेरिस में पहुचा है। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मालूम नही, इसे दिल्ली पहुचने में और फिर वापस यहा आने में इतना अर्सा क्यो लगा? मालूम होता

हैं; वह १५ अक्तूबर को दिल्ली पहुच गया था। मुझे बहुत ही दु ख है कि मुझे वह पहले नही मिला।

मैंने आपको लिखा था कि अपनी इगलैंड-यात्रा के दौरान में मुझे आपसे मिलकर बडी खुशी होती। यह सही है कि जिन्होने मेरे कार्यक्रम की जिम्मेवारी ले ली थी उन्होने उसे इतना भर दिया कि बहुत-सी बातो के लिए, जो मैं सचमुच करना चाहता था, वक्त निकालना मेरे लिए मुश्किल था। फिर भी मैं बेशक आपके पास आने के लिए वक्त निकालता; लेकिन चूकि मेरे खत का जवाब आपकी तरफ से मुझे नही मिला, इसलिए मुझे पूरा यकीन नही हुआ कि मेरा आना आपके लिए सुभीते का होगा या नही और इसलिए आपको दुबारा लिखने में मुझे हिचकिचाहट रही। मैं हिन्दुस्तान वापस जा रहा हू। मेरे लिए यह गहरे अफसोस की बात है कि मैं आपको प्रणाम करने का यह अवसर चूक गया। फिर भी मुझे आशा है कि किसी और मौके पर यह लाभ मिलेगा।

सादर आपका,
जवाहरलाल नेहरू

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ,
आयोट सेंट लॉरेंस,
वेलविन, हर्ट्स, इगलैंड
इगलैंड

३६७ जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की ओर से

४ ह्वाइटहॉल कोर्ट (१३०)
लन्दन, एस. डब्ल्यू. १,
१२ नवम्बर १९४८

प्रिय पडित नेहरू,

मुझे निराशा नही हुई। जब मैंने आपको पत्र लिखा था तब मुझे खूब अच्छी तरह मालूम था कि लन्दन में आने पर आपकी इतनी अधिक माग होगी कि आपके पास एक पूरी दोपहरी का वक्त भी इस गाव में बिताने के लिए खाली नही मिल पायेगा। फिर भी मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि अगर आप आ सकते तो मैं आपका हृदय से स्वागत करता।

सम्मेलन में आपका भाग लेना आपके लिए व्यक्तिगत रूप से एक महान सफलता थी। दूसरो की अनर्गल बातो की तुलना में आपका रेडियो-भाषण बहुत ही उल्लेखनीय था और बाद में आपने जो भाषण दिये, उनसे यह सिद्ध हो गया है कि एशिया में अकेले आप ही वह व्यक्ति है, जो स्टालिन के बराबर है। आपका यह आश्वासन देना कि लडाई की कोई तात्कालिक सम्भावना नही है, ठीक समय पर कही गई एक ठीक बात है। हमारे मन्त्रि-मडल के मत्री मूर्ख नही हैं, लेकिन उन्हे यह पता नही कि वे क्या कह रहे है।

जा. बर्नार्ड शॉ

राइट ऑनरेबल जवाहरलाल नेहरू,
नई दिल्ली,
हिंदुस्तान।

३६८. तेजबहादुर सप्रू की ओर से

इलाहाबाद
२ दिसम्बर १९४८

प्रिय जवाहरलालजी,

आप जो कुछ कहते रहते है, वह मैं अखबारो में पढता रहता हू और दिन-ब-दिन आपके लिए मेरी इज्जत बढती जा रही है। आपकी सालगिरह पर मेरी आपको लिखने की मशा थी, मगर मैं नही लिख सका, क्योंकि उस वक्त मेरी हालत बहुत खराब थी। मैं अब लिख रहा हू और गालिब के हमेशा जिन्दा रहनेवाले लफ्जो में मैं आपको अपनी शुभ कामनाए भेजता हू—

"तुम सलामत रहो हजार बरस, हर बरस के दिन हो पचास हजार।"

यू. पी. के कुछ काग्रेसी लीडरो का जबान के सवाल पर जो रुख है, उससे मैं जरा भी खुश नही हू। खुशी से हिंदी सीखो, पर यह न भूलो कि उर्दू मुसलमानो की जबान नही है। हिन्दुओ ने उसको खासी अच्छी देन दी है और रुहेलखण्ड और इस सूबे के पच्छिमी हिस्से के लोग उस हिंदी को नही समझ पाते, जो पूरबी हिस्से में बोली जाती है। मैं इस सच्चाई को जानता हू कि दूसरे हिस्सो के लोगो में भी बहुत ज्यादा बेचैनी है और ऊचे दर्जे की हिंदी को समझना उन्हें मुश्किल लगता है। मेरा यकीन है कि कुछ अग्रेजी

लफ्जो का हिंदी में हुआ तर्जुमा आप नही समझ सकेंगे। जब मैं सारे सवाल को बिना किसी लगाव के देखता हू तो लगता है कि यह हमे मुसीबत की तरफ ले जा रहा है। मैं इतना कमजोर हू कि लबा खत नही लिखवा सकता।

मेरी हालत ज़रा भी नही सुधरी है। लकवे और ब्लेडर की खराबी के अलावा मुझपर गैस्ट्राइटिस का भी जोर से हमला हुआ है। दिन में पाच-छ बार कैथेटर लगाना पडता है। इस सबका सिर्फ एक ही नतीजा हो सकता है और वह यह कि आखिरी वक्त के लिए मुझे तैयार रहना चाहिए। मुझे अपने ग्रहो का शुक्रगुजार होना चाहिए कि मैं हिंदुस्तान की आजादी को देख सका और आपको उसके सरगना के तौर पर।

सप्रेम आपका,
तेजबहादुर सप्रू

माननीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू,
प्रधान मन्त्री, हिन्दुस्तान,
नई दिल्ली।

अनुक्रमणिका

१. यह अनुक्रमणिका सिर्फ इस पुस्तक में प्रकाशित पत्रो के लिखनेवालों तथा पत्र पानेवालो के नामो की बनाई गई है।

२. मुख्य पक्तियो में दी गई पृष्ठ-सख्याए जवाहरलाल नेहरू की ओर से तथा उनके नाम लिखे पत्रो की है।

३. मुख्य पक्तियो के नीचे जगह छोड़कर दिये हुए नाम तथा पृष्ठ-सख्याएं उन लोगो के पत्रो की है जिन्होने मुख्य पक्ति में दिये व्यक्ति के साथ पत्र-व्यवहार किया।